Kadambini June-Sep 1987 G.K.L.

40513

558

8/8/82

145

29/5/57

14/4/86

7/4/86

3127

[illegible]

31
प्राप्ति दिनांक 1-9-82

शब्द-सामर्थ्य बढ़ाइए

ज्ञानेन्द्र

नीचे कुछ शब्द दिये हैं, और उसके बाद उनके उत्तर भी। उत्तर देखे बिना आपकी दृष्टि में जो सही उत्तर हों, उन पर निशान लगाइए और फिर यहां दिये गये उत्तरों से मिलाइए। इस प्रक्रिया से आपका शब्द ज्ञान अवश्य ही बढ़ेगा।

१. **यथेष्ट**—क. काफी, ख. अधिक, ग. जैसी कामना की गयी हो, घ. जिसे सिद्ध कर लिया गया हो।

२. **मंत्रोक्त**—क. जादूभरा, ख. पुनीत, ग. स्तब्ध, घ. मंत्र में जो कहा गया हो।

३. **भग्नव्रत**—क. शंकित, ख. अनिश्चित, ग. प्रतिज्ञा का पालन न करनेवाला, घ. जिसका मन टूट गया हो।

४. **रंच**—क. थोड़ा, ख. निर्धन, ग. रंगीन, घ. बनावटी।

५. **संकुल**—क. सारा, ख. घना, ग. तेज, घ. विस्तृत।

६. **जलातंक**—क. जला हुआ, ख. पेट में पानी भरने की बीमारी, ग. पानी का भय, घ. पानी की कमी।

७. **ऐकात्म्य**—क. साथ, ख. एकता का भाव, ग. मैत्री, घ. सद्भावना।

८. **एकतंत्र**—क. एक डोर में पिरोया हुआ, ख. एक ही रूप में, ग. वह व्यवस्था जिसमें सारी शक्ति एक व्यक्ति में केंद्रित हो, घ. अधीनता।

९. **आगंतु**—क. आनेवाला, ख. जानेवाला, ग. प्रार्थी, घ. स्वागत करनेवाला।

१०. **फलापेक्षा**—क. फल की ओर से उदासी, ख. फल की आशा, ग. फलना-फूलना, घ. ज्योतिष का फल।

उत्तर

१. ग. जैसी कामना की गयी हो वैसा। बड़ी तपस्या के बाद **यथेष्ट** सिद्धि प्राप्त होती है। **(यथा+इष्ट)**

२. घ. मंत्र में जो कहा गया हो। मंत्रोक्त विधि से उपासना करना लाभकारी होता है। **(मंत्र+उक्त)**

३. ग. प्रतिज्ञा का पालन न करनेवाला, जिसका संकल्प खंडित हो गया हो। **भग्नव्रत** को पराजय का मुंह देखना पड़ता है।

४. क. थोड़ा, जरा-सा। उसने **रंच** प्रयास नहीं किया।

५. ख. घना। यह **संकुल** आबादी का क्षेत्र है। **(संज्ञा—संकुलता)**

६. ग. पानी का भय, जो प्रायः कुत्ते

के काटने से पैदा होता है। (अंग-हाइड्रोफोबिया)। वह **जलातंक** से पीड़ित है।

७. ख. एकता का भाव, एकात्मता। **ऐकात्म्य** की वृद्धि से ही राष्ट्र सुदृढ़ होता है।

८. ग. वह व्यवस्था, जिसमें सारी शक्ति एक व्यक्ति में केंद्रित हो। **एकतंत्र** मूलतः दमन पर आधारित होता है।

९. क. आनेवाला। इस नव **आगंतु** ने तुम पर जादू कर दिया है। (**आगंतुक** का भी प्रयोग)

१०. ख. फल की आशा। **फलापेक्षा** से ही कोई कार्य किया जाता है। (**फल + अपेक्षा**)

पारिभाषिक शब्द

नामिनेशन = नामांकन, नामजदगी
वोटर्स लिस्ट = मतदाता-सूची
फेयर कापी = स्वच्छ प्रतिलिपि
कैरेक्टर सर्टीफिकेट = चरित्र-प्रमाणपत्र
मिसकंडक्ट = कदाचार
बेनिफिट = हित / सुविधा
कैरिड डाउन = तल शेष
सीज फार्वर्ड = आनीत शेष
कैरिड फायर = युद्ध-विराम
फारप्रूफ = अग्निरोधक

समस्या-पूर्ति—३९

11051

प्रथम पुरस्कार

रंग फलक पर छोड़ गया है तेरा अभिनय
खुशियां चुनकर जोड़ गया है तेरा अभिनय
इक वो ही है बदनसीब पर्दे के पीछे
जिसको छलकर तोड़ गया है तेरा अभिनय

——भगवती प्रसाद जुगरान
काला भवन, अपर बाजार, श्रीनगर, गढ़वाल

द्वितीय पुरस्कार

जीवन के इस रंगमंच पर
अभिनय करती हूं साकार
प्रेम दिवानी निश दिन डोलूं
ढूंढ़ रही हूं तेरा प्यार

——श्रीमती शशिप्रभा सक्सेना
द्वारा श्री आर. एन. सक्सेना,
मुख्य न्यायिक दंडाधिकारी, दमोह (म.प्र.)

समय के हस्ताक्षर

तृतीय विश्व हिंदी सम्मेलन : सावधानी की जरूरत है

इस वर्ष तृतीय विश्व हिंदी सम्मेलन दिल्ली में करने की घोषणा की गयी है। कहा गया है कि यह सम्मेलन दिसंबर के दूसरे सप्ताह में होगा। आश्चर्य की बात यह है कि आज तक सम्मेलन की निश्चित तिथि तय नहीं हुई है। विदेशों में लेखकों को पूरी तरह सूचनाएं नहीं भेजी गयी हैं। हमारे पास लगातार शिकायतें आ रही हैं कि तुरंत आमंत्रण न मिलने से उन्हें योजना बनाने में कठिनाई होगी।

दिलचस्प बात तो यह है कि देश में ही लोगों को नहीं पता कि दिसंबर के दूसरे सप्ताह में विश्व हिंदी सम्मेलन होने जा रहा है। पूरे सम्मेलन का कार्य विश्वविद्यालय के लोगों के हाथों सौंपा गया है और उसमें वास्तविक हिंदी-सेवी सृजनशील लेखकों के लिए कहीं कोई स्थान नहीं। पूरी योजना उसी विश्वविद्यालयीन ढंग से तय की जा रही है। हमारे पाठकों को जानने का पूरा अधिकार है कि विश्व हिंदी सम्मेलन की तैयारियों की प्रगति क्या है? क्या हिंदी केवल विश्वविद्यालयों की भाषा है? मारीशस में जिस शानदार ढंग से द्वितीय सम्मेलन हुआ था, तीसरा सम्मेलन यदि उस तरह से नहीं हुआ, तो क्या इससे हिंदी के गौरव को क्षति नहीं पहुंचेगी? समारोह के आयोजक आखिर इस तरह की शिथिलता बनाये रखेंगे तो क्या होगा?

ऐसे बड़े सम्मेलनों की तैयारी करने में कम से कम एक वर्ष लगता है। सात-आठ महीने पहले ही सूचनाएं एवं परिपत्र भेजे जाते हैं। तीसरे विश्व हिंदी सम्मेलन की तिथि निश्चित न होने का कारण यह बताया गया है कि प्रधानमंत्री ने अभी तक समय नहीं दिया है। स्पष्ट रूप से कहें तो यह कटु सत्य होगा कि पूरा आयोजन जिन हाथों में है, उन्हें या तो और मजबूत किया जाना चाहिए अथवा कोई और व्यवस्था की जानी चाहिए। यदि किसी तरह काम में ढील हो ही गयी है, तो हमारा सुझाव है कि यह सम्मेलन फरवरी में किया जाए। जल्दबाजी में अधूरे काम करने से पूरे हिंदी जगत की क्षति होगी।

हम प्रधानमंत्री और विदेशमंत्री से निवेदन करेंगे कि वे तृतीय विश्व हिंदी सम्मेलन के काम को स्वयं देखें और उचित दिशा-निर्देश करें ताकि मारीशस में हुए द्वितीय विश्व हिंदी सम्मेलन के बाद इस देश की राष्ट्रीय भाषा को नीचा न देखना पड़े। ●

जीवन के उतार-चढ़ाव

110513

में इनका ध्यान रखिए.

उतार-चढ़ाव सभी बच्चों के जीवन में आता है। परन्तु 'उतार' जितने कम हों, उनके लिए उतना ही अच्छा है।

और इसके लिए उनका स्वस्थ रहना ज़रूरी है। तभी तो उनके लिए हॉर्लिक्स बनाया गया है।

हॉर्लिक्स लेने का मतलब है हर रोज़ अच्छा स्वास्थ्य।

इसी कारण सौ से भी अधिक वर्षों से लाखों लोग हॉर्लिक्स पर भरोसा करते आ रहे हैं।

दुनिया भर में डाक्टर हॉर्लिक्स को अच्छे स्वास्थ्य का साधन मानते हैं, इसे हर रोज़ लेने की सलाह देते हैं।

और क्यों नहीं!

हॉर्लिक्स में भरपूर गुणों वाले शुद्ध तत्व हैं जिन्हें ऐसी प्रक्रिया से तैयार किया जाता है कि उनके गुण बने रहें और यह आसानी से पच सके।

अपने सारे परिवार के लिए हॉर्लिक्स अपनाइए—और जीवन में एक नया उत्साह पाइए।

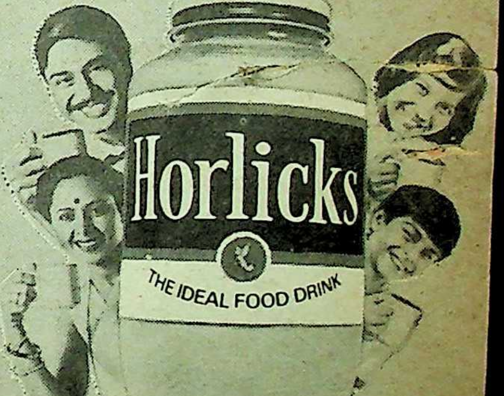

महान शक्तिदाता

आस्था के आयाम

सही वक्त की पहचान

१९७६ में फ्रांस की टेनी क्लीयर ने हंसी-खुशी समुद्री-मार्ग से विश्व की परिक्रमा की थी। दूसरे अवसर पर न्यूजीलैंड की नावमी जैम्स ने सबसे कम समय (२७२ दिन) में यह परिक्रमा करके नया कीर्तिमान स्थापित किया। जबकि वह अकेली होने के कारण स्वयं के लिए दिन में तीन बार खाना भी बनाती थी।

ऊपर : रोबिन डेविडसन
नीचे : नावमी जेम्स

ऐसे प्रसंगों में आस्ट्रेलियन रोविन डेविडसन का प्रसंग भी काफी दिलचस्प है। जीव-विज्ञान एवं संगीत की छात्रा डेविडसन ने चार ऊंटों को लेकर अकेले ही आस्ट्रेलिया का रेगिस्तान पार किया।

एक समुद्री यात्रा के दौरान ली राबर्टसन ने अपने पति, तीन पुत्रों ए एक छात्र को उस समय डूबने से बचाया जब एक व्हेल मछली के आक्रमण से उनकी नाव उलट गयी थी। लीन ने विपत्ति ग्रस्त स्वजनों को एक तख्ते पर उतारक प्राण-रक्षा की थी। उनके पति डगॉल क कहना है कि 'लीन जानती है कि सह वक्त पर क्या करना सही होगा, जब हम लोग सोचते ही रह जाते हैं।'

तीस वर्षीय सिलविया कुक ए स्विमिंगपूल को भी तैरकर पार नहीं क सकती थी, क्योंकि उसको 'सी-सिकने थी, इसके बावजूद उसने अपने मित जान फेरफेक्स के साथ आठ हजार मील के प्रशांत महासागर की सफल यात्रा की

क्रिस्टना और एक अन्य लड़की ने नौ सौ मील लंबी जायर नदी (अफरीका) पर सफर किया था।

लंबी दूरी की उड़ानों में भी लड़किय की उपलब्धियां प्रशंसनीय रही हैं। इसमे भी उनका नारीत्व कहीं बाधक नहीं है इसका प्रमाण है सिला स्कॉट एवं जुडिथ क्रिशहोम की हवाई उड़ानें।

सिला स्कॉट ने १९६६ में हवा जहाज से संपूर्ण विश्व की अकेले उड़ा भरी थी। जूडिथ क्रिशहोम ने सिला स्कॉ के रिकार्ड से १८ दिन अधिक की उड़ा भरकर नया कीर्तिमान स्थापित किया

वह 'मां' जो बहुत कुछ कर गयी

ईश्वर ने गिजुभाई को देह तो पुरुषों की दी थी, पर दिल उनके पास ममतामयी मां का था।

बच्चों के लिए, उनके माता-पिता और शिक्षकों के लिए गिजुभाई जितना और जैसा लिख गये व लिखवा गये, उतना और वैसा आज तक किसी ने कहीं लिखा, लगता नहीं।

१५ नवम्बर, १८८५ को जन्मे गिजुभाई पेशे से वकील थे, पर उन्हें यह पेशा रास नहीं आया। वकालत छोड़कर इन्होंने बाल-जीवन को सुधारने का व्रत लिया और १९२२ में गुजरात के भावनगर शहर में बच्चों के लिए अपना पहला 'बाल-मंदिर' शुरू किया। राष्ट्रमाता कस्तूरबा गांधी के हाथों इस मंदिर की शुरूआत हुई थी।

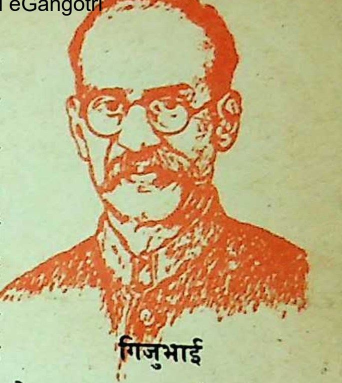
गिजुभाई

वे बालकों के अधिकारों व उनके मान-सम्मान के लिए मां-बाप से लगातार झगड़ते रहे। वर्षों धुआंधार प्रचार कर-करके उन्होंने घरों और विद्यालयों में बच्चों की पिटाई खत्म करवायी। बालकों को मारने-पीटने, डांटने-डपटने, ललचाने-फुसलाने, डराने और दबाने के खिलाफ उन्होंने जोरदार अभियान चलाये।

गिजुभाई ने अपनी आखिरी सांस तक यही सब किया—बिना रुके और बिना झिझके। २३ जून, १९३९ को महान [illegible] शिक्षाशास्त्री श्री गिज[illegible]

—सुनील निगम, कानपुर

वचनवीथी

सभ्यता का सही मूल्यांकन, श्रेष्ठ नारियों का उस पर प्रभाव है।

—एमर्सन

जीवन में ऐसे प्रसंग और वस्तुस्थितियां आती हैं, जबकि बुद्धिमत्ता इसी में होती है कि अति बुद्धिमान न बनें।

—शिलर

जीवन कितना ही छोटा हो, समय की बरबादी से वह और भी छोटा बना दिया जाता है।

—जॉनसन

व्यस्त व्यक्ति [illegible] लिए समय नहीं होता है।

—बायरन

सबसे अधिक सुखी समाज वह है, जिसमें हरेक व्यक्ति परस्पर हार्दिक सम्मान की भावना रखता है।

—गेटे

वह संगीत, जो अधिकतम गहराई तक पहुंचता है और सब बुराइयों को दूर करता है, हार्दिक संभाषण है।

—अज्ञात

महत्तम सत्य सरल होते हैं, महत्तम व्यक्ति भी।

—हेअर

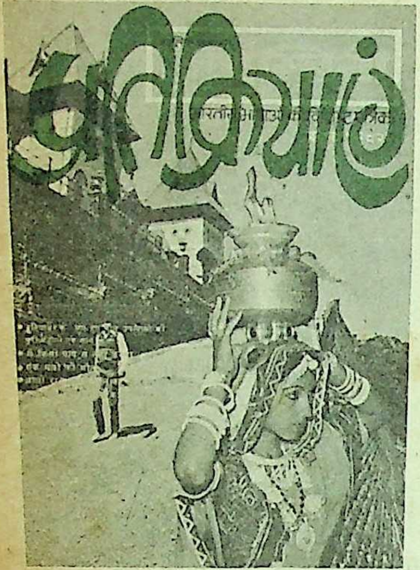

अगस्त अंक के उपन्यास विशेषांक मे विश्वविख्यात पांच उपन्यास देकर आपने '[illegible]म्बिनी' के विशेषांकों की शृंखला में [illegible] और जोड़ दी है, [illegible]दी का 'आधी रात का खतर[illegible]तंक' किसी भी मायने में अन्य चारों प्रसिद्ध उपन्यासों से कम नहीं है। ऐसी विशिष्ट कृति देने पर सलमान रुशदी बधाई के पात्र हैं।

—कृष्णशंकर भटनागर, सहारनपुर

उपन्यास विशेषांक के रूप में अगस्त अंक प्राप्त हुआ। 'एक मंत्री की मौत' और 'राष्ट्रपति जनता के कटघरे में' उपन्यासों ने बेहद प्रभावित किया।

'हमारे मुल्क का नाम गोरखपुर है' में लेखक श्री गुंजेश्वरी प्रसाद ने एक ऐसे कमजोर अल्पवर्ग की व्यथा अंकित की है, जो अपनी व्यथा स्वयं कह सकने में समर्थ नहीं है। वास्तव में इस वर्ग को न्याय मिलना ही चाहिए। लेखक का प्रयास सराहनीय है। **—अशोक शर्मा, झांसी**

मैं मूलतः ग्रामवासी हूं, इसलिए अगस्त अंक में 'हमारे मुल्क का नाम गोरखपुर है' व 'मरा हुआ गांव : मरे हुए लोग' रचनाएं विशेष पसंद आयीं। विश्वास है, ग्रामों की व्यथा-कथा प्रकाशित करते रहने का आप उपकार करेंगे।

—प्रो. पी. एस. गौतम, अंबाह

हर अंक विशेषांक

'कादम्बिनी' का हर अंक विशेषांक होता है, जिसे पढ़ने के बाद बेचैनी रहती है कि कब इसका अगला अंक पढ़ने को मिले। क्या ऐसा संभव नहीं कि 'कादम्बिनी' को मासिक की जगह पाक्षिक कर दिया जाए।

—शिवनारायण मूंदड़ा, बाड़मेर

'काल-चिंतन' को तो हमेशा की तरह कई बार पढ़ गया, फिर भी मन नहीं भरा। **—निर्मल कयाल, डिब्रूगढ़**

जुलाई अंक में डेविड जे. डेल का लेख 'हिंदी में शुद्ध लेखन बहुत कम है' पढ़कर उनके हिंदी-प्रेम के बारे में जानकारी प्राप्त हुई। कितने दुःख की बात है कि विदेशों में हिंदी को एक महान भाषा के रूप में जाना जाता है, लेकिन हम भारतीय हिंदी की उपेक्षा कर रहे हैं।

—विष्णुकुमार चौहान, उज्जैन;
अजयकुमार जैन, नजीबाबाद

युद्ध समाप्त नहीं हुआ

जुलाई अंक में प्रकाशित रोचक लेख 'फॉकलैंड : अभी युद्ध समाप्त नहीं हुआ' इस दिशा की ओर संकेत करता है कि अर्जेंटाइना देर-सवेर फॉकलैंड पर अपना दावा जाहिर करने के लिए हथियार उठाएगा ही। पर ब्रिटेन की साम्राज्यवादी एवं उपनिवेशवादी नीति अब और अधिक चलने की नहीं है। फॉकलैंड पर इतनी अच्छी सामग्री अन्यत्र पढ़ने को नहीं मिली। लेखक को बधाई।

—सुमनकुमार सिंह, सुपौल; सुशीलकुमार मिश्र, अजीतमल (इटावा); संजयकुमार जैन 'पथिक', इलाहाबाद; वीरेंद्र शर्मा 'कौशिक', छतरपुर; अरुणकुमार सिंह, मुंगेर; कुंवर राकेशचंद्र, गोंडा

जुलाई अंक में स्थायी स्तंभ 'आस्था के आयाम' के अंतर्गत जलगांव-महाराष्ट्र की कुमारी रजिया पटेल द्वारा सिनेमा जाने के प्रश्न पर मुस्लिम महिलाओं के लिए दिये गये अन्यायपूर्ण फरमान के विरुद्ध किया गया संघर्ष, निश्चय ही देश की अनेक महिलाओं को अपने प्रति किये जानेवाले अन्याय के विरुद्ध संघर्ष करने की प्रेरणा देगा। **—शकुनचंद गुप्त विशारद, लालगंज; एल. के. प्रधान, मनेंद्रगढ़; दीप न. नैथानी, पौड़ी गढ़वाल**

जुलाई अंक में प्रकाशित दिनेशचंद्र दुबे की कहानी 'एक कैदी की आत्मकथा' हृदय को झकझोर गयी। पुलिस कर्मी के संदेहप्रद कार्य-प्रणाली और हमारी रु ग्रस्त सामाजिक मानसिकता का विकृत स्वरूप समाज व देश के लिए कितना घातक है, इस विषय पर कहानी आत्मनिरीक्षण व आत्मशोधन के लिए विवश करती है। **—रामेश्वर 'सजल', भांडेर**

जुलाई अंक में रामनाथ बक्षी का लेख 'उग्र : मैंने हनुमान चालीसा की चोरी की' मार्मिक एवं प्रेरणास्पद लगा। ऐसे लेख हम-जैसे नवोदित रचनाकारों के लिए मार्गदर्शक सिद्ध होंगे।

—अशोकसिंह एम. ठाकुर, नांदेड़ (महाराष्ट्र)

'कादम्बिनी' : एक सहारा

मैं पिछले दो वर्ष से लगातार बीच-बीच में अस्पतालों में दाखिल रहता आ रहा हूं। अपने-पराये किनारा करते गये हैं, लेकिन 'कादम्बिनी' बराबर मेरे लिए एक सहारा बनी हुई है।

लुई

जुलाई अंक में राकेश त्रि शासक रहा। लेख 'मारीशस में लो गंगा ने गोद में ने अ ने ध र त तो ी। नहीं के करती

सुनील निगम, कानपुर

हंसी के झरते आंसू

'कादम्बिनी' के मई अंक में प्रकाशित 'हंसी के झरते आंसू' शीर्षक लेख के लेखक डॉ. देवव्रत जोशी हैं। इस लेख पर भूल से किसी अन्य लेखक का नाम प्रकाशित हो गया, जिसके लिए खेद है। **—संपादक**

अमृता प्रीतम का पता

इस अंक में अमृता प्रीतम से भेंटवार्ता : 'यह ककनूसी नस्ल की जीत है' प्रकाशित हुई है। अमृता प्रीतम का पता है—के-२५, हौज खास, नयी दिल्ली-११००१६

स्पष्ट हो जाता है कि इस कथा के पंवारे के रूपों में लोरिक नाम ही मिलता है। इसे भारतीय दृष्टि से लोलार्क का प्रतिरूप माना गया है। फारसी परंपरा में चांद का अधिक महत्त्व है, इसी कारण चौदहवीं शती में मौलाना दाऊद ने 'चांदायन' नाम से इस कथा को लिखा, न कि लोरिकायन नाम से। चांदायन में लोरिक, भारतीय ज्योतिष के अनुसार लोलार्क को ही द्योतित करता है। **--डॉ. शिवकुमार शांडिल्य, प्रवक्ता : मु. वि. वि. अलीगढ़**

जुलाई अंक में अचला नागर की कहानी 'अपना घर' इस सिद्धांत को कि 'चादर उतनी फैलाओ, जितनी लंबी हो, अगर ज्यादा फैलाने की कोशिश की तो फट जाएगी' को चरितार्थ करती है। अगर इस सिद्धांत का पालन नहीं किया [illegible] परिवार पूर्व के कष्टों, असुविधाओं [illegible] कष्टप्रद वातावरण [illegible]

रात का खतर[illegible] [illegible]र; मायने में अन्य चारों प्रसिद्ध उप[illegible] से कम नहीं है। ऐसी विशिष्ट कृति पर सलमान रशदी बधाई के पात्र है

--कृष्णशंकर भटनागर, सहारनपुर

उपन्यास विशेषांक के रूप में अगस्त अंक प्राप्त हुआ। 'एक मंत्री की मौत' औ 'राष्ट्रपति जनता के कटघरे में' उपन्यासो ने बेहद प्रभावित किया।

'हमारे मुल्क का नाम गोरखपुर है' में लेखक श्री गुंजेश्वरी प्रसाद ने एक ऐसे कमजोर अल्पवर्ग की व्यथा अंकित की है,

जुलाई अंक में डॉ. श्यामसिंह शशि का लेख 'राम की भूली-बिसरी संतानें' पढ़कर हार्दिक सुख मिला। डॉ. शशि की इस मान्यता की पुष्टि 'महाभारत' (२२/-२८/४९, पूना संस्करण) में सहदेव की यात्रा के संदर्भ में आया 'रोमा' शब्द से भी होती है--

अंताखी च रोमा च भवनानां पुरं तथा
दूतैरेव वशे चक्रे करं चैनानदापयन्

रोम की 'टाइबर' नदी का नाम प्राचीन उल्लेखों में 'रमान' आज भी उपलब्ध है, जिसके किनारे बसे 'रोम' को 'रूमा' (कालांतर में रोमा) जाति के लोगों द्वारा बसाये जाने का उल्लेख भी मिलता है। डॉ. शशि का यह शोधपूर्ण लेख पुराणों की महत्ता भी सिद्ध करता है।

--डॉ. योगेन्द्रनाथ शर्मा 'अरुण', रुड़की

मई अंक में विलास गुप्ते ने अपनी कहानी 'आदि-पीड़ा' में न जाने किस जन्म का गुस्सा आदिवासियों पर निकाला है! मैं पिछले कई वर्षों से आदिवासियों के क्षेत्र में रहा हूं। आदिवासियों और उनकी संस्कृति से मेरा अच्छा परिचय भी है। वे वैसे नहीं हैं, जैसा कि लेखक ने दिखाया है। लेखक ने शायद, अपने एक-दो दिन के अनुभव के आधार पर ही सारे आदिवासियों को 'महुआ पीनेवाला' समझ लिया है। काश! वे सच्चाई जान लेते तो अच्छा होता।

--जे. एम. के. राकेश, 'मनु', हजारीबाग;
रामबेटी देवी, हरदोई

सही यह है

जून अंक में 'जहां जिंदा व्यक्ति दफन है नींव में' शीर्षक लेख में दिया गया वृतांत तो सही है, लेकिन यह तथ्य सही नहीं है कि जोधपुर दुर्ग की नींव राजिया भांवी की नरबलि पर पड़ी है। क्योंकि व्यास मोतीलाल शर्मा और पणिया गोवर्धनलाल के 'पुष्करणा सज्जन चरित्र' (५ दिसंबर, १९३० को प्रकाशित संस्करण) में यह उल्लेख मिलता है कि पुष्करणा समाज के गणपति उपाध्याय, जिन्हें महाराजा जोधाजी ने सिंध से बुलाया था, ने अपने पुत्र मोरध्वज को आदेश दिया था कि वह दुर्ग के निर्माण के लिए प्राणोत्सर्ग करे। पिता की आज्ञा मानकर वह नींव में समा गया। उसी के नाम पर किले का नाम 'मोरध्वज' रखा गया। कहते हैं, जिस स्थान पर यह किला बना है, वहां पहले चिड़ियानाथ नाम के कोई संत रहते थे, जिन्हें जबरन हटा दिया गया था। उसके शाप के कारण किले के निर्माण में बाधाएं आ रही थीं जिनकी निवृति नर-बलि से ही हो सकती थी। मोरध्वज के बलिदान के कारण ही राठौर और पुष्करणा कुल के घनिष्ठ संबंध बने। **—बृजमोहन व्यास, जोधपुर**

जुलाई अंक में प्रकाशित नवीन नौटियाल का लेख रोचक जानकारी तो देता है, साथ में भ्रामक जानकारी भी। दरअसल, यहां औरत मर्द पर शासन नहीं करती, बल्कि पेट भरने के लिए मर्द के कंधे से कंधा मिलाकर कठिन श्रम करती हैं। दूसरे, इस प्रदेश के पानी में कुछ ऐसी विशेषता है, जिसके कारण औरत मर्द की अपेक्षा कहीं अधिक स्वस्थ व बलिष्ठ होती हैं और अधिक काम कर पाती हैं। तीसरे, औरतें घर का काम चारपाई पर बैठकर इसलिए करती हैं कि यहां सांप, जोंक और मच्छरों का बहुत जोर रहता है।

—गोपाल अधिकारी, विराटनगर (नेपाल)

जून अंक में 'नेपोलियन की दुर्भाग्यपूर्ण वसीयत' लेख में एक ओर तो पृष्ठ १०० पर लुई नेपोलियन को नेपोलियन बोनापार्ट का पुत्र लिखा गया है और दूसरी ओर पृष्ठ ९९ पर लिखा गया है कि नेपोलियन बोनापार्ट के पुत्र की मृत्यु अल्पायु (१८३२) में ही हो गयी थी।

तथ्य यह है कि लुई नेपोलियन (१८०८-१८७३) नेपोलियन बोनापार्ट का पुत्र न होकर भतीजा था। उसका पिता लुई बोनापार्ट था, जो हालैंड का शासक रहा।

—सुनील निगम, कानपुर

हंसी के झरते आंसू

'कादम्बिनी' के मई अंक में प्रकाशित 'हंसी के झरते आंसू' शीर्षक लेख के लेखक डॉ. देवव्रत जोशी हैं। इस लेख पर भूल से किसी अन्य लेखक का नाम प्रकाशित हो गया, जिसके लिए खेद है। **—संपादक**

अमृता प्रीतम का पता

इस अंक में अमृता प्रीतम से भेंटवार्ता : 'यह ककनूसी नस्ल की जीत है' प्रकाशित हुई है। अमृता प्रीतम का पता है—के-२५, हौज खास, नयी दिल्ली-११००१६

र १९८२ म

तंत्र विशेषांक

र्ष तंत्र विशेषांक की एक-एक प्रति सौ रुपये तक में
बी गयी, ऐसी हमें शिकायतें मिली थीं। हम नहीं चाहते कि
हमारे पाठकों और एजेंटों को फिर परेशानी उठानी पड़े।
इसलिए एजेंट अधिकतम प्रतियां कितनी चाहते हैं, तुरंत
सर्कुलेशन मैनेजर, हिंदुस्तान टाइम्स लि., १८-२० कस्तूरबा गांधी
मार्ग, नयी दिल्ली, को लिखें। पाठक अपनी प्रतियां या तो एजेंटों
से सुरक्षित करा लें, या हमें लिखें। मूल्य वही केवल तीन रुपये।
डाक-व्यय अलग।

सचित्र पृष्ठों में

श्री यंत्र

बगलामुखी यंत्र

कुछ चौंकानेवाले प्रश्न

○ विठूर का शव क्या अब भी सुरक्षित है?

○ नरौली के बालक: इस एक वर्ष की अवधि में उन्होंने क्या किया?

○ वह तैरता हुआ पत्थर: रहस्य क्या है?

कुछ विशेष रचनाएं

○ तंत्र-साधना के पीठ, जहां आज भी सिद्धि प्राप्त की जा सकती है।

○ जड़ी-बूटियों की तांत्रिक उपयोगिता

○ चमत्कारी मंत्र और उनकी प्रयोग-विधि

○ तंत्र-मंत्र-यंत्र की वैज्ञानिक व्याख्या

तांत्रिकों का देशव्यापी मायाजाल

रहस्य-रोमांच से भरी कुछ
अविश्वसनीय-सी प्रेत-कथाएं

○ डॉक्टर, जिसे प्रेत ने पटका

○ रोशनी करनेवाली आवाज

○ अपने आप जल उठनेव

○ लोग

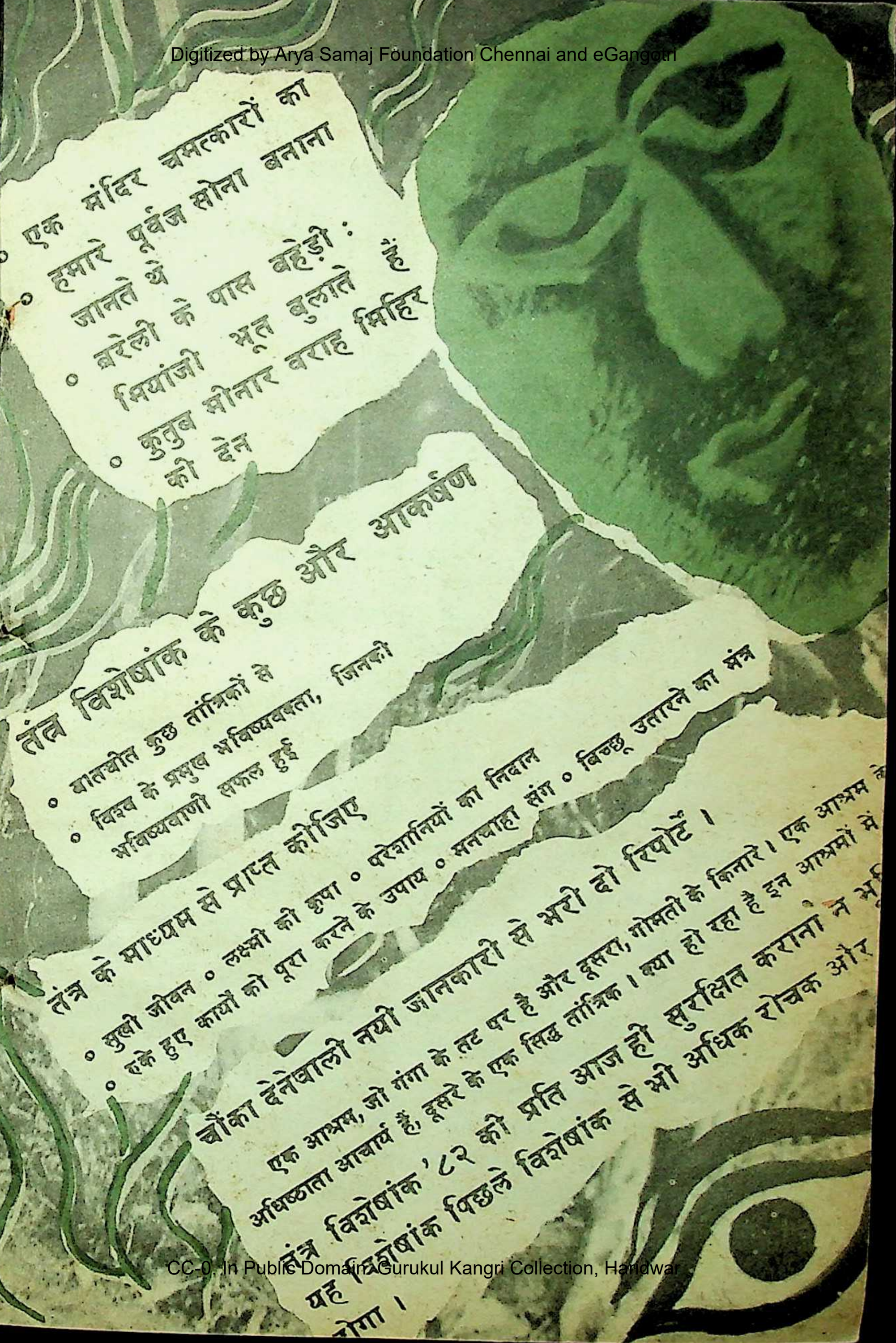

- ○ एक मंदिर चमत्कारों का
- ○ हमारे पूर्वज सोना बनाना जानते थे
- ○ बरेली के पास बहेड़ी : मियांजी भूत बुलाते हैं
- ○ कुतुब मीनार वराह मिहिर की देन

तंत्र विशेषांक के कुछ और आकर्षण

- ○ बातचीत कुछ तांत्रिकों से
- ○ विश्व के प्रमुख भविष्यवक्ता, जिनकी भविष्यवाणी सफल हुई

तंत्र के माध्यम से प्राप्त कीजिए

○ सुखी जीवन ○ लक्ष्मी की कृपा ○ परेशानियों का निदान ○ रुके हुए कार्यों को पूरा करने के उपाय ○ मनचाहा संग ○ बिच्छू उतारने का मंत्र

चौंका देनेवाली नयी जानकारी से भरी दो रिपोर्टें ।

एक आश्रम, जो गंगा के तट पर है और दूसरा, गोमती के किनारे। एक आश्रम के अधिष्ठाता आचार्य हैं, दूसरे के एक सिद्ध तांत्रिक। क्या हो रहा है इन आश्रमों में

तंत्र विशेषांक '८२ की प्रति आज ही सुरक्षित कराना न भू

यह विशेषांक पिछले विशेषांक से भी अधिक रोचक और

ोगा ।

वर्ष २२ : अंक ११
सितम्बर, १९८२

कादम्बिनी

आकल्पं कवि नूतनाम्बुदमयी कादम्बिनी वर्षतु

लेख एवं निबंध

राजेन्द्र अवस्थी
ये धार्मिक-केंद्र २२
जनी माथुर
ारत का डिसने-लैंड ३०
ी. आर. मानकेकर
ब्रिटिश झंडा ४२
ॉ. एस. आर. राव
ंसार की सबसे पहली लिपि . . ५०
ॉ. सज्जनकुमार देवड़ा
ुंहासे : इलाज संभव है ६०
ुब्रमण्य भारती
कसान डाकू बन जाता है ६२
जनारायण काक
क बूंद पानी के लिए ६५
ारायण, भक्त
ंस की संतान हैं ये संथाल ६८

तरुण विजय

यह ककनूसी नस्ल की जीत है . . ८२
बी. आर. पद्म
जले शमा हुस्न की ९०
श्यामलाल श्रीमाली
मेला घोड़ों का ९६
विजयनारायण भारद्वाज
शेर का आतंक १०१
महेंद्र साईजी माकिनो
उपासक-धर्म का उपदेश १०८
डॉ. रामानंद तिवारी
प्रेम के पंचामृत ११६
हरिशंकर परसाई
नारे और अखबारी टिप्पणी . . १२२
रमेश बेदी
अभयवन में १३४
शिशिर
चितकबरा मोती १४६

स्थायी स्तंभ

ब्द-सामर्थ्य--३, समय के हस्ताक्षर--५, आस्था के आयाम--८, वचन-वीथी--९, तिक्रियाएं--१०, काल-चिंतन-१८, विधि-विधान (राम प्रकाश गुप्त)-५६, ीपिकाएं--५९, बुद्धि-विलास--७३, हंसाइयां--८८, हंसिकाएं-(डॉ. सरोजनी प्रीतम)--८९, गोष्ठी--९८, तनाव से मुक्ति (डॉ.सतीश मलिक)--१५५, ज्ञान-गंगा--१६६, योतिष : समस्या और समाधान (आचार्य कृष्णकुमार गुप्त)--१७१, प्रवेश--१७४, यी कृतियां--१८०, घरेलू उपचार (कविराज वेदव्रत शर्मा)--१९१

ुखपृष्ठ : टी. चंद

शिवकुमार
देखिए परदे पर १५१
सुदीप
केंचुए भी आयात किये जाते हैं . . . १५८
राजशेखर
लेखक सीमाओं में १६७
प्रो. के. ए. दुबे पद्मेश
यह महीना और आपका भविष्य . . . १८२

कहानी एवं हास्य-व्यंग्य

वलीद स्वाह
राइफल का मूल्य ३५
पृथ्वीराज मोंगा
तुम लौट आओ ७४
जगन्नाथप्रसाद दास
असलियत १२५
चन्द्रा औलक
आईना एक मंदिर १४०
महेन्द्रकुमार मिश्र
स्वागतम १६२

कविताएं

जफर अहमद
बरसात : दो अनुभूतियां ४१
सुनीता बुद्धिराजा / मंजरी वर्मा
बेझिझक सूर्य / जुगनू-सा मन . . . ६६
राजकुमारी रश्मि / मीरा जैन
होश में होता / खुशबुओं की राह . . . ११४
सुरेश कुमार / रमेश कौशिक
सहरा-सहरा चांद / जंगल में आग... ११५

सार-संक्षेप

थामस मान
एक जादूगर का खौफनाक अंत . . . १८५

संपादक
राजेन्द्र अवस्थी

कार्यकारी अध्यक्ष :
एस. एम. अग्रवाल
हिंदुस्तान टाइम्स प्रकाशन समूह

संयुक्त संपादक :
शीला झुनझुनवाला
सह-संपादक : दुर्गाप्रसाद शुक्ल
उप-संपादक :
प्रभा भारद्वाज, डॉ. जगदीश चंद्रिकेश, भगवती प्रसाद डोभाल, सुरेश नीरव, धनंजय सिंह, चित्रकार : सुकुमार चटर्जी
प्रूफरीडर : स्वामी शरण
पता : संपादक—'कादम्बिनी' हिंदुस्तान टाइम्स लि., १८-२०, कस्तूरबा गांधी मार्ग, नयी दिल्ली-११०००१
वार्षिक मूल्य : ३८ रुपये

एक पाठिका का प्रश्न : ऐसा क्यों है ?

○ एक का देना दान है

○ दूसरे का देना रिश्वत

●

—सामान्य पारिभाषिक दृष्टि से उत्तर सहज है : दान अपेक्षा की आकांक्षाओं से दूर है, रिश्वत का मूल स्रोत ही अपेक्षा है। वह मूर्च्छा में पड़े रोगी की तड़पड़ाहट है !

—वैसे संभावनाओं की आहट कुछ गहरे संकेत भी देती है। चलिए, हम आपको चारागाहों में ले चलें।

—तोते के पंख की तरह हरित-चारागाहों का विस्तार; स्वच्छंद चरते हुए घोड़े, गाय, बैल और बकरियां। अलस सुबह चलनेवाले आदमियों के नंगे पैर, स्वास्थ्य-रक्षा का एक माध्यम !

—सभी कुछ शांत है, केवल पक्षियों का कलरव है, जो किसी संगीत से कम नहीं। यह कल्याणकारी गाथाओं की भूमि है।

—घास को अपेक्षा नहीं है।

—घास इसीलिए प्रतिरोध नहीं करती।

—घास कोई अवरोध खड़े नहीं करती।

—घास एक विश्वास है : चारागाह कभी मरते नहीं, आज चरी हुई घास फिर कल अपने आकार में आ जाएगी।

●

—अब चलिए, बाजार चलें। चारागाहों से काटी गयी घास की मंडी है यह। कटी हुई घास स्टोर में बंद है। ट्रेक्टरों, बैलगाड़ियों पर लदे गट्ठे बाजार की ओर चले आ रहे हैं। उनके साथ लोलुप दृष्टि है !

—घास यह भी तो है, परंतु—

○ नहीं, यहां पक्षियों के घोंसले नहीं हैं !

○ पक्षियों के कूजन से यह भू-स्थली अभिषिक्त नहीं हो सकती !

- ○ इस घास की कीमत है, वह मुफ्त नहीं मिल सकती !
- ○ कोई गाय धोखे से मुंह मार दे, तो उसकी पीठ पर डंडा पड़ेगा !
- ○ विक्रेता क्रूर जल्लाद है : जरूरत है तो लो, भूल जाओ वरना !

—यहां घास खरीदना एक तरह की रिश्वत है।

—सुलभ उपलब्ध वस्तु को दुष्टता से काटकर लाना और अपने लघु श्रम के लिए अधिक मांगना दान की परंपरा के बाहर है।

—वही चारागाह, वही घास, लेकिन दो स्थितियों में उसके आयाम बदल गये हैं !

●

—हर देश में एक सत्ता होती है, सत्ता स्वच्छंद और निरंकुश नहीं हो सकती।

—कुएं के पाट की तरह सत्ता बंधी हुई है, उससे आपेक्षित वस्तु वैसे ही निकाली जा सकती है, जैसे कुएं में बाल्टी डालकर लोहे के लघु पहिये से रस्से के सहारे पानी निकाला जाता है।

—बंधी हुई सत्ता को हर काम बनाये गये नियमों के आधार पर करना होगा। इसलिए किसी भी देश में कोई काम कानून के विरुद्ध नहीं हो सकता।

—अर्थ यह हुआ कि रिश्वत भी कानून के भीतर नहीं खायी जा सकती।

—फिर ?

—मनुष्य की बौद्धिक चेतना परिभाषाएं बदलने में हमेशा सक्षम रही है !

—एक शब्द उठाकर यहां से उधर करना पर्याप्त है। इस प्रक्रिया में पवित्र राम, मरा बन जाता है।

—सत्ता के बनाये नियम मात्र काले अक्षर हैं; सदाचारी-सत्ता के आधीन वे ही स्वर्णाक्षर बन जाते हैं !

—रिश्वत मृत्युदंड के लिए फांसी-घर में जाते समय कैदी को पहनायी जानेवाली काली टोपी है !

—काला यानी अंधेरा, अंधेरे में भला काले अक्षर दिखेंगे ?

—अंधकार में क्या नहीं होता—मरण से सृजन तक सारी घटनाएं और दुर्घटनाएं।

—सृजन भी स्वच्छ होगा, यह निर्णय आज तक किसी न्यायालय ने नहीं दिया : क्यों लड़ते अन्यथा हम चोर, डाकुओं और हत्यारों से !

—काले अक्षरों पर पलीता लगाना आसान है।

—पलीता लगाकर बौद्धिक क्षमताएं सहारा लेती हैं : पात्रता की, योग्यता की।

—कौन निर्धारण करेगा इसे, यह समीक्षा का प्रश्न है; नहीं, शायद सुविधा का प्रश्न है !

—निर्धारण शक्ति है—कुरसी यानी सत्ता।

●

—काले अक्षरों की परिभाषाएं सत्ताधारी के हाथ में पारस पत्थर है !

—वही योग्यता भी सिद्ध करता है !

—हर योग्य व्यक्ति क्या सचमुच निष्पक्ष अपनी क्षमताओं की दुहाई के बल पर न्याय पा सकता है? ... शायद नहीं ...! योग्यता का संबंध अब क्षमताओं से कम रह गया है।

—मशीनी युग में आधुनिक उपकरण जीवंत क्रियाशीलता में विराम लगाना चाहते हैं !

—तब कुरसी या सत्ता आपके अधिकार का निर्धारण करेगी।

—आसान है सोचना : उसे देना ही तो है—जनता के उपयोग के लिए, देश की समृद्धि ...!

—किसे दे वह !

—अंधे की तरह हाथ उठाकर किसी को भी वह स्वर्णपात्र नहीं थमाएगा।

—वह स्वर्णपात्र का मूल्य चाहेगा, यही चाहना 'रिश्वत' है !

—इसलिए भी 'रिश्वत' है कि किसी कुरसी ने नियमों के दायरे में, अपनी निजी परिभाषाओं के बल पर स्वर्णपात्र के अधिकारी को खोजा है। यह एक व्यक्ति की खोज है !

—दूसरा शेयर बाजार का दलाल है !

—बोली की भाषा यहां है 'चुप' !

—'चुप्पी' के भी अर्थ होते हैं। इन अर्थों को समझा जा सकता है !

—इसमें लाभ के ग्रह-योग सत्ताधारी और धन देनेवाले दोनों के पक्ष में है।

—आम के पेड़ पर पत्थर मारिए, आम गिरेगा। धन लगाइए, धन बरसेगा।

—धन लगाने की अनुमति सहज नियमों से मिल जाए, तो प्रश्न ही न उभरे; पात्रता की परिभाषा इसी अनुमति को रिश्वत में बदल देती है !

●

—चारागाह वही है: स्थितियां भिन्न हैं, व्यक्ति भिन्न है !

—एक स्थिति में उदार घास की तरह वह धन दे देता है जनोपकार के लिए, मूल्यों की रक्षा के लिए, ईश्वरीय संकल्प के लिए अथवा आपकी आवश्यकता के लिए। अपेक्षा उसके लिए सुंदर स्त्री के सिर पर रखा हुआ कलश है !

—अपेक्षा उसकी शांति है !

—दूसरी स्थिति में श्रम का पहाड़ा और पात्रता की सार्वभौमिकता का एकीकरण है: तब दृष्टि कलश में नहीं, उसके भीतर होती है। वह कलश पर रखे दीपक के निर्ममतापूर्वक अंधकार का अंग बना देता है।

—अंधकार का सौदा न तो साध्वी सेविका के श्वेत वस्त्र हैं और न सरस्वती नदी की बारीक रेखा। यही सौदा तब दान की जगह रिश्वत में बदल जाता है।

—रिश्वत का एक खंड दान भी हो सकता है और दान का अंश रिश्वत भी बन सकता है !

—समूची प्रक्रिया देने-लेने में है और मनुष्य के भीतरी वातायनी फैलाव में है !

—उस विस्तार में धब्बा होगा, तो वह सहज ही दान से रिश्वत में बदल जाएगा।

●

—सच पूछिए तो अकेला 'देना' शब्द बहुत अस्थिर है; वह समय की चुनौतियों पर कब तक टिका रहेगा, कौन जानता है ?

—'देने' के साथ 'लेना' जोड़ देने से 'लेन-देन' बन जाता है—लेन-देन हम पुरा-पड़ोस में भी करते हैं, दोस्तों के बीच भी होता है और वही व्यापक बनकर माध्यम के सहारे स्वार्थ की दीवारों से टकराकर दो अजनबियों में भी हो सकता है।

—ऐसे अजनबी कभी एक-दूसरे के दोस्त नहीं होते: दोनों अपराध के पिंजड़े के पंछी हैं, मौका मिलते ही उड़कर अलग हो जाएंगे।

●

—वास्तव में एक का देना दान है, क्योंकि वह देते समय आंख मूंद लेता है और विस्मृति के गर्भ में डूब जाता है।

—दूसरे का देना रिश्वत है, क्योंकि लेनेवाले और देनेवाले—दोनों की आंखें और विस्फारित हो जाती हैं और उसी क्षण से दोनों के मस्तिष्क में शंका और लोलुपता की क्षीण बाल-रेखा उभर आती है। रिश्वत सचमुच में एक वेश्या है, दान देवालय है !

110513

प्रि० - काव्य

जिम जोंस, जिसने अपने सैकड़ों अनुयायियों को जहर पीने के लिए विवश किया . . . 'चिल्ड्रन ऑव गॉड' संप्रदाय, जहां महिलाएं पुरुषों के लिए मात्र मछली हैं। एक शोध से पता चला है कि नये धार्मिक केंद्र मानसिक-विकृतियों को जन्म दे रहे हैं।

नये धार्मिक केंद्र मानसिक रोग फैला रहे हैं

● राजेन्द्र अवस्थी

सैलिसबर्ग !

स्विटरजलैंड में ज्युरिख से कुछ मील चलने के बाद पहाड़ों और झील के किनारे एक छोटा-सा गांव मिलता है —सैलिसबर्ग। यहीं झील के किनारे एक जगह एक स्तंभ लगा हुआ है और उस जगह का नाम है—रुतली। सन १२९१ में यहीं से स्विटजरलैंड की स्वाधीनता का उद्घोष किया गया था। रुतली के इसी स्मारक के ऊपर अब तीन-चार होटलों को खरीदकर एक पूरा केंद्र बना लिया गया है। इस केंद्र की स्थापना १२ जनवरी, १९७६ को की गयी थी। यह केंद्र वास्तव में केंद्र नहीं है, बल्कि एक 'विश्व-सरकार' है। नाम है—'वर्ल्ड गवर्नमेंट ऑव दि एज ऑव एनलाइटनमेंट।' इस सरकार का संचालन करते हैं—महर्षि महेश योगी। कहा गया है कि दुनियाभर के मनुष्यों में चेतना जागृत करने के लिए और एक-एक आदमी को क्रियाशील बनाने के लिए इस सरकार की स्थापना की गयी है। दुनिया के हर देश में वैज्ञानिक तरीके से रचनात्मक बौद्धिकता की स्थापना भावातीत योग द्वारा करना इस सरकार का उद्देश्य है।

'विश्व-सरकार' जिसमें मंत्री भी हैं

कुछ वर्ष पहले मैं सैलिसबर्ग गया था और यहां की समूची संरचना देखकर

मुझे आश्चर्य हुआ था। आश्चर्य हुआ यह जानकर कि वह 'विश्व-सरकार का केंद्र' है। इसे 'विश्व-सरकार' की राजधानी भी कहा जा सकता है। कार्य-प्रणाली के लिए यहां १० मंत्रालय हैं, जैसे—शिक्षा एवं विकास मंत्रालय, सूचना एवं प्रेरणा मंत्रालय, शोध एवं विकास मंत्रालय, स्वास्थ्य मंत्रालय इत्यादि अलग-अलग इसी तरह के मंत्रालय हैं। प्रत्येक मंत्रालय का एक मंत्री है, फिर एक मुख्यमंत्री है, गवर्नर है, और इन सबके ऊपर इस सत्ता के स्वयंभू सर्वाधिपति नेता हैं—महर्षि महेश योगी। यहीं पर संयुक्त राष्ट्र संघ की तरह 'विश्व-सरकार' की कार्यवाहियों को संचालित करने के लिए 'एसेंबली हॉल' है। किसी जमाने में यहां कुछ नहीं था और महर्षि महेश योगी भी भारत में ऋषिकेश और अन्य स्थानों में आध्यात्मिक केंद्र चलाया करते थे। महर्षि महेश योगी यानी महेश प्रसाद श्रीवास्तव। उनसे मैं अपरिचित इसलिए नहीं रह सकता, क्योंकि हम दोनों जबलपुर के ही निवासी हैं। अब तो इस 'विश्व-सरकार' की अनेक शाखाएं दुनियाभर में फैली हैं और इनका लाखों–करोड़ों का बजट है। यह सूचना देने का उद्देश्य आलोचना करनो नहीं है, लेकिन अपने मूल प्रश्न पर आने के लिए कुछ ऐसे स्वयंभू-देवताओं की चर्चा करना बहुत जरूरी है।

स्वयंभू देवता

ऐसे स्वयंभू देवताओं में दूसरे व्यक्ति हैं—रजनीश कुमार जैन। इसे भी सौभाग्य या दुर्भाग्य मानिए कि ये भी जबलपुर के

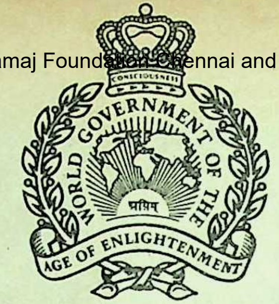
CONSCIOUSNESS
WORLD GOVERNMENT OF THE AGE OF ENLIGHTENMENT

THE MINISTRY OF NATURAL LAW AND ORDER
WORLD GOVERNMENT OF THE AGE OF ENLIGHTENMEN

महर्षि महेश योगी द्वारा संस्थापित विश्व-सरकार के प्राकृतिक नियम एवं व्यवस
मंत्रालय की सील। सामने के पृष्ठ पर भी इसी सरकार के एक अन्य मंत्रालय की सी

आसपास यानी कि गाडरवारा के रहनेवाले हैं। पहले वे आचार्य फिर उसके बाद भगवान रजनीश बन गये। अपनी सभी प्रेमिकाओं को महायोगमाया की पदवी से विभूषित कर उन्होंने एक आश्रम की शुरुआत की। जहां तक मुझे याद है सबसे पहले माउंट आबू में 'भगवान' रजनीश की छवि उभरकर आयी, जब उन्होंने बड़े-बड़े घर के व्यापारियों और कई युवा लोगों को अपनी सम्मोहन-शक्ति से नंगे होकर नाचने के लिए बाध्य किया। प्रश्न उठा राजस्थान की एसेंबली में तो वहां से 'भगवान' बंबई भागे और फिर पूना में जाकर टिक गये। अब तो वहां से भी वे चले गये हैं और लॉस एजंल्स में नया केंद्र स्थापि
कर रहे हैं। शायद, विदेशों की धर
ज्यादा फलवती है।

मुझे यह सोचने के लिए बाध्य किया गया था कि मेरा मस्तिष्क मेरा दुश्मन है। मुझे चौबीसों घंटे लगातार दिया गया नारा ही बोलना चाहिए, ऐसा कहा गया।

दिव्य-दृष्टि के करि

कुछ वर्षों पहले रांची में मैं प्रभा
रंजन सरकार से उनके मुख्यालय में मिल
था। दरवाजे के बाहर दो बंदूकधा
संतरी सुरक्षा-गार्ड के रूप में खड़े थे। य
केंद्र था—आनंदमार्ग संप्रदाय का। इसक
इतिहास विस्तार से बताना इसलिए जरू
नहीं है, क्योंकि पाठक जानते हैं कि हत्
प्रताड़ना और गैर-सामाजिक कार्यों
संचालन के लिए उन पर न्यायालय
बहुत समय तक मुकदमा चलता रह
स्वयं सरकार की पत्नी ने यह बयान दि
था कि उनके पति ने कई आनंदमार्गि
की हत्याएं की हैं। सरकार ने कुछ ऐ
छवि बनाकर रखी थी कि कौन आनं
मार्गी कहां जाता है, उनकी दिव्य-दृ
सब देखती रहती है। अपने करिश्मों
उन्होंने कई दिमागों को अपने कब्जे
कर लिया था।

संप्रदाय-संपन्न भा

भारत में संप्रदायों की कमी नहीं है

WORLD
GOVERNMENT
OF THE AGE OF
ENLIGHTENMENT

INTERNATIONAL
CAPITAL
OF THE AGE OF
ENLIGHTENMENT

जय गुरुदेव, हरेकृष्ण, डिवाइन लाइट, प्रजापति ब्रह्मकुमारी आश्रम और ऐसे न जाने कितने धार्मिक केंद्र हैं, जो यहां की जनता को बराबर आकर्षित करते हैं। इनमें कई जाने-माने और विख्यात व्यक्ति भी शामिल हो जाते हैं। विजयानंद, विनोद खन्ना, आई. एस. जौहर, जौहर का लड़का, सुप्रीम कोर्ट के एक विख्यात रिटायर्ड जस्टिस और सत्ता के बड़े पदों पर आसीन कुछ व्यक्ति इन संस्थानों की शोभा बढ़ाते हैं।

प्रसंगवश मुझे जार्ज टॉउन की घटना याद आती है, जहां जिम जोंस ने अपने अनुयायियों को एक दिन एकत्रित किया था। एक के बाद एक उसने सारे अनुयायियों को जहर पीने के लिए बाध्य किया और वे सब जहर पीकर मर गये। सर्कस के रिंगमास्टर की तरह वहां के अनुयायी जानवर बन गये थे। ऐसी स्थितियों में, वास्तव में आदमी ठहर जाता है और उसकी चेतना-शक्ति निष्क्रिय हो जाती है। इनसे अंधविश्वास को जन्म मिलता है और गीता में भगवान कृष्ण द्वारा दिया गया यह उपदेश कि 'हमें जिंदगी में हर स्थिति में कर्म करते रहना चाहिए, निष्प्राय और निष्फल सिद्ध हो जाता है।

दिमाग मुझे दे दो

'डिवाइन लाइट मिशन' के अधिष्ठाता गुरु महाराजजी का कहना है—'क्योंकि तुम्हारे मस्तिष्क में घोर अशांति है, इसलिए उसे मुझे सौंप दो, इससे मुझे कोई पीड़ा नहीं पहुंचेगी।' यूनिफिकेशन चर्च के रेवरेंड मून (जिनका समुदाय अमरीका में बहुत सक्रिय है) कहते हैं, 'मैं तुम्हरा मस्तिष्क हूं।' चर्च ऑव साइंटोलोजी के रॉन ह्यूबर्ड का महावाक्य देखिए, 'साइंटोलोजी से विचार-नियंत्रण की एक प्रभावशाली प्रणाली प्राप्त की जा सकती है। इसके उपयोग से प्रत्येक आदमी को अपनी इच्छा से वश में

अमरीका में हाल ही में एक रिपोर्ट प्रकाशित हुई है, जिसके अनुसार वहां पांच धार्मिक संप्रदाय ऐसे हैं, जिन्होंने मनुष्य की चेतना और क्रियाशीलता को नुक्सान पहुंचाया है।

किया हुआ दास बनाया जा सकता है।’

इन चौंका देनेवाले तथ्यों के बावजूद भारत ही नहीं, बल्कि दुनियाभर की जनता अंधविश्वास में पड़ी हुई है। अमरीका में तीन वर्षों तक लगातार शोध करने के बाद इस निष्कर्ष पर पहुंचा गया है कि धर्म के नाम पर स्थापित इन संस्थाओं के कारण ९०० से भी अधिक अमरीका-निवासियों को गुआयना के घने जंगलों में अपने प्राण देने पड़े हैं। इसके बावजूद वे संप्रदाय उसी ठाठ के साथ चल रहे हैं, बल्कि उनकी सदस्यता बढ़ती ही जा रही है और उनके सदस्यों में चेतना तब उभरती है, जब वे लगभग पागलपन की स्थिति में पहुंच जाते हैं।

महर्षि महेश योगी

आचार्य रजनीश

रेवरेंड मून

संप्रदायों के गुरु व्यक्ति के दिमाग को किस तरह वश में करते हैं इसकी एक घटना मैं बताना चाहूंगा। यह बात उन दिनों की है, जिन दिनों मैं ‘चेन-स्मोकर’ था। (अब तो मैं सिगरेट छूता भी नहीं) विदेश में एक संप्रदाय केंद्र तक जाते समय मैंने कार में सिगरेट जलानी चाही, तो ड्राइवर ने कार वहीं रोक दी और बोला, “सर, हमारे गुरु ने सिगरेट और शराब पर एकदम पाबंदी लगा रखी है।”

मैंने कहा, “ये पाबंदी आप पर होगी। मुझ पर कैसे लगायी जा सकती है। यदि आप जिद करेंगे तो मैं आपके आश्रम नहीं जाऊंगा।”

इस पर उसने बहुत विनम्रता से मुझसे कहा, “आप कार से उतरकर सिगरेट पी लीजिए, उसके बाद ही हम आगे चलेंगे।”

कार चलानेवाला यह व्यक्ति कनाडा का धन-संपन्न और पढ़ा-लिखा आदमी था। उसने बताया, “हमारे आचार्य दिव्य-दृष्टा हैं और इस समय हम क्या कर रहे हैं यह भी वह देख रहे हैं।”

मैंने उसकी ओर मुसकराकर देखा, “भाई चलो, मैं सिगरेट नहीं पीऊंगा।” लगातार मैं यह सोचता रहा कि किस तरह मनुष्य के दिमाग को एक आदमी खरीदकर अपने पास गिरवी रख लेता है। ठीक यही बात प्रभात रंजन सरकार आनंदमार्गियों से कहा करते थे कि

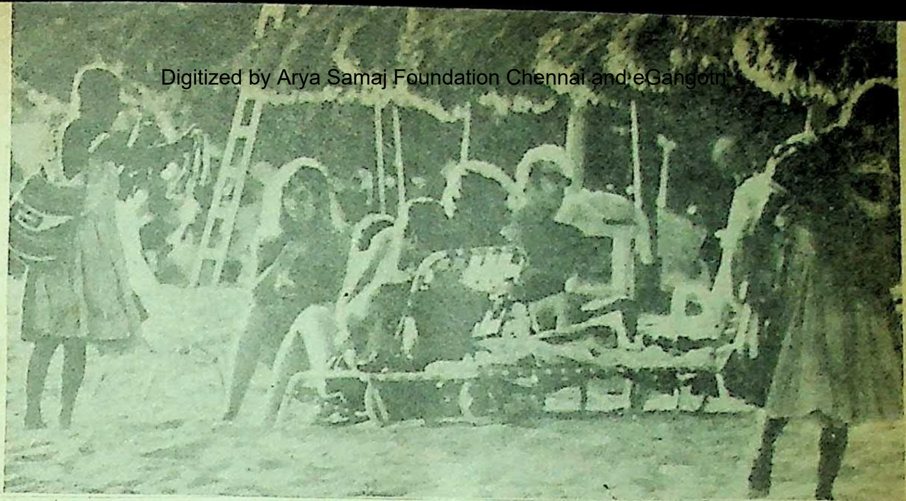

'तुम जहां भी जाते हो, जो कुछ भी करते हो, मैं सबकुछ देखता रहता हूं।'

योग के साथ भोग

इन धार्मिक-केंद्रों में कुछ नहीं होता, यह मैं नहीं कहता। वैसे इनका मूल-स्रोत भारतीय योग है। विदेशों में इसी योग को तोड़-मरोड़कर प्रस्तुत किया गया है। योग के साथ-साथ कुछ केंद्रों में भोग की क्रिया को एक आवश्यक अंग माना गया है। इसका परिणाम यह हुआ है कि बहुत से लोग यौन-विकृतियों के शिकार बने हैं। अमरीकी रिपोर्ट के अनुसार—'चिल्ड्रन ऑव गॉड' संस्थान के लोगों से पता लगा है कि अपने गुरुओं के साथ उनके यौन-संबंध रहे हैं। स्त्री संप्रदाय की महिला सदस्यों ने शोधकर्त्ताओं को बताया है कि वे पुरुष के लिए मात्र एक मछली हैं और ईसा मसीह की आत्मा को यौन-संबंधों के द्वारा शांति पहुंचाने का माध्यम हैं। कहा जाता है कि साठ प्रतिशत स्त्रियों के यौन-संबंध उस संप्रदाय के प्रमुख नेताओं से रहते हैं। यह पूरी रिसर्च भयावह आंकड़ों से भरी हुई है। उसके अनुसार इन संप्रदायों ने जो विकृतियां उत्पन्न की हैं, वे हैं—(१) बीस प्रतिशत व्यक्ति मानसिक, भावनात्मक व शारीरिक कष्टों के शिकार हुए हैं। (२) इन संप्रदायों के कारण मानसिक-तनाव की स्थितियां पैदा हुई हैं, जिनसे या तो इनका वजन बढ़ा है या घटा है। मुंहासे, खुजली, और दाद जैसे चर्मरोग के वे शिकार हुए हैं। स्त्रियों में मासिक-धर्म की बीमारियां बढ़ी हैं। (३) संप्रदाय-व्यवस्था ने सदस्यों के मन में भय, अपराध, आक्रोश, मानसिक उदासीनता और यौन अकर्मण्यता को जन्म दिया है। उनमें कई बार हिंसात्मक कार्यों की ओर बढ़ती हुई प्रवृत्ति, अपने आपको बरबाद करने की इच्छा और आत्महत्या की भावनाएं पैदा हुई हैं। (४) सदस्यों में दुःस्वप्न, मोहभंग, वर्ण-विक्षिप्तता, जैसे भयानक लक्षण देखे गये हैं।

एक संप्रदाय को छोड़नेवाले एक सदस्य ने अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त करते

कहा है, "जब मैंने वह संप्रदाय छोड़ा, तब मैं एक टूटा हुआ, बिखरा, हर चीज से भयातुर, यहां तक कि अपने आप से भी डरा हुआ, व्यक्ति रह गया था।" अमरीका में सन १९७८ में स्वास्थ्य पर जो पुस्तक प्रकाशित हुई, थी उसमें उद्धृत किया गया है कि अमरीका में अचानक व्यक्तित्व परिवर्तन एक महामारी के रूप में फैल रहा है ? इस रोग को उन्होंने 'इंफरमेशन डिसीज' कहा है। अर्थ यह था कि गलत धारणाओं और सूचनाओं तथा संवेदनाओं का मस्तिष्क में लगातार प्रभाव पड़ने से उनके स्नायु-प्रणाली में प्रभाव पड़ा है और उनके सोचने की सारी क्षमताएं नष्ट हो गयी हैं।

आरती-समारोह

यह बात सिद्ध हो चुकी है कि यदि क्रमशः कोई धारणा मस्तिष्क के भीतर पैदा की जाए तो आगे चलकर वह इतनी मजबूत हो जाती है कि उस आदमी की दूसरी चेतनाएं शून्य पड़ जाती हैं।

अमरीकी रिसर्च के अनुसार 'हरे कृष्ण संप्रदाय' में आरती-समारोह होता है। इस समारोह में दाखिल होनेवाले नये सदस्य, पुराने सदस्यों के साथ प्रकाश की जलती-बुझती क्रियाओं के साथ उछलते-कूदते हैं। बहुत तीव्र संगीत और ढोलों की आवाज में अत्यधिक सुगंधित वातावरण के बीच उन्हें शारीरिक और मानसिक रूप से निष्क्रिय कर दास बनाया जाता है। इसके बाद अपने मस्तिष्क पर नियंत्रण रखने के नाम पर अपने को समर्पित करने के लिए धीरे-धीरे बाध्य कर दिया जाता है। वे अपने परिवार और पिछले सारे क्रिया-कलापों को भूलकर उस संप्रदाय के प्रति आसक्त हो जाते हैं।

मैं नहीं जानता कि अमरीका की यह सूचना भारत में 'हरे कृष्ण-संप्रदाय' के बारे में कहां तक सच है ! इतना ही कह सकता हूं कि एक बार मैंने स्वीडन के एक भीड़-भरे बाजार में धोती-कुर्ता पहने, सिर मुड़ाये और गले में ढोलक डाले दर्जनों विदेशियों को नाचते देखा था।

वे 'हरे कृष्णा हरे रामा' का अपने ढंग से उच्चारण कर रहे थे। इस तरह स्वीडन में अपने देश के राम और कृष्ण-जैसे महान देवताओं के नामों के उच्चारण सुनकर मुझे प्रसन्नता हुई थी। लेकिन यदि इस माध्यम से संप्रदाय व्यक्तियों को निष्क्रियता की ओर ले जाते हैं, तो वह हमारे देवताओं और महापुरुषों के साथ अन्याय है। आश्चर्य तो यह है कि ईसाई धर्म में भी संप्रदायों को मान्यता प्राप्त है। कैथोलिक धर्म के माननेवाले स्वीकार करते हैं कि एक समुदाय में रहकर खाना, शराब पीना ईस. के शरीर और रिक्त के साथ मिलना है।

मस्तिष्क ही दुश्मन है

रिपोर्ट में कहा गया है कि ज्यादा नुकसान चर्च ऑव सांइटोलोजी ने किया है। एक व्यक्ति के विचारों को इन शब्दों में उद्धृत किया गया है, 'मुझे यह सोचने के लिए

बाध्य किया गया था कि मेरा मस्तिष्क मेरा दुश्मन है। मुझे चौबीसों घंटे लगातार दिया गया धार्मिक नारा ही बोलना चाहिए, ऐसा कहा गया। अमरीकी रिपोर्ट में २६२ ऐसे सदस्यों से बातचीत की गयी है, जिन्होंने अपने संप्रदाय छोड़ दिये हैं। उनके अनुसार पांच संप्रदाय ऐसे हैं जिन्होंने सबसे ज्यादा मनुष्य की चेतना और क्रियाशीलता को नुकसान पहुंचाया है। ये हैं– (१) यूनिफिकेशन चर्च (मून), (२) हरेकृष्ण संप्रदाय, (३) चर्च ऑव साइंटोलॉजी, (४) डिवाइन लाइट, (५) द वे।

शारीरिक विकृतियों का प्रतिशत इस प्रकार है–दुःस्वप्न पैदा करने का काम-४० प्रतिशत, स्मृति-क्षय–२१ प्रतिशत, मोहभंग–१४ प्रतिशत, मस्तिष्क पूर्वाग्रह–३५ प्रतिशत, हिंसात्मक प्रतिरोध–१४ प्र. श., आत्महत्या के विचार २१ प्र. श.।

अपने आपमें यह रिपोर्ट काफी लंबी है और यह सोचने के लिए बाध्य कर देती है कि भारत में चलनेवाले जिन संप्रदायों का हमने उल्लेख किया है, वे और दूसरे अन्य संप्रदायों पर इसी तरह यदि शोध किया जाए, तो उनके परिणाम काफी उपयोगी होंगे। 'डिवाइन लाइट' को अमरीका में सबसे घातक संप्रदाय कहा गया है। इसके कर्त्ता-धर्ता श्री बाल योगेश्वर ने भारत में भी क्या किया था और किस तरह अमरीका भागकर वहां विवाह किया, यह किसी से छिपा नहीं है। जरूरत है संप्रदायों की 'शल्य-चिकित्सा' की ! जो मानवता के लिए काम करें और अपने सदस्यों की अस्मिता को बचाये रखें, उनसे शिकायत नहीं होनी चाहिए। ●

पहला उपन्यास

प्रसिद्ध अमरीकी लेखक फाकनर ने सन १८२६ में अपना पहला उपन्यास 'ए सोल्जर्स पे' लिखा था। उन्होंने अपना यह उपन्यास शेर वुड ऐंडर्सन को दिखलाते हुए कहा, "यह उपन्यास आपसे प्रेरणा पाकर ही लिखा है, आप इसे मुझ से सुनें या पूरा पढ़ लें और अपनी राय दें।"

ऐंडर्सन स्थिति की जटिलता को भांप गये और बोले, "मैं तुम्हारे साथ एक सौदा करना चाहता हूं फाकनर।"

"बतलाइये क्या है वह सौदा ?'—फाकनर ने अत्यंत उत्सुकता प्रकट करते हुए पूछा।

"अगर तुम अपना उपन्यास सुनने अथवा पढ़ने के लिए मुझे मजबूर न करो, तो बदले में मैं अपने प्रकाशक को कह सकता हूं कि वह इसे प्रकाशित कर दे।"

"मुझे आपका यह प्रस्ताव स्वीकार है," फाकनर बोले।

और इस प्रकार फाकनर का पहला उपन्यास प्रकाशित हो गया। —दुर्गाशंकरत्रिवेदी

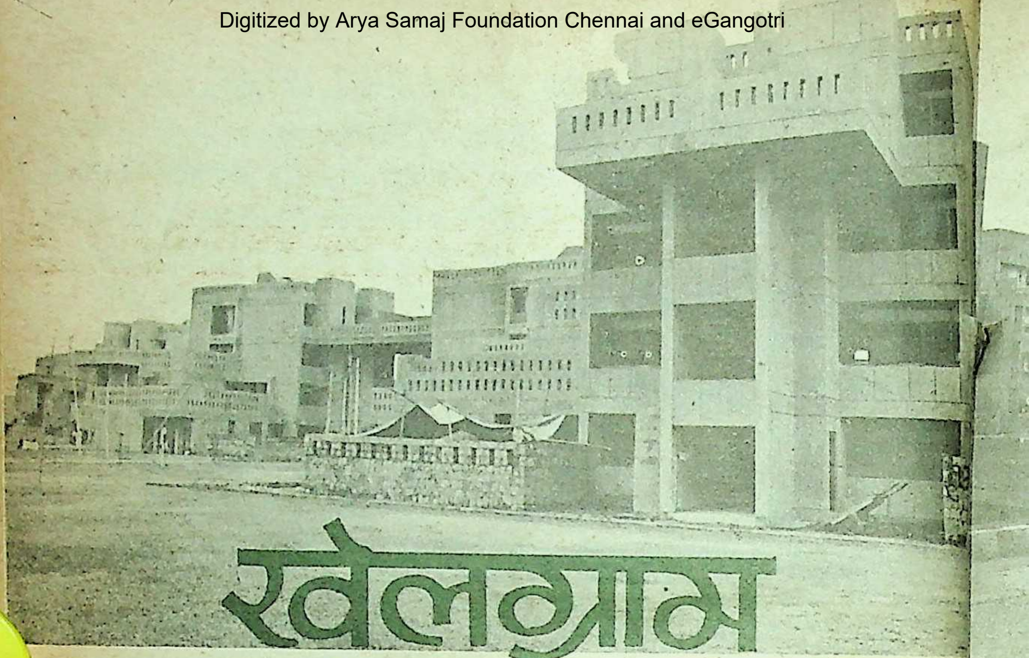

खेलग्राम

भारत में एक नया डिसने लैंड

● रजनी माथुर

मौसम बहुत सुहावना था, दूर आकाश में बादल तैर रहे थे, ठंडी हवाएं उमसभरी गरमी को जैसे-अलविदा कह रही थीं। इस सुहावने मौसम में हमारा दिन निश्चित हुआ नवें एशियन खेलों के लिए बन रहे खेलगांव को देखने का।

दक्षिणी दिल्ली के सिरी फोर्ट रोड पर १३५ एकड़ भूमि पर यह खेलगांव बनाया गया है। इसमें अनेक विशेषताएं हैं। नवंबर में एशियाई खेलों से पूर्व ही नहीं, बल्कि इसी माह सितंबर में हो रहे राष्ट्रीय खेलों में भी इसका उपयोग किया जाएगा। यहां लगभग पांच हजार खिलाड़ियों के ठहरने की व्यवस्था इस ढंग से की गयी है कि समूचा खेलगांव एक छोटा-सा बेहद खूबसूरत शहर बन गया है।

इस खेलगांव का निर्माण किया है दिल्ली विकास प्राधिकरण ने। प्रवेश करते ही बायीं ओर है विशाल स्वागत-कक्ष, तीन मंजिला भवन। अत्यंत आकर्षक होने के साथ ही इसमें स्वागत-काउंटर, पोस्ट-ऑफिस, बैंक, रेस्त्रां एवं कुछ दूकानें भी हैं। यहां की सुरक्षा-व्यवस्था बहुत कड़ी है। चाहे कोई अधिकारी हो, अथवा मेहमान उसकी यहां 'स्क्रीनिंग' (छानबीन) की जाती है। इसके लिए प्रवेश-द्वार पर एक मशीन लगायी गयी है। इसी मशीन से गुजरना होता है। इसी कक्ष से संबंद्ध है

खेलगांव में नव-निर्मित भवन

प्रशासनिक विभाग। इस विभाग की छह मंजिला इमारत है। तमाम संबंधित अधिकारियों जैसे-चेयरमैन, चीफ कंट्रोलर, पी. आई. बी., दूरदर्शन, आकाशवाणी आदि के कार्यालय हैं।

आगे चलने पर आडिटोरियम है, विशाल व वातानुकूलित; जिसमें २,५०० लोग बैठ सकते हैं। आडिटोरियम में बहुत बड़ा स्टेज है। स्टेज पर विशेष तरह की प्रकाश व्यवस्था है। आवाजों को नियंत्रित करने का अपना तरीका है, विशेष प्रकार का बना यह स्टेज अपने आप में अनूठा है।

सांस्कृतिक थियेटर में एक विशेष प्रकार की लकड़ी की स्टेज है। यह थियेटर 'वेट लिफ्टिंग' के लिए 'मिनी' स्टेडियम का भी काम देगा, यानी यही 'वेट लिफ्टिंग' प्रतियोगिता का स्थान है। इसमें 'क्लोज सर्किट' दूरदर्शन भी लगाये गये हैं।

आकर्षण का मुख्य केंद्र

खेलगांव में सर्वाधिक आकर्षण का केंद्र है 'टॉवर रेस्त्रां।' वह ग्लोब की तरह दीख पड़ता है। टावर तीन मंजिला है। पानी की टंकी के ऊपर तीन मंजिल बनायी गयी हैं। पानी की टंकी की क्षमता ४५ मिलियन लिटर की है। समस्त खेलगांव को यहीं से पानी दिया जाएगा। ऊपर तीन मंजिलों में से दूसरे और तीसरे मंजिल में रेस्त्रां है। उसमें एक डिस्को-कक्ष है और एक संगीत-कक्ष। सबसे ऊपर के भाग में एक प्रभावशाली

खेलगांव के शिल्पी : बायें से एल.आर. पाहवा, एस. सी. बसुरॉय और टी. एस. पुन्न

टेलीस्कोप लगा हुआ है, जहां से सारी दिल्ली का नजारा लिया जा सकता है।

खेलगांव का 'डाइनिंग हॉल' इतना बड़ा है कि इसमें २,००० लोग एक साथ खाना खा सकते हैं। शायद, यह देशभर में सबसे बड़ा डाइनिंग हॉल है। डाइनिंग हॉल को चार खंडों में विभक्त किया गया है। रसोईघर इतना बड़ा है कि किसी भी 'सुपर डीलक्स फाइव स्टार' होटल का रसोईघर भी इतना बड़ा नहीं होगा। इसी 'डाइनिंग हॉल' से ५,००० खिलाड़ियों को खाना मिलेगा। खाने की व्यवस्था तीन तरह की है—भारतीय भोजन, कांटीनेंटल और चीनी। इसकी व्यवस्था कर रहा है भारतीय पर्यटन विकास निगम। 'डाइनिंग हॉल' में पानी को स्वच्छ करने के लिए अलग से एक विशेष प्लांट लगाया गया है। यहां 'स्नैक बार' है, टी. वी. हैं, आर्ट गैलरी है, बड़े-बड़े 'लाउंज' हैं और गर्म पानी की भी व्यवस्था है। इसके साथ ही दो मंजिला 'कॉफी-शॉप' है, जिसमें ऑरकेस्ट्रा, डिस्को संगीत-कक्ष तथा 'बार-रूम' भी है।

शॉपिंग सेंटर

बाहर से आनेवाले अतिथियों के लिए यहां एक 'शॉपिंग सेंटर' बनाया गया है। इस सेंटर में बारह दूकानें हैं, जिनमें ब्यूटी पार्लर, फोटोग्राफर, स्टेशनरी, ड्राई-क्लीनिंग, हस्तशिल्प, ड्यूटी-फ्री शॉप, जहां खेल का सामान मिलता है, और दवाओं की भी दूकान है। यानी कि खिलाड़ियों की सुविधा के लिए यहां हर प्रकार की दूकानें हैं।

शयन कक्ष : सादगी में भी सौंदर्य

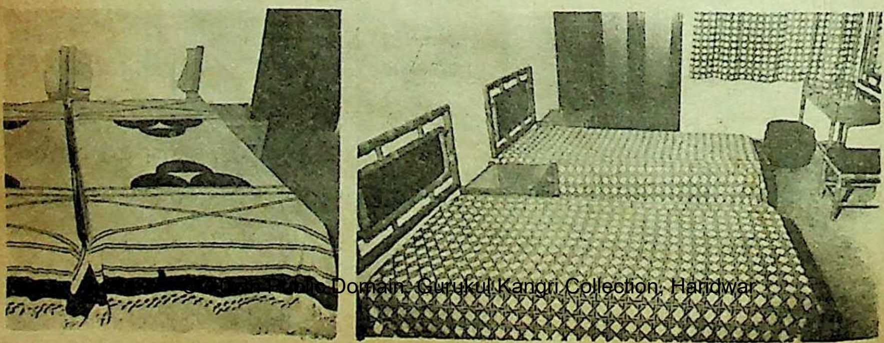

'इंडोर प्रेक्टिस' के लिए 'प्रेक्टिस हॉल' है, जो दो मंजिला है। इसमें भार उठाने, कुश्ती का अभ्यास करने आदि की सुविधाएं हैं। लंबी दौड़, ऊंची कूद, लंबी कूद, हेमर-थ्रो, फुटबॉल, टेनिस, वाली बॉल, बास्केटबॉल, जेवलीन-थ्रो आदि की प्रेक्टिस के लिए भी मैदान हैं।

खेलगांव ग्रॉल इंडिया मैडीकल इंस्टीट्यूट एवं सफदरजंग अस्पताल के बहुत पास है, परंतु फिर भी खेलगांव में ही एक 'मिनी' अस्पताल बनाया गया है। 'मिनी' अस्पताल में बीस बिस्तरों की व्यवस्था है ग्रौर विशेषज्ञ-डॉक्टरों के कमरे रेडियोलॉजी ग्रौर फिजियोथेरेपी विभाग भी हैं। इसके अलावा 'इंटेंसिवकेयर रूम' भी है। छोटे-मोटे ग्रॉपरेशन के लिए ऑपरेशन थियेटर भी हैं। ऐंबुलेंस भी हैं। एक अस्पताल की तमाम आवश्यकताग्रों से भरपूर है यह 'मिनी' अस्पताल।

इन सबसे अलग हटकर स्थापना की गयी है निवासस्थानों की, जहां खिलाड़ी सारी सुख-सुविधाग्रों के साथ ठहरेंगे। खेलगांव की सड़कें इतनी खूबसूरत हैं कि कितना भी पैदल चल लें, थकान नहीं होती। सड़क के दोनों ग्रोर पेड़-पौधे हैं, सारा दृश्य अत्यंत मोहक लगता है।

झांकी भारतीय संस्कृति की

विदेशियों को भारतीय संस्कृति से परिचित कराने के लिए सड़कों के नाम भारतीय नदियों के नाम पर रखे गये हैं। जैसे-गंगा मार्ग, यमुना मार्ग, कावेरी मार्ग, नर्मदा मार्ग आदि। इन सड़कों पर ग्रॉटो ट्रेन भी चलती है, जिससे इतने विशाल खेलगांव में यहां से वहां आसानी से आया जाया जा सकता है।

खेलगांव के टॉवर का मॉडल

यहां के निवास-स्थानों के नाम भारतीय हिमशिखरों के नाम पर रखे गये हैं। यहां कुल ८५३ मकान हैं, जो विभिन्न श्रेणी में बंटे हुए हैं, जैसे-'केटेगरी' एक, दो, तीन इत्यादि। प्रथम श्रेणी के निवास-स्थान दो मंजिला हैं, जो कॉटेज टाइप हैं। इस श्रेणियों के २०५ मकान हैं। दूसरी श्रेणी में चार मंजिला इमारत में चार कमरों के मकान हैं। उनकी संख्या पचास है। तृतीय श्रेणी में तीन बेड-रूम के मकान नीचे की मंजिल में हैं। ये संख्या में १२२ हैं।

आकर्षक और आरामदेह

मकान बाहर से देखने में आकर्षक हैं। इसके भीतर चलकर देखा जाए, तो प्रवेश करते ही तराशी हुई घास से आच्छादित सुंदर लॉन है। मकान में प्रवेश करते ही ड्राइंग रूम है, जहां डनलप के सुंदर सोफे रखे हैं। भिन्न प्रकार के प्रकाश की व्यवस्था है। हर बेड-रूम के साथ जुड़ा टेरेस है और बाथरूम भी। हर बेड-रूम में दो बिस्तर हैं। हर घर में टेलीफोन का प्रबंध है। एक बेड-रूम में दो खिलाड़ी रहेंगे।

श्री एल. आर. पाहवा खेलगांव के सीनियर प्रोजेक्ट इंजीनियर हैं। उन्होंने बताया कि पहली बार एशियन खेलों के लिए दिल्ली विकास प्राधिकरण ने इतना बड़ा कार्य किया है। यहां के मुख्य चीफ इंजीनियर हैं श्री आर. एस. जिंदल, जिनकी देखरेख में सारे काम हुए हैं। नवीन कुमार यहां के डायरेक्टर हैं।

भोजन व्यवस्था

खाने-पीने के लिए सबसे बड़ी जिम्मेदारी अशोक होटल के फ्रांसीसी चीफ एक्जीक्यूटिव शैफ श्री मांकूर की है। माकूर स्वयं विदेशी हैं और अब तक न जाने कितने विशिष्ट डिनर और लंच तैयार करवा चुके हैं। उन्होंने ऐसे मीनू तैयार किये हैं कि किसी विदेशी को भारत में भी अजनबीपन महसूस नहीं होगा। खेलगांव में भारतीय पर्यटन विकास निगम के केटरिंग विभाग के जनरल मैनेजर ने बताया कि ५,००० लोगों को एक साथ खिलाने के लिए ५०० प्रशिक्षित व्यक्तियों को रखा गया है। खाने-पीने में 'ऑलम्पिक-स्तर' को ध्यान में रखा है, यानी हर खिलाड़ी के भोजन में ५,००० केलोरीज होंगी, जिससे वह स्वस्थ रहे। आमतौर पर साधारण आदमी को १,८०० केलोरीज की आवश्यकता होती है। स्नैक्स के लिए २४ घंटे काउंटर खुला रहेगा, इसके अलावा जो लोग लंच के लिए नहीं आ सकते, उनके लिए विशिष्ट लंच-पैकिट की सुविधा है।

खेल गांव से लौटते हुए इधर-उधर पेड़-पौधों के पास झील के किनारे हमें मोर दिखायी दिये। यह अद्भुत दृश्य था। रात्रि में खेल के गांव की छटा अपने ढंग की अलग ही है। वह स्वप्न-लोक में बसी नगरी-सा दिखायी देता है। जैसे किसी ने डिसने-लैंड-जैसी चीज यहां बना दी है।

—६४१, डबल स्टोरी पलैट्स,
न्यू राजेन्द्रनगर, नयी दिल्ली-११००६०

पांच मिलीमीटर लंबे बाल पर एक लंबी कविता की खुदाई! है न आश्चर्य की बात? और यह आश्चर्य कर दिखाया है चीन के ३१ वर्षीय एक युवा कलाकार शैन बज हांग ने। यह युवा कलाकार च्यांग शु प्रोविंस के शुचाओ आर्ट्स एंड हैंडीक्राफ्टस रिसर्च इंस्टीट्यूट का छात्र है। उसने इस बाल पर एक प्राचीन चीनी कविता की खुदाई की है। इस कविता में चीनी भाषा के अट्ठाइस शब्द हैं।

—श्याम शर्मा

फिलिस्तीनी कहानी

गड़फल का मूल्य

● वलीद रवाह

संतरे की शाखें झुकी हुई थीं और उसकी पत्तियां इस तरह मुड़ी हुई थीं जैसे निद्रामग्न हों कि कोई आकर उन्हें जर्द फलों के बोझ से मुक्ति दिला दे।

ऐसे वक्त में जबकि संतरे के ऊपर शबनम की सफेद चादर-सी बिछ जाती है। फल झुककर जमीन का चुंबन ले रहे होते हैं। लड़कियां टोकरी लेकर आती हैं। उनके दिलों में सर्द आहें छुपी होती हैं और वह कभी जाहिर नहीं होने पातीं जब तक कि गालों की सुर्खी उनके दिल में छुपी हुई मुहब्बत का पता न दे दे।

ऐसी जगह पर जहां एक नौजवान अपनी प्रेमिका को तब तक नहीं मांग सकता जब तक कि फसल अच्छी न हो और जहां पर उसकी प्रेमिका पेड़ों के पास झुककर इस बात की दुआ मांगती है कि उसके प्रेमी के बाग में फल उसके बाप के बाग से ज्यादा आयें।

एक-एक दिन कर, बरसो की मुद्दत बीत जाती है। हस्सान फावड़ा लेकर रोजाना सुर्ख रेत पर चलता हुआ अपने बाग को जाता है और बाग की जमीन को इस तरह आहिस्ता-आहिस्ता खोदना शुरू करता है जैसे कि अपने किसी निकट-

हस्सान कैंप में मारा-मारा फिरता रहता है। उसकी खोजी निगाहें किसी चीज को ढूंढ़ती हुई मालूम होती हैं। जब भी उसे संतरों का कोई ढेर, दिखायी देता है तो उसे महसूस होता है कि उन्हीं संतरों की वजह से उसको देश-निकाला मिला है।

जन के शरीर पर वार कर रहा हो। वह पेड़ों तक पहुंचता है और पत्थरों को बाग के अंदर जमा करता है। और फिर जब शाम होती है तब घास पर बैठकर फलों को दूर से देखता है। उसे महसूस होता है जैसे उसके खून की बूंदें संतरों में एकत्र हो गयी हों, उसकी व्यथा की मुद्दत खत्म हो जाती है, जब वह उसको आते हुए देखता है और फिर अपने बालों में उसकी अंगुलियों की सरसराहट महसूस करता है।

'फसल अच्छी है, तुम ने मुझसे वादा किया था और हर शरीफ आदमी अपने वादे को पूरा करता है।'

'चाहे वह मेरा खून भी मांगे मैं तुम को हासिल करने के लिए अपना खून भी उसके कदमों पर बहा दूंगा।'

हस्सान फिर अपने सपनों की दुनिया से वापस लौट आता है और एक ऐसी तेज तकलीफ का उसे भास होता है, जो किसी बहुत प्यारी चीज के खो जाने पर होता है। उसने कुछ दिन पहले उससे कहा था कि उसका बाप उस्मानुलरागिब के लड़के से उसकी शादी करना चाहता है। वह इतना अमीर है कि उसके यहां सोना पानी की तरह बहता है। उसने जैनब से पूछा कि वह थोड़ा इंतजार क्यों नहीं करता तो उसने जवाब दिया., "तुम जानते हो कि वह मेरा बोझ ज्यादा दिनों तक नहीं सह सकता।"

आवाजें बंद हो गयीं, रात का अंधेरा पेड़ों की शाखों पर फैल गया करीब के महल्ले से कुत्तों के भौंकने की आवाज आने लगी। रात कुतियाने लगी।

वह उठता है और धीरे-धीरे गांव की ओर चल देता है। वह गांव के निकट पहले मकान तक पहुंचता है तो उसके दिल की धड़कनें तेज हो जाती हैं। वह थोड़े अंतराल के लिए रुकता है और खिड़की से देखने की कोशिश करता है कि शायद वह दिखायी दे जाए। काफी प्रतीक्षा के बाद वह अपने दिल में तरह-तरह की शंकाएं लिये हुए अपने घर की ओर चल देता है।

लड़की तेजी से बाग की ओर जा रही होती है। जब उसे कल की बातें याद आती हैं तब उसकी आंखों की चमक गायब हो जाती है।

उसके बाप ने कहा था, कि अब वह बड़ी हो गयी है और शादी के काबिल है। हस्सान अच्छी फसल की बाट जोह रहा है, जबकि उस्मानुल रागिव के लड़के ने मुझे सोने की सौ अशरफियां देने का वादा किया है। "जो मेरा हाल है तुम जानती हो। क्या तुम्हें दुख नहीं होता कि तुम्हारी मां नंगे पैर मीलों आती-जाती है ?"

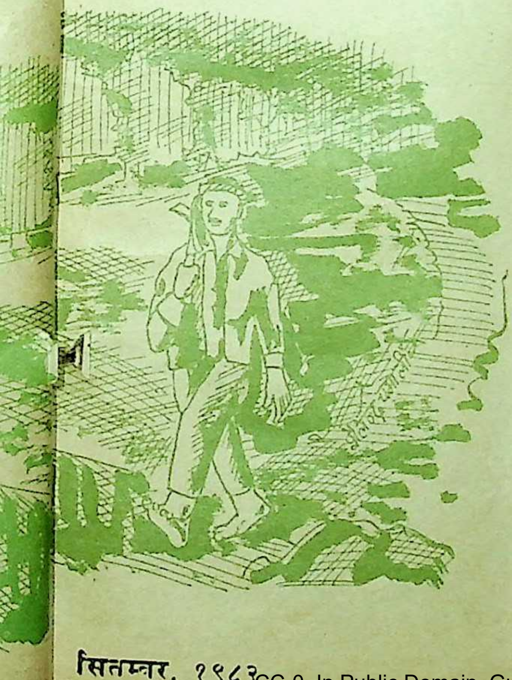

"लेकिन, तुमने तो हस्सान से वादा किया है। अगर तुम वादा तोड़ दोगे तो सारा गांव तुम्हारे बारे में क्या कहेगा ?"

"बेटी, भूख बड़ी जालिम होती है !" बाप ने कहा था।

उसने धीरे-धीरे डूबते हुए सूर्य का देखा। खाने की टोकरी भी उसे बोझ मालूम हो रही थी। उसे पीछे से किसी की पदचाप सुनायी दी। उसने जैसे ही मुड़कर देखा तो गांव के मकानात धुंए में लिपटे हुए धुंधले-धुंधले से दिखायी दे रहे थे। उसको गोलियों की आवाज दूर से आती हुई सुनायी दी।

'कल उन लोगों ने पड़ोस के गांव पर हमला कर दिया था। कौन जानता है कि हमारे गांव का नंबर कल आजाए !'

वो और तेज-तेज कदमों से चलने लगी। उसे एक बहुत ही खूबसूरत चीज दिखायी दी जिससे उसका दिल बल्लियों उछलने लगा। यह हस्सान का बाग था। पेड़ों की शाखें जमीन पर झुकी जाती थी। फल दूर से जर्द सोने के टुकड़े लग रहे थे।

साफ़, ताज़ा सांस
मज़बूत, स्वस्थ दांत

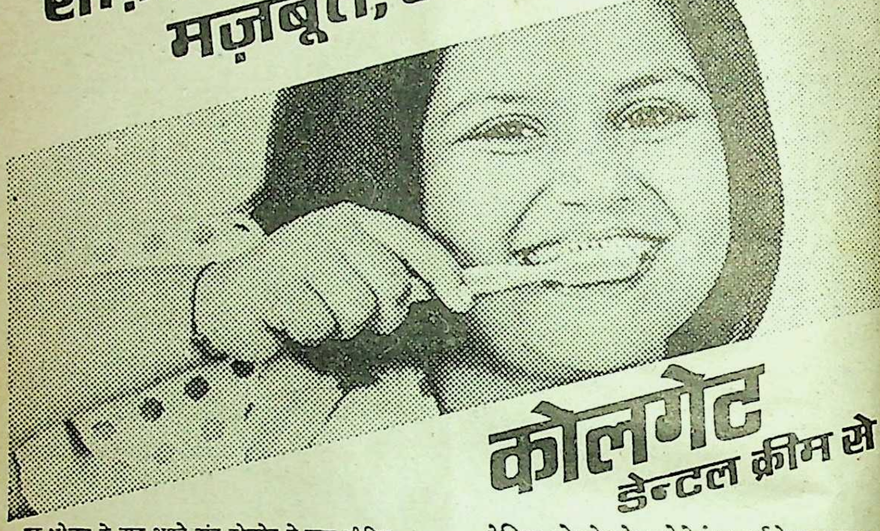

कोलगेट
डेन्टल क्रीम से

हर भोजन के बाद अपने दांत कोलगेट से साफ़ कीजिए. यह ठीक उसी तरह दांतों की रक्षा करता है, जैसे दुनियाभर के दांतों के डाक्टर कहते हैं.

दांतों में छुपे हुए अन्नकणों में कीटाणु बढ़ते हैं. इनसे सांस में बदबू पैदा होती है, और बाद में दांतों में सड़न.

इसीलिए, हमेशा भोजन के फ़ौरन बाद कोलगेट डेन्टल क्रीम से दांत साफ़ कीजिए. यह सांस को ताज़ा, दांतों को सफ़ेद और दांतों की सड़न रोकने में असरदार साबित हो चुका है.

देखिए, कोलगेट के भरोसेमंद फ़ार्मूले का काम:

दांतों में छिपे हुए अन्नकणों में, सांस में बदबू और दांत में सड़न पैदा करनेवाले कीटाणु बढ़ते हैं.

कोलगेट का अनोखा, असरदार झाग दांतों के कोने में छिपे हुए अन्नकणों को और कीटाणुओं को निकाल देता है.

नतीजा: आपके दांत आकर्षक सफ़ेद, आपकी सांस तरोताज़ा और दंतक्षय की रोकथाम.

कोलगेट का ताज़ा पेपरमिंट-जैसा स्वाद मन में बस जाता है.

**कोलगेट डेन्टल क्रीम से
सांस की बदबू रोकिए-
दंतक्षय का प्रतिकार
कीजिए...**

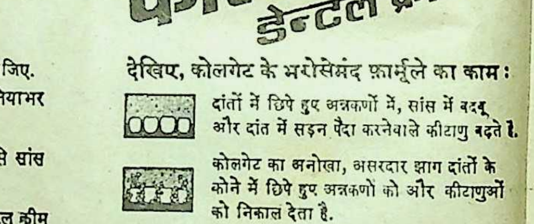

दांतों की पूरी देखभाल के लिए
कोलगेट द्वारा बनाई टूथब्रश इस्तेमाल कीजिए
तीन गुना बेहतर है.
1 दांतों के एनेमल की रक्षा करता है.
2 दांतों पर जमी परत को हटाता है.
3 मसूढ़ों की रक्षा करता है.

DC.G.74 HN

जब भी हस्सान, बाग के किनारे (नीबू) लीमूं के पेड़ के पास मेरी बाट देखता है और जब मैं उसके करीब पहुंच जाती हूं तब वह मुझ से कहता है कि 'इस बार तो फसल बहुत अच्छी है। तुम परेशान न हो। जल्दी ही मैं तुम्हारे बाप से बात करूंगा।'

लीमूं के पेड़ के पास से गुजरते हुए शरमाकर पीछे झुककर देखा। लेकिन वह नजर नहीं आया। उसने चारों ओर नजरें दौड़ायीं लेकिन वह कहीं भी नहीं दिखायी दिया। इसलिए वह अपने बाग की तरफ तेज-तेज कदमों से चल दी।

"जैनब, आज तुमने देर कर दी, भूख बहुत जालिम है बेटी!"

उसने खाने की टोकरी संतरे के एक बहुत बड़े पेड़ के पास रख दी। वह बाप के पास गयी। तो उसने अपना फावड़ा उसे दिया। जैनब धीरे-धीरे मिट्टी खोदने लगी। उसका बाप टोकरी के पास जाकर जमीन पर बैठ गया। और खाना खाने लगा। जब भी जैनब की निगाहें बाप की तरफ उठतीं, तब वह उसको अपनी तरफ उदास नजर से देखता हुआ पाता था।

"मुझे तुम्हारे रवैये में अजीब-सी तब्दीली महसूस हो रही है बेटी। यहां आओ, मैं तुमसे कुछ बात करना चाहता हूं!"

उसने देखा कि वह किसी कदर खुश होकर खाना खा रहा है और खाना खाते हुए उससे बात भी कर रहा है।

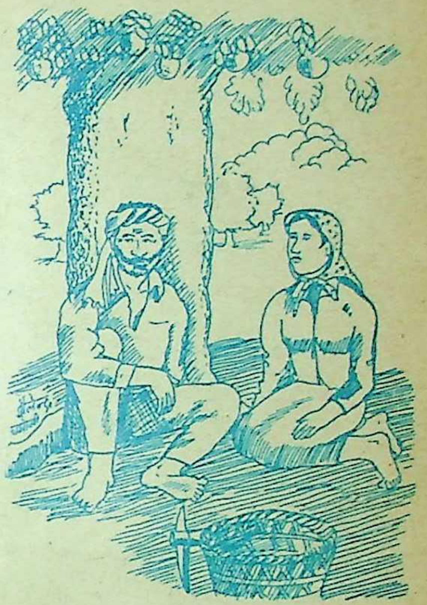

"जैनब, हस्सान थोड़ी देर पहले मेरे पास आया था और बहुत देर मुझ से बातें करता रहा।"

जैनब ने एक आह भरी। उसके होंठों पर एक अजीब-सी मुस्कान फैल गयी। उसकी भृकुटियां तन गयीं।

जैनब ने कहा, "फिर उसने क्या किया?"

वो खड़ा हो गया और करीब जाकर उसके कंधों पर हाथ रखकर कहने लगा—

"जैनब सुनो यहूदी हमारे गांव पर हमला करने का प्लान बना रहे हैं हस्सान कह रहा था कि मंगनी एक साल के लिए और टाल दूं। उसने एक राइफल के बदले अपना बाग बेचने का सौदा कर लिया है।

जैनब की खाली-खाली नजरें क्षितिज पर जमकर रह गयीं। उसके गुलाबी कपोलों पर आंसुओं की एक बूंद ढलक आयी और होठों के पास आकर रुक गयी। उस दिन की डायरी में हस्सान ने लिखा—

उन्होंने झुककर जमीन को चूमा रेत सुर्ख हो गयी और मैं जमीन पर चेहरा रखकर लेट गया। किसीने मुझसे पानी मांगा। मैंने उससे कहा कि "मैं तुम्हें अपनी पीठ पर लेकर चल तो सकता हूं मगर दूंगा कुछ नहीं। हम लोगों को सिखाया गया था कि किसी भी जख्मी आदमी को पानी न दिया जाए वरना वह उसकी जान ले लेगा।"

यहूदियों ने गांव को लूट लिया था। हमारी राइफलें पुरानी थीं। गोलियों का एक डिब्बा एक जान के बराबर कीमती था।

उसका कोई दोस्त नहीं था—सिर्फ सन्नाटा और कैंप का साया। हर सुबह हस्सान निकल जाता और दोपहर को वापस आता।

"क्या तुमने जैनब को देखा है जिसके गले में तक्लीफ और परेशानियों का हार है? उसने भी अच्छी फसल के सपने देखे थे, जो अच्छी होकर भी अच्छी नहीं हुई!"

हस्सान कैंप में मारा-मारा फिरता रहता है। उसकी खोजी निगाहें किसी चीज को ढूंढ़ती हुई मालूम होती हैं। जब भी उसको शहर में संतरों का कोई ढेर दिखायी देता है तो उसे महसूस होता है कि उन्हीं संतरों की वजह से उसको देश निकाला मिला है। संतरों के ढेर के पास वह जाकर रुक जाता है और एक संतरा खरीदकर उसको निचोड़ने लगता है। संतरे से टपकता हुआ रस उसे खून की तरह नजर आता है और जब वह उसे चखता है तब एक दम उसे अपने बाग की याद आने लगती है—वही बाग जहां बारूद की दुर्गंध इत्र की सुगंध से ज्यादा अच्छी थी और जहां एक राइफल हजारों जमीनों के बराबर थी।

—अनुवाद : पाकीजा हकीक

रेलगाड़ी अपनी रफ्तार से चली जा रही थी। दूसरे दर्जे के यात्री डिब्बे में बैठे थे। एक व्यक्ति ने अपने सामने अखबार पढ़ रहे एक मुसाफिर से कहा, "भाई साहब, क्या आप अपना चश्मा मुझे कुछ समय के लिए देंगे?"

मुसाफिर ने शराफत से चश्मा उन्हें दे दिया।

अब वह व्यक्ति चश्मा अपनी जेब में रखकर बोला, "भाई साहब, बिन चश्मे के तो आप पढ़ नहीं सकते, इसलिए कृपया अपना अखबार भी मुझे दे दीजिए।"

—सुरेन्द्र श्रीवास्तव

बरसात:
दो अनुभूतियां

(एक)

ये मौसम
जो लहराता है
कमरे की
खिड़कियों के
शीशों पे
किरचियां
इसकी
चुन-चुन के
सोचता हूं
ऐसा ही कुछ
चुभता होगा
उसे भी
मौसम बरसात का

(दो)

बाजार के बीचों बीच
आज बरखा और बरसात ने
कैसा दिलचस्प जादू किया
अचानक
वह मेरी छतरी तले
मुझसे आन मिला
कतरा-कतरा टपका किया
बूंद बूंद बरसा किया
आज बरखा और बरसात ने
कैसा दिलचस्प जादू किया !

—जफर अहमद

—११, प्रताप पार्क, गवर्नमेंट फ्लैट्स,
रेजिडेंसी, श्रीनगर-१९०००१

१५ अगस्त, १९४७! स्वाधीनता की खुशी में भीड़ नारे लगा रही थी--'जयहिंद'--'पंडित माउंटबेटन की जय!' गवर्नर-जनरल की बग्घी भीड़ में खोये बच्चों को राहत पहुंचानेवाली बचाव-दल की बग्घी बन गयी थी! भीड़ में फंसे माउंटबेटन ने संकेत किया और फिर किसी राज-नेता ने नहीं, बल्कि भारतीय आम जनता के प्रतीक साधारण सिपाही ने सबसे पहले तिरंगा झंडा लहराया।

पिछले अंक में पाठकों ने पढ़ा कि किस तरह रियासतों को भारतीय संघ में शामिल कर देश को खंड-खंड होने से बचाया गया, यहां प्रस्तुत हैं: श्री डी. आर. मानकेकर के कुछ और संस्मरण।

एक पत्रकार की डायरी के कुछ पृष्ठ--२

ब्रिटिश झंडा एक भारतीय सिपाही ने उतारा था!

● डी. आर. मानकेकर

१५ अगस्त, १९४७। स्वतंत्रता दिवस! जैसे-जैसे यह तिथि पास आ रही थी, मेरा मन उत्साह-उत्तेजना के साथ तरह-तरह की आशंकाओं से भी घिरा जा रहा था। एक सवाल था—क्या मैं अपने अखबार को इस ऐतिहासिक घटना की कहानी भेज नहीं पाऊंगा और इस तरह अपनी नियति से मुलाकात करने में असफल रहूंगा! इस घटना की खबर भेजने के लिए मैं महीनों से आतुरता से प्रतीक्षा कर रहा था। तैयारियों में जुटा था।

क्या विभाजन के कारण 'पक्षाघात की शिकार' देश की संचार-व्यवस्था के फलस्वरूप मुझे नीचा देखना पड़ेगा? क्या मेरे अखबार को संवाद-समिति द्वारा भेजी गयी इस युग की महानतम घटना की खबर ही छापनी पड़ेगी और मुझे

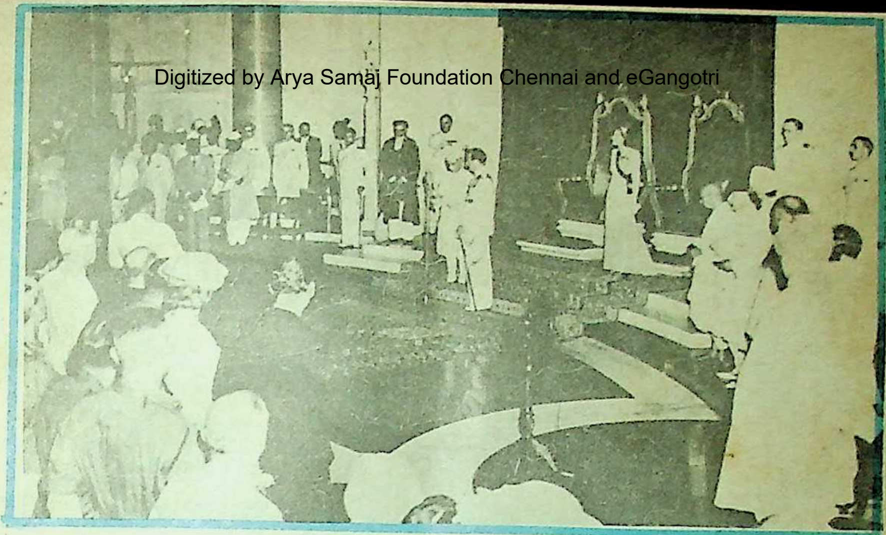

ऐतिहासिक मध्यरात्रि में शपथ-समारोह

यह अपमानजनक स्थिति देखनी पड़ेगी ?

यह महान ऐतिहासिक घटना १४-१५ अगस्त की मध्यरात्रि को ठीक बारह बजे घटनी थी। देश में रात के दो से तीन बजे के बीच अखबार छपने के लिए प्रेस में चले जाते थे। यह समारोह जल्दी से जल्दी १२।। बजे ही खत्म हो पाता। इसके बाद खबर तैयार करनी थी और इस जश्न को मनाती भारी भीड़ को चीरते हुए मुझे लगभग तीन फर्लांग दूर स्थित जनपथ के तारघर पहुंचना था।

अस्त-व्यस्त संचार व्यवस्था

अच्छी से अच्छी स्थिति में भी प्रेस-तार को नयी दिल्ली से बंबई पहुंचने में तीन घंटे लगा करते थे। विभाजन के कारण अस्त-व्यस्त तार-विभाग अब इस काम को छह घंटों में निपटाता था।

उन दिनों यह आरोप लगाया जा रहा था कि अंतरिम सरकार में संचार विभाग के मुस्लिम लीगी मंत्री अब्बदुरब निश्तर तार-टेलीफोन विभाग के बेहतर उपकरण विमान में लादकर कराची ले गये थे और अपने पीछे एक परित्यक्त तार-टेलीफोन-व्यवस्था छोड़ गये थे ! यह आरोप सच भी हो सकता है, और झूठ भी, फिर भी यह तो सही था कि तार, जैसे-तैसे चलकर अपनी मंजिल पर पहुंचते थे और टेलीफोन-संबंध तो जुड़ ही नहीं पाते थे !

फिर भी मैं इतना तो जरूर स्वीकार करूंगा कि सन १९८० में डाक-तार की व्यवस्था की तुलना में, जब कि तार नियत स्थान पर पहुंचते ही नहीं, और एस. टी. डी. सुविधा टेलीफोन-संपर्क के बीच दीवार बन गयी है, उन दिनों हम लोग कम से कम अपने अखबारों को खबर तो भेज ही पाते थे।

सत्ता-हस्तांतरण की इस ऐतिहासिक घटना को 'कवर' करने के लिए मैंने सोच-विचारकर एक योजना बना

ली थी। सबसे पहले मैंने सुबह ही विभिन्न नंबरों पर अपने बंबई कार्यालय के लिए छह-छह मिनट के चार लगातार 'फिक्सड टाइम' 'टेलीफोन काल' 'बुक' करा लिये थे। उनमें से पहला 'काल' एक बजे होना था। मेरा अनुमान था कि रात साढ़े बारह बजे तक समारोह खत्म हो जाएगा, और मैं संसद के सेंट्रल हाल से कार द्वारा पांच मिनट में इंपीरियल होटल के अपने कमरे में पहुंच जाऊंगा। और पहले 'काल' के समय--१ बजे--तक शुरू में भेजी जानेवाली 'भूमिका' लिख डालूंगा।

आधी रात के बारह बजे जब सारी दुनिया गहरी नींद में सोयी होगी, तब भारत जिंदगी और आजादी के बीच जागेगा

पूर्वाभ्यास समारोह की कच्ची रपट

मैंने एक और सावधानी बरती। उसी रात होनेवाले समारोह का पूर्ण पूर्वाभास दिन में सेंट्रल हाल में हुआ था और मैं उसमें भी शामिल हुआ। यह पूर्वाभास संविधान-सभा के सचिव एच. टी. आर. आयंगार की देख-रेख में हुआ था। मैंने सारे परिदृश्य का, मानचित्र का सावधानी से अध्ययन किया और कुछ 'नोट्स' भी लिखे। मैंने आयंगार से भी बात की और समारोह की मुख्य विशेषताओं की जानकारी ली।

उसके बाद मैंने विस्तृत विवरणवाली आठ सौ शब्दों की एक अग्रिम 'स्टोरी' तैयार कर ली और उसे दोपहर चार बजे इस निर्देश के साथ बंबई आफिस को भेज दिया कि वे इसे तैयार करा लें और टेलीफोन पर मेरा निर्देश पाते ही उसे 'रिलीज' कर दें। मैंने बंबई-कार्यालय को यह भी सूचित किया कि मैं रात में समारोह के आंखों देखे हाल की एक रिपोर्ट टेलीफोन पर सुनाऊंगा, यदि टेलीफोन-संपर्क जुड़ पाया तो !

देशभक्त कर्मचारियों का सहयोग

बाद में मुझे एक सुखद अनुभव हुआ। डाक-तार विभाग में देशभक्त और उत्साही कर्मचारी थे और उन्होंने इस ऐतिहासिक घटना की खबर ले जानेवाले प्रेस-तारों को भेजने और टेलीफोन-संपर्क जोड़ने के लिए कोई कसर शेष न रखी। चार बजे तार द्वारा भेजी गयी मेरी अग्रिम खबर सात बजे गंतव्य स्थान तक पहुंच गयी। यही नहीं, मेरे 'फिक्सड टाइम काल' भी समय पर लग गये।

वेशभूषाओं का सजीव संग्रहालय

उस रात का दृश्य मुझे आज भी याद है। प्रेस गैलरी से मुझे गांधी टोपियां ही टोपियां नजर आ रही थीं। कहीं-कहीं औपचारिक काली वेशभूषावाले लोग भी थे। काली टोपियां, अचकन, रंगबिरंगे राजस्थानी फेंटे, दक्षिण भारत की सुनहरी जरी की सफेद पगड़ियां—सब आपस में मिली जा रही थीं। महिला-सदस्याएं बेहतरीन साड़ियों में आयी थीं—रंग-

विरंगी बनारसी और कांजीवरम की किनारदार साड़ियों ने रंगों के मेले का समां बांध दिया था।

फ्रैंक एंथोनी के नेतत्व में एंग्लो-इंडियन लोगों का एक छोटा-सा समूह अपनी यूरोपीय वेशभूषा में नजर आ रहा था—औपचारिक काला सूट और सफेद 'बो-टाई।' एक सह-अस्तित्व था—धोती, चूड़ीदार, लुंगी और पश्चिमी पतलूनों के बीच ! दरअसल यह भारतीय वेशभूषाओं का एक सजीव संग्रहालय था—जो 'भारत की विविधता में एकता' की भावना प्रतिपादित कर रहा था

नयी दुनिया में प्रवेश की रात

जैसे ही रात के ठीक बारह बजे का घंटा हुआ, सेंट्रलहाल का गुंबद 'भारत माता की जय', 'महात्मा गांधी की जय' के नारों और शंख-ध्वनि से गूंज उठा। यह शंख पंडित गोविंदवल्लभ पंत चुपके से सेंट्रल हाल में ले आये थे और शंख बजाते समय उनके देवदूतों-जैसे गाल हवा के दबाव के कारण फटे-से जा रहे थे।

उस रात नेहरूजी का भाषण प्रेरणादायी था। उन्होंने घोषणा की—'वर्षों पहले हमने नियति से वायदा किया था और अब समय आ गया है, जब हम अपनी शपथ का औपचारिक नहीं, पूर्ण यथार्थता के साथ पालन करें। आधी रात के बारह बजे, जब सारी दुनिया गहरी नींद में सोयी होगी, तब भारत जिंदगी और आजादी के बीच जागेगा।'

लार्ड माउंटबेटन नेहरूजी और चक्रवर्ती राजगोपालाचार्य के साथ

नेहरूजी ने बड़ी विनम्रता के साथ उपस्थित समुदाय को याद दिलाया कि आजादी और हुकूमत अपने साथ जिम्मेदारियां भी लाती हैं और आनेवाला भविष्य आसानी का या आराम का नहीं है। उसमें हमें लगातार कोशिशें करनी हैं ताकि हम अक्सर ली जानेवाली अपनी शपथों के अलावा आज की ली जानेवाली शपथ को पूरा कर सकें।'

उन्होंने आगे कहा, 'एक ऐसा समय आता है, और वह जरूर आता है, पर कभी-कभी। इतिहास में ऐसा वक्त कभी-कभी ही आता है, जब हम पुरानी दुनिया से निकलकर नयी दुनिया में प्रवेश करते हैं, जब एक युग खत्म होता है और जब लंबे समय तक दमन की शिकार किसी राष्ट्र की आत्मा जुबान पाती है।''

ऐतिहासिक घड़ी के भाषण

'फ्रीडम एट मिडनाइट' के लेखकों ने लिखा है कि नेहरूजी का यह भाषण

लार्ड माउंटबेटन पत्नी एडोना एवं पुत्री पामेला के साथ

समय-स्फूर्त था अर्थात उन्होंने उसे पहले से तैयार नहीं किया था। यह गलत है। नेहरूजी ने यह भाषण बड़ी सावधानी के साथ तैयार किया था। जिस ऐतिहासिक घड़ी में उन्हें यह भाषण देना था, उसके प्रति वे पूरी तरह सचेत थे। दरअसल, इस भाषण का मसविदा कुछ चुने हुए लोगों के हाथों से गुजरा भी था, ताकि जरूरत के अनुसार उसमें संशोधन या सुधार किया जा सके। इन लोगों में से एक थे सर गिरिजाशंकर वाजपेयी। वे विदेश मंत्रालय के प्रथम महासचिव थे और नेहरूजी के विश्वासपात्रों में से। उस समय मुझसे बातचीत के दौरान सर वाजपेयी ने यह दावा किया था कि उस शानदार भाषण में उन्होंने अंगरेजी के मूल शब्द 'डेस्टनी' के साथ 'डेट' की जगह 'ट्रिस्ट' (साक्षात्कार)—शब्द सुझाया था।

तत्कालीन संविधान सभा के अध्यक्ष डॉ. राजेन्द्रप्रसाद ने एक प्रस्ताव के साथ समारोह की समाप्ति की। प्रस्ताव में कहा गया था, वायसराय को औपचारिक रूप से सूचित किया जाए कि (१) भारत की संविधान सभा ने भारत के शासन का अधिकार संभाल लिया है। (२) भारत की संविधान सभा ने इस सिफारिश की पुष्टि कर दी है कि १५ अगस्त, १९४७ से लॉर्ड माउंटबेटन भारत के गवर्नर जनरल बनें।

लॉर्ड माउंटबेटन को इन दोनों संदेशों को पहुंचाने के लिए डॉ. राजेन्द्र प्रसाद और पंडित नेहरू कार द्वारा गवर्नमेंट हाउस, (जो तब राष्ट्रपति भवन नहीं कहलाता था) गये।

खाली बंद लिफाफा

गवर्नमेंट हाउस में अंतिम ब्रिटिश वायसराय इन दोनों नेताओं की प्रतीक्षा में थे। राजेंद्र प्रसादजी ने बड़ी गरमजोशी के साथ माउंटबेटन से हाथ मिलाया, पर मारे उत्तेजना के वे उन पंक्तियों को कहना ही भूल गये, जिनके द्वारा उन्हें माउंटबेटन से स्वतंत्र भारत का गवर्नर जनरल बनने का अनुरोध करना था। बाद में नेहरूजी ने उन्हें इशारा कर इस बात की याद दिलायी तो 'राजेन्द्र बाबू' ने माउंटबेटन से अनुरोध की औपचारिकता निभायी।

माउंटबेटन ने बड़ी तत्परता से यह निमंत्रण स्वीकार कर लिया। साथ ही इस बात का वचन भी दिया कि वे गवर्नर

जनरल के रूप में भारत की सेवा करेंगे।

नेहरूजी ने माउंटबेटन को एक लंबा लिफाफा दिया। इसमें उनके प्रथम मंत्रिमंडल के सदस्यों की सूची होनी थी, पर बाद में पता चला कि लिफाफा तो खाली था। इस पर माउंटबेटन ने जोरदार ठहाका लगाया। शाम की भागदौड़ और उत्तेजना-भरे वातावरण में कोई लिफाफे में सूची रखना ही भूल गया था।

गांधीजी की अनुपस्थिति

विडंबना ही थी कि इस अवसर पर महात्मा गांधी उपस्थित नहीं थे। महात्मा गांधी—जिन्होंने आजादी की शानदार लड़ाई का नेतृत्व किया था, राष्ट्रपिता उस समय कलकत्ता में थे—राजनीतिक नेताओं द्वारा भारत माता की निर्ममता-पूर्वक की गयी काटछांट के शिकार लोगों के घावों की मरहम-पट्टी कर रहे थे, उनके आंसू पोंछ रहे थे।

उस रात अपने अखबार को भेजे गये 'डिस्पैच' की अंतिम पंक्तियां मुझे आज भी याद हैं। मैंने लिखा था—"इस घड़ी में, जब कि सारी राजधानी उल्लास में डूबी है, बहुत दूर नहीं, पास में ही स्थित पंजाब में जो असंतोष उबल रहा है, उसे सुने बिना नहीं रहा जा सकता।'

पर इसकी एक अलग कहानी है।

पंद्रह अगस्त को नयी दिल्ली के हम लोगों ने अभूतपूर्व दृश्य देखे। हमारे लिए वह एक बहुत लंबा दिन था। लोग तड़के ही उठ गये थे। इस अवसर पर तंजौर से विशेष रूप से आये नादस्वरम-वादकों की मंगल-ध्वनि से दिन का शुभारंभ हुआ। दो, यार्क रोड (अब मोतीलाल नेहरूमार्ग) स्थित प्रधानमंत्री निवास के पोर्च में नादस्वरम की ध्वनि कर उन्होंने स्वतंत्र भारत और उसके प्रथम प्रधान मंत्री के लिए सौभाग्य की कामना की। सरकारी समारोह गवर्नमेंट हाउस के दरबारहाल में प्रातः दस बजे शुरू हुए। बिगुलों की ध्वनि के बाद लार्ड माउंटबेटन ने सपत्नीक दरबारहाल में प्रवेश किया। हजारों मेहमानों के सामने भारत के चीफ जस्टिस कानिया ने लार्ड माउंटबेटन को भारत के गवर्नर-जनरल की शपथ दिलायी।

जैसे ही तिरंगा ध्वज लहराया, भीड़ ने आकाश में एक शानदार रंग-बिरंगा इंद्रधनुष देखा। और अगले पल आकाश से वरदानस्वरूप बौछारें उतर पड़ीं।

लार्ड माउंटबेटन अपनी शाही पोशाक में थे। उनके वक्ष पर अलंकरणों और युद्धपदकों की कतारें लगी हुई थी। लेडी माउंटबेटन उनकी बगल में बैठी थीं। लार्ड माउंटबेटन ने प्रधानमंत्री नेहरू और उनके मंत्रिमंडल के सदस्यों को पद की शपथ दिलायी।

इसके बाद संविधान-सभा कक्ष के लिए गवर्नर जनरल की शाही सवारी निकली। चार फर्लांग के रास्ते पर भारी भीड़ थी और लोग हाथ हिलाकर नारे

लगा रहे थे—'जय हिंद', 'माउंटबेटन की जय'। उनमें से कुछ ने 'पंडित माउंटबेटन की जय!' के नारे भी लगाये थे।

माउंटबेटन का भाषण

संविधान सभा के अध्यक्ष डॉ. राजेन्द्र प्रसाद ने संसद भवन के द्वार पर गवर्नर-जनरल का स्वागत किया।

अपनी संतुलित और साफ आवाज में पहले तो लॉर्ड माउंटबेटन ने ब्रिटिश सम्राट का संदेश पढ़ा और फिर घोषणा की ... 'आप मुझे अपनों में से ही एक समझें—एक ऐसा व्यक्ति जो भारत के हितों का संवर्धन करने के लिए पूरी तरह समर्पित है।'

आगे उन्होंने हर्ष ध्वनि के बीच कहा, 'इस ऐतिहासिक घड़ी में, हम यह न भूलें कि भारत महात्मा गांधी का कितना ऋणी है—महात्मा गांधी जिन्होंने अहिंसा के जरिए भारत की स्वतंत्रता को गढ़ा। आज हमें उनकी अनुपस्थिति खल रही है। हम उन्हें बताएंगे कि वे हमारे दिल-दिमाग में कितना बसे हुए हैं।'

एक चमत्कारिक घटना

भारतीय जनता और संविधान-सभा की ओर से भाषण करते हुए डॉ. राजेन्द्र प्रसाद ने घोषणा की, 'भारत पर ब्रिटेन के आधिपत्य का समय आज खत्म हो गया है और अब ब्रिटेन के साथ हमारे संबंध समानता, पारस्परिक सद्भावना और लाभ पर आधारित होंगे।'

ऐतिहासिक घटनाओं से भरे उन दिनों की स्मृतियों के बीच, पंद्रह अगस्त की दोपहर को प्रिंसेस पार्क और उसके आस-पास देखे गये दृश्यों की स्मृति आज भी मेरे मन में बिलकुल ताजा है।

दिल्ली की वह एक खास शाम थी आकाश में झुके बादल, पर चारों ओर उमस। उल्लास से भरी भीड़ को मौसम की कोई परवाह नहीं थी। विजय चौक और नेशनल स्टेडियम के बीच का तीन मील लंबा, तीन फर्लांग चौड़ा हिस्सा अपार जन-समुद्र से भरा था। इस भीड़ में मैं दिशाहीन-सा बहा जा रहा था—कभी इधर–कभी उधर! इस भीड़ में विदेशी महिलाएं भी थीं, जो अपने पुरुष साथियों से बिछुड़ गयी थीं। पर उनमें कोई घबराहट नहीं थी। वे इस माहौल का आनंद ले रही थीं। कुछ भले मानस उन्हें भीड़ से कुचले जाने से बचाने में लगे हुए थे।

भारतीय जनता ने रातों रात अपने सारे भय को, विदेशी सत्ता के प्रति घृणा को निकाल फेंका था। यह एक चमत्कारिक घटना थी, जो अहिंसा की भावना और शांतिपूर्ण सत्ता-हस्तांतरण के कारण संभव हो सकी थी।

मुझे एक डच-पत्रकार द्वारा पूछे गये एक विचित्र प्रश्न की याद आ रही है। यह प्रश्न उसने जकार्ता में हुई घटना के तीनवर्ष बाद पूछा था। उसने मुझसे प्रश्न किया था, "यह बेहद ताज्जुब की बात है कि आप लोग अपने भूतपूर्व ब्रिटिश शासकों से नफरत नहीं करते। यह अस्वा-

भाविक-सा लगता है।'

'पंडित माउंटबेटन की जय'

उस शाम अपार भीड़ में लार्ड माउंटबेटन भी थे। उनका चेहरा खुशी के मारे दमक रहा था। इसी बीच उनकी बग्घी में बैठे लोगों ने पाया कि वे रास्ता भटक गये हैं। उनका जुलूस रास्ते से हटकर 'सेंट्रल विस्टा के लान पर पहुंच गया था और अब फिर से रास्ते पर लौटना मुश्किल-सा लग रहा था, उधर लोग नारे लगा रहे थे—'पंडित माउंटबेटन की जय।'

कोचवानों ने इधर-उधर नजर दौड़ायी तो उन्हें दूर ध्वज-स्तंभ नजर आये। जुलूस का मार्ग वहीं था। वे उस ओर बढ़े, पर उनकी गति उत्तरोत्तर धीमी हो रही थी।

तभी उन्होंने देखा कि नेहरूजी उल्लसित भीड़ को नियंत्रित करने की कोशिश कर रहे हैं।

माउंटबेटन ने नेहरूजी और इंदिराजी को अपनी बग्घी में खींच लिया। इसके बाद तो गवर्नर जनरल की बग्घी जैसे बचाव-दल की बग्घी बन गयी। भीड़ में खोये, बच्चे, माताएं, महिलाएं सभी बग्घी में बैठाये जाने लगे। यहां तक कि बग्घी उनसे भर गयी।

'आज का दिन उनका दिन है'

भीड़ की एक लहर ने विशिष्ट व्यक्तियों के बैठने की जगह का घेरा तोड़ दिया। वे सब यूनियन जैक की जगह भारतीय तिरंगे को फहराये जाने की रस्म देखने आये थे। भीड़ ने सेना के बंदोबस्त को भी अस्त-व्यस्त कर दिया था। सशस्त्र सेनाओं के सर्वोच्च सेनापति फील्ड मार्शल क्लाड आकिन लेक किसी तरह ध्वज-स्तंभ तक पहुंचे। उन्होंने बड़ी खिन्नता से सारा दृश्य देखा, और बुदबुदाये, 'तो यह उनकी आजादी है !'

माउंटबेटन ने भीड़ की ओर देखते हुए नेहरूजी से कहा, 'आज का दिन उनका दिन है। यदि वे उसे इस तरह मनाना चाहते हैं तो बीच में बोलनेवाला मैं कौन !'

और इसके बाद उन्होंने ध्वज-स्तंभ के पास खड़े जवानों को यूनियन जैक उतारने और तिरंगा ध्वज फहराने का संकेत किया। इस तरह किसी विशिष्टतम व्यक्ति ने नहीं, बल्कि एक साधारण सिपाही ने देश की स्वाधीनता का झंडा फहराया।

एक शानदार इंद्रधनुष

जैसे ही तिरंगा ध्वज लहराया, भीड़ ने आकाश में एक शानदार रंग-बिरंगा-पूर्ण इंद्रधनुष देखा। पुराने किले और नेशनल स्टेडियम की पृष्ठभूमि में आकाश में तना ऐसा सुंदर इंद्रधनुष मैंने कभी नहीं देखा। तभी आकाश से वरदानस्वरूप बौछारें धरती पर उतर पड़ीं।

—सी-४४, गुलमोहर पार्क, नयी दिल्ली

सावधान व्यक्ति कदाचित ही गलती करते हैं।

7.

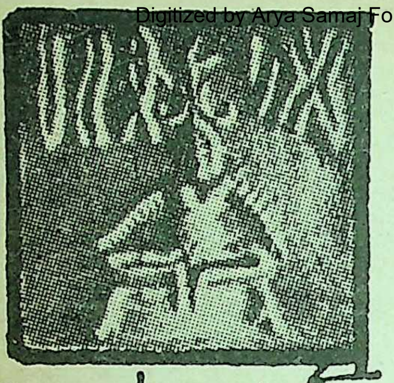

ā-nn-śa '/ t = t(-tar)' / śanna

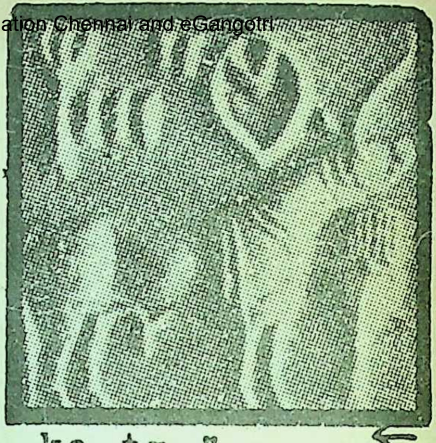

ka-tṛ " pa= pa"tṛka

संसार की सबसे पहली लिपि का रहस्य

● डॉ. एस. आर. राव

सभ्यता की प्रगति के लिए यदि एकमात्र घटक ढूंढ़ा जाए, तो लिखने की सरल पद्धति महत्त्वपूर्ण हो जाती है। इसी को वर्णमाला सिद्धांत कहा गया है। वर्णमाला के माध्यम से एक दूसरे के प्रति वैचारिक संचार बड़ी सरलता तथा शीघ्रता से हो जाता है। अभी तक संसार में यह विश्वास गहराई से पैठा हुआ था कि वर्णमाला का आविष्कार सेमेटिक जाति के फोनेशियन लोगों ने किया था। कहा यह जाता है कि ग्रीक लोगों ने फोनेशियन वर्णमाला में स्वर जोड़कर उसे परिपूर्ण कर दिया। सिंधु-लिपि का रहस्य खुलते ही इस भ्रामक सिद्धांत को सुधारना पड़ेगा। सिंधु-घाटी सभ्यता के निर्माता हरप्पण नाम से जाने जाते हैं। हरप्पणों ने ही, आक्षरिक चिह्न से लेकर प्राचीनतम वर्णात्मक लिपि का आविष्कार किया था। उन्होंने अपनी लिपि से चित्र, प्राचीनकाल में ही निकाल दिये थे। अभी तक इस बात का पता किसी को भी नहीं था कि फोनेशियनों ने लिपि-ज्ञान कहां से प्राप्त किया। अब यह प्रमाणित हो गया है कि फोनेशियनों ने वर्णात्मक पद्धति उत्तरयुगीय

ऊपर : रेखाकारिक लिपि के दो उदाहरण

हरप्पा से नकल की थी। इस सिलसिले के सांकेतिक चिह्न पुराकालिक सिंधु-लिपि में पाये गये हैं। सब से बड़ी बात तो यह है कि सिंधु-लिपि भारत तथा यूरोप के भाषाई कुंटुब से संबंधित है और अन्य किसी से नहीं। सिंधु-लिपि ही आदि संस्कृत-लिपि है।

> 'सर्वप्रथम भारत के प्राचीन इतिहास को फिर से लिखना परमावश्यक है। पाश्चात्य विदेशी विद्वानों ने उत्तर तथा दक्षिण भारत में शत्रुता उत्पन्न करने के उद्देश्य से ही यह सिद्धांत प्रतिपादित किया कि सिंधु-सभ्यता द्रविड़ थी और उसको नष्ट करनेवाले, आर्य थे। यह सिद्धांत भ्रामक तथा मिथ्यापूर्ण है।'

सिंधु-लिपि का लगातार उपयोग

लोथाल में आठ वर्ष (१९५५-१९६२) तक पुरातत्व उत्खनन होता रहा, जिसके दौरान यह साक्ष्य मिल गया कि सिंधु-सभ्यता अचानक ईसा पूर्व १९०० वीं शताब्दी में गायब नहीं हो गयी थी। सिंधु-घाटी की अपेक्षा गुजरात में यह सभ्यता ३०० वर्ष अधिक कायम रही। ३०० वर्ष अधिक टिकनेवाली इस सिंधु-सभ्यता को 'उत्तरकालीन हरप्पा सभ्यता' का नाम दिया गया है। इन ३०० वर्ष के दौरान यह अवश्य हुआ कि जनता की भौतिक संपन्नता का स्तर नीचे गिर गया परंतु साथ ही साथ हरप्पण लोग अपनी मरलीकृत लिपि का प्रयोग बराबर करते रहे। इसी स्रोत के कारण ईसा पूर्व २५००-१९००, छह सौ वर्ष के दौरान में चित्र-रेखा लिपि से ईसा पूर्व १९००-१६००, ३०० वर्ष के दौरान की पूर्णतः रेखांकित लिपि के क्रम-विकास की कड़ी ठीक प्रकार से मालूम हो जाती है। मोहन-जो-दरों में डेलस ने १९६५ में फिर खुदाई की। रंगपुर (गुजरात) में भी इसी वर्ष उत्खनन किया गया। महाराष्ट्र स्थित दैमाबाद में किये गये उत्खनन से पता चल गया कि मरलीकृत हरप्पा लिपि मोहन-जो-दरों तथा

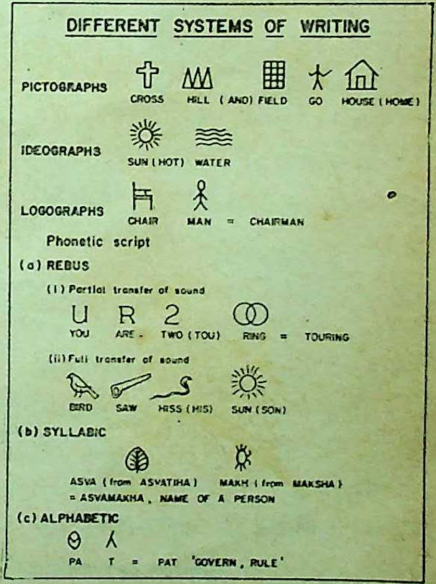
DIFFERENT SYSTEMS OF WRITING
PICTOGRAPHS
CROSS
HILL (AND) FIELD
GO
HOUSE (HOME)
IDEOGRAPHS
SUN (HOT)
WATER
LOGOGRAPHS
CHAIR
MAN = CHAIRMAN
Phonetic script
(a) REBUS
(i) Partial transfer of sound
U R 2
YOU ARE TWO (TOU) RING = TOURING
(ii) Full transfer of sound
BIRD
SAW
HISS (HIS)
SUN (SON)
(b) SYLLABIC
ASVA (from ASVATHA) MAKH (from MAKSHA)
= ASVAMAKHA, NAME OF A PERSON
(c) ALPHABETIC
PA T = PAT 'GOVERN, RULE'

चित्र-लिपि से वर्णमाला तक का विकास
आकार क्रमांक—१

डॉ. शिकारीपुर रंगनाथ राव एम. ए. डी. लिट., विश्व प्रसिद्ध पुरातत्व उत्खनक तथा भाषा-विज्ञान के प्रकांड पंडित, 'आर्केआलाजिकल सर्वे ऑव इंडिया' के महानिदेशक रह चुके हैं। आजकल 'नेशनल इंस्टीच्यूट ऑव ओशियानेग्राफी', गोवा, में विशेषज्ञ के पद पर हैं। जिस गूढ़ लिपि का रहस्य खोलने में संसार के सब भाषा-वैज्ञानिक ६० वर्ष से अधिक समय तक असफल रहे, डॉ. ने उसकी कुंजी प्राप्त कर ली। यह कैसे हुआ, उन्हीं के शब्दों में पढ़िए।

रंगपुर में ईसा पूर्व ३०० वर्ष तक और दैमाबाद में कुछ अधिक समय तक उपयोग में आती रही ।

सिंधु-लिपि का विश्लेषण

अज्ञात लिपि में लिखी हुई अज्ञात भाषा का रहस्य खोलने के लिए कोई भी प्रयत्न किया जाए तो उसके क्रम-विकास का स्तर जान लेना आवश्यक है। इस पहेली को सुलझाने के लिए गूढ़ लेख चित्र-लिपि, शब्द-प्रहेलिक-लिपि अथवा ध्वन्यात्मक या वर्णात्मक लिपि में से किस लिपि को लिखा गया है, इसे समझने के लिए और गहराई में उतरना आवश्यक है। आकार क्रमांक–१ (पृष्ठ–५१) देखिए, शब्द-प्रहेलिक सिद्धांत के अनुसार प्रत्येक चित्र किसी न किसी शब्द का कल्पन होता है,—जैसे यदि कोई व्यक्ति हाथ में डंडा पकड़े हुए है, तो वह डंड धर या यम का प्रतीक है। यदि पुरुष और कुरसी साथ-साथ बने हों, तो शब्द कुरसीधर अर्थात सभापति हो गया। चित्राक्षर में चित्र, भावसूचक होते हैं। उदाहरण के लिए—यदि सूर्य और जल साथ-साथ चित्रित हैं, तो 'सूर्यजल'-जैसा शब्द हो ही ही नहीं सकता है। इसका भावात्मक अर्थ गरम-जल होगा, क्योंकि सूर्य उष्मा का भी प्रतीक है। ध्वन्यात्मक लिपि में प्रत्येक चिह्न ध्वनि का प्रतीक होता है और इसमें शब्द—मूल्यांकन व्यर्थ हो जाता है। सिंधु लिपि में चित्र तथा रेखा दोनों उपयोग में लाये गये हैं। कुछ चिह्न-जैसे D, X, P, H, Y, E, अंगरेजी वर्णमाला के सदस्य हैं। इसी से रूसी, फिनलैंडी तथा अमरीकी विद्वान सिंधु-लिपि को चित्र-लिपि तथा शब्द-प्रहेलिक-लिपि दोनों लिपियों का मिश्रण समझ बैठे। उनके इस विचार का कारण सिंधु लिपि में ४०० मूलभूत चिह्नों के होने का उनका पूर्वग्रह तथा लिपि में चित्रों का होना था।

हरप्पण नगर तथा बंदरगाह-लोथाल

सिंधु लिपि के शब्द-प्रहेलिक या ध्वन्यात्मक होने के संदर्भ में निर्णय लेने से पूर्व ही इसकी दो विशिष्टताएं जान लेना

महत्त्वपूर्ण है। प्रथम बात तो यह है कि D. Y. E. W. X. U. जैसे अधिकांश रेखा-चिह्न तथा पुरुष का चित्र भी स्वराघातिक है। मूलभूत चिह्न में एक से लेकर तीन रेखाएं लगायी गयी हैं। व्यंजन को स्वराघातिक मूल्य देने के लिए ही यह रेखा-विधि अपनायी गयी है। सम्राट अशोक के समय की ही लिपि तथा देवनागरी में भी यही विधि विद्यमान है।

'त' के मूलभूत चिह्न में ब्रह्मी-लिपि में एक या दो रेखा खींचकर उसी को ता, ति, ती, तु, तू इत्यादि बना दिया गया। (आकार क्रमांक ५ देखिए) हरप्पा लिपि में भी यही किया गया परंतु उसमें दिशा का इतना मूल्य नहीं है, जितना रेखा-संख्या का है। उसमें अ, इ, ए, ओ ध्वनि संख्या के अनुरूप संकेतित होती है, दूसरी महत्त्वपूर्ण विशिष्टता जो, सिंधु, ब्रह्मी तथा देवनागरी में सर्वसामान्य है, वह है संयुक्त अक्षर प्रणाली जो व्यंजन चिह्न को दुगना कर देती है, और दो या अधिक चिह्न जोड़कर एक व्यंजन बना देती है। उदाहरण के लिए—प्प, त्प, त्र. संयुक्त अक्षर चित्र-जैसे प्रतीत होते हैं। ऐसे चिह्न को रूसी, फिनलैंडी तथा अमरीकी विद्वानों ने पूर्ण शब्द मानकर उसका मूल्यांकन कर दिया। असलियत में वे चिह्न ध्वन्यात्मक हैं।

विदेशी विद्वानों की शब्द–मूल्यांकन धारणा अपनाने संबंधी गलती दो मूलभूत चिह्नों का चित्रण करने से साफ उभर आती है। चिह्न D तथा पुरुष को लीजिए, जो भिन्न लेखों में स्वराघातिक उपयोग में में लाया गया है। जब यह दोनों चिह्न जोड़े दिये जाते हैं तब एक छोटी रेखा भी खींच दी जाती है। शब्द को धनुर्धर समझकर विदेशी विद्वान गलती कर बैठे। दूसरी मिसाल यह है कि एक

स्वराघातिक चित्र (आकार क्रमांक–२)

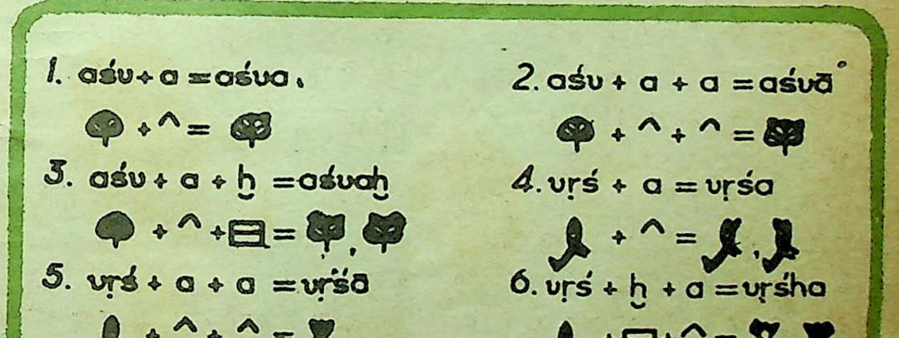

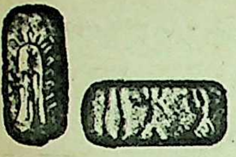

रेखाकारिक लिपि

ā-ṛk-bhag = bhag ṛka

पुरालेख में दो D तथा एक पुरुष जुड़ा हुआ है। यदि इसका मतलब यह निकाला जाए कि धनुर्धर ने दो बाण एक साथ छोड़े तो भावार्थ बेतुका तथा हास्यास्पद हो जाता है। धनुर्धर तथा श्रमिक जैसे छदम चित्र का विश्लेषण करने से यह साफ मालूम हो जाता है कि विदेशी भाषाविदों की धारणा के विपरीत सिंधु-लिपि में मूलभूत चिह्न ४०० से बहुत कम हैं। ४०० मूलभूत चिह्नों की भ्रांति इस कारण से हो गयी कि हरप्पण-लिपिक ने थोड़े से मूलक चिह्नों को संयोजित करके प्रस्तार विधि से भिन्न प्रतीत होनेवाले अनेक चिह्न बना दिये।

उक्तलिखित प्रणाली पर आधारित संयुक्ताक्षर का विश्लेषण करने से साफ मालूम हो जाता है कि हरप्पा लिपि में ६२ मूलभूत चिह्न हैं। आरंभिक हरप्पा काल के चित्र तथा उत्तरीय हरप्पाकाल की लिपि के २२ चिह्न भी इन ६२ में सम्मिलित हैं।

उत्तरीय काल में हरप्पा-लिपिक ने चित्र प्रयोग तथा एकांतर रेखा लगाना बंद कर दिया था। जिस लिपि में इतने थोड़े चिह्न हों तो वह लिपि चित्र-लिपि, या सांकेतिक-लिपि या शब्द-प्रहेलिक लिपि हो ही नहीं सकती है। इन तीन प्रकार की लिपियों में चीनी लिपि की भांति हजारों चिह्न होते हैं। ध्वन्यात्मक, आक्षरिक या वर्णात्मक लिपि में १०० या १५० से अधिक चिह्न हो ही नहीं सकते हैं। ६२ चिह्नवाली सिंधु-लिपि केवल ध्वन्यात्मक लिपि ही समझी जा सकती है।

पुरुष तथा मछली के चिह्न को स्वराघातिक बनाने से और पीपल, पत्ता तथा बिच्छू के चिह्न में ध्वन्यात्मक रेखा जोड़ने से इस विधि को अतिरिक्त प्रश्रय मिलता है। (आकार क्रमांक २ देखिए)

चिह्नों का ध्वन्यात्मक मूल्यांकन

उत्तरयुगीन हरप्पा-लिपि ईसा पूर्व १५ वीं से ११ वीं शताब्दी ४०० वर्ष तक पश्चिम एशिया की सेमेटिक लिपि की समकालीन रही। इसलिए इस जानी-मानी सेमेटिक वर्णात्मक लिपि की आधार दिशा से तुलना करते हुए हरप्पा-लिपि की दिशा की ओर मैं अग्रसर हुआ। इस ढंग को अपनाने का कारण यह था कि दोनों लिपियों में अनेक चिह्न सर्वमान्य हैं और दोनों ने बायीं ओर लिखने की परिकल्पना अपनायी थी।

साधारण पुरालेखों के निम्नलिखित शब्द पढ़ने से साफ मालूम हो जाता है कि सिंधु लिपि न द्रविड़ है और न ही

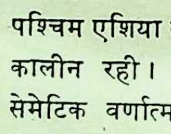

रेखाकारिक लिपि

r-ā-{ṛk} "pa = pa" {ṛk} ār

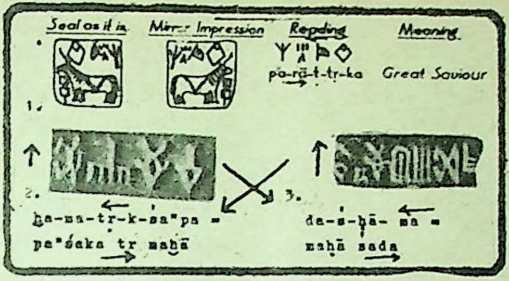
Seal as it is
Mirror Impression
Reading
Meaning
1.
pa-rā-t-tr-ka
Great Saviour
2.
3.
ha-sa-tr-k-sa"pa =
pa"saka tr mahā
de-s-hā- sa =
mahā sada

साधारण रेखाकारिक लिपि

सेमेटिक है। हरप्पालिपि का संबंध सुमेर लिपि से कदापि नहीं है। प्राचीन आर्य भाषा अर्थात ऋग्वैदिक भाषा से हरप्पा लिपि की शब्दावली, उसके अर्थ तथा व्युत्पत्ति की तुलना के आधार पर उसका प्राचीन आर्य भाषा से अर्थात ऋग्वैदिक भाषा से घनिष्ट संबंध ज्ञात होता है, जैसे—

एक, हप्त, दश, शत, अम (बल) औक्क या ओकस (आवास), आत (प्रदीप्त), तरस (शक्ति), प अथवा पा (रक्षा करता), यही शब्द हित्ताई भाषा में 'पाह' हो जाता है), पक (अभिवाहक), पत (शासन), पर (परम), सह (विजयी), मह (महा), शास (शासन करना) इत्यादि।

दशात्मक अंत—जैसे आ, ए, ह, स, सहायक, संप्रदानक तथा उत्पत्ति-मूलक दशा का संकेत देते हैं और इनका अभिव्यक्त इस प्रकार है—बक से बका, बकै, बका:। कभी-कभी 'ह' के स्थान पर 'स' का प्रयोग किया गया है। यह अंतसर्ग वैदिक तथा ईरान की प्राचीन भाषा 'अवस्था' के अनुकूल है। सिंधु मोहरों में बक एक साधारण आदमी का नाम है और रक्षक के लिए भी बक शब्द का प्रयोग किया गया है। बक दालभ्य नामक १ एक ऋषि का उल्लेख ऋग्वेद में है। सिंधु–भाषा विभक्ति प्रधान है, और इस कारण से सुमेर भाषा की तरह अभिश्लेषी है।

स्वर-विज्ञान

२१ वैकल्पित स्वर सहित सिंधु–लिपि में ४० रेखाकारिक चिह्न हैं (आकार ३) इनमें से अधिकांश सेमेटिक तथा सिनैटिक चिह्न तथा उसके विकल्प के तुल्यरूप हैं केवल पुरुष तथा मछली दोनों ही सेमेटिक चिह्न नहीं हैं और यही दोनों चिह्न एक ही वर्णात्मक ध्वनि के लिए उपयोग में लाये गये हैं।

रेखांकिक चिह्न ० स्वर उ 'का' मूल्यांकन है। इसी ० को रेखा द्वार रूपांतरित कर के संयुक्त स्वर बना दिया गया—जैसे अ, आ, ए, ऐ ओ, औ (आकार-क्रमांक ५ देखिए)। जैसे हमको अब मालूम हो जाएगा, चित्र आक्षरिक प्रतीत होते थे। यह एक दिलचस्प बात है कि चिह्न ह, ह, ह, ह हैं। प्राचीन भारत की आर्य भाषा में केवल एक 'ह' था।

(क्रमशः)

विधि विधान

कब्जे का कानून

अशोककुमार अग्रवाल, मुरादाबाद : मेरे पिताजी चंदौसी, जिला मुरादाबाद में एक मंदिर के प्रबंधक, उनकी नानीजी द्वारा नियुक्त किये गये थे। लगभग तीस वर्ष से एक माली मंदिर व उससे लगे ३७६ गज के प्लॉट की देखभाल करता है। वहां फूल वगैरा लगे हैं। वह सरकारी कर्मचारी भी है। प्लॉट की जगह मंदिर के नाम वक्फ है। अब माली का दावा है कि वह जमीन उसकी है। उसने हमारी इजाजत के बिना वहां एक कोठरी बनाकर नल भी लगवा लिया है। अब वह हमें वहां घुसने नहीं देता। क्या कानूनी रूप से मंदिर की उस जमीन पर उसका कब्जा हो सकता है? और क्या कानून के द्वारा उसको वहां से बेदखल किया जा सकता है?

माली की नियुक्ति किस प्रकार हुई। वह वहां किसी की अनुमति से फूल बोता था या नहीं, प्लाट पर उसका कब्जा किस प्रकार हुआ? आदि कुछ ऐसे प्रश्न हैं, जिनका सीधा संबंध आपकी समस्या से है। यदि आपकी नानीजी या मंदिर के प्रबंधकों की अनुमति के बगैर माली ने उस जगह पर कब्जा कर लिया, फूल आदि लगा लिये और मकान बना लिया तथा वह तीस वर्ष से इस प्रकार रह रहा है, तब तो उसको निकालने के लिए कोई कार्यवाही नहीं की जा सकती।

किराये की दूकान

कृपाशंकर, कानपुर : मैंने १९६८ में एक दूकान किराये पर ली थी। मकान-मालिक अपने बेटे के लिए दूकान खाली करवाना चाहता है। उसने लोअर कोर्ट में मुकदमा किया था, जिसमें वह हार गया। तत्पश्चात उसने सेशन कोर्ट में मुकदमा दायर कर दिया, जहां हम हार गये। सेशन ने हमें चार महीने का समय और दो साल का किराया भरने का फैसला दिया था, लेकिन अभी तक इस संबंध में कोई नोटिस नहीं आया है। इस बीच मैंने हाइकोर्ट में मुकदमा दायर किया, लेकिन वहां भी सेशन के फैसले को बरकरार रखा गया। क्या मुझे दूकान खाली करनी पड़ेगी? यदि नहीं तो किस एक्ट के तहत मैं सुप्रीम कोर्ट में मुकदमा दायर कर सकता हूं?

लोअर कोर्ट, जिला न्यायालय व उच्च न्यायालय में आप मुकदमा हार

विधि-विधान के अंतर्गत कानून-संबंधी विविध कठिनाइयों के बारे में पाठकों के प्रश्न आमंत्रित हैं। प्रश्नों का समाधान कर रहे हैं राजधानी के एक प्रसिद्ध कानून-विशेषज्ञ —रामप्रकाश गुप्त

चुके हैं। तीनों न्यायालयों ने मकान-मालिक का पक्ष ठीक ठहराया और आपके विरुद्ध निर्णय दिया। उत्तर प्रदेश में लागू कानून व तथ्यों के आधार पर मकान-मालिक का पक्ष ही ठीक लगता है। आपको न्यायालय के आदेश के अंतर्गत दूकान खाली करनी पड़ेगी।

यदि आप चाहें तो भारतीय संविधान के आर्टीकल १३२ के अंतर्गत उच्चतम न्यायालय में विशेष अनुमति याचिका कर सकते हैं। आपके पक्ष में निर्णय की संभावनाएं अत्यंत धूमिल हैं।

विवाहिता से विवाह

क. ख. ग., उज्जैन : मैं इक्कीस वर्षीय नवयुवक हूं। मुझे एक विवाहित महिला से प्रेम हो गया है, जो मेरी ही हम उम्र एवं एक बच्चे की मां है। क्या मैं उससे विधिवत विवाह कर सकता हूं?

एक विवाहित महिला से विवाह की कल्पना करना उचित नहीं।

'हिंदू—विवाह-अधिनियम' के अंतर्गत एक महिला, दूसरा विवाह नहीं कर सकती। यदि आपका प्यार सच्चा है तो आपको उन्हें नेक सलाह देनी चाहिए। जिससे जीवन में कटुता न बढ़े। अब तक आप सीमा में रहे हैं, भविष्य में भी सीमा में ही बने रहिए, अन्यथा परिणाम काफी भयंकर हो सकते हैं। आप दोनों के विवाह का मुझे कोई मार्ग दिखायी नहीं देता। विशेष विवाह-अधिनियम के अंतर्गत प्रेम-विवाह भी संभव नहीं है।

संपत्ति में हिस्सा

एस. एन. सिंह, सासाराम : मेरे नानाजी ने दो शादियां की थीं। पहली पत्नी से केवल मेरी मां थी। इसके बाद नानी का देहांत हो गया। तब मेरे नाना ने दूसरी शादी कर ली, जिससे दो लड़कियां हैं। मेरी मां का देहांत हो चुका है। मैं अपनी मां का इकलौता पुत्र हूं। मेरे पिताजी मुझसे विपरीत चलते हैं। मेरे नाना इन दोनों लड़कियों को हिस्सा दे रहे हैं। क्या उसमें मेरा हक नहीं है? क्या न्यायालय इस संबंध में मेरा सहयोग कर सकता है?

संपत्ति तो आपके नाना की है। वह अपनी इच्छा से अपनी संपत्ति किसी को भी दे सकते हैं। आप इस मामले में हस्तक्षेप करने का अधिकार नहीं रखते। आपकी मां के स्वर्गवास या आपके पिताजी के आपसे विपरीत चलने से आपके

अधिकार में कोई अंतर नहीं पड़ता। नानाजी के जीवित रहते संपत्ति में आपका कोई अधिकर नहीं है। इसलिए आप न्यायालय से भी कोई अधिकार प्राप्त नहीं कर सकते।

तलाक एवं दूसरी शादी

विनोद कुमार वर्मा, पटना: मेरी शादी को एक वर्ष हुआ है। अभी तक कोई संतान नहीं है। इसके अलावा मुझे अपनी पत्नी पसंद भी नहीं है। क्या मैं तलाक देकर दूसरी शादी कर सकता हूं?

संतान न होने के आधार पर तो पत्नी को तलाक नहीं दिया जा सकता। यों भी आपके विवाह को तो अभी एक वर्ष ही हुआ है। पसंद न होने के आधार पर भी पत्नी को तलाक नहीं दिया जा सकता। किन कारणों से आपको पत्नी पसंद नहीं है, वह आपके पत्र से स्पष्ट नहीं होते। आपको अपनी गृहस्थी चलाने का प्रयास करना चाहिए—तलाक का मुझे कोई आधार नहीं लगता।

एग्रीमेंट की शर्तें

महेन्द्र मोहन सिंह, नैनीताल: मैं एक २६ वर्षीय बेरोजगार नवयुवक हूं। हमारी दूकान में एक पुराना किरायेदार है। पंद्रह वर्ष पहले जब हमने अपने मकान को दूकान सहित पूर्णरूप से नया बनाया, तब उस किरायेदार के साथ एक रजिस्टर्ड एग्रीमेंट किया, जिसमें हमने उसे पंद्रह वर्ष तक दूकान देने की शर्त रखी थी। लेकिन हमारी कानूनी अनभिज्ञता के कारण उसने उस एग्रीमेंट के अंत में यह लिखवा लिया कि आइंदा भी इन्हीं शर्तों पर किरायेदारी कायम रहेगी। इस स्थिति में हम उस पर दावा करें तो क्या दूकान खाली हो सकती है? हम लोग काफी तंगी में हैं।

'आइंदा भी इन्हीं शर्तों पर किरायेदारी कायम रहेगी' का आशय तो केवल इतना ही है कि किरायेदारी में उल्लिखित समय की समाप्ति के बाद जब तक किरायेदार उस स्थान पर बना रहे, किरायेदारी की शर्तें, पूर्व निर्धारित आधार पर ही चलती रहेंगी। इससे आपके अन्य किसी अधिकार पर तो अंतर नहीं पड़ सकता। संभवत: दूकान के मालिक आपके पिताजी हैं। इसलिए वे ही इसे अपनी आवश्यकता के लिए खाली करवाने हेतु कार्यवाही कर सकते हैं। जहां तक प्रश्न गरीबी का है, यदि आप अपने को असमर्थ पाते हैं तो आप सरकार द्वारा उपलब्ध करायी जा रही निःशुल्क कानूनी सहायता का लाभ उठा सकते हैं।

“मैनेजर साहब, क्या बात है कि आपने अपने ऑफिस में केवल विवाहित लोगों को ही नौकरी पर रखा है?”

“बात ये है कि मैं जब भी उन लोगों को डांटता हूं, तो ये लोग बुरा नहीं मानते।”

—ऋषि मोहन श्रीवास्तव

सीपिकाएँ

ज्ञान

अगर तुम
दूसरों के द्वार
खटखटाते-खटखटाते
निराश हो चुके हो
तो मेरी एक बात मानो
कभी अपना द्वार खटखटाओ !

—आलम खुर्शीद

संदेह

किसी संधि-पत्र पर
कोई धब्बा
उतर आता है
तब—
रंगों के सरोवर में
डूबा वक्त
फीका हो जाता है
और
मन के घाट पर
चुप्पी का झाड़
उग आता है ।

याद

तुम्हारी याद में
नहीं . . .
तुम्हारे साथ बीते
उन
सुखद क्षणों की याद में
क्योंकि
तुम निष्ठुर हो
परन्तु वे क्षण
निष्ठुर न थे ।

—सुधारानी चौहान

टूटना

पत्ते झरते हैं
और
दरख्त
अपनी सूखी बाहों के साथ
बूढ़ा हो जाता है ।

—उषाकांता शर्मा

महानगर

महानगर की
रात की सौगात
गोली नींद की ।

—सत्यपाल चुघ

मुंहासे

मुंहासे--जो किसी सुंदर चेहरे को कुरूप बना देते हैं! क्यों होते हैं ये मुंहासे? मुंहासों के बारे में पढ़िए एक चिकित्सक की राय।

● डॉ. सज्जनकुमार देवड़ा

बाल्यकाल से युवावस्था को प्राप्त होना एक स्वाभाविक प्राकृतिक प्रक्रिया है। युवावस्था की प्राप्ति के साथ-साथ शरीर के विभिन्न अंग-प्रत्यंगों में कई प्रकार के परिवर्तन होने लगते हैं और इसके साथ ही मानसिक विकास भी होता है। जीवन के इस परिवर्तनशील विकास में बहुधा कई प्रकार की शारीरिक व्याधियां भी जन्म लेती हैं, उनमें से एक है-- मुंहासा, पिंपल वा एकनी मलगेरिस। अकसर युवक और युवतियों में यह स्वाभाविक अवस्था अत्याधिक चिंता उत्पन्न करती है। चेहरे पर मुंहासे होने से उनका सुंदर चेहरा कुरूप हो जाता है। चेहरा कई प्रकार के दानों से भर जाता है, खासकर ललाट, नाक, कपोल और ठुड्ढी। इन दानों को हाथ से दबाने पर काले नोंकवाली सफेद रंग की कील निकलती है। कभी-कभी इनमें मवाद भर जाता है और हलका-सा दर्द होने लगता है। कभी-कभी ये दाने मटर के दानों के आकार के हो जाते हैं और चेहरे को भद्दा बना देते हैं। कालांतर में इनसे चेचक की तरह बदसूरत गड्ढे पड़ सकते हैं और ये गड्ढे स्थायी भी हो सकते हैं।

मुंहासे : यह बला क्या है?

हमारे मन में एक स्वाभाविक प्रश्न उठ सकता है कि यह बला क्या है और युवावस्था में क्यों होती है? यह प्रश्न स्वाभाविक तो है, पर उतना जटिल नहीं। शरीर में युवावस्था के प्रवेश के साथ-साथ युवावस्थाजनित चेहरे, गले, पीठ और सीने के ऊपरी भागों में एक खास ग्रंथि, जिसे 'सिवासियस ग्रंथि' कहते हैं, अधिक कार्यशील हो उठती है। इसके परिणामस्वरूप ये ग्रंथियां बढ़ जाती हैं और चेहरे के समांतर भाग से कुछ ऊपर उठ जाती है। इन ग्रंथियों के छिद्रों में एक प्रकार के शुष्क द्रव, जिसे 'हाईपर केराटोटिक प्लग' कहा जाता है, के जमा हो जाने से 'सिबम' बाहर नहीं निकल पाता। यह जमा हुआ 'सिबम' एक विशेष प्रकार की रसायनिक क्रिया द्वारा चमड़ी के

विभिन्न हिस्सों को ऊपर उठा देता है, जो मुहांसे का रूप धारण कर लेते हैं। बहुधा मुंहासे युवक और युवतियों के चेहरे पर समान अनुपात में होते हैं। डॉक्टरी विश्लेषण के आधार पर इन रोगियों में स्त्री और पुरुष हारमोनों के अनुपात में दोष आना भी इस रोग के प्रकट होने का एक कारण है।

छुटकारा कैसे पायें ?

इस चिंता उत्पन्न करनेवाली व्याधि की निर्मूल रोकथाम संभव नहीं है। प्रायः पचीस वर्ष की अवस्था को प्राप्त करने तक यह यह रोग स्वयं शांत हो जाता है। परंतु सौंदर्य-हीनता जनित मानसिक तनाव को कम करने के लिए इसका उचित निदान और इलाज किसी विश्वसनीय चिकित्सक के द्वारा करवाना परमावश्यक है।

से
इनका इलाज संभव है

खाद्य सामग्रियों में से अधिक घी या तेल की तली हुई वस्तुएं त्याग देनी चाहिए। चाकलेट एवं अन्य शर्करायुक्त मीठी खाद्य-सामग्रियों का सेवन यथासंभव वर्जित करना चाहिए। कई तरह के उदर-विकार जिसमें कोष्ठवद्धता, एमिबियेसिस, जियारडियासिस क्रमि एवं यकृत-विकार आदि बिमारियों का उचित डॉक्टरी इलाज किया जाना चाहिए। युवतियों के द्वारा प्रयोग में लायी जानेवाली सौंदर्य-प्रसाधक क्रीम भी इसे अधिक बढ़ा देती है। चेहरे पर मेकअप के लिए केलेमाइन युक्त औषधि ही व्यवहार में लानी चाहिए। कोल्ड क्रीम भी व्यवहार में लायी जा सकती है। दिन एवं रात में सोने से पहले गुनगुने पानी से चेहरे को सिंथाल साबुन द्वारा ३-४ बार धोना चाहिए, जिससे चिकनाहट कम हो।

विटामिन 'ए', 'सी' और 'बी-कांपलेक्स' युक्त गोलियों का उचित प्रयोग करना चाहिए, इसके लिए ताजे फल, दूध, दही और हरी सब्जियां व्यवहार में लायी जा सकती हैं।

चिकित्सक की राय जरूरी

उचित नियंत्रण के उपरांत भी यदि इसकी रोकथाम में सफलता न मिल पाये तो किसी चिकित्सक की उचित राय लेनी चाहिए। आक्सी-ट्रेटासाइक्लीन, क्लोर टेट्रासाइक्लीन या गर्भनिरोधक गोलियां इस्ट्रोजन भी इसकी रोकथाम में सहायक हो सकती है। घरेलू चिकित्सक से राय लेकर अल्ट्रावायलेट रोशनी एवं प्लास्टिक शल्य-चिकित्सा की भी आवश्यकता आ सकती है, जो भद्दे-भद्दे गड्ढों को कम करने में सहायक हो सकती है। **—स्वेजपुर, डिब्रूगढ़, असम**

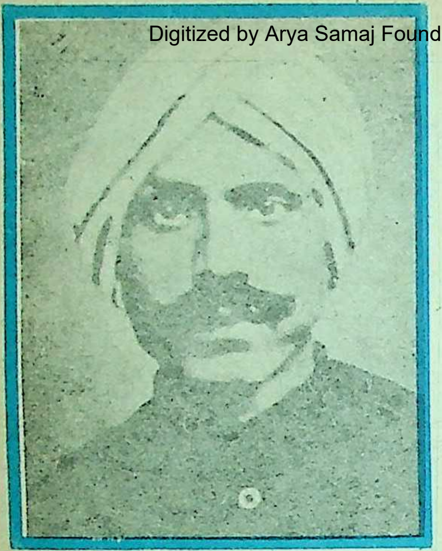

किसान डाकू बन जाता

● सुब्रह्मण्य भारती

स्वेच्छाचारी राजा के शासन में शासन-तंत्र की निरंकुशता से हर व्यक्ति त्राहि-त्राहि मचाता है। गरीब प्रजा भूखों मरती है। पेट पालने के लिए अपने सर्वस्व-स्वाभिमान तक की तिलांजलि देनी पड़ती है।

हर व्यक्ति की अपनी कुछ मान्यताएं हो सकती हैं, अपनी ही नीति, मत, या धर्म किंतु यह आवश्यक नहीं कि ये मान्यताएं परस्पर मेल खाती हों और सामूहिक जीवन की सुचारुता में सहायक हों।

खेती जो रोटी नहीं दिला पाती

उदाहरण के लिए किसान को ही लें। समय पर वर्षा की कृपा नहीं होती, वर्षा होने पर भी बैल, बीज, खाद, रखवाली-जैसे अन्यान्य साधनों की कमी तो रहती ही है। इन सब कठिनाइयों से जूझते हुए कुछ पैदा कर भी ले, तो कटाई के समय पर खेत पर मालगुजारी वसूल के अधिकारी तैयार मिलते हैं। कभी-कभी तो परिस्थिति यहां तक बिगड़ती है कि पूरी फसल को खेत पर ही बेचकर किसान खाली हाथ घर लौटता है।

किसान डाकू बन जाता है

अब किसान सोचने लगता है कि उस खेती से क्या लाभ जो दो जून की रोटी भी नहीं दिला सकती। इससे तो चोरी अच्छी जिससे कम से कम पेट की आग तो शांत हो सके। अंगरेजी शासन की कृपा से प्रजा शस्त्रहीन है। सुरक्षा की जिम्मेवार पुलिस भी (यह जानकर कि उसके बिना विदेशी शासन चल नहीं सकता) स्वार्थ के लोभ में या तो स्वयं चोरी करती है या डाकुओं से सांठ-गांठ कर डाके डलवाती है। व्यापार के बहाने दिन-दहाड़े लूट मचानेवाले सेठ-साहूकारों को यदि लूटा जाए तो क्या बुरा है? हर चर-अचर वस्तु पर मनमाना 'कर' लगा-

राष्ट्रकवि श्री सुब्रह्मण्य भारती यशस्वी पत्रकार, ओजस्वी कवि, राष्ट्रभक्त और आधुनिक तमिल गद्यलेखन के निर्माता थे।

उनकी कृतियां आज भी उतनी ही प्रासंगिक हैं, जितने लिखने के समय पर थीं। प्रस्तुत है उनके एक लेख का भावानुवाद।

कर उनकी गैर-अदायगी में हर संपत्ति को जब्त करनेवाली सरकार के खजाने के जबरन लूटने में क्या पाप है? वह इस निर्णय पर पहुंचता है कि ईमानदारी की खेती से चोरी या राहजनी अधिक लाभदायक है। भोला-भाला किसान चोर या डाकू बन जाता है।

सिद्धांतवादी डाकू

चोरी या राहजनी में हिंसा अनिवार्य है। उसका संस्कार बताता है कि हिंसा पाप है। अपनी हीन भावना से बचने के लिए वह कुछ अपनी ही नीतियां बना लेता है जैसे कुछ निर्दिष्ट लोगों पर वह हाथ नहीं उठाता। गरीब, असहाय स्त्रियों, रोगी, तीर्थ-यात्री आदि को वह छोड़ देता है। लूट के धन के कुछ अंश को वह दान-पुण्य में लगाता है। अब वह पक्का सिद्धांतवादी डाकू बन गया।

सिद्धांतवादी को विवेकी होना अनिवार्य है। मान लीजिए एक बस्ती है। वहां सभी का एक ही जीवनोपाय है—चोरी। बाप-बेटे, भाई-भाई, ससुर-दामाद, दादा-पोता सभी चोर हैं, अतः वह भी चोर है। हो सकता है कि किसी में कभी थोड़ा विवेक जागृत हो, पर वह मजबूर है। परिस्थितवश वह चोर ही बना रहता है।

कुछ लोगों के तो जीवन में ध्येय नाम की कोई वस्तु है ही नहीं। ये पशु-जैसे ही खाते-पीते हैं, बच्चे पैदा करते हैं, अच्छे या बुरे कार्य करते हैं, और मर जाते हैं, ये जीवित रहकर भी मृतप्राय हैं। ये कभी सिद्धांतवादी नहीं बन सकते।

सिद्धांत: हाथी के दांत नहीं

'फिर सिद्धांत क्या है! और सिद्धांतवादी बनने के लिए क्या योग्यता होनी चाहिए?' 'विवेक को कसौटी पर कसकर जीवनभर निबाहने के लिए स्वीकारणीय कार्यों का बीजरूप 'चिंतन' ही सिद्धांत है।' ऐसे सिद्धांत को मानसिक स्तर पर अपनाना एक बात है, और उसे आचरण में उतारना और बात है। जो अपने सिद्धांत को किसी प्रलोभन में आकर त्याग देता है वह भी जीवन्मृत है। अतः जीवन्मृत के दो वर्ग निष्पन्न हुए—१. सिद्धांतहीन वर्ग, और २. सिद्धांत के अनुरूप चलने में असमर्थ वर्ग। इनसे समाज को कोई विशेष हानि नहीं होती, पर ये समाज पर बोझ अवश्य हैं।

आजकल अपने समाज में कुछ ऐसे लोग भी उभरकर आ रहे हैं जो अंतड़ी

के कीटाणुओं के समान हैं और अंततोगत्वा अंतड़ी को ही खा डालते हैं। इनके मस्तिष्क में तरह-तरह के सिद्धांतों का भंडार हैं। वे व्याख्यानों द्वारा इन सिद्धांतों का जोर-शोर से प्रचार करते हैं। भोली जनता प्रभावित होकर इन्हें महापुरुष समझकर सम्मान करने लगती है। इनके व्यक्तिगत आचरणों का पिटारा खोलें तो दुनियाभर की अनियमितताएं और असमंजसताएं मिलती हैं। और ये लोग 'हाथी के दांत खाने के और दिखाने के और'--वाली कहावत को चरितार्थ कर देते हैं।

यदि जनता चेतकर उनसे पूछे तो तो उनका जवाब है—'मैं आपका नेता हूं और आपको मेरे मार्गदर्शन पर चलना चाहिए, न कि आप मेरे-जैसा आचरण करें।' आगे चलकर ये नेता वाग्जाल रचाकर अपने सिद्धांतों को ही बदल डालते हैं।

शक्तिसंपन्न होकर भी गुलाम

'हम भारतीय अपनी अमूल्य स्वाधीनता खोकर मुठ्ठीभर अंगरेजों के गुलाम बन बैठे हैं। हम हैं कुल ३० करोड़, और वे मुश्किल से दो लाख भी नहीं। सचमुच ही यह एक आश्चर्यकारी घटना है। इससे अन्य देशों के लोग यह नहीं कहते कि अंगरेज भारतीयों से अधिक शक्ति संपन्न हैं।' वे हमारी ही निंदा और तिरस्कार करते हैं—'इन भारतीय बकरों पर केवल अंगरेज ही नहीं, कोई भी विदेशी अपना शासन चला सकता है।' इस परिस्थिति में अपनी डींग स्वयं हांकना कितना हास्यास्पद है!

'वर्तमान संदर्भ में हम भारतीयों का एक ही सिद्धांत होना चाहिए कि हम अपनी खोई हुई स्वाधीनता प्राप्त करें और विश्व के राष्ट्रों के बीच आदर इस प्रसंग में 'नालडियार' की यह सूक्ति मार्गदर्शक है—

न भूख सताती उनको न ही नींद
न शरीर की ग्लानि करती विचलित
न तिरस्कार डिगाता उनके पग को
जिनका है ध्येय अपना सर्वस्व

जो इन नियमों के पालन में असमर्थ है उनको पीछे हट जाना चाहिए। उन्हें स्वाधीनता-संग्राम का सैनिक कहलाने का लेशमात्र अधिकार नहीं है।

स्वाधीनता ही राष्ट्र धर्म

हे भारतीयो, आलसी व्यक्तियों का सिद्धांतों से कोई सरोकार नहीं। धूप, पानी, तेज हवाएं, भूख-प्यास इन सबकी परवाह न करें। जब पार्थिव शरीर ही नश्वर है, तब क्या शारीरिक अवस्थाएं नित्य हैं?

ईश्वर ही नित्य है, सत्य ही विजय है। हे भारतीयों, हमको विदेशी शासन से स्वतंत्र बनना चाहिए। इस परम मंगल कार्य से भारत माता। विश्व के राष्ट्रों के बीच मुकुटमणि-जैसी दैदीप्यमान होगी। —**अनुवाद: एच. रंगनाथन**

एक बूंद पानी के लिए

● तेज नारायण काक

आस्ट्रिया की महानता के प्रतिष्ठाता हैप्सबर्ग के रूडौल्फ की विशाल-हृदयता की एक कहानी बहुत प्रसिद्ध है। एक बार उनकी सारी सेना अत्यंत तृषाकुल थी, जबकि बड़ी कठिनाई से पानी की एक छोटी-सी सुराही रूडौल्फ की प्यास बुझाने के लिए, उन के सम्मुख पेश की गयी। "मैं अकेला ही इसे नहीं पी सकता," उन्होंने सुराही लौटाते हुए कहा, "थोड़ा-सा पानी भी मेरे साथियों को ही समभाग में बांटा जा सकता है। मैं अपने लिए ही प्यासा नहीं हूं, मेरी प्यास, मेरी सारी सेना की प्यास है।"

★

एक बार इंग्लैंड के सर फिलिप सिडनी जटफैन के युद्ध में बुरी तरह घायल होकर, घोड़े पर सवार, घर की ओर लौट रहे थे। उनकी जांघ की हड्डियां टूट गयी थीं और घाव प्राणांतक था। उनकी पीड़ा कुछ कम करने के लिए जैसे ही उन्हें पानी की एक बोतल थमायी गयी, वैसे ही उन्होंने देखा कि उनके निकट ही एक मरणासन्न सैनिक प्यास के मारे अपना दम तोड़ रहा है। वे उसी दशा में तत्काल अपने घोड़े पर से उतर पड़े, और उन्होंने अपनी पानी की बोतल उस मृतप्राय सैनिक के प्यासे होठों से लगा दी।

डेनमार्क के फ्रैडरिक तृतीय और स्वीडन के चार्ल्स गस्टावस के बीच सन्, १६५२ से १६६० तक अनेक युद्ध हुए थे। उन्हीं में से एक युद्ध के बाद, जिसमें डेन विजयी हुए थे, फ्रैंडसबर्ग का एक तगड़ा नागरिक अपने जख्मों की मरहम-पट्टी करवाने के पूर्व जैसे ही अपनी लकड़ी की बोतल से बीअर का एक घूंट पीकर कुछ तरोताजा होने को उद्यत हुआ कि उसने एक घायल स्वैड की याचनापूर्ण पुकार सुनी। वह गिरे हुए शत्रु के निकट घुटनों के बल बैठ गया और उसके मुंह में बीअर उड़ेलने लगा। किंतु, उस कृतघ्न स्वैड ने इस उपकार के प्रतिदान में अपनी पिस्तौल की गोली उसके कंधे में दाग दी। "दुष्ट", उस डेन नागरिक ने कहा—"मैं तुम्हें यह पूरी बोतल ही पिला देता, किंतु अब तुम्हें केवल आधी ही मिलेगी"—और आधी बोतल स्वयं पीने के बाद, शेष उसने उस स्वैड को पिला दी।

सम्राट ने जब यह कहानी सुनी, तो उन्होंने उस दयालु नागरिक को बुलवाकर पूछा—"तुमने उस कृतघ्न को जीवित क्यों छोड़ दिया?"

"श्रीमन्", उसने उत्तर दिया, "मैं किसी घायल शत्रु का वध नहीं कर सकता।"

सम्राट ने उसे तत्काल एक नोबल बना दिया और उसे कुल-चिह्न-स्वरूप एक ऐसी ध्वजा प्रदान की, जिस पर तीर से छेदी हुई लकड़ी की बोतल का चित्र था।

—शिवाश्रम, चांदपोल जोधपुर

बेझिझक सूर्य

तब भी तुम मेरे पास होते हो सूर्य
जब यहां स्याही बिखरती है
या तुम्हारी पहली किरन
किसी और के आंगन
उतरती है
तुम तक पहुंचने की कोशिश में
किसी चिड़िया के पंख जब
अपने ही जाल में उलझ जाते हैं
या आतुर देह पर
पंख उग आते हैं
तब भी तुम मेरे पास होते हो सूर्य
जब न सुबह होती है
न दोपहर
न शाम
जब अंधेरा खटखटाता है
घर का दरवाजा
बेझिझक सरेआम
तब भी तुम मेरे पास होते हो सूर्य
तब मैं तुम्हें समूचा पाती हूं

—सुनीता बुद्धिराजा

जी-२३३, प्रीत विहार, दिल्ली-११००९२

जुगनू-सा मन

वीतरागी प्रेमी-सा
अनुरागी योगी-सा
कल्पनाओं के खंडहर में
भटकता हुआ
घाटियों के अंधेरे में
प्रेतों की छाया तले बैठ
टिमटिमाते जुगनुओं को
समेटकर
भय और अभय के बीच
सिमटा हुआ
ये मेरा मन
महा-काल की प्रतीक्षा
में रत
प्रति क्षण जीता और
मरता है

—मंजरी वर्मा

२६, फिरोजशाह रोड, नयी दिल्ल

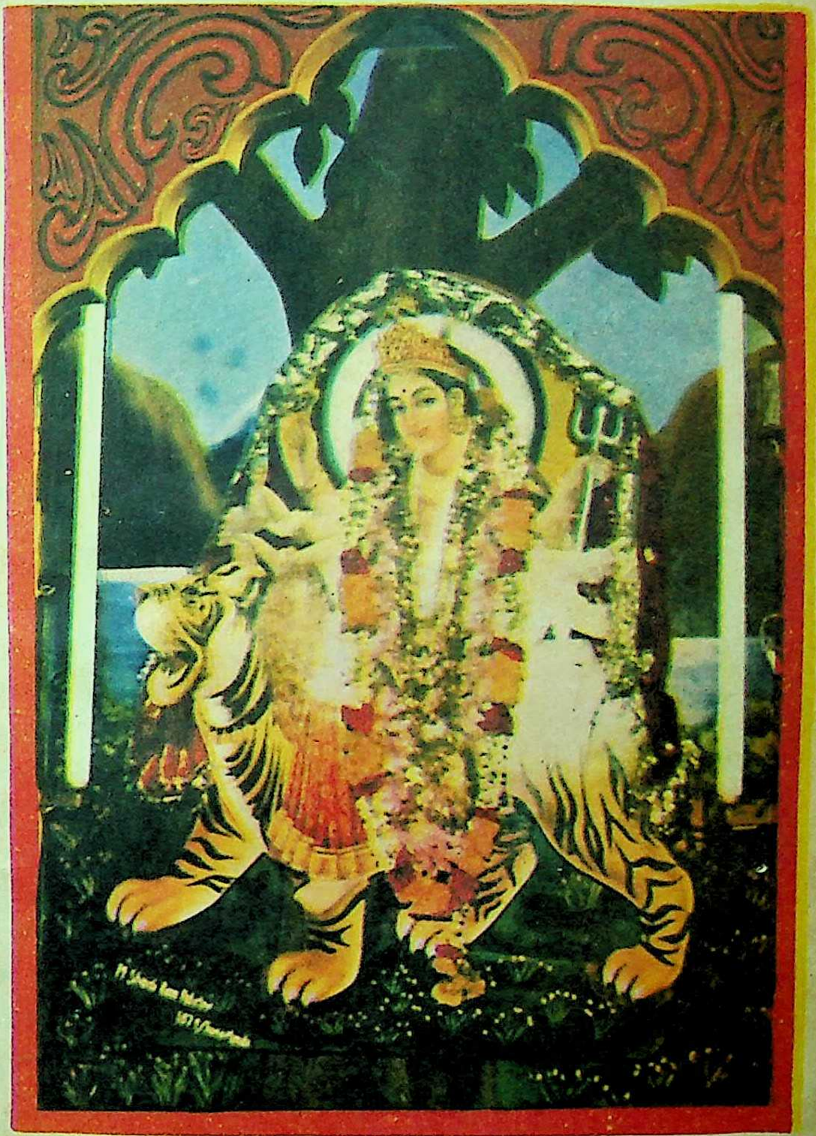

सर्वमंगल मांगल्ये शिवे सर्वार्थ साधिके
शरण्ये त्र्यम्बके गौरी नारायणि नमोऽस्तुते

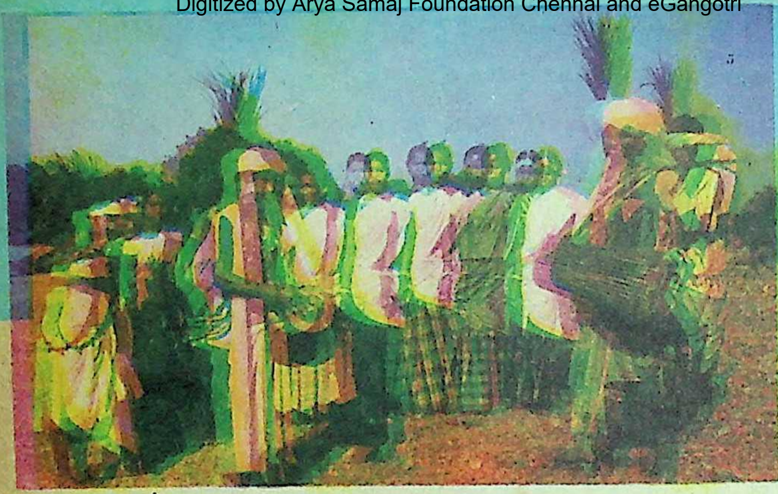

छाया : आर. एन. प्रसाद

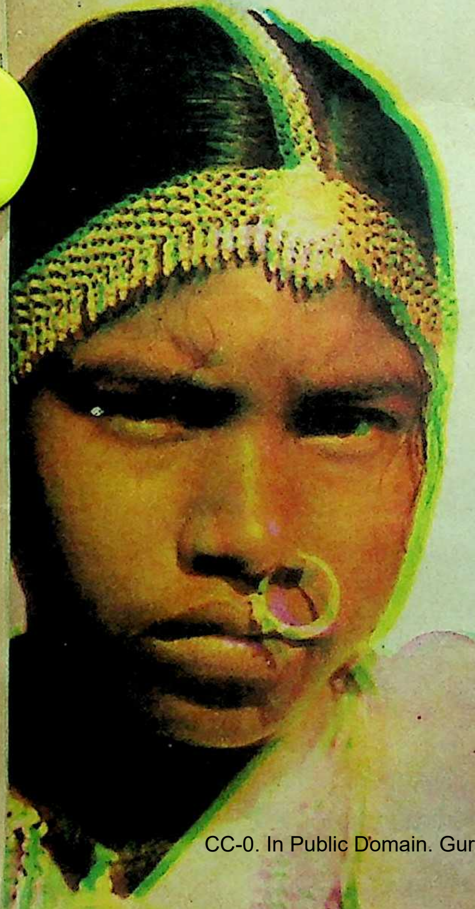

भारत में बसनेवाली जन-जातियों में संथाल जाति का प्रमुख स्थान है। यह जाति मुख्यत: बिहार के संथाल परगना, भागलपुर, मुंगेर, पूर्णियां और छोटा नागपुर में निवास करती है। संभवत: संथालों के वास करने के कारण ही जिले का नाम 'संथाल परगना' पड़ा हो। दुमका, गोड्डा पाकुर और राजमहल आदि जगहों में संथालों की संख्या अधिक है। आदिवासियों में संथाल अनुशासित जाति मानी जाती है।

इन
इस बारे
उपलब्ध
रिवाजों
पर इनक
लगाया
के अनुस
में उत्तर
में आक
और बि

बात है
दूसरे न
जानका
प्रम हंट
उत्तर-पू
पादरी प
अध्ययन
भारत
ने म
संथालों
रिवाजों
अधिक
संथ

हंस की संतान हैं ये संथाल

● नारायण भक्त

> **संथाल आज जिस गरीबी, बेरोजगारी और शोषण के शिकार हो दयनीय अवस्था में जी रहे हैं, उसे देखते तो यह नहीं लगता कि उनका भी कभी अपना स्वतंत्र और शक्तिशाली राज्य था, लेकिन सच यही है . . .**

इनकी उत्पत्ति कब, कहां पर हुई, इस बारे में निश्चित रूप से कोई जानकारी उपलब्ध नहीं है। इनमें प्रचलित रीति-रिवाजों, परंपराओं और भाषा के आधार पर इनकी उत्पत्ति के बारे में कुछ अनुमान लगाया जा सकता है। पादरी इस्क्रेफसर्ड के अनुसार, संथाल लोग सबसे पहले भारत में उत्तर-पश्चिम में प्रविष्ट हुए और पंजाब में आकर बस गये। वहां से ये मध्यप्रदेश और बिहार (छोटा नागपुर) आये। यह और बात है कि मध्यप्रदेशवासी ये आदिवासी दूसरे नामों से जाने जाते हैं। एक दूसरे जानकार कोलेनल डाल्टन और सर विलियम हंटर ने लिखा है, 'ये लोग भारत में उत्तर-पूर्व से अपने वर्तमान स्थान में पहुंचे।' पादरी पी. ओ. बोडिंग ने संथालों का विशेष अध्ययन करके निष्कर्ष निकाला है कि 'ये भारत में उत्तर-पूर्वी दिशा से ही आये।' अपने मत के समर्थन में उन्होंने कहा है कि संथालों की शारीरिक विशेषताओं, रीति-रिवाजों और भाषा में पूर्वी दिशा के तत्त्व अधिक हैं।

संथालों की उत्पत्ति के संबंध में यह

सामने के पृष्ठ पर : ऊपर : नृत्य करते हुए संथाल
नीचे : परंपरागत आभूषणों से सजी एक संथाल युवती

वृत्तांत पढ़ने को मिलता है कि इनकी उत्पत्ति हंस से हुई है। हंस घास के बीजों से पैदा हुआ। इनके दो अंडों से संथालों के देवता ने पहले दो आदमी बनाये। जिसमें एक स्त्री थी, एक पुरुष। इनके दो पूर्वजों ने इन्हें (अपनी संतान) बारह गोत्रों में बांटा। अब अनेक गोत्रों में बंटे करीब बीस लाख संथाल हैं, किंतु ये अपने को एक ही पूर्वज की संतान मानते हैं।

श्री राजेन्द्र अवस्थी ने आदिम जाति एवं जनजातियों के जीवन को करीब से देखा और उन्होंने इस दिशा में विपुल सामग्री की सर्जना की है, जिसमें इनके दैनिक-जीवन, सामाजिक परिवेश और प्रकृति के उन्मुक्त वातावरण में जीनेवाले वनवासियों के हर्षोल्लास की विशद चर्चा है। मौलिक कला के माध्यम से भी इन्होंने इनके जीवन को रूपायित किया है। उदाहरणार्थ उनका एक उपन्यास है—'सूरज किरण की छांव'।

संथालों ने इन क्षेत्रों में बसने पर अपने को चारों ओर से हिंदुओं से घिरा पाया। वाराणसी, राजगृह, गया-जैसे हिंदुओं के महान तीर्थ इनके निकट थे। संथाल अपने को हिंदुओं से अलग मानते थे और इनके प्रभाव से मुक्त रहने के लिए पूरी कोशिश कर रहे थे। सामाजिक, आर्थिक और बौद्धिक दृष्टि से संथालों से हिंदू आगे थे। जमींदार और व्यापारी हिंदू इन सीधे-सरल और पिछड़े लोगों का अधिक से अधिक शोषण करना चाहते थे और कर भी रहे थे। उनकी इसी मनो के कारण संथाल हिंदुओं से घृणा करने ल हैमिल्टन ने लिखा है, 'सन १८० वीरभूमि के जमींदारों ने संथालों बहुत अत्याचार किया, जिससे वे होकर दुमका क्षेत्र में आकर बस गये।

संथालों का भी साम्राज्य था

संथालों में यह दंतकथा प्रचलित र कि किसी समय उनका भी एक स और स्वतंत्र साम्राज्य था। इसके र उसी प्रकार के थे-जैसे मध्य यु राजा और संथाल जनता वैसी ही म थी-जैसी कि उस युग की हिंदू जन अपने स्वतंत्र राज्य स्थापित क एवं हिंदू जमींदारों के शोषण से मु पाने के लिए इन्होंने विद्रोह किया, इन्हें सफलता नहीं मिली। हां, इन्हें यह हुआ कि सरकार इनकी समस्य के प्रति सजग हो गयी। मार्टिन ओ के अनुसार, 'संथालों को यह वि हो गया कि सशस्त्र विद्रोह के जरि अपना स्तर ऊंचा नहीं उठा सकते। स्वरूप उनका झुकाव हिंदू आचार-वि की ओर अधिक हुआ और वे हिंदुओं संस्कृति से धीरे-धीरे प्रभावित होने आजकल संथालों की संस्कृति पर संस्कृति का बहुत प्रभाव है।'

संथाल आर्थिक दृष्टि से पिछड़े पहले वे उदरपूर्ति का मुख्य साधन शि बनाये हुए थे, किंतु जंगलों के ह्रास तथा जनसंख्या में वृद्धि हो जाने के

स्वरूप, धीरे-धीरे शिकार का अभाव होने लगा। आजकल इनके जीविकोपार्जन का साधन खेतीबारी करना, साग-सब्जी उगाना और अपने द्वारा उत्पादित वस्तुओं को बेचना, मजदूरी आदि है। किसी समय वे कपड़े, बर्त्तन और लोहे के औजार बनाने का काम स्वयं करते थे, किंतु वे अब निकट के हिंदू, कुम्हारों, लोहारों और वस्त्र-विक्रेताओं पर निर्भर रहते हैं।

नौकरी : जीवकोपार्जन का साधन

सन १९०८ में सिंहभूमि में टाटा इस्पात कारखाने के चालू हो जाने से, संथालों का जीवन अधिक प्रभावित हुआ। वे कल-कारखानों में नौकरी करके जीवन-निर्वाह करने लगे। उनके खेती के पुराने ढंग बदल गये। अब वे जुताई-बुआई, खाद, बीज और सिंचाई आदि के संबंध में नयी पद्धतियों और नयी विचारधाराओं को स्वीकार करके उसके अनुसार चल रहे हैं। फिर भी इनकी आर्थिक स्थिति बहुत दयनीय है। लगभग दो प्रतिशत ग्रामीण संथालों को दोनों वक्त भरपेट भोजन मिल पाता है, और वह भी केवल आठ-नौ महीने। शेष माह वे जंगली कंद-मूलों को खाकर गुजारते हैं। ऐसी स्थिति में वे ठेकेदारों के हाथ बिकते तथा ईसाई धर्मप्रचारकों के चंगुल में फंसते हैं। विवश होकर रोजी-रोटी की तलाश में ये गांव-घर छोड़कर शहर में भाग रहे हैं। बड़े-बड़े ठेकेदार इन्हें रुपये-पैसे का प्रलोभन देकर गुमराह करते हैं और इनकी इज्जत-आबरू से भी खिलवाड़ करने से नहीं चूकते।

नृत्य-संगीत से भरपूर जीवन

विपन्नता का जीवन जीनेवाले संथालों के कुछ विचित्र सामाजिक-पारिवारिक परिवेश को देखकर अचरज भी होता है और खुशी भी। इनके जीवन में पर्वों और उत्सवों का बड़ा महत्त्व है। इनके तीन प्रमुख त्योहार हैं—बाहा, सोहरई तथा सकरात। जब किसी के यहां ढोल बजता है, तो आस-पड़ोस के गांव के लोग अपने को रोक नहीं पाते। बड़े त्योहारों के अवसर पर तीस-चालीस मील तक के लोग इकट्ठे होते हैं और ऐसे अवसरों पर खाना-पीना, नाचना-गाना; शराब पीना और मौज मनाना मुख्य होता है। दिनभर के जी-तोड़ परिश्रम के बाद संगीत-नृत्य का आनंद ये भरपूर रूप से उठाते हैं। पर्व-त्योहार, शादी-विवाह के अवसर पर

'हड़िया' (चावल की शराब) छककर पीते-पिलाते हैं।

शादी का बंधन : धान-हल्दी का कंगन

संथाली लोगों में विवाह की बड़ी ही रोचक और विचित्र प्रथा है। जब वर की बारात वधू के द्वार पहुंचती है, तब इनका लोकप्रिय नृत्य 'पैंकी' होता है। इसमें सिर्फ वर-पक्ष के लोग ही भाग लेते हैं। वधू के घर की स्त्रियां इस मौके पर 'दोंग' नृत्य करती हैं। नृत्यों के बाद दोनों पक्षों की उपस्थिति में वर-वधू को सजाकर दो टोकरों में बिठाया जाता है और सिंदूर-दान की रस्म भी अदा की जाती है। तत्पश्चात वर-वधू को नहला-धुलाकर दोनों के हाथ में धान और हल्दी का कंगन बांध दिया जाता है। यह कंगन तब तक बंधा रहता है, जब तक कि धान के अंकुर नहीं फूटते। अंकुर फूटने पर किसी शुभ मुहूर्त में कंगन खोल दिया जाता है। तभी फिर वर-वधू परस्पर मिलते हैं, इसके पहले मिलना वर्जित है।

जीने के लिए धर्म-परिव

धर्म क्या है ? इस प्रश्न का ज हर कोई नहीं दे सकता, पर भूख अ प्यास की ज्वाला क्या है, औषधि की आ श्यकता और एक सामान्य जीवन ज की बुनियादी जरूरतें क्या हैं—जैसे प्र के उत्तर सामान्यत: हर व्यक्ति दे सक है। इन प्रश्नों ने ही बहुत सारे आदि सियों को ईसाई धर्म स्वीकार करने लिए विवश किया है।

सरकार इनके उत्थान के लिए अलग विभाग कायम करके विभिन्न कल्या कार्य कर रही है, फिर भी ऐसे सहाय कार्य इनके लिए पर्याप्त नहीं। उन गरीबी, दिनानुदिन हर क्षेत्र में उन विपन्नता, भीषण बीमारियों से दवा आभाव में अकाल मृत्यु, हमें यह सोचने विवश कर देती है कि इनके जीवन खुशहाली लाना मात्र सरकार की जिम्मेदारी नहीं, बल्कि समाज की जिम्मेदारी है।

—गली हरिमंदिर, पटना

भाई-भाई

शाम को देर गये घर पहुंचा तो देखा, मेरे दोनों बेटे आपस में झगड़ रहे हैं। मैंने डांटते हुए कहा, "क्या तुम भाई-भाई प्रेम से नहीं रह सकते ? जब देखो तब ..."

इतने में मेरी छोटी बेटी गोद में चढ़कर पूछने लगी, "पापाजी, पापाजी, आज कहां गये थे ?"

"मैं बेटी ...", आगे मुझे चुप रह जाना पड़ा, क्योंकि, मैं जायदाद के एक मु से लौटकर आया था, जो मेरे और मेरे छोटे भाई के बीच चल रहा है।

—सत्य

बुद्धि-विलास

अपनी बुद्धि पर जोर डालिए और यहां दिये प्रश्नों के उत्तर खोजिए। उत्तर इसी अंक में कहीं मिल जाएंगे। यदि आप सारे प्रश्नों के उत्तर दे सकें तो अपने सामान्य ज्ञान को श्रेष्ठ समझिए, आधे से अधिक में साधारण और आधे से कम में अल्प।

—संपादक

१. एक पिता की उम्र उसके चार बच्चों की कुल उम्र के बराबर है। बीस साल बाद पिता की उम्र बच्चों की कुल उम्र की आधी होगी। बताइए, पिता की उम्र इस समय कितनी है—

क. ४० वर्ष, ख. ५० वर्ष, ग. ६०,वर्ष।

२. **कैलास** मानसरोवर की यात्रा करनेवाले भारतीय तीर्थयात्रियों को तिब्बती क्षेत्र में पहुंचने के लिए किस दर्रे को पार करना पड़ता है?

क. खैबर, ख. कराकोरम, ग. लिपुलेख।

३. **भारत** के किस बड़े राज्य में अभी तक उच्च सदन (विधान-परिषद) का निर्माण नहीं हुआ है, यद्यपि संविधान के सातवें संशोधन (१९५६) के अनुसार उसकी व्यवस्था कर दी गयी है?—

क. आंध्रप्रदेश, ख. तमिलनाडु, ग. मध्य-प्रदेश, घ. प. बंगाल।

४. **सातवहन** वंश (ई. पू. पहली शताब्दी) ने देश के किस भाग में राज्य किया था?—

क. उत्तरी-पश्चिमी, ख. मध्य, ग. पश्चिमी, घ. दक्षिणी।

५. **सोवियत** तथा अमरीकी अंतरिक्ष-यात्रियों के अतिरिक्त अन्य किस देश के व्यक्ति ने अब तक अंतरिक्ष-उड़ान में भाग लिया है?

६. **भारतीय** मूल के किस व्यक्ति को पहली बार ब्रिटिश सेना में 'कमांडर' का पद प्राप्त हुआ?

७. **हाल** में एक खगोलविद ने सौरमंडल के दसवें ग्रह का पता लगाया है। उसके बारे में संक्षेप में बताइए।

८. **राष्ट्रसंघ** ने वर्ष १९८७ को किस उद्देश्य के लिए अंतरराष्ट्रीय वर्ष मनाने का निश्चय किया है?

९. **नीचे** दिये गये चित्र को ध्यान से देखिए और बताइए यह क्या है—

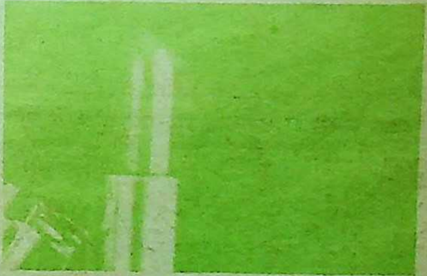

कहानी

तुम लौट आओ

• पृथ्वीराज मोंगा

साढ़े चार बजते-बजते वह अपनी कुरसी को पीछे खिसकाकर उठ खड़ा हुआ। अपने आपको जबरदस्ती सीट पर बिठाये रखने की सारी कोशिशें फिर से नाकाम हो चुकी थीं। रह-रहकर लग रहा था कि आपू लौट आया है और घर के बंद दरवाजे पर पंजे मारता हुआ 'कूं-कूं' कर रहा है। मान लो, दरवाजा न खुलने पर वह निराश होकर कहीं चला गया तो...? इतना सोचना था कि उसका दिल-जैसे बैठने लगा।

अगले ही क्षण कमरे का दरवाजा खोलकर वह बाहर निकल आया। सुबह दफ्तर आने के घंटाभर बाद भी ठीक यही महसूस हुआ था और वह ग्यारह बजे दफ्तर से निकलकर तेज-तेज कदमों से घर की ओर चल दिया था। वहां पहुंचकर वही हुआ जो पिछले तीन दिनों से हो रहा था। आपू कहीं नहीं था। अब फिर...। आज ही क्यों, जब से आपू खोया है, घर के चक्कर काटने में ही दस से पांच का वक्त कटता है।

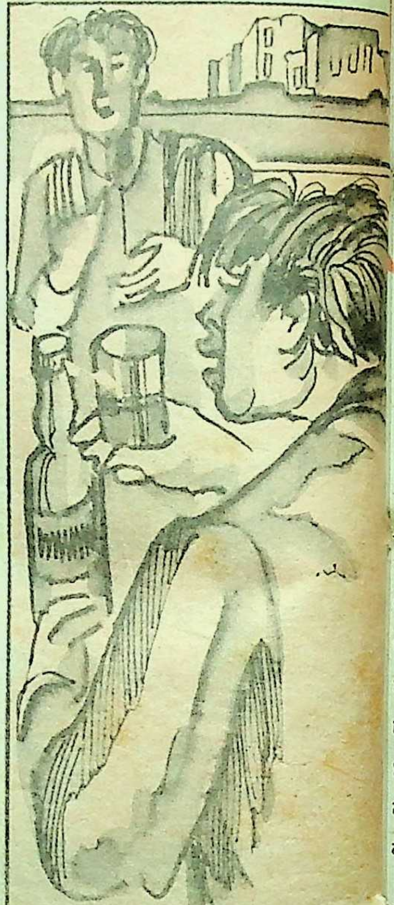

वह सड़क पर आया और घर ओर तेजी से चल पड़ा। तभी एक याद आया कि घर में मुश्किल से पाव शराब होगी। और वह शराब दुकान की तरफ मुड़ गया।

रह-रहकर लग रहा था कि आपू लौट आया है . . . मान लो, दरवाजा न खुलने पर वह निराश होकर कहीं चला गया तो . . . ? इतना सोचना था कि उसका दिल बैठने लगा

तीन तल्ला मकान की बरसाती में रहता था वह। परिवार के नाम पर पहले वे दो थे—वह और आपू और अब आपू के चले जाने के बाद वह अकेला है। गेट खोलकर अंदर आया और धीरे-धीरे सीढ़ियां चढ़ने लगा। वही, फिर वही उम्मीद. . . शायद आपू बंद दरवाजे पर पंजे मार रहा हो। दरवाजे के सामने पहुंचने पर उसकी उम्मीद कहीं नाउम्मीद में न बदल जाए, इस डर से उसके पांव एकाएक जैसे–एक-एक मन के हो गये। धीरे-धीरे एक-एक सीढ़ी तय करता हुआ दरवाजे के सामने पहुंचा, तो वहां आपू को न पाकर मन निराशा से भर गया।

हाथ में पकड़ी चाबी से ताला खोला और चाबी को वापस जेब में रखते हुए हैंडल दबाकर दरवाजा खोल दिया। तब ऊपर आकर बिना सीढ़ियों के दरवाजा बंद किये वह कमरे का दरवाजा खोलने लगा। जानता है कि सीढ़ियों का दरवाजा बंद न करने के पीछे फिर उसकी वही बेसिर-पैर की उम्मीद है। यों उसे मन ही मन मालूम हो चुका है कि आपू अब लौटकर आनेवाला नहीं। फिर भी. . .

रसोई में पहुंचकर उसने शराब निकाली और एक बड़ा-सा पैग बनाकर एक ही सांस में पी गया। फिर एक और पैग बनाकर गिलास को हाथ में पकड़े-पकड़े छत पर टहलता रहा, फिर पिछवाड़ेवाले रेलिंग के पास खड़ा हो, सामने फैले आरक्षित जंगल को देखने लगा, देखता रहा।

एकाएक उसकी निगाहें आकाश की ओर उठ गयीं। आकाश में इधर-उधर छितरी बदलियों में डूब रहे सूरज की गेरुआ लाली समायी, हुई थी। . . शोभा की याद हो आयी। शोभा को डूबते हुए

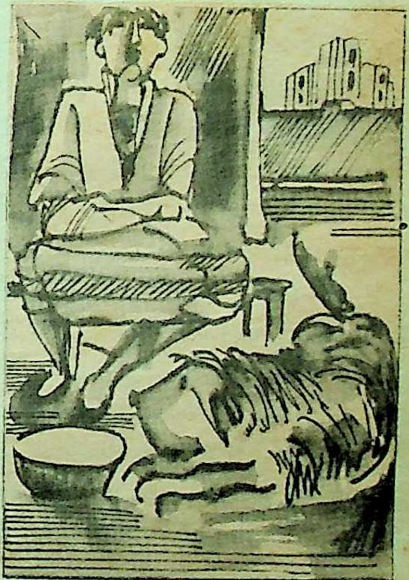

सूरज के रंगों को देखना बहुत पसंद था। भोपाल में रहते हुए वह अकसर खिड़की की सलाखों के पास खड़ी हो डूबते सूरज को देखा करती थी। शायद, शोभा के इसी शौक ने ही उनके गृहस्थ के सूरज को भरी दुपहरी में डुबो दिया। विवाह के दो साल बाद ही सब कुछ गड़बड़ा गया था और तब रोज-रोज के कलह से तंग आकर एक दिन वे दोनों अलग हो गये।... तेरह वर्ष होने को आये इस बात को। तब से आज तक उसने रातों को कैसे काटा है, दिनों को कैसे मारा है, यह वही जानता है। पांव फिसलन पर टिके हैं और कहीं कोई ठहराव नहीं। और शोभा...! उसके बारे में सुना था कि उसे सही ठिकाना मिल गया है। खुद प्रिंसिपल हो गयी है, पति आयकर विभाग में कोई आला अफसर है, घर में तीन बच्चे हैं और भी बहुत कुछ है।

आपू ने आकर उसके गिर्द बुने अकेलेपन के जाल को पूरी तरह कुतर डाला था, लेकिन आज वह भी ...

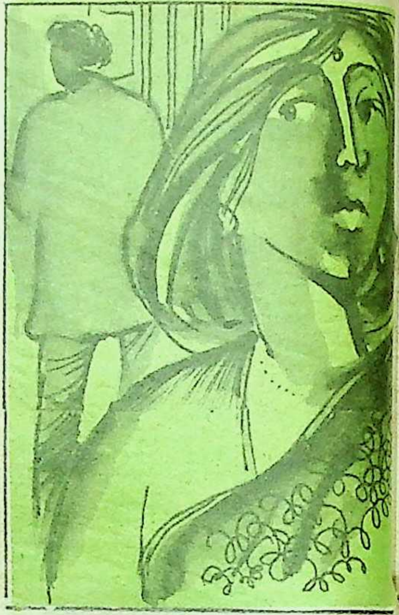

वो कहते हैं न कि बारह साल के बाद तो घूरे के भी दिन फिरते हैं। एक साल पहले आखिर अकेलेपन से उसकी मुक्ति भी संभव हुई, और उसका जिम्मेवार था आपू। आपू ने आकर उसके गिर्द बुने अकेलेपन के जाल को पूरी तरह से कुतर डाला था। उसके जीवन का वर्षों पुराना ढर्रा एकाएक बदल दिया था। सु पांच-साढ़े पांच बजे उठता, आपू के लि दूध और ब्रेड का प्रबंध करता, फि खुद बेड-टी बनाकर पीता और उ बाद दोनों घूमने निकल जाते—आर जंगल की तरफ। वहां चिड़ियों के प आपू की उछल-कूद देखते ही बनती कोई पूछता तो वह गर्व से बताता, 'ति की सबसे बढ़िया नस्ल का कुत्ता है जंगल से लौटकर नहाता-धोता, खुद ख पकाकर खाता, आपू के लिए रखता तब दफ्तर के लिए निकल जाता। टाइम में वापस आने पर आपू उ ऐसे लिपट जाता-जैसे वह तीन घंटे बजाय तीन दिन के बाद लौटा हो।

फिर जब शाम को लौटकर अ

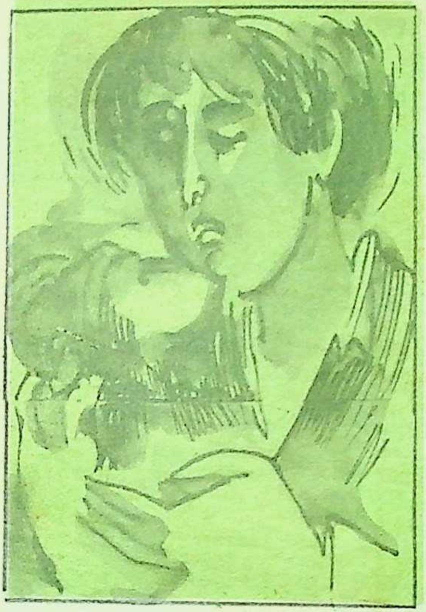

तब आपू को दूध के साथ बिस्कुट खिलाता। खुद भी चाय के साथ कुछ हल्का-सा खाने के बाद आपू को साथ ले मार्केट की तरफ निकल जाता। रात को आपू खुली छत पर उछल-कूद करता रहता और वह धीमे-धीमे पीता रहता। फिर पूरी रुचि के साथ मनपसंद खाना तैयार करता, खाता, सोता। आपू के साथ रहते उसे कभी एक क्षण के लिए भी नहीं लगा कि वह अकेला है। एक ही साल में उसका लपट जीवन एक तरह से काफी पीछे छूट गया था। जो काम उसके जीवन में आकर रीता, अन्विता और प्रीति न कर सकीं, वह आपू ने कर दिखाया था। और अब ...?

'अब कौन है यहां ?' बुदबुदाते हुए उसने जल्दी से गिलास मुंह से लगाया और एक ही सांस में खाली कर दिया।

उसे शोभा की याद हो आयी शोभा को डूबते सूरज का देखना पसंद था, और इसी पसंद ने ...

उसने आपू के बिस्तर को देखा। कुरसी पर बिछा रुई का गद्दा और उसके ऊपर रखा लाल रंग का कंबल। अचानक उसके ओंठों पर मुसकुराहट फैल गयी— 'शौक साले के सारे साहबी थे। फर्श पर लगे बिस्तर में नहीं सोयेंगे। कुरसी पर बिस्तर बिछा दो, तो झट ऊपर चढ़ जाएंगे।' एकाएक दो-ढ़ाई महीने पहले की एक घटना याद हो आयी और उसके ओंठों पर फैली मुसकान और लंबी हो गयी। उस दिन तो कमाल ही कर दिया था आपू ने। रसोई में खड़ा डब्बे-डिब्बों की सफाई कर रहा था वह। आपू रसोई के दरवाजे पर बैठा उसकी हर हरकत को बड़े ध्यान से देख रहा था। तभी डिब्बों के पीछे आपू की 'फीडिंग-बोतल' मिली, जिससे आपू बचपन में दूध पिया करता था। आपू ने बोतल देखी, तो उसके पास आकर लगा मचलने। शायद, अपने बचपन की याद हो आयी थी उसे। उसने प्यार से आपू को डांटा और बोतल फिर वहीं रख दी। थोड़ी देर बाद जब उसने आपू के सामने प्याले में दूध रखा, तो आपू ने जाकर उसे सूंघा तक नहीं। जहां बैठा

था, वहीं से प्याले को टुकुर-टुकुर देखता रहा। वह परेशान। आपू को गोद में उठाकर चूमा, पुचकारा, प्यार किया, लेकिन आपू टस से मस न हुआ। तभी उसे बोतल का ध्यान हो आया। और वह बोतल ले आया। बोतल देखते ही आपू उछल-कूद करने लगा। तब उसने प्यालेवाला दूध बोतल में डाला और निप्पल आपू की तरफ बढ़ा दी। आपू निप्पल मुंह में लेकर पुच्-पुच् करके दूध पीने लगा। करीब आधी बोतल पीकर वह छालांगें मारता हुआ बाहर भाग गया और दोनों पंजे रेलिंग पर टिकाकर नीचे सड़क पर देखते हुए भौंकने लगा। फिर वापस लौटा और 'निप्पल' को मुंह में लेकर बाकी दूध भी गटक गया। वह उस दिन इतना हंसा था, इतना हंसा था, कि...। पहले तो वह बड़ी देर तक हंसता रहा, फिर आपू को गोद में उठाकर तोतली भाषा में डांटने लगा...। यह सब याद आते ही उसने हाथ बढ़ाकर पास की तिपाई पर रखी आपू की फोटो उठा ली। काला रंग, चार-चार अंगुल लंबे बाल, लंबोतरा चेहरा, बालों के पीछे छिपी-छिपी आंखें, उठा हुआ पंजा...। महसूस होने लगा, अगर वह थोड़ी देर और इसी तरह आपू की फोटो को देखता रहा, तो उसकी रुलाई फूट पड़ेगी। फोटो को वापस तिपाई पर रखा और शराब-वाले गिलास को उठाकर एक ही सांस में खाली कर दिया।

तभी एकाएक घंटी बजी। उसे अंदर ही अंदर बहुत खुशी महसूस हुई। वहीं बैठे-बैठे जोर से आवाज लगायी, "कौन? अंदर आ जाइए।"

दूध सप्लाई करनेवाला लड़का सुरेंद्र था।

"आज तो साहब, मतलब, इतनी सरदी है कि बस...।" थोड़ी देर चुप रहने के बाद सुरेंद्र फिर बोला, "जी वो, मतलब तीन दिन से आप सीढ़ियों में खाली बोतलें नहीं रख रहे हैं।"

वह जैसे एकाएक सन्नाटे में आ गया, "हां...। वो ... ऐसा है कि ... अच्छा आओ। बोतलें 'किचन' में रखी हैं। ले लो।"

सुरेंद्र को घर में पाकर उसे लगने लगा था कि वह अब अकेला नहीं है।

रसोई मे आकर सुरेंद्र ने आठ बोतलों को वैसा का वैसा पड़ा देखा, तो वह हैरान हो गया, "साब! ये तो मतलब, भरी हुई हैं। आपका कुत्ता बीमार है क्या?"

"आपू खो गया है सुरेंद्र," उसका स्वर भर्रा गया। "पता नहीं, कहां चला गया।"

"अरे-अरे ... वैसा कुत्ता तो मिलना भी मुश्किल है। कितना सुंदर था," थोड़ी देर की चुप्पी के बाद सुरेंद्र फिर बोला, "उसे कोई चुराकर ले गया होगा। अपने आप कहां जाएगा वो! आप तो मतलब उसे इतना प्यार करते थे ...।" सुरेंद्र के चेहरे से लग रहा था कि उसे आपू

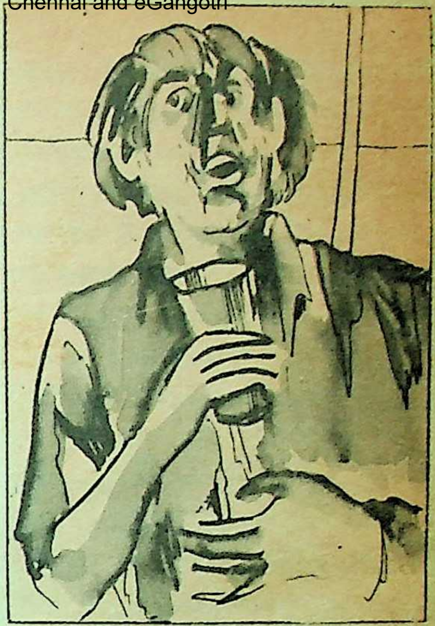

के खो जाने का समाचार सचमुच बुरा लगा है।

"थोड़ी-सी लोगे ?" उसने शराब की बोतल की ओर इशारा करते हुए पूछा। सोचा, इसी बहाने सुरेंद्र कुछ देर तो बैठेगा।

"नहीं साहब।"

"पीते ही नहीं या . . .?"

"पीता तो हूं . . . कभी-कभी, पर...।"

"पर क्या, ले लो एकाध पैग। इसमें क्या है!" उसने कहा और दो गिलासों में शराब उड़ेलने लगा।

सुरेंद्र ने गिलास हाथ में लेकर उसके गिलास के साथ टकराया और तब एक ही सांस में उसे खाली कर दिया। फिर गिलास को सिंक में रखते हुए बोला, "मैं अब चलता हूं साब! घर में सब इंतजार कर रहे होंगे। बोतलें ले जाता हूं।"

उसकी खुशी-जैसे एकाएक ठोकर लगने से मुंह के बल गिर पड़ी। बोला, "अच्छा, ठीक है। कल से सिर्फ एक बोतल काफी है।"

वह अकेलेपन के राक्षस की फौलादी बाहों की जकड़न महसूस करता हुआ बिस्तर पर लेट गया। पहले तो काफी देर तक कमरे में इधर-उधर देखता रहा, फिर आंखें बंद कर लीं। आंखों के सामने वह दिन कल की बात की तरह साकार हो उठा। उस दिन वह लंच में वापस आया, तो कमरे में इधर-उधर कागजों के टुकड़े फैले हुए थे। झट टेबल पर देखा—जरूरी कागज गायब थे। समझ गया कि आपू ने उन्हीं जरूरी कागजों के चिथड़े कर दिये हैं। वह घुटनों के बल नीचे बैठकर टुकड़े बटोरने लगा। फिर गुस्से से चिल्लाया, "आपू! इधर आओ।"

आपू उसे कागजों के टुकड़े बीनते देख शायद, अपनी भूल समझ चुका था। इसलिए भागकर अपनी प्रिय जगह कमरे के कोने में रखी तिपाई के नीचे जा छिपा और लगा 'कूं-कूं' करने। उसने भी गुस्से में काफी देर तक आपू को नहीं बुलाया और वहीं बैठकर टुकड़ों को तरतीब से जोड़कर गम-पेस्ट से कागज पर चिपकाता रहा। तभी उसे अपने बायें घुटने पर सरसराहट महसूस हुई! झट मुड़कर देखा, तो वहां आपू को पाया। आपू उसके घुटने

पर पंजा मारते हुए 'कूं-कूं' कर रहा था। उसने सारा गुस्सा भूलकर आपू को गोद में उठाकर चूम लिया . . .। यह घटना याद आते ही उसका मन भर आया। आंखें खोलते हुए बिस्तर से उठा ग्रौर पास रखा गिलास उठाकर मुंह से लगा लिया। दो-तीन घूंट पीकर गिलास नीचे रखा ग्रौर उठकर दरवाजा बंद करने लगा। सरदी से बदन में कंपकंपी छूटने लगी थी।

गिलास खाली करके नीचे रखते हुए उसने अपने आप से कहा, 'उठकर कुछ पका क्यों नहीं लेते? मद्रास होटल का डोसा, इडली खाते-खाते अब तो पेट भी गड़बड़ा गया है।' इतना बुदबुदाने के बाद थोड़ी देर चुपचाप बैठे रहा पता नहीं क्या सोचता रहा, फिर अपने दुस्साहस पर हंस पड़ा, "तुम पकाग्रोगे खाना?" उसे लग गया कि इस वक्त कुछ भी पकाना नामुमकिन है। एक तो मन नहीं, दूसरे सरूर काफी तगड़ा हो गया है, ग्रौर तीसरे नींद भी बड़े जोरों से आ रही है। अपने इन सब तर्कों से संतुष्ट होकर उसने बड़ी सहजता से हथियार डाल दिये ग्रौर उठकर रसोई की तरफ जाने लगा। रसोई में तीन-चार स्लाइस मिल गयीं।

स्लाइस खाने के बाद उसने एक गिलास पानी के साथ कांपोज की दो गोलियां भी निगल लीं। नहीं, आज वह नींद के साथ कोई 'चांस' नहीं लेना चाहता। तीन दिन से नींद न के बराबर आ रही है। पहले तो नींद आती नहीं, ग्रौर अगर आती है, तो सिलेसिलेवार दर्जनों सपने दिखायी देते हैं। वह बिस्तर में घुस गया। देखते ही देखते उसे नींद आने लगी।

तभी किसी ने सीढ़ियोंवाला दरवाजा खटखटाया। फिर आवाज आयी—'जोशी जी।'

उनींदेपन में वह एकाएक चौंका ग्रौर उठ खड़ा हुआ। जल्दी से दरवाजा खोलकर बाहर आ गया। वहां कोई नहीं था। ग्रंदर कहीं तकलीफ हुई। एकाध क्षण जड़-पत्थर हुआ वहीं खड़ा रहा, फिर आगे बढ़कर सीढ़ियों में झांकने लगा। सीढ़ियों में किसी को न पाकर वहां से हटा ग्रौर रेलिंग पर झुकते हुए नीचे सड़क पर देखा। नहीं, वहां भी कोई नहीं था। समझ गया, यह महज उसका वहम था। पिछले तीन दिनों में पता नहीं कितनी बार वह भाग-भागकर सीढ़ियों तक आया है, लेकिन . . .।

उसने तिपाई पर रखा हुआ पानी का गिलास उठाया ग्रौर गला तर करने के लिए दो-तीन घूंट पानी पी लिया। गिलास को फिर से तिपाई पर रखते हुए कुरसी पर बिछे आपू के बिस्तर को देखने लगा। गहरी सांस लेकर छोड़ते हुए उसने बिस्तर में घुसकर आंखें बंद कर लीं।

नींद बस आने को ही थी कि अचानक उसका ध्यान कानों में लगातार पड़ रही सन्न ऽऽऽ—सन्न ऽऽऽऽ की आवाज की ग्रोर चला गया। पहले तो लगा कि आवाज़

कहीं बाहर से आ रही है, लेकिन जब बाएं कान को हथेली से कसकर बंद किया, तब मालूम हुआ कि सन्न ऽ ऽ ऽ की आवाज कहीं बाहर से नहीं, बल्कि उसके मस्तिष्क के किसी कोने से फूट रही है। दाएं कान को बंद करने की जरूरत नहीं पड़ी, क्योंकि उसे बचपन में ही पिताजी ने थप्पड़ मारकर खराब कर दिया था। पिताजी के बारे में सोचते ही उसके मुंह और गले में कड़ुवाहट भर गयी। उसका कान तोड़ा, मां को पीट-पीटकर मार डाला और तब खुद मरते-मरते शोभा को उसके मत्थे मढ़ गये। ...अगले ही क्षण वह इस सबसे ध्यान हटाकर सोने की कोशिश करने लगा।

एकाएक लगा जैसे फिर से दरवाजे पर कोई दस्तक दे रहा है। फिर किसी ने उसे पुकारा—'जोशी ऽ ऽ ऽ . . . ।' उसे लगा कि वह रसोई में खड़ा है। ऊपर मकड़ी के जाले में एक पतंगा फंसा हुआ है। वह जैसे-जैसे छूट जाने के लिए छटपटाता है, जाल में और ज्यादा उलझता जा रहा है . . । तब मकड़ी पतंगे के पास आकर तेजी से उसके आसपास चक्कर लगाने लगी है—एक, दो, तीन, चार . . .। 'हाय ऽ ऽ ऽ।' वह जोर से चिल्लाया और उठकर बैठ गया। डर के मारे उसकी सांस तेज-तेज चल रही थी, शरीर पसीने में नहाकर ठंडा हो गया था, हाथ-पांव थर-थर कांप रहे थे।

उसे लगा, अकेलेपन की मकड़ी ने दुबारा से उसके इर्द-गिर्द एक जाला बुनना शुरू कर दिया है—पहले से कहीं ज्यादा मजबूत और स्थायी। और यह भी तय है कि इस बार उस जाल को काटने कोई नहीं आयेगा। खुद-ब-खुद जाल से छूट निकलने का दम न उसमें कभी था, न अब है। इस बार वह छुटकारे के लिए छटपटायेगा, छटपटाता रहेगा—रसोई में मकड़ी के जाले में पतंगे की तरह। और तब एक दिन . . . । यही होने को है . . . यही होगा भी . . । वह बड़बड़ाने लगा—'अब कौन है मेरा जो इस दलदली अकेलेपन से मुझे निकाले ? कोई नहीं . . . कोई भी नहीं . . .। मां, बाप, भाई, बहन, बीवी, दोस्त कोई नहीं। आपू . . . आपू भी नहीं। वह भी चला गया बाकी सबकी तरह। जाने दो . . .। जाए . . .। कौन चिंता करता है . . . कौन . . .।' और अगले ही क्षण वह रजाई में मुंह छिपाकर सुबकने लगा।

—द्वारा—नेशनल बुक ट्रस्ट, ए-५ ग्रीन पार्क, नयी दिल्ली-११००१६

"छोटे-छोटे चित्रों को देखकर मुझे बड़ी कुंठा होती है, बड़े चित्रों की तो बात ही कुछ और होती है, भव्य सुंदर !"

"शायद, आप कला-समीक्षक हैं ?"

"जी नहीं ! मैं तो फ्रेम बनानेवाला हूं !"

—मदनलाल अग्रवाल

यह ककनूसी नस्ल की जीत है

• तरुण विजय

अमृता अमृता, इमरोज इमरोज। दरवाजे पर पंजाबी और अंगरेजी में दो नाम। इससे पहले ही सीढ़ियां चढ़ते हुए यह अहसास हो गया था कि आगे एक असामान्य अनुभव मेरी प्रतीक्षा कर रहा है। वही हुआ। लगता है कि जो कुछ भी अमृता-इमरोज के घर में आता है, वह असामान्य हो जाता है। यहां तक कि खूबसूरत खिड़कियों से भीतर आने के बाद हवा भी 'कुछ और' ही हो जाती है। कला का सरसराता, रेशमी, मृदुल लाड़-प्यारभरा, सम्मोहन की हद तक ले जानेवाला अहसास। निर्बंध, उन्मुक्त, एकदम खुला अहसास। और शायद, इसी उन्मुक्तता का यह असर हुआ कि अमृताजी से पुरस्कार के जोड़-घटाव पर कम, और उनके अपने लेखन की प्रवृत्तियों के बारे में काफी देर तक बातचीत हुई।

प्रश्न : 'केहड़ी जिंदगी : केहड़ा साहित' में आपने आइन रैंड के दर्शन को उद्धृत करते हुए कहा है कि जिंदगी एक कद्र है, जिसे सोच के नफीस सिक्के से ही खरीदा जा सकता है। इसे तनिक स्पष्ट करेंगी?

उत्तर : वैसे तो कद्र और कीमतें हर आदमी के लिए अलग-अलग होती हैं, लेकिन तो भी सबसे बड़ी बात यह होनी चाहिए कि आदमी अपने प्रति ईमानदार रहे। अपने ज्ञान से जो भी पाया है, उससे जो भी पहचान मिली है, उसके प्रति ईमानदार रहे।

प्र.: आपने अपनी पहचान कैसे तलाश की?

उ. : अपनी पहचान पाने का तो एक 'प्रॉसेस' होता है, जो इल्म के साथ बढ़ता है। जैसे-जैसे आपके ज्ञान का विकास होता है, वैसे-वैसे आपको अपनी पहचान मिलती जाती है। इल्म भी तो एक दीये की लौ की तरह है, जिसकी लौ में हम देखते हैं, जो चीजें पहले नजर नहीं आतीं

अमृता प्रीतम पंजाबी की बहुचर्चित कवयित्री और कथाकार हैं। तरल संवेदनशीलता, आत्मीय अनुभूति, युग-सापेक्ष यथार्थ-बोध और सहज कला-दृष्टि उनकी काव्यगत ऐसी विशेषताएं हैं, जिनसे उन्होंने अपनी एक अलग पहचान बनायी है। उन्हें हाल ही में भारतीय ज्ञानपीठ पुरस्कार से सम्मानित किया गया है। यहां प्रस्तुत है उनसे एक बातचीत।

अमृताजी : 'नागमणि' का अवलोकन

वह नजर आने लगती हैं। एक बार एक साहब, जो पंजाबी के बहुत अच्छे अफसाना-लेखक हैं—देविंदर सिंह ने एक किताब लिखी, जिसमें इंटरव्यू ही हैं। उस दौरान उन्होंने मुझसे पूछा कि क्या मैंने जिंदगी में कोई गलती की है। कब की? गलती किसे कहते हैं? मैंने कहा, जिंदगी में इंसान दो ही तरह की गलती करता है– एक तो तब, जब कि वह पानी के किनारे खड़ा होता है, और चाहता है कि पानी को छू ले, पर छू नहीं पाता। और दूसरी तब, जब उसके भीतर इतना बड़ा सैलाब आता है कि वह बिना यह सोचे-समझे कि पानी कैसे पार करेगा, तैर पायेगा या नहीं; छलांग लगा देता है। फिर उन्होंने दूसरा सवाल किया कि तुमने इसमें से कौन-सी गलती की है? मैंने जवाब दिया, दोनों ही की हैं। (उन्मुक्त हंसी)

प्र. : दोनों गलतियां करके आपने क्य पाया ?

उ. : गलती के मायने ही यह है कि आप जानें, महसूस करें कि आपने गलती की आप पानी के किनारे खड़े रहे और उसे नहीं छुआ, सो वह पल खो दिया। इसी तरह जब पानी में छलांग लगा दी थी तो यह नहीं सोचा कि मेरा होगा क्या ? वह पल भी आया, मैंने देखा, अपने ऊपर झेला, और सचमुच किनारे पर खड़े-खड़े एकदम से पानी में छलांग दी।

प्र. : लेकिन आप तो बहुत खूबसूरती से तैरकर निकल आयीं।

उ. : वह तो ठीक है, डूबी नहीं, लेकिन वक्त ने मुझे डूबने का अहसास जरूर करा दिया...डूब भी सकती थी।

प्र. : इसके साथ ही यह भी तो है कि, जो बिना सुरक्षित किनारे पर पहुंचने का बंदोबस्त किये, छलांग लगा देते हैं, जिंदगी का असली लुत्फ वही उठा पाते हैं।

उ. : हां, लुत्फ भी उठाते हैं, और डूब भी जाते हैं ! (हंसी)

अहसास की शिद्दत

प्र. : खैर, आजकल वह कौन-सा सवाल है, जो आपके मन को मथ रहा है ?

उ. : मानसिक रूप से, मन में अहसास की जितनी शिद्दत है, 'इंटैंसिटी' है, वह तो उतनी ही है, जितनी जवानी में थी, बल्कि उससे कहीं ज्यादा ही है। लेकिन 'फिजिकल-एज' (शारीरिक उम्र) 'मेंटल-एज' (मानसिक उम्र) के साथ नहीं चलती। अगर, ये दोनों कभी इकट्ठे हो पाते, तो क्या बात थी ।

प्र. : इसके लिए आपको उस अमृत की तलाश है, जो . . .

उ. : नहीं, ये अमृत तो मिलता नहीं। बस, अब तो यही है कि जितना भी जिस्म काम दे सके, उससे लेंगे। बाद में अलविदा कह देंगे।

प्र. : ज्ञानपीठ पुरस्कार मिलने पर आपको कैसा अहसास हुआ ?

उ. : ज्ञानपीठ अवार्ड मिलने से एक बड़ी बात तो ये हुई कि हिंदुस्तान की, जो जुबानें हमसे बहुत दूर हैं—तमिल, तेलुगू, मलयालम, कन्नड़ या और बाकी जुबानें, उनसे भी रातों-रात रिश्ता बढ़ गया। कुछ ने मेरे 'नावलों' और नज्मों का अनुवाद करना चाहा, कुछ मेरे विचार जानने आये। अपनी जुबान के लिए तो बहुत कुछ करने को था। मैं अकेली जितना कुछ कर पाती हूं, वैसे भी करती हूं, और करना ही था। अब मैगजीन ('नागमणि') निकालती हूं, तो उसमें से कुछ फायदा लेना नहीं हैं, देना ही है। मेहनत भी बहुत करनी पड़ती है, वक्त भी बहुत लगाना पड़ता है। इसका बस, इतना ही संतोष है कि पंजाबी में एक अपने किस्म की एक 'मैगजीन' निकल रही है, जो भाषा में अपना योगदान दे रही है।

> 'क्रिएशन' का अहसास तो इतना गहरा होता है कि जिसके सामने मौत का अहसास भी खत्म हो जाता है। और यही अहसास लेखन की तृप्ति होती है . . .

अभी पिछले दिनों मैंने एक किताब लिखी थी—'मेरे कालमुक्त समकालीन,' जिसमें पंजाब के सूफी शायरों —शाह हुसैन, बुल्लेशाह, वारिस, हाशिम, बाबू के साथ मैंने इंटरव्यू प्रस्तुत किये थे। बिलकुल ऐसे बातचीत प्रस्तुत की थी-जैसे मन से वे मेरे पास बैठे हों। उनके जवाब

> पूरी तसल्ली तो कभी नहीं मिलती। थोड़ी-बहुत मिलती है वह भी तब, जब कभी ऐसा लगता है कि हम कुछ बात कह पाये हैं . . .

भी लिखे, उन्हीं की शायरी में। जब इस 'अवार्ड' की खबर छपी, तब पंजाबी के कुछ बिलकुल नये लेखकों ने, जिन्होंने लिखना शुरू ही किया है, मुझे चिट्ठियां लिखीं कि उस किताब ने और फिर इस 'अवार्ड' की खबर ने, उन्हें इतना प्रेरित किया है कि वे मेरे भी 'कालमुक्त समकालीन' होना चाहते हैं। यह जानकर, सच में, मुझे बड़ी तृप्ति मिली।

यह तृप्ति लेखन की ही होती है। क्योंकि 'क्रिएशन' का अहसास तो इतना गहरा होता है कि जिसके सामने मौत का अहसास भी खत्म हो जाता है। यह उसी तरह है-जैसे हमारी एक 'मिथ' चली आ रही है कि जब ककनूस पक्षी (जिसे अंग्रेजी में 'फिनिक्स' कहते हैं) गाता है, तब उसके पंखों से आग निकलने लगती है। और वह उसी आग में जलकर राख हो जाता। उस राख पर जब आकाश से मेंह की बूंदें टपकती हैं, तब उसी में से फिर वही (ककनूस) पक्षी जन्म लेता है। इस बारे में मैंने अपनी आत्मकथा में भी लिखा था कि दुनिया में मेरे-जैसे, जो लेखक-कलाकार हैं, वे ककनूसी नस्ल के हैं। हम अपनी ही आग में जलते हैं और अपनी ही राख में से फिर जन्म लेते हैं। यही रचनात्मक अमल है—'क्रिएटिव प्रॉसेस' है। यह मैंने बहुत पहले लिखा था, पर अभी 'अवार्ड' मिलने के बाद मुझे कुछ पाठकों ने लिखा कि असल में, आपको जो यह 'अवार्ड' मिला है, यह ककनूसी नस्ल की जीत है। देखिए, कितनी बड़ी बात हैं कि लोगों ने इतना पढ़ा, पहचाना, जिया और इसे बरसों तक मन में सहेजे रखा। मतलब यह कि जो चीज आपको एक पहचान से मिलती है, उससे एक खास तसल्ली होती है।

जिस 'वेव-लैंग्थ' (मानसिक तरंग) पर लेखक लिखता है, अगर उसी 'वेव-लैंग्थ' पर पाठक उसे पढ़े, जिये, तभी पाठक और लेखक के बीच एक रिश्ता कायम होता है।

मेरा 'मैं' समकालीन नहीं

प्र. : और यही रिश्ता लेखक को सबसे बड़ी तृप्ति देता है . . .

उ. : तृप्ति तो देता है, पर बाद में। पहले उसकी रचना उसे तृप्ति देती है। रचना भी, मैं सोचती हूं तर्जुमा है। जिस भी भाषा में हम लिखते हैं, उस भाषा में अहसासों का तर्जुमा। जो भीतर से उठता है, धुंआ-सा उठता है, जिसका कोई आकार नहीं है, जिसकी कोई लकीरें नहीं हैं, जो अक्षरों में ढलता नहीं है—लेकिन उसे हम पकड़कर जबरदस्ती अक्षरों में ढालते हैं।

कहते हैं इंसान के जिस्म में पचास किस्म की तरंगें होती हैं। इन्हीं तरंगों पर संस्कृत के पचास अक्षर बने। सदियों पूर्व हमारे ऋषियों ने, आलिमों ने इनके स्वरूप को पहचाना, समझा और उन्हें अक्षरों का रूप दिया। . . . वक्त के साथ-साथ काफी कुछ बनता है, मिटता है, लफ्जों के साथ बहुत-कुछ जुड़ जाता है, जिन्हें बार-बार इस्तेमाल करने से उनका पुराना मायना दूर हो जाता है। सो, एक नयी चीज को पुराने लफ्जों में कहना, एक जद्दोजहद है। जो अक्षर 'फाउंड्री' में ढल चुके हैं, उन्हीं अक्षरों को जोड़कर, आगे-पीछे करके, आप उसमें अपने अहसास को भरते हैं। यह तो पहला तर्जुमा हुआ, अहसास का तर्जुमा। इसमें पूरी तसल्ली तो कभी नहीं मिलती। थोड़ी-बहुत मिलती है—वह भी तब, जब कभी ऐसा लगता है कि 'कुछ बात कह पाये हैं।' यही अहसास सबसे पहली तसल्ली को महसूस कराता है। इस पर मैंने बहुत पहले एक नज्म लिखी थी—

बहुत समकालीन हैं / सिर्फ /
मेरा मैं /मेरा समकालीन नहीं

ऐसा लगता है मेरा 'मैं' वक्त से बहुत आगे चला गया है। मेरे युग में तो नहीं जी रहा, वह 'किसी और युग' में जी रहा है। मैं उसे पकड़कर अपने युग में लाती हूं। अपने युग की तकलीफें, दुख की दास्तान, समाज की मुश्किलात और सियासत में, जो कुछ हो रहा है, उसे कहने की कोशिश करती हूं।

प्र. : हमारे शरीर की पचास किस्म तरंगों को तो तब के आलिमों ने अक्षरों रूप देकर मुखर कर दिया। अगर, की स्थिति के संदर्भ में सोचें, तो क्या आप लगता है कि हमारे इस समाज-रूपी श की विभिन्न तरंगों को आज के आलि मुखर कर पा रहे हैं ?

उ. : जी हां, अपनी-अपनी ताकत के मु बिक, अपनी-अपनी समझ के मुताबि लेखक तो करते ही हैं। हर दौर में क रहे हैं। मिसाल के तौर पर प्रेमचन्द लीजिए, उन्होंने कितने दुखों को आव दी—विधवापन, गरीबी, रिश्तों की उ झन, क्या-क्या नहीं छुआ उन्होंने। इ तरह शरत्चन्द्र हैं।

प्र. : क्या आधुनिक साहित्यकार और . . .

उ. : हां, हा, बहुत हैं। नये साहित्य हर जुबान में हैं।

प्र. : आधुनिक साहित्य पर एक आ यह लगाया जाता है कि वह इतना अ प्रयोगधर्मी हो गया है कि समाज के को छू नहीं पाता।

उ. : देखो, ऐसे कुछ ही लोग होते और हर दौर में होते हैं। आज भी बहु कुछ ऐसा भी लिखा जाता है, जो फा होता है, पर बहुत-कुछ ऐसा भी है, जो व की जरूरत है, वक्त की आवाज है।

प्र. : पिछले दस वर्षों में, न केव पंजाबी अपितु हिंदी साहित्य भी परिव के दौर से गुजरा है . . .

उ. : जी हां, काफी परिवर्तन हुआ है। वह न केवल कथ्य में, बल्कि अभिव्यक्ति में भी आया है।

'क्राइसिस' आज का

प्र. : आपका इस परिवर्तन के बारे में क्या आंकलन है?

उ. : देखिए, परिवर्तन दो किस्म का होता है। एक तो वह, जो भीतर से आता है, वक्त की जरूरत और अपनी समझ से पैदा होता है। दूसरी किस्म का परिवर्तन, बाहरी तौर पर होता है। देखा कि पश्चिम में ऐसा हो रहा है, वैसा ही यहां भी कर लो। ऐसा परिवर्तन बहुत सतही किस्म का होता है।

पिछले दस सालों में इतना औद्योगीकरण हुआ है, पैसे की कीमत घटी है, जरूरतें बढ़ी हैं—इस वजह से जिंदगी में जो भागदौड़ मची है, उसने साहित्य को भी अपनी ही तरह से प्रभावित किया है। वक्त के साथ चलने की आदमी की जद्दोजहद, उसके नजरिए में परिवर्तन लाती है। इसी परिवर्त्तन के कारण आदमी पहले से कहीं ज्यादा अकेला पड़ गया है। रिश्ते भी बिखर, टूट रहे हैं। देश में जो चरित्र का संकट आया है, उसकी वजह से इंसान भीतर और बाहर दोनों से टूटा है। यही आज का 'क्राइसिस' है।

प्र. : इस का कहीं अंत दीखता है?

उ. : अभी तो नहीं दिखता। पर कहते हैं, जब कोई चीज अपने शिखर पर पहुंच जाए, तो नया दौर शुरू होता है।

प्र. : क्या इस पुरस्कार-राशि के उपयोग की भी आपने कोई योजना बनायी है?

उ. : बस, यही ख्याल आया था कि यूरोप तो मैंने कई बार देखा है, हिंदुस्तान पूरी तरह नहीं देखा। पर अब मैं घूम सकूंगी—खूब आसानी से।

त्रुटियों का होना स्वाभाविक है

प्लाइमाउथ की एक महिला डॉ. सैमुअल जानसन के शब्दकोश के पृष्ठ पलट रही थी। उसकी दृष्टि एक परिभाषा पर जा अटकी, उसे लगा कि यह परिभाषा गलत है, पर इतने बड़े साहित्यकार के संबंध में एकदम ऐसा निर्णय करना उचित नहीं था। काफी विचार के बाद वह इस निर्णय पर पहुंची कि यह परिभाषा बिलकुल ही गलत है।

वह तत्काल ही लंदन के लिए चल पड़ी। उसकी धारणा थी कि जब वह डॉ. जानसन का ध्यान इस परिभाषा की ओर आर्काषित करेंगी, तब उनसे घंटों वाद-विवाद होगा और अपनी परिभाषा को सत्य प्रमाणित करने के लिए डॉ. जानसन अनेक तर्क प्रस्तुत करेंगे।

लंदन में वह डॉ. जानसन से मिली। महिला-अतिथि का पूर्ण सत्कार करने के बाद डॉ. जानसन ने बड़े ही विनम्र शब्दों में उत्तर दिया, 'भद्रे, मुझसे यह भूल अज्ञानता के कारण हुई है। व्यक्ति अपने में अपूर्ण है, इसलिए त्रुटियों का होना स्वाभाविक है। मैं अपनी इस भूल को तुरंत ही सुधार देता हूं।'

—अतुल गोस्वामी

हंसाइयां

पति पर अभियोग था कि उसने पत्नी को इतनी जोर का चांटा मारा कि बेचारी का गाल सूज गया। मजिस्ट्रेट ने छोटा-सा जुर्माना करके पति को छोड़ दिया।

अगले सप्ताह पुनः पति महोदय अदालत में हाजिर थे। इस बार पत्नी का दूसरा गाल सूजा हुआ था। मजिस्ट्रेट द्वारा पूछने पर पति ने बतलाया, "हुजूर, कल रात हम लोगों में कुछ अनबन हो गयी। इस बदजुबान औरत ने चीखकर कहा कि अगर मजिस्ट्रेट सिरफिरा न होता, तो तुम जेल में सड़ रहे होते। मैं सब कुछ सह सकता हूं हुजूर, पर अदालत की तौहीन बर्दाश्त नहीं कर सकता।"

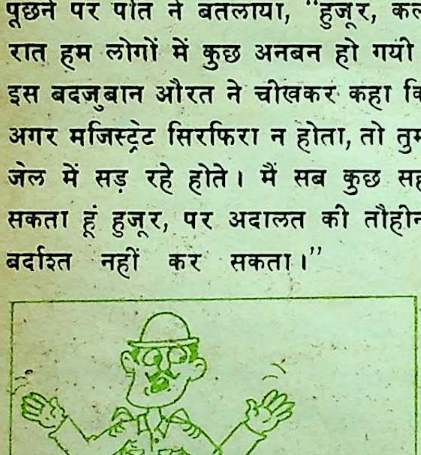

"अरे साब, आप दोनों यह तो बताइए कि पहले कौन-सी गाड़ी टकरायी है?"

"सेठानीजी, आपने सेठजी से शादी की उससे पहले आप क्या करती थी?

"मैं उनके घर में बर्तन मांजती थी

"आप बड़ी भाग्यशाली हैं।"

"जी, नहीं।"

"वो कैसे?"

"अब तो मुझे बर्तन मुफ्त में मांजने पड़ते हैं।"

★

एक व्यक्ति का बायां हाथ मशीन में आ से कट गया। उसे इस बात की बेहद खु थी कि दायां हाथ नहीं कटा, वरना जिंद ही बेकार हो जाती, क्योंकि लगभग स काम दाएं हाथ से ही होते हैं। इसी खु में उसने मित्रों को पार्टी दी। सभी मित्र ने उससे सहानुभूति मिश्रित प्रसन्नता कहा कि शुक्र है तुम्हारा बायां हाथ क है, दायां नहीं, वरना तुम्हारी जिंदगी तबाह हो जाती।

"ठीक कहते हो। . . . एक रा की बात बताऊं आपको। असल में मशी में आया तो मेरा दायां हाथ ही था, यह सोचकर कि दायां हाथ कटने पर जिंदगी खराब हो जाएगी, मैंने झट दा हाथ निकालकर बायां हाथ मशीन दे दिया।" —उस व्यक्ति ने मुस्कर हुए रहस्योद्घाटन किया।

★

नेताजी सहृदय व सबकी शिकायतें सुन वाले के नाम से विख्यात थे। दिन उनके यहां शिकायतियों का तांता ल

रहता
इतना
चमक
ने एक
इतने
आपके
आखि

ने रह
निका

कमिश
पहुंचे
एक
सम्मुख

ने आ
की बा
साहब
'टर'
क्टर,
की द

ऑफि
जिक्र
बीस
आनंद

गया,''

सित

रहता और वह धैर्य से सबकी बातें सुनते। इतना होने पर भी शाम को उनका चेहरा चमकता रहता। उनके एक करीबी मित्र ने एक शाम उनसे पूछ ही लिया, "नेताजी, इतने लोगों के दुःख-दर्द सुनने के बाद भी आपके चेहरे पर इतनी रौनक रहती है? आखिर रहस्य क्या है?"

"अजी, सुनता कौन है?" नेताजी ने रहस्य बतलाया और कानों की रुई निकालकर बाहर रख दी।

★

कमिश्नर साहब एक गांव के दौरे पर पहुंचे। दोपहर के भोजन के समय उन्होंने एक छोटे से भाषण में गांव के पंचों के सम्मुख गांव की प्रगति की सराहना की।

भोजन के पश्चात गांव के सरपंच ने आभार प्रदर्शन यों किया, "बड़ी खुशी की बात है कि आज हमारे बीच कमिश्नर साहब आये हैं। आज तक तो हमारे यहां 'टर' ही 'टर' आते थे, जैसे मास्टर, कलेक्टर, डॉक्टर, विजिटर, लेकिन, भगवान की दया से आज 'नर' भी आ गया।"

★

ऑफिस में एक सज्जन अपनी प्रेमिका का जिक्र करते हुए कहने लगे, "जानते हो बीस साल तक मैं और मेरी प्रेमिका आनंदमय जीवन व्यतीत करते रहे।"

"और फिर क्या हुआ?"

"फिर, . . . फिर हमारा विवाह हो गया," सज्जन मायूसी से बोले।

—सुरेंद्र श्रीवास्तव

हंसिकाएं

अनजान

प्रेम तो ठीक है
विवाह के बारे में क्या कहूं?
चाहते हैं वे मैं हमेशा (इस मामले में)
अंधेरे में रहूं

मिस्र देश

प्रेम को वे 'मिस्र रोग' बताती हैं
क्योंकि इसमें प्रायः
महिलाएं—'मम्मी' हो जाती हैं

प्रकार

चुनाव का फल
वही बार-बार
(दोनों स्थितियों में)
हार ही हार

घाट

घाट-घाट का पानी पीने के बाद
उपयुक्त लगा उन्हें सिर्फ
श्मशान घाट

प्यार

"तुम मेरी कविता हो"
उन्होंने कहा
(प्रेमिका चिल्लायी)
"क्या—इतनी घटिया?"

—डॉ. सरोजनी प्रीतम

जलें शमा हुस्न की

• बी. आर. पद्म

> **जन्म से ही एकाकीपन, सगे भाइयों की जलन, भाभियों की डाह, सौतेली जवान विधवा मां की फरफेज निगाहों ने उसे घर छोड़ने को मजबूर कर दिया। वह फकीर हो गया और फकीर से भी बन गया . . .**

वो जन्म के बाद से ही इस दुनिया में स्वयं को एकाकी और तन्हा महसूस करता रहा है। उसे अकसर याद आते हैं . . . वो पल . . .वो लम्हें, जबकि उसके अब्बा हुजूर पसेमार्ग याने स्वर्ग को चले थे . . . पीछे रह गयी थी, उसकी मासूमियत और सगे भाइयों के जहन में थी एक नफस . . . एक जलन, जो अफराज . . . मनुष्य-जीवन का सबसे बड़ा कोहे-बेहयाई है, निर्लज्जता का पहाड़ है। वो क्या है . . . यह दौलत . . . यह जमीन . . . ये भंडार . . .।

वो अक्सर जीवन की अहमीअत को, वास्तविकता को; गांव के हरे-हरे खेतों-बागों को देखता. . .वो विस्फारित निगाहों से देखता कि पेड़ों की कितनी बड़ी-बड़ी कतारें खड़ी हैं . . .और उन हरे-भरे पेड़ों की कतारों में एकाध ऐसा पेड़ भी है, जिस पर न कोई बहार, न हरियाली . . . न खुशहाली. . . वो सर्वथा तन्हा-उदास . . . अपनी अवस्था के गम में डूबा रहता।

वो एक आह भरकर, 'सद्आफरी खुदा' की नेमतों का लाख-लाख शुक्र मनाता वापस गांव की धूल-सनी गलियों में लौट आता। यदाकदा सोचता . . . कि जिंदगी की पिछली मंजिल किसके आगोश में . . ., किसके अंक में गुजारी हैं। उसने खुदा घर से . . .इस दुनिया में कयाम किया . . विश्राम किया। तब तक मां . . . आसमा के उस नफीस. . . सर्वोत्तम दिखनेवाले, रहम . . . गगन-मंडल के आवरण के पी जा छिपी। उसे क्या खबर थी कि इ सितारों के पीछे सूरतें स्याह तारीकी बन कर मिट जाती हैं।

जब वो एक औरत की आगोश निकलकर, दूसरी औरत की आगोश पलने लगा. . . भाभियां उसे देखकर डा करतीं . . . न जाने वे कहां-कहां बिसूर रहा . . . कब-कब भूखों रहा!

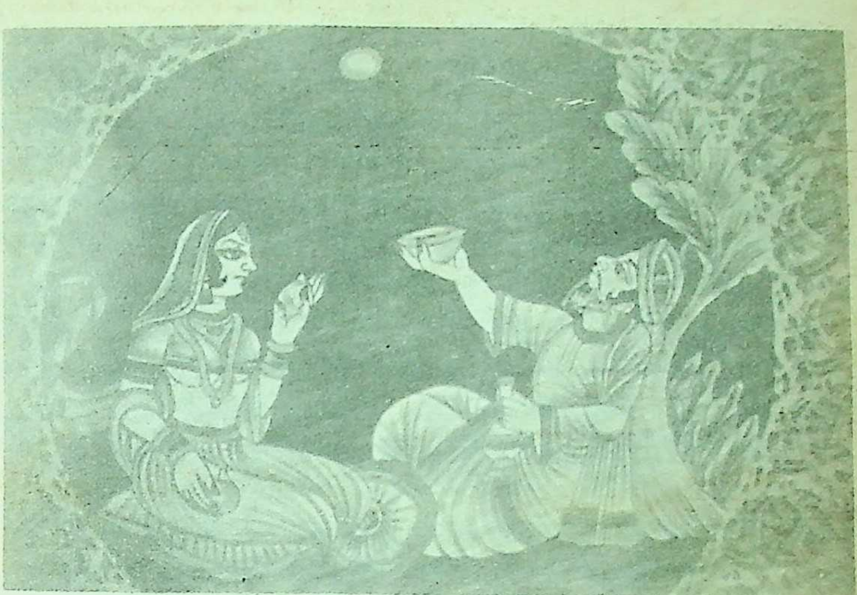

वो जवान हो चुका है। बाप की जमीन और जायदाद का पांचवा भागीदार . . . कादिर यार . . . सगे भाइयों ने उस पर सामाजिक तशदद यानि सामाजिक अत्याचार किये . . . ज्यों-ज्यों वो यौवन की देहलीज पर चढ़ता जा रहा था, त्यों-त्यों विधवा सौतेली मां . . . जो कि जवान ही थी . . . उसकी ओर किसी फरफेज-निगाह से . . . धोखाभरी आंखें . . . लिल्लाह ! वो आंखे मां की ममता से पूर्ण न होकर इश्क-मिजाजी का सुर्ख-आबशार . . . लाल झरने-सी लग रही थीं . . . जिनकी सुर्खी का कारण वासना ही हो सकती है। वो सदा लजाया सा रहा। . . . परिस्थितियों की गहराई को सोचते-सोचते कादिर यार अकसर फाका-पस्ती से दिन गुजारने लगा। उसने इस जग में हरेक मनुष्याकृति को विषाक्त जहरीले बिच्छू से कम नहीं देखा।

और घर छोड़ दिया

गांव में सब लोग यह सुनकर हक्का-बक्का रह गये कि कादिर यार घर छोड़कर भाग गया है। उसको यह जिंदगी रास न आयी। कसैले अहसासों ने उसे सही जिंदगी की तलाश में लगा दिया। वो घंटों वीरानों में, बीहड़ों में, नदी के तट पर किसी खोई हुई आत्मा को ढूंढा करता। धीरे-धीरे दर्द गुनगुनाहट में बढ़ता गया . . . जब दर्द बेलौस होकर हद से गुजरने लगता है, उस वक्त तालिब और मतलूब के जहन में ईश्वरीय-प्रकाश . . . खुदाई-नूर उदय होता है . . . और तब तमाम खल्कत हसीन दर्द के गोशे नजर आती है।

सैय्यद लालशाह सूफी संत दैवी-इश्क के महान स्रोत थे, जिन्होंने कादिर यार को इल्म के साथ-साथ बका और फनाह याने मुक्ति और बंधन के भेद बताये। ऐसे हरफन मौला फकीर ने कादिर यार को बख्शी-खुदाई-तालीम।

इल्म मेहरबान है

एक सुबह जब गांव के मुल्ला फजर (प्रातः) में अजां दे रहे थे, कादिर के गुरु लालशाह ने पुलक दृष्टि से उसे कहा, "बस, कादिर ...एक अलफ ही तेरे लिए काफी है...तुझे अलफ दरकार है... कादिर, अल्लाह ही इल्म है ... और इल्म मेहरबान है तुझ पर...।"

मुर्शद के मुख से निकली हुई बात सच हुई। वो जीवन पर्यंत अलफ की खोज में तल्लीन रहा। वह एक फकीर के दर्जे में पहुंचते-पहुंचते .. अपने गांव ...माछीके (वर्तमान पाकिस्तान के अंतर्गत जिला गुजरांवाला) में लौट आया। एक वीरान मस्जिद में कादिर ने मुकाम किया। वो खुदा की वीरान मस्जिद में जिंदगी के फलसफा करनेवाला फैलसूफ बन गया।

वह अपने खुदरूई में डूबा रहता... दिन और रात की खबर कहां थी उसे ...? वो दारेफनाह इस नश्वरता से तटस्थ हो चुका था। वीरान मस्जिद का चिराग खुद-ब-खुद जल उठता है ... और न जाने कब बुझ जाता है ...न जाने कब कोई गोश्त ... रोटी... कभी पूरी रख जाता है, और न जाने कहां से दूध और सत्तू आ जाते हैं...। वह हैरान था।

मस्जिद के बुर्ज पर ईद का चांद चम रहा है। आज ईद है। उसने विस्मित दृ से देखा एक चांद मस्जिद के बुर्ज पर है. और दूसरा, हुजरा (मस्जिद) में .. एक आले में चिराग रौशन है, उस आंखों में शमा -सी रौशन हो रही है उसकी आंखें हैरत में डूब जाती हैं, वे फूट पड़ते हैं, "खुशामदीद. ..खुशामदीद. फातिमा! तुम इस रात में... .गांव से इत दूर ... इस वीरान मस्जिद में...

"खैरमकदम का शुक्रिया .. जानेमन," कहते हुए फातिमा चोटी ल राती हुई उसके करीब पहुंच गयी।

हवा के साथ खूबसूरती की सुग कादिर के मन-मस्तिष्क और हृदय फैल गयी। कई तरंगें उठीं। वीणा-सी झ झनायी। और उसने फातिमा के सुंदर प पर दृष्टि गड़ा दी। उसकी दृष्टि उ उठ ही नहीं रही थी। चेहरा था या का जलवा था। इश्क सिजदे में था अ हुस्न तख्तनशीं...बस, मंजर बदल गया..

"मैं राहे मौला में हूं फातिमा. ..

"क्या तुमने अभी तक पाया कि खु है कि नहीं ?"

"अभी तवक्को है...।"

"अभी तुम कच्चे हो। तुम्हें नजर आयेगा भी नहीं।"

"आखिर क्यों ?"

"मुझ में और तुम में तीसरा अह क्या है, क्या समझे कुछ तुम ...?"

"वो अहसास. . .इश्क जैसा है. . .दिल चाहता है कि मैं. . .तुम में समा जाऊं . . . फातिमा मैं कहीं नफस का शिकार तो नहीं हो रहा हूं ?"

"अभी तुम इल्ल से महफूज हो !"

"मुझे मालूम है और‌त नफस है. . . तुम यहां मत आया करो. . . और दिल को तसल्ली दे लो कि कादिर यार उसी दिन मर गया था, जिस दिन घर छोड़ गया था।"

"सनम ! मैं खुद नहीं आती . . . यह रूह चली आती है. . . मेहरबान . . . दिलेशाद . . . तुझे इल्म नहीं कि . . . जब अलफ अकेला था . . ., तब . . .क्या हुआ था . . . उसने इसी इश्क के हाथों कुदरत को पैदा किया. . .और उसके कुशाद सीने पर अलफ ने अपना सिर रख दिया। तब उसे दर्जा मिला खुदा का. . .और उसे खुदाई का. . .। एक तरफ हुस्न था. . .तो एक तरफ इश्क. . . कुदरत का कुशाद सीना इश्क का घर है. . . और अलफ . . .कुदरत की हमशीरा औरत के इश्क ने मुतबिला होकर कादिर बन बैठा . . .यही कुलहयात है. . .तुम इतमाम तसील बनो . . . ताकि तकसीर बख्शी जाए। तुम इश्क हो, मैं हुस्न हूं ।"

"फातिमा . . ये हुस्न और इश्क आग है, कहीं खल्क तबाह न हो जाए ।"

"हाय ! चैन नहीं, करार नहीं . . . मैं दीदावर हूं, हर सिमत तेरे रूखे रौशन की।"

"या खुदा . . .तू रहम कर !"

. . . और फिर उस वीरान मस्जिद में शमा व परवाना सुबह तक जलते रहे।

वीरान मस्जिद में इश्क की दुनिया बसने लगी ।

थोड़े दिनों में ही गांव-गांव और गली-गली में इश्क की चर्चा फैल गयी। और . . . एक दिन फातिमा के अब्बा ने अपनी बीवी को ये कहते हुए, 'लो फातिमा की ममी . . हमारे घर से भी एक हीर पैदा हो गयी है, जो माछीके वाले नामुराद, बदबख्त. . कादिर के इश्क में गुदाज है। आज से फातिमा को ड्योढ़ी के बाहर मत जाने दो . . .,' फातिमा पर रोक लगा दी।

फातिमा घर में कैद कर दी गयी। दोनों गांवों की पंचायत कादिर के पास गयीं और फरमाया कि तुम इस इलाके से कहीं और चले जाओ ।

"क्या ? मैं यहां से चला जाऊं ?"

"हां !" पंचों ने कहा ।

"पहले जाइए . . . फातिमा से पूछिए . . . अगर वो कहे, तो मैं चला जाता हूं . . . बाकी. . . किसी का हुक्म मुझ पर नहीं है।"

"ओ . . . फकीर की दुम ! बाने की गैरत तो देख . . .क्या गरदन की परवाह नहीं तुझे ।"

"हमारी गरदन तो उस रोज ही चाक हो गयी, जिस रोज इश्क की ओर कदम बढ़ाया था । फकीरों और आशिकों की गरदन नहीं हुआ करती !"

"जुबान बंदकर ले...बदबख्त इंसान।"

भीड़ उसको अनर्गल कहती, उस पर कूड़ा पत्थर फेंकती हुई लौट गयी ।

दिन गुजरे, महीने बदले, पर मस्जिद

बेलटेक का वास्तविक
'वन-अप' टी वी

सुपर स्टार
डीलक्स
जिसमें है
हाई-गेन
वीडियो आई सी

विशेषताएँ
1. सॉलिड स्टेट, 9 ग्राईसीज
2. वीडियो प्लेइंग सुविधा
3. 3 स्पीकर्स
4. स्टीरियो जैसी ग्रावाज के लिए ट्रेबल एवं बास कंट्रोल

Continental/BT/2681

हमेशा एक पग आगे
बेलटेक

में फिर चिराग नहीं जला। घटाटोप रात . . आसमान से चांद गुरुब हो चुका है . यह अमावस है। कादिर ने आसमान की तरफ दोनों हाथ पसारते हुए कहा––"ओ . . आसमां, तेरे घर में भी अंधेरा है। और मेरे घर में भी।" इतना कहकर वो कहकहा लगाकर हंस पड़ा। वीरान मस्जिद में कहकशां गूंज उठा।

खून के कतरे

कादिर की आंखों से उस रोज पानी नहीं, खून के कतरे बहे, मुहब्बतभरे दिल का खून, जो इश्क की तवारीख लिखता है, उसके दिल से कविता का पहला पाठ . . . पहली छंद या मिसरा . . हिज्रो-वसल की पीड़ा का स्रोत बनकर यूं फूट पड़ा–– .

इश्क हयाती दुश्मनी ओड़क इक रहे
जान उत्तों हत्थ आंवदा जे कोई मुल लवे
साख त्रुटी 'कादिरा' कीकर फेर जुड़े . . .

और कविता-रूपी जीवन-धारा में नये-नये छंद जुड़ते गये . . . यार की याद आती रही . . . दिल तड़पता रहा, हिज्र बढ़ता रहा। फातिमा कादिर को भूल बैठी। क्योंकि वह दो कदम इश्क की ओर चलकर . . . उसकी ताव न सह सकी।

उसके कानों ने सुना। फातिमा का निकाह है। बस इश्क हंस पड़ा। आंखों से आग की लपटें-सी निकलने लगी। इश्क हंसता है तो यह दुनिया रोती है। जब इश्क रोता है तो दुनिया हंसती है। कादिर यार को तमाम खल्कत मिट्टी का ढेर महसूस हुई–

पर इश्क प्याला जहर दा,
पीवन मुश्किल है
जिस किस पीता पहुंच के,
किस विच हाल गये
गाहक अजेहे इश्क दे,
होय लख करोड़
शायर दानिशमंद भी,
हुंदे आहे तोड़
अंत किसे नहीं पाया,
रहे तरीफां जोड़
हुण विच जमाने तेरहवें,
असां वी की लोड़

इश्क और हुस्न के जुदा हो जाने से यह दुनिया वीरान हो गयी। शिर्क की मंजिल भी छूट गयी। बस रंजो-गम में खोयी कादिर की जिंदगी शायरी बन गयी . . . फातिमा तो महज एक लग्न का नाम है। तवक्कुल का पर्याय है तश्नाकामी . . . प्यास . . . इसका इलाज है, तो बस इश्क ही है। इश्क की पुरस्तश है, प्रेम की पूजा है।

दर्द के आलम में डूबा कादिर यार १८५० ईस्वी को राहे-अदम को चला गया, और अपने पीछे छोड़ गया दर्दो-गम की कहानी पूरन भक्त की 'लूणा' और सोहनी के दर्दभरे नाले––

जोर न डाडेआं नाल कोई
फड़ बेगुनाह मंगवाया मैं
मैं तां भूरनां अपने तालेयां नू
एह लेख अजीब लिखाया मैं

––ए-६७, पंजाब विश्वविद्यालय, चंडीगढ़

मेला घोड़ों का

• श्यामलाल श्रीमाली

रण क्षेत्रों में रण-कौशलता प्रदर्शित करने के लिए घोड़ा ही सेनानियों का सर्वाधिक उपयुक्त वाहन रहा है। जिस सेना के पास जितने अधिक घोड़े होते थे, वह सेना उतनी ही शक्तिशाली होती थी। राजस्थान के मारवाड़, जयपुर, मेवाड़ इत्यादि देशी रजवाड़ों की घुड़सेनाओं का तो सामंती काल में बड़ा मान था। और कमोवेश इतना ही मान घुड़सेनाओं को आज भी हमारी राष्ट्रीय सेना में प्राप्त है।

हमारे यहां अनेक दशाब्दियों से घोड़ों की दो मुख्य नस्लें—काठियावाड़ी और मालानी पायी जाती हैं। काठियावाड़ी घोड़े, जहां सौराष्ट्र के काठियावाड़ इलाके में पाये जाते हैं, वहां मालानी नस्ल के घोड़ों की मातृभूमि बाड़मेर जिला की बालोतरा और सिवाणा पंचायत समितियां हैं। बाड़मेर जिला में प्रवाहित लवणावती (लूनी नदी) के तट पर बसे जसोल पारलू, भवरानी, मोकलसर इत्यादि ठिकानों में इस नस्ल के घोड़ों की अभिवृद्धि क शौक इनकी दिन प्रतिदिन बढ़ती हु मांग का मुख्य कारण रहा है। ये घो 'मारवाड़ी' उपनाम से भी पहिचाने जाते हैं। ये घोड़े मस्त चालवाले, सुडौल का तथा सुंदर होते हैं। सवारी के लिये त ये इस तरह प्रशिक्षित किये जाते हैं कि इन पर लगातार सवारी करने के बाद भी सवार का मन नहीं भरता है और उसकी इच्छा ज्यादा वेग से घोड़े को दौड़ाने की

रहती है। रजवाड़ों के जमाने में राजा-महाराजाओं तथा रईसों द्वारा पोलो के खेल में भी इन्हीं घोड़ों का उपयोग किया जाता था।

मालानी नस्ल के घोड़ों का रंग स्याही-नुमा लाल होता है। ऐसे रंगवाले घोड़े 'कुम्मैत' कहलाते हैं। इसके अलावा कुछ घोड़ों का रंग लाल भी होता है। साधारण तौर पर इन घोड़ों की उम्र २५ से ३० वर्ष होती है। मादा गर्भधारण करने के बाद ३४० दिन में बच्चे को जन्म दे देती है तथा पूरी उम्र में ७–८ बार बच्चों को जन्म देती है। इस समय समूचे राजस्थान में इस नस्ल के ४८,६८० घोड़े-घोड़ियां हैं, जबकि सन १९६० में इनकी कुल संख्या अठ्ठासी हजार के लगभग थी। इस नस्ल के घोड़ों में आयी इस भारी कमी का मुख्य कारण है सन १९६१ में अफ्रीकन रोग का भयंकर प्रकोप। जिसकी चपेट में आकर हजारों घोड़े मर गये।

मारवाड़ का लगभग छह सौ वर्ष पुराना श्री मल्लीनाथ (चैत्री) पशु-मेला, जो कि बाड़मेर जिला के तिलवाड़ा नामक ग्राम में हर साल चैत्र कृष्ण एकादशी से चैत्र शुक्ल एकादशी तक आयोजित होता है, मालानी नस्ल के घोड़ों के क्रय-विक्रय का मुख्य केंद्र रहा है। इस पशु मेला को सन १८७५ में सर्वप्रथम सुव्यवस्थित ढंग से जोधपुर के तत्कालीन शासक महाराजा जसवंत सिंह (द्वितीय) ने आयोजित कराया था। उस समय मेले में ४०० घोड़े क्रय-विक्रय हेतु आये थे। आज-प्रतिवर्ष इस मेले में हजारों घोड़ों का क्रय-विक्रय होता है। आज इस नस्ल के घोड़े की कीमत लगभग पांच हजार रुपया है, जबकि सन १९७० में अधिक से अधिक मूल्य २२ सौ रुपये था। इससे भी स्पष्ट है कि इन घोड़ों की लोकप्रियता में वृद्धि हुई है।

—प्राविधिक सहायक-सूचना अधिकारी,
पशु-पालन विभाग, जयपुर

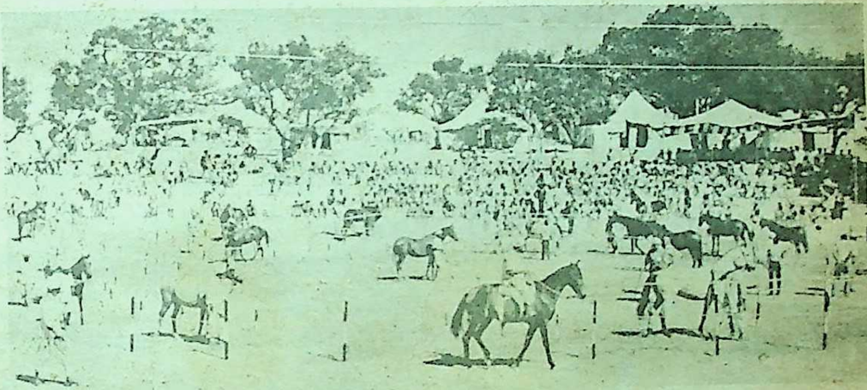

मल्लीनाथ पशु-मेला, जहां हर वर्ष हजारों मालानी नस्ल के घोड़े बिकने आते हैं

गोष्ठी

वाणी मुद्गल, लखनऊ : 'एंफेटामिन' की गोलियां क्या हैं और वे स्वास्थ्य के लिए हानिकारक क्यों बतायी जाती हैं ?

'एंफेटामिन' उन दवाइयों को कहते हैं, जो प्रशांतक (ट्रेंक्विलाइजर) के साथ-साथ टॉनिक-जैसा उद्दीपनकारी प्रभाव पैदा करती हैं। लगभग तीस साल पहले इन गोलियों का बहुत प्रचलन हुआ था और इन्हें व्यापक रूप से शारीरिक और मानसिक उद्दीपन के लिए उपयोगी माना जाता था। इनके खाने से भूख कम लगती है और ये शरीर को पतला रखने में मदद करती हैं, इसलिए भी इनका प्रचार काफी हुआ। विशेष रूप से महिलाओं ने इन गोलियों को अपनाया। लेकिन, बाद में पाया गया कि ये बड़ी हानिकारक गोलियां हैं, क्योंकि इनसे अनेक विकार पैदा हो सकते हैं, जैसे—तेजी से वजन घटना, अनिद्रा का रोग हो जाना, तंत्रिकातंत्र में विकृतियां आ जाना, यहां तक कि अनेक लोग इन गोलियों के अधिक सेवन से विक्षिप्त भी हो गये। इन गोलियों का सबसे बड़ा नुकसान यह है कि एक बार इनका सेवन शुरू कर देने पर फिर इनके बिना चैन नहीं पड़ता, इनकी उत्तरोत्तर अधिक मात्रा की जरूरत पड़ने लगती है और इस की लत के परिणाम शराब, भांग, गांजा, अफीम आदि मादक द्रव्यों की लत के परिणामों से भी अधिक भयानक होते हैं। यही कारण है कि अनेक देशों की सरकारें ऐसी दवाइयों पर या तो प्रतिबंध लगा चुकी हैं या लगाने के बारे में गंभीरता-पूर्वक विचार कर रही हैं।

चंद्रकुमार शर्मा, जगदलपुर : ऊर्जा के दो रूप—'प्राथमिक ऊर्जा' और 'द्वितीयक ऊर्जा' क्या हैं ? समझाने की कृपा करें।

प्राथमिक ऊर्जा, वह ऊर्जा है, जो प्रकृति से प्राप्त की जाती है—यानी बांध के ऊपर से बहते पानी, खान से निकाले गये कोयले, तेल, प्राकृतिक गैस, यूरेनियम आदि से। इनमें से प्राकृतिक गैस-जैसे कुछेक रूपों को छोड़कर प्राथमिक ऊर्जा के अन्य रूपों को सीधे-सीधे यानी अंतिम ऊर्जा के रूप में प्रयुक्त नहीं किया जा सकता है। प्राथमिक ऊर्जा को प्रयोग में लाने के लिए उसे द्वितीयक ऊर्जा में बदला जाता है। उदाहरण के लिए विद्युत् संयंत्र द्वारा बिजली और ताप का उत्पादन तेल-शोधक कारखानों में पेट्रोलियम को गैसोलीन, डीजल और नैप्था-जैसे द्रवीय ईंधनों में परिवर्तित करना।

सरला तिवारी, उन्नाव: 'ग्रीन हाउस प्रभाव' क्या है ?

पृथ्वी पर कार्बन डाइ-ऑक्साइड की मात्रा बढ़ जाने से पृथ्वी का तापमान बढ़ रहा है। वैज्ञानिक इस क्रिया को 'ग्रीन हाउस प्रभाव' कहते हैं। यों तो कार्बन डाइ-ऑक्साइड हवा का एक प्रमुख तत्व है, लेकिन पृथ्वी से वायुमंडल की ओर पलटकर जानेवाली इंफ्रारेड किरणों का अवशोषण कर लेनेवाली होने के कारण यह तापमान बढ़ा देती है, जिसे एक प्रकार का प्रदूषण माना जाता है। यह प्रदूषण यदि बढ़ जाए, तो इतना विनाशकारी हो सकता है कि दुनिया के सारे पहाड़ों की बर्फ पिघल जाए और बहुत सारे इलाके पानी में डूब जाएं।

मोहिनी उपाध्याय, बिलासपुर : इटालियन भाषा के नाटककार गियां गियोर्गियो त्रिसिनो का परिचय देने की कृपा करें।

गियां गियोर्गियो त्रिसिनो १६वीं सदी का इतालवी नाटककार था। उसे इतालवी भाषा का प्रथम दुखांत नाटककार माना जाता है। उसका सबसे प्रसिद्ध नाटक 'सोफोनिस्बा' १५१५ में लिखा गया था, बार-बार मुद्रित हुआ था और १६५२ में अंतिम रूप से रंगमंच पर प्रस्तुत किया गया था। जान एडिंग्टन सिस्मंड्स की पुस्तक 'रेनासां इन इटली' और जोसेफ स्पेंसर केनार्ड की पुस्तक 'द इटालियन थियेटर' में त्रिसिनो के बारे में जो जानकारी मिलती है, उससे मालूम होता है कि त्रिसिनो महान विद्वान तथा अध्यवसायी व्यक्ति था, जिसने व्याकरण संबंधी समस्याओं और साहित्यिक विशुद्धता के लिए अपने को खपा दिया था। उसने प्राचीन आलोचकों का अटूट परिश्रम के साथ अध्ययन किया और शुद्ध इतालवी साहित्य-सर्जना के लिए नियमों तथा पद्धतियों की स्थापना की। इसके लिए उसने स्वयं प्राचीन वीर काव्य के अनुरूप एक महाकाव्य की रचना की। 'इटालियन लिबराटा' और 'सोफोनिस्बा' उसकी अत्यंत विद्वतापूर्ण रचनाएं हैं। परंतु समकालीन सामाजिक समस्याओं पर ध्यान न देने तथा अपने समय की जन-भाषा को तिरस्कारपूर्वक त्याज्य मानने के कारण उसकी ये रचनाएं निर्जीव हैं। उसकी रचनाओं के बारे में अनेक आलोचकों और इतिहासकारों का यह निष्कर्ष है कि 'उनमें काव्यात्मक प्रतिभा के अलावा और किसी चीज की कमी नहीं है !'

आलोक श्रीवास्तव, आगरा : जैव गैस (गोबर गैस) का इतना प्रचार किये जाने पर भी भारतीय ग्रामीण इसका लाभ क्यों नहीं उठा पा रहे : क्या इसमें कुछ तकनीकी कठिनाइयां हैं ?

तकनीकी कठिनाइयां तो ज्यादा नहीं हैं (हालांकि गोबर गैस संयंत्र खराब हो जाने पर उसकी मरम्मत गांवों में मुश्किल से हो पाती है, और यह बहुत बड़ी कठिनाई है) लेकिन इसके उपयोग में आर्थिक कठिनाइयां काफी हैं। अव्वल तो,

गोबर गैस संयंत्र लगाने के लिए कम से कम आठ-दस हजार रुपया चाहिए, दूसरे उस संयंत्र को चालू रखने के लिए आवश्यक गोबर प्राप्त करने के लिए कम से कम चार पशुओं को पालना जरूरी है, क्योंकि इससे कम पशुओं के गोबर से चलाया जानेवाला संयंत्र आर्थिक दृष्टि से लाभकारी नहीं रहता। अतः गोबर गैस संयंत्र बड़े भूस्वामियों या धनी किसानों के ही मतलब की चीज है। दूसरी समस्या है, जगह और पानी की। एक परिवार के लिए तीन घन मीटर स्थान संयंत्र के लिए तथा २७ वर्ग मीटर भूमि उसके निमित्त कंपोस्ट के लिए आवश्यक होती है। खाना पकाने के लिए गैस की अच्छी आपूर्ति के लिए यह बेहतर रहता है कि संयंत्र रसोईघर के छह मीटर अर्द्धव्यास के अंदर ही बने। लेकिन प्रायः घरों के निकट जैव गैस संयंत्र लगाने लायक जगह ही नहीं होती। इसी तरह पानी की कमी भी एक भीषण समस्या है। गोबर गैस संयंत्र [illegible] और पानी ४:५ के अनुपात [illegible] मिलाना पड़ता है और भारत के अधिकांश [illegible] ऐसे हैं जहां पानी की बेहद कमी है। और सबसे बड़ी बात यह है कि गांववालों को आवश्यक ईंधन-जैसे-लकड़ी, उपले, खेती के व्यर्थ पदार्थ आदि, बिना किसी लागत के या बहुत ही सस्ते मिल जाते हैं।

संतसिंह त्रिखा, बटाला : भूकंपलेखी यंत्र कैसे काम करते हैं ?

भूकंपलेखियों में विद्युतचुंबकीय नियम का उपयोग किया जाता है। ये फैराडे के दूसरे नियम पर आधारित होते हैं। उसके अनुसार जब किसी बंद विद्युत-चक्र में गुजरनेवाली बल रेखाओं की संख्या में परिवर्तन किया जाता है, तब उसमें प्रेरित विद्युत वाहक बल उत्पन्न हो जाता है, जिससे प्रेरित धारा उत्पन्न हो जाती है। यह धारा केवल तभी तक बहती है, जब तक बल रेखाओं की संख्या में परिवर्तन जारी रखा जाता है। अतः इस प्रकार के भूकंपलेखी में चल-कुंडली धारामापी से जुड़ी एक कुंडली से इस प्रकार लगी रहती है कि वह एक चुंबकीय क्षेत्र में रहे। भूकंपीय तरंगों से भूकंपलेखी का फ्रेम हिलने लगता है और उस कुंडली के दोनों सिरों पर विद्युत वाहक बल उत्पन्न हो जाता है और धारामापी में से धारा प्रवाहित होने लगती है। प्रकाश का प्रतिबिंब-बिंदु भूकंपीय तरंगों के अनुसार रिकार्डर पर हिलने लगता है। आजकल कुंडली धारामापी के स्थान पर इलेक्ट्रानिक प्रवर्धक का उपयोग किया जाता है। इसमें रिकॉर्डर पर या किसी ताप संवेदनात्मक ग्राफ पर स्याही से तरंगें अंकित की जाती हैं।

चलते-चलते एक प्रश्न और ...

राधा पाठक, दिल्ली : महिला बिना आभूषण के कैसी लगती है ?

जैसे लज्जा बिना औरत।

—बिंदु भास्कर

शोर का आतंक

• विजयनारायण भारद्वाज

सभ्यता-प्रसार के साथ जल, स्थल व वायु-प्रदूषण तेजी से बढ़ रहे हैं। गंगा नदी कल कारखानों का रासायनिक कचरा बहानेवाला नाला बन गयी है। यूरोप के पार्कों में लिखा है, 'स्माग!' (गहरी सांस न लें)। आज मथुरा तेल-शोधक कारखाने में उत्पन्न 'कार्बन डाय ऑक्साइड' से ताजमहल के सौंदर्य के विकृत होने की संभावना से सबके माथे पर बल पड़े हैं। कारखानों के विषैले रसायन जल, स्थल व वायु को विषाक्त बना रहे हैं, अन्य प्रदूषणों की ओर तो कुछ ध्यान भी है, पर शोर की किसी को परवाह नहीं है।

मशीन के शोर को क्षमता का पर्याय माना जाता है। ट्रक हो या टाइपराइटर, घास काटने की मशीन हो या सिलाई-मशीन सभी में शोर करनेवाली मशीन है। औद्योगीकरण के बढ़ते कदमों के साथ रेल, ट्रक, वायुयान और कारखाने अधिकाधिक शोर पैदा कर रहे हैं!

शोर की शक्ति

शोर की शक्ति का एक अकाट्य वैज्ञानिक प्रमाण देखिए। सदा कदम मिलाकर चलनेवाले सैनिक पुल पार करते समय बिना कदम मिलाये क्यों चलते हैं? इसका प्रभाव डाइनामाइट-जैसा होता है। अमरीका के दो राष्ट्रीय पार्कों में प्रागैतिहासिक महत्त्व की [illegible] ८० (अस्सी) टन [illegible] को सुख [illegible] नि से खंडित हो गयीं।

शोर के अध्ययन में अभी तक अवश्रव्य (सब सोनिक) व पराश्रव्य (अल्ट्रासोनिक) शोर के दुष्प्रभावों का अध्ययन नहीं किया गया है। यह शोर हमें सुनायी नहीं देता, पर प्रभावित अवश्य करता है। कुछ समय पूर्व अल्पकालिक गर्भ-समापन

(शार्ट टर्म प्रिग्नेंसी टरमीनेशन) हेतु पैंसिल-जैसा यंत्र बनाया गया है। इससे निकली पराश्रव्य ध्वनि-तरंगें बिना शल्य-क्रिया के गर्भपात कर देती हैं। कमरे में पराश्रव्य ध्वनि-तरंगों से मच्छर भाग जाते हैं। शोर से निम्न रोग होते हैं:

१. सभी रोगियों की दशा बिगड़ती है। आरोग्य-प्राप्ति में देर लगती है। २. छात्रों का अध्ययन व एकाग्रता प्रभावित होती है। ३. बधिरता—(आंशिक पूर्ण तथा अस्थायी) उत्पन्न होती है। ४. पाचन-विकार—सामान्य अपच, आंत्रशोथ व पैप्टिक अल्सर आदि होते हैं। ५. रक्त-दाव ऊंचा होता है, हृदय की धड़कन बढ़ती है। ६. सर-दर्द या आधासीसी दर्द हलका या तेज उत्पन्न होता है। ७. मानसिक तनाव बढ़ना, झगड़ालूपन, अन्यमनस्कता, दुर्घटना की संभावना में वृद्धि होती है। कार्य में गलतियां बढ़ती हैं, अक्षमता आती है।

शोर डेसीबल में मापा जाता है
एंसाइक्लोपिडिया अमेरिकाना के अनुसार
[illegible] ३० डेसीबल
सामा[illegible] शोर को ६० डेसीबल
भारी [illegible] ९० डेसीबल
रॉक संगीत, डिस्को—— १२० डेसीबल
जेट वायुयान उड़ान शुरू——१५० डेसीबल

शोर से होनेवाली हानियां

पचास डेसीबल शोर से निद्रालु की निद्रा टल जाती है। सत्तर डेसीबल शोर से सुप्त व्यक्ति की पुतलियां फैलती हैं। ७५ पर टेलीफोन-वार्त्ता प्रभावित होती है। ९० पर एकाग्रता व कुशलता कम होती है। डोनाल्ड के अनुसार, '९० डेसीबल शोर दृष्टि-भ्रम पैदा करता है व मानसिक कार्य-कुशलता कम करता है।' डी. लेहमान के मतानुसार, ९३ डेसीबल शोर छात्रों की एकाग्रता, पाठ-स्मरण व गणित प्रश्न हल करने में बाधक होता है। ९६ डेसीबल शोर उत्पादन को प्रभावित करता है। विश्व स्वास्थ्य-संगठन की रिपोर्ट के अनुसार, 'कार्यालय शोर, टाइपराइटर खटखट, टेलीफोन-वार्त्ता, चलने-फिरने की आवाजों से उत्पन्न अक्षमता के कारण, प्रतिदिन ४००,००,०० डालर की हानि होती है।'

सदा कदम मिलाकर चलनेवाले सैनिक पुल पार करते समय बिना कदम मिलाये क्यों चलते हैं? इसका प्रभाव डाइनामाइट-जैसा होता है। अमरीका के दो राष्ट्रीय पार्कों में प्रागैतिहासिक महत्त्व की चट्टानें, जिनका भार ८० (अस्सी) टन था, वायुयान-ध्वनि से खंडित हो गयीं . . .

शोर के विरुद्ध जनमत

कुछ देशों में शोर-विरोधी संस्थाएं, पत्रिकाएं जनमत प्रभावित कर रही हैं। कारखाने कम शोरवाली मशीनें बना रहे हैं सरकारी कानून बन रहे हैं। कुछ देशों में कुत्ता काटने की अपेक्षा, भौंकने पर मालिक को अधिक जुर्माना होता है।

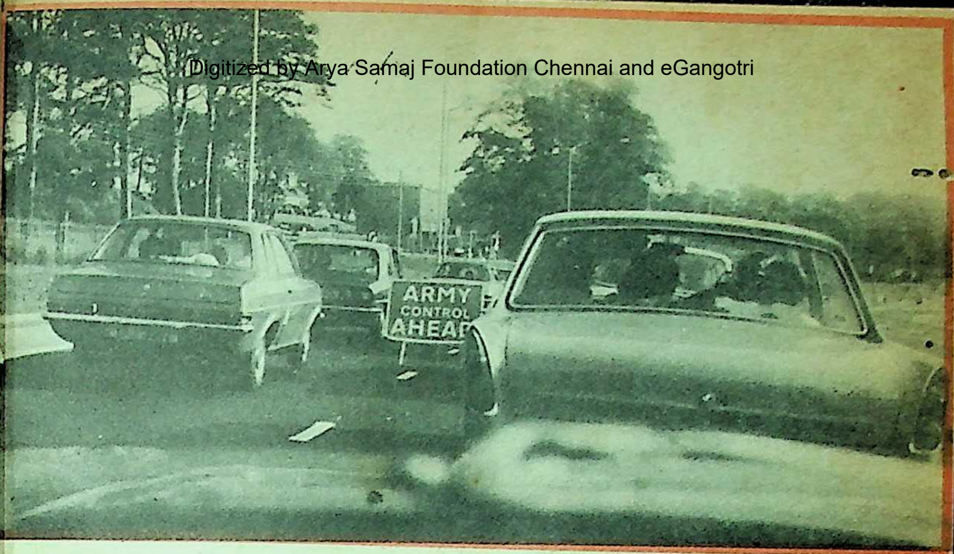

शोर के प्रति जागरूक देश

अब सरकार, निर्माता, इंजीनियर व उपभोक्ता जागरूक हो रहे हैं। हर स्तर पर शोर-नियंत्रण की ओर ध्यान दिया जा रहा है। संयुक्त राज्य-अमरीका, गृह-निर्माण व नागर-विकास विभाग के निर्देश देखिए—

१. चौबीस घंटों में कभी भी ६० मिनिट से अधिक ऊंची डेसीबल ध्वनि न हो।

२. रात्रि के ग्यारह बजे से प्रातः सात के मध्य ३० मिनट से अधिक ४५ डे. ध्वनि न हो।

३. चौबीस घंटों में आठ घंटे से अधिक ४५ डेसीबल ध्वनि न हो।

अमरीकी सरकार इस दिशा में पर्याप्त व्यय कर रही है। इसके अतिरिक्त वहां 'एनवायरन्मेंटल प्रोटेक्शन एडमिनिस्ट्रेशन', 'नॉइज एवेटमेंट एंड कंट्रोल', 'सिटीजन लीग एजेंट सोनिक वूम' आदि संस्थाएं भी शोर-प्रदूषण रोकने का प्रयास करती हैं। हवाई-अड्डों पर शोर-नियंत्रण अधिनियम लागू हैं—

१. उतरते समय ३° के स्थान पर ६° का कोण बनाने से हवाई अड्डे से दूर के व्यक्ति प्रभावित नहीं होंगे।

२. अधिक शोर उत्पादक वायुयानों पर जुर्माना होता है।

३. मध्य-रात्रि को नियमित उड़ानें बंद रहती हैं।

निर्माताओं पर [illegible] हुआ है

कुछ संस्थाएं बच्चों [illegible] की जांच करती हैं और [illegible] को सुख दे[illegible]ौनों से बच्चों को बचाने का प्रयास करती हैं। इस प्रसंग में एक पिस्तौल ३० सेंटीमीटर दूरी पर १५५ डेसीबल ध्वनि करती थी, उसे खतरनाक व निषिद्ध घोषित कराया गया। जनमत से प्रभावित यंत्र-निर्माताओं के विज्ञापन देखिए :

सुपर रिन की चमकार ज़्यादा सफ़ेद

किसी भी अन्य डिटर्जेंट टिकिया या बार से ज़्यादा सफ़ेद.

सुपर
रिन
डिटर्जेंट टिकिया
रिन

[illegible] धुलाई करने पर आपके कपड़ों में ऐसा [illegible] से दिखे. किसी दूसरी डिटर्जेंट टिकिया या बार [illegible] सुपर रिन कहीं अधिक सफ़ेदी लाता है, क्योंकि सुपर रिन में अधिक सफ़ेदी की शक्ति है.

आज़माइए और सबूत पाइए:

किसी अन्य
डिटर्जेंट बार से
धोया हुआ

सुपर रिन
से धोया हुआ

सुपर रिन—अधिक सफ़ेदी की शक्ति से भर

हिन्दुस्तान लीवर का एक उत्कृष्ट उत्पादन.

लिंटास-RIN.40-1611

९६ किलोमीटर गति पर प्रसिद्ध कारों के शोर का माप

क्रमांक	नाम	मूल्य (डालर में)	डेसीबल
१.	मरसडीज	६५,००	७०
२.	डाज	६,०००	७५
३.	फोर्ड थंडर बर्ड	५,५००	६८
४.	शेवरलेट	५,०००	६८
५.	प्लाइमाउथ	४,०००	७५
६.	फोर्ड मुस्तांग	४,०००	७९
७.	डॉज चैलेंजर	४,०००	७९
८.	प्लाइमाउथ सेटलाइट	३,५००	७४
९.	रेनाल्ट १६	२,५००	७७
१०.	फोर्ड पिंटो	२,५००	७८
११.	शेवरलेट बेगा	२,५००	८३
१२.	टोयटा	२,०००	७७

टायर—'किसी भी मौसम में परेशान करनेवाला शोर नहीं' (स्पोटर्स-इलस्ट्रेटिड)

" 'दुगनी गति पर भी कम शोर' (न्यूज-वीक)

" शोर व कंपन रहित यात्रा—टायर गति दिखती है, सुनायी नहीं देती (लाइफ)

डिशवाशर—'पूरी शांत धुलाई'

वैक्यूम क्लीनर—'इसकी सशक्त मोटर केवल फुसफुसाहट पैदा करती है–' (लाइफ)

वैक्यूम क्लीनर—यह इतनी शांति से काम करता है कि पता ही नहीं चलता। डिशवाशर, ड्रायर व फ्रिज के निर्माता सिग्नेचर कंपनी का विज्ञापन—'हमारे कार्यरत यंत्रों से कोई आवाज नहीं होती।' 'हमारे फ्रिज से मक्खी-जैसी भिनभिनाहट भी नहीं होती' . . . शांत वातानुकूलन खरीदें और आनंद से भर उठें। सारे शोर वंद होने के बाद भी इं[illegible] आती। 'हमारे यंत्र आप को सुख देते समय पड़ौसियों को परेशान नहीं करते'; 'हमारे यंत्र—बेजोड़ कारीगरी व शांत कार्यशीलता'।' 'हमारे यंत्र चलाकर आप सुई गिरने की आवाज सुन सकते हैं।' ट्रक व कारों के शोर से परेशान व्यक्ति ये विज्ञापन देखें—'हमारी कार में गति अधिक है, शोर कम, शेर-सी गाड़ी चूहे-

ताज़गी महसूस कीजिये

FRESHNESS YOU CAN FEEL
Binaca Top
toothpaste

सुबूत अपनी आँखों से देख लीजिए

यह आसान टैस्ट करके देखिये:

पानी से भरी तश्तरी में थोड़ा सा कोयले का चूरा छिड़किये। अब थोड़ा सा बिनाका टॉप पानी में मिला लीजिये और इस घोल की एक बूंद तश्तरी के बीचों-बीच टपकाइये। अब देखिये बिनाका टॉप कितनी तेज़ी से चारों तरफ फैलता है.... मैल को दूर करता है और पानी की सतह को बिल्कुल साफ़ कर देता है।

बिल्कुल इसी तरह बिनाका टॉप का विशेष फैलने वाला तत्व आपके मुँह के हर कोने में फैल कर दांतों में सड़न पैदा करनेवाले कीटाणुओं का नाश करता है और साँस की दुर्गन्ध को रोकता है। बिनाका टॉप आपके मुँह की पूरी रक्षा करते हुए उसे ताज़गी से भर देता है।

बिनाका टॉप टूथपेस्ट —
मुँह की पूरी रक्षा के लिए

शोर पर नियंत्रण के लिए किया गया व्यय

	वर्ष १९७०			वर्ष १९७१		
कुल बजट	१९,७८,८५०	खरब	डालर	२०,०७,७१०	खरब	डालर
रक्षा	१४९७७६०	"	"	१५०,२४१०	"	"
शोर-नियंत्रण	०.३४	"	"	४.००	"	"

सी आवाज।' 'हमारे ट्रक के ढके इंजन से न शोर निकलता है, न गरमी। हमारे इंजन औरों से सक्षम हैं, पर शोर कम करते हैं।'

बारह वर्ष पूर्व भी वायुयानों के शोर की ओर ध्यान दिया गया। बीचक्राफ्ट एयर किंग 'तेज गति, अधिक भारवाहन क्षमता, आरामदायक केबिन, छोटे हवाई अड्डों पर उतरने में सक्षम और फुसफुसाहट-जैसी आवाज' (टाइम्स २०-६-६६) बोइंग ७४७—शांत इंजन (न्यूज वीक) ईस्टर्न एयरलाइंस —'फुसफुसाहट-जैसा शांत।' 'कम ईंधन व्यय, सशक्त व शांत।' आदि वाक्य कुछ वर्ष पूर्व भी अखबारों में देखने को मिलते रहे।

भारत भी शोर में कम नहीं

भारत में अधिक शोर शहरी क्षेत्रों, रनवे, साइलेंसरहीन मोटर साइकल और स्टीरियो ही नहीं, धर्म-स्थलों पर भी होता है। प्रातः चार बजे हैं, रोगी को झपकी लगी, थका-हारा व्यक्ति सो रहा है, एक छात्र जी-जान से अध्ययन में लीन है, तभी किसी धर्म-स्थान से लाउड स्पीकर चीखने लगता है। यदि वहां जाकर देखें, तो चार-पांच व्यक्ति बैठे दिखेंगे। घर में पूरे वाल्यूम पर बजता रेडियो व स्टीरियो पड़ौसियों को बहुत परेशान करता है। दशहरे व दीवाली पर पटाखों से धन का अपव्यय ही नहीं, वातावरण भी विषैली गैसों से भर जाता है, और धूम-धड़ाके से शोर भी बहुत होता है।

आज विश्व के शेष भागों के समान भारत में भी शोर-विरोधी जनमत जगाने की आवश्यकता है।

—बी-२ बी-२०१, जनकपुरी,
नयी दिल्ली-११००५४

यह किस्सा यूरोप में प्रसिद्ध है। एक व्यक्ति के यहां उसकी सास भी रहती थी। एक दिन उसकी घोड़ी ने लात मार दी, जिससे आहत होकर सास का प्राणांत हो गया। अगले दिन एक बहुत बड़ी भीड़ उसके घर के बाहर जमा हो गयी। पत्नी ने यह देखा तो चहककर बोली, "देखा, मेरी मां कितनी 'पापूलर' थीं।"

इस पर पति ने शंका समाधान किया, "भागवान, यह लोग तुम्हारी मां के लिए अफसोस करने नहीं आये हैं, बल्कि ये तो हमारी घोड़ी खरीदने के लिए आये हैं।"

कावागुचि एकाइ

जापान के प्रथम तिब्बती यात्री भिक्षु: कावागुचि एकाइ

वे उपासक-धर्म का उपदेश करते रहे

• महेन्द्र साईंजी माकिनो

प्राचीन-काल से ही तिब्बत रहस्यमय देश कहलाता था, इसलिए जापान के पूर्वजों ने इस देश में जाने का कभी कदम नहीं उठाया। यदि कोई इस देश में भ्रमण करने का साहस करता था, तो उसकी बहुत ही प्रशंसा की जाती थी। दुनिया के कुछ बौद्ध-विद्वानों का मत है कि महायान बौद्धधर्म तो भारत में लुप्त हो चुका है और महायान के प्रामाणिक ग्रंथ तिब्बत या नेपाल में ही मिल सकते हैं, अन्यत्र नहीं। कहते हैं कि तिब्बती अनुवाद चीनी अनुवाद से भी कहीं शुद्ध है। देश और किसी धार्मिक संस्था की आज्ञा तथा सहायता लेकर तिब्बत की यात्रा करनेवाले इने-गिने व्यक्ति हैं, किंतु अपनी शक्ति से तथा ज्ञानपिपासा की शांति के लिए इतने साहसपूर्ण कार्य को कार्यान्वित करनेवाले शायद विरले ही मिलें। और यह हैं, एक जापानी बौद्ध-साधक भिक्षु कावागुचि एकाइ। यही एक मात्र व्यक्ति हैं, जिन्होंने महायान बौद्ध के मूल-ग्रंथ की खोज करने के लिए हिमालय पार कर तिब्बत की यात्रा की। शैक्षणिक योग्यता तथा उपाधि न होने के कारण अपने जीवन-काल में उन्हें ख्याति नहीं मिली, किंतु कई विदेशी भाषाओं के ज्ञाता तथा तिब्बती विद्या-क्षेत्र में अद्वितीय एक सच्चे बौद्ध-साधक के रूप में आज फिर से उनका नाम बड़ी श्रद्धा के साथ लिया जाता है।

एकाइ का जन्म

एकाइ का जन्म १८६६ में पश्चिम जापान के 'साकाइ' नामक एक व्यापारी शहर में हुआ था। पिता का नाम 'जेंकिचि'

माता का नाम 'त्सुने' तथा उनके बचपन का नाम था 'सादाजिरो'। प्राथमिक स्कूल में छह श्रेणी तक पढ़ने के बाद स्कूल छोड़ कर उन्होंने अपने घर के व्यवसाय में हाथ बंटाया। १४ वर्ष की उम्र में चीनी विद्या और २० वर्ष की उम्र में अंगरेजी, संस्कृत और पाली भाषा का अध्ययन किया। फिर भी विद्या के प्रति अपनी प्रबल इच्छा को वे दबा न सके। अतः दिन में काम करते हुए रात्रि स्कूल में पढ़ते रहे। १५ वर्ष की उम्र में जब उन्होंने भगवान बुद्ध का जीवन-चरित्र पढ़ा, तब उनके मन में एक दिव्य-प्रेरणा जगी। उसके बाद उन्होंने मदिरा, मांस और महिला से संबंध तोड़ दिया और २६ वर्ष की उम्र में ही शाकाहारी बनकर दिन में दो बार खाने का अपना नियम बनाया जिसका पालन वे आजीवन करते रहे। उन्होंने तोक्यो के दर्शन-भवन (वर्तमान तोक्यो विश्वविद्यालय) में भरती होकर तीन वर्ष तक शिक्षा ग्रहण की।

हिमालय की गोद में

१८९० में २५ वर्ष की उम्र में बौद्ध-धर्म की शिक्षा लेकर वे भिक्षु बन गये और तोक्यो के एक बौद्ध मंदिर में पुजारी बनकर बस गये। किन्तु सच्चा साधक जब

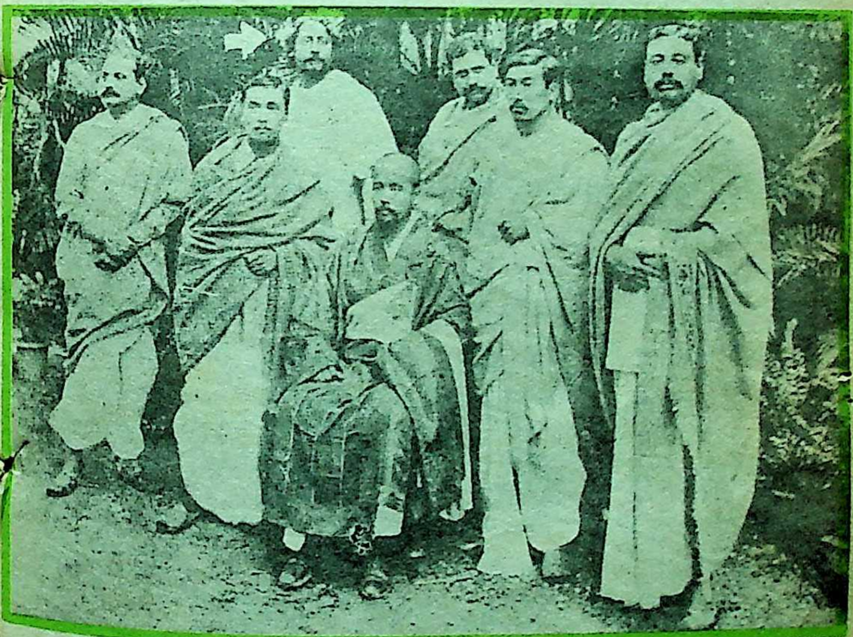

मध्य में जापानी पंडित बौद्ध भिक्षु कावागुचि और खड़े चिह्नांकित रवीन्द्रनाथ ठाकुर

रेक्सोना आपकी त्वचा की देखभाल करता है...

इसे कोमल और उज्ज्वल रखता है

रेक्सोना, इसमें मिले हैं चार कुदरती तेल—
हापुशा, दालचीनी, लौंग, टेरिबिंथ. रेक्सोना से नहाइये
—यह आपकी त्वचा को
कोमल और उज्ज्वल
बनाए रखता है. इसकी
मनमोहक खुशबू आपको
पहरों महकाए. रेक्सोना
—आपकी त्वचा की
कुदरती देखभाल के लिए.

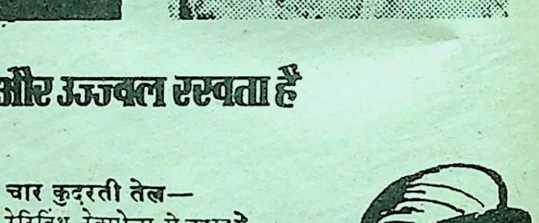
REXONA
WITH A BLEND OF FOUR NATURAL OILS

रेक्सोना आपकी त्वचा के लिए गुणकारी है

हिन्दुस्तान लीवर का एक उत्कृष्ट उत्पादन

लिंटास-RX. 78-1510 HI

एक मंदिर का पुजारी बन बैठे, तब वह संसार के विभिन्न कामों के चक्र में फंस जाता है और गंभीरता पूर्वक बौद्ध-ग्रंथों को पढ़ने की फुरसत उसे नहीं मिलती। इसलिए एक दिन उन्होंने यह सोचा कि उन सबको छोड़कर हिमालय की गोद में चले जाएं और बौद्ध-ग्रथों का मनन-चितन करें। उनका विचार था कि बौद्ध-भिक्षु के लिए सर्व महान संपत्ति वह है, जो पांच-शील का पालन करता हो। अतः वे भिक्षुक बनकर बिना पैसा, केवल भिक्षा मांगते हुए अपना जीवन-निर्वाह करें। उन्होंने यह भी महसूस किया कि अपने दृढ़ संकल्प को पूरा करने के लिए निर्णय शक्ति और सतर्कता की जरूरत है। अतः १८९३ में २८ वर्ष की उम्र में उन्होंने अपनी पीठ पर पत्थर लादकर जंगल-जंगल, पर्वत पर चढ़ने का अभ्यास तक किया था।

हीनयान धर्म का अध्ययन

१८९९ में एक जापानी भिक्षु कोनेन श्याकु श्रीलंका में तीन वर्ष तक हीनयान धर्म का अध्ययन करके अपने देश वापस आये थे। उन्होंने एकाइ से कहा कि यदि बौद्ध-धर्म को संपूर्ण रूप से जानना चाहते हो, तो तुम्हें श्रीलंका जाना होगा। एकाइ ने कहा कि जापान के लिए महायान की जरूरत है। एकाइ ने भिक्षु श्याकु से केवल पाली भाषा सीखी और श्रीलंका की अपेक्षा तिब्बत की राह पकड़ी।

२५ जून, १८९७ को जब वे ३२ वर्ष के हो गये थे, तब वे 'इजुमि-मारू' नामक स्टीमर में बैठकर 'कोबे' बंदरगाह से रवाना हुए। विदाई-भेंट के रूप में जाते समय वचन दिया कि मैं मदिरा और सिगरेट छूऊंगा नहीं, बल्कि अहिंसा का सख्त पालन करूंगा। उनके अनेक भक्त-अनुयाइयों ने यह कहकर उन्हें रोका कि वहां जाना मौत को गले लगाना है। सर्वप्रथम वे कलकत्ता पहुंचे और वहां से दार्जिलिंग गये, जहां कई महीनों तक महा पंडित श्री शरतचंद्र दास से तिब्बती भाषा सीखते रहे। वे रोज तीन मील पैदल चलकर पंडितजी के घर जाते थे।

पंडितजी उनसे इतना प्रभावित हुए कि उन्होंने उनके लिए मुफ्त में अपने घर पर ही भोजन की व्यवस्था कर दी। यह भी व्यवस्था कर दी थी कि एक तिब्बती परिवार में रहकर बच्चों के साथ बोलचाल की भाषा भी वह सीख लें। एकाइ ने इतनी मेहनत और ईमानदारी से तिब्बती भाषा सीखी कि एक ओर तो वे जन-साधारण की बोली सीखते, दूसरी ओर सरकारी स्कूल में भरती होकर शास्त्रीय तिब्बती भी सीखते। जब भाषा की तैयारी पूरी हो गयी, तब एकाइ ने अपनी वेष-भूषा को पूर्ण रूप से बदल लिया। उन्हें देखकर कोई मुश्किल से पहचान सकता था कि वह एक जापानी नागरिक है। एकाइ तिब्बती वेष-भूषा में तिब्बत जानेवाली एक टोली में शामिल हुए। धूप-वर्षा, गरमी-सरदी, तूफान-बर्फ आदि कितने ही

कष्टों को उन्होंने सहा। तिब्बती सैनिकों की कड़ी निगाह तथा जंगली जानवरों से बचते, जान को हथेली पर रखकर ४ वर्ष बाद वे राजधानी लासा पहुंचे। उनका दृढ़ विश्वास था कि भगवान बुद्ध सदा उनकी रक्षा करते रहेंगे और सत्य की खोज ही इस यात्रा का उद्देश्य है।

जन-साधारण की सेवा

लासा में अपने को तिब्बती डॉक्टर कहकर जन-साधारण के लिए वे चिकित्सा-सेवा में लग गये, यहां तक कि धार्मिक नेता तथा राजपरिवार के लोग भी उन्हें चिकित्सा के लिए बुलाने लगे और अंत में वे राजा के विश्वास-पात्र बन गये। किंतु एक दिन उनका रहस्य खुल जाने से उनपर गुप्तचर का शक किया गया और उन्हें तिब्बत से बाहर भाग जाना पड़ा। सजग प्रहरियों की निगाह से मुश्किल से बचकर उन्होंने भारत की सीमा में प्रवेश किया और १९०३ ई. में अनेक धर्म-ग्रंथों को लेकर कलकत्ता से समुद्र-पथ के द्वारा वे जापान की ओर रवाना हुए। तिब्बत की यात्रा पर निकले हुए, उन्हें छह वर्ष बीत चुके थे। जापान की भूमि पर पदार्पण करते हुए, उनको मन में संकोच और शर्म का अनुभव हो रहा था कि मैं किस मुंह को लेकर सब से मिलू। किंतु पुनः विचार किया कि जापानी-भूमि को भारत-भूमि के समान समझकर और इसे ही अपनी साधना का केंद्र समझ कर तपस्यामय जीवन बिताया जाए। वे साथ में बहुत अधिक सामान लाये थे, जिनमें पुस्तकों के अतिरिक्त बुद्ध-मुर्ति, पूजा-उपकरण, सिक्के और हिमालय की कई वनस्पतियों के नमूने इत्यादि थे।

रवीन्द्रनाथ ठाकुर

उपयोगी पुस्तक का प्रकाशन

उनके जापान वापस आने के दो महीने बाद उनके मुख से बोले हुए विवरण 'तिब्बत-यात्रा-डायरी' तोक्यो और ओसाका के प्रमुख अखबारों में धारावाहिक रूप प्रकाशित हुए। जब यह लेख प्रकाशित हुए, तब यह खबर फैल गयी कि यह स झूठ है। 'तोक्यो-भूगोल-अकादमी' ने यह प्रचार कराया कि वह वास्तव में तिब्बत नहीं गया है और लोगों को धोखा दिया है जापान के जनसाधारण ने तो उन साहसवर्धक कार्यों की खूब प्रशंसा की किंतु बौद्ध-सोसायटी और कई विद्या संस्थाओं ने उचित मूल्यांकन नहीं किया आज आधी शताब्दी बीतने पर १९५

में जब प्रो. कावागिता के नेतृत्व में तिब्बत की खोजयात्रा की गयी, तब यह पता लगा कि एकाइ की दृष्टि कितनी सही थी और उनकी छान-बीन कितनी तीखी थी। इस यात्रा-डायरी का अंगरेजी अनुवाद १९०९ में जापान में हुआ, किंतु श्रीमती एनिबेसेंट की सिफारिश पर ७१९ पृष्ठ के पुस्तकाकार में मद्रास से प्रकाशित हुआ, वह है 'Three years in Tibet' दो कारणों से योरोपीय खोजकर्त्ता या तिब्बती विशेषज्ञों के बीच इस पुस्तक का महत्त्व है —एक तो . . . विविक्तिवादी तिब्बत की यात्रा कष्टमय असाधारण साधना-तपस्या के समान है और दूसरा—उसमें तिब्बत की राजनीति, सामाजिक-प्रथा तक का अच्छा विवरण है।

१९७७ में जब जापान का प्रसिद्ध चित्रकार श्री हिरायामा तिब्बत के लासा तक गया, तब उसने पाया कि तिब्बती लोग 'कावागुचि एकाइ' के नाम से खूब परिचित हैं। १९४१ में एकाइ ने इस पुस्तक के पाठकों से अपनी यह आशा प्रकट की कि लोग उसे धार्मिक ग्रंथ समझकर भक्तिपूर्वक पढ़ें। जापान के भारतीय विद्या के आदि—विशेषज्ञ-विद्वानों में प्रो. हुमिओ नन्जो और प्रो. वाकाकुसु का नाम लिया जाता है। किंतु वे सब इंगलैंड के ऑक्सफोर्ड विश्वविद्यालय तथा प्रो. मैक्स म्यूलर की परंपरा के थे। अतः उनकी विद्याएं योरोपीय धारा की थीं। पर एकाइ एकमात्र ऐसे व्यक्ति थे, जिन्होंने भारतीय विचारधारा को अनुभव के साथ सीधा हजम कर लिया था। जापान की सभ्यता और जापानी ज्ञानोदय के इतिहास में, वे आदि तथा अंतिम भिक्षु हैं, जिन्होंने भारतीय विचारों की खोज के लिए तिब्बत-यात्रा की।

रवीन्द्रनाथ से भेंट

१९०४ ई. में एकाइ ने दुबारा भारत की यात्रा की और १९०५ में तीसरी बार नेपाल गये। उस समय वह बौद्ध-ग्रंथ के साथ कृषि-संबंधी यंत्र, स्कूप पंप (Scoop Pump), पनचक्की (water wheel) के नमूनों को उपहार में ले गये। कहते हैं कि इस अवसर पर वे पंचम लामा, दलाई लामा और गुरुदेव रवीन्द्रनाथ से मिले थे। वे एक जापानी यात्री के रूप में भव्यता के साथ घूमे और १९१५ में ५० वर्ष की उम्र में अपने देश वापस लौटे। उनकी लायी हुई समस्त वस्तुएं आज 'कावागुचि-संग्रह' नाम से तोहोकु विश्वविद्यालय में सुरक्षित हैं। इनमें अनोखी वनस्पति के नये-नये १६ किस्म के नमूने भी मिलते हैं।

जापान लौटने के बाद एकाइ तिब्बती-भाषा और बौद्ध-ग्रंथों के अध्ययन, अनुसंधान, अनुवाद और प्रकाशन आदि विशेष रूप से तिब्बती-जापानी शब्द-कोष के संपादन में काम करते रहे। फरवरी १९४५ में ८० वर्ष की उम्र में उनकी जीवन-लीला समाप्त हो गयी।

अध्यापक : जापानी भाषा-विभाग विश्व-भारती, शांति निकेतन, पश्चिम बंगाल

ग़ज़लें

अगर होश में होता

जो कहीं आग का दरिया मचल गया होता
यकीन मानों शहर भक् से जल गया होता
ये भी अच्छा ही हुआ सामने न आते वे
वरना इस भीड़ से पत्थर उछल गया होता
ग़जब का जोश था जलती हुई मशालों में
न रुकते पांव तो नक्शा बदल गया होता
सुलगती रहती अगर आंच सबके सीनों में
जमीं से खून का चशमां उबल गया होता
एक टुकड़ा ही कहीं होता शहादत के लिए
ये अंधेरा तो, वहीं पर बिछल गया होता
दरअसल नींद थी इस सारे हादसे की वजह
वो अगर होश में होता, संभल गया होता

—राजकुमारी 'रश्मि'
१५, शांतिनगर, ग्वालियर—१

खुशबुओं की राह

सफर तय हो गया एक साल का
बयां शुरू तक न हुआ मेरे हाल का
मौसम है बादलों का बरसात हो ही जाएग
धूप तभी हंस पड़ी इस ख्याल प
बाद मरने के मिलेंगे फिर कहां पर ह
सोचते ही रहे सब इस सवाल प
हर दिन खुशबुओं की राह से गुजर गया
ये राह कहां से आ गयी इस दीवाल प

—मीरा जैन
१३ जैन स्ट्रीट, अलीग

सहरा-सहरा चांद!

रंग गमों का लिये हुए है पीला
गहरा-गहरा चांद
ख्वाबों के खंडहर पर परचम-जैसा
फहरा-फहरा चांद
ऐसे लहराता है तेरा आंचल मस्त
हवाओं में
नदी के दर्पण में जैसे दीखे
लहरा-लहरा चांद
कल कितनी जल्दी में था, जब तुम मेरी
बांहों में थीं
आज लगे हैं---जैसे बरसों से हो
ठहरा-ठहरा चांद
जिन आवाजों की जुंबिश से आसमान
थर्राता था
मेरी उन आवाजों पर भी चुप है
बहरा-बहरा चांद
इन रस्तों से होकर शायद तुम ख्वाबों
में गुजरी हो
जर्रे-जर्रे में दीखे हैं मुझको
सहरा-सहरा चांद

—सुरेश कुमार

रंजिनी प्रकाशन, जी० टी० रोड, अलीगढ़---२०२००१

जंगल में आग

बड़े पेड़ तो खड़े हुए हैं
लिए फासला
पर जो सूखे पत्ते
टूटे पड़े हुए हैं
वही फासले को भरते हैं

एक छोर पर
आग प्रज्ज्वलित जब होती है
उसे दूसरे छोर तलक पहुंचानेवाले
सूखे-टूटे पत्ते ही वाहक होते हैं।

संभावना

खौलता है जल नदी का
शांत तट की रेत
लग रहा वातावरण में
आज कोई प्रेत
घटना कुछ घटेगी

गोल गुंबद के इधर
रोता हुआ संताप
वातानुकूलन में उधर है
स्वार्थ का संलाप
घटना कुछ घटेगी

---रमेश कौशिक

बी–७८, मानसरोवर पार्क, शाहदरा,
दिल्ली---११००३२

प्रेम के पंचामृत

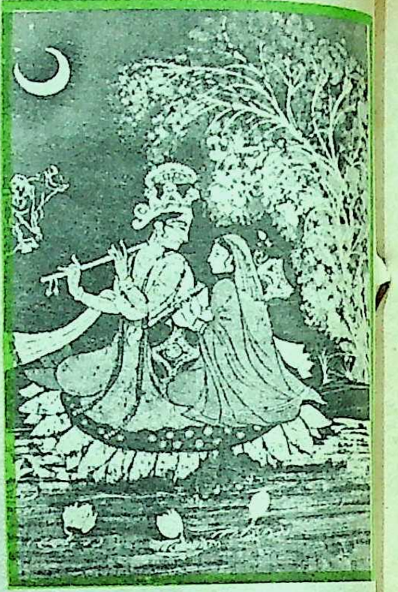

• डॉ. रामानन्द तिवारी

प्रेम के प्रमाणों की आधुनिक खोज कितनी सनातन है, यह जानकर आश्चर्य होता है। विज्ञान और बुद्धि का युग है। अध्ययन-प्रणाली की दृष्टि से यह खोज 'वैज्ञानिक' कहलाएगी। 'विज्ञान' भौतिकवादी एवं इंद्रिय प्रत्यक्ष पर आधारित होता है। किंतु प्रेम के प्रमाणों की यह खोज जीवन के, मन के, हृदय के; आत्मा के ऐसे गंभीर रहस्यों का उद्घाटन करती है, कि इसे अलौकिक एवं अतींद्रिय कहा जा सकता है। अलौकिक और अतींद्रिय होने पर भी यह खोज जीवन के गंभीर रहस्यों का सरल और सुग्राह्य विवरण है।

समाज-विज्ञान की प्रणाली के अनुसार यह खोज बड़ी संख्या में स्त्री-पुरुषों से प्र के संबंध में प्रश्नोत्तरों के आधार पर क गयी। अमरीका के आधुनिक युव युवतियों की प्रेम-संबंधी ये धारणाएं कित सनातन और सार्वभौम हैं, यह प्र के इन प्रमाणों के व्यापक समर्थन से प्र णित होता है। प्रत्येक प्रेमी, प्रत्येक मनु हेतु ये प्रमाण, प्रेम और जीवन -रहस्य प्रकाश-स्तंभ हैं।

हृदय की बा

प्रेम के प्रमाणों में पहला प्रमाण कु आध्यात्मिक और अलौकिक-सा प्रती होगा।

यह बात कुछ आध्यात्मिक-सी प्रती होती है। किंतु वस्तुतः प्रेम आत्मिक इंद्रियों और बुद्धि की भूमि से ऊपर

अमरीका के एक विश्वविद्यालय में हाल में प्रेम के प्रमाणों के संबंध में महत्वपूर्ण खोज हुई है। इस खोज का विवरण अभी ९ जून, १९८२ को बी. बी. सी. के 'इंद्रधनुष' कार्यक्रम के अंतर्गत प्रसारित किया गया था। 'कादम्बिनी' के पाठकों की जानकारी के लिए उसका संक्षिप्त निरूपण प्रस्तुत लेख में दिया गया है...

कर प्रेम आत्मा की पीठ पर ही प्रतिष्ठित होता है। दो आत्माएं सहज ही मिलकर एक हो जाती हैं, और प्रेमी-युगल एक-दूसरे की बात को सहज ही, बिना कहे समझते हैं। आत्मिक एकता के कारण ऐसा होता है। ऐसा होने पर ही प्रेम की पूर्णता प्रमाणित होती है।

प्रत्यक्ष व्यवहार और वचन के द्वारा भी प्रेम की एकता प्रकट होती है, किंतु बिना वचन के, बिना कहे, जो एकता प्रमाणित होती है, वह प्रेम का गूढ़तर रहस्य है। इस एकता से जो प्रेम प्रमाणित होता है, उस प्रेम का आनंद अलौकिक और अवर्णनीय है। सभी प्रेमियों और मनुष्यों की अंतरात्मा प्रेम के इस शब्दातीत रहस्य की महिमा का समर्थन करेंगी। रामकथा में केवट के प्रसंग में राम-सीता के इस शब्दातीत प्रेम का उदाहरण मिलता है--
'पिय हिय की सिय जाननहारी। मनि-मुंदरी मन मुदित उतारी।'

मिलन की उत्सुकता

प्रेम का दूसरा प्रमाण यह है कि प्रेमी-युगल एक-दूसरे से मिलने के लिए उत्सुक रहें।

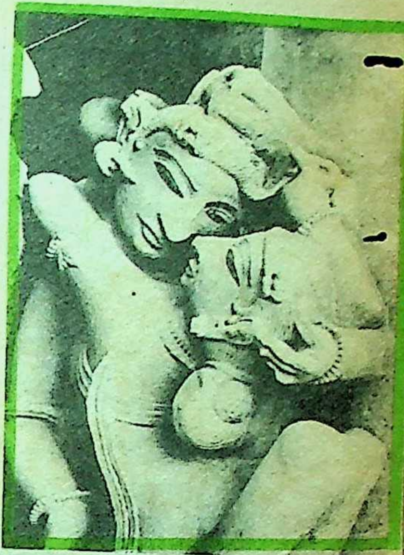

प्रेम दो हृदयों, दो आत्माओं का संयोग है, सम्मिलन है। आत्माओं के आंतरिक मिलन में ही प्रेम घटित होता है।

इसीलिए सभी प्रेमी परस्पर मिलने के लिए उत्सुक रहते हैं। वियोग असह्य होता है। वियोग के वर्णनों से काव्य भरे हैं। वियोग के गीत मिलन के गीतों से अधिक मार्मिक हैं। राधा और गोपियों के वियोग-गीतों से 'सूर-सागर' भरा है।

जहां बिना कहे एक दूसरे के हृदय की बात समझ लेना प्रेम का आंतरिक प्रमाण है, वहां एक-दूसरे से मिलने की उत्सुकता व्यावहारिक रूप में प्रेम की तीव्रता को प्रमाणित करती है। जहां यह उत्सुकता

मंद होती है, वहां प्रेम की सच्चाई और गहराई संदिग्ध हो जाती है।

मिलने की उत्सुकता एक दूसरे के प्रेम की तीव्रता को तथा एक के लिए दूसरे के महत्त्व को प्रमाणित करती है।

देर तक बतियाना

प्रेम का तीसरा तथा अधिक प्रत्यक्ष एवं व्यावहारिक प्रमाण है, बिना किसी विशेष महत्त्वपूर्ण और उपयोगी विषय के दीर्घकाल तक परस्पर वार्त्तालाप करना।

बिना कहे एक-दूसरे के हृदय की बात जानना प्रेम का आंतरिक एवं आत्मिक रहस्य है। फिर भी वह वार्त्तालाप में ही शब्दों के द्वारा व्यंजित होता है। इस वार्त्तालाप का विषय प्रेम नहीं होता। किसी भी विषय के वार्त्तालाप में प्रेम प्रमाणित होता है। प्रेम में विषय का नहीं, वार्तालाप के तथ्य का महत्व है। 'शब्द' जीवन का सूक्ष्म रहस्य है। वेदांत और व्याकरण में शब्द को ब्रह्म माना जाता है। परावाक शब्द का तात्त्विक रूप है। वह मुखर शब्द से अतीत है। किंतु शब्द का आत्मिक तत्व मुखर शब्द में भी समवेत रहता है। इसी आत्मिक तत्व के द्वारा शब्द (ब्रह्म के) आनंद का वाहक बनता है।

प्रेम व्यावहारिक अर्थ में उपयोगी नहीं है। आनंद, विश्वास, जीवन की कृतार्थता आदि इसके प्रयोजन कहे जा सकते हैं। यह भौतिक और स्वार्थमय उपयोगिता नहीं है। प्रेम पारस्परिक तो होता है, किंतु स्वार्थमय नहीं होता। स्वार्थ-दृष्टि से प्रेम खंडित हो जाता है। एक-दूसरे की हित-कामना की दृष्टि से प्रेम को पारस्परिक परार्थ कहा जा सकता है।

दो आत्माएं सहज ही मिलकर एक हो जाती हैं और प्रेमी युगल एक दूसरे की बात को सहज ही बिना कहे समझते हैं

यह वार्त्तालाप विषयहीन होता है

प्रेम के प्रमाण के लिए प्रेमियों के वार्त्तालाप का विषय-हीन (!) होने के साथ दीर्घकालीन होना आवश्यक है। उपयोगी विषयों की बातचीत उपयोगिता एवं प्रयोजन से सीमित हो जाती है। उपयोगिता प्रयोजन और समय को मूल्य देती है।

प्रेम में प्रेम ही काल का मूल्य है। अतः दीर्घकालीन वार्त्तालाप से प्रेम की मूल्यवत्ता और गहनता प्रमाणित होती है।

भवभूति ने 'उत्तर रामचरित' में प्रेम

के इस रहस्य को, जिसकी खोज अमरीका के विश्वविद्यालय के सामाजिक अध्ययन में हुई है, कुछ और विशेषताओं के साथ बहुत पहले उद्घाटित किया था।

पंचवटी में कुटी के भीतर रात्रिशयन करते हुए राम-सीता दीर्घकाल तक अव्यवस्थित क्रम से (या अक्रम से) मंद-मंद स्वर में परस्पर वार्त्तालाप करते हैं। वे इस वार्त्तालाप में इतने तन्मय हो जाते हैं कि सोना ही भूल जाते हैं। वार्त्तालाप करते रात ही बीत जाती है:

किमपि किमपि मन्दं जल्पतोरक्रमेण,
अविदितगतयामा रात्रिरेव व्यरंसीत्।

प्रेम पारस्परिक तो होता है किंतु स्वार्थामय नहीं होता स्वार्थ-दृष्टि से प्रेम खंडित हो जाता है

प्रेम का चौथा प्रमाण है, एक दूसरे की रुचियों, एक दूसरे के कार्यों में परस्पर सहयोग देना।

परस्पर सहयोग की भावना

यह प्रेम का व्यावहारिक प्रमाण है। प्रेम के आत्मिक भाव का लौकिक भूमि-पर प्रमाणित होना भी आवश्यक है। अध्यात्म और व्यवहार दोनों की संगति से जीवन पूर्ण होता है। केवल आत्मिक प्रेम से जीवन का निर्वाह नहीं हो सकता। लौकिक निमित्तों में साकार होने पर ही प्रेम जीवन में मूर्त्त हो सकता है।

प्रेम एक पारस्परिक भाव है। उक्त तीन प्रमाणों में प्रेम की पारस्परिकता ही प्रकट होती है। एक-दूसरे की रुचियों, एक-दूसरे के कार्यों आदि में सहयोग देना इस पारस्परिकता को सुदृढ़ करता है।

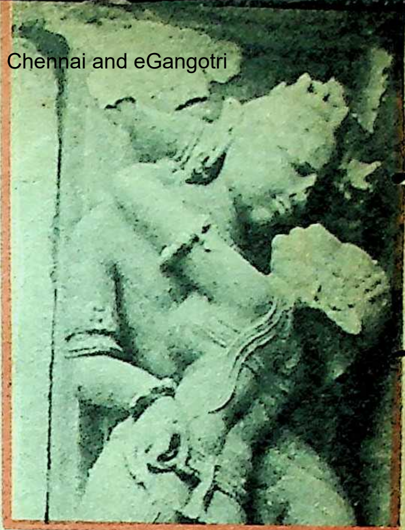

अध्यात्म की भाषा में प्रेम अद्वैत का भाव है। सहयोग अद्वैत का व्यवहार है। इससे प्रेम-व्यवहार में साकार होता है। यह आत्मिक एकता को प्रमाणित करता है और सुदृढ़ बनाता है।

युगपत प्रसन्नता

प्रेम का पांचवां प्रमाण है संयुक्त आनंद, सम्मिलित हर्ष, समान निमित्तों में प्रेमियों की युगपत प्रसन्नता।

प्रेम एक संयुक्त आत्मिक अध्यवसाय है। वह एक संयुक्त भाव और सम्मिलित धर्म है। एकांत, अकेलापन, स्वार्थ, पृथकत्व आदि से ऊपर उठकर, एक संयुक्त आंतरिक भाव, सम्मिलित आनंद-हर्ष में प्रेम सफल होता है। मनुष्य-जीवन के कुछ धर्म, कुछ सीमा तक अकेले और पृथक

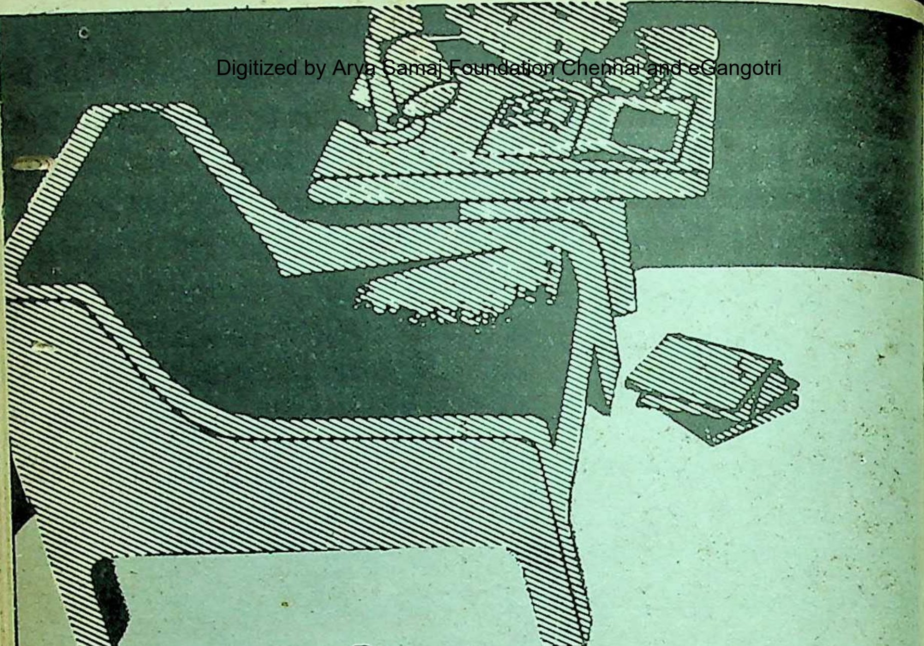

घर हो या दफ़्तर
निखार लाते हैं
कोचर कार्पेट्स
मनमोहक रंगों में हाथ की बनी हुई ऊनी कार्पेट्स अपने
मनचाहे साइज में निर्धारित उचित मूल्यों पर लें
Kocher CARPETS
R-4, Green Park, Mehrauli Road,
New Delhi-110016 Phone : 665010

भी हो सकते हैं। किंतु प्रेम में इनकी पृथकता विरोध का कारण नहीं बनेगी। व्यवहार में अकेले और पृथक होते हुए भी ये प्रेम की एकात्मता से समर्पित होंगे।

इन पृथक धर्मों के अतिरिक्त कुछ निमित्तों में प्रेमी-युगल को संयुक्त आनंद और सम्मिलित हर्ष का अनुभव होना चाहिए। यह अनुभव प्रेम की आत्मिक एकता को प्रखर बनाएगा। संयुक्त आनंद में प्रेम का आत्मिक अद्वैत प्रमाणित होगा।

प्रेमी-युगल के संयुक्त धर्मों, उनकी संयुक्त संतान, उनकी संयुक्त संपत्ति आदि में यह संयुक्त आनंद-हर्ष सहजरूप में फलित हो सकता है। संतान, गृह, संपति आदि इसके उदाहरण हैं। 'संतान' दंपत्ति की संयुक्त कृति है। भवभूति ने संतान को 'प्रेम की ग्रंथि' कहा है। संतान अविभाज्य है। तलाक में संतान की अविभाज्यता समस्याएं उत्पन्न करती है। गृह, संपत्ति आदि भौतिक वस्तुओं का विभाजन हो सकता है, किंतु विभाजन प्रेम के लिए घातक है। वस्तुओं में व्यक्तिगत अधिकार मानने से प्रेम का आत्मिक अद्वैत खंडित हो जाता है। अविभाजन और एकता के संयुक्त दृष्टिकोण से ये प्रेम के युगपत आनंद-हर्ष के आधार बनते हैं। प्रेम संयोग है, संपृक्ति है। अविभाज्यता और संयुक्त आनंद में ही प्रेम की कृतार्थता है।

प्रेम के सनातन सत्य

प्रेम के ये पांच प्रमाण, प्रेम के पंचामृत हैं। आधुनिक खोज के ये तत्व प्रेम के सनातन सत्य और निगूढ़ रहस्य का उद्घाटन करते हैं। ये सार्वभौम हैं। प्रेम द्वारा जीवन को सफल बनाने के अभिलाषी सभी स्त्री-पुरुष इन प्रमाणों से अपने प्रेम को परख सकते हैं। इनका उपयोग कर अपने प्रेम को परिष्कृत और परिपूर्ण बना सकते हैं।

—१४, गोलबाग रोड, भरतपुर
(राजस्थान)

भुलक्कड़ पति को साथ ले पत्नी मनोविज्ञान चिकित्सक के यहां पहुंची और कहने लगी, "इन्हें हमेशा कुछ न कुछ भूल जाने की आदत है... कभी-कभी तो यह मुझे भी भूल जाते हैं।"

"इलाज हो जाएगा... पर हो सकता है कि बाद में इनकी प्रवृत्ति उलट जाए और यह कुछ न कुछ लाना शुरू कर दें।"

"तब फिर रहने दीजिए", पत्नी बोली, "यूं ही ठीक हैं।"

★

नाटक में हीरो के मरने का 'सीन' दिखाया जा रहा था कि परदा एकाएक गिरा दिया गया। दर्शकों में शोर मच गया। तभी नाटक कंपनी का मैनेजर स्टेज पर आकर बोला, "माफ कीजिएगा, साहबान! इस सीन में मरनेवाला कलाकार अचानक बेहोश हो गया है। शांति रखिए, जैसे ही वह होश में आएगा, फिर मरना शुरू कर देगा।" —सुरेंद्र श्रीवास्तव

नारे और अखबारी टिप्पणी साहित्य नहीं हैं

• हरिशंकर परसाई

मैं व्यंग्य ही क्यों लिखता हूं, एक तो लेखक की विशिष्ट रचानत्मक प्रतिभा होती है। दूसरे, मैंने देखा कि अपने युग के यथार्थ को सार्थक अभिव्यक्ति, मैं व्यंग्य के माध्यम से ही दे सकता हूं। तीसरे स्वतंत्रता-संग्राम के वर्षों में जो अंतर्विरोध और विसंगतियां, एक बड़े उद्देश्य के लिए आंदोलन के नीचे छिपी थीं, वे स्वाधीनता के साथ उभर उठीं। जीवन के हर क्षेत्र में विसंगति, भ्रष्टाचार, मिथ्याचार, अन्याय, शोषण आदि खुलकर सामने आये। सामाजिक रूप से प्रतिबद्ध लेखन को इनका अन्वेषणकर अर्थ देना तथा रचना के द्वारा उन्हें व्यक्त करना जरूरी था। मैंने इसके लिए व्यंग्य को सबसे अच्छा माध्यम माना।

विधा नहीं एक 'स्पिरिट'

व्यंग्य यों अलग विधा नहीं है, पर इस युग में व्यंग्य एक 'स्पिरिट' के रूप में सर्वोपरि है। कारण है, हमारे युग के अंतर्विरोध को प्रकट करने की उसकी क्षमता, युग की मांग, और व्यंग्य की सामर्थ्य। इस कारण व्यंग्य सबसे सार्थक भी है और लोकप्रिय भी।

व्यंग्य पहले भी लिखे गये हैं। हमारे देश में 'अपभ्रंश' भाषा में व्यंग्य लिखा गया। निरंजन, सूरी व देव ने व्यंग्य लिखा था। तुलसीदास ने भी व्यंग्य किया है। कबीर ने तो बड़ा करारा व्यंग्य किया ही है। पंद्रहवीं शताब्दी में स्पेन के सर्वेटीज ने व्यंग्य-उपन्यास लिखा 'डान क्विग जोट' जिसमें पतनशील सामंतवाद को उजागर किया गया है। हिंदी में आलोचकों और साहित्य के इतिहासकारों द्वारा व्यंग्य की उपेक्षा के कई कारण हैं; मसलन व्यंग्य के गहरे अर्थ को नहीं समझ पाना, व्यंग्य के मूल्यांकन के लिए सार्थक भाषा और मुहावरे का न होना, फिर शास्त्रीय विधाओं में व्यंग्य की कोई विधा न होना और सबसे ऊपर इस देश का नकारात्मक दर्शन, जो इस जीवन को मिथ्या और मरणोपरांत जीवन को सत्य मानता है। जब इस दर्शन में जगत ही मिथ्या है, तब हंसना पाप हुआ और रोना पुण्य।

विसंगतियों का उद्घाटन

प्रथम दो दशकों में व्यंग्य में राजनीति का स्वर प्रधान रहा। कारण है; स्वतंत्रता आंदोलन एक राजनीतिक आंदोलन था। हमारी स्वाधीनता भी राजनीतिक स्वा-

धीनता थी। हमने राजनीति से बड़ी आशाएं लगायी थीं, वे पूरी नहीं हुई और हमने पाया कि राजनीति में ढोंग आ गया है, विशेषकर सत्ताधारी किस कदर 'जन-विरोधी, स्वार्थी, कपटी, पाखंडी और मिथ्याचारी हैं। मैं इस स्थिति को सामाजिक गतिविधि के बदले, सामाजिक विसंगति कहना चाहूंगा। व्यंग्य सामाजिक विसंगतियों का उद्घाटन करता है।

व्यंग्य में कम शब्दों में काम चल सकता है, क्योंकि व्यंग्य में भाषा नहीं। स्थिति महत्त्वपूर्ण होती है।

> **व्यंग्य सामाजिक विसंगतियों का उद्घाटन करता है। वर्तमान से असंतोष बेहतर भविष्य की मानसिकता बनाता है। व्यंग्य कुंठा नहीं है। वह नकारात्मक भी नहीं है। एक गंभीर सकारात्मक लेखन है . . .**

व्यंग्य सकारात्मक लेखन है

वर्त्तमान से असंतोष बेहतर भविष्य की मानसिकता बनाता है। पर यह गलत है कि महत्त्वाकांक्षा के हनन से व्यंग्य लिखा जाता है। व्यंग्य कुंठा नहीं है। वह नकारात्मक भी नही है। एक गंभीर सकारात्मक लेखन है।

व्यंग्यकार सभी गतिविधियों पर चोट करने के कारण प्रतिष्ठित लोगों की नजरों में खटकता रहता है, इसलिए आर्थिक विभीषिकाओं से त्रस्त रहता है। जबकि पाठक वर्ग में वह अत्यंत सम्मानीय व्यक्ति होता है। व्यंग्य से वे तो तिलमिलाएंगे ही, जिनपर चोट होती है। पर खतरा उठाना ही पड़ता है, इसके परिणाम भी भोगना चाहिए। सामान्य पाठक व्यंग्य इसलिए पसंद करता है, कि जिस जीवन को वह देखता है, उसका विश्लेषण उसे व्यंग्य में मिल जाता है।

प्रतिबद्धता अनिवार्य

प्रतिबद्धता हर प्रकार के लेखन की शर्त है। यह समझ और विश्वास जरूरी है, कि व्यापक सामाजिक संघर्ष में आप किस पक्ष के साथ खड़े हैं, आपकी सहानुभूति किसके साथ है। प्रतिबद्धता के बिना गलत अर्थ और निष्कर्ष निकलते हैं।

कुछ लोग साहित्य को राजनीति से अलग रखने की बात करते हैं। साहित्य और राजनीति का अलगाव एक भ्रम है। साहित्य का सरोकार मनुष्य का संपूर्ण जीवन है। राजनीति मनुष्य की नियति की एक निर्णायक शक्ति है। मानव-मूल्यों की प्रतिष्ठा, समता, सामाजिक न्याय, शोषण मुक्ति आदि राजनीतिक आंदोलनों के लक्ष्य होते हैं। यदि लेखक इन आंदोलनों को नकार दे, तब वह मनुष्य के बेहतर जीवन की आकांक्षाओं से ही कट जाएगा। इसलिए साहित्य राजनीति

से अलग नहीं हो सकता।

उल्लेखनीय है, कि समाज-कल्याण राजनीतिक शक्तियां भी करती हैं और गैर राजनीतिक शक्तियां भी। पर समाज कल्याण में आमूल परिवर्तन करके समाज के कल्याण का मार्ग राजनीति ही प्रशस्त करती है। जब साहित्य समाज-कल्याण करनेवाली राजनीति से विमुख होता है, तब वह दायित्त्व से विमुख होता है। कोरा मानवतावाद वायवी चीज है। राजनीति, वैज्ञानिक मानवतावाद के द्वारा समाजक कल्याण की चेष्टा करती है।

जुड़ने का आधार जीवन-मूल्य

साहित्य, राजनीति से किस रूप में जुड़े, यह एक प्रश्न है। नारे और अखबारी टिप्पणी साहित्य नहीं हैं। पर यह भी झूठ है कि साहित्य के अपने कोई आंतरिक मूल्य हैं। साहित्य के मूल्य जीवन-मूल्यों से बनते हैं। ये जीवन-मूल्य क्या हैं, इन्हें साहित्यकार समझे और साहित्य में उतारे। इस तरह साहित्य अपने आप विना ढिंढोरा पीटे कल्याणकारी राजनीति से जुड़ जाता है। यह जरूरी है।

यदि कोई साहित्यकार किसी राजनीतिक विचारधारा को स्वीकार करता है, तब कोई कारण नहीं है कि वह उस राजनीति का समर्थक न हो। समाजवाद का समर्थक लेखक क्या पूंजीवाद का प्रचार करेगा? किसी राजनीतिक दृष्टिकोण को समर्थन देना, 'पूर्वाग्रह' नहीं, विश्वास है। साहित्यिक और राजनीतिक दृष्टिकोण-जैसी अलग-अलग कोई चीजें नहीं हैं। दृष्टिकोण एक ही होता है। अगर चिली में निर्वाचित वामपंथी सरकार को अमरीकी साम्राज्यवाद के षड्यंत्र से गिरा दिया जाता है, तब इसका विशुद्ध साहित्यिक दृष्टिकोण क्या होगा? क्या यह होगा कि हाय! राष्ट्रपति अयेंदे को मार डाला गया, हाय! महान कवि पाब्लो नेरूदा मारा गया। यह 'हाय-हाय' सही साहित्यिक दृष्टिकोण नहीं है। इसमें जो राजनीतिक दृष्टिकोण है, वही साहित्यिक दृष्टिकोण है।

यदि कोई लेखक अपने विश्वास के अनुसार नारे लगाता है, तो उसे यह हक है। वह साहित्य है या नहीं, यह इस बात से तय होगा, कि उसकी इन रचनाओं में वास्तविक जीवन और जीवन-मूल्य कितनी सचाई मे अभिव्यक्त हुए हैं!

मैं व्यंग्य के भविष्य के प्रति पूरी तरह आश्वस्त हूं।

—१५२२, नेपियर टाउन

पतंगों का मौसम जोरों पर था। जगह-जगह दुकानें थीं। एक दुकान पर बोर्ड लगा था, "हमारे यहां हर प्रकार की पतंगें मिलती हैं।"

एक सिरफिरा साहित्य-प्रेमी दुकान के भीतर पहुंचा और 'सीरियस' होकर बोला, "'कटी-पतंग' देना, गुरु।"

उड़िया कहानी

असलियत

● जगन्नाथप्रसाद दास

पद्मधर ने हाथ उठाकर फिर एक वार घड़ी देखी। उसने जिसे आधे घंटे की वधि समझा था, वास्तव में वह सिर्फ ात मिनट थे। मानो समय उससे विश्वास-ात करके खूब धीमी गति से चल रहा ा। उसने अपने वकील की ओर देखा, न्तु वह भी इस बीच कहीं और चला या था। उसके सामने अदालत की कार्य-ही पहले की तरह अविराम चल रही ी, एवं उस गवाह की गवाही अभी भी त्म नहीं हुई थी।

यह पद्मधर की दूसरी तारीख थी। कदमे का नतीजा पहले से ही मालूम ा। उसके वकील ने उसे बता दिया था क उसे वह मकान छोड़ना ही पड़ेगा; लेकिन वह मुकदमा चलाकर मकान छोड़ने की अवधि दो-तीन साल तक टाल सकता है। पद्मधर यह भी जानता था कि दो-तीन साल से पहले ही उसका तबादला वहां से कहीं और हो जाएगा और फिर उसे उस मकान की जरूरत भी नहीं रह जाएगी। यह सब जानते हुए भी पद्मधर को इस न्याय-विचार के विभिन्न पर्यायों से होकर गुजरना पड़ रहा था।

मुकदमे को किस तरह विलंबित किया जा सकता है, इस बारे में उसका वकील निपुण था। वकील का कहना था कि पद्मधर की भलाई इसी में है कि

मुकदमे की तारीखें अधिक-से-अधिक हों। इसीलिए वकील बीच-बीच में आकर पद्मधर से कहा करता था, 'आज हमें ऐफिडेविट बनवाना पड़ेगा' अथवा 'आज तबियत खराब होने के बहाने नयी तारीख के लिए दरखास्त देनी होगी।' इस अस्वस्थता को सिद्ध करने के लिए पद्मधर को कॉलेज से भी छुट्टी लेनी पड़ती।

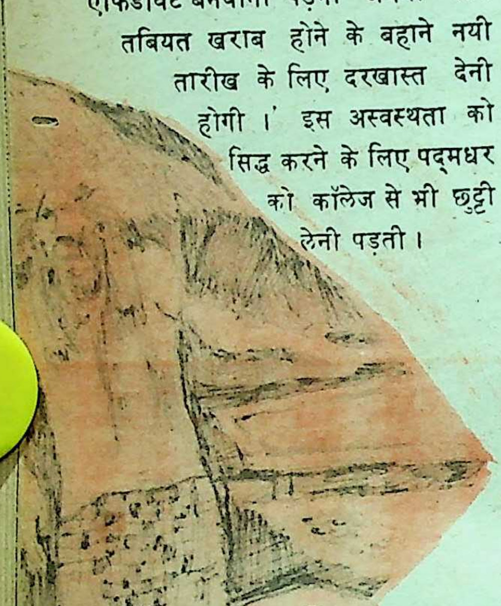

मुकदमा दायर होने के छह महीने तक कोई तारीख नहीं मिली थी। पद्मधर जानता था कि यह उसके वकील की पटुता थी। वकील बीच-बीच में आकर विभिन्न तरह के कागज-पत्र पर उसके दस्तखत ले जाया करता था। जब तक पद्मधर को कचहरी नहीं आना पड़ा, वह बहुत खुश था। एक दिन वह समय भी आ पहुंचा, जब उसका वकील मुकदमे की तारीख को और आगे नहीं बढ़ा सका। उस दिन
शाम को वकील का आदमी पद्मधर
सूचना दे गया कि कल उन्हें कचह
चलना है।

यह पद्मधर के कचहरी जाने
प्रथम अनुभव था। सुबह खा-पी
कॉलेज से छुट्टी लेकर वह वकील के
गया और वहां से वे लोग कचहरी ग
कचहरी पहुंचकर वकील ने फिर कई ता
के कागजातों पर उसके दस्तखत लि
जिस जज के पास उसका मुकदमा
उसकी अदालत ऊपर की मंजिल पर
सीढ़ियां चढ़ने के बाद उसे अदालत
बैठाकर वकील किसी दूसरे काम से
गया। जज नहीं आये थे, किंतु पद्म
ने देखा कि अदालत के कार्य में
व्यतिक्रम नहीं था। पद्मधर को
एक मेले की तरह लग रहा था,
न्याय-याचना के लिए आये हुए
अंगूठे के निशान, कोर्ट-फी, स्टांप, का
तारीख, वकालतनामा और समन-
सामान्य चीजें खरीदकर चले जाते

पहली तारीख पर पद्मधर को
कुछ नया-नया-सा लग रहा था
कचहरी के कार्यकलाप उसे सि
नहीं लग रहे थे। जजसाहब वहां
थे। यद्यपि किसी ने यह बात ठीक
से उन्हें नहीं बतलायी थी, लोग
आपस में बतिया रहे थे कि जज
चुके हैं और अपने चेंबर में हैं।
सुनकर पद्मधर को लगा कि हा
खून, डाका अथवा बलात्कार-जैसे

गंभीर मुकदमे के कागजात लेकर अंदर व्यस्त होंगे, ऐसे जज की अदालत में अपने भाड़े के मकान के बाबत अति घटिया मुकदमे को लेकर वह मन-ही-मन शर्मिंदा हो रहा था।

ठीक उसी समय हांफता हुआ उसका वकील आ पहुंचा। उसके होंठों से पान का पीक बहा जा रहा था और पसीने से भीगकर उसके काले कोट पर धब्बे दिख रहे थे। उसका मुकदमा शुरू होनेवाला है सोचकर पद्मधर तैयार होकर बैठ गया। लेकिन वकील ने उसे सूचना दी कि आज जज साहब नहीं आयेंगे। इतना कहकर वकील लिपिक के पास गया और अगली तारीख तय करा लाया। उसने पद्मधर के कान में अगली तारीख फुसफुसायी और पुनः व्यस्त-सा वहां से निकल पड़ा।

अदालत से निकलते समय पद्मधर ने जज साहब के तथाकथित चेंबर में झांककर देखा। वह कमरा संकीर्ण, अंधकारपूर्ण और अनाप-शनाप वस्तुओं से भरा हुआ था। इस रहस्यमय कमरे को देखने के बाद जज साहब की क्षमता के बारे में पद्मधर को कुछ संदेह हुआ। लेकिन उनके बारे में अपने वकील के मुंह से सुने सर्वोत्तम विशेषज्ञों का स्मरण कर पद्मधर ने अपने मन के सारे संदेहों को दूर कर, अनुमान लगाया कि उस छोटे-से कमरे के दूसरी ओर एक सुंदर और मनोरम प्रकोष्ठ है, जो उनका खास कमरा होगा।

अगली तारीख को पद्मधर की बस छूट गयी और वह कचहरी देर से पहुंचा। वह संकोच के साथ अपने वकील को ढूंढ़ने लगा, क्योंकि मुकदमे की हार-जीत के अलावा उसके देर से आने के कारण भी वकील उससे नाराज हो सकता है, इस बात को लेकर वह काफी चिंतित था। इत्तफाक से वकील भी तब तक नहीं आया था। पद्मधर आश्वस्त हुआ और अदालत की पिछली बेंच पर बैठकर, उस समय चल रहे मुकदमे के प्रवाह में अपने को शामिल करने की कोशिश करने लगा। सौभाग्य से सीढ़ियों के नीचे उसका वकील खड़ा था। उसने पद्मधर को बताया कि उसका मुकदमा देर से शुरू होगा।

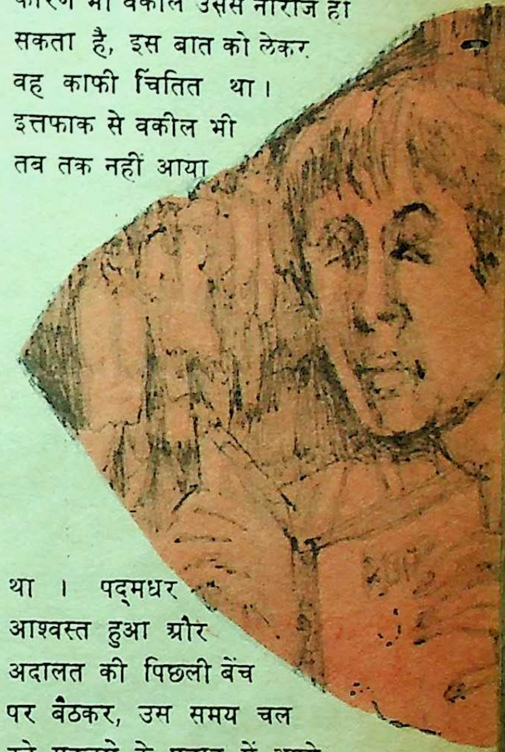

समय काटने के लिए पद्मधर कचहरी के सामने लगी चलती-फिरती दूकानों के आस-पास चहलकदमी करने लगा।

हिन्दी का सर्वश्रेष्ठ दैनिक

हिन्दुस्तान

एक सम्पूर्ण पत्र

बाकी सभी अखबारों से अलग है

१५ लाख से अधिक पाठक इसे पढ़ते हैं

क्योंकि

- **यह महत्वपूर्ण खबरों का आईना है**
- **हिंदी का एकमात्र अखबार है जो अपनी धरती से जुड़ा है**
- **हर आयु, वर्ग और स्तर के पाठकों की जरूरत पूरी करता है, उन्हें कुछ सोचने को मजबूर करता है**

●

हर बुधवार तथा रविवार को विशेष परिशिष्ट
मनोरंजक एवं उपयोगी सामग्री का खजाना जो अन्यत्र दुर्लभ है।

आप अपने क्षेत्र के समाचार पढ़ना चाहते हैं
और हम वही देते हैं।

हिन्दुस्तान टाइम्स प्रकाशन

यहां पर जो चीजें बिक रही थीं, वे सब अजीब तरह की थीं, जो कि अन्य साधारण जगहों पर नहीं बिकती थीं। उदाहरण के लिए, एक दूकान में शिलाजीत, मृतसंजीवनी, कायाकल्प की गोलियां। उसे इन चीजों की जरूरत न होने की वजह से वह पास की किताबों की दुकान में गया, जहां अनेक अश्लील और कामोद्दीपक किताबों के ढेर के नीचे बहुत-सी पुरानी किताबें इकट्ठी थीं। काफी तलाशने के बाद स्वयं की परिस्थिति से मेल खा रहे शीर्षक की एक किताब उसने खरीदी, जिसका नाम था--'द ट्रायल' लेखक कोई फ्रांज काफ्का थे।

अदालत की पिछली बेंच पर दर्शकों के बीच बैठकर पद्मधर उस किताब को पढ़ने का प्रयास करने लगा। किंतु सफल नहीं हो पाया। पहले से चल रहे मुकदमे का प्रवाह अब चित्ताकर्षक नहीं था, एवं अधिकांश दर्शक जा चुके थे। कोई वकील, अपने भोथरे बाण निस्पृह रूप से चला रहा था, जिन्हें गवाह अनायास ही टालता चला जा रहा था।

समय काटने के लिए इस बार पद्मधर ने अपनी कल्पना का सहारा लिया। जज साहब के टकले सिर पर उसने एक विचारक का विग लगा दिया और उनके ऊपर चल रहे पंखे को निकालकर उसकी जगह हाथ से खींचनेवाला पंखा लगा दिया। अदालत के चपरासी को बरकंदाज का पोशाक पहना दिया। डाकिये की खाकी वर्दी उतारकर उसके हाथ में एक झुनझुनेदार डंडा पकड़ाकर पुराने जमाने का रनर बना दिया। वकीलों के चेहरे पर लाल रंग लगाकर उन्हें गोरा साहेब बना दिया एवं अदालत के चारों तरफ घुड़सवार सैनिकों को तैनात कर दिया। अब मुकदमा सिपाही-विद्रोह के समय का था, एवं तांत्या टोपे की किसी चिट्ठी पर सवाल-जवाब हो रहे थे।

इस पर भी पद्मधर को चैन नहीं आया, क्यों कि 'सिपाही-विद्रोह' के बारे में उसका ज्ञान काफी सीमित था। वह घटना को और भी समसामयिक बनाने की कोशिश करने लगा। इसीलिए उसने विचारक के सिर से नकली बाल निकाल लिये और बिजली के पंखे का स्विच ऑन कर दिया। अदालत के लोगों को उसने उनकी पोशाक लौटा दी। अब वकील डाकिये से सवाल कर रहा था, 'नक्सलबाड़ी से आया वह पत्र तुमने किसे दिया था ?' मानो विपक्ष का वकील इसी सवाल की प्रतीक्षा में था। यकायक खड़े होकर उसने अपना भाषण शुरू कर दिया, 'माननीय विचारपति, इत्यादि-इत्यादि। उसी वक्त अदालत में बम फूटने की आवाज हुई। शोरगुल मचाते हुए बहुत से लोगों ने अदालत को घेर लिया। हाथों में पिस्तौल लिये हुए कुछ लोग जज के चेंबर से बाहर निकले और चिल्लाकर बोले, 'इस कानून और विचार-प्रणाली में हम विश्वास नहीं करते।'

पद्मधर घटनाओं को और भी साफ-साफ देखने की कोशिश करने लगा। किंतु उसकी थकान, प्रतीक्षा के कारण हो रही बोरियत, ऊपर पंखे का शोर, दोपहर की गरमी, सभी ने मिलकर उसकी आंखें बंद कर दीं। वह कमरे की बेंच से टिककर बैठ गया।

किसी ने आकर पद्मधर को हिलाया और उसकी नींद खुल गयी। नींद खुलने पर उसने देखा कि हाकिम चले गये हैं और अदालत प्रायः जनशून्य है। काफी तलाशने के बाद भी वह अपने वकील को नहीं ढूंढ़ पाया और अंत में लिपिक से अपनी तीसरी तारीख ले ली। सीढ़ियों से उतरते वक्त अचानक उसे याद आया कि उसकी पत्नी ने नींद की दवा लाने को कहा था। अन्य सभी दूकानें बंद हो चुकी थीं, लेकिन किताबों की दूकान अभी तक खुली थी। पद्मधर ने सुबह जो किताब खरीदी थी, उसे बेच डाला। उसने हिसाब करके देखा, कि इस क्रय-विक्रय में उसका ज्यादा नुकसान नहीं हुआ था।

उसके पास समय काफी होने की वजह से वह बस न लेकर पैदल ही घर की ओर चल पड़ा। उसने उस रोज भी कॉलेज से छुट्टी ली थी। इस तरह कालेज से एक दिन की छुट्टी लेकर आने पर उसे बुरा नहीं लग रहा था। कालेज की प्रत्येक क्लास उसके लिए एक बोरियत की अनुभूति थी। उसे ऐसे विषय पढ़ाने को दिये जाते थे, जिसमें छात्रों की रुचि बिलकुल नहीं थी। उसकी क्लास लेते समय छ पूर्णतः अन्यमनस्क एवं आपस में बात करने में मशगूल रहते थे। लेकिन पद धर यथासंभव ऊंचे गले से अपने शिक्षण कार्य संपादित करता रहता। ऐसे स में उसे लगता मानो उसके और अ छात्रों के बीच कांच का एक पर्दा पड़ा कभी-कभी अपनी इच्छानुसार वह कांच को और भी स्थूल एवं अस्वच्छ देता था, जिससे कि विद्यार्थियों के और उनके शोरगुल से भी दूर हो ज था।

कांच का एक कोना साफ क पद्मधर ने उस बेंच की ओर देखा जिस लड़कियां बैठी थीं। उसने अपने चे की अभिव्यक्ति और भी कोमल स्वर को और भी मुलायम बनाने कोशिश की। किंतु लड़कियां उस स एक फिल्म-पत्रिका के पृष्ठ को लेकर वि गंभीर आलोचना में व्यस्त थीं। अ असफलता का अहसास कर कांच में छेद करके, उसमें एक स्थायी झरो लगाने से पद्मधर निवृत हो गया, फिर से अपने चेहरे और आवाज को स्वाभाविक कर लिया।

उसके कॉलेज-जीवन की एक आनंददायक अनुभूति थी, वसुधा। हाल वसुधा से उसका परिचय खूब साम और साधारण-सा था, पर पद्मधर घटना को अपने जीवन की एक महत्व घटना मानता था। घटना इस प्र

थी; कई साल पहले ट्यूटोरियल क्लास समाप्त करने के बाद पद्मधर ने देखा कि वसुधा क्लास से बाहर न जाकर वहीं बैठी है। वसुधा अनन्य सुंदरी नहीं थी और पद्मधर ने उसे पहले कभी गौर से देखा भी नहीं था, फिर भी खाली क्लास में एकाकी बैठी लड़की उसे असामान्य और रहस्यमयी लगी। यह उसकी पहली अनुभूति होने के कारण बातचीत की शुरुआत कैसे की जाए, वह तय नहीं कर पा रहा था। उसकी हिचक को तोड़ती हुई उस लड़की ने पद्मधर की ओर एक पुस्तक बढ़ा दी और बोली, "मुझे यह पैराग्राफ जरा समझा देंगे?"

पद्मधर के सिर के भीतर सारा कुछ अस्त-व्यस्त हो गया। उसका गला सूख गया, पैर सुन्न हो गये और हाथ कांपने लगे। पैराग्राफ के सभी अक्षर जीवित होकर पृष्ठ पर मंडराने लगे। चेहरे पर अचानक जम आयी पसीने की बूंदों को हथेली से पोंछते हुए पद्मधर ने जो कुछ भी कहा, उन बातों का कोई अर्थ नहीं था। पुस्तक के उस कठिन पैराग्राफ की व्याख्या उसे और भी कठिन लगने लगी। लड़की का चेहरा कुछ शर्म और कुछ खुशी से खिल-सा उठा। पद्मधर के हाथ से अपनी पुस्तक लेकर वह क्लास से चली गयी। बस, इतना ही!

इस घटना को पद्मधर ने कई दिनों तक मन-ही-मन दुहराया। अब वह उस लड़की का नाम और पता जानता था, एवं यह जानकारी उसे सोचने में बहुत कुछ सहायक हो रही थी। घटना को फ्लैशबैक में देखते समय पद्मधर उसे बारंबार अच्छी तरह संपादित कर लेता था, एवं उस संवाद-विहीन चलचित्र को ढेर-सा संवाद देकर सवाक् कर देता था। उदाहरण स्वरूप, वह वसुधा के क्लास में घुसने को एक नाटकीय प्रवेश का रूप देता था। वसुधा अधिक सुंदर लगती थी, एवं उसकी रूपसज्जा किसी फिल्म-अभिनेत्री से कम नहीं थी। क्लास में घुसते ही उसने पद्मधर को नमस्कार किया और ठीक उसके सामने आकर बैठ गयी। कहने की आवश्यकता नहीं कि चित्र में पद्मधर ने अपनी सबसे सुंदर पोशाक पहन रखी थी एवं उसके मुखमंडल में एक अजीब-सी रौनक थी। कभी-

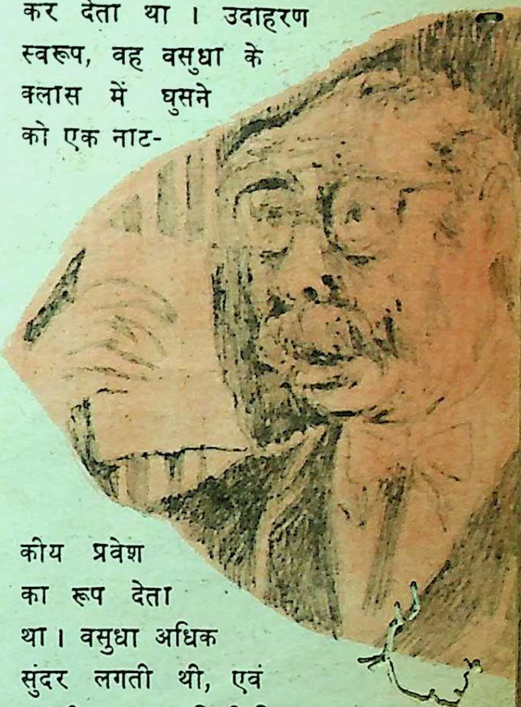

कभी पद्मधर की इच्छा होती, तो वह अपने क्लास रूम को बिना किसी दुविधा के एक मनोरम पार्क में बदल देता था।

क्रमशः पद्मधर अधिक साहसी होने लगा और वसुधा को, जिसे अब वह सिर्फ सुधा कहने लगा था, सिनेमा ले जाने में भी कोई संकोच नहीं किया। सिनेमा हॉल के अंधेरे में अब वह वसुधा के हाथ पर हाथ रखता, एवं परदे पर अभिनय करनेवाले नायक-नायिका को स्वयं और वसुधा के रूप में कल्पना करके खूब आनंदित होता था। वसुधा के साथ उसकी घनिष्ठता क्रमशः बढ़ने लगी। अंत में उसने वसुधा को लेकर किसी हिल स्टेशन पर जाना निश्चित किया। उस वक्त वह अपने ट्यूटोरियल क्लास में अकेले बैठा था, एवं विभिन्न जगहों की सुंदरता का तुलनात्मक चिंतन करते समय तस्वीरों में देखे पेरिस शहर की बात भी भूला नहीं था।

इस समय रास्ते पर चलते हुए उसने वसुधा को लेकर भ्रमण पर जाने की बात याद करने की कोशिश की। किंतु काफी दिनों पहले ट्यूटोरियल क्लास में जो बात खूब सहज लगती थी, कचहरी में सारा दिन काटने के बाद, थककर घर लौटते वक्त, शहर की संकीर्ण गली में वह बात आसानी से बढ़ नहीं पा रही थी। बांयी तरफ दवाई की दुकान की ओर देखना अस्वीकार करते हुए, दूर आसमान पर जल रही निऑन के प्रकाश में उसने किसी फिल्म के नायक-नायिका के नाम की ओर देखा। उसने खीजकर उस विज्ञापन के
दो नामों को वहां से हटा दिया और
जगह पद्मधर-वसुधा लिख दिया।
चलते कुछ संतोष के साथ उसने
के उस विज्ञापन को देखा और इस
उसमें से 'घर' एवं 'व' निकाल दि

अब उसने अपने घर का रास्ता
कर दूसरी ओर चलना प्रारंभ कर
था, जो वसुधा के घर की ओर
था। उसने अपने आपको यह सो
दिलासा दिया कि वास्तव में वह
का नया मकान ढूंढ़ने निकला था।
सज्जन ने उसे यह उपदेश दिया
शाम को जिस मकान में बत्ती न जले
मकान के किराये पर मिलने की सं
अधिक होती है। हांलकि वसुधा के
जाकर उससे मिलने का साहस वह
भी नहीं जुटा पाया था। किंतु
वसुधा के घर में ही अंधेरा था एवं
मकान के साथ किराये के मका
उपलब्धता का संबंध उसे अतार्कि
और उसने उस सज्जन का उपदे
पल त्याग दिया।

बस-स्टैंड पर आकर घर के
बस पकड़ने से पहले उसे पत्नी की
की दवा की बात याद आयी। करीब
दवा की दूकान नहीं थी। इसलिए
पान की दूकान से सिर-दर्द की दवा
और उसे खोलकर सादे कागज में
पुड़िया बनाकर जेब में डाल
पद्मधर काफी थक चुका था एवं
साथ एक दिन और बीत जाने की

से आश्वस्त भी हो रहा था । घर पहुंचने के लिए ग्रौर आधा घंटा था; कल सुबह की क्लास के लिए पंद्रह घंटा, तीसरी तारीख के लिए सत्ताइस दिन एवं किराये का मकान छोड़ने के लिए कम-से-कम दो साल । दूसरी तरह कहें तो वह वसुधा का घर बस में सात मिनट पीछे छोड़ आया था; सिनेमा का प्रथम शो छोड़ आया था घंटा पीछे ग्रौर 'सिपाही-विद्रोह' सौ स पीछे ।

बाहर की ठंड से आकर वह अ किराये के मकान में घुसा । यंत्रचालित- खा-पी लेने के बाद उसने बस स्टैंड से खरी हुआ अखबार पढ़ा ग्रौर सोने चला गय पास ही खाट पर उसकी पत्नी नींद की द वास्तव में जो नींद की दवा नहीं थी, खा गहरी नींद में सो चुकी थी । खाट पर प पड़े पद्मधर बीते हुए दिन की बातें सोच लगा ग्रौर सोचते-सोचते वह फिर व पुराना रास्ता पकड़कर वसुधा के घर पास जा पहुंचा । इस मरतबा उस मकान बत्ती जल रही थी एवं घर पर वसुधा अलावा कोई नहीं था । वसुधा उसके करी आकर बैठी एवं पद्मधर ने आनंद ग्रौ तृप्ति से अपनी आंखें मूंद लीं । पर उस सम उसने अपनी पत्नी को ही अपने आगो में पाया । उस अनिच्छाकृत अनुभव छुटकारा पाने के लिए उसने अपनी आं खोल लीं ग्रौर रोशनी बुझाकर पास ह बैठी वसुधा को अपने आलिंगन में जक लिया ।

पद्मधर ने जब पुनः आंखें खोलीं तब देखा, उसका हाथ गहरी नींद में सोय अपनी पत्नी पर था । इस बार पद्मधर अति-सतर्कता के साथ फिर से आंख मूंदकर वसुधा की ग्रोर हाथ बढ़ाने की कोशिश की ।

—२२६, वेस्ट किदवई नगर, नयी दिल्ली

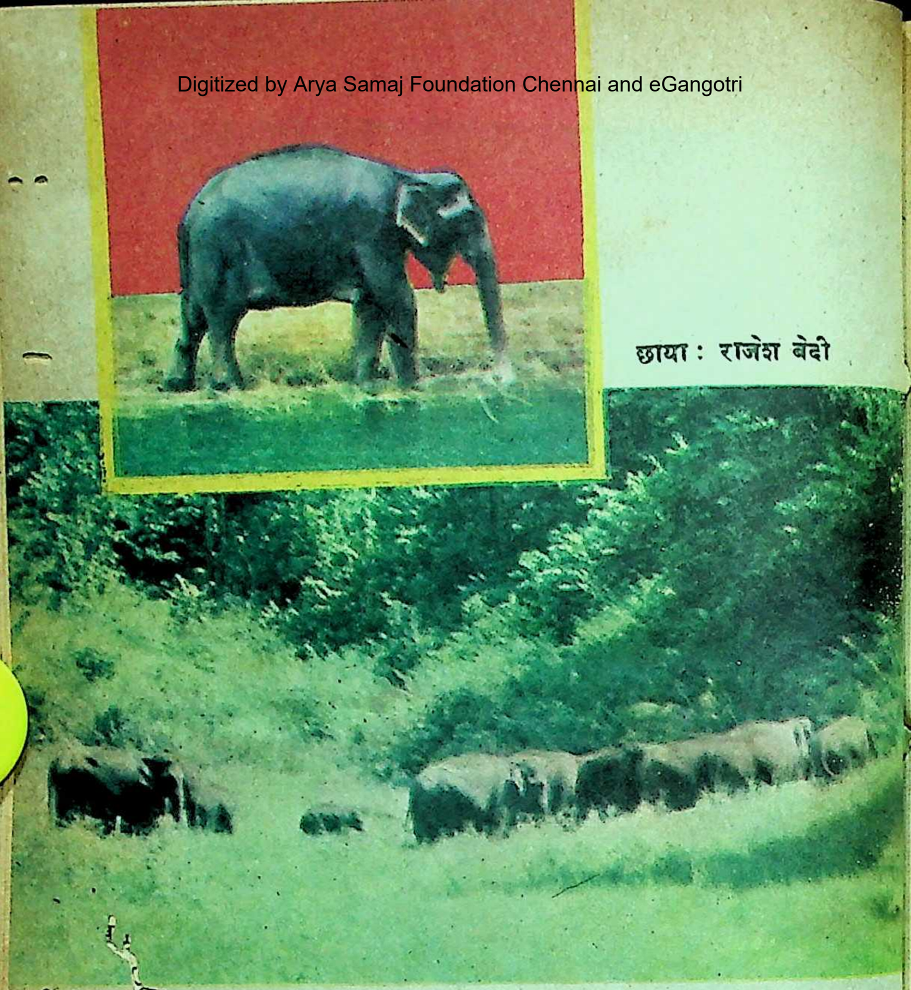

छाया : राजेश बेदी

जल-प्लावित घाटियां, जिनमें पत्थरों की मूर्त्तियों-से खड़े हैं पेड़ों के तने, उनके ठूंठ। लगता है, किसी कलाकार द्वारा स्थापित मूर्त्तियों के सैकड़ों अवशेष ... मौन निमंत्रण दे रहे हैं।

प्रभात वेला में जब ऊषा की लालिमा साथ के पहाड़ों पर फैलने लगती है और प्रातःकालीन धुंध पेरियार को अपने अंदर समेट लेती है, तब यह रहस्यों के धुंधलके में छिपा हुआ अतीत का सुंदर, स्वप्निल प्रदेश बन जाता है। शांत पानी की सतह पर किश्ती में सफर करते हुए प्रकृति-प्रेमी को उस जमाने की अजीब-सी अनुभूति होती है, जब धरती पर, इनसान का नहीं, वन्य-प्राणियों का राज्य था।

केरल के पेरियार अभयवन का मुख्य आकर्षण यही मनोरम झील है। समुद्रतल से ९१४ मीटर की ऊंचाई प छब्बीस वर्ग किलोमीटर में फैली मनु द्वारा निर्मित यह झील १८९५ में अस्ति में आयी थी, जब पड़ोस के राज्य तमिलना (तब मद्रास) में सिंचाई की सुवि

अभयवन में तैरते हुए हाथी

• राकेश बेदी

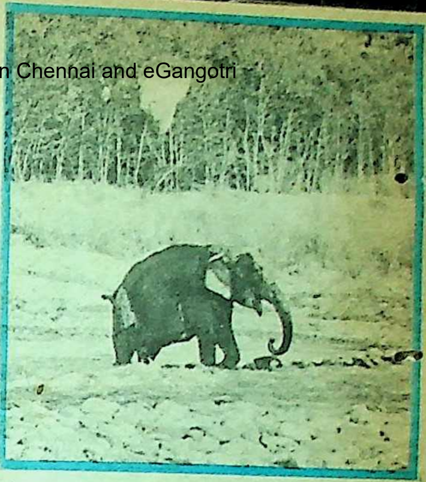

वास्तव में, पेरियार--जैसे कम ही स्थान होंगे जहां गहरे पानी में बेधड़क तैरते हुए हाथियों को आसानी से देखा जा सकता है। मोटर बोट में बैठे दर्शकों की टोली अचरज से देखती है कि भारी-भरकम देहवाले जानवर देखते-ही-देखते किस खूबी से झील के अंदर गायब हो जाते हैं और पानी की सतह को छेदती हुई सूंडें बीच-बीच में ऊपर निकल आती हैं।

बढ़ाने के उद्देश्य से पेरियार नदी पर बांध बनाया गया था। पहाड़ों में बनायी गयी एक सुरंग में से बहता हुआ पानी सिंचाई के क्षेत्रों में ले जाया गया है।

पेरियार ने अपने प्राकृतिक सौंदर्य को अब तक अक्षुण्ण रखा है। यहां का शांत और सात्त्विक वातावरण टूरिस्ट को मोह लेता है। मोटर बोट टूरिस्टों को सुरम्य उपनदिकाओं और टापुओं के पास ले जाता है, जहां उन्हें जंगली हाथी, बलिष्ठ गौर तथा गर्वीले सांभर दिखायी दे जाते हैं। काकड़, जंगली सूअर और जंगली कुत्ते देखने की संभावना भी रहती है। मुख्य भूमि से झील के टापुओं पर तैरकर जाते हुए हाथियों के झुंड देखने के अवसर भी होते हैं। जंगली सूअरों के टोले में तो तीस से भी अधिक सूअर एक साथ विचरते फिरते हैं। पेरियार के अफसरों के अनुमान के अनुसार १९७४ में अभयवन में पंद्रह शेर थे। विश्वास किया जाता है कि १९८१ के अंत तक इनकी संख्या पैंतीस हो गयी थी। लेकिन, टूरिस्टों को शेर कम ही दिखायी देते हैं। अभयवन में जानवरों को देखने के लिए मोटर बोट पर सफर करना आरामदेह और सुखदायक तो है ही पूर्णतया सुरक्षित भी है। वन-विभाग पांच मोटर-बोटों का संचालन करता है।

एक बोट में पंद्रह से चालीस तक टूरिस्ट बैठ सकते हैं।

हाथियों की स्वच्छंद जलक्रीड़ा

दिसंबर १९८० की गणना के अनुसार पेरियार में सात सौ के आसपास हाथी थे। झील में इनकी स्वच्छंद जलक्रीडा को देख कर मुझे कौर्बेट नेशनल पार्क के हाथियों का स्मरण हो आता है। यहां के हाथी तो गहरे पानी में खूब तैरते हैं। कौर्बेट पार्क के हाथी रामगंगा झील के गहरे पानी के अंदर घुसने में संकोच करते हैं।

पेरियार में झील के किनारे हाथियों के परिवारों को देखना सामान्य दृश्य है। वहां वे पानी पीने, नहाने, तैरने और खेलने आते हैं। मोटर बोट में सवार होकर उनकी दिनचर्या के विविध पहलुओं को काफी नजदीक से देखने के बढ़िया अवसर यहां मिल जाते हैं। कभी-कभी इक्कड़ हाथी भी विचरता हुआ दिखायी दे जाता है। वास्तव में, पेरियार-जैसे कम ही स्थान होंगे जहां गहरे पानी में बेधड़क तैरते हुए हाथियों को आसानी से देखा जा सकता है। मोटर बोट में बैठे दर्शकों की टोली अचरज से देखती है कि भारी-भरकम देहवाले जानवर देखते-ही-देखते किस खूबी से झील के अंदर गायब हो जाते हैं और पानी की सतह को छेदती हुई सूंडें बीच-बीच में ऊपर निकल आती हैं।

दुर्लभ गोदुमा बंदर

गोदुमा बंदर एक संकटापन्न बंदर है जो पेरियार में अपना स्थायी घर बनाने लगा है। मध्यम आकार के सुगठित शरीरवाले इस बंदर के सिर और देह की लंबाई पचास से साठ सेंटीमीटर होती है। यह नीलगिरी, अनैमलई, कार्डामोम हिल्स (इलायची के पौदों से आवृत पर्वतों) और पेरियार अभयवन में पाया जाता है। उत्तर की ओर १९५५ में कद्रा और कुंभरवाड़ा के बीच में आंशी घाट में यह देखा गया है। यह ६१० से १,०७० मीटर के बीच में सदाहरी ऊष्ण मेखला के घने दूर-दराज जंगलों में रहता है। बीस मीटर या इससे भी अधिक ऊंचे वृक्षों पर रहना पसंद करता है। फल, कलियां और पत्ते खाता है।

पिछले पचास-साठ साल से गोदुमे बंदर की संख्या धीरे-धीरे कम हो रही है। १९६८ में सुगियामा ने इसकी संख्या एक हजार से कम आंकी थी। १९७८ में कुरुप ने पश्चिमी घाटों में आठ सौ का अनुमान लगाया था जो पचपन टुकड़ियों में रहते थे। इस बंदर की कमी होने के कारण ये हैं: खेती के लिए, कॉफी और चाय बागानों के लिए जंगलों को काट देने से इस के आवास में कमी हो गयी है। खाल और गोश्त के लिए इसका शिकार किया जाता है। स्थानीय लोगों का विश्वास है कि इसका गोश्त खाने मे पुंसत्वशक्ति बढ़ती है।

आदमी-जैसी आवाज

एक तो इसका रंग काला होता है, दूसरे यह शर्मीला तथा एकांतप्रिय है। दूसरे बंदरों के समान यह भी झुंडों

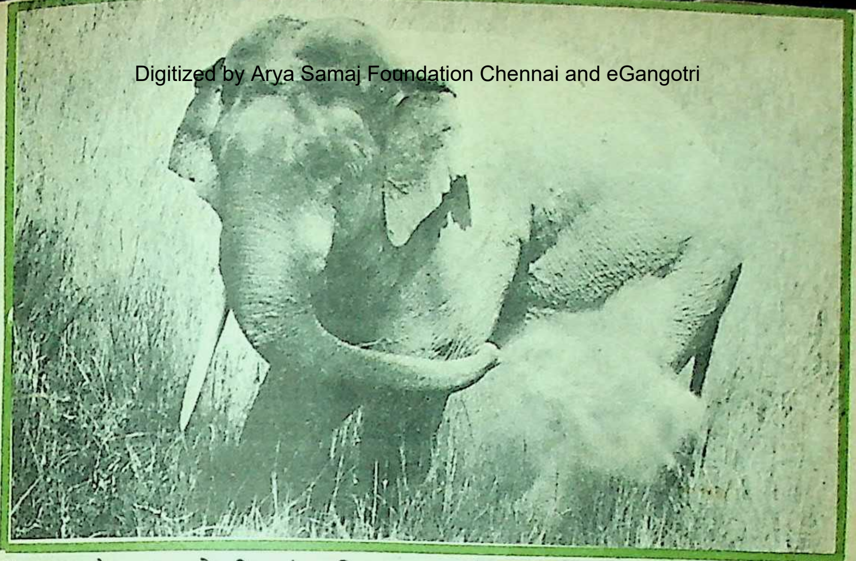

में रहता है। बारह से बीस बंदर मिलकर एक टोली बना लेते हैं। नर बंदर की आवाज आदमी की आवाज से मिलती-जुलती है। जंगल में भटकता हुआ कोई आदमी अपने बिछुड़े हुए संगियों से संपर्क करने के लिए ऊंची आवाज में चिल्लाता है—'कोई है?'

वनेचर बताते हैं कि नर गोदुमा ठीक यही आवाज करता है। इस के बाद वह कबूतर के कूजने सरीखी ऊंची आवाज में कू . . ऊ . . बोलता है।

बंदरों की दूसरी जातियों से इसमें यह अंतर है कि (१) इसकी कनपटियों और गालों पर गाढ़े भूरे रंग के या भूरे-से सफेद रंग के घने बाल उगे होते हैं। (२) इसकी खाल पर चमकीले काले बाल उगे होते हैं और (३) इसकी पूंछ के सिरे पर बालों का गुच्छा होता है। गाय और सिंह की पूंछ के सिरे पर भी इसी प्रकार के बाल उगे होते हैं। इस साम्यता के कारण इसे हिंदी में गोदुमा बंदर, संस्कृत में गोलांगूल कपि या सिंह-पुच्छ वानर और अंग्रेजी में लौयन-टेल्ड मैकाक्यू कहते हैं।

नीलगिरी लंगूर

पेरियार अभयवन में पहाड़ों की समुद्र-तल से ऊंचाई १,८३० मीटर तक चली गयी है। पहाड़ों पर सफर करते समय काले रंग के नीलगिरी लंगूर दिखायी दे जाते हैं। इनका सिर पीले-से भूरे रंग का होता है। सिर और देह की लंबाई अस्सी सेंटीमीटर और पूंछ पिचहत्तर से नब्बे सेंटीमीटर लंबी होती है।

इसकी चमकीले रंग की मुलायम खाल की फैशन के बाजारों में बहुत मांग है। इसका मांस खाया जाता है। विश्वास किया जाता है कि इसका खून, कुछ भीतरी अवयव और मांस का सेवन करने से अनेक प्रकार के रोग ठीक हो जाते हैं। भारतीय बंदरों में सब से अधिक इसी का शिकार किया जाता रहा है। इसलिए यह मनुष्य

माथे को सजाए, चेहरे की शोभा बढ़ाए

आइटेक्स
डीलक्स कुंकुम
matt finish

आपकी खूबसूरती में चार चाँद लगाए . . .
चेहरे की सुन्दरता पर फूलों सा निखार लाए
. . . आइटेक्स डीलक्स कुंकुम १४ रंगों में
आपके मन भाए.
वैज्ञानिक तौर से बने इस कुंकुम का आपकी
त्वचा पर कोई बुरा असर नहीं होता.

आइटेक्स
39 वर्षों से बेहतरीन उत्पादनों
के लिए भरोसेमंद नाम

अरविंद लैबोरेटरीज़, मद्रास-[illegible]

Imageads M-AL-1427 Hin

से बहुत शंकित रहता है, फोटो खींचने के लिए इसके नजदीक जाना कठिन होता है। सधाये हुए कुत्तों की मदद से इस का शिकार किया जाता है। शोर मचाते हुए और पत्थरों की बौछार करते हुए शिकारी इसे खुले में खदेड़ लाते हैं जहां कुत्ते इस पर लपक पड़ते हैं।

नीलगिरी लंगूर दक्षिण भारत की पर्वत-राजियों में पश्चिमी घाटों से कन्याकुमारी तक नीलगिरि, अनैमलई, पल्नी और संलग्न राजियों में ९१५ मीटर से ऊपर पाया जाता है। यह घने सदाहरे जंगलों के अलावा अर्द्ध-सदाहरे वनों में, आर्द्र पर्णपाती वनों और समशीतोष्ण सदाहरे वनों में भी रहता है। पिछले सत्तर सालों में यह अपने प्राकृत निवास की आरंभिक सीमा में से अनेक क्षेत्रों में खत्म हो गया है। तमिलनाडु के नीलगिरि जिले में १९७० में २१२ नीलगिरि लंगूर तेतीस टुकड़ियों में देखे गये थे।

ये जंगल के फल और पत्ते खाते हैं। कभी-कभी बगीचों पर हमला कर देते हैं। इलायची के पौधों को तोड़कर उनके अंदर विद्यमान गूदे को खा जाते हैं।

नीलगिरी लंगूर पांच से सोलह की टोलियों में विचरते हैं। एक टोली के रहने का इलाका ०.६५ से २.६ वर्ग किलोमीटर तक हो सकता है। टोली का नेता एक नर होता है। टोली के अन्य वयस्क सदस्यों में एक नर के पीछे १-२ मादा होती हैं। अधिकतर बच्चे जून में पैदा होते हैं। दस सप्ताह तक की उम्र के बच्चों का रंग लाली लिये हुए भूरा होता है जो बाद में एकदम काला हो जाता है।

दो सौ जातियों के पक्षी

पेरियार अभयवन में लगभग दो सौ जातियों के पक्षी पाये जाते हैं। अंजन बक (ग्रे हेरन), सफेद बगले (व्हाइट एगरेट), किलकिले, जलकौए, पनडुब्बी (डार्टर) आदि पानी के पक्षी झील में खड़े ठूंठों पर शिकार की घात में बैठे रहते हैं। मदन सारिका, केरल का सलेटी धनेश (मलाबार ग्रे हौर्नबिल), चित्रित महाधनेश, मछेरा उल्लू (फिश आउल) आदि पक्षी झील के किनारे जंगलों में मिल जाते हैं।

सात सौ सत्तर वर्ग किलोमीटर के पेरियार अभयवन के रख-रखाव के लिए केरल के वन-विभाग ने डेढ़ सौ से दो सौ कर्मचारी नियुक्त किये हुए हैं, जो गेम-वार्डन से फौरेस्ट गार्ड तक के विभिन्न पदों पर कार्य कर रहे हैं। सुरक्षा के उपाय किये जाने के बावजूद पोचर बाज नहीं आते। कीमती हाथी दांत के लिए उन्होंने चुन-चुनकर बड़े उद्दंतोंवाले दंतैलों को मार दिया है। परिणाम यह हुआ है कि पेरियार में अब लंबे उद्दंतोंवाले खूबसूरत हाथी नहीं दिखायी देते। सुरक्षा के उपाय अधिक कड़े करने से ही छोटे दांतोंवाले हाथियों को बचाया जा सकता है। कालांतर में इनके उद्दंत पूरे लंबे हो जाएंगे और ये पेरियार अभयवन की शान बन जाएंगे।

—एल/६, राजौरी गार्डन, नयी दिल्ली-२७

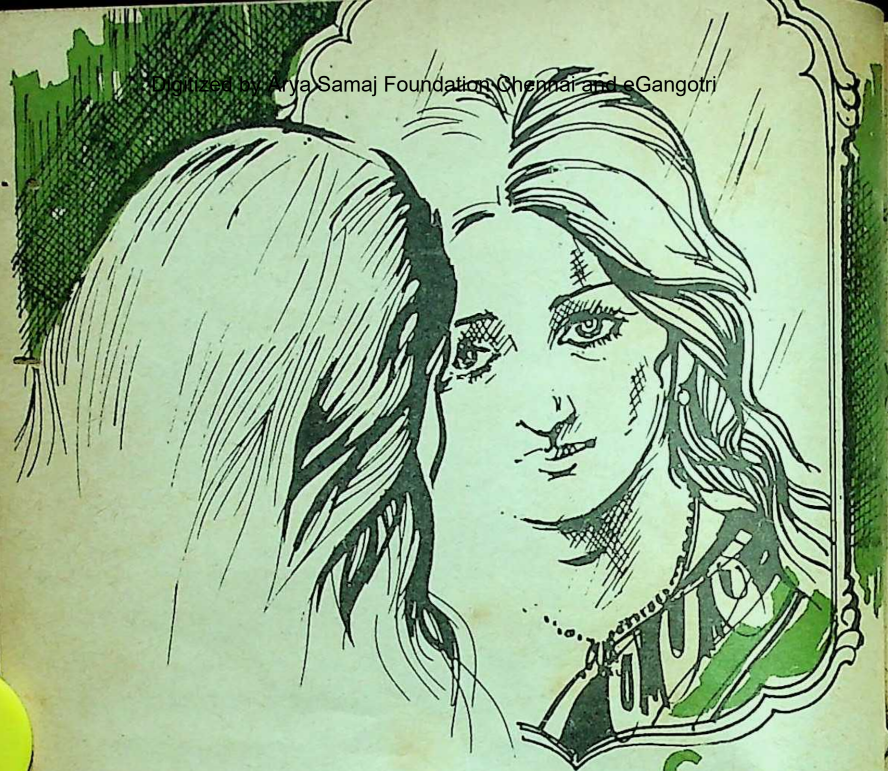

आईना एक मंदिर

• चन्द्रा औलक

अनुपमा अकबकाकर जग गयी, 'चिट्ठी है।' —चिट्ठी को पाकर अधबीच की सीढ़ी पर रुकी, और लिफाफा खोल डाला।

दीदी का खत वहीं खड़े होकर पढ़ा, और फिर एकदम दूर जाती सड़क को देखती रही। लगा, कि सड़क पहले से और सूनी हो गयी है, और मचान की दीवार से उतरती धूप सड़क के बायें ओर सिमट गयी है।

अकसर वे खिड़की पर धरा हुआ आईना उठाकर देखने लगती थीं। जाते समय यह आईना वे अनुपमा के लिए छोड़ गयीं।

'याद आने पर आईना देखोगी तो उसमें तुम्हें मेरा चेहरा दिखायी देगा। और तुम समझ जाओगी . . .'

कमरे में आकर खिड़की पर रखा हुआ आईना हाथ में लेती है, पर आईने में देखने पर दीदी का चेहरा नहीं दिखता, वहां उसकी अपनी उदास और मायूस छाया डोलती दिखती है। फिर कहीं दूर सुरेश की

आकृति उठकर ओझल हो जाती है। शिवानी दीदी पूछती हैं—“सुरेश, कैसा लगता है तुम्हें ?”

बात को पूरी तरह समझने की कोशिश करती है वह कि जीजी कहती हैं, “कम-से-कम मुझे वह बेहतरीन स्टूडेंट नजर आता है। तुम देखना, वह एक दिन चमकेगा।”

“वह आपका स्टूडेंट है, तो इसमें अचरज क्या कि वह चमकेगा।” उसने कहा था।आज वही सुरेश आक्सफोर्ड चला गया है। दीदी ने अपने खत में यही लिखा है, “तुमने अखबार में पढ़ा होगा, उसे स्कालरशिप मिली है और दो साल बाद जब वह लौटेगा, तब १,५०० रुपये की नौकरी से स्टार्ट करेगा . . .।”

वह शीशा वापिस रख देती है, और उसके होंठ फड़फड़ाते हैं, “पंद्रह सौ रुपये ही क्या सब कुछ होता है ?” दरवाजे पर थपथपाहट हुई। किवाड़ खोला तो सामने ही गिरिजा मौसा। वह किवाड़ के एक ओर खड़ी हो जाती है।

“शिवानी का कोई खत आया था ?” गिरिजा मौसा कुरसी पर बैठते हुए रुक-रुक कर पूछते हैं।

“आया है . . एक”, उसने कहा और महसूस किया, कि गिरिजा मौसा का चेहरा एक रहस्य से भर गया है। वह दीदी का खत आगे बढ़ा देती है।

गिरिजा मौसा जब शिवानी के खत में तल्लीन हो जाते हैं, तब वह सोचती है—“अब इस तल्लीनता के क्या अर्थ हैं?” जब कुछ अर्थ थे, गिरिजा मौसा ने दीदी से अपनी असमर्थता जतायी थी।

गिरिजा मौसा अम्मी की मौजूदगी में कभी शिवानी दीदी से नहीं मिले। शिवानी दीदी से पूछने पर एक दिन उन्होंने कहा था—“अब छिप कर भी क्यों कोई चर्चा की जाए ? जो खत्म हो गया, हो चुका . . .।” लेकिन उस दिन गिरिजा मौसा ने कहा था—“एक बार स्थिति पर सोचना होगा। कल जब पिकनिक पर चलेंगे, तब वहां तय कर लेंगे।” उस दिन भी उन्होंने जान-बूझकर सुरेश को साथ

ले लिया था।—"तुम सुरेश से फोन पर एक बार और पक्का कर लेना अन्नू ! वह रहेगा, तो दिल लगा रहेगा..."

गिरिजा मौसा पिकनिक पैलेस पहुंचे थे, दीदी तब तक सुरेश के साथ दूर निकल गयी थी, लौटते समय पूछा था—"ऐसी अकेली जगह में तुम्हें रहना पड़े, तो कैसा लगे सुरेश ?"

"कुछ दिनों के लिए कहीं भी रहना अच्छा लगता है," सुरेश ने उत्तर दिया।

"और बाद में..." वह अचानक सुरेश से जिज्ञासाभरा सवाल पूछ बैठती है। उसे ताज्जुब होता है, कि दीदी के सवाल को उसने अपना सवाल क्यों बना लिया है ! वह और दीदी एक साथ सुरेश के हिलते होंठों को देखने लगती हैं।

"बाद में का बाद में पता चलता है।" सुरेश ताश की गड्डी आगे बढ़ाते हुए कहता है, और फिर पत्ते बांटने लगता है।

"सुरेश—तुम अभी से उसके लिए तैयार हो जाओ—अन्नू तो अकेलापन और इंतजार दोनों झेल लेगी।"

पिकनिक से लौटने पर सुरेश बालों में उंगलियां डालकर-जैसे थकान मिटाने का उपक्रम करने लगा था। नजर आईने पर पड़ी, तो आईना उठाकर उसमें अपने चेहरे को ध्यान से देखने लगा, "इनसान आईना क्यों देखता है ?" अनु ने पूछा—तो सुरेश आईना वापिस धरकर उसे गौर से देखने लगा। बात बदलने के लिए अनु बोली—"अभी नरसों ही इस विषय पर दीदी की हेमानी से बहस हुई थी..." "हेमानी दीदी, शिवानी दीदी की सखी हैं। उनकी पति से पटरी नहीं बैठी, वह इन दिनों यहीं हैं। कभी सोचती हूं, हेमानी दीदी की स्थिति में मैं होती, तो यों हंसना तो दूर, मेरे चेहरे की चमक और रंग को विषाद ने ले लिया होता।"

"लेकिन..." सुरेश लंबे क्षण तक चुप रहने के बाद बोला—"तुम ऐसा महसूस करो ऐसा वक्त नहीं आएगा अन्नू !" उसकी मुट्ठी सुरेश अपने हाथ में ले लेता है। देर तक कोई कुछ नहीं कहता, कमरे में खामोशी छायी रहती है।

सुरेश चुप्पी तोड़ते हुए पूछता है, "दीदी का रिश्ता गिरिजा मौसा से होता, यह सच है क्या ?"

"सिर्फ थोड़ा-सा आभास है मुझे ! वैसे कभी पूछा है, तो दीदी ने कहा है, 'वो बहुत लड़ाका हैं। इसी से गिरिजा

मौसा ने ही इनकार कर दिया था'।"

हठात-जैसे कुछ याद आ गया हो। सुरेश ने कहा—"तुमने ध्यान दिया अन्नू ! गिरिजा मौसा की आवाज में कैसा तो एक आकर्षण है ?"

"हां," वो बात का अनायास ही समर्थन करती, "बोली इसी आवाज के हेतु दीदी ने खुद को सुरक्षित कर रखा है।"

फिर एक दिन हारकर दीदी ने हेमानी से पूछा—"अपने को सुरक्षित क्या किसी के लिए करना होता है हेमानी ?" हेमानी वैसे ही हंसी और अपना हाथ दीदी के कंधे पर धर दिया, "सुरक्षित बेशक किसी दूसरे के लिए ही करना होता है ! सिर्फ अपने लिए ही जीना हो, तो कोई अपने को आईने में क्यों देखेगा ?"

"हम जब कुरूप होते हैं, तब क्यों नहीं जीते, शिवानी ? और जीते भी हैं, तो छिपकर जीते हैं।"

उस दिन दीदी ने ही नहीं, अनुपमा ने भी जान लिया था, कि पीड़ा हिमानी में और गहरे घर किये है।

गिरिजा मौसा कब उठकर चल देते हैं वह जान नहीं पाती। देर बाद, सहसा बूंदों की झुरझुरी हवा में उड़ने लगी। गहरी धुंध-जैसे पीड़ा की गठरी ही हो ! व्यतीत को पूरी खुली आंखों से देख रही है अन्नू !

दूर...एक बहुत उदास दिन है, और फैली हुई निरीहता। झीने आवरण में ढंकी हुई एक नयी उगती कॉलोनी। नये निर्मित मकानों की नंगी आबादी ! एक अनजान मकान, जिसमें बेपहचान एक अजनबी। दीवार में जहां बिजली के बटन का चौखटा जमा था, ठीक उसके नीचे—दीवार का पलस्तर खोदकर उसने दो अक्षर गोद दिये थे। 'एस. पी.', और फिर वह उन दो अक्षरों की-जैसे हिफाजत करने लगी हो, कि कहीं उन अक्षरों पर किसी की नजर न पड़ जाए। हालांकि एक दिन शिवानी दीदी ने देख लिया था, और पूछा था, कि यह किसने गोदा है ?

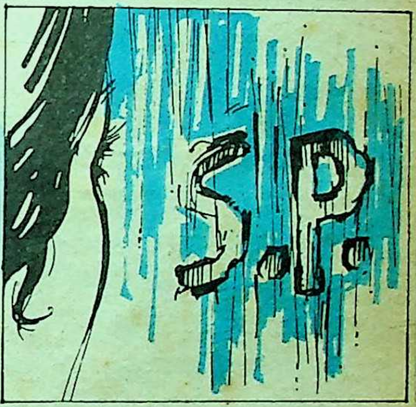

वह अकबकाकर दीदी का मुंह देखती रही थी पर जब दीदी ने उसे कोई खास महत्ता नहीं दी, तब-जैसे उसका सांस लेना आसान हो सका था। उसे एक दिन राह में पुकारकर अजनबी ने कालेज पहुंचने में लेट कर दिया था। उसे यह अच्छा लगा था, उसकी बातें भी अच्छी लगी थीं। उसने अपने बारे में बताया था। वह दूर

से यहां आया है । उसके आत्मीय दूर हैं, और इसका उसे दुःख है ।

"लेकिन . . .", वह कुछ भी कह न सकी । सिर्फ उस अजनबी को दूर का अनात्मीय जानकर उससे उसे सहानुभूति हो आयी थी, और वह महसूस करने लगी थी, कि आत्मीयजनों के बीच रहकर वह बहुत ही दुःखी हो रही है । शायद आत्मीयों के बीच से सहसा भाग जाने की आकांक्षा ने उसे उस अजनबी और अनात्मीय के निकट कर दिया था ।

और अगली बार उसने अनात्मीय व्यक्ति से यही कहा, तो वह अजीब आंखों से उसे देखता खड़ा रहा था—जैसे समझ न सका हो, कि इतने अच्छे घर की पढ़ी-लिखी सहज स्वभाव-लड़की घर से भागकर दूर क्यों जा बसना चाहती है ?

उसके बाद उस अजनबी ने छत पर आना बंद कर दिया । उसने खत लिखकर छत पर न आने का कारण पूछा, तो उत्तर आया, "क्या तुम जानती हो, तुम् ऐसी आकांक्षा करना तुम्हें दुःखी करेगा

"मूर्ख !" उस समय यही शब्द होंठों पर देर तक कांपता रहा था । हाल वह जानती थी कि वह मूर्ख नहीं, कि था । फिर भी एक अति विद्वान व्यक्ति बुजदिल और भीरु भी नहीं हो सकता

लेकिन उसे भीरु कहने के बाद वह अपने मन-दर्पण से निकाल न थी । उस अनात्मीय ने शायद उसे कस एक रहस्य में बांध रखा था । क्योंकि कभार हंसी या मुसकराहट की एक त उसके सुकुमार मन पर अजनबी के सागर से आन गिरती । मन का सूखा भर जाता, फिर उस रात वह भुजाओं पर उस अजनबी का दबाव मह करती ! . . . और यों उस एक त के लिए वह सदा सागर तट पर चाहती । . . . इस तरह वह छत ही सागर तट बन गया । और खिड़की, झरोखा, जहां से अभिलाषित नेत्रों खुलकर, या आंख बचाकर वह उधर सकती थी । बाद में, वह छत एक बन गयी । जहां उसे देखकर अवश्य वह अनात्मीय उसकी ओर देख और कभी मुसकराएगा भी ।— विचित्र होगी उसकी मुसकराहट ! सोचते ही एक कंपकंपी -सी उसे देती । कुछ ही दिन यों बीतें, और उसके रहस्यमय प्रणय का सुराग पा गयीं । उनमें जो घनिष्ठ सखी

उसने जाकर उस अजनबी को सूचित किया--"आज सालगिरह है अन्नू की!"

"अच्छा!"—वह आया, और निमंत्रण-पत्र लेते समय उसने उसे बधाई दी। बाद में सालगिरह की ग्रीटिंग्स। उस दिन उसने एस. पी. शब्द दोबारा ग्रीटिंग कार्ड पर पढ़ा, तो उसे छत की याद आयी। तुरंत छत पर जाकर उसे अहसास हुआ कि उन अक्षरों ने नयी वाणी दे दी। उस दिन वह एक नन्हें पक्षी की तरह चहकती रही। वह जान नहीं पा रही थी, कि वह कैसी बेतुकी बातें कर रही है, या कि नीचे आंगन में अम्मी सुनकर क्या कहेंगी! हालांकि अम्मी की आवाज आयी भी थी कि--"क्या ऊधम मचा रखा है, हंसना है तो अपने लिए हंसो, दूसरों के आकर्षण का केंद्र क्यों बन रही हो?—" सुनकर उसकी सखियां सहम गयी थीं, और फिर शिवानी दीदी आ गयीं और सबको अपने साथ नीचे ले आयीं। उसका मन धकधका रहा था। उसे बुरा भी लगा था... कि अगर दीदी पूछतीं तो वह यही कहती कि आकर्षण का केंद्र वह अनात्मीय के निकट कहां बन पाती है? आकर्षण का केंद्र तो--फिलहाल खुद वही बना हुआ है। लेकिन अगले दिन ही वह जान गयी, कि वह अजनबी कहीं अदृश्य हो गया है। पूरा दिन और पूरी रात उसकी खिड़की बंद रही थी। पता लगाने पर ये पता चला, कि बिना कहे ही वह कहीं चला गया है, तो उसके मुंह से बरबस ही 'निर्दय' शब्द निकला।

इसके बाद ही दीदी ने उसकी पहचान सुरेश से करायी थी।—"अन्नू, कहने को तो इन्होंने भी मात ही खायी है। पर इनके मामले में भूल तो पत्नी की ओर से हुई थी। इनसान को बांधना भी पड़ता है। सिर्फ चाहने से ही सब नहीं होता।"

आज दीदी की बातें याद होती हैं। वह सोचती है, कि उससे कहीं पर भूल तो नहीं हुई? और क्या उसने सुरेश को बांधा था? —और नहीं बांधा, तो क्या सुरेश भी एक सपना ही बनकर रह जाएगा।

--सी-३/३२५, लोदी रोड, नयी दिल्ली-३

अपने शत्रुओं की बातों पर सदैव ध्यान दीजिए, क्योंकि तुम्हारी कमजोरियों को उनसे अधिक कोई नहीं जानता।

—एंटीस्थानीज

चितकबरा मोती आज तक किसी ने नहीं देखा

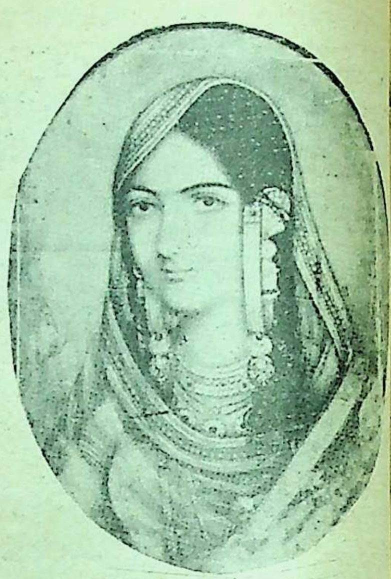

जेबुन्निसा

• शिशिर

लाहौर के निकट, नवकोट के बाग में एक खंडहर-सा मकबरा है। उसमें जो कब्र है उस पर लिखा है—

बर बजारे मां गरीबे ने चिरागे ने गुल ने पर परवाना सोजद ने सदाये बुलबुले।

(—मुझ गरीब की कब्र पर न तो चिराग जलते हैं, न फूल चढ़ते हैं; न तो परवाने जलते हैं, न बहारें आती हैं और न ही बुलबुलें चहकती हैं।)

यह कब्र शहंशाह औरंगजेब की लाडली पुत्री शहजादी जेबुन्निसा की है। फारसी के काव्य-साहित्य में जेबुन्निसा का वही स्थान है, जो हिंदी-साहित्य में मीरा का। अपने 'मख्फी' उपनाम से उसने करुणापू साहित्य का सर्जन किया। उसने वही कुछ लिखा जो कि उसके जीवन से जुड़ा था।

आज भी फारसी में 'दीवान-ए-मख्फी' प्राप्त है, जिसमें उसकी समस्त रचनाएं संकलित हैं।

औरंगजेब को शेरो-शायरी से सख् चिढ़ थी, अतः उसने शायरों को अप दरबार से निकाल दिया था। ऐसे वातावरण में भी जेबुन्निसा अपने मार्ग से न हटी। किसी को उसका पता न च इसलिए वह छिपकर ही काव्य-सर्जन लगी रहती और उसने इसके उपयुक्त अपना उपनाम 'मख्फी' चुना। एक दि कहीं मुल्ला अशरफ ने उसके कलाम दे

'चितकबरा मोती आज तक किसी ने नहीं देखा और अगर देखा है तो...।' यह एक समस्या पूर्त्ति की पंक्ति थी, जिसे सात दिन में पूरी न कर पाने पर उसे फांसी पर चढ़ाया जाना था। सातवें दिन तक उसे कोई हल नहीं सूझा तब उसने फांसी पर चढ़ने की बजाय जहर खाकर मरना तय किया और शृंगार के लिए शीशे के सामने बैठ गयी ; पुराने दिनों की याद से सुरमा-युक्त आंखों से आंसू ढुलक पड़े—चितकबरे आंसू ! वह खुशी से उछल पड़ी चितकबरे आंसू देखकर ! उसने लिख भेजा : 'चितकबरा मोती आज तक किसी ने नहीं देखा और देखा है, तो प्रेयसी के सुरमायुक्त आंसुओं ने।' औरंगजेब पिघल गया और उसने जेबुन्निसा को माफ कर दिया ...

तो वह बड़े ही प्रसन्न हुए और उन रचनाओं का संशोधन करने तथा सलाह-मशविरा देने लगे।

आशु कविता का चमत्कार

तत्काल कविता कहने में जेबुन्निसा बड़ी दक्ष थी; उसने अपनी प्रतिभा से सम्राट के कठोर हृदय को भी पिघला दिया। इस संबंध में एक मजेदार घटना है—

राजकुमारी एक बार चांदनी रात में पाईं-बाग में टहल रही थी, चारों ओर फूल खिले थे और फौव्वारे से उछलता हुआ पानी निकल रहा था। राजकुमारी को मधुमास की मादकता ने अपने आलिंगन में समेट लिया और वह गाने लगी :

चहार चीज जे दिल गम बुरद कुदाय चहार
शराब, सब्ज ओ आबे-रवां, बरूए-निगार।

(—वे कौन-सी चार वस्तुएं हैं जो हृदय से दु:ख दूर करने में समर्थ हैं ? शराब, हरियाली, नदी का प्रवाह और सुंदर मुख।)

उसी समय औरंगजेब उधर से टहलता हुआ आ निकला, जेबुन्निसा ने जो देखा तो उसके काटो तो खून नहीं, किंतु वह घबरायी नहीं और तत्काल ही गाने लगी—

चहार चीज जे दिल गम बुरद कुदाय चहार ?
नमाजी रोज: ओ तसबीहो तौब: इस्तगफार

(—वे कौन-सी चार वस्तुएं हैं, जो हृदय से दु:ख दूर कर सकती है ? नमाज, रोजा, माता और तौबा)।

औरंगजेब यह सुनकर अत्यंत प्रसन्न हो गया। साहित्य के प्रति वह रुचि लेने लगा। साहित्यकारों और कवियों के प्रति वह उदार हो गया। तत्कालीन चोटी के शायर नासिर अली सरहिंदी,मिर्जा मुहम्मद अली साहब, मुल्ला ताहिर 'गनी', नेमत खां 'आली', वहरोज आदि शायर दरबार में पहुंचने लगे। हिंदी के मतिराम, चिंतामणि आदि भी पहुंचे। इन्हें शहंशाह की ओर से पुरस्कार भी मिलने लगे। जेबुन्निसा अपना कलाम परदे के पीछे से पढ़ा करती थी।

औरंगजेब ने उसकी सगाई दाराशिकोह के स्वरूपवान पुत्र सुलेमान

शिकोह के साथ तय की थी। औरंगजेब ने सिंहासन की शोभा बनने के बाद सुलेमान शिकोह को ग्वालियर के किले में कैद कर दिया और वहां धीरे-धीरे पोस्ता पिलाकर उसे मार डाला।

इस मृत्यु ने जेबुन्निसा के हृदय की कोमल कली कुचल दी और आजन्म कुंवारी रहने की उसने कसम खा ली। परंतु मन की आकांक्षाओं को दबाना बहुत कठिन है। यौवन की तरंगें काव्य का सहयोग पाकर उमड़ पड़ीं।

पहला प्रणय

जेबुन्निसा के संबंध में अनेक किंवदंतियां प्रचलित हैं, उसकी प्रणय-कामना के विषय में। किंतु सर्व प्रथम जिसे वह मिली—वह व्यक्ति आकिलखां था। बर्नियर ने अपने यात्रा-वृत्तांत में यह प्रणय-गाथा लिखी है—१०७१ हिजरी में, आलमगीर बीमार पड़ गये और हवा-पानी बदलने के लिए लाहौर गये। कुछ दिनों के बाद बेगमों को भी बुला लिया, उनके साथ जेबुन्निसा भी गयी। वहां उसके पहुंचते ही मुशायरों की धूम मच गयी।

एक दिन जेबुन्निसा बालाखाने पर लाल कपड़े पहने टहल रही थी। आकिलखां ने देख लिया, तो बोला:

सुर्ख-पोशे ब-लबे बाग-नजर मी शायद

(—छत पर कोई लाल वेश में नजर आ रही है)।

शाहजादी ने मुसकराकर उत्तर दिया—

न ब-जोरी,न ब-जारी न ब-जर मी आयद

(—न बल से, न बिनती से और न धन आ सकती है)।

आकिलखां का हौसला बढ़ा। उसने ए दासी के हाथ लिखवा भेजा:

तुरा ऐ महजबीं, बेपर्दा दीदन आरजू दार
जमालतहाय हुस्नत रसीदन आरजू दार

(—चंद्रमुखी! मैं तुझे बेपरदा देखने की कामना करता हूं, तेरे रूप यौवन तक प चने की कामना रखता हूं)।

जेबुन्निसा ने उत्तर दिया:

बुलबुल अजगुल बिगुजरद, गर दर चम
वीनद म
बुतपरस्ती कै कुनद, गर बिरहमन बीन
म
दर सुखन पिन्हा सुदम, चू बूए गुल द
बर्गे गु
हर कि मैले दीदे दारद दर सुखन बीन
म

(—वाटिका में यदि बुलबुल मुझे दे तो फूल छोड़ दे और यदि ब्राह्मण दे ले तो मूर्ति-पूजा छोड़ दे। मैं अपनी कवि में छिप चुकी हूं,—जैसे पत्तियों में पु गंध। जिसको मुझे देखना है कविताओं देख ले)।

आखिर आकिलखां से न रहा गया। वह एक दिन छिपकर महल के भीतर ही पहुंचा। शहजादी को देखकर बोला:

मन दर तलबत गिर्दे जहां मी ग

(—तुम्हारी खोज में संसार में चारों घूम रहा हूं)।

शहजादी उस वक्त चौसर खेल रही

वह बोली :

गर बाद शवी बद सरे जुल्फम न रसी।

(—लेकिन तुम हवा भी बनो तो भी मेरे बालों तक न पहुंच पाओगे) ।

जेबुन्निसा और आकिलखां का यह प्रेम दावानल-सा फैला। औरंगजेब दिल्ली लौट आये, साथ में शहजादी भी किंतु दिल—जैसे वहीं दे आयी वह आकिलाखां को। वह रात-दिन उदास-सी रहती।

औरंगजेब की बहन रोशनआरा को भी इसका पता चला। उसने औरंगजेब को बताया और तय हुआ कि जेबुन्निसा की शादी कर दी जाए। जेबुन्निसा से पूछा गया, तो उसने कहा—'जिन्हें' आप मेरे काबिल समझते हों, उनकी तसवीर मुझे दे दें, मैं उनमें से एक पसंद कर लूंगी।

औरंगजेब ने ऐसा ही किया और जानबूझकर उसमें आकिलखां का चित्र रख दिया, हालांकि वह उसे बिल्कुल नहीं चाहता था।

जेबुन्निसा ने आकिलखां को पसंद किया। औरंगजेब और भी जल उठा। किंतु उसने कुछ नहीं कहा और आकिलखां के पास यह संदेश भेजा—'अगर तुम शहजादी जेबुन्निसा से शादी करना चाहते हो, तो तुरंत ही दिल्ली आओ। औरंगजेब का विचार था आकिलखां को यहां बुलवाकर मरवा डालूंगा। आकिलखां ने नौकरी से इस्तीफा दे दिया और छिपकर दिल्ली जा पहुंचा। जब जेबुन्निसा को यह मालूम हुआ, तब उस ने लिख भेजा :

शुनदिय तर्क खिदमत वर्द आकिल खां ब नादानी।

(—सुना है आकिलखां ने नादानी से नौकरी छोड़ दी है)।

आकिलखां ने उत्तर में लिखा :

चिरा कारे कुनद आकिल, कि बाज आयद पशेमानी।

(—बुद्धिमान ऐसा काम क्यों करे, जिसके लिए उसे पश्चात्ताप हो) ।

इसके बाद जेबुन्निसा ने उसे महल में बुलाना शुरू किया। दोनों मिलते-जुलते, बातें करते और कहीं दूर भाग चलने के लिए मशविरा करते।

औरंगजेब को इसका भी पता लगा और एक दिन जब आकिलखां पाईं-बाग में था, औरंगजेब वहां पहुंचा। जेबुन्निसा ने उसे एक देग में जल्दी से छिपा दिया। इन देगों में नहाने के लिए पानी गरम किया जाता था। औरंगजेब को एक बांदी ने चुपके से बता दिया। औरंगजेब मुसकराया और उसने बांदियों को हुक्म दिया। 'इस देग के नीचे आग जलाओ।' और पूरे तीन मन लकड़ियां जलवाकर औरंगजेब वहां से हटा, किंतु धन्य है आकिलखां, उसने उफ तक नहीं की और प्रेम की बेदी पर बलिदान हो गया।

इस घटना से जेबुन्निसा को बहुत बड़ी ठेस पहुंची, किंतु वह शांत रही।

शिवाजी की प्रशंसा का दंड

मगर औरंगजेब की क्रूरता से वह भी बच नहीं सकी। औरंगजेब ने जब अपने बेटे

अकबर को शिवाजी के विरुद्ध भेजा, तब वह शिवाजी से मिल गया। जेबुन्निसा अकबर का बड़ा आदर करती थी। अकबर भी उसे मानता था। अतः दोनों का पत्र व्यवहार हो रहा। एक बार औरंगजेब के हाथों में जेबुन्निसा का वह पत्र पड़ गया, जिसमें उसने शिवाजी से मिल जाने की प्रशंसा की थी और शिवाजी की नीति की प्रशंसा की थी। अतएव उसे सलीमगढ़ के किले में बंद करवा दिया गया। किले में बंद करवाने के बावजूद औरंगजेब को जेबुन्निसा से भय बना रहता था। अतः उसने उसका अंत करवाने के लिए एक तरकीब सोची। उसने शेर की पहली लाइन लिखकर भेजी :

दूरे अब्लक कसे-कम दीद मौजूद

(—चितकबरा मोती आज तक किसी ने नहीं देखा और अगर देखा है तो . . .) और कहला भेजा—'अगर इस समस्या की पूर्ति एक हफ्ते तक नहीं होती तो सजाए-मौत दी जाएगी।'

जेबुन्निसा की यह कठिन परीक्षा थी। सातवें दिन तक उसकी समझ में न आया। आखिर, फांसी पर चढ़ने से उसने यह अच्छा समझा कि वह जहर पीकर आत्महत्या कर ले। यह निश्चय कर उसने उस दिन साज-श्रृंगार किया और मरने से पहले अपना सौंदर्य देखने के लिए आईने के सामने बैठ गयी। तभी अपने पुराने दिन याद आ गये और आंसू निकल पड़े। आंखों में सुरमा लगा था। अतः आंसू जो निकले, वे थे चितकबरे ! शीशे
जब उसने देखा तब प्रसन्नता से उछल प
समस्या हल हो गयी। उसने लिखकर भे
दिया :

बजुज अश्के बुताने सुर्मा आ

(—चितकबरा मोती आज तक कि
ने नहीं देखा, अगर देखा है तो प्रेयसी
सुरमायुक्त आंसुओं ने)।

औरंगजेब का हृदय पिघला। उ
जेबुन्निसा को नवाबी का खिताब,
लाख सालाना की जागीर फिर से
की और पुराने कसूर माफकर पुनः दि
बुला लिया।

जेबुन्निसा का अधिकांश जीवन दु
में ही बीता, वह दांपत्य सुख से वं
रही। अतः उसकी काव्य-सर्जना करुण-
से ओत-प्रोत ही रही।

कविता और सत्ता के संबंध में उ
लिखा :

ए बुलबुले खुश इत हां आहिस्ता त
जु
नाजुक मिजाज शाहां ताबे सखुन न

(—हे मधुबयनी बुलबुल, जरा धीरे-
अपनी चोंच खोल, धीमी आवाज में
क्योंकि कोमल स्वभाव वाले सम्राटों
काव्य सुनने की शक्ति नहीं होती)।

—भट्टाचार्जी लेन, अपर बाजार,

"मेरी पत्नी किसी भी विषय
घंटों बोल सकती है।"
"लेकिन मेरी पत्नी को तो
के लिए विषय की भी जरूरत नहीं हो

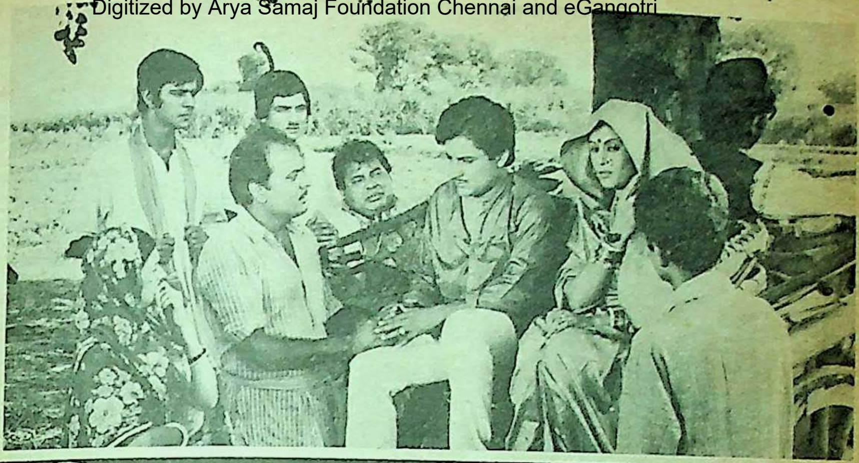

रुपहले परदे पर ब्रज-संस्कृति

• शिवकुमार

"अरे यारौ, आज तौ वनउआ (स्थिति) वन गयौ।"

"का भयौ?"

"आज जमींदार की छोरी मिली, बड़ौ प्यार जताइ रही, कह रही कि कल कुंज में मिलूं।" गोपाल ने अपने दोस्तों को वताया। ब्रज के एक गांव का युवक गोपाल एक मेले में गया था, जहां उसकी दूसरे गांव के जमींदार की चंचल और शोख लड़की राधा से मुलाकात हुई, आंखें चार हुईं और फिर शुरू होने लगा था प्रेम का मूक सिलसिला। आज राधा ने गोपाल को मुलाकात के लिए कुंज में वुलाया था। जहां राधा वड़े वाप की चंचल लड़की थी, वहीं गोपाल था एक सामान्य किसान परिवार का, बिना मां-वाप का युवक।

गोपाल के सामने समस्या यह थी, कि वह राधा से मुलाकात के समय उससे कहेगा क्या? उसके हमउम्र दोस्त सलाह देते हैं कि-जैसे फिल्मों में हीरो-हीरोइन प्रेम के डायलॉग बोलते हैं—वैसे ही बोल देना। लेकिन गोपाल ने तो कभी कोई फिल्म देखी ही नहीं थी। तब, दूसरा सुझाव आया कि वह मिर्जा गालिब का कोई इश्किया शेर पढ़ दे, लेकिन गोपाल को ऐसा कोई शेर भी याद नहीं था। आखिर

ऊपर : बहू के साथ बेटे की भी विदाई : फिल्म 'ब्रजभूमि' का एक मार्मिक दृश्य

में यह तय हुआ कि गोपाल ने नौटंकी में जो प्रेम का संवाद सुना है, उसे ही वह राधा के सामने कह डाले।

गोपाल ने यही किया। उसने नौटंकी का रटा-रटाया डायलॉग सुना डाला, 'हाय जानेमन! जब से तुम्हें देखा है, न तो दिल को करार है न मन को चैन।' डायलॉग बोलते-बोलते गोपाल ने राधा का हाथ पकड़कर अपने सीने पर रख लिया। राधा समझ गयी कि गोपाल प्रेम के मामले में एकदम बुद्धू है, नौटंकी का डायलॉग रटकर आया है। वह खिलखिलाकर हंस पड़ी।

यह है एक दृश्य मेरी हाल ही में प्रदर्शित हो रही फिल्म 'ब्रजभूमि' का। एक सहज और स्वाभाविक प्रेम के प्रसंग का, जिसे अभिनीत किया है, राजा बुंदेला और अलका नूपुर ने।

मार्मिक दृश्य

इस सहज, स्वाभाविक और निष्कपट प्रेम-प्रसंग की भांति ही एक और मार्मिक दृश्य है इसी फिल्म का, जो संवेदनशील दर्शकों को रुला जाता है। परिस्थितियां कुछ ऐसी बनती हैं कि जमींदार अपनी लड़की राधा का विवाह गोपाल से करने के लिए तैयार हो जाता है, लेकिन एक शर्त पर कि वह शादी के बाद राधा के घर पर ही रहेगा, घर-जमाई की तरह। गोपाल के भाई-भाभी इस शर्त को सुनकर परेशान हो जाते हैं, क्योंकि जब गोपाल की मां गोपाल को जन्म देकर मरणासन्न स्थिति में थी, तब वह गोपाल को उसकी भाभी की गोद में डाल गयी थी, उसे अपने पुत्रवत पालने-पोसने के लिए। भाई-भाभी ने गोपाल को अपने पुत्र की तरह पाल-पोसकर बड़ा करने के कारण ही अपनी संतान पैदा न करने का फैसला लिया था। भाई ने फैसला गोपाल पर ही छोड़ दिया और गोपाल ने जो फैसला लिया, उसने उनका दिल ही तोड़ दिया। गोपाल ने कहा कि 'इसमें परेशानी की क्या बात

निर्माता-निर्देशक शिवकुमार एक कुशल अभिनेता हैं। सन १९६५ में जब वह सिविल इंजीनियरिंग कर रहे थे, तभी प्रसिद्ध अभिनेता और निर्माता किशोर साहू ने नयी प्रतिभाओं के चयन के लिए प्रतियोगिता आयोजित की, जिसमें भाग लेनेवाले ४५ हजार प्रतियोगियों में से शिवकुमार ही एकमात्र युवक थे, जो चुने गये। उन्होंने 'फिल्म पूनम की रात (१९६५) और 'हरे कांच की चूड़ियां (१९६७) में महत्त्वपूर्ण भूमिकाएं कीं। फिल्म 'महुआ' व 'दोस्त और दुश्मन' आदि कई फिल्मों में नायक के रूप में आये। 'ब्रजभूमि' उनकी अपनी पहली फिल्म है, जो एक साल के दौरान तैयार होकर प्रदर्शनार्थ तैयार है।

है, मैं यहां रहूं या वहां, दूरी ही कितनी है, कभी-कभी यहां हो जाया करूंगा।'

शादी हुई और शादी के बाद दूसरे दिन ही राधा की विदा के साथ-साथ गोपाल भी उनसे विदा हो गया। विदाई का यह दृश्य इतना मार्मिक बन पड़ा है कि दर्शक की आंखें नम हो जाती हैं। और पार्श्व-संगीत तथा गीत दिल को गहराइयों तक छू जाता है। सारा दृश्य देखकर भगवान श्रीकृष्ण के जीवन का वह दृश्य साकार हो उठता है, जबकि श्रीकृष्ण और बलदाऊ कंस के बुलावे पर मथुरा जाते हैं। मां यशोदा बिलख-बिलखकर रोती हैं, नंद बाबा व्यथित हो उठते हैं और गोप-गोपियां व गोकुलवासी रुदन कर उठते हैं।

ब्रजभाषा की पहली फिल्म

ये दोनों दृश्य इस फिल्म 'ब्रजभूमि' को एक विशिष्टता प्रदान करते हैं। 'ब्रजभूमि' ब्रजभाषा में बनी पहली फिल्म है।

मैं समझता हूं कि ब्रजभाषा ही एक ऐसी भाषा है, जिसकी समानता कोई दूसरी भाषा नहीं कर सकती। ब्रजभाषा आज की हिंदी भाषा—खड़ी बोली की जननी तो है ही, एक अत्यंत समृद्ध भाषा है, जिसे सूर और रसखान-जैसे महान कवियों ने समृद्ध किया है। राधा और कृष्ण की यह भाषा देश की राधा-कृष्ण-भक्त जनता की गलहार तो है ही, संगीत और नृत्य की भाषा भी है। और सबसे बड़ी बात यह है कि ब्रजभाषा सारे देश में समझी जाती है।

होली का नृत्य : गोपाल (राजा बुंदेला) और राधा (अलका नूपुर)

साहित्य और संस्कृति से समृद्ध ऐसी ब्रजभाषा में अब तक किसी फिल्म का न बनना मेरे मन में खटकता रहा था। जब अन्य क्षेत्रीय भाषाओं में बनी फिल्में सफल और लोकप्रिय रही हैं, ऐसी स्थिति में ब्रजभाषा में बनी फिल्म दर्शकों के दिल में अपना स्थान क्यों नहीं बना सकती? मैंने इसे गंभीरता से सोचा और ब्रजभाषा में फिल्म बनाने का निश्चय कर लिया। क्योंकि, मैं स्वयं ब्रजप्रदेश का हूं। मेरा जन्म अलीगढ़ जिले के एक गांव में हुआ है और मैंने ब्रज के गांव व शहरों को नजदीक से देखा-परखा है। अतः मैंने इस फिल्म की कहानी लिखी। कहानी

लिखते समय मेरी कोशिश रही है, कि इस कहानी में ब्रज के सभी आयाम अपने सही रूप में दर्शकों के सामने आ सकें।

स्वाभाविकता लाने का प्रयास

फिल्म बनाते समय भी मेरी यही कोशिश रही, कि मैं फिल्म में जितनी अधिक से अधिक सहजता, स्वाभाविकता ला सकूं, लाऊं। इसीलिए मैंने फिल्म की सारी शूटिंग ब्रज के गांवों—गोकुल, नंदगांव, बरसाना, मथुरा, वृंदावन में की है। जहां बारात के आगमन, विदाई, खेत पर काम करते किसान, खेल खेलते बच्चे, हंसी-मजाक करते नर-नारी आदि दृश्यों में गांव के लोगों से ही काम लिया है।

इस फिल्म को सहज और स्वाभाविक बनाने के लिए ही मैंने सभी कलाकार ऐसे लिए हैं, जो फिल्म के अनुरूप तो हैं ही; व्यावसायिक नहीं हैं, बल्कि रंगमंच के कलाकार हैं। राजा बुंदेला रंगमंच के कलाकार और नेशनल स्कूल ऑव ड्रामा के प्रशिक्षित कलाकार हैं। भाई की भूमिका मैंने खुद की है। भाभी की भूमिका महाराष्ट्र के रंगमंच की अभिनेत्री भारती अचरेकर ने की है। अन्य कलाकार स्थानीय हैं—आगरा के महेंद्र शर्मा और मथुरा के राजेश तिवारी।

फिल्म की नायिका अलका नूपुर कत्थक नृत्य की एक जानी-मानी नृत्यांगना हैं। उन्होंने भारत सरकार की उच्च अध्ययन की छात्रवृत्ति के दौरान रानी कर्णा और बिरजू महाराज-जैसे प्रख्यात कत्थक नृत्याचार्यों से प्रशिक्षण प्राप्त किया है। वह इस फिल्म के माध्यम से पहली बार फिल्म के परदे पर आ रही हैं।

फिल्म में अरुणा ईरानी, राजेंद्रनाथ, यूनुस परवेज और टाम आल्टर—जैसे कलाकार महमान-कलाकार के रूप में काम कर रहे हैं। गीत और संगीत रवींद्र जैन का है, जो स्वयं ब्रजप्रदेश (अलीगढ़) के हैं। रवींद्र जैन ने फिल्म में एक भजन स्वयं भी गाया है। गीत और संगीत में ब्रज की भूमि का पुट है। अधिकतर गीत ब्रज की लोकधुनों पर आधारित हैं, जिनका अपना एक अलग ही सौंदर्य है।

फिल्म के प्रेस के लिए किये गये प्रदर्शन को देखकर प्रेस और केंद्र तथा उत्तर प्रदेश सरकार के मंत्रियों व विधायकों ने इसे ब्रज संस्कृति को उजागर करनेवाली एक साफ-सुथरी और श्रीकृष्ण व ब्रजभूमि के प्रति श्रद्धा और भक्ति के संदेश को दूर तक फैलानेवाली प्रेरणाप्रद फिल्म बतलाया है, और इसीलिए उत्तर-प्रदेश सरकार ने इसे तीन माह के लिए मनोरंजन-कर से मुक्त कर दिया है।

—प्रस्तुति : डॉ. जगदीश चंद्रिकेश

"डॉक्टर साहब, इस कुत्ते की पूंछ काट दीजिए। दरअसल, कल मेरी सास आनेवाली है, और मैं नहीं चाहता कि यह कुत्ता उनका स्वागत करते हुए अपनी पूंछ हिलाए।" —दिनेश श्रीवास्तव

तनाव से मुक्ति

• डॉ. सतीश मलिक

मृत्यु की इच्छा से घिरा हूं

क. ख. ग., मुजफ्फरनगर : गत एक वर्ष से मैं बेहद बेचैन हूं, घोर निराशा, उदासी, अनिद्रा और मृत्यु की इच्छा से घिरा हूं। अकेला रह नहीं सकता। हर काम से अरुचि हो गयी है। प्रत्येक क्षण कष्टदायक लगता है। मेरी ऐसी दशा शामली के एक होम्योपैथ की दवा खाने के बाद हुई। जो लेक केन दस एम., मैंडोरिनम ५० एम. ऐसिड फ्लोर थी। लगता है अब मैं पागल हुए बिना नहीं रहूंगा। होम्योपैथ की गोलियों को यमदूत की तरह समझने लगा हूं। आजकल मैं इंटरमीडिएट कालेज में प्रवक्ता हूं, ९०० रुपये प्रतिमाह वेतन है। मेरी स्त्री भी है और एक चौदह वर्ष का बच्चा भी। डॉक्टर साहब क्या मेरे लिए कोई जीते रहने की गुंजाइश है?

जिस रोग का आपने उल्लेख किया है वह वास्तव में शारीरिक रोग न होकर मानसिक रोग की आरंभिक अवस्था है। इसके लिए होम्योपैथी इलाज को दोषी ठहराना गलत होगा। यह रोग अब बढ़कर गंभीर अवस्था को पहुंच गया है। इसे डिप्रेशन का रोग कहा जाता है। इसके लिए आपको मनोचिकित्सक की आवश्यकता है। ज्योंही यह रोग समाप्त होगा, आप में जीवन के प्रति रुचि जागेगी और आपका दृष्टिकोण आशावादी होगा। हां, डिप्रेशन से कोई भी व्यक्ति पागल नहीं होता। अतः इस ओर से आप निश्चित रहें।

कमी कैसे दूर करें

प्रेम कुमार महेता, हजारीबाग : मैट्रिक पास करने के बाद मैं एक प्रतियोगी परीक्षा में बैठा, पर असफल रहा। फिर मैंने दुबारा उसी परीक्षा को दिया। प्रश्न भी वही थे, जिन्हें मैं अच्छी तरह से जानता था, पर परीक्षा में लिखते समय एक चीज को दो-दो बार लिखता हूं, इसके कारण सारा समय गुजर जाता है पेपर आधा छूट जाता है। क्या मैं कभी सफल होऊंगा?

इस स्तंभ के लिए अपनी समस्याएं भेजते हुए पाठक कृपया अपने व्यक्तिगत जीवन के बारे में पूरा परिचय, जिसमें आयु, पद, आय एवं पते का भी उल्लेख हो, अवश्य भेजें। इस विवरण के अभाव में समस्याओं का समुचित निराकरण संभव न होगा।

—संपादक

डॉ. सतीश मलिक

मैट्रिक के बाद प्रतियोगी परीक्षा पर आपका भविष्य निर्भर था, इसीलिए ऐसी स्थिति से आपका तनाव बढ़ने लगा और आप इस परीक्षा को अधिक महत्त्व देने लगे। दो-दो बार लिखने की प्रवृत्ति प्रायः शंकालु स्थितियों में ही उभरती है। आप अपनी बात को और अधिक दृढ़ता से कहने के लिए ही ऐसा करने लगे होंगे, और बाद में न चाहने पर भी यह भावना आपके मन में घर कर गयी।

वैसे कुछेक लोगों में जब भी होड़ की भावना उत्पन्न होती है, तब ही उन्हें दूसरों को पछाड़ देने की प्रवृत्ति से ही मानसिक कष्ट होने लगता है, तथा वे स्वयं को पराजित और परास्त अनुभव करते हैं। इसी कारण वे मानसिक द्वंद के शिकार होकर आगे नहीं बढ़ पाते। धीरे-धीरे यह व्यक्तित्व का दोष बन जाता है। इसके लिए आपको स्थितियों से स्वयं उभरना होगा। प्रतियोगी परीक्षा से तनाव की स्थितियां क्यों बढ़ने लगती हैं. धीरे-धीरे स्वयं विश्लेषण करें व रिलैक्स करने की चेष्टा करें—तभी इस तनाव से छुटकारा पा सकेंगे।

असफलता कैसे टालें

ए. एम. खान, नयी दिल्ली: मैं उन्नीस वर्षीय अविवाहित युवक हूं। मेरी आय चार सौ अस्सी रुपये प्रतिमास है। मुझे नींद नहीं आती—इसके कारण हैं मेरे मां-बाप। उनके दबंग स्वभाव के कारण बचपन से ही मेरा तिरस्कार होता रहा, जिसके कारण मैं जिंदगी में कुछ भी न कर पाया। उनकी तानाशाही हकूमत ने मेरी भावनाओं की ओर कभी ध्यान नहीं दिया। इसी कारण जिंदगी में असफलता ही हाथ लगी और यही असफलता मेरी चिंता का सबसे बड़ा कारण है। पिछले एक साल से नींद नहीं आ रही है। क्या उपाय करें?

आप नकारात्मक प्रवृत्ति के हैं तथा अपने दोष को औरों पर लादकर स्वयं निश्चित होना चाहते हैं। सच कहें, तो मां-बाप का दोष उतना नहीं है। ऐसी स्थिति में प्रायः हम वास्तविकता को झुठलाकर पीछे की ओर ही देखना चाहते हैं। आप अभी कम उम्र के हैं। सारा जीवन आपके सम्मुख है। आपको अपनी बागडोर स्वयं अपने हाथों लेनी होगी। अन्य लोगों में व अपने में केवल दोष ढूंढ़ना ठीक नहीं। औरों में व स्वयं में गुणों की खोज करके आशावादी बनें।

आत्महत्या का विचार कैसे?

सुरेश कुमार 'अधूरा', भैरहुवा (नेपाल): मेरी आयु तेईस वर्ष की है, घरेलू समस्याएं व आर्थिक विवशता से ग्रस्त हूं। भूख कम लगती थी, इसलिए

चार वर्ष पहले एक दिन एक मित्र के कहने में आकर भांग के लड्डू खाये, इसके कारण बारह घंटे मूर्छित रहा, फिर भूख रही न न नींद। आंखें ऊपर को चढ़ गयीं। डॉक्टरी इलाज से आंखें तो नीचे कर दी गयीं, पर शेष वही लक्षण हैं। मनोवैज्ञानिक ब्रेन हैमरेज कह रहे हैं। बिजली के इलाज से तकलीफ होती है। अब हालत यह है कि शरीर से कुछ भी काम लेने में लाचार-सा हो जाता हूं। बार-बार आत्महत्या का विचार आता है—क्या करूं? पेट में घुड़-घुड़, कनपटी में ढक-ढक और नसों में कड़ापन महसूस होता है।

आपने भांग कमजोरी व भूख की कमी को दूर करने के लिए ही खायी थी। आप वास्तव में किस रोग से ग्रस्त थे, इसके बारे में आपको गुमराह किया गया। आपको 'ब्रेन हैमरेज' का कोई भी लक्षण नहीं है। भांग का नशा हमेशा थोड़ी देर बाद खत्म हो जाता है। एक बार खा लेने से ऐसी स्थिति में पहुंचना संभव नहीं, हां उन व्यक्तियों में जो मानसिक रोग की आरंभिक अवस्था में होते हैं, कभी-कभी भांग के असर से मानसिक रोग उभर आता है। आपका ध्यान हर समय अपने शरीर पर ही केंद्रित है। आप इस ओर ध्यान न दें, और स्वयं की जिस ओर रुचि हो, उधर ही मुड़ें। आपको कोई भी शारीरिक रोग नहीं। आप सामान्ये आदमियों की भांति जीने का प्रयास करें। ●

मूख बादशाह •

आवंती की ख्याति सुनकर एक विदेशी राजा ने अपने वजीरों से कहा, "मुझे पता चला है कि पड़ोसी देश में आवंती नाम का एक आदमी है जो बादशाहों तक को मूर्ख बना सकता है। क्या यह सच है?"

"हां," उनमें से एक ने कहा।

बादशाह ने कहा, एक साधारण मनुष्य बादशाह से अधिक बुद्धिमान कैसे हो सकता है?" उसने आवंती को मूर्ख बनाने के लिए एक चाल चली। और उसके पास पहुंचा। आवंती खेत में काम कर रहा था।

"आवंती!" राजा ने कहा, क्या तुम सोचते हो कि तुम मुझे धोखा दे सकते हो? मेरा दावा है कि मुझे कोई मूर्ख नहीं बना सकता।"

"निश्चय ही मैं बना सकता हूं," आवंती ने उत्तर दिया, "लेकिन आपको यहां तब तक इंतजार करना पड़ेगा, जब तक मैं अपनी चालों का थैला न ले आऊं। अपना घोड़ा मुझे दीजिए ताकि मैं जल्दी से वापस आ सकूं।"

बादशाह ने आवंती को अपने घोड़े की लगाम सौंप दी।

आवंती घोड़े को लेकर हवा हो गया। बादशाह तब तक इंतज़ार करत रहा जब तक सूरज छिप न गया। प आवंती का कुछ अता-पता न था। तभी बादशाह ने महसूस किया कि आवंती उसे मूर्ख बना चुका है।

—मूल चीनी से अनुवाद: सत्यप्रका

केंचुए भी आयात किये जाते हैं !

● सुदीप

पिछले दिनों समाचार पत्रों में केंचुओं से संबंधित दो समाचार देखने में आये। एक समाचार यह था कि थाई देश ने अमरीका से केंचुओं का आयात शुरू किया है। इन केंचुओं का काम होगा थाई-देश में फैले कूड़े-कचरे की सफाई करना। समाचार में बताया गया था, 'रेड रिगलर' किस्म के केंचुए प्रतिदिन अपने वजन के बराबर कूड़े का सफाया कर सकते हैं।

दूसरे समाचार में कहा गया था, कि विभिन्न देशों में केंचुओं को भोजन के रूप में इस्तेमाल करने से संबंधित नये-नये प्रयोग चल रहे हैं।

केंचुओं की उपयोगिता और भोजन के रूप में उनके इस्तेमाल के दो सीमांतों के बीच अनेक ऐसे तथ्य हैं, जिनसे आम आदमी का परिचय नहीं है।

केंचुआ प्रकृति से किसान किस्म का जीव है। वह जमीन की गोड़ाई-निराई करता है और जमीन को भुर-भुरा बनाता है। जब बारिश आती है, तब उसका पानी जमीन की सतह पर फिसल जाने के बजाय, केंचुओं द्वारा बनायी गयी नालियों में उतर जाता है। केंचुआ घास के टुकड़ों, पत्तों और मरे हुए कीड़े-मकोड़ों को धरती की सतह से नीचे खींच ले जाता है और जमीन को उपजाऊ बनाने में इनसान की मदद करता है। इसी कचरे पर वह जिंदा भी रहता है, और जब किसी कारणवश वह मर जाता है, तब खुद भी खाद बन जाता है।

केंचुआ नहीं तो मनुष्य नहीं

दुनिया में ऐसे कृषि-शास्त्रियों की कमी नहीं है, जिनका दावा है कि अगर केंचुए न हों, तो शायद मानव-जाति का अस्तित्व संकट में पड़ जाए। उनके तर्क का आधार यह है, कि मानव और धरती का अस्तित्व वनस्पति पर निर्भर करता है। वनस्पति

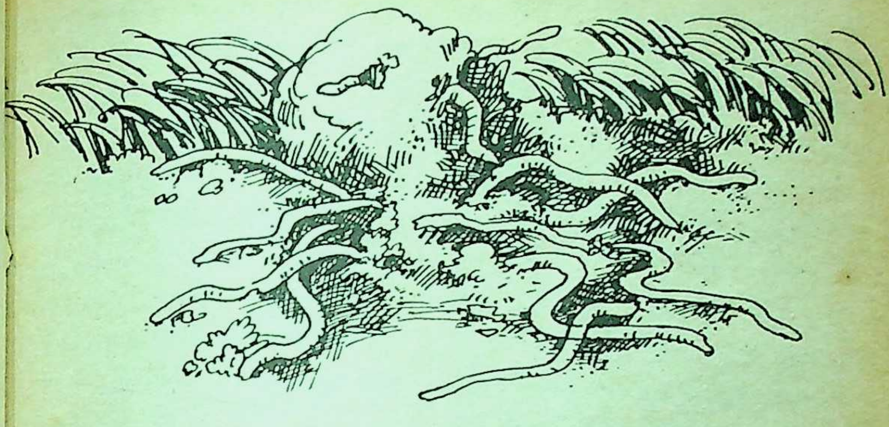

केंचुए और मनभाता भोजन ? इस बात की कल्पना मात्र से कैसी मितली-सी आने लगती है ! लेकिन दुनिया की कई जातियों के लिए केंचुआ स्वादिष्ट ही नहीं, स्वास्थ्यवर्धक भोजन भी है ।

का आधार केंचुआ है, क्योंकि वह धरती को खाद देता है—जिंदा रहते हुए ही नहीं, मरकर भी—अब अगर केंचुआ ही न हो, तो मानव जाति भी नहीं रहेगी।

वनस्पति-शास्त्रियों का एक वर्ग ऐसा भी है, जो यह तो स्वीकार करता है कि हमारे जंगलों, पर्वतों और घाटियों में केंचुए का योगदान अत्यंत महत्वपूर्ण है, लेकिन वे यह भी कहते हैं कि हमारे कृषकों को केंचुआ जो मदद देता है, उसे बहुत बढ़ा-चढ़ाकर प्रस्तुत किया गया है। इन शास्त्रियों ने शोध कार्य के आधार पर सिद्ध किया है, कि जब किसान अपने खेत में हल चलाता है, तब उससे केंचुओं की बहुत बड़ी तादाद तो वैसे ही नष्ट हो जाती है। आम तौर पर एक एकड़ जमीन में केंचुओं की संख्या करीब १० लाख होती है, जबकि हल चल जाने के बाद उनमें से सिर्फ तीन लाख ही जिंदा बच पाते हैं।

क्षतिपूर्त्ति के लिए आयात

इस क्षति की पूर्ति सात लाख केंचुओं के आयात से करने के प्रयास किये गये—इससे तजुर्बेकारों को इस बात का सबूत तो मिला कि आयातित केंचुए जमीन को उपजाऊ बनाने में मदद देते हैं, लेकिन यह मदद उनके अपने मृत शरीरों से ही मिलती है, इसलिए अस्थायी होती है। जहां हल, हैरो या दूसरी मशीनों का खतरा निरंतर बना रहता हो, वहां केंचुए घर बनाने को तैयार नहीं होते।

बहरहाल, वनस्पति शास्त्रियों के शोध-कार्य ने यह बात पूरी तरह सिद्ध कर

दी है, कि आधुनिक किसान को किसी तरह की फिक्र करने की जरूरत नहीं है—केंचुए उसके खेत में रहें या न रहें—क्योंकि वह एक दिन में जितना काम कर सकता है, उतना काम करने में पांच करोड़ केंचुओं को ५० वर्ष लग जाएंगे।

रहस्यमय जीवन

केंचुए का व्यक्तिगत जीवन जरूर रहस्यमय मालूम होता है, केंचुआ अपना अधिकांश जीवन जमीन में लंबाकार बने अपने छिद्रों में ही व्यतीत कर देता है और रात के समय ही बाहर आता है। तब भी उसकी पूंछ बड़ी मजबूती से छिद्र में टिकी रहती है और वह झूम-झूमकर कीड़ों, पत्तियों और घास के टुकड़ों की खोज करता रहता है।

उजाला होते ही वह अपने आपको छिद्र में वापस खींच लेता है और छिद्र के मुहाने को कचरे से बंद कर देता है। जरा-सी देर हुई नहीं कि मौत उसे घेर लेती है। धूप उसे बेहोश कर देती है; और बेहोशी का मतलब है मौत। सुबह-सुबह भोजन की तलाश में निकला कोई परिंदा भी उसे अपना आहार बना सकता है।

कुलबुलानेवाले इस खदान-मजूर को अन्य जीवों की ही तरह प्यास भी लगती है। पानी की तलाश में जब वह अपने छिद्र से बाहर आता है, तब कभी-कभी अचानक बारिश आ पड़ती है, जो उसके छिद्र के आस-पास के कचरे को तो बहाती ही है, केंचुए को भी कई बार अपने घर से दूर बहा ले जाती है। बारिश के बाद क केंचुए बेघर हो जाते हैं। तब या तो उन्हें मार डालती है, या परिंदे उन्हें जाते हैं। अनेक मनुष्यों और पशुओं पैरों तले कुचले जाते हैं; कुछेक शरा बच्चों के खिलवाड़ का शिकार हो ज हैं, जो उनके बदन पर नमक छिड़क उन्हें 'गलते' देखने का मजा लेते हैं। म लब यह कि बेघर हुआ केंचुआ मौत किसी तरह नहीं टाल सकता।

कुदरत की

लेकिन एक बात है : केंचुआ कभी नहीं सकता, क्योंकि कुदरत ने उसे फे नहीं दिये हैं। अब कोई चीज फालतू है, तो कुछ कमी भी तो होनी चाहिए सो, कुदरत ने न उसे आंखें दी हैं, न का हां, रहम करके बड़ा महीन-सा दि जरूर दे दिया है, जो मुख्य स्नायु-तंतु जुड़ा रहता है।

जीव-शास्त्री केंचुए के पारिवा जीवन के बारे में भी बहुत कुछ जान सफल रहे हैं। केंचुए नर या मादा होते, दोनों होते हैं। केंचुए करीब २, तरह की किस्मों के होते हैं और इन अधिकांश किस्में यौन-क्रिया के बगैर प्रजनन की क्रिया पूरी कर सकने में हैं। इसके बावजूद अनेक किस्मों के कें अपनी इस आत्मनिर्भरता को नजर करके यौन-सुख लेते फिरते हैं!

केंचुओं की लंबाई-गोलाई भी त तरह की होती है। पैसिफिक द्वीप स

केंचुए एक इंच लंबे होते हैं, जबकि ऑस्ट्रेलियाई केंचुओं की लंबाई आठ फुट तक देखी गयी है।

केंचुए वैसे तो बड़े शांतिप्रिय जीव हैं, लेकिन जब वे तय कर लेते हैं, कि उन्हें किसी चीज को नष्ट करना ही है, तो वे जी-जान से उस पर जुट जाते हैं। यह बात अलग है कि किसी छोटी-से-छोटी इमारत की नींवों को खोखला करने में उन्हें कई सदियां लग जाती हैं।

मनभाता स्वास्थ्यवर्धक भोजन भी

यह तो हुई कुदरत के इस करिश्मे की बात अब। . . . **कुछ बातें और**

केंचुए और मनभाता भोजन? इस बात की कल्पना मात्र से कैसी मितली-सी आने लगती है! लेकिन आदमी जब तक आदमी है, तब तक तो वह कुछ भी खा सकता है और मजे लेकर खा सकता है।

दुनिया की कई जातियों के लिए केंचुआ बहुत स्वादिष्ट भोजन ही नहीं, स्वास्थ्यवर्धक भोजन भी है।

अफरीका में हर तरह के केंचुए खाये जाते हैं, और वह भी एकदम कच्चे! खानेवालों का कहना है कि केंचुओं का स्वाद कुछ तीखा जरूर होता है, पर बहुत मधुर भी।

और आस्ट्रेलिया के दैत्याकार केंचुए? आठ फुट लंबे, तीन इंच गोल . . . कुछ लोगों ने उन्हें भूनकर खाया है और उनका कहना है 'उनका स्वाद पोर्क सॉसेज से कतई भिन्न नहीं है।'

चीनियों को जब किसी स्वास्थ्यवर्धक भोजन की आवश्यकता महसूस होती है, तब तले हुए केंचुओं की एक प्लेट उन्हें सबसे ज्यादा उपयुक्त नजर आती है। केंचुआ विटामिन-डी से भरपूर खुराक है!

अमरीकियों ने केंचुओं से तरह-तरह की डिशेज बनाने के प्रयास किये हैं। लॉस एंजिल्स में हर साल एक प्रतियोगिता होती है और केंचुओं से तैयार किये गये सर्वश्रेष्ठ पकवान को पुरस्कृत किया जाता है।

इसके बावजूद दुनियाभर के जीवशास्त्री यह मानते हैं कि केंचुओं को भोजन के रूप में इस्तेमाल करने के बजाय सफाई के लिए उनका इस्तेमाल किया जाना कहीं बेहतर बात है।

अधिकांश लोगों ने इस बात को स्वीकार भी कर लिया है और अमरीका में अनेक लोग अब केंचुओं की 'खेती' करने में संलग्न हैं। एक अमरीकी महाशय, जेरी कनिंघम ने तो केंचुओं की खेती के लिए एलेगनी एयरलाइंस की अपनी अच्छी-खासी नौकरी से इस्तीफा दे दिया है। जेरी का अनुभव है कि केंचुए दो से तीन महीनों में अपनी संख्या को दोगुना कर लेते हैं।

जेरी कनिंघम आजकल केंचुओं का निर्यात कर रहे हैं।

'केंचुए खाये जाएं या 'उगाये' जाएं, यह आप पर निर्भर करता है।

—एन-४/१३, सुंदरनगर, एस. वी. रोड,
मलाड (वेस्ट), बंबई-४०००६४

व्यंग्य

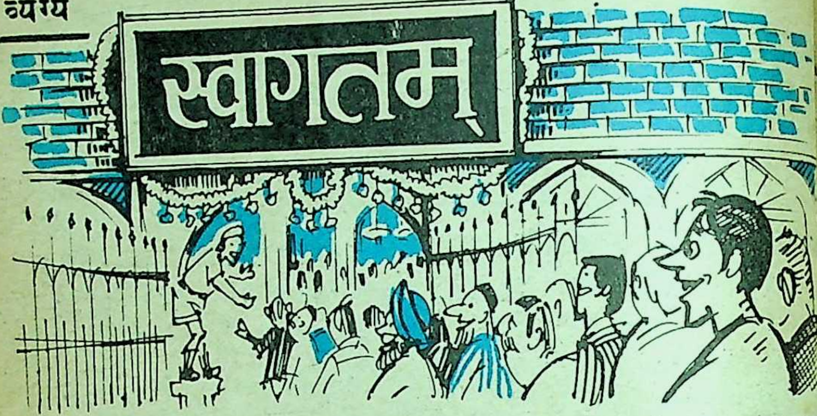

• महेन्द्रकुमार मिश्र

दरअसल हमने कई अखबारों, पत्रिकाओं में पढ़ा था कि जेलों की हालत बड़ी खराब है। वहां के स्थायी-अस्थायी निवासी बड़ा विपदाभरा जीवन जी रहे हैं। कमरों में पंखे नहीं हैं, बैठने को कुरसियां नहीं हैं, (सोफासेट की तो बात ही छोड़िए), बिछावन का प्रबंध नहीं है, खाने की भी समुचित व्यवस्था नहीं है। निम्नतर क्वालिटी का खाना वहां दिया जाता है आदि। हमने सोचा ये सब आलोचनाएं तो चलती ही रहती हैं।

फिर हमने एक दिन अखबार में पढ़ा कि सरकार ने जेलों की हालत पर गौर करने के लिए एक 'कमीशन' बैठाया है। हेडलाइन पढ़कर हम समझे कि सरकार ने कमीशन पर अच्छा माल जेलवासियों को मुहय्या करने के लिए योजना बनायी होगी, किंतु एक मित्र ने समझाया कि 'कमीशन' का 'वह' मतलब नहीं है, हम समझे हैं। यहां कमीशन का मत आयोग से है, तब हमें अपनी बुद्धि पर तरस आया।

यों तो हम बचपन से ही जेल पुलिस के नाम से डरते रहे हैं। बचपन जब शैतानी करते या मई-जून की गरमी में सड़कों और गलियों में खेलने की जिद करते, तब हमारी मां जिस पु वाले का नाम लेकर डराया करती वह काफी डरावना था। उसकी मो मोटी मूंछें हमें अभी भी याद हैं।

अब परिपक्व होते-होते और समा पढ़ते-पढ़ते हमने ठान लिया, कि एक जेल जाकर (अवलोकन की दृष्टि यह जरूर देखना चाहिए कि जेल होती है ? (दूर से तो कई बार देखी यों तो कोई पुलिसवाला हमें घूर तो हमारी सांस रुकने लगती है।

एक दिन हमने जेल जाने की

की) अपनी इच्छा अपने महल्ले के 'अपने' एक नेताजी पर जाहिर कर दी। पहले तो उन्होंने हमें घूरकर ऊपर से नीचे तक देखा और फिर गुर्राकर बोले, "सरकारी नौकर हो बाबू साहब। अगर एक मिनट के लिए भी जेल गये तो नौकरी ऐसे चली जाएगी—जैसे जिस्म से जान चली जाती है। फिर कभी वापस नहीं मिलेगी—नौकरी-हां।"

हम कांप कर रह गये। सोचा नेताजी ठीक ही कहते हैं। इस जमाने में हर चीज मिल सकती है, किंतु नौकरी नहीं। बगैर कुछ कहे चलते बने। शाम को जब दफ्तर से घर पहुंचे, तब पाया कुहराम मचा है। पास-पड़ोस की कई जवान-बूढ़ी औरतें घर जमा थीं, कुछ हमें दया दृष्टि से देख रही थीं तो कुछ घृणा की नजर से हमारा तिरस्कार कर रहीं थीं। श्रीमतीजी टसुए बहा रही थीं। रो-रोकर आंखें लाल कर ली थीं। हमने सोचा कहीं कोई गमी तो नहीं हो गयी, घबराकर नजरों से बच्चों को खोजा, वे भीड़ में नजर आ गये। हमने संतोष की सांस ली। हम पर नजर पड़ते ही श्रीमतीजी बम की तरह फूट पड़ीं, "क्यों जी मेरी वजह से आपको कोई तकलीफ है?"

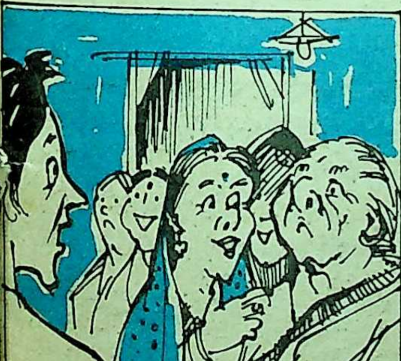

"न...नहीं...तो-नहीं तो, आप तो बहुत-बहुत अच्छी हैं," हमने डरकर जवाब दिया। इस एकाएक हमले से हम बौखला गये।

"क्या मेरे बच्चों को और मुझे साल में दो जोड़े से अधिक कपड़े कभी दिलाये हैं आपने? क्या हर महीने सिनेमा दिखाते हो? क्या मेरे पीहरवाले आपके दरवाजे आकर रातदिन पड़े रहते हैं? मेरे भाई-भतीजों को कुछ निहाल करते हो कभी?" गुर्राकर उन्होंने पूछा।

"नहीं तो... आखिर बात क्या है?" हमने पूरी-पूरी नम्रता से कहना चाहा।

"तब फिर आपने जेल जाने की बात नेताजी से क्यों कही? आपको इतनी भी अकल नहीं कि अगर आप जेल चले गये, तो हमारा क्या होगा?" कहकर वे हमसे लिपटकर फूटफूटकर रो पड़ीं।

श्रीमतीजी ऐसे फूट-फूटकर तो पीहर से बिदा होकर (विवाह के समय) भी नहीं रोयी थीं। पर अब माजरा हमारी समझ में आ गया था। हम आश्वस्त हो गये। अपने प्रति उनका इतना प्रेम देखकर गद्गद् हो गये। किंतु इतनी महिलाओं के बीच उनके यों लिपटने से सिटपिटा भी

गये। पत्नी को अलग कर दिया।

"भई, दरअसल बात यह है कि हमने आज तक जेल देखी नहीं है। वहां लोग कैसे रहते हैं, क्या खाते हैं, क्या पहनते हैं, केवल यह जानने के लिए हमने नेताजी से जेल दिखाने को कहा था, और कुछ नहीं। नेताजी क्या कह गये ?"

"नेताजी कह रहे थे कि बाई, बाबू साहब आपकी वजह से बहुत दुःखी लगते हैं। मुझसे कह रहे थे कि जेल जाना चाहते हैं। आप उन्हें क्यों परेशान करती हैं ?" श्रीमती जी आंसू पोंछकर बोलीं।

इस हादसे के बाद हमने जेल-यात्रा का विचार स्थगित कर दिया। परंतु एक दिन दफ्तर पहुंचकर जब अखबार पढ़ा (हमारे घर अखबार नहीं आता और पड़ोसी देते नहीं), तब पता लगा कि किसी पार्टी ने महंगाई के खिलाफ जेल भरो आंदोलन छेड़ने की घोषणा की है और अगले हफ्ते यह आंदोलन होगा। यह जानकारी होते ही हमारी जेल जाने की इच्छा पुनः बलवती हो उठी। किंतु पिछले (पत्नीवाले) हादसे के कारण हम इस बार पूरी तरह सावधान रहना चाहते थे। हमने सोचा इतनी भीड़ में कौन पहचानेगा कि हम कौन 'चीज' हैं ?

उस दिन प्रातःकाल ही हम नहा-धोकर, नाश्ता करके 'टूर' पर जाने का बहाना कर घर से निकल पड़े। पुलिस का प्रबंध पूरा-पूरा था, किंतु हम भी हिम्मत बांधे खड़े रहे। धीरे-धीरे बढ़ती गयी। लोग नारेबाजी करने 'महंगाई खत्म करो,' 'जनता को दो,' 'यह सरकार नहीं चलेगी, चलेगी', आदि। हमने सोचा, 'यह स कार तो जरूर चलनी चाहिए, वर्ना पर फिर एक और आम चुनाव का आ पड़ेगा।' अतः 'सरकार नहीं चले वाले नारे पर हम चुप्पी लगा गये। चुप रहे, तब पास खड़े एक व्यक्ति ने टोका, "भाई साहब, नारे लगाइए रहने से काम नहीं चलेगा।"

"सत्तारूढ़ दल का लगता है" दूसरे ने अंदाजा लगाया। सो हम बेतहा चिल्लाये, "भारत माता की जय।"

इसी समय गिरफ्तारियां शुरू हो और लोगों को धकेल-धकेलकर ट्रकों लारियों में ठूंसा जाने लगा। एक आ दायक बस देखकर हम भी लपक जिंदगी में पहली बार सरकारी (मुफ्त वाहन में बैठने जा रहे थे। किंतु ह किस्मत, वह यहां भी आड़े आ ही हुआ यों कि--जैसे ही हमने लारी के बोर्ड पर पैर रखा, दरवाजे पर खड़े साब बोले, "अरे, बाबूसाब आप कैसे ? चलो उतरो नहीं तो नौकरी जाएगी।" और उन्होंने हमारे उत्तर प्रतीक्षा किये बगैर पूरी शराफत से नीचे धकेल दिया। लारी आगे बढ़

कपड़े झाड़ते हुए हम दूसरी की ओर बढ़े और गर्दन नीची कर,

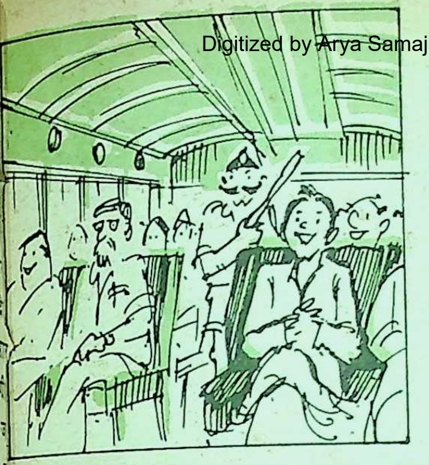

ें धक्कामुक्की करते हुए एक सीट पर ठ गये। बदन पसीने से चिपचिपा रहा ा। कपड़ों की हालत भी खराब हो गयी ी। खैर, जैसे-तैसे बस जब जेल के ाटक पर पहुंची और रुकी, तब हम शान किसी दामाद की तरह उतरे गोया सुराल आ गये हों। जेल का फाटक आज रा खुला हुआ था। गिरफ्तारियां देने-ले लोग अनुशासित ढंग से कतार बना-र जेल में जा रहे थे। देश के इन कर्ण-ारों का अनुशासन देखकर हम गद्गद् गये। हमने सोचा, 'देश के भावी ागरिक निश्चय ही ऐसे ही अनुशासन-य बनेंगे।'

जेल का गेट पूरी तरह सजा हुआ । दिन में ही रंग-बिरंगी बत्तियां झिल-ला रही थीं। 'स्वागतम' का चमचमाता ड अपनी अलग ही छटा बिखेर रहा ा। कंपाउंड में पहुंचे तो पकवानों की ीनी-भीनी खुशबू नथुनों में समा गयी। क नेता-टाइप के सज्जन कह रहे थे--

"आइए, आइए, भाइयो! देखिए आपके आराम का पूरा-पूरा बंदोबस्त हमने कर लिया है। हर कमरे में पंखे, कूलर, खस की टट्टी लगे हैं। खाने में जिसे जो चाहिए अलग-अलग काउंटर से ले सकता है। 'वेज, नान वेज' का अलग-अलग इंतजाम है।"

"हां-हां, क्यों न होगा इंतजाम? जनता का पैसा है, क्या तुम्हारे घर से जाता है? और इंतजाम में 'कुछ' तो हाथ लगेगा ही।" एक दुबले-पतले नेता बोले।

'ये खर्चे तो पार्टी फंड से हो रहे हैं। सरकार क्यों ...," फिर कहकर धीरे से बोले, "अजी आप तो सब जानते हैं। हमने सोचा कि पिछली बार जब हमने यह आंदोलन छेड़ा था, तब आपने ही जेल में पार्टी-फंड से हमारे लिए प्रबंध किये थे, उनका भार भी तो उतारना ही था न।"

"अच्छा तो आपको याद रहा? बहुत-बहुत धन्यवाद," बारीक छात्र नेता ने कहा।

"अजी धन्यवाद की क्या बात है इसमें। यह तो चलता ही रहता है, चलता ही रहेगा, कभी हम, कभी आप।" कहते हुए वे हंस पड़े और गले लग गये।

'हम पास ही खड़े बहस का आनंद ले रहे थे। तभी एक जेलर रूल नचाता हुआ उधर आ निकला। हम पर नजर पड़ते ही उसने घूरकर देखा--ऊपर से नीचे तक। हमें झुरझुरी आ गयी। इशारे

से पास बुलाकर गुर्राते हुए वह बोला——

"क्यों जी, तुम यहां कैसे ? क्या नौकरी छोड़ दी ?"

"न. . न. .नहीं तो. .मगर. . .?" बौखलाकर अपनी सवालिया नजर हमने फेंकी।

"अबे पहचाना नहीं, अपन धार कालेज में साथ-साथ पढ़ते थे। मैं हूं फुनगे।"

"अरे हां, तो यह तुम हो मिस्टर लटूरी राम फुनगे। यार पहचाने ही नहीं गये मुझसे तो, सेहत भी खूब बन गयी है," हम बोले। यह तो हमारा जिगरी यार था उन दिनों।

"हां, मगर अब मैं एल. आर. फुनगे जेलर हूं। खैर, यह तो बताओ तुम यहां कैसे ? क्या नौकरी छोड़ दी ?"

"अब तुमसे क्या छुपाना भाई, दरअसल जेल के कैदियों का जीवन देखना चाहता था, इसलिए हमने सोचा इससे अच्छा मौका . . .।"

"यह कोई तरीका है जेल देखने का ? यार ! क्यों बीवी-बच्चों से भूख हड़ताल करवाना चाहता है, जा, घर जा।" कहकर फुनगे ने हमें धकेलते हुए फाटक के बाहर कर दिया (लगभग फेंक ही दिया)।

बाहर निकलकर हम अब अधबीच में पड़े हैं। न घर जाने की हिम्मत है और न दफ्तर जाने का समय।

—१९।१, सिख महल्ला, इंदौर—४५२००३

ज्ञान-गंगा

न दत्वापरिकीर्तयेत्।

दान देकर उसका कीर्तन न करे।

न स सखा यो न ददाति सख्ये।

वह मित्र नहीं है, जो मित्र की

नहीं करता।

मन्त्रमूलं च विजयं प्रवदन्ति

मनीषियों का कथन है कि

सफलता की जड़ मंत्रणा या

विमर्श में होती है।

स्पृहणीयगुणैर्महात्मभिश्चरिते

यच्छतां

विधिहेतुरहेतुरागसां विनिपातोऽपि

प्रशंसनीय गुणों से सुशोभित

द्वारा आचरित (अंगीकृत) पथ

लगानेवाले व्यक्तियों को, दैव द्वारा

गयी असफलता भी उनकी

समान ही होती है।

जीवन्तु मे शत्रुगणाः सदैव
येषां प्रसादात्सुविचक्षणोऽहम्।
यदा यदा मे विकृतिं लभन्ते
तदा तदा मां प्रतिबोधयन्ति॥

मेरे शत्रुगण सदा जीवित रहें,

कृपा से मैं विशेषतया बुद्धिमान

हूं। वे जब-जब मेरे दोष को पाते

तब मुझे सावधान कर देते हैं।

——प्रस्तोता : महर्षि कुमार

नेपाल राजकीय प्रज्ञा-प्रतिष्ठान की रजत जयंती

लेखक सीमाओं में नहीं बंधता

‘मान्छे खुल्दछ मान्छे मैं उसको देश भक्तिमा’ अर्थात ‘आदमी प्रकट होता है आदमी होकर, अपनी देश भक्ति में’! यह विषय था—काठमाण्डू में आयोजित एक कवि-गोष्ठी का। यह विषय स्वयं नेपाल नरेश श्री वीरेन्द्र वीर विक्रम शाह देव ने दिया था और उसमें उत्साह और उमंग से भाग लेनेवाले थे, नेपाल के अनेक कवि।

यह कवि गोष्ठी गत २३ जून को नेपाल के राजकीय प्रज्ञा प्रतिष्ठान के ‘प्रज्ञा गृह’ के विशाल रंगमंच पर आयोजित की गयी थी। अवसर था—‘प्रज्ञा-प्रतिष्ठान’ का रजत जयंती समारोह।

पचीस वर्ष पूर्व २२ जून १६५७ को तत्कालीन नेपाल नरेश श्री महेन्द्र की प्रेरणा और संरक्षण में नेपाल के राजकीय प्रज्ञा प्रतिष्ठान की स्थापना की गयी थी। स्वर्गीय श्री महेन्द्र स्वयं बहुत अच्छे कवि थे तथा नेपाली कला, साहित्य और संस्कृति के उन्नयन के उद्देश्य से ही उन्होंने इस प्रतिष्ठान की स्थापना की थी। प्रतिष्ठान के पहले कुलपति स्वयं नेपाल नरेश श्री महेन्द्र थे।

प्रज्ञा-प्रतिष्ठान कला, साहित्य और संस्कृति के लिए ये पुरस्कार भी देता है—**पृथ्वी प्रज्ञा पुरस्कार**—एक लाख रुपयों का यह पुरस्कार प्रति चार वर्ष में दिया

काठमाण्डू में आयोजित नेपाल राजकीय प्रज्ञा प्रतिष्ठान के रजत जयंती समारोह में भारत के प्रतिनिधि के रूप में भाषण करते हुए ‘कादम्बिनी’-संपादक श्री राजेन्द्र अवस्थी

जाता है। **त्रिभुवन प्रज्ञा पुरस्कार**––पचास हजार रुपयों का यह पुरस्कार प्रति तीन वर्ष में दिया जाता है। **महेन्द्र प्रज्ञा पुरस्कार**––पचीस हजार रुपयों का यह पुरस्कार द्विवार्षिक है। **इंद्रराज्य लक्ष्मी पुरस्कार**––पंद्रह हजार रुपयों का यह पुरस्कार प्रतिवर्ष दिया जाता है। **वीरेन्द्र प्रज्ञालंकार**—इसकी स्थापना वर्तमान नरेश श्री वीरेन्द्र वीर विक्रम शाह देव के नाम पर की गयी है।

गत २३ जून को काठमाण्डू में नेपाल राजकीय प्रज्ञा-प्रतिष्ठान की रजत जयंती का समारोह विभिन्न कार्यक्रमों के साथ संपन्न हुआ। इसमें स्वदेश और विदेश के लब्धप्रतिष्ठ और सुप्रसिद्ध साहित्यकारों को निमंत्रित किया गया था। प्रातः नेपाल के प्रधानमंत्री श्री सूर्यबहादुर थापा ने रजत जयंती समारोह का उद्घाटन किया। इसके बाद नेपाल के डाक-सेवा विभाग द्वारा प्रज्ञा-प्रतिष्ठान की रजत-जयंती संबंधी विशेष डाक टिकट जारी किया गया।

उसी दिन शाम को नेपाली संस्कृति की परंपरा पर आधारित वृत्तचित्र 'ज्यापू' का प्रदर्शन भी हुआ था। प्रस्तुतकर्ता थे—नेपाल राजकीय प्रज्ञा-प्रतिष्ठान और अमेरीकी संस्था स्मिथसोनियन इंस्टीट्यूट। नेपाली संस्कृति और लोक-जीवन तथा नेपाल के विकास संबंधी दो और वृत्तचित्र प्रदर्शित किये गये थे।

दूसरे दिन प्रसिद्ध नाटककार स्व. श्री बालकृष्ण सम द्वारा लिखित 'मुटुको व्यथा' अर्थात 'दिल का दर्द' नामक नाटक का प्रदर्शन हुआ। तीसरे दिन नेपाल के शिक्षा और संस्कृति मंत्री श्री नारायण दत्त भट्ट की अध्यक्षता में अतिथि-साहित्यकारों के सम्मान में एक समारोह प्रज्ञा-प्रतिष्ठान के प्रेक्षागृह में संपन्न हुआ।

इस अवसर पर आमंत्रित अतिथि साहित्यकारों ने अपने-अपने मंतव्य प्रकट किये। इनमें भारत के प्रतिनिधि श्री राजेन्द्र अवस्थी (उपन्यासकार, कथाकार और 'कादम्बिनी' के संपादक), डॉ. पारसमणि प्रधान (अन्वेषक, भाषाविद्, समीक्षक और संपादक), चीन के चाओ दिफान् (कवि और संपादक), बंगलादेश के सैयद जहांगीर, देवकुमारी थापा (कथाकार), आदि प्रमुख थे।

इस अवसर पर भाषण करते हुए श्री राजेन्द्र अवस्थी ने कहा कि लेखक कभी किसी सीमा में नहीं बंधता। वह देश, काल, धर्म और जाति की सीमाओं से ऊपर होता है।

रजत जयंती समारोह में भाग लेने आये आमंत्रित अतिथियों को काठमाण्डू उपत्यका का दृश्यावलोकन भी कराया गया था। नेपाल नरेश और महारानी के सम्मान में सिंहदरबार स्टेट हाल में आयोजित रात्रिभोज में आमंत्रित साहित्यकारों के अतिरिक्त देश के प्रमुख साहित्यकार भी उपस्थित थे।

—राज शेखर

ज्योतिष
पकी परेशानियों का निदान

६

नीचे दिये खाली जन्म-चक्र को भरकर भेजिए। हमारे ज्योतिर्विद आपके एक प्रश्न का उत्तर देंगे। हमारे पास सैकड़ों की संख्या में प्रविष्टियां आ रही हैं। क्रम से हम चुनाव कर जितना संभव हो सकेगा, एक अंक में उत्तर देंगे। प्रविष्टि–४ का उत्तर यदि इस अंक में न मिले तो समझ लीजिए आपकी प्रविष्टि नष्ट कर दी गयी है। आप चाहें तो फिर अगली प्रविष्टि भरकर भेजें। एक प्रविष्टि के लिए आये प्रश्नों को चुनकर उत्तर एक ही अंक में दिये जाएंगे। अगले अंक में प्रतीक्षा न करें।

जन्म-चक्र अवश्य भरना चाहिए तथा 'भूत, भविष्य एवं वर्तमान' जैसे ढेर से प्रश्न एक साथ न पूछिए।

'कादम्बिनी' के इसी पृष्ठ को फाड़कर आप अपनी प्रविष्टि भेजिए।

.... यहां से काटिए ....

६

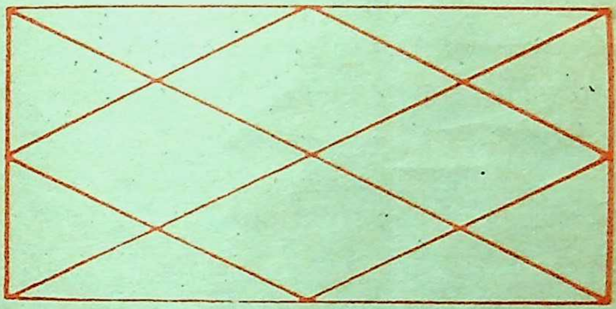

नाम ....

जन्म-तिथि (अंगरेजी तारीख में) .... **महीना** .... **सन** ......

जन्म-स्थान .... **जन्म-समय,** ....

कुंडली में दी गयी विंशोत्तरी दशा ....,....

पता ....

आपका एक प्रश्न ....

....

.... **यहां से काटिए** ....

इस पते को ही काटकर लिफाफे पर चिपकाएं

....

संपादक (ज्योतिष विभाग –प्रविष्टि–६), 'कादम्बिनी'
हिंदुस्तान टाइम्स भवन, १८–२०, कस्तूरबा गांधी मार्ग, नयी दिल्ली-११०००१

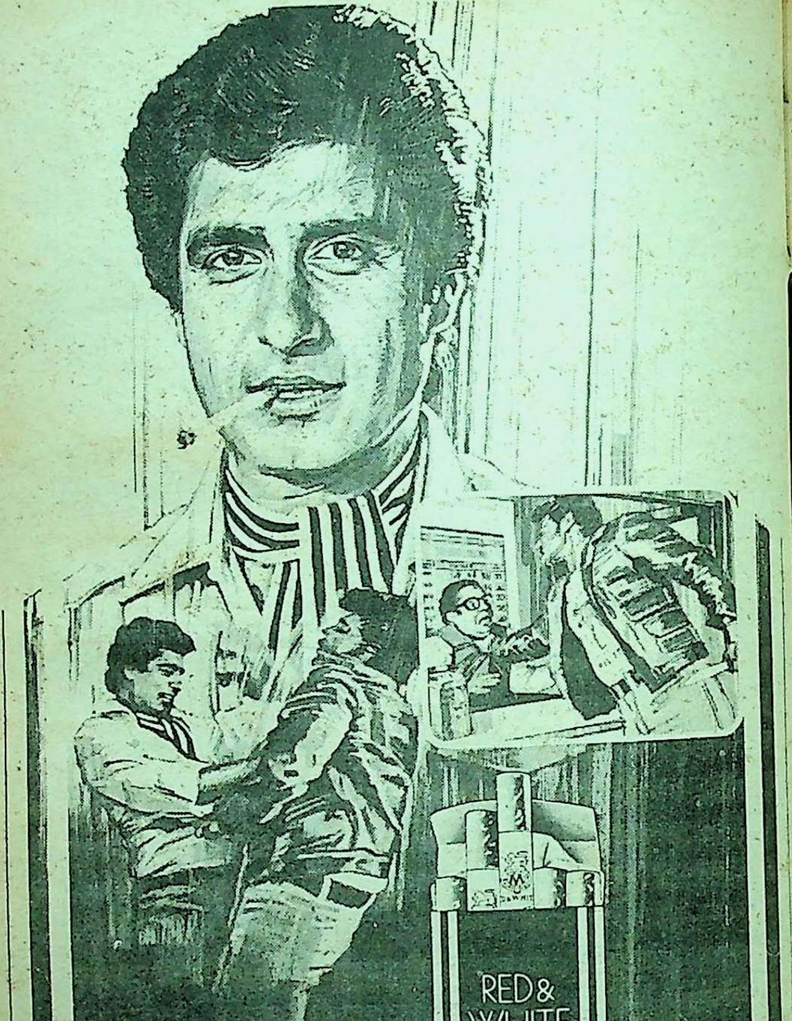
"हम रेड एण्ड व्हाईट
पीनेवालों की
बात ही कुछ और है."
RED &
WHITE
FILTER
STATUTORY WARNING
CIGARETTE SMOKING
IS INJURIOUS TO HEALTH

वैधानिक चेतावनी: सिगरेट पीना स्वास्थ्य के लिये हानिकारक है।
STATUTORY WARNING: CIGARETTE SMOKING IS INJURIOUS TO HEALTH.

Rediffusion/GPI/1576

ज्योतिष समस्या और समाधान

४

'कादम्बिनी' के नये स्तंभ––'ज्योतिष : आपकी परेशानियों का निदान'––का पाठको ने बड़े उत्साह से स्वागत किया है। प्रविष्टि क्रमांक–चार के लिए हमें काफी संख्या में पाठकों की प्रविष्टियां प्राप्त हुईं। सभी पाठकों के प्रश्नों का उत्तर देने में अनेक व्यावहारिक कठिनाइयां थीं। अतः हमने कुछ चुने हुए प्रश्न उत्तर के लिए छांटे। इस अंक में पाठकों की समस्याओं का समाधान कर रहे हैं, राजधानी के सुपरिचित ज्योतिषाचार्य आचार्य कृष्णकुमार गुप्ता।

सविता, श्रीगंगानगर (राजस्थान)

प्रश्न : मेरे पति दो साल से विदेश में हैं, वापस कब आयेंगे?

उत्तर : इस समय आपको बुध महादशा में बुध का अंतर चल रहा है, जो कि पंचम तथा अष्टम स्थानाधिपति होकर लग्न में बैठा है। यह दशा ९ फरवरी, १९८३ को समाप्त होगी, इसके पश्चात स्वदेश लौटने की आशा है।

मनमोहन भारद्वाज, फिरोजपुर (पंजाब)

प्रश्न : आर्थिक स्थिति कैसी रहेगी, स्पष्ट विवेचन करें?

उत्तर : द्वितीय, पंचम और एकादश स्थान के स्वामी बुध और बृहस्पति धन-स्थान में बैठे हैं, यह अति उत्तम धन-योग है। १९ सितंबर, १९८३ से केतु महादशा प्रारंभ होगी, उस समय से आर्थिक स्थिति अच्छी होने लगेगी।

राजकुमार भंडारी, नयी दिल्ली

प्रश्न : मेरी पदोन्नति कब होगी?

उत्तर : इस समय आपको शनि-महादशा में राहु का अंतर चल रहा है, जो कि आशा अधिक और सफलता कम देता है। १ मई, १९८३ से आपको शनि-महादशा में गुरु का अंतर प्रारंभ होगा, उसके पश्चात ही इच्छित सफलता की आशा कीजिए।

महेशकुमार सिंह गौर, कानपुर (उ. प्र.)

प्रश्न : मुझे व्यापार-क्षेत्र में अपार सफलता कब प्राप्त होगी?

उत्तर : परस्पर दृष्ट त्रिकोणाधीश गुरु और सूर्य लक्ष्मी-योग बनाते हुए भी अभी व्यापार और धन-प्राप्ति की सफलता नहीं देंगे। अपार सफलता का समय

जनवरी १९८६ के पश्चात ही आएगा।

रविकुमार, बंबई (महाराष्ट्र)

प्रश्न: एक कारखाना लगाया है, पैसे की कमी के कारण चालू नहीं कर पा रहे हैं, कब तक चालू हो जाएगा?

उत्तर: इस समय आपको गुरु-महादशा में राजयोग कारक गुरु और शनि से दृष्ट बुध का अंतर चल रहा है, जो कि उत्तम होते हुए भी शनि के गोचर में अशुभ होने के कारण सफलता देने में असमर्थ है। धीरज से काम लें। ६ अक्तूबर, १९८२ से शनि के तुला में प्रवेश करने के पश्चात आपका कार्य निश्चित रूप से होगा।

अशोककुमार सेठ, वाराणसी (उ. प्र.)

प्रश्न: क्या विवाह का योग है? है, तो कब?

उत्तर: राहु-महादशा में राहु का अंतर २६ सितंबर, १९८२ से प्रारंभ होगा। उसी दशा में विवाह-योग बनता है।

ब्रह्मप्रकाश भारद्वाज, कोयंबटूर (तमिलनाडु)

प्रश्न: कठिनाई से गुजर रहा हूं, भाग्य कब उदय होगा, पैसा कब आएगा?

उत्तर: लाभेश चंद्रमा की महादशा १४ नवंबर, १९८३ से प्रारंभ होगी, उसके पश्चात ही आपकी कठिनाइयां दूर होंगी। भाग्योदय तथा धन-लाभ भी होगा।

मीरा रस्तोगी, लखनऊ (उ. प्र.)

प्रश्न: मुझे नौकरी (कॉलेज में लैक्चररशिप) कब मिलेगी?

उत्तर: सूर्य-महादशा में बुध का अंत २५ सितंबर, १९८२ से प्रारंभ होगा, उसके पश्चात ही आपको इच्छानुकू नौकरी मिलेगी।

राजपूत रतिलाल, बंबई (महाराष्ट्र)

प्रश्न: सभी कार्य, नौकरी से लेकर प्रेमिका-मिलन तक, 'काल-सर्प योग' के कारण विफल हो जाते हैं, क्यों?

उत्तर: असफलता का कारण केवल काल-सर्प-योग ही नहीं, बल्कि अशु विंशोत्तरी दशा भी है। चंद्र-महादशा शनि का अंतर २९ सितंबर '८३ से प्रारं होगा, तभी काल-सर्प-योग का कुप्रभा कुछ कम होगा तथा विंशोत्तरी दशा ठीक होगी। सफलता की आशा कीजिए।

योगेन्द्रनाथ शर्मा 'अरुण', रुड़की (उ.प्र.)

प्रश्न: पदोन्नति कब होगी औ क्या विदेश जाना होगा?

उत्तर: बुध-महादशा में गुरु का अंतर १५ अक्तूबर, १९८२ से प्रारंभ होगा। गुरु और शनि राज-योग बनाते हैं। अ उपरोक्त समय के पश्चात ही विदे गमन तथा पदोन्नति का सुअवसर प्रा होगा।

जगदीश चन्द्र पाण्डे, पीलीभीत (उ. प्र.)

प्रश्न: मेरी पदोन्नति कब होगी?

उत्तर: इस समय शुक्र-महादशा बुध का अंतर चल रहा है। बुध नीच रा में सूर्य के साथ बैठा है, जो कि राजयो बनाता है। २४ नवंबर, १९८२ से पह निश्चित रूप से पदोन्नति होगी।

कैलाश जैन, जालंधर

प्रश्न : व्यवसाय अथवा कारखाने में सफलता कब मिलेगी ?

उत्तर : इस समय आपको शनि की साढ़ेसाती चल रही है, जो कि आपके कार्य में बाधक है । ६ अक्तूबर, १९८२ से शनि तुला राशि में प्रवेश करेगा, उस समय से शनैः शनैः व्यापार में उन्नति होगी, परंतु व्यवसाय के लिए उत्तम समय १ जुलाई, १९८४ से है । यह गुरु-महादशा प्रारंभ होने पर ही होगा ।

गौरीशंकर सिंह, बिलासपुर (म. प्र.)

प्रश्न : दांपत्य-जीवन कैसा होगा ?

उत्तर : ३२ वर्ष की आयु के पश्चात ही विवाह करने पर दांपत्य-जीवन अच्छा होगा, और तभी से गुरु, शुक्र और सूर्य का राज-योग भी फल देगा ।

रामकृष्ण अग्रवाल, भोपाल (म. प्र.)

प्रश्न : पत्नी तलाक दे रही है, यह होगा या नहीं ?

उत्तर : सप्तमेश गुरु लग्न में बैठकर पंचम व सप्तम स्थान पर दृष्टि डाल रहा है । यह मांगलिक दोष को भी समाप्त करता है, अतः तलाक होना भी मुश्किल है ।

प्रकाशकुमार सेठ, भोपाल (म. प्र.)

प्रश्न : मेरे संघर्षमय जीवन में आशा की किरण कब आएगी ?

उत्तर : शनि की साढ़ेसाती ने आपको निराश कर रखा है । ६ अक्तूबर, १९८२ से इसका कुप्रभाव कम होने लगेगा । तभी से सब कुछ ठीक ठाक होने लगेगा । अभी आप अधिक विचार मत कीजिए ।

चन्द्रशेखर शर्मा, इंदौर (म. प्र.)

प्रश्न : निरंतर अपमान व उपेक्षित जीवन समाप्त होकर, क्या सम्मान प्रतिष्ठा प्राप्त होगी ? किस क्षेत्र में और कब ?

उत्तर : इस समय राहु-महादशा में बुध का अंतर चल रहा है । यह समय कष्टकारक है, परंतु निराश होने की आवश्यकता नहीं । मंगल-शनि तथा मंगल-शुक्र महायोग बनाते हैं । तुला राशि स्थित राहु, शनि से दृष्ट है । अतः २३ सितंबर, १९८३ से राहु में शुक्र, राजनीतिक क्षेत्र में बहुत ख्याति दिलाएगा ।

आलोककुमार वर्मा, सीतामढ़ी (बिहार)

प्रश्न : स्वास्थ्य एवं नौकरी के प्रति चिंतित हूं । क्या लेखन कार्य में सफलता मिल सकती है ?

उत्तर : बुध-महादशा में राहु का अंतर चल रहा है । राहु नीच के चंद्रमा और शनि के साथ वृश्चिक राशि पर बैठा है । पंचम और दशम स्थानाधिपति मंगल अष्टम स्थान में बैठकर नौकरी संबंधी तथा मानसिक चिंताएं उत्पन्न करता है । ६ अक्तूबर, १९८३ से बुध में बृहस्पति की अंतर्दशा प्रारंभ होगी, इसके पश्चात ही उत्तम समय की आशा कीजिए । मंगल से दृष्ट शुक्र और बुध, लेखन कार्य-सफलता में बाधक हैं ।

—१९/२०, शक्तिनगर,
दिल्ली-११०००७

प्रवेश

इस अंक में हम पाठकों को परिचित करा रहे हैं जितेन्द्र चौहान से। इनकी पांचों रचनाएं पढ़ने से हमें लगा कि इनकी कविताओं में टहलता बचपन युग के दर्द को बड़े ही पारदर्शी ढंग से अभिव्यक्त करता है। प्रस्तुत हैं, उनकी पांच कविताओं में से चुनी हुई चार कविताएं।

——संपादक

मेरे शब्द

तुम्हारे शब्द और
मेरे शब्द में फर्क है
तुम्हारे शब्द में रीढ़ की हड्डी/नहीं/है
वे झुक जाते हैं/दुम हिलाने लगते हैं
तुम्हारे शब्द/विवेकहीन होकर
तलवे चाटते हैं
मेरे शब्द कभी झुकते नहीं
मेरे शब्द तलवे नहीं चाटते
मेरे शब्द लड़ते हैं
मेरे शब्द शेर की तरह दहाड़ते हैं
कुछ भी हो/मेरे शब्द/झुकते नहीं हैं
तुम्हारे शब्द की तरह

सात साल का लड़का

सात साल का लड़का
स्कूल नहीं/होटल जाता है
उसके हाथों में/स्लेट नहीं
कप-प्लेट हैं/आंखों के सामने
ब्लैकबोर्ड नहीं, मालिक का गुस्सा
और भट्टी का धुआं है
रात को खोली में लौटता है
ज्वार की रोटी खाकर/सो जाता है
और——सपना देखता है
वह स्कूल जा रहा है/पढ़ने के लिए

बचपन की कहानी

!
ने बचपन में
हानी सुनायी
की/कृष्ण की/ईसा की
तने महान थे ये
मां आज
हीं भी——
म/कृष्ण/ईसा
र नहीं आते
र आते हैं——
ुनी/कंस/दुर्योधन
र रावण
भी राम/कृष्ण/ईसा
र नहीं आते।

अखबार

सच पहले कितना
सहज था सुबह
चाय की प्याली के
साथ अखबार पढ़ना
पर——
आज चाय की प्याली के साथ
अखबार नहीं पढ़ा जाता
अखबार——हत्या/दुर्घटना/बलात्कार
का विज्ञापन लगता है
चाय का स्वाद/खून-जैसा लगता है
कप में कटी लाशें दिखती हैं
इसलिए——अब मैं चाय
पीते हुए अखबार
नहीं पढ़ता

——जितेन्द्र चौहान

आई. टी. आई. कालोनी, रामपुरा मंदसौर
(म. प्र.)

आत्म-कथ्य

लेखन, कविता करना मेरे लिए अय्याशी नहीं है, लेखन मुझे जीने के लिए संजीवनी ा है। लेखन मेरे अस्तित्व का बोध कराता है, लेखन मेरा एक निःस्वार्थ साथी है, मेरी भिव्यक्ति का माध्यम है।

यह महीना और आपका भविष्य

● प्रो. के. ए. दुबे पद्

ग्रह स्थिति : शनि कन्या में, राहु मिथुन में, केतु धनु में, २ से शुक्र सिंह में, १० से
वृश्चिक में, १६ से सूर्य कन्या में, १९ से बुध वक्री कन्या में, २६ से शुक्र कन्या में.

मेष (चु, चे, चो, ल, ली, ले, लो, अ)

२ से ६ सितंबर के मध्य शोधपूर्ण कार्य, लेखन, सृजनात्मक या किसी अन्य योजना को कार्यरूप में परिणित करने के लिए उत्तम समय है । शिक्षा-प्रतियोगिता व विभागीय परीक्षा में भी सफलता मिलेगी। संतान के संबंध में सुखद समाचार के योग बनते हैं। मानसिक सुख-शांति का समय है। १० सितंबर से १६ के मध्य शिक्षा में व्यवधान आ सकता है। संतान के कारण भी मानसिक क्लेश की स्थिति आ सकती है। स्थानांतरण, व्यावसायिक उलझनें, संपत्ति से संबंधित कारण कष्ट दे सकते हैं। अधिकारी या परिवारजन से झगड़े की स्थिति न आने दें। व्यवसाय के प्रति विशेष सावधान रहें।

वृष (ई, उ, ए, ओ, ब, बी, बे, बू,

२ से ६ के मध्य प्रियजन मि
मित्र, स्वजन के माध्यम से रुके हुए व्या
सायिक कार्य संपन्न हो सकते हैं। न
रोजगार प्राप्ति की दिशा में किये जा
प्रयास सफल होंगे। आकस्मिक लाभ
मिल सकता है। १६ से २४ के मध्य
की उन्नति की दिशा में किये जा रहे प्र
सफल होंगे। व्यावसायिक योजना
कार्यरूप में परिणित करने का अ
अवसर होगा। लेखन व रचनात्मक
के लिए उत्तम समय कहा जा सकता
१० से १५ के मध्य व्यावसायिक उ
आ सकती हैं। व्यवसाय के प्रति
रहें। संबंधित अधिकारी से विवाद न
दें। पत्नी के स्वास्थ्य के प्रति भी ध्यान

क्रोध पर नियंत्रण रखना हितकर होगा।

मिथुन (क, की, कू, के, को, घ, छ, ह)

१० से २२ के मध्य आर्थिक मामले में बनायी गयी योजना सफल होगी। बेरोजगार व्यक्तियों को रोजगार प्राप्ति की दशा में किये जा रहे प्रयास सफल होंगे। मकान-निर्माण, जमीन से संबंधित कार्यों में सफलता मिलेगी। मुकदमा व विवाद की स्थिति में विजय होगी। चोरी के प्रति सतर्क रहें। आर्थिक हानि २२ से २६ के मध्य हो सकती है। २ से १० के मध्य संतान के कारण मानसिक क्लेश की स्थिति आ सकती है। शिक्षा, विभागीय परीक्षा या प्रतियोगी परीक्षा में कठिन प्रयास से ही सफलता संभव है। यात्रा सुखद होने की संभावना अवश्य बनती है।

कर्क (ही, हू, हे, हो, ड, डी, डू, डे, डो)

१ से ६ के मध्य भौतिक सुख के साधनों में वृद्धि होगी। मकान, संपत्ति व सुख के साधन में वृद्धि हो सकती है। प्रियजन, प्रेमिका-मिलन भी संभव है। पद, प्रतिष्ठा की दिशा में किये जा रहे

पर्व एवं त्योहार

२ सितंबर—अनंत चतुर्दशी व्रत, ३—भाद्रपदी पूर्णिमा, ४—पितृपक्ष श्राद्ध प्रारंभ, ६—गणेश चतुर्थी व्रत, १०—काली जयंती, ११—मातृनवमी श्राद्ध, १३—इंदिरा एकादशी व्रत, १५— प्रदोष, १७— अमावस्या पितृविसर्जन, २१—गणेश चतुर्थी, २८—कमला एकादशी व्रत तथा बकरीद, ३०—प्रदोष।

राशियां और प्रभाव—इस माह में मेष, वृष, मकर, कुंभ, मिथुन, कन्या राशियां सर्वाधिक प्रभावित होंगी। मंगल तुला से वृश्चिक में प्रवेश करेगा तथा बुध वक्री रहेगा। ऐसी स्थिति में पारिवारिक तनाव, आकस्मिक-व्यय, दुर्घटना, अधिकारियों से विवाद, राजदंड, अर्थहानि, नौकरी में व्यवधान तथा अप्रिय समाचार की स्थिति आ सकती है। इस्राइल का प्रभाव बढ़ेगा। इस्राइल के बढ़ते प्रभाव के कारण विश्व-शांति को खतरे बढ़ सकते हैं। भारत की राजनीति में केंद्रीय मंत्रिमंडल या किसी प्रदेश के मंत्रिमंडल में आमूल-चूल परिवर्तन होंगे। कई महत्त्वपूर्ण विभागों में परिवर्तन संभव है। म. प्र., उ. प्र., बिहार, व महाराष्ट्र में राजनैतिक तूफान आ सकता है। लोकदल विध्वंस की ओर जायेगा।

शांति कैसे करें—मेष, वृष, मिथुन, कन्या, मकर, कुंभ राशियों के व्यक्ति विभिन्न प्रकार की परेशानियों के शिकार हो सकते हैं। वे निम्न मंत्र का जाप करें। मंत्र—'नागेन्द्रहाराय त्रिलोचाय, भस्मां- गरागाय महेश्वराय। नित्याय शुद्धाय दिगम्बराय, तस्मै 'न' काराय नमः शिवाय।।' प्रातः काल १०८ बार या उससे अधिक भगवान् शंकर के चित्र के सम्मुख जाप करने से लाभ मिलेगा।

प्रयास सफल होंगे। यदि शिक्षा-वृद्धि की योजना है, तो उस दिशा में भी सफलता मिल सकती है। योजना को कार्यरूप में परिणित करने का उत्तम समय है। व्यापार-संबंधी, लेखन-संबंधी, कला, नौकरी आदि के संबंध में बनायी गयी योजना लाभप्रद होगी।

सिंह (म, मी, मू, मे, मो, ट, टी, टू, टे)

१ से १० तथा १६ से २८ के मध्य के समय किये गये प्रयासों में सफलता मिलेगी। नवीन कार्य प्रारंभ करने के लिए उत्तम समय है। आर्थिक योजना को भी कार्यरूप में परिणित करने पर सफलता मिलेगी। बेरोजगार व्यक्तियों को रोजगार-प्राप्ति की दिशा में अपनी शक्ति का प्रयोग करना चाहिए, लाभ मिल सकता है। प्रमोशन की दिशा में भी लाभ मिल सकता है। भाई व मित्र से बिगड़े हुए रिश्तों में सुधार आएगा। अहं की भावना पर नियंत्रण रखें। सफलता मिलने पर दूसरों को अपमानित करना अच्छा नहीं है। क्रोध एवं अहं की भावना कष्टप्रद होगी।

कन्या (टो, प, पी, पू, ष, ण, ढ़, पे, पो)

१७ से २६ के मध्य आर्थिक मामले में बनायी गयी योजनाएं सफल होंगी। संपत्ति से संबंधित निर्णय लाभप्रद होंगे। योजनाओं को कार्यरूप में परिणित करने का समय है, अधिकारी से सहयोग मिलेगा। १ से १६ तक स्वास्थ्य के प्रति सावधानी रखें। दुर्घटना न होने दें। नौकरी एवं व्यवसाय में व्यवधान की स्थिति न आने दें। यात्रा कम से कम करें। अधिकारी तथा व्यावसायिक मामले में विवाद की स्थिति न आने दें। क्रोध एवं भावुकता पर नियंत्रण रखना ही हितकर होगा। ऐसी स्थिति में लिये गये निर्णय गलत हो सकते हैं। धैर्य ही लाभप्रद होगा।

तुला (र, रा, रु, रे, रो, त, ती, तू, ते)

१ से १५ तक का समय आर्थिक मामलों के लिए उत्तम है, आकस्मिक लाभ भी मिल सकता है। यदि राजनीतिक लाभ उठाने की स्थिति में हैं, तो उस दिशा में विशेष प्रयास करें, सफलता प्रतीक्षा कर रही है। विदेश-यात्रा का भी प्रयास सफल होगा। शोधकार्य, उच्च शिक्षा, लेखन व नवीन प्रयोग के लिए उत्तम समय है। १६ से २८ के मध्य स्वास्थ्य के प्रति सतर्क रहें। दुर्घटना व विवाद की स्थिति से अपने को दूर रखें। यात्रा भी करनी पड़ सकती है। व्यवसाय के प्रति विशेष सावधानी रखें। व्यवधान न आने दें। संतान या प्रियजन के कारण अपयश की स्थिति न आने दें।

वृश्चिक (तो, न, नी, नू, ने, नो, य, यी, ये)

१ से १० तथा १८ से २४ के मध्य राजनेता, अधिकारी से लाभ उठाने का प्रयास सफल होगा। पद-वृद्धि भी संभव है। यात्रा भी सुखद हो सकती है। नारी सुख व आर्थिक मामले में किये जा रहे प्रयास सफल होंगे। भौतिक सुख में वृद्धि हो सकती है। ससुराल से सहयोग का लाभ

मिल सकता है। प्रियजन मिलन भी संभव है। ११ से १७ के मध्य स्वास्थ्य के प्रति सतर्क रहें। व्यावसायिक एवं पारिवारिक उलझनों का भी सामना करना पड़ सकता है। शत्रु-पक्ष के प्रति उदासीन न रहें।

धनु (ये, यो, भ, भी, भू, ध, फ, ढ़, भे)

१० से २४ के मध्य कीर्ति, प्रमोशन। धन आदि की दिशा में किये जा रहे प्रयास सफल होंगे। स्थान या पद से परिवर्तन की प्रक्रिया में भी सफलता मिलेगी। पिता, अधिकारी, राजनेता से सहयोग मिलने का प्रयास भी सफल रहेगा। व्यवसाय के क्षेत्र में अधिक सक्रिय रहें, उत्तम लाभ मिल सकता है। राजनीतिक लाभ उठाने की दिशा में चल रहे प्रयास विशेष लाभप्रद होंगे।

मकर (भो, ज, जी, जू, जे, जो, ख, खी, ग, गी)

१८ से २८ तक प्रतिष्ठा, धन, प्रमोशन आदि की दिशा में किये जा रहे प्रयास फलीभूत होंगे। पिता व अधिकारी से लाभ भी मिल सकता है। विदेश-यात्रा का प्रयास भी सफल होगा। उच्च शिक्षा, भौतिक प्रगति की दिशा में किये जा रहे प्रयास लाभप्रद होंगे। २ से १७ के मध्य व्यवसाय में सावधानी रखें। अधिकारी से विवाद की स्थिति कष्टप्रद होगी। संतान के कारण भी मानसिक क्लेश की स्थिति आ सकती है। यात्रा में सावधानी रखें, आर्थिक हानि के प्रति भी सतर्कता आवश्यक है।

प्रो. पद्मेश

कुंभ (गू, गे, गो, स, सी, सु, से, सो, द, श्र)

१ से १५ तक का समय व्यावसायिक सफलता के लिए उत्तम है। बेरोजगार व्यक्तियों को रोजगार प्राप्ति की दिशा में प्रयास करने पर सफलता मिल सकती है। पद व प्रतिष्ठा की दिशा में भी लाभ मिलेगा। नवीन योजना को कार्यरूप में परिणित करने पर ही सफलता मिलेगी। भौतिक संपन्नता की ओर अग्रसर होंगे। उपहार एवं सम्मान की भी संभावना है। शिक्षा, प्रतियोगी व विभागीय परीक्षा में भी सफलता संभव है। १६ से २८ के मध्य स्वास्थ्य एवं प्रतिष्ठा के प्रति सतर्क रहें।

मीन, (दी, दू, थ, झ, दे, दो, च, ची)

१७ से २४ के मध्य व्यावसायिक कार्यों में विशेष सफलता मिलेगी। धन संबंधित कार्य भी सफल होंगे। यात्रा की स्थिति भी सुखद बनती है। विदेश-यात्रा का प्रयास भी सफल होगा। ससुराल से सहयोग मिलेगा। राजनीतिक लाभ उठाने की स्थिति में भी सफलता मिलेगी। १ से १० तक स्वास्थ्य, धन-हानि व दुर्घटना के प्रति सतर्क रहें।

१८, पद्मेश लेन, रतनलाल नगर, कानपुर-२२

नयी कृतियां
संस्मरणों की दुनिया

यहां जिन दो पुस्तकों की मैं चर्चा कर रहा हूं, उनमें पहली पुस्तक है, श्रीमती महादेवी वर्मा की नवीनतम कृति **'मेरे प्रिय संस्मरण'**। यह एक ऐतिहासिक सत्य है कि महादेवी वर्मा का गद्य-लेखन आधुनिक हिंदी गद्य को एक महत्त्वपूर्ण अवदान है और साहित्य की एक बड़ी उपलब्धि है। काव्य-संसार में उन्हें जितनी ख्याति मिली है, उतनी ही ख्याति संस्मरणकार के रूप में उन्होंने पायी है। अत्यंत सीधी और सहज भाषा में वे ऐसे संस्मरण सुना देती हैं कि पाठक उनके साथ अपने को भी जोड़ लेता है। प्रस्तुत पुस्तक में तेरह संस्मरण हैं और इनका चुनाव स्वयं महादेवीजी ने किया है। अपनी भूमिका में लेखिका ने लिखा है—'कहानीकार जैसे अनेक अनुभव-संस्कारों का संयोजन कर पात्रों द्वारा कथा को किसी परम बिंदु तक पहुंचाने का लक्ष्य रखता है, वैसा लक्ष्य लेखक का नहीं हो सकता। मेरे संस्मरण किस विधा के अंतर्गत हैं, यह जानने की मेरी इच्छा नहीं है।'

मैं सोचता हूं, महादेवीजी को क्या किसी भी संस्मरणकार को ऐसी इच्छा नहीं होनी चाहिए। इस पुस्तक का एक-एक संस्मरण किसी सत्यकथा से कम नहीं है और यदि वह सत्यकथा लेखिका की जिंदगी का ही एक टुकड़ा हो, तो समझना चाहिए कि साहित्य के महान प्राचीर में वह ध्रुव का टुकड़ा है। ऐसे प्रसंग पाठकों को आस्थावान धरातल देते हैं और जिंदगी के सूनेपन में प्रकाश-स्तंभ का काम करते हैं। उदाहरण के लिए 'नीलू' शीर्षक से लिखे गये एक संस्मरण का आरंभ—

'नीलू की कथा उसकी मां की कथा से इस प्रकार जुड़ी हुई है कि एक के बिना दूसरी अपूर्ण रह जाती है। उसकी अल्सेशियन मां उत्तरायण में लूसी के नाम से पुकारी जाती थी। हिरनी के समान वेगवती, सांचे में ढली हुई देह, जिसमें व्यर्थ कहने के लिए एक तोला मांस भी नहीं था, ऊपर काला आभास देनेवाले भूरे पीताभ रोम, बुद्धिमानी का पता देनेवाली काली, पर छोटी आंखें, सजग खड़े कान और सघन रोयेंदार तथा पिछले पैरों के टखनों को छूनेवाली लंबी पूंछ, सब कुछ उसे राजसी विशेषज्ञता देता था। थी भी वह सामान्य कुत्तों से भिन्न।'

भारतीय उपमहाद्वीप में शीतयुद्ध
COLD WAR IN INDIAN SUB-CONTINENT
नब्बे वर्ष
बनारसीदास चतुर्वेदी
तन्त्र शक्ति
तन्त्र विद्या
मेरे प्रिय संस्मरण

स्पष्ट है यह रेखाचित्र नीलू नाम के अल्शेसियन कुत्ते का है। इसमें उस कुत्ते के कर्त्तव्य और ज्ञानबोध से लेकर उसकी आसान मृत्यु तक की घटनाएं इस तरह लिखी गयी हैं कि यह रेखा-चित्र किसी कहानी से कम नहीं है। महादेवीजी ने नीलू को-जैसे मनुष्यत्व दे दिया है। वही सहज आत्मबोध-भावना और वैसा ही विश्वास। **प्रकाशक—नेशनल पब्लिशिंग हाउस, नयी दिल्ली, मूल्य—२६ रुपये।**

नब्बे वर्ष : वयोवृद्ध पत्रकार श्री बनारसीदास चतुर्वेदी ने अपनी इस पुस्तक में अपने जीवन के नब्बे वर्षों का लेखा-जोखा प्रस्तुत किया है। चतुर्वेदीजी ने हिंदी साहित्य के उस काल में महत्त्वपूर्ण योग दिया है, जब हिंदी संपन्नता के द्वार तक पहुंचने के लिए लालायित थी। अपने पिता से लेकर विद्यार्थी जीवन, फिर विभिन्न यात्राएं और उसके बाद एक संपादक के नाते अपने योगदान की चर्चा उन्होंने इस पुस्तक में की है। चतुर्वेदीजी का आरंभिक जीवन फीरोजाबाद और मैनपुरी में बीता है। दोनों के बीच की दूरी ४२ मील है, लेकिन तब वहां रेल-मार्ग नहीं था। इक्के और बैलगाड़ियों से ही काम चलाना पड़ता था। उनके पिता को वेतन के नाम पर आठ-दस रुपये मिलते थे। इतने पैसों से वे बैलगाड़ी में नहीं जा सकते थे। इतने गरीब थे, चतुर्वेदीजी के पिता। सन १९०० से चतुर्वेदीजी का विद्यार्थी जीवन शुरू हुआ, परंतु दस-बारह रुपये जिस परिवार की आमदनी हो, वहां का लड़का कितना पढ़ सकता है? इंटर के बाद उन्हें पढ़ाई छोड़नी पड़ी और सन १९०९ में विवाह भी हो गया। गौना हुआ, तीन वर्ष बाद। आज की दुनिया में बाल-विवाह और फिर विवाह के बाद तीन वर्ष की प्रतीक्षा-जैसी बात सोची ही नहीं जा सकती।

इस पुस्तक में चतुर्वेदीजी ने अपने पत्रकारिता जीवन का इतिहास लिखा है, फिर महात्मा गांधी से साहचर्य, उसके बाद प्रवासी भारतीयों के लिए उनकी सेवाएं, फिर हिंदी और हिंदी-भवन के सिलसिले में आनेवाली कठिनाइयों का उल्लेख है। 'विशाल भारत' के संपादक के नाते महान व्यक्तियों से मिलने का उन्हें अवसर मिला है। चतुर्वेदीजी ने लिखा है, जवाहरलालजी ने एक भाषण में कहा था, 'दिल्ली हैज नो सोल।' 'जमीन क्या मेरी जेब में रखी है

कि दे दूं। सभी लोग केंद्रीय स्थल पर जमीन चाहते हैं।'

वर्षों बाद दिल्ली अब भी नहीं बदली। अब जमीन नहीं है और आत्मा तो जो थी भी, वह चली गयी।

बनारसीदासजी के ये जीवन-संस्मरण नयी और पुरानी दुनिया को जोड़ते हैं। **प्रकाशक—बनारसीदास अभिनंदन समिति। मूल्य--२५ रुपये।**

आदमी से आदमी तक : देश की राजधानी के विभिन्न अंचलों में बसी बस्तियों के सजीव रिपोर्ताजों का सुंदर रेखा-चित्रों से युक्त संकलन है। लेखक हैं—भीमसेन त्यागी और रेखा-चित्र हरिपाल त्यागी ने बनाये हैं। इन रिपोर्ताजों में संबंधित बस्ती की जिंदगी का सजीव चित्रण हुआ है। यह चित्रण चाहे दिल्ली रेलवे स्टेशन का हो या सराय रोहल्ला में बसे गाड़िया लोहारों की बस्ती का, या शहर से दूर बसी सीमापुरी का। यद्यपि ये रिपोर्ताज अलग-अलग हैं, फिर भी गरीबी, उदासी और शोषण के वावजूद सर्वत्र व्याप्त जिजीविषा ने उन्हें परस्पर संबद्ध भी कर रखा है, और इस तरह यह संकलन एक अच्छे उपन्यास-जैसा असर भी रखता है। 'पहिये से बंधी जिंदगी', 'चलते हुए घर', 'काले पहाड़ का दर्द', 'खुदा की राह पर', 'दूसरों के घर बनाने-वाले' संकलन के कुछ मर्मस्पर्शी रिपोर्ताज हैं। 'न्याय की नागमणि' में अदालत की
जिंदगी और 'एक और चक्रव्यूह' में
प्लेस तथा उसके आस-पास की
का प्रभावपूर्ण चित्रण है। संकलन
विशेषता रेखा-चित्र हैं।

मूल्य--पचीस रुपये।

सृजन का सुख-दुःख : आत्मकथा,
और रिपोर्ताजों का मिला-जुला संग
लेखिका हैं—प्रतिभा अग्रवाल। इस
में लेखिका ने अपने रंगमंच संबंधी
भवों को बेहद आत्मीयता से चित्रित
है। पुस्तक पांच खंडों में बंटी है—
और अंकुर', 'सहयात्री—सहभागी'
कत्ता का हिंदी रंगमंच', 'मन का
'सुरक्षित प्रतिबिंब' एवं 'प्रश्न ...
... और प्रश्न'। प्रथम दो खंड
चरित्र और संस्मरणात्मक शैली में
प्रथम खंड में उस वातावरण का
है, जिसमें लेखिका पली-बढ़ीं और
उनके मन में रंगमंच के प्रति प्रेम
किया। जैसा कि शीर्षक से स्पष्ट है,
यात्री—सहभागी' में जाने-माने रंग
की यादें हैं। 'कलकत्ता का हिंदी
खंड में लेखिका ने इस अहिंदीभाषी
नगर में हिंदी रंगमंच के विका
परिचय दिया है। 'प्रश्न ... प्रश्न
प्रश्न' में प्रतिबद्धता, रायल्टी, दर्श
मानसिकता, नाट्य-गतिविधियों के
शासकीय दृष्टिकोण, आदि पर
त्तेजक प्रश्न उठाये गये हैं। लेखि
विचार में बड़े औद्योगिक प्रतिष्ठ
कई माध्यमों से नाट्य उन्नयन में

हो सकते हैं। मूल्य—तीस रुपये। उपरोक्त दोनों पुस्तकों के प्रकाशक हैं—**राजकमल प्रकाशन, नेताजी सुभाष मार्ग, दरियागंज, नयी दिल्ली-२। —बु. प्र. शु.**

तंत्र-विद्या पर दो पुस्तकें

तंत्र-मंत्र—जैसी रहस्यमयी और गुप्त विद्याएं भारतीय संस्कृति में अति प्राचीनकाल से प्रचलित हैं। एक समय ये विद्याएं विकास के चरम शिखर पर पहुंची हुई थीं; किंतु कालांतर में इनका ह्रास होने लगा और ये लुप्तप्राय हो गयीं। इधर दो दशाब्दियों से पुनः इनकी प्रगति हुई है; फलतः कई एक विद्वानों ने इन विषयों पर पुस्तक-रचना की है। आलोच्य पुस्तक **'तन्त्र-शक्ति'** भी एक ऐसी ही कृति है।

ग्यारह रश्मियों (अध्यायों) से मंडित, तंत्र-विद्या की यह पुस्तक अपने विषय के प्रस्तुतीकरण में पूर्ण सफल है। इस कृति में तंत्र-साधना का परिचय, प्रमुख अंग, विधान, पारिभाषिक व्याख्या, विविध प्रकार के तांत्रिक प्रयोग, औषधियां, वानस्पतिक कल्प तथा रत्न आदि पर पर्याप्त उपयोगी सामग्री प्राप्त होती है। पुस्तक की भाषा-शैली पांडित्यपूर्ण होकर भी सरल, रोचक और सुबोध है। विषय-प्रतिपादन क्रमिक और व्यवस्थित रूप में है। अंतिम पृष्ठों में उलूकतंत्र वर्णित है, जो तंत्र-शास्त्र का एक रोमांचक आयाम उजागर करता है।

प्रकाशक—सुबोध पब्लिकेशंस, २।३-बी, अंसारी रोड, नयी दिल्ली-२, मूल्य—आठ रुपये। —शत्रुघ्नलाल शुक्ल

तंत्र-विद्या : तंत्र-शास्त्र पर इधर अनेक पुस्तकें प्रकाशित हुई हैं, हिंदी में भी एवं अन्य भाषाओं में। प्रस्तुत पुस्तक में 'प्रस्तुति' शीर्षक अध्याय के अंतर्गत जैन, ब्राह्मण एवं बौद्ध तंत्र शास्त्र का परिचय दिया गया है। 'तंत्र-प्रयोग' शीर्षक अध्याय में लेखक ने विधिक्रम के अतिरिक्त राशियों के फलाफल पर विचार किया है। बाद के अध्यायों में उन्होंने शांति-तंत्र, वश्य-तंत्र, स्तंभन-तंत्र, विद्वेषण-तंत्र, उच्चाटन-तंत्र, मारण-तंत्र, कल्प-तंत्र, मनुष्य-पशु-पक्षी-तंत्र एवं साधना-तंत्र के कुछ सरल, कुछ दुष्कर उपाय बतलाये हैं। लेखक ने प्रस्तुत पुस्तक लिखने में काफी परिश्रम किया है। पुरानी पड़तों-गुटकों, यतियों एवं अन्य तंत्र-विज्ञों से उन्हें जो जानकारी मिली, उसे उन्हें सरल शब्दावलि में प्रस्तुत कर दिया है। तंत्र-विद्या के व्यावहारिक पक्ष में रुचि रखनेवाले लोगों के लिए यह पुस्तक पठनीय है। वे ही इन प्रयोगों की सत्यता या प्रभावशीलता की परख कर सकते हैं। फिर भी तंत्र-विधा में किन-किन पशु-पक्षियों की सहायता से कौन-कौन से कार्य किये जा सकते हैं, इसकी जानकारी आम पाठक के लिए भी दिलचस्प हो सकती है।

लेखक—करणीदान सेठिया, प्रकाशक—सेठिया ब्रदर्स, ९ आरमेनियन स्ट्रीट, कलकत्ता-१, मूल्य—सौ रुपये।

गांधी साहित्य

महात्मा गांधी ने अपने जीवन और विचारों से देश, काल और जाति के परे सभी लोगों को प्रभावित किया है। एक ओर जहां उनके अहिंसा, सविनय-अवज्ञा और अन्याय के विरुद्ध आमरण-अनशन के सिद्धांतों ने अमरीका, अफरीका और आयरिश जनता और उनके अधिकारों के लिए लड़नेवाले नेताओं के चिंतन को नयी दिशा दी, वहां उनके अपने जीवन की घटनाओं ने भी मनुष्य को मनुष्य बनाये रखने के प्रयत्नों में योग दिया।

सस्ता-साहित्य मंडल, नयी दिल्ली और श्रीकृष्ण जन्म संस्थान मथुरा ने संयुक्त रूप से एक पुस्तकमाला प्रकाशित की है, जिसमें गांधीजी के जीवन के प्रेरणास्पद प्रसंग संकलित हैं। इस पुस्तक-माला के संपादक हैं—विष्णु प्रभाकर। प्रत्येक पुस्तक का मूल्य तीन रुपये है।

पुस्तकों के शीर्षक हैं—प्रभु ही मेरा रक्षक है, संगठन में ही शक्ति है, यदि मैं तानाशाह बना, त्याग हृदय की वृत्ति है; मेरा पेट भारत का पेट है, मैं महात्मा नहीं हूं, यह तो सार्वजनिक पैसा है; हम कभी दंभी नहीं बनें, मेरा धर्म सेवा करना है, हे राम, हे राम।

जैसा कि इन शीर्षकों से स्पष्ट है, इन सभी पुस्तकों में ऐसे प्रसंग दिये गये हैं, जो आज के नैतिकता शून्य जीवन में हमें उन शाश्वत मूल्यों से परिचित कराते हैं, जो हमें 'मनुष्य' बनाये रखते हैं।

भारतीय उपमहाद्वीप में शीत-युद्ध : प्रस्तुत पुस्तक में इस उप महाद्वीप की राजनीतिक, आर्थिक एवं सैनिक समस्याओं का वैज्ञानिक विश्लेषण दिया गया है। पचीस-अध्यायों में बंटी इस पठनीय पुस्तक में भारत-पाकिस्तान-अफगानिस्तान की राजनीति एवं उप-महाद्वीप के शक्ति-संतुलन को बिगाड़नेवाली विदेशी शक्तियों की कूटनीतिक चालों पर प्रकाश डाला गया है। ईरान में सत्ता परिवर्तन, अफगानिस्तान में सोवियत हस्तक्षेप एवं पाकिस्तान पर अमरीकी वर्चस्व के कारण इस उप-महाद्वीप में जारी शीत-युद्ध कभी भी 'गर्म युद्ध' में बदल सकता है। **प्रकाशक—प्रकाश बुक डिपो, बड़ा बाजार, बरेली, मूल्य—पचीस रुपये।**

सांची के स्तूप : प्रस्तुत पुस्तक में जगदीश चंद्र ने भारत के इन विश्व-प्रसिद्ध स्तूपों की कल्पना, एवं उनकी स्थापना-कला पर विस्तृत प्रकाश डाला है। लेखक ने स्तूपों के तोरण-द्वारों, स्तंभों आदि की शिल्प कला का भी अच्छा विवेचन किया है। जगदीश चंद्र प्राचीन भारतीय इतिहास, कला और संस्कृति के ख्याति प्राप्त विद्वान हैं और अभावों के बीच रह कर भी प्राचीन भारतीय संस्कृति और कला को जनता के सामने लाने के लिए प्रयत्नशील हैं। पुस्तक अनेक चित्रों एवं रेखा-चित्रों से सुसज्जित हैं। **प्रकाशक—शिखर प्रकाशन, २८९६, सिरकीवालान, हौज काजी, दिल्ली, मूल्य—तीस रुपये। —भगवती प्रसाद डोभाल**

एक जादूगर का खौफनाक अंत

नोबल पुरस्कार विजेता जरमन लेखक थामस मान की गणना विश्व के प्रमुख लेखकों में होती है। उन्होंने एक समयचेता लेखक के दायित्व का निर्वाह करते हुए अपनी रचनाओं में फासिजम का प्रखर विरोध किया। 'मैजेशियन एंड द मारियो' उनकी ऐसी ही एक ख्याति-प्राप्त कृति है। सार-संक्षेप में प्रस्तुत है, उनकी इसी श्रेष्ठ कृति का सार। प्रस्तोता : गंगा प्रसाद विमल

उस समुद्रतटीय कस्बे की यादें स्मृति में बहुत खुशनुमा नहीं हैं। पहले क्षण वहां की हवा ने ही हमें परेशान किया और फिर सिपोला के भयंकर कारनामों ने तब गजब ही ढा दिया। उन स्मृतियों की ओर झांकते हमें लगा—जैसे वे तमाम घटनाएं पहले ही नियत थीं; यह भी कि उन स्थितियों में बच्चों को भी हमारे साथ होना था...। शुक्र है कि बच्चों को यह अहसास ही नहीं हुआ कि प्रहसन कहां खत्म हुआ और त्रासदी कहां शुरू हुई, और हमने उन्हें उनके इस खुशनुमा विश्वास में ही रहने दिया कि सब चीजें शुरू से आखिर तक खेल-सी थीं।

दूसरी दुनिया के लोगों का पड़ाव

यह कस्बा मुख्य शहर से १५ मील दूर था और ग्रीष्म के दिनों में सैलानियों का एक लोकप्रिय स्थान था। मीनारी कस्बे के रूप में विख्यात इस जगह की वह मीनार लुप्त हो चुकी थी, जिसे देखने के लिए सैलानी बेवजह कोशिश करते और निराश होते। अब यह एक विशाल पर्यटन-स्थल के रूप में फैल चुका था, और कुछ साल तो सूना ही रहा, बस जैसे दूसरी दुनिया के लोगों का कोई पड़ाव हो। परंतु फिर इस कस्बे के दिन फिरे। मुख्य शहर के पास ही समुद्र के किनारे बसे इस कस्बे में चहल-पहल होनी शुरू हुई। इतालवी लोगों के अलावा विदेशी पर्यटक भी आने लगे। एक तो यह बड़े शहर के करीब था, दूसरे आबोहवा भी अच्छी थी और सबसे बड़ी बात थी कि यह सस्ता शहर था। खाड़ी के तट पर रेत में सूर्य स्नान करनेवाले फैले रहते, बच्चे समुद्र में छोटी नावें चलाते और साथ में होते फूल या ठंडा पेय बेचनेवाले लोग।

ऐसे दृश्यों ने मीनारी कस्बे में हमारा स्वागत किया था। माहौल काफी आनंददायी होता। हमने सोचा कि हम वक्त से कुछ पहले ही चले आये। ये अगस्त के

दिन थे, इतालवी मौसम पूरे यौवन पर था और अजनबियों के लिए वक्त ही नहीं था कि वे इस जगह की खास खूबसूरती के बारे में कुछ जानने के लिए कुछ पल निकाल पायें। अहा ! दुपहरी में कहवा-घरों की भीड़ क्या दृश्य दिखाती थी। उदाहरण के लिए 'एक्वीजिटो' कहवाघर ही लें, जहां मारिओ हमारी मेजों की देखरेख करता था। वही मारिओ जिसके बारे में आगे बताऊंगा। वहां तो बैठने की जगह पाना एकदम नामुमकिन बात थी, और आपसी बातचीत के बीच कई वाद्ययंत्रों की धुनें खास चमत्कारी असर छोड़ती थीं।

निश्चय ही हमें वहां सितंबर में आना चाहिए था, जब सैलानियों के जत्थे कस्बा छोड़ जाते या फिर मई में आना चाहिए था, जब अभी समुद्र का जल इतना ऊष्मा भरा रहता कि आसानी से समुद्र-स्नान का आनंद उठाया जा सकता था। लेकिन मीनारी कस्बा इन मौसमों में भी खाली नहीं रहता, पर जीवन-धारा थोड़ी शांत रहती और उसमें संकीर्ण राष्ट्रीयता का उबाल नहीं रहता। अगस्त में तो होटल, रोम और फ्लोरेंसवासियों से इस कदर अंटे रहते कि बाहर का आदमी अपने को बिल्कुल कटा, अलग-थलग महसूस करता।

इस अलगाव का अहसास हमें उस पहली शाम को ही हुआ था, जब हम होटल की मेज के गिर्द जमा हुए थे। बच्चों ने बाहर शिकारे पर कुछ खाली मेजें देखली थीं और वे, वहां जा पहुंचे थे। कायदे से तो वह पूरा भोजन-कक्ष ही खाली था। जब हमने बरामदे के बाहर शिकारे की मेजों पर भोजन करने की अपनी इच्छा का ऐलान किया, तब कुछ-कुछ नरम परंतु अपमानजनक तरीके से हमें बताया गया कि वे मेजें होटल के दूसरे ग्राहकों के लिए आरक्षित हैं। कौन

से ग्राहक ? हम भी तो उनके ग्राहक थे।

किस्सा शुरू हुआ

अभी हमें इस ग्रैंड होटल में आये तीन-चार दिन ही हुए थे और इससे पहले कि हम पूरी तरह व्यवस्थित होते कि दूसरा अनुभव हमारे सामने आया। अब बरामदे की मेजों का किस्सा नहीं था। बच्चे होटल कर्मचारियों से घुलमिल गये थे। अब किस्सा शुरू हुआ हमारा और बरामदे में बैठनेवाले ग्राहकों का। उन ग्राहकों में रोम के किसी कुलीन घराने के लोग थे। ये हमारे कमरों के करीब ही टिके हुए थे। उन लोगों की बूढ़ी महिला ने हमारे बच्चे की मामूली खांसी को छुतहा काली खांसी के रूप में प्रचारित किया और होटल व्यवस्थापकों को शिकायत कर दी। हमने समझाने का प्रयत्न किया—उन्हें बताया कि यह खांसी ठंडे पानी में नहाने और हवा के कारण बच्चे को लगी है। पर हमारे कहने के बावजूद कि यह छुतहा खतरा नहीं है, वे तनिक भी जोखिम उठाने को तैयार न हुए।

भाग्य से हमें होटल के डॉक्टर से परामर्श करने की अनुमति मिल गयी। डॉक्टर ने कहा कि खांसी अब करीब-करीब ठीक है और कोई छूत का खतरा नहीं है। हमने चैन की लंबी सांस ली कि चलो मामला तय हुआ, परंतु सब कुछ जानने के बाद भी होटल-मैनेजर ने कहा कि हमें दूर अलग बने क्षेत्र में रहना होगा। यह बहुत अपमानजनक था। जगह बदलने की बजाय हमने तय किया कि हम होटल ही बदल देंगे। डरपोक होटलवाले बूढ़ी महिला को डॉक्टर का निर्णय बता ही नहीं पाये होंगे। होटल बदलने का यह विचार हम काजा एल्योनोरा से हाल ही में बनी अपनी दोस्ती के कारण पक्काकर पाये थे। एल्योनोरा और उसके पति सिग्नोरा एंगोलियीरि बहुत प्यारे लोग थे। वह थी पतली कमसिन और वे थोड़े गंजे। फ्लोरेंस में उनकी बड़ी जायदाद थी और वे गरमी यहां समुद्रतट पर बिताते थे। एल्योनोरा-जैसी महान अभिनेत्री के सैकड़ों चित्र उनके विशाल घर में टंगे थे। होटल बदलकर अब हम नयी जगह आ गये थे।

एक बेहूदा लड़का

फिर भी समुद्रतट पर हमें वह कुलीन रोमन बुढ़िया दिख जाती थी। हमने अपने बच्चे को सख्त ताकीद दी थी कि वह बिल्कुल उसके करीब न जाए।

काफी गरमी थी। ठीक अफरीकी गरमी की तरह। पानी से बाहर आने का मन ही नहीं करता था। कुछ लोग तो बहुत कम कपड़े पहने होते थे।

रेतीले तट पर मध्यवर्गीय लोग फैले पड़े थे। तभी हमने देखा कि कोई चीख रहा है। एक लड़का जरमन उच्चारण में कुछ कह रहा था। तंबियाये जिस्मवाला वह लड़का कायरों की तरह चीख रहा था। किसी रेतीले कीड़े ने उसे का खाया था। वह अपने को न सिर्फ घाय

महसूस कर रहा था बल्कि जहर विंधा महसूस कर रहा था। वही डॉक्टर बुलाया गया, जिसने हमारे बच्चे के बारे में ठीक राय दी थी। वह अच्छे स्वभाव का आदमी था। उसने बच्चे को आश्वस्त किया कि कुछ नहीं हुआ। फिर वह बच्चा हमारे बच्चों के रेतीले किले तोड़ने को दूसरी सुबह नहीं दिखायी दिया। वह बच्चों के लिए एक बेहूदा लड़का था।

इस बारह वर्षीय लड़के ने भी हमारी छुट्टियां बरबाद करने में अपनी भूमिका निभायी थी। वह संकुचित राष्ट्रीय भावना की गिरफ्त में था और तमाम विदेशी बच्चों के खेल में बाधाएं पैदा करता था। उस रेतीले तट पर बहुत से राष्ट्रभक्त लड़के थे। यह एकदम अस्वाभाविक-सी चीज थी। इसी के रहते बड़ी उम्र के लोग भी कई बार झगड़ पड़ते थे। हमारे दोनों बच्चे चुपचाप हंगामे से अलग आ खड़े होते।

जुर्माने की नौबत

अपनी थोड़ी लापरवाही से आखिर में हमें भी झगड़े का हिस्सा बनना पड़ा। यह किसी तरह की दुर्घटना की वजह से उपस्थित स्थिति नहीं थी। एक वाक्य में कहूं, तो हम सार्वजनिक नैतिकता के जुर्म में फंस गये थे। हमारी छोटी बेटी, जो आठ बरस की थी, बल्कि इससे एक साल छोटी ही लगती थी, पतली इतनी थी कि-जैसे कोई चूजा हो, देर तक समुद्र में नहाती रही। बाद में गुनगुनी धूप में खेलती भी रही। उसकी नहाने की पोशाक रेत में

लेखक

लेटने के कारण सख्त हो गयी थी, तब हमने सुझाया कि वह उसे उतार दे और पानी में छांटकर फिर सूखने के लिए डाल दे। इस बीच वह नंगी ही समुद्र के पानी में खिलवाड़ कर सकती है। बस तभी हम लोगों को गुस्सा और ऐतराज सहना पड़ा। गुस्सा तो बेटी के निर्वस्त्र नहाने का था, जिसका सीधा ताल्लुक हमसे ही था। मैं कहना चाहता था कि पिछले दशक में दुनियाभर की राय नंगेपन के बारे में बदल चुकी है और फिर वह तो एक बच्ची है, जो अपने मूलभूत आजादी के अधिकार का इस्तेमाल कर रही थी।

संकीर्ण राष्ट्रवादी बच्चों ने हो-हल्ला मचाया। वे अब अचानक ही अनुशासन, नैतिकता की बात करने लगे थे। हमने तो इटली में समुद्र-स्नान के कानून को तोड़कर जुर्म किया था। भयंकर जुर्म। वे कह रहे थे कि हमने इतालवी आतिथ्य का दुरुपयोग किया है। हमें नगर-निगम के

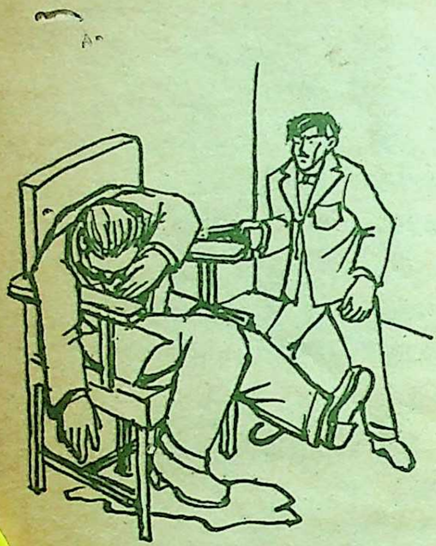

दफ्तर फोन किया गया। उन्होंने हमारे ऊपर ५० रुपये जुर्माना कर दिया। यह ज्यादा ही अपमानजनक मामला था। काश कि इतना भर ही होता और हम सिपोला के भयंकर कारनामों के साक्षी होने से बच जाते। पर परिस्थितियां ऐसी थीं कि हम नया निर्णय नहीं ले सके। एक कवि ने कहीं कहा है 'वह आलस ही है, जो हमें खराब स्थितियों में डाल देता है।' लोगों की सहानुभूति ने हमें धीरज बंधाया। एल्योनोरा के निवास पर लोगों ने सजा की पर्याप्त निंदा की।

सरकारी अनुशासन

खाने की मेज पर भोजनोपरांत हुई गोष्ठियों ने इस बात पर तीखी टिप्पणी की और कहा कि ऐसी घटनाएं हमारे मुल्क पर धब्बा लगाती हैं। उन्होंने शिकायत करनेवाले लोगों को सबक सिखाने की भी सोच डाली। परंतु दूसरे दिन शिकायत करनेवाला और उनका सारा दल वहां से रफूचक्कर हो चुका था। जो भी हो, उनका जाना तसल्लीबक्श था।

यह तो मैंने बताया ही नहीं कि सैलानियों का मौसम शुरू होने के बाद हर दिन, सरकारी अधिकारियों ने हमें अनुशासित करने का काम शुरू कर दिया था। उस कस्बे से सिर्फ वही शिकायती परिवार नहीं गया था, बल्कि ढेरों लोग जाने लगे थे और वह तटीय कस्बा धीरे-धीरे राष्ट्रीयता की संकीर्णता से विकेंद्रीकृत होता गया। अब हम उस जगह भोजन कर सकते थे जहां पहली बार अपमानित हुए थे। हम अपने मेजबान के यहां खुश थे। पर हमारे बुरे ग्रह थे कि मौसम में भी अचानक तब्दीली आने लगी थी। कभी आसमान साफ होता तो कभी झड़ी लग जाती।

जादूगर सिपोला

तभी शाही जादूगर सिपोला ने पोस्टरों के जरिये अपने आने की घोषणा जारी कर दी। यह घोषणा हर तरफ थी। यहां तक कि एल्योनोरा की भोजन की मेज पर भी। वह नामी घुमक्कड़ कलाकार था, मनोरंजनकर्ता और जादुई कौशलवाला। बस यह घोषणा ही बच्चों की धमा-

चौकड़ी के लिए काफी थी। वे हमसे टिकट खरीदने की प्रार्थना करने लगे। पहले तो हम शंकालु रहे। फिर बच्चों के आगे यह सोचकर हथियार डाल दिए कि चलो सिपोला के करतब देख ही लिए जाएं। हमने एगिग्रोलीरि से चार टिकटें ले लीं, उसने अपने मेहमानों को बेचने के लिए कई स्टॉल ही इस निमित्त ले लिये थे। र उसे भी सिपोला से बहुत अपेक्षा नहीं थी।

सिपोला का कार्यक्रम. एक छोटे-से हाल में तय था, जो पहले कभी एक सिनेमाघर था—जहां कभी हफ्तेवार ार्यक्रम होते थे। हम वहां पहले कभी हीं गये थे। वहां जाने का रास्ता मुख्य चौराहे की एक सड़क से था, जिसके किनारे राजवंशी शासन के दौरान बना एक किला था, जिस पर 'बिकाऊ है' की तख्ती लटकी रहती थी। उस सड़क के किनारे सभी बढ़िया दूकानें थीं।

हमने टिकट खरीद लिये। बायीं ओर तीसरी कतार में वह जगह थी, जहां हमें बैठना था। देर से आनेवाले लोग धीरे-धीरे आ रहे थे। खड़े होने की जगह भी, जो पीछे थी, ठसाठस भर गयी थी। हम यहां स्थानीय लोगों को देखकर खुश थे क्योंकि वे रंगबिरंगी तबीयतों के लोग थे, उनमें से कइयों से तो हमारी जान-पहचान भी हो गयी थी। बच्चों की गालें थकान और उत्तेजना से चमक

घरेलू उपचार

जुकाम, कारण और निवारण

रात्रि जागरण, अजीर्ण, कड़ी धूप घूमना, एकाएक पसीना बंद होना, वर्षा जल में भीगना, ठंड लगना आदि विभिन्न ारणों से तत्काल जुकाम हो जाता है।

देहात की अपेक्षा शहर के निवासियों यह रोग विशेष रूप से शीघ्र होता है। संचित दोष के कारण भी विभिन्न ों में उपद्रव रूप में भी इस रोग का क्रमण हो जाता है, जैसे श्वास रोग, ररोग, टांसिल बढ़ना, नासारोग।

निम्न एक उपाय करने से आशातीत भ मिलता है :—

एक प्याला गरम पानी में आधा-आधा नींबू का रस डालकर सुबह, दोपहर, शाम सेवन करें।

२. एक चम्मच सौंफ, दो लौंग एक प्याला पानी में उबालें आधा शेष रहने पर छानकर यथा रुचि चीनी डालकर सुबह, दोपहर, शाम उपरोक्त विधि से पकाकर पियें।
३. शुद्ध हींग पानी में घोलकर दिन में दो-तीन बार सूंघने से लाभ होता है।
४. चार काली मिर्च, दस बताशे एक प्याला पानी में पकाकर सुबह-शाम पियें।
५. एक चम्मच अजवायन को हाथ में मसलकर दिन में बार-बार सूंघते रहें।

—कविराज वेदव्रत शर्मा आयुर्वेदाचार्य
बी-५/७, कृष्णनगर, दिल्ली

बवासीर
शुरू होते ही
इलाज़ कीजिये
विश्वसनीय
हडेन्सा
मरहम
लगाइये
-ऑपरेशन की
नौबत न आने
दीजिये !

7405 HIN

रही थीं। और देखो तो वहां मारिओ था, होटल का मारिओ, जो बच्चों के चॉकलेट लाता था। वह भी सिपोला कारनामे देखने आया था।

सवा नौ बज गये थे। बच्चे पे हो रहे थे। हाल में तमाम तरह की मा के वार्तालाप चल रहे थे। श्रीमती एलि लीरि हमारे पीछे दो कतारें छोड़ बैठी थी।

सिपोला के देर से आने का था, वह सबको शसोपंज में रखना चा था। हमारी मेजबान की मेज पर उ पोस्टर था, जिसमें दर्ज था कि वह म कलाकार है, महान कौशलों से सं बस उसके आने की घोषणा ने शहर हलचल मचा दी थी।

जादू शुरू

अब जैसे ही पर्दे खुले कि हाल ता से गड़गड़ा उठा। वहां टोपी रखने एक स्टैंड, एक मेज पर पानी और के गिलास नजर आ रहे थे। ब सिपोला आने ही वाला था।

वह तेजी से आगे आया—जैसे जताना चाहता हो कि लोगों की खि के लिए वह बहुत दूर से आया हो। उसकी पोशाक इस मिथ्या भाव को स्पष्ट थी। उसकी उम्र का अंदाजा ल कठिन था। पर वह किसी भी कीम जवान नहीं आंका जा सकता था। ऊबड़-खाबड़ था उसका चेहरा, वाली आंखें और दबे ओंठ। उसकी

काली थीं और राजसी अंदाज में कुछ मुड़ी हुई थीं। वह प्रदर्शनप्रिय कपड़े पहने था, हाथों में सफेद दस्ताने थे। सफ़ेद रूमाल गले में झूल रहा था और एक गोलाकार टोप सिर पर। इटली में दूसरी जगहों के मुकाबले उसकी उपस्थिति में अट्ठारहवीं शताब्दी जीवित थी। सिपोला की पूरी आकृति ऐतिहासिक थी। उसके कपड़े उस परंपरा की याद दिलाते थे।

उसकी जल्दबाजी में कोई शिष्टाचार नहीं था। उसने तुरंत दस्ताने उतारे और अपने पीले लंबे हाथ दिखाये। उनमें से एक में राजसी मुद्रा, अंगूठी झिलमिला रही थी। उसने अपनी छोटी आंखों से एक बार हॉल का मुयाअना किया, फिर अपना कौशल दिखाने के लिए दस्ताने एक गेंद पर दे मारे, जो थोड़ी दूर लुढ़ककर मेज के एक कोने में ठहर गयी थी। फिर उसने अपनी जेब से सिगरेट की एक डिब्बी निकाली। अपनी अंगुलियों पर सिगरेट टिकाकर उसको सुलगाया। और अपने टूटे दांतों की खाली जगह से धुंए के छल्ले निकालने लगा। पहले वह धुंए को गहरे खींचता, फिर छल्ले निकालता।

लोग उत्सुकता से उसे घूर रहे थे। फिर वह धुंआ छोड़ते-छोड़ते कुछ करतब दिखाने लगा और हेकड़ी भरे अंदाज में धुंआ श्रोताओं की ओर उछालने लगा। उसके कपड़ों के बीच से संकीर्ण राष्ट्रवादिता का एक तमगा झलक रहा था। उसके छोटे-छोटे तमाशों से लोग हंसने लगे। बैठे लोगों में कोई बोला, "जल्दी करो!" सिपोला ने अपना सिर उठाया, और पूछा' "जो अभी बोल रहा था वह कौन है? पहले इतना साहसी और अब दब्बू!" वह इंतजार-सा करने लगा।

"मैं हूं वह।" पीछे की सीट पर बैठे एक नौजवान ने उस चुप्पी को तोड़ा। वह हम लोगों में से नहीं था। उसका अफ़रीकी-जैसा लिबास था।

एक जोरदार ठहाका लगा।

"शाबाश!" सिपोला ने कहा, "मुझे तुम्हारी हिम्मत अच्छी लगी। तुम जैसे लोग मेरे लिए काम के होते हैं। मैं उनका इस्तेमाल कर सकता हूं। बहुत मुमकिन है तुमने वह कभी न किया हो, जो करना पड़े। तो सुनो दोस्त, चाहने और न चाहने की सीमा-रेखा—दोनों काम न करो। ऐसा करो कि जो मैं नहीं कर रहा, यानी अपने मुंह से लंबी जुबान लेकर लोगों को दिखादो। लंबी जीभ—ठीक जड़ से फैलाकर!"

"नहीं, मैं ऐसा नहीं करूंगा," लड़के ने गुस्से में उत्तर दिया, "जीभ निकालना अशिष्टता है, समझे!"

"ऐसा कुछ नहीं है," सिपोला गरजा। "तुम तो बस सिर्फ दिखाओगे ही। मेरे दस गिनने से पहले ही दिखाओगे तुम।"

उसने अपनी भेदती आंखों से लड़के

की ओर देखा-जैसे उसकी आंखें कोटर में ग[illegible]े [illegible]ुस गयी हों।" फिर उसने अपना कोड़ा हवा में लहराया। लड़के ने वह देखा और अपनी जीभ दिखा दी।

"बस...मैं था वह!" सिपोला ने मखौल किया। दर्शक हंसने लगे। फिर उसने मेज पर रखा गिलास उठाया, मदिरा डाली और अपनी अंगुलियों पर नचाने लगा।

बच्चे खूब हंसे। उसका चाबुक हवा में चल रहा था। फिर वह अपनी मेज पर आया और बोला, "हाजरीन, आपने अभी देखा। मैं इस मामले में ज्यादा संवेदनशील हूं। अभी इस भाषाविद लड़के की करतूत आपने देखी थी। मेरे गोदाम में तो ऐसी करतूतें भरी पड़ी हैं।" इसके बाद वह अकड़ से भरी बातें करने लगा, "बड़े-बड़े अखबार मेरा गुणगान करते हैं..।" उसकी बातों से डान जुआन-जैसा नायकतत्व झलक रहा था। पर वह अपने विपक्षी के प्रति शत्रुतापूर्ण रवैया रखता था, यह तो साफ ही था। फिर वह जन्मभूमि के प्रति अपनी बड़बोली बातें करने लगा एक शासक, निरंकुश शासक और राजनेता की तरह... 'मैं जीवन पर विजय पा चुका हूं..खैर.. ..आप मुझे थोड़ा ठीक होने की अनुमति देंगे और वह अपनी मेज के पास फिर गया।

'पक्का दुकानदार', कोई फुसफुसाया। उसने अपना रूमाल गले से हटाया और कोट उतार दिया। उसके बाल बहुत गंदे थे। उसका सिर ज्यादातर गंजा था। अब वह भदेस लग रहा था।

"आपकी सेवा में," वह बोला, "आ कुछ गणित का तमाशा कर लें।"

और उसने ब्लैकबोर्ड पर कुछ अं लिखे, जो कपड़े से ढका था। फिर लो को लिखने के लिए आमंत्रित किया। पहले तो कोई नहीं आया। बाद में उ के उकसाने पर दो नौजवान आये। उन एक के हाथ में खड़िया दी और कह "लिखें।"

"मुझे तो लिखना ही नहीं आता।

हाल में एक जोरदार ठहाका लगा।

"मेरे मुल्क में कोई अनपढ़ नहीं है वह गरज उठा। उसके भाषण का सार य था कि महान देश के लोग हैं। उन विदेशियों के प्रति घृणा का भाव था।

"यह बकवास है", वह फिर गरज "जाओ अपनी जगह जाओ।"

बाद में जैसे-जैसे लोग आते गये, को अंक बोलते गये। कोई तो इतिहास तिथि लिख गया... और अंत में जो वही था, जो वह पहले ब्लेकबोर्ड पर लि चुका था।

इसमें क्या कौशल था? लोगों संदेह था कि अंक बोलनेवाले उसके अप खरीदे लोग थे।

कुछ और करतब दिखाने के बा वह श्रीमती एगिओ कीं की ओर मुखाति हुआ। बच्चे ऊंघ रहे थे। "आपका अं शानदार था।" उसने अपनी प्रज्ञा का प्रद किया। पर यह सब बहुत ही घटिया

क्योंकि उसने उस महान अभिनेत्री की गोपनीय बातें बतायी थीं, जो पहले ही विश्रुत थीं। उसके पति के बारे में भी बताया कि वह किसी 'स्त्री' से यश प्राप्त करेगा ... ऐसा कहकर वह मानो उनका अपमान कर रहा हो। वे लोग उठकर चले गये थे। लगता था वे बहुत विक्षुब्ध थे। बच्चे सो रहे थे। हम उठने वाले थे कि बच्चों ने जिद पकड़ ली कि पूरा खेल देखकर जायेंगे और हम बच्चों की बात मानने के सिवा कर भी क्या सकते थे ?

उसने फिर तरह-तरह के करतब दिखाये। आखिरी खेल में वह बोला, "बताओ तुम्हारा नाम क्या है ?"

"मारिओ "

"बहुत अच्छा। तुम्हारा नाम जन्म-भूमि की परंपराओं के मुताबिक है। तुमने अच्छा किया यहां आये। तुम तो लड़कियों की संगत में मजे उड़ाते होगे . .। यहां तो तुम मनोरंजन के लिए आये हो।"

"पर उससे पहले।"

"अरे भाई, मुझमें यकीन करते हो ?'

वह चुप रहा।

"शायद, विश्वास क[illegible] नहीं। तुमने दिक्कतें भी झेली हैं," उसने सम्मोहन से मारिओ को पास आने के लिए विवश किया।

उसने मारिओ पर लोगों को हंसने के लिए भी बाध्य किया। उसे अपना गाल चूमने को विवश किया और फिर उसका मखौल उड़ाया।

कुछ देर चुप्पी रही। सिपोला अपनी जगह से हटा और कुर्सी से-जैसे लुढ़क गया हो। वह अपनी छाती थामे हुए था।

हाल में शोर-शराबा मच गया। लोग बाहर भागे। पुलिस और डॉक्टर की आवाज दी जाने लगीं। पुलिस आयी और उन्होंने मारिओ से वह बिना नाली की पिस्तौल छीन ली। भाग्य ने किस दिशा में नियत किया यह खेल . . .। बच्चों को घर लाते हुए यह ख्याल कौंधता रहा कि क्या यही अंत था . . . मुक्ति ... ? इसका उत्तर पाना आसान न था। ●

बुद्धि-विलास के उत्तर

१. क, २. ग, ३. ग, ४. घ, ५. फ्रांस के कर्नल क्रेतियन ने सोवियत अंतरिक्ष-यान सोयूज-टी ६ में दो सोवियत अंतरिक्ष-यात्रियों के साथ (जून-जुलाई १९८२), ६. लेफ्टीनेंट कर्नल कुलवंत बीर सिंह सेठी (सिख) १९७९ में रायल आर्मी मेडीकल कोर के कमांडर नियुक्त, ७. प. जरमनी के हैंस एमिल शुस्टर ने ३ कि. मी. व्यास के '१९८२ डी बी' नाम[illegible] का पता लगाया, विगत १२ अप्रैल को पृथ्वी से उसकी निकटतम दूरी २ करोड़ २० लाख कि. मी. थी, ८. 'गृहविहीनों के लिए आश्रय', ९. लिपस्टिक

घोर अशिष्ट या गंदी सामग्री या भयादोहन (ब्लैकमेल) के लिए आशयित सामग्री के मुद्रण अथवा प्रकाशन को दंडनीय बनाने के लिए तामिलनाडु और उड़ीसा की तरह बिहार में विधेयक

भारतीय दंड संहिता (बिहार संशोधन) और दंड प्रक्रिया संहिता (बिहार संशोधन) विधेयक, १९८२

(बिहार विधान सभा द्वारा यथापारित)

भारतीय दंड संहिता और दंड प्रक्रिया संहिता, १९७३ को, बिहार राज्य में लागू होने के सम्बन्ध में, संशोधित करने के लिए विधेयक भारत गणराज्य के ३३वें वर्ष में बिहार राज्य विधान-मंडल द्वारा यह निम्नलिखित रूप में अधिनियमित हो :—

१. नाम, विस्तार और प्रारम्भ—(१) यह अधिनियम भारतीय दण्ड संहिता (बिहार संशोधन) और दण्ड प्रक्रिया संहिता (बिहार संशोधन) अधिनियम, १९८२ कहलाएगा ।

(२) इसका विस्तार सम्पूर्ण बिहार राज्य में होगा ।

(३) यह तुरन्त प्रवृत्त होगा ।

२. भारतीय दण्ड संहिता (केन्द्रीय अधिनियम संख्या ४५, १८६०) में नई धारा २९२-क का अन्तःस्थापन ।

अधिनियम संख्या ४५, १८६० में नई धारा २९२-क का अन्तःस्थापन—उक्त संहिता की धारा २९२ के बाद निम्नलिखित धारा अन्तःस्थापित की जाएगी :

"२९२-क—घोर अशिष्ट या गंदी सामग्री अथवा भयादोहन (ब्लैंक मेल) के लिए आशयित सामग्री का मुद्रण आदि ।

जो कोई भी—

(क) कोई घोर अशिष्ट या गन्दी अथवा भयादोहन (ब्लैंक मेल) के लिए आशयित तस्वीर अथवा मुद्रित या लिखित दस्तावेज, किसी समाचार-पत्र, पत्रिका या परिपत्र में छापता या छपवाता है अथवा उसे सार्वजनिक रूप से प्रदर्शित या वितरित करता या करवाता है या किसी भी रीति से उसे परिचारित करता है, या

(ख) ऐसी तस्वीर अथवा मुद्रित या लिखित दस्तावेज, जो घोर अशिष्ट या गंदी या भयादोहन (ब्लैक मेल) के लिए आशयित हो, बेचता या भाड़े पर देने के प्रयोजनार्थ उसे बनाता या तैयार करता है या अपने पास रखता है ।

(ग) यह जानते हुए या विश्वास करने का कारण होते हुए कि कोई अशिष्ट अथवा गन्दी या भयादोहन (ब्लैक मेल) के लिए आशयित कोई तस्वीर अथवा कोई मुद्रित या लिखित दस्तावेज सम्प्रेषित करता है कि ऐसी तस्वीर अथवा दस्तावेज मुद्रित किया जाएगा, बेचा जाएगा, भाड़े पर दिया जाएगा, वितरित किया जाएगा अथवा सार्वजनिक तौर पर प्रदर्शित किया जाएगा अथवा किसी भी रीति से परिचारित किया जाएगा, या

(घ) किसी ऐसे कारबार में भाग लेता है अथवा उससे मुनाफा प्राप्त करता है जिसके क्रम में उसे यह जानकारी मिली हो अथवा ऐसा विश्वास करने का कारण हो कि ऐसा कोई समाचार-पत्र, पत्रिका, परिपत्र, तस्वीर अथवा अन्य मुद्रित या लिखित दस्तावेज मुद्रित, प्रदर्शित, वितरित या परिचारित की जाएगी अथवा बेची या भाड़े पर दी जाएगी, बनाई अथवा तैयार की जाएगी या रखी जाएगी अथवा सम्प्रेषित की जाएगी या खरीदी जाएगी, या

(ङ) विज्ञापन देकर अथवा किसी अन्य रीति से जानकारी कराता है कि कोई व्यक्ति किसी ऐसे कार्य में लगा है, अथवा लगने वाला है, जो इस धारा के अधीन अपराध है, अथवा ऐसा कोई समाचार-पत्र, पत्रिका, परिपत्र, तस्वीर अथवा मुद्रित या लिखित दस्तावेज जो घोर अशिष्ट अथवा गन्दी या भयादोहन के लिए आशयित हो, किसी व्यक्ति से या उसके माध्यम से तैयार की जा सकती है, या

(च) कोई कार्य करने का प्रस्ताव या प्रयत्न करता है जो इस धारा के अधीन अपराध हो, वह प्रथम दोषसिद्ध पर दो वर्ष के किसी भी प्रकार के कारावास, अथवा जुर्माने अथवा दोनों से दण्डित होगा तथा दूसरी या पश्चातवर्ती दोषसिद्ध की दशा में पांच वर्ष तक के किसी भी प्रकार के कारावास तथा जुर्माने से दण्डित होगा :

परन्तु इस धारा के अधीन दूसरे या पश्चातवर्त्ती अपराध की दशा में वह जुर्माने के साथ कम से कम छ: महीने के किसी भी प्रकार के कारावास से दण्डित होगा :

परन्तु यह भी कि कोई न्यायालय सरकारी पदाधिकारी के परिवाद पत्र पर तब तक संज्ञान नहीं लेगा जब तक राज्य सरकार अभियोजन की स्वीकृति प्रदान नहीं करती है ।

स्पष्टीकरण १. इस धारा के प्रयोजनार्थ 'गन्दा' शब्द के अन्तर्गत ऐसी कोई बात समझी जाएगी जो नैतिकता के लिए हानिकारक हो सकती हो अथवा जिससे किसी व्यक्ति को हानि पहुंच सकती हो ।

परन्तु निम्नलिखित व्यक्तियों के आचरण के सम्बन्ध में सद्भावपूर्वक

[illegible] कोई बात 'गन्दी' नहीं होगी —

(१) लोक कृतों का सम्पादन करने वाले किसी लोक-सेवक के संबं
या उसके चरित्र के संबंध में जहां तक उक्त आचरण से उस
चरित्र परिलक्षित होता हो और इसके अतिरिक्त नहीं, अथवा
किसी सार्वजनिक प्रश्न से जुड़े हुए किसी व्यक्ति और उसके च
के सम्बन्ध में जहां तक की उक्त आचरण से उसका चरित्र
लक्षित होता हो और इसके अतिरिक्त नहीं ।

Arya सम्मेलन

स्पष्टीकरण २. इसका निश्चय करने में कि इस धारा के अधीन कि
व्यक्ति ने कोई अपराध किया है या नहीं, न्यायालय अन्य ब
के साथ-साथ निम्नलिखित बातों को भी ध्यान में रखेगा :

(क) आरोपित व्यक्ति का सामान्य चरित्र और जहां संगत हो, उ
कारबार का स्वरूप;

(ख) उस बात का सामान्य स्वरूप और विशेष प्रभाव जिसे घोर अ
या गंदा या भयादोहन (ब्लैक मेल) के लिए अभिप्रेत कहा ग
हो,

(ग) अभियुक्त द्वारा या उसकी ओर से दिया गया या मांगा गया क
साक्ष्य जो इस धारा में विनिर्दिष्ट कोई कार्य करने में उसकी नी
से संबंधित हो ।

३. केन्द्रीय अधिनियम २, १९७४ का संशोधन । — दण्ड प्रक्रि
संहिता १९७३ (केन्द्रीय अधिनियम २, १९७४) में—

(१) धारा ४५५ की उप-धारा (१) में 'धारा २९२' शब्द और अंक के
'धारा २९२-क' शब्द, अंक और अक्षर अन्त:स्थापित किए जाएंगे

(२) दण्ड प्रक्रिया संहिता, १९७४ के प्रथम अनुसूची की धारा २९
बाद निम्नलिखित धारा २९२-क निम्न रूप में अन्त:स्थापित होगी

(१)	(२)	(३)	(४)	(५)	(६)
२९२-क	घोर अशिष्ट या गन्दी सामग्री या भयादोहन (ब्लैक मेल) के लिए अभिप्रेत सामग्रियों का प्रकाशन ।	प्रथम दोषसिद्ध होने पर दो वर्ष का कारावास अथवा जुर्माना अथवा दोनों और द्वितीय अथवा बाद की दोषसिद्ध होने पर ५ वर्ष का कारावास और जुर्माना ।	संज्ञेय	गैर-जमानतीय	कोई द धिक (मजिस

सूचना एवं जन[illegible]सम्पर्क निदेशालय बिहार, पटना द्वारा जारी
—विज्ञापन

[illegible]न्दुस्ता[illegible] टाइ[illegible]स लिमिटेड की [illegible] डा. गौरीशंकर राजहंस [illegible] तथा प्रकाशित
हिन्दुस्तान टा[illegible]म्स प्रेस [illegible]

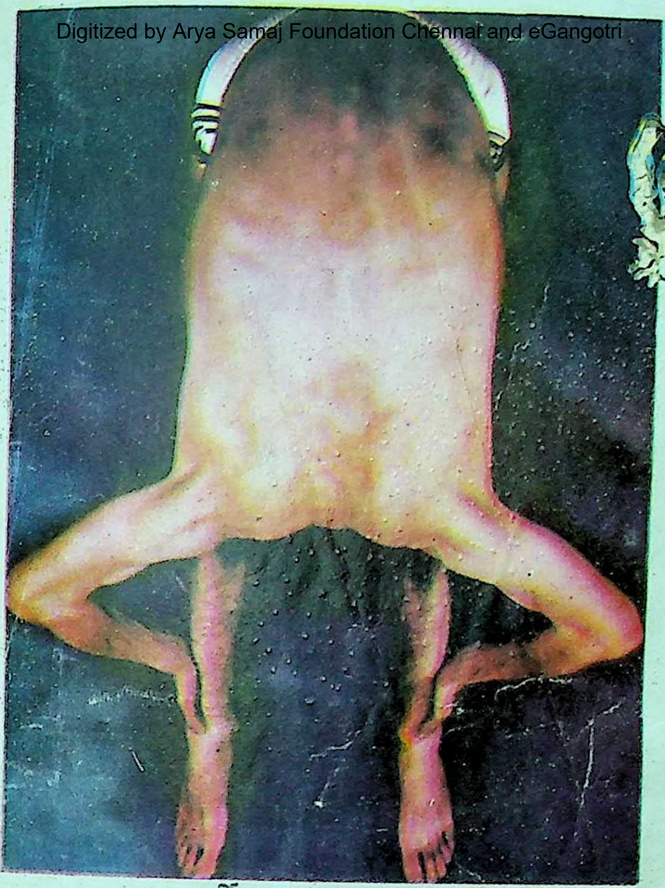

समस्या पूर्ति–४१

मेरुदंड

ऊपर प्रकाशित चित्र को ध्यान से देखिए और उसके नीचे बड़े अक्षरों में लिखे [illegible] पढ़िए। इसे लेकर आपको एक कविता लिखनी है। गीत, गजल या छंदहीन पं[illegible] आपकी रचना मौलिक तथा अधिकतम छह पंक्तियों की ही हो। प्रविष्टि पोस्ट कार्ड पर ही भेजें। जो श्रेष्ठ रचना होगी, उसे पुरस्कृत किया जाएगा

प्रथम पुरस्कार––२५ रुपये

द्वितीय पुरस्कार––१५ रुपये

अंतिम तिथि––२० सितम्बर, १९[illegible]

न्यारी फूलों के सुगन्ध

उत्कृष्ट स्वाद के लिये.

283

16.7.84

RATNA BRAND
रत्नाछाप
जाफरानी पत्ती
NO 300
No.300

TRADE MA
REGD. No. 229

रजिस्टर्ड

रत्ना छाप

जाफरानी पत्ती

नं. - 450, 300, 200, 150, 64, 30, 20

314

निर्माता **प्रभात ज़र्दा फैक्ट्री,** मुजफ्फरपुर, बि

INPEE/RZF/118

. नं. डी.-(

मासिक प्रकाशन

कादम्बिनी

भारतीय भाषाओं की विशिष्ट पत्रिक

अप्रैल १९८२

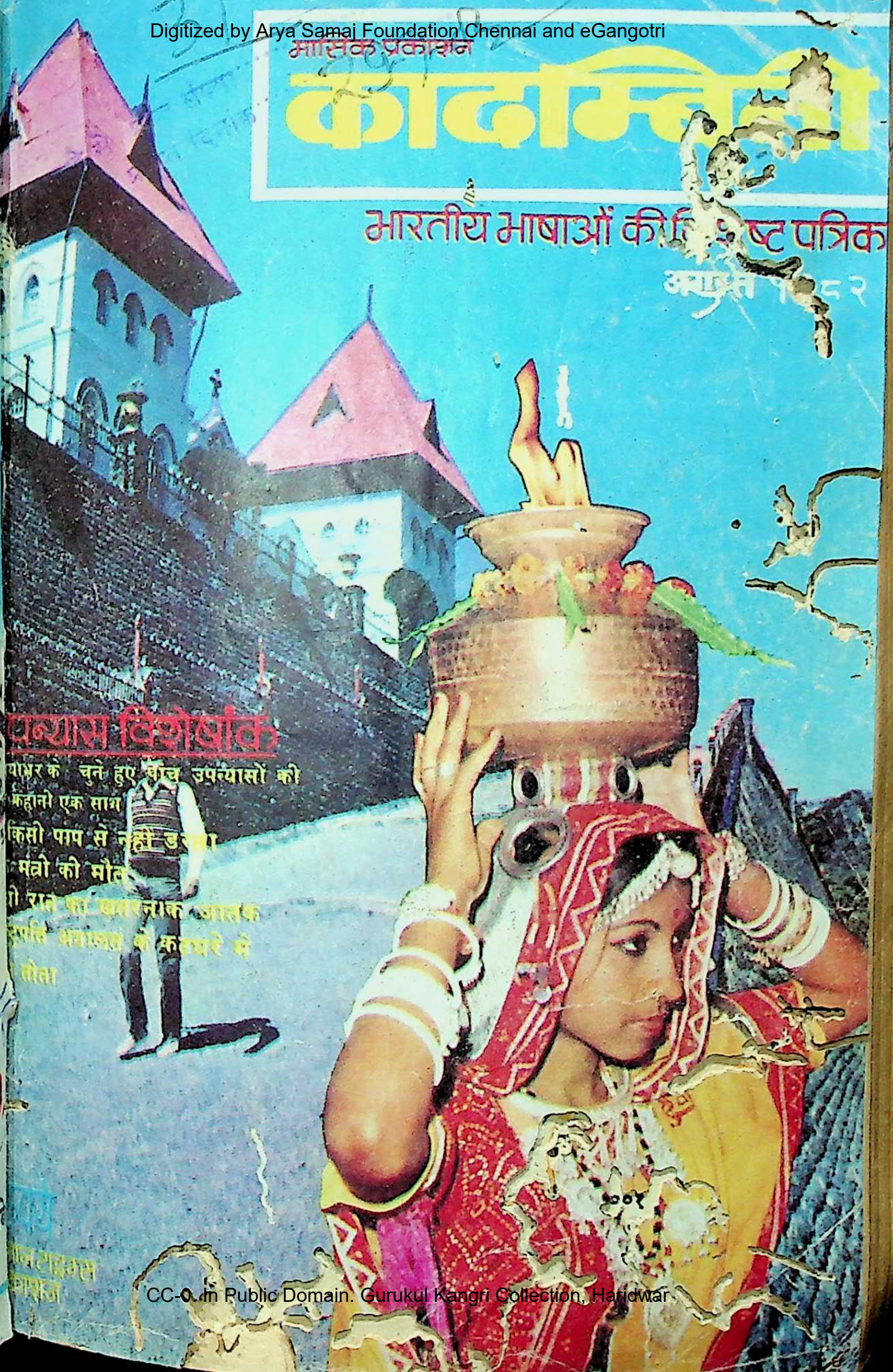

पन्यास विशेषांक

याभर के चुने हुए पांच उपन्यासों की
कहानी एक साथ
किसी पाप से नहीं डरता
मत्री की मौत
ो रात का खतरनाक आतंक
[illegible] के कब्जे में
सौदा

TRADE MA
REGD. No. 2295

30.20

करपुर, जि

न टाइम्स
काशन

ताज़े फूलों के सुगन्ध

उत्कृष्ट स्वाद के लिये.

RATNA BRAND
ZAFRANI PATTI
रत्ना छ
ज़ाफरानी पत्ती
NO 300
50 GRAMS WHEN PACKED
No.300

TRADE MARK
REGD. No.229

रजिस्टर्ड

रत्ना छाप

ज़ाफरानी पत्ती

नं. - 450, 300, 200, 150, 64, 30, 20

निर्माता
प्रभात ज़र्दा फैक्ट्री, मुज़फ्फरपुर, बि

ENPEE/RZF/118

घर हो या दफ़्तर
निखार लाते हैं

कोचर कार्पेट्स

मनमोहक रंगों में हाथ की बनी हुई ऊनी कार्पेट्स आपके
मनचाहे साइज में निर्धारित उचित मूल्यों पर लें

Kocher CARPETS
R-4, Green Park, Mehrauli Road
New Delhi-110016 Phone : 6 501

AUDIO VISUAL

स्वास्थ्य तथा दीर्घ जीवन के लिये ३००० वर्ष पुराना नुसखा

डाबर च्यवनप्राश पूरे परिवार के लिये ८ सूत्री आयुर्वेदिक टॉनिक

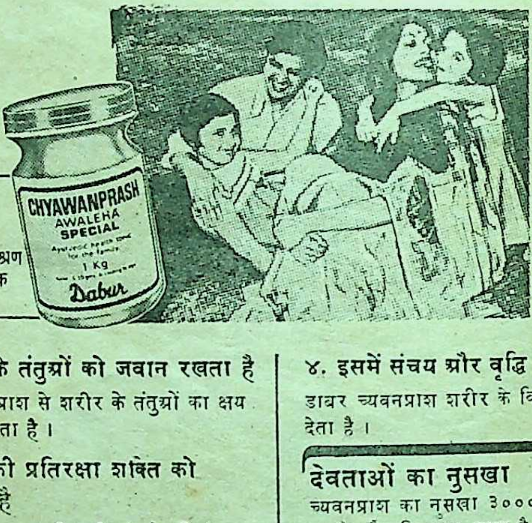

विटामिन सी
से भरपूर,
स्वादिष्ट
खट्टा-मीठा मिश्रण
अपने प्राकृतिक
रूप में

१. शरीर के तंतुओं को जवान रखता है

डाबर च्यवनप्राश से शरीर के तंतुओं का क्षय धीमा पड़ जाता है।

२. शरीर की प्रतिरक्षा शक्ति को बढ़ाता है

डाबर च्यवनप्राश शरीर की संपूर्ण प्रतिरोधक शक्ति का विकास करता है तथा सर्दी और जुकाम में भी लाभदायक है।

३. स्फूर्ति प्रदान करता है

[illegible] च्यवनप्राश बच्चों में स्फूर्ति बनाए रखता है और [illegible]द्धावस्था में कार्यशक्ति विकसित करता है।

४. इसमें संचय और वृद्धि करने के गुण हैं

डाबर च्यवनप्राश शरीर के विकास में मदद देता है।

देवताओं का नुसखा

च्यवनप्राश का नुसखा ३००० वर्षों से भी पहले का है, जैसाकि कहा जाता है कि देवताओं के चिकित्सकों ने महर्षि च्यवन को उनका यौवन फिर से प्रदान करने के लिए तैयार किया था। यद्यपि च्यवनप्राश सम्भवतः विश्व में प्राचीन स्वास्थ्य-प्रद टानिक है, तथापि डाबर में इसके बनाने का तरीका पूर्ण आधुनिक एवं वैज्ञानिक है।

[illegible]क शक्तिदायक आयुर्वेदिक टानिक

डाबर च्यवनप्राश

[illegible]भी दवा विक्रेताओं के यहां मिलता है।

न्यू बैंक

आपके बच्चों
की आजीवन
सहायता करता है

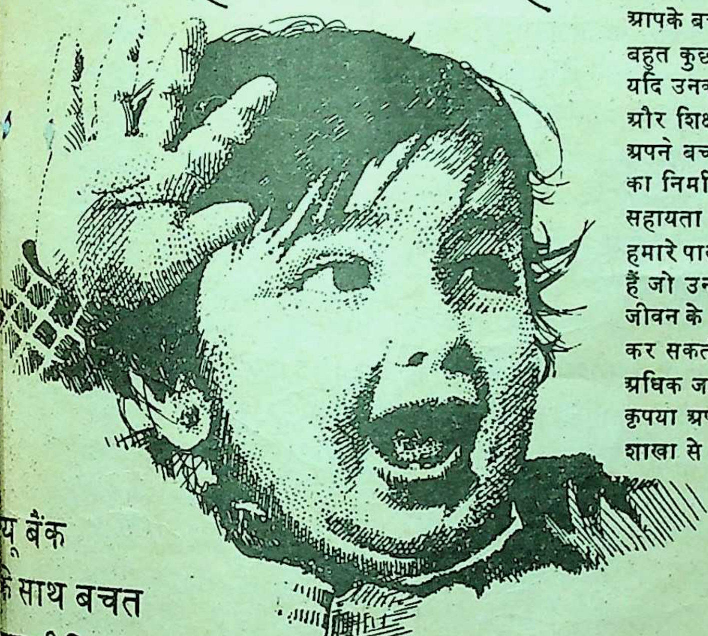

आपके बच्चे देश के लिए
बहुत कुछ कर सकते हैं
यदि उनका पालन पोषण
और शिक्षा अच्छी हो।
अपने बच्चों के भविष्य
का निर्माण न्यू बैंक की
सहायता से करिए ।
हमारे पास ऐसी योजनाएं
हैं जो उनको एक सफल
जीवन के मार्ग पर अग्रसर
कर सकती हैं ।
अधिक जानकारी के लिए
कृपया अपनी निकटतम
शाखा से सम्पर्क करें ।

यू बैंक
के साथ बचत
रु कीजिए

न्यू बैंक आफ़ इंडिया
(भारत सरकार का उपक्रम)
प्रधान कार्यालय : १, टाल्सटाय मार्ग, नई दिल्ली-११०००१
न्यू बैंक-तत्काल सेवा के लिए

समय के हस्ताक्षर

'कादम्बिनी' के विशेषांकों की अपनी परंपरा रही है। इस बार अगस्त में अपने पाठकों को एकदम विशिष्ट अंक देने की हमारी योजना थी। उसी के अंतर्गत इस अंक को सुनियोजित किया गया है और प्रस्तुत है—'उपन्यास अंक'। एक अंक में विश्व के चुने हुए पांच उपन्यास हम अपने पाठकों को दे रहे हैं। चुनाव करते समय हमने यह दृष्टि रखी है कि प्रत्येक उपन्यास का कथानक अलग हो। इस तरह इस अंक में पांच विभिन्न कथानकों की पांच कृतियां पाठकों को पढ़ने को मिलेंगी। ये उपन्यास काफी बड़े हैं और विश्व-विख्यात हैं। उनकी पूरी कहानी संक्षेप में पढ़ लेना महासागर में मोती खोजना है। हमारे पाठकों के हाथों में, इस तरह, पांच मोती हैं।

उपन्यासों का चुनाव करते समय हमने अपने पाठकों की रुचियों का भी ध्यान रखा है और कोशिश की है कि उन्हें न केवल विभिन्न देशों के लेखकों की कृतियों का, वरन आज के उपन्यास साहित्य में वर्णित किये जानेवाले विभिन्न विषयों का भी परिचय मिल जाए।

पहले प्रस्तुत है वैज्ञानिक उपन्या 'मैं किसी पाप से नहीं डरता'। लेख हैं, राबर्ट ए. हाईन लाइन। यह रा की बहुचर्चित कृति 'आई विल फियर ई विल' का सार है। एच. जी. वेल्स जूल वर्न की औपन्यासिक कृतियों साहित्य में वैज्ञानिक गल्प की एक अ पहचान बनायी थी। यों, उनके पहले 'साइंस फिक्शन' लिखे गये, पर इन लेखकों की कृतियों ने उन्हें एक प्रतिष्ठा दी।

एच. जी. वेल्स और जूल से लेकर आज तक दुनिया में 'साइं फिक्शन' ने पाठकों का एक बड़ा वर्ग तै किया है। विज्ञान की विभिन्न शाखा में होनेवाले नये-नये आविष्कारों ने ले की कल्पना को नया विस्तार दिया।

राबर्ट ए. हाइन लाइन प्रस्तुत कृति में भी हम एक सर्वथा विषय पाते हैं। डॉ. क्रिश्चियन बर्ना हृदय-प्रत्यारोपण के सफल प्रयोग ने हृ लाइन को मस्तिष्क प्रत्यारोपण विचार दिया। उनके उपन्यास का नायक स्मिथ अपने जर्जर शरीर त्यागकर किसी युवा शरीर में मस्तिष्क लगवाना चाहता है। इच्छा तो पूरी हो जाती है, लेकिन जाता है वह एक खंडित व्यक्ति पूरा उपन्यास हमारे सामने आनेवाले की कुछ भयावह लेकिन कुछ आस तसवीर सामने रखता है। पूरा उ

रोमांचक और घटनाओं से भरा है।

दूसरा उपन्यास है—'एक मंत्री की मौत'। प्रख्यात रूसी उपन्यासकार लियोनिद एंडेयेन की प्रसिद्ध कृति 'सेवन हू थेयर हैंग्ड' का सार। मृत्यु पर बहुत कुछ लिखा गया है। मृत्यु एक परम सत्य है। उससे बचा नहीं जा सकता। मृत्यु उतनी यंत्रणादायक नहीं, जितना कि यह अहसास कि अब मृत्यु सन्निकट है। एंद्रेयेव ने इसी अहसास की पीड़ा को झेलनेवाले आठ व्यक्तियों की मानसिकता का इस उपन्यास में मार्मिक चित्रण किया है। इनमें से सात को फांसी लगनी है, और एक है मंत्री। वह मृत्यु की आशंका मात्र से दम तोड़ देता है। आतंकवादी एक सिद्धांत से प्रेरित हैं। अपराधियों के सामने कोई सिद्धांत नहीं हैं। इन व्यक्तियों में मौत की खौफनाक घड़ी में क्या प्रतिक्रिया होती है, यह पढ़कर ही मन दहल उठता है। इरविंग वालेस अमरीका के प्रख्यात उपन्यासकार हैं। अपने उपन्यासों में उन्होंने अपने देश की सभ्य लोकतांत्रिक समाज की विसंगतियों और दोहरे मानदंड पर जबर्दस्त चोट की है। 'कादम्बिनी' के पाठकों ने उनकी प्रसिद्ध कृति 'द आर डाक्यूमेंट' का सार बेहद पसंद किया था। इस अंक में प्रस्तुत है, इरविंग वालेस की एक अन्य सशक्त कृति 'द मैन' 'राष्ट्रपति जनता के कटघरे में'। अपने इस उपन्यास में इरविंग वालेस ने कल्पना की है कि परिस्थितियोंवश अमरीका के राष्ट्रपति पद पर एक नीग्रो सीनेटर आसीन होता है। यद्यपि नीग्रो सीनेटर है, और अब राष्ट्रपति भी, पर उसके प्रति श्वेत अमरीकी सीनेटरों और अन्य लोगों में एक घृणा मिली उपेक्षा का भाव है। वे उसे दब्बू समझकर अपने हाथों की कठपुतली बनाना चाहते हैं, लेकिन जब वे अपने षड्यंत्रों में असफल होते हैं, तब वे एक नाटक रचते हैं। विषम परिस्थितियां अकसर, व्यक्ति में छिपी प्रतिभा, सुप्त जुझारू भावना को जागृत कर देती हैं। नीग्रो राष्ट्रपति के साथ भी यही होता है और काले रंग का यह व्यक्ति किस कूटनीति से अपने विरोधी श्वेत व्यक्तियों को पराजित करता है, यह पढ़ना अपने आप में एक लोमहर्षक घटना है।

इन दिनों 'मिडनाइट चिल्ड्रन' उपन्यास की न केवल भारत, वरन विदेशों में भी बहुत चर्चा रही है। उसे पुरस्कृत भी किया गया है। उसके लेखक हैं—सलमान रुशदी। चौदह अगस्त की मध्यरात्रि को ठीक बारह बजे, जब भारत स्वाधीन

हुआ, तब सलमान का जन्म हुआ था। यानी आयु अभी केवल ३५ वर्ष की है। इस छोटी-सी उमर में ऐसी विशिष्ठ कृति लिख देना अपने आपमें एक साहसिक घटना है। 'आधीरात का खतरनाक आतंक' इसी बृहद पुस्तक में एक अंश को प्रस्तुत करता है। एक मां तय करती है कि उसके एक पुत्र को भारतीय स्वाधीनता के जन्म की ऐतिहासिक घड़ी में ही जन्म लेना चाहिए। इतना कठिन संकल्प सफल नहीं होता। यदि सफल हो जाए तो...? कहानी के बीच हम नहीं आना चाहेंगे।

युद्ध ! एक विनाशकारी स्थिति, जिसमें अकारण निर्दोष सैनिक मारे जाते हैं। युद्ध को लेकर अनेक उपन्यास लिखे गये हैं। एरिक मारिया रिमार्क की--'ऑल क्वाइट आन ? वेस्टर्न फ्रंट' एक ऐसी ही विश्व-प्रसिद्ध कृति है। उसी तरह की एक और कृति है, 'हार्प ऑव बरमा'। लेखक हैं--जापान के सुप्रसिद्ध लेखक--मिचियो ताकियामा ! इस अंक में प्रस्तुत 'हरा तोता' इसी विश्व-प्रसिद्ध कृति का सार है। इसका 'यूनेस्को' ने भी संसार की अनेक भाषाओं में अनुवाद प्रकाशित किया है। प्रस्तुत उपन्यास में मिचियो ताकियामा ने युद्ध-रत सैनिकों की तसवीर चित्रित करते हुए सिद्ध किया है कि वास्तव में वे सब युद्ध-विरोधी हैं।

हम आशा करते हैं कि पाठकों को हमारा चुनाव पसंद आएगा। हमें उनकी प्रतिक्रिया की प्रतीक्षा रहेगी।

इन पांच श्रेष्ठ उपन्यासों के अति इस विशेषांक में पाठकों के लिए हमने भी बहुत-सी पठनीय सामग्री दी है।

लेबनान पर इस्रायली आ आज का ज्वलंत विषय है। 'एक दे मौत' लेख इसी आक्रमण की पृष्ठ को प्रस्तुत करता है। लेखक काशी गोविंद जोगलेकर स्वयं बेरूत में र हैं और वर्षों पूर्व इस्रायली कमांडों फिलिस्तीनी नेताओं की हत्या के स वहीं थे। अपने लेख में उन्होंने फिली समस्या का विवेचन किया है।

'जब जोधपुर महाराजा पाकिस् में शामिल होना चाहते थे ? आजादी पहले चलनेवाले कुचक्रों और घट का यह प्रामाणिक दस्तावेज प्रस्तु एक विख्यात पत्रकार द्वारा। वे इस घ के स्वयं प्रत्यक्षदर्शी हैं।

हर अंक की भांति इस विशेषांक भी पाठक आदि से अंत तक रोचक मौलिक सामग्री से भरपूर पाएंगे। नि स्तंभों एवं विविध विषयों पर पठनीय के अतिरिक्त इस उपन्यास-विशेषांक एक और आकर्षण है--पाठकों के सु चित व्यंग्यकार सेवकराम ओखाड़ एक बिलकुल ताजा रचना, जिसमें उ अपनी विशिष्ट शैली में आजादी के की देश की असली तसवीर खींची है।

हमारा विश्वास है कि पिछले षांकों की भांति यह उपन्यास-विशेषां पाठकों को पसंद आएगा।

शब्द-सामर्थ्य बढ़ाइए

● ज्ञानेन्दु

१. **चतुर्दिक**—क. चारों कोने, ख. चारों दिशाओं में, ग. अनंत, घ. विस्तीर्ण।

२. **एकटक**—क. एक ही रट, ख. एक पैसा, ग. पलक झपके बिना, घ. निर्भय।

३. **अंतस्तल**—क. अंदरूनी, ख. हृदय, ग. पतला, घ. गुप्त।

४. **एकांतर**—क. एक के बाद आनेवाला, ख. अकेला, ग. रहस्यमय, घ. अनोखा।

५. **घमासान**—क. तीव्र, ख. निरंतर, ग. निस्संदेह, घ. प्रचंड।

नीचे कुछ शब्द दिये गये हैं, और उसके बाद उनके उत्तर भी। उत्तर देखे बिना आपकी दृष्टि में जो सही उत्तर हों, उन पर निशान लगाइए और फिर यहां दिये गये उत्तरों से मिलाइए। इस प्रक्रिया से आपका शब्द-ज्ञान अवश्य ही बढ़ेगा।

६. **भंगार**—क. गड़बड़ी, ख. भगदड़, ग. कूड़ा-कचरा, घ. भांग।

७. **यथेच्छाचार**—क. सफल कार्य, ख. नैतिकता, ग. मनमाना व्यवहार, घ. जैसे को तैसा।

८. **अनाहार**—क. अन्न का अभाव, ख. भोजन के बिना, ग. थोड़ा खानेवाला, घ. खाने के बिना व्याकुल।

९. **रंक**—क. दरिद्र, ख. गरीब आदमी, ग. पीड़ित, घ. भिक्षुक।

१०. **ऐहिक**—क. एक दिन का, ख. दैवी, ग. सांस्कृतिक, घ. छोटा।

११. **कुलांगना**—क. वीर स्त्री, ख. गृहिणी, ग. अच्छे कुल की स्त्री, घ. नवविवाहिता।

१२. **चकरवा**—क. चर्चा, ख. उलटफेर, ग. झूठ, घ. उलझनभरी स्थिति।

१३. **ख्यात**—क. लंबा-चौड़ा, ख. प्रसिद्ध, ग. बदनाम, घ. शायद।

पारिभाषिक शब्द

अंडर मेंशंड=निम्नलिखित
टु द कांट्रेरी=इसके विपरीत
दिस इज टु सर्टीफाई=प्रमाणित किया जाता है
देन ऐंड देयर=तत्काल वहीं
फार पेरूजल=अवलोकनार्थ
स्टेटस क्वो=यथापूर्व स्थिति
साइन क्वा नान=अपरिहार्य
साइड बाई साइड=साथ-साथ
ब्वाईलिंग प्वाइंट=क्वथनांक
फ्रीजिंग प्वाइंट=हिमांक

समस्या-पूर्ति—३८

जो दूर है

प्रथम पुरस्कार

प्रेम घट छलका हुआ, तन चूर है
और फिर यौवन कलश भरपूर है
लहरों में छवि दिख रही उस मीत की
निकट हृदय से नयन से जो दूर है

—इकराम राजस्थानी
प्रोड्यूसर, आकाशवाणी, उदयपुर

द्वितीय पुरस्कार

चार चांद हुस्न में जो लगाती हैं जुल्फें
नागिन की तरह पानी में लहराती है जुल्फें
जो दूर है, उनको पास बुलाती हैं जुल्फें
करती हैं कैद और कहर ढाती हैं जुल्फें

—देवेन्द्र कुमार जैन
बी-१०२८, इंद्रानगर, लखनऊ

उत्तर

१. ख. चारों दिशाओं में। उसक यश **चतुर्दिक** फैल रहा है। (चतुर्+दिक्

२. ग. पलक झपके बिना। तुम एक **टक** किसे निहार रहे हो?

३. ख. हृदय। यह बात मेरे अंतस्त में प्रविष्ट हो गयी है।

४. क. एक के बाद आनेवाला (अंग आलटरनेट)। संगीत-कार्यक्रम एकांतर दिवस पर होता है।

५. घ. प्रचंड, भयंकर। दोनों देशों सेनाओं के बीच **घमासान** युद्ध छिड़ गय है। ('घमासान' का भी प्रयोग)

६. ग. कूड़ा-कचरा। बाहर मे बनाइया भीतर भरी **भंगार**—कबीर

७. ग. मनमाना व्यवहार। उसक **यथेच्छाचार** सहन नहीं किया जाएगा

८. ख. भोजन के बिना। तुम अनाहा कब तक रह सकोगे?

९. ख. गरीब आदमी, घ. भिक्षुक चाहे राजा हो या **रंक**, मृत्यु से कोई न बच सका।

१०. ग. सांसारिक, लौकिक। ऐहि सुख-भोग जीवन का चरमोद्देश्य नहीं है (विलोम—**पारलौकिक**)

११. ग. अच्छे कुल की स्त्री। अने **कुलांगनाओं** ने देश के लिए महान त्य किये हैं।

१२. घ. उलझनभरी स्थिति, बखेड़ा तुम क्यों इस **चकरवे** में पड़ते हो?

१३. ख. प्रसिद्ध। सभा में अने **ख्यात** वक्ता पधारे हैं। (संज्ञा—ख्याति।

प्रतिक्रियाएं

'शुद्ध' लेखक क्यों नहीं ?

'शहर में घूमते हुए' स्तंभ के अंतर्गत जुलाई अंक में डेविड जे. डेल का यह विचार कि 'हिंदी में 'शुद्ध' लेखक बहुत कम हैं' कुछ जंचा नहीं। डेविड जे. डेल का 'शुद्ध लेखक' से तात्पर्य ऐसे लेखकों से हैं, जो शायद आजीविका के लिए पूर्णतः लेखन पर निर्भर हैं। अमरीका में, जहां एक लेखक की एक-एक कृति की लाखों प्रतियां प्रकाशित होती हैं और उनसे उसे लाखों डालरों की कमाई होती है, वहां तो 'शुद्ध लेखक' हो सकते हैं, पर भारत-जैसे देशों में, जहां लेखक के लिए पुस्तक-लेखन व्यवसाय नहीं, आत्माभिव्यक्ति का एक साधन है और जहां एक पुस्तक के प्रकाशन में उसे सौ-सौ बाधाओं का सामना करना पड़ता है, वहां उसका मात्र लेखन पर निर्भर रहना कठिन है।

यह जानकर कि डेविड जे. डेल 'कामायनी' का अंगरेजी में अनुवाद भी कर रहे हैं, प्रसन्नता हुई। **—विलास मिश्र, पटना**

जुलाई अंक में—'साहित्य में अश्लीलता कुछ भी नहीं,' 'हिंदी में शुद्ध लेखक कम हैं,' 'राम की भूली-बिसरी संतानें,' 'जब एक क्षत्रिय ने ऋषि को पलटकर शाप दिया', 'जहां औरतें मर्दों पर शासन करती हैं', 'हनुमान चालीसा की चोरी', 'दैनिक जीवन में धातुएं और उनकी विषाक्तता' और 'फाकलैंड' शीर्षक से प्रकाशित रचनाएं नयी जानकारी देनेवाली सिद्ध हुईं।

—तुलसी नीलकंठ, मुजफ्फरनगर (उ. प्र.)

जुलाई अंक में 'आस्था के आयाम' के अंतर्गत जलगांव की उत्साही तरुणी रजिया पटेल की साहसभरी कहानी प्रेरणाप्रद लगी। इसी तरह 'रामादंडू' के सेवाभावी युवकों और नयी दिल्ली के स्कूटर ड्राइवर लियाकत अली की ईमानदारी का विवरण भी प्रेरक था।

—रामकृष्ण वर्मा, इलाहाबाद

'जब एक क्षत्रिय ने ऋषि को पलटकर शाप दिया' एक पुरानी कहानी होते हुए भी अपने अर्थ में नवीनता लिये हुए थी। सचमुच निति की कथा, एक क्षत्रिय की नहीं, जागरूक मनुष्य की कथा है।

—सुजाता चक्रवर्ती, कलकत्ता

जुलाई-अंक में प्रकाशित लेख 'सफेद धुएं की काली दुनिया' रोचक एवं आलोचनात्मक लगा। परंतु लेखक अपने लेख में पर्वतीय अंचलों की इस बढ़ती समस्या का समाधान खोजने में असमर्थ रहे।

—नवीन चन्द्र जोशी, कानपुर

राजधानी बनाम प्रजाधानी

'कादम्बिनी' का जून का अंक पढ़ा। आचार्य देवेन्द्रनाथ शर्मा की रचना से मैं इस अंक में सर्वाधिक प्रभावित हुआ। अब हमें प्रतीक्षा है उस घड़ी की, जब 'रहनेवालों को नरक में रहना गवारा नहीं होगा' और 'नरक मिट जाएगा।'

—वीरेन्द्र पाण्डेय 'विमल'
रामपुरछपकहिया, पूर्वी चंपारण (बिहार)

जून अंक में 'राजधानी या प्रजाधानी' 'जैसी प्रजा-वैसा राजा' लेख विचारोत्तेजक था। लेखक ने नपे-तुले शब्दों में आज के सामाजिक एवं राजनीतिक जीवन की मीमांसा की है।

—कौशलकिशोर श्रीवास्तव, लखीमपुर खीरी

जून अंक में 'अमीर देशों के बच्चे भी अत्याचार के शिकार हैं' लेख में समस्या का अच्छा विश्लेषण किया गया है। हमारी सरकार को अश्लील फिल्मों एवं अश्लील साहित्य पर प्रतिबंध लगाना चाहिए, अन्यथा यहां भी स्थिति बदतर हो जाएगी। **—दिनेशचंद एम. विश्वकर्मा,**
आप्तीराजपुर (झाबुआ)

उपरोक्त दोनों लेखों पर इन पाठकों की भी प्रतिक्रिया प्राप्त हुई हैं—सुधा गोयल, बुलंदशहर, सुशील मिश्र, भोपाल, सुभाष चंद कुफल, चंडीगढ़, शकुन चंद गुप्त लालगंज (रायबरेली), एम: श्री. जैन, वाड्रफ नगर (सरगुजा—म. प्र.), रामकेश चौधरी, बस्ती, देवनारायण सिंह, ग्राम गाड़ा (बेगूसराय)।

अंधविश्वास बढ़ रहा है

मैं 'कादम्बिनी' का नया पाठक हूं। जून अंक में प्रकाशित हेरल्ड शर्मन की रचना 'मुझे कैनेडी की हत्या का पूर्वाभास हो गया था' बहुत रोचक थी। 'जालसाजी में वैज्ञानिक भी पीछे नहीं,' में प्रकाशित इस बात से 'जहां एक तरफ ज्ञान विज्ञान में प्रगति हो रही है, वहीं अंधविश्वास, रहस्यवाद तथा नीमहकीमी भी बढ़ रही है' से मैं पूर्ण रूपेण सहमत हूं। आज भी कुछ गांवों में ईश्वर को प्रसन्न करने के लिए बलि दी जाती है। अंधविश्वास, शहरों में भी कायम है। आज भी पत्र-पत्रिकाओं में 'जादुई अंगूठियों' के बारे में विज्ञापन प्रकाशित होते हैं, पढ़े-लिखे लोग भी इन विज्ञापनों के चक्कर में फंस जाते हैं। इनसान अपनी मेहनत, अपनी लगन से आगे बढ़ सकता है, करिश्मेंवाली अंगूठियों के सहारे नहीं। वीना सिंह की कहानी 'निर्णय के घेरे' हृदयस्पर्शी थी।

—गुरबीर सिंग चावला, रायपुर

समय के हस्ताक्षर

'कादम्बिनी' का नियमित पाठक हूं। वस्तुतः यह हिंदी की विशिष्ट पत्रिका है। जून अंक में 'समय के हस्ताक्षर' न पाकर निराशा हुई। 'समय के हस्ताक्षर' स्तंभ को बंद करना पाठकों के साथ अन्याय होगा। यों भी आपने 'चौराहे पर', 'प्रेरक प्रसंग'—जैसे स्तंभ बंद कर दिये हैं। आशा करता हूं, अगले अंकों में ये स्तंभ मिलेंगे। **—मदन किशोर सिंह, जमशेदपुर**

दूरानुभूति : एक आपबीती

जून अंक में 'सार संक्षेप' में 'मुझे कैनेडी की हत्या का पता चल गया था' पढ़ा। शर्मन ने लेख में यह व्यक्त किया है कि एक व्यक्ति के मन की बात दूसरे व्यक्ति के मन तक बिना किसी भौतिक माध्यम के पहुंच जाती है। यह सत्य है।

मेरे जीवन में भी एक बार ऐसी घटना घटी। मैं घर-परिवार से करीब ३०० किमी. दूर था। वह १६ अप्रैल, १९८० का दिन था। मेरा दिल सुबह से ही किसी अनहोनी आशंका से डरा हुआ-सा था। शाम को घबराहट अत्यधिक थी। भूख भी नहीं थी। किसी तरह दिल नहीं लग रहा था। फिर पता नहीं, एकाएक अंदर से पानी का समुद्र आंखों के जरिए फूट पड़ा। मेरे लाख कोशिश करने पर भी मैं नहीं रोक सका। अगले दो दिन बाद मेरा मित्र गांव से आया। उसने दुखद सूचना दी कि १६ अप्रैल को दोपहर बाद बिजली का करेंट लगने से मेरे ११ वर्षीय भतीजे का दुःखद निधन हो गया था।

—शैलाराम कौलका, नागौर (राज.)

आस्था के आयाम

जून अंक में 'आस्था के आयाम' के अंतर्गत प्रकाशित 'परोपकार की मूर्ति' शीर्षक रचना में जयपुर के स्थान पर नागौर और 'कुलामन' के स्थान पर कुचानम होना चाहिए।

—मदनलाल जैन, लाडनूं (नागौर राज.)

भाऊसार नहीं 'भावसार'

जून अंक में 'उनकी कला की धूम है फिर भी वे गरीब हैं,' शीर्षक से प्रकाशित लेख में कपड़े की उत्तम रंगाई-छपाई करनेवाले जिन 'छीपा' दस्तकारों के साथ 'भाऊसार' दस्तकारों का उल्लेख है, वे वास्तव में 'भाऊसार' नहीं, 'भावसार' हैं।

हो सकता है, अतीत में हमारा समाज 'बाहूसार' अथवा 'भाऊसार' कहलता हो, किंतु वर्तमान में तो 'भावसार' शब्द ही अधिक प्रचलित है।

यह सत्य है कि पिछली कई शताब्दियों से वस्त्र-रंगाई-छपाई की हस्तकला में सबसे अधिक योगदान 'भावसारों' का रहा है। राजस्थान ही नहीं, पंजाब, मध्यप्रदेश, गुजरात, महाराष्ट्र और दूर दक्षिण में फैले हुए 'भावसारों' ने इस हस्तकला में अपनी उत्कृष्टता सिद्ध की है। न केवल दुपट्टे-चूनरी ही वरन् जाजम, खोल (रजाई), लासी (लुगड़ा), लुंगी, पर्दे, दस्तरखान आदि पर मोहक रंग-बिरंगी बारीक छपाई करके अपनी हस्तकला का डंका पीटा है, परंतु औद्योगीकरण के मशीनी पंजे ने रंगाई-छपाई की हस्तकला पर अपनी छाप का ठप्पा लगाकर हम दस्तकारों की सारी कला को धूमिल कर दिया है।

—घासीराम भावसार, भोपाल

वर्ष २२ : अंक १०
अगस्त, १९८२

कादम्बिनी

आकल्पं कवि नूतनाम्बुदमयी कादम्बिनी वर्षतु

विश्व के विख्यात पांच उपन्यास

रावर्ट ए. हाइन लाइन
मैं किसी पाप से नहीं डरता ६८
लियोनिद ऐंद्रेयेव
एक मंत्री की मौत ८४
इरविंग वालेस
राष्ट्रपति जनता के कटघरे में १०१
सलमान रशदी
आधी रात का खतरनाक आतंक ११६
मिचियो ताकियामा
हरा तोता १४०

लेख एवं निबंध

नवीन चंद्र पंत
निरकुंश नौकरशाही २२
काशीनाथ गोविंद जोगलेकर
एक देश की मौत २८
डी. आर. मानकेकर
जोधपुर के महाराजा पाकिस्तान में ... ३५
गुंजेश्वरी प्रसाद
हमारे मुल्क का नाम ४२
डॉन हिक्स
समा गयी लहरों में रोल्स रॉयस ... ४८
बाला दुबे
वे जिंदा हैं, उनकी बादशाहत ५२
अश्विनी कुमार गोयल
सजा की एवज में ६३ लाख रुपये ... ५८
सेवकराम ओखाड़
पैंतीस वर्षों की भटकती हुई जिंदगी ... ६३
गोपीचंद श्रीनागर
गलतियां भी फायदेमंद होती हैं ... १३५

किसलय बंद्योपाध्याय
किस्से कुछ दुर्लभ डाक टिकटों के ... १३६
डॉ. रमानाथ त्रिपाठी
बंगाली मुस्लिम कवियों का...राग ... १५५
चंद्रमोहन प्रधान
कहानी नकली पेंटिंग १६०
एम. रुडोल्फ
उछल-कूद भी एक बीमारी है १६४

स्थायी स्तंभ

समय के हस्ताक्षर---६, शब्द-सामर्थ्य---९, प्रतिक्रियाएं---११, आस्था के आयाम---१४, वचन-वीथी---१५, काल-चिंतन---१८, गोष्ठी---८१, बुद्धि-विलास---९७, तनाव से मुक्ति---९८, विधि-विधान---११६, ज्ञान-गंगा---११८, आपकी परेशानियों का निदान---१६७, ज्योतिष : समस्या और समाधान (डॉ. आचार्य कुसुम)---१६९, नयी-कृतियां---१८४, विज्ञान--- १९२, समस्या - पूर्ति---१९९
आवरण एवं : पृष्ठ---६७, १३३, १९९---छाया कार स. वि. अरनेजा

भगवती प्रसाद द्विवेदी
मरा हुआ गांव : मरे हुए लोग ... १७२
कैलाश सेंगर
खलनायक : बुरा आदमी नहीं १७८
डॉ. शेखर आदित्य
अन्य ग्रहों के अंतरिक्ष यात्री १८८
प्रो. के. ए. दुबे 'पद्मेश'
यह महीना और आपका भविष्य. . .१९४

संपादक
राजेन्द्र अवस्थी

कार्यकारी अध्यक्ष :
एस. एम. अग्रवाल
हिंदुस्तान टाइम्स प्रकाशन समूह

संयुक्त संपादक :
शीला झुनझुनवाला
सह-संपादक : दुर्गाप्रसाद शुक्ल
उप-संपादक :
प्रभा भारद्वाज, डॉ. जगदीश चंद्रिकेश, भगवती प्रसाद डोभाल, सुरेश नीरव, धनंजय सिंह, चित्रकार : सुकुमार चटर्जी
प्रूफरीडर : स्वामी शरण
पता : संपादक---'कादम्बिनी' हिंदुस्तान टाइम्स लि., १८-२०, कस्तूरबा गांधी मार्ग, नयी दिल्ली-११०००१
वार्षिक मूल्य : ३८ रुपये

कालचिंतन

—कभी देखा है बया का घोंसला ?

●

—हां, दंभ भर सकते हैं हम सब, हमने बहुत देखे हैं, घोंसले बया के !

—सचमुच दंभ है यह, देखा नहीं किसी ने ! तो फिर देखो . . . तोड़ लाओ उसे पोखर के भीतर बबूल के झाड़ से वह लटक रहा है ! . . . डर है न कांटों का ? दलदल में फंस जाने का !

—बया को डर नहीं है कहीं, किसी चीज का, कभी तब भी वह कौए और कबूतरों की तरह अपने बच्चों को लापरवाह नहीं छोड़ती।

—वह धूप के आईने में तिनके बटोरती है; धूप और पत्तों की जब बातचीत होती है, तब वह चुपके-से उनका सूखापन चुरा लाती है; उनकी तरह बहस नहीं करती वह, इसलिए पेड़ों या वृक्षों के शाप का भागीदार भी नहीं बनती।

—हवा से तेज दौड़ती है बया, आंधी को समूचा समेट लेती है; धरती है और न आकाश अधर में बिखरे हुए पारे को बटोरने का चातुर्य उनका नैसर्गिक गुण है !

—यहां से आती है, वहां चली जाती है और मौसमों को चुनौती देती बया अपना घोंसला बना लेती है !

●

—आदमी के हाथ खिसक जाते हैं। रेशम के धागों को कीड़े के घर से खींचते हुए सावधानी के बावजूद कुछ टूटता तो है ही ! टूटते ही कपड़े की कीमत गिर जाती है !

—बया के घोंसले का कोई तिनका नहीं टूटता। टूटे हुए आयामों को जादू की तरह जोड़ती है वह ! . . . कहीं खराबी नहीं, सड़ी-गली सीवन का निशान भी कहीं नहीं, धार-धार पानी ऐसे मार खाता है उससे, जैसे कमलपत्र हो वह !

—सचमुच एक खूबसूरत फूल है बया का घोंसला; सूखा है तब भी खिला हुआ !

—क्या है बया में, जो वह कर लेती है, आदमी के हाथ नहीं कर पाते। आदमी की बुद्धि बेपेंदी के लोटे-सी ठोंकरें खाती है—यहां, वहां !

●

—जरा सोचो, मेरे दोस्त !

—बिना सोचे आदमी की संज्ञा के साथ जीना अधर्म है !

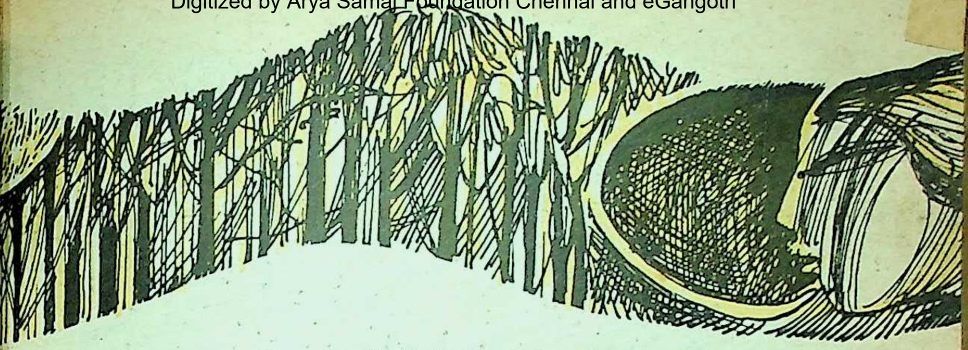

—पैरों में फटी बिवांइयां और सूरज की तीखी रोशनी से सूखे खेत . . . ये दरारें मजबूरी का एहसास हैं !

—सचमुच मजबूरी नहीं है, लेकिन गैर जिम्मेदारी है यह !

—हम सब गैर जिम्मेदार हैं, खानापूरी करना जानते हैं, बस ! आये हैं तो जीना पड़ेगा, जीने की तांत टूट जाएगी, तो मरना पड़ेगा !

—कुल मिलाकर जीते नहीं : न जाने कैसे जी लेते हैं ! . . . जीने का बहाना भी करते हैं और जीते जी दिन में न जाने कितनी बार मरते हैं !

—मौत तो एक दिन आती है, पर जिम्मेदारी से दूर भागकर अभिशप्त मौत तो रोज ही मरते हैं कई लोग ! ठोकरें खाकर फिर उठ खड़े होते हैं और खड़े भी नहीं हो पाते कि पारे की तरह लुढ़क जाते हैं !

—तब भी एहसास नहीं होता, अपनी गल्तियों का हमें !

—हम जिम्मेदार बन जाएं, तो बया से बेहतर घोंसला बना सकते हैं !

●

—शाम थी उस दिन ! पशुपतिनाथ के मंदिर की सीढ़ियों से उतर रहा था। अंतिम सीढ़ी से समतल जमीन पर पैर रखा मैंने, तो रोशनी का एक गोला वहां फैल गया ! रोशनी में घिरा मैं दंग ! कोई सिद्धि मिल गयी है मुझे ?

—एक अट्टहास !

—दृष्टि ऊपर उठी, तो माहौल ही कुछ और था : हिमालय की धवल श्वेत चोटियां रक्ताभ हो उठी थीं। एक सिंदूरी चादर ने सारी सफेदी ढंक ली थी; उसी की रोशनी ने धरती पर अपना जाल फैला दिया था !

—वही रोशनी मुझे घेरे थी; ढलते हुए सूरज की अंतिम किरण थी वह !

—सूरज की ढलती एक किरण अस्तागत होते-होते निर्विकार समभाव से सबको रक्तदान कर सकती है !

—हम इतने गैर-जिम्मेदार हैं कि उस रक्त का पान भी नहीं कर सकते !

—सौंदर्य को देखकर उसकी परिभाषाओं में लग जाते हैं और छोड़ जाते हैं, सूरज को कहने के लिए, 'हे मनुष्यो ! तुम्हारी जिंदगी बस एक चश्मा है !'

—चश्मे की तरह वह आसानी से बह जाती है और कमजोर होने पर दृष्टिदान के लिए एक दूसरे चश्मे की मोहताज हो जाती है !

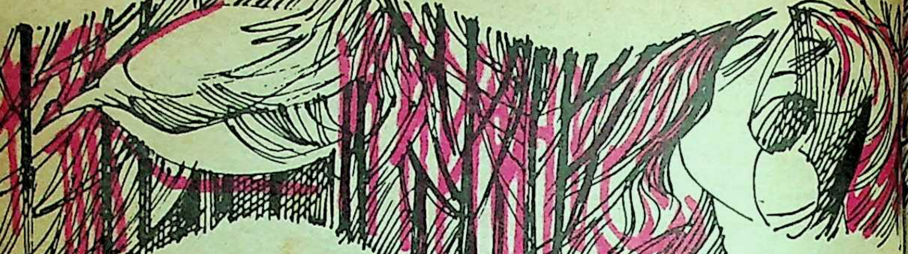

—एक मोहताज जिंदगी जीते हैं हम, जैसे मांग में सिंदूर भरकर एक नारी सुहागन होने का मिथ्या भ्रम ओढ़े फिरती है !

—सुहाग क्या है काश वह जान सकती !

—वह भी तो एक जिम्मेदारी है !

—कितनी सिंदूर की मांगें जिम्मेदारी को बोझ नहीं समझतीं ! तब भी नादान बच्चे की तरह रोज आईने में अपना अक्स देखती हैं और भारी हाथों से सिंदूर भरती हैं !

—किसके लिए ?

—केवल अपना बोझ दूसरे के सिर फेंकने के लिए और बेपरवाह सारे कमरे में कंदील की रोशनी की तरह पसरकर बेसुरे खर्राटे भरने के लिए !

●

—दोष . . . ! हां, उन्हीं को क्यों दें दोष . . . ! मांग में सिंदूर तो हमने भरा है ! हमारे अवगुणों की गीता ही तो उनका भी श्रृंगार बनेगी !

—जातियां, देश, धर्म और लोलुपता कौरवों की तरह ही अंततः नष्ट होंगी ।

—दूसरों का अनादर कर स्वयं आदर पाना एक मृगतृष्णा नहीं है !

●

—भरे पेट से भूखे पेटों को मेहनत करने का उपदेश देते हैं हम !

—अपने भ्रष्ट चरित्र से चरित्रवान बनने का उपदेश देना, कितना अच्छा लगता है !

—अपनी गलतियों को अपनी कुरसी की सत्ता में समाहित कर दूसरों पर उसे मैली चादर सा फेंक देना कितना आसान है !

●

—आदर्श हमारे शरीर के कलपुर्जे हैं और बाकी सब आदर्शहीन और दंभी हैं, यह मिथ्या एहसास हमारा सबसे बड़ा 'सच' है !

—चारों ओर देखता हूं मैं : बेफिक्र चलती-फिरकनी हवाएं, हर मौसम के साथ अपने आप उभरते अंकुर, फूलों से मौसम की पहचान और जंगल की बियावान स्याही में बेपरवाह घूमते जुगनू-सितारे !

—इन सबको अपनी जिम्मेदारी का एहसास है ! . . . मौन हैं, ये तब भी ! जिम्मेदारी का पाठ आदमी की पाठशाला में ही गैर-जिम्मेदार लोग पढ़ाया करते हैं !

—कैसे बनेगा तब देश ?

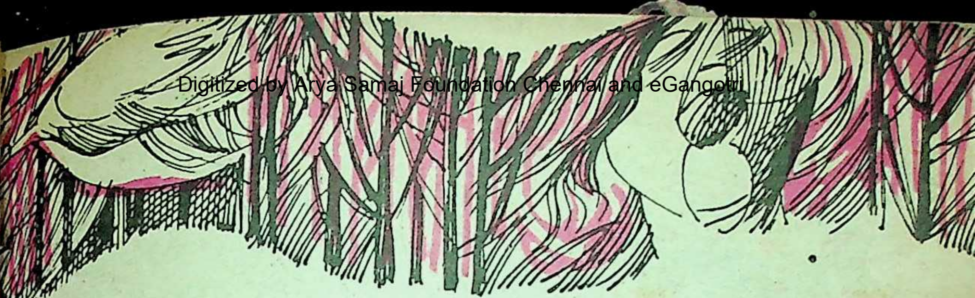

क्या होगी वह जाति ?
कैसे सुधरेगी नस्लें ?
भाषणों की फसलों में धान और गेहूं की बालियां कैसे निकलेंगी ?
कैसे फूलेगी सरसों !
द्रवित होगी कैसे धरा ! ताप देगा क्यों महाशक्ति दाता सूरज !
—वैसे आदमी अब नाग से भी ज्यादा जहरीला होता जा रहा है और इन सबमें, जहर
घोलने के उपक्रम कर रहा है ।

●

—आइए, लौट चलें हम उस बया के घोंसले के पास !
—अपने वैज्ञानिक विश्लेषण-केंद्रों में उनका परीक्षण करें !
—इस पृथ्वी पर अपने आने का दावा सिद्ध करना है हमें :
आदमी को जिम्मेदारी की जरूरत है,
जिम्मेदारी को आदमी की जरूरत है !

राजेन्द्र अवस्थी

नये धार्मिक केंद्र मानसिक रोग फैला रहे हैं !

श्री रजनीश का आश्रम हो या महर्षि महेश योगी का या वह 'हरे रामा हरे कृष्णा' आंदोलन का केंद्र ही क्यों न हो ! विस्तृत सर्वेक्षण के बाद तैयार किया गया एक शोधपूर्ण लेख, जिसमें इन आश्रमों की जिंदगी का एक नया नक्शा है ।

हंस की संतान हैं ये संथाल

संथाल, जिन्होंने अंगरेजी-सत्ता के खिलाफ सशस्त्र विद्रोह किया, आजादी के बाद कैसी जिंदगी जी रहे हैं ये भोले-भाले आदिवासी

●

'कादम्बिनी' बेहद लोकप्रिय है । फिर भी कुछ पाठकों को उसमें कुछ कमियां नजर आती होंगी । एक विस्तृत प्रश्नावली अगले अंक में
'कादम्बिनी' का अगला अंक भी विशेषांक की तरह पठनीय लेखों और कहानियों से भरपूर

अगस्त क्रांति : कुछ संस्मरण

अगस्त, १९४२ में अखिल भारतीय कांग्रेस समिति द्वारा बंबई में ऐतिहासिक 'भारत छोड़ो' प्रस्ताव पास करने के बाद अंगरेज सरकार ने कांग्रेस के लगभग सभी बड़े नेताओं को कैद कर दिया। इसके विरोध में जब जनता ने प्रदर्शन करके नाराजी प्रकट की, तब सरकार ने आतंक का जो दमनचक्र चलाया, दुनिया के इतिहास में उसकी मिसाल मिलनी मुश्किल है। अगस्त, १९४२ में

निरंकुश नौकरशाही द्वारा भारतीय जनता का दमन

● नवीन चंद्र पंत

पुलिस, सेना और सत्ता के मद में चूर कु सरकारी अधिकारियों ने जनता पर कि कदर जुल्म ढाये, इसका कुछ अनुमा आजमगढ़ के एंग्लोइंडियन कलक्ट स्वर्गीय राबर्ट हावर्ड निबलेट की डायरी लगाया जा सकता है।

अंगरेज अफसर जो भारत में ही बस ग

राबर्ट हावर्ड निबलेट का जन्म अक्तूबर, १८९० को हुआ था। वह १९

में प्रांतीय सिविल सेवा के सदस्य बनाये गये। उन्होंने १९१२ से १९४५ तक उत्तर-प्रदेश-सरकार की सेवा की। उन्होंने उत्तर-प्रदेश के अनेक जिलों में डिप्टी कलक्टर के रूप में कार्य किया। वह आजमगढ़, बदायूं और मैनपुरी के जिलाधीश रहे। १९४५ में सेवा-निवृति के बाद वे इलाहाबाद में बस गये, जहां २८ अक्तूबर, १९५६ को उनका स्वर्गवास हो गया।

मनुष्यता के समर्थक

१९४२ के आंदोलन के साथ किसी किस्म की सहानुभूति प्रकट न करते हुए उन्होंने इस बात का प्रयत्न किया कि न तो निर्दोष लोगों को सताया जाए और न लोगों के साथ निर्दयता और अमानुषिकता का व्यवहार किया जाए। निबलेट के पितामह १८५७ में गदर के दौरान आजमगढ़ के डिप्टी कलक्टर थे और उन्हें वेलनाडीह के कुछ लोगों ने शरण देकर बचाया था। निबलेट के पिता का जन्म आजमगढ़ में ही हुआ था। निबलेट को इन पारिवारिक संबंधों के कारण इस जिले के निवासियों से प्यार और सहानुभूति थी।

अगस्त, १९४२, हिंदुस्तान के इतिहास का वह पृष्ठ है, जिसमें स्वाधीनता-आंदोलन की गतिविधियां कहीं बहुत गहरे तक टंकित हैं। परिवर्तन के इस दौर में आजमगढ़ के एंग्लोइंडियन जिलाधीश राबर्ट हावर्ड निबलेट की डायरी के चुने हुए अंश तत्कालीन सरकारी अफसरों की मनमानी व गैरकानूनी हरकतों का एक प्रामाणिक दस्तावेज है, जो आज भी कई महत्त्वपूर्ण तथ्यों की हमें जानकारी देता है।

अतः जब राबर्ट हावर्ड निबलेट की नियुक्ति जिलाधीश आजमगढ़ के पद पर हुई तो उन्हें प्रसन्नता हुई। उन्होंने पहली दिसंबर, १९३९ को अपना पदभार ग्रहण किया। इसके बाद उन्होंने आजमगढ़ जिले का व्यापक दौरा किया। उनकी स्थानीय जानकारी से वरिष्ठ अधिकारी प्रभावित थे। अगस्त, १९४८ में निबलेट दो दिन की छुट्टी मनाने दोहरीघाट गये हुए थे। किंतु कुछ कारणवश उन्हें एक ही दिन बाद लौटना पड़ा। जब लौटकर आजमगढ़ पहुंचे, तब उन्हें कांग्रेस आंदोलन से निपटने के आदेश मिले।

बिहार और उत्तर प्रदेश के पूर्वी अंचल में १९४२ में जनता अंगरेजी शासन के विरुद्ध एक होकर उठ खड़ी हुई थी। निबलेट के शब्दों में यह 'विद्रोह' था और इसके कारण थे—जनता की भयंकर गरीबी, शिक्षित लोगों के लिए रोजगार के अवसरों की कमी और विदेशी शासन से मुक्त होने की जनता की इच्छा। इस 'विद्रोह' के कारण कानून और व्यवस्था लगभग समाप्त हो गयी थी और आवागमन और दूरसंचार के साधन बड़े पैमाने

पर नष्ट कर दिये गये।

प्रदर्शन और हड़तालें

नौ अगस्त, १९४२ को आजमगढ़ जिला कांग्रेस कमेटी के कार्यालय को बंद करवा दिया गया और कुछ गिरफ्तारियां भी की गयीं। दस तारीख को बंबई में कांग्रेस नेताओं की गिरफ्तारी की खबर सुनकर शहर के चार में से तीन हाई स्कूलों में हड़ताल हो गयी। इसके बाद भी आजमगढ़ शहर में कुछ प्रदर्शन और हड़तालें हुई, लेकिन कोई विशेष घटना नहीं घटी। ग्यारह-बारह अगस्त को सरायमीर में लगभग बीस फुट दूरी तक रेल की पटरी उखाड़ दी गयी। इससे एक गाड़ी पटरी से उतर गयी लेकिन कोई हताहत नहीं हुआ। चौदह अगस्त को बनारस-भटनी रेल सेक्शन में अनेक स्टेशनों में तोड़फोड़ की गयी और उन्हें आग लगा दी गयी। इन घटनाओं में अनेक स्थानों पर पुलिस ने गोली चलायी, जिनमें कई लोग मारे गये।

१५ अगस्त को पांच हजार लोगों की एक उत्तेजित भीड़ ने मधुबन पुलिस-थाने पर कब्जा करने का प्रयत्न किया। पुलिस ने भीड़ पर गोली चलायी। श्री निबलेट के अनुसार, जो उस दिन थाने में थे, इसमें तीस व्यक्ति मारे गये। बाद में मुकदमे के दौरान सरकार की ओर से मरनेवालों की संख्या ४०-५० के बीच बतायी गयी।

पूरे जिले में 'विद्रोह' फैल गया था। निबलेट ने इन घटनाओं का प्रत्यक्ष और संतुलित वर्णन किया है। नीचे उनक डायरी के कुछ अंश दिये जा रहे हैं, जिस उनके स्वतंत्र दृष्टिकोण, न्याय-प्रेम और उदारता भलीभांति प्रकट होती है उन्होंने नौकरशाही की शब्दावली और तौर-तरीकों पर तीखा व्यंग्य किया है—

'हमें कई दिन तक कोई समाचार-पत्र नहीं मिले। लेकिन अकसर जब कभ मैं अपना रेडियो चालू करता सदैव यह सरकारी घोषणा सुनने को मिलती कि देशभर में आम दिनों-जैसी स्थिति है।

●●●

श्री . . . . ने मुझे भारत-रक्षा नियमों के नियम ५९ ए की उपयो गिता बतायी। मैंने उस समय कुछ न कहा और वास्तव में ऐसे आदेश जारी गिये। लेकिन, वास्तव में उन क्षेत्रों इस तरह के आदेश निकालना हास्यास है, जहां सरकार की सत्ता समाप्त हो ग है।'

घर लूटने की खुली

'२७ अगस्त को फैजाबाद के पुलि कप्तान श्री . . . . और डिप्टी क क्टर श्री . . . . एक पुलिस दल साथ 'परोगराम' करने गये। उन्होंने मीलों तक फैजाबाद जिले के गांवों आग लगायी और फिर हमारे क्षेत्र घुसकर नहरूमपुर और कई गांवों आग लगा दी। तेईस अगस्त रविवार सुबह श्री . . . . (नोटीफाइड एरि कार्यालय) अग्निकांड के प्रमुख अभिय

बाबू राधारमन के घर रवाना हुए। उनके साथ सर्किल इंस्पेक्टर, (उसने लिखित आदेश प्राप्त कर लिया था) स्टेशन अफसर; कुछ पुलिस के जवान और नोटीफाइड एरिया के सभी डोम कर्मचारी थे। अभी जल्दी थी। औरतें कपड़े धो रही थीं, बच्चे नाश्ता कर रहे थे। उन सबको घर से बाहर निकाल दिया गया। इसके बाद डोमों को घर लूटने की खुली छुट्टी दे दी गयी। और अंत में घर को सामान के साथ आग लगा दी गयी।

यह सब दिन-दोपहर में २६,००० की आबादी वाले मऊ नगर के बीचोबीच किया गया। कुछ दिन बाद मुझको अत्यंत करुण भाषा में एक प्रार्थनापत्र दिया गया। उसके अनुसार ३०,००० रुपये का नुकसान किया गया था। यह नुकसान किसी भी हालत में १५,००० रुपये से कम नहीं होगा। यह सब कार्रवाई इस आधार पर उचित ठहरायी गयी कि राधारमन ने नोटीफाइड एरिया के दफ्तर को आग लगा दी थी। मेरा कहना यह था कि उसने उन्मत्त भीड़ के असर में ऐसा किया, जबकि हमने सोच-समझकर किया और स्वयं अपने कानूनों का उल्लंघन किया।'

●●●

'मधुबन क्षेत्र को सबक सिखाने के लिए फौजी टुकड़ियों के दो अभियान-दल भेजे गये। ये दल सोलह गांवों में गये और इसने ३४ घरों में आग लगायी। कारण यह दिया गया कि इन घरों में रहने वाले कांग्रेस-जन थे या उन्होंने मधुबन थाने पर हमला करने में हिस्सा लिया था। मैंने पुलिस कप्तान से रिपोर्ट मांगी। यह रिपोर्ट बहुत बाद में मिली और इसमें कहा गया था कि अनेक गांवों में लोगों ने 'अंगरेज सरकार की जय' के नारों के साथ फौजों का स्वागत किया था।

●●●

कैद तथा कोड़ों की सजा

'. . . २२ अगस्त को रेल पटरी के समीप खड़े उन्नीस लोगों में से अठारह को तोड़-फोड़ के लिए सात-सात वर्ष तथा तीस कोड़ों की कैद और एक युवक को दो वर्ष की कैद और पंद्रह कोड़ों की सजा दी गयी। इन लोगों को चौराहे पर कोड़े लगाये गये। जब कुछ लोगों ने इसका विरोध किया, तब और गिरफ्तारियां की गयीं। बाद में सेशन जज ने सबको बरी कर दिया।

●●●

'श्री . . . . ने एक हुक्म निकालकर गांधी-टोपी पहनने पर प्रतिबंध लगा दिया। पुलिस और सिविल गार्ड लोगों की टोपियां उतारने लगे। मैंने श्री . . . को एक चिट्ठी लिखकर समझाया कि ऐसे आदेश एक तो जरूरी नहीं हैं दूसरे गैरकानूनी हैं।'

पांच सितंबर को श्री . . . मधुबन को रवाना हुए। वे मधुबन तो नहीं जा सके लेकिन अमिला चले गये और वहां उन्होंने खुद दो मकानों में आग लगा दी। इसी दिन दोहरीघाट से कुछ मील दूर एक

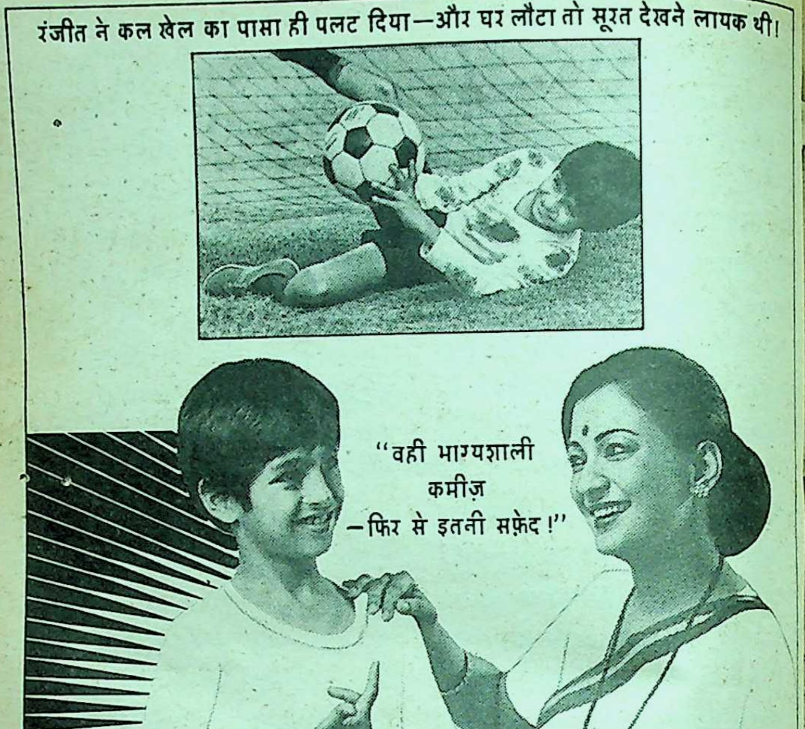

रंजीत ने कल खेल का पासा ही पलट दिया—और घर लौटा तो सूरत देखने लायक थी।

"वही भाग्यशाली
कमीज़
—फिर से इतनी सफ़ेद!"

**हाई पावर सर्फ़ की
सबसे सफ़ेद धुलाई
...जो देखने में आई!**

यह बेहतरीन—कपड़े सफ़ेद हों या रंगीन

High Power Surf washes whitest ...and it shows!

LINTAS-253-1510 HI

हिन्दुस्तान लीवर का एक उत्कृष्ट उत्पादन

खद्दर-
पंचमां
'मेरी
जज श्
सामने
मेरा व
लिए पं
●●●
'
की वस्
तो ना
सौ मवे
आजम
कर दि
लोगों
नहीं क
●●●
१
कुछ फ
नागपंच
आयोजि
इकट्ठे
तब लो
नारे ल
चलायीं
गंभीर
खद्दर-भ
अ
ऊंची हो
होते हैं
हथियार

खद्दर-भंडार को पुलिस दल ने फूंक दिया।'

पंचमांगी पुलिस

'मेरी स्थिति विचित्र थी। मैं केवल जज श्री . . . श्रौर पादरी श्री . . . के सामने खुलकर अपनी बात रख सकता था। मेरा कहना था कि पुलिस जापानियों के लिए पंचमांगी से अच्छा काम कर रही है।'

●●●

'मंडूरी श्रौर खाजा गांवों में जुर्माने की वसूली लायक कोई चीज नहीं मिली तो नायब तहसीलदार गांव के सभी आठ सौ मवेशियों को पकड़कर २० मील दूर आजमगढ़ ले आये। बाद में मैंने इन्हें मुक्त कर दिया। मैंने कमिश्नर से कहा कि हम लोगों को सजा देना चाहते हैं, बरबाद नहीं करना चाहते।'

●●●

१७ अगस्त को सरायरानी होकर कुछ फौजी टुकड़ियां गुजरीं। उस दिन नागपंचमी थी। इस अवसर पर दंगल आयोजित किया गया था। काफी लोग इकट्ठे थे। जब फौजी लारियां गुजरीं तब लोगों ने 'महात्मा गांधी की जय' के नारे लगाये। इस पर फौजियों ने गोली चलायीं। तीन लोग घायल हुए। एक गंभीर रूप से। बाद में फौजियों ने एक खद्दर-भंडार में आग लगा दी।

आम दिनों में जब सरकार की प्रतिष्ठा ऊंची होती है, थोड़े से सिपाही भी काफी होते हैं। लेकिन, जनता ने जिसके पास हथियार नहीं थे अपनी शक्ति को पहचान लिया था श्रौर दूरदराज के गांवों में स्थित पुलिस-थानों को सहायता नहीं भेजी जा सकती थी। हमला करनेवाली हजारों की भीड़ का सामना करना केवल घातक होता है। लेकिन श्रंगरक्षकों से घिरे बड़े अधिकारी, जो कभी अकेले, खतरनाक जगहों पर नहीं जाते, ऐसा नहीं सोचते।'

●●●

'पुलिस की गैरकानूनी हरकतों श्रौर ज्यादतियों को देखकर मजबूरी श्रौर गुस्से में मैंने अपने स्टेनोग्राफरों को आदेश दिये थे कि श्री . . . श्रौर श्री . . . के नाम के बाद आई. पी. अवश्य लिखा जाए। मेरा मतलब था वे इंडियन पुलिस के नहीं, 'इनसेनडियरी' या आग लगाने वाली पुलिस के सदस्य हैं।'

निर्दोष लोगों को बचाने श्रौर पुलिस की गैरकानूनी गतिविधियों को रोकने के कारण निबलेट तथा पुलिस के बीच तीव्र मतभेद हो गये। कुछ सीमा तक तत्कालीन सरकार ने श्री निबलेट का साथ दिया। लेकिन आखिर में पुलिस कप्तान, डिप्टी इंसपेक्टर जनरल पुलिस श्रौर कमिश्नर के दबाव में आकर उनकी बदली बदायूं कर दी गयी।

—१७०, लक्ष्मीबाई नगर, नयी दिल्ली

यदि आप इस प्रतीक्षा में रहें कि दूसरे लोग आकर आपको मदद देंगे, तो सदैव प्रतीक्षा ही करते रहेंगे।

—जॉर्ज बर्नार्ड शॉ

एक हत्या की मौत

• काशीनाथ गोविंद जोगलेकर

१९७३ के अप्रैल महीने की दस तारीख। पश्चिम एशिया का 'पेरिस'—बेरूत—रात की रंगरेलियों में अभी मस्त था। फिनिशिया स्ट्रीट के नाइट क्लबों में 'स्ट्रिपटीज' चल रहा था, शहर के लगभग पांच सौ रात्रि-मधुशालाओं में जाम के बाद जाम खाली हो रहे थे और सारा वातावरण पाश्चात्य और अरबी संगीत की धुनों पर थिरक रहा था। बीस मील दूर केसिनो में विभिन्न प्रकार के जुओं में लाखों का वारा-न्यारा हो रहा था।

अचानक यह आमोद-प्रमोद और शांति भंग हो गयी। पश्चिम बेरूत में कालंटन होटल और रू वर्दा (वर्दा स्ट्रीट) के बीच का हिस्सा स्टेनगन की गोलियों, हथगोलों और रिवाल्वर की गोलियों से गूंज उठा। क्या हुआ? कहां हुआ? कैसे हुआ? इसका किसी को पता चले, इसके पहले ही इस्रायली सैनिकों की एक टुकड़ी ने बेरूत के अंदर दो इमारतों पर छापा मारा और तीन प्रमुख फिलिस्तीनी नेताओं को मौत के घाट उतार दिया। इनमें से दो तो तोड़-फोड़ की कार्यवाही में हिस्सा लेते थे, पर तीसरे—कमाल बुत्रोस नासर—कवि और साहित्यिक थे और फिलिस्तीनी मुक्ति संगठन के प्रवक्ता थे। जब इस्रायली सैनिक

तीन बार उजड़ चुके फिलस्तीनी अब चौथी बार उजड़ने जा रहे हैं। उनकी शिकायत है कि अरब राष्ट्रों ने उनके हितों का नारा तो लगाया पर अपनी स्वार्थ-सिद्धि के लिए उन्हें जब-तब धोखा भी दिया।

उनके कमरे में घुसे, तब वे लिख-पढ़ रहे थे। अपने जीवन में शायद पहली बार उन्होंने पिस्तौल उठायी, पर वे उसे चला पायें, इसके पहले ही इस्रायली सैनिकों की स्टेनगनों ने उन्हें भूनकर रख दिया। वे मारे गये हैं, यह जानकर भी उन्होंने कमाल के मुंह पर कई गोलियां मारीं—यह जताने के लिए कि उन्होंने फिलिस्तीनी मुक्ति संगठन के प्रवक्ता को सदा के लिए चुप कर दिया है।

इस कांड से लेबनॉन में ही नहीं, सारी अरब दुनिया में तहलका मच गया। इस्राइल ने इस छापे की योजना बड़ी सोच-समझ कर बनायी थी। किस इमारत की किस मंजिल पर किस फ्लैट में कौन नेता झूठे नाम से रहता है, यह उन्हें मालूम था और यह भी मालूम था कि उस दिन वह वहीं रहेगा। कहा तो यह जाता था कि मुक्ति संगठन के अध्यक्ष श्री यासर अराफात को समाप्त करने के लिए यह छापा आयोजित किया गया था, पर वे उस दिन किसी दूसरी जगह सो रहे थे। इस्राइली छापामार किश्तियों से आये। किनारे पर उनके जासूसों ने मोटरें तैयार रखी थीं उनमें बैठकर वे वर्दा स्ट्रीट के पास के इलाके में गये। नागरिकों को उन्होंने चेतावनी दी कि वे बाहर न झांके, जिसने झांकने की कोशिश की, उसे उन्होंने गोली मार दी। फिलिस्तीनी छापामारों का मुकाबला करते हुए वे नेताओं के कमरे तक गये और उनकी हत्या कर वापस लौट गये। दूसरे दिन शाम को इस्राइल टेलीविजन ने बड़े गर्व से अपने सैनिकों की कारगुजारी दिखायी।

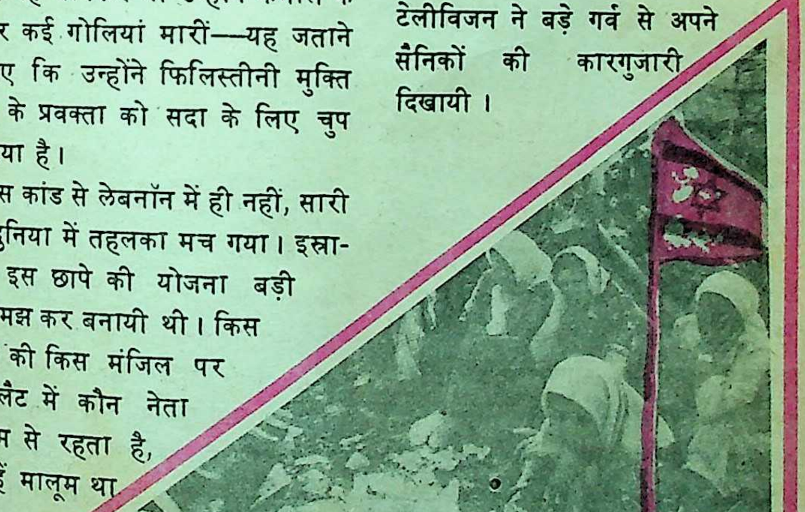

मैं उन दिनों बेरूत में आकाशवाणी के पश्चिम एशिया संवाददाता के रूप में काम करता था और जहां यह हत्याकांड हुआ, वह जगह मेरे मकान से केवल दो फरलांग दूर थी। इतना ही नहीं, जिस इमारत में मैं रहता था, उसमें फिलिस्तीनी नेता यासर अराफात अक्सर आते रहते और उन्होंने मुझे टेप पर आकाशवाणी के लिए इंटरव्यू देना स्वीकार भी किया था। पर इस छापे ने अब सब कुछ उलट-पुलट दिया था।

फिलिस्तीनी ही नहीं, लेबनॉन के मुसलमान नागरिकों को भी यह शक था कि लेबनान के ईसाई, जिनके हाथ में सत्ता केंद्रित थी अंदर-अंदर, इस्रायलियों से मिले हैं। बेरूत के इस छापे ने यह संदेह विश्वास में बदल दिया। छापे की योजना कितनी ही अच्छी तरह से क्यों न बनायी गयी हो, उसकी सफलता के लिए यह आवश्यक था कि लेबनान की सेना और पुलिस निष्क्रिय रहे। और यही हुआ भी। जिस जगह ये फिलिस्तीनी नेता मारे गये, वहां से पुलिस का प्रधान कार्यालय २०० गज भी नहीं है, पर पुलिस तब आयी, जब इस्रायली छापामार अपना काम पूरा कर किश्तियों में बैठकर चले गये थे। सेना और पुलिस में ७० प्रतिशत ईसाई थे और इनका प्रधान भी परंपरागत एक ईसाई ही होता था। प्रधानमंत्री सुन्नी मुसलमान होता था और अध्यक्ष मैरोनाईट ईसाई। तत्कालीन प्रधानमंत्री श्री साहब सलाम ने राष्ट्रपति सुलेमान फ्रांजिये से यह मांग की कि सुरक्षा में लापरवाही के लिए थल सेनाध्यक्ष को बर्खास्त कर देना चाहिए और वे जब नहीं माने, तब उन्होंने स्वतः इस्तीफा दे दिया।

आंतरिक संघर्ष की आग

यों तो लेबनान का आंतरिक संघर्ष बरसों सुलग रहा था, पर इस इस्रायली छापे ने उसे ज्वाला का रूप दे दिया। लगभग दो वर्ष के भीतर लेबनान में गृहयुद्ध छिड़ गया और उसका फायदा उठाकर सीरिया ने अपनी सेना वहां भेज दी। यह छोटा-सा देश कई हिस्सों में बंट गया, केंद्रीय सत्ता समाप्त हो गयी और इस्रायल को मौका मिल गया कि प्रकट रूप से आक्रमण करे। इस सारे दुर्भाग्यपूर्ण घटनाचक्र के पीछे था लेबनान का जर्जर राजतंत्र, अरब देशों की आपसी होड़ और ईर्ष्या और इस्रायल की विस्तारवादी नीति।

जर्जर राजतंत्र

आज से लगभग चालीस वर्ष पहले लेब-

नान के प्रमुख नेता इस बात पर सहमत हो गये कि वहां की जनसंख्या में ईसाई और मुसलमान ६ : ५ के अनुपात में हैं। उस समय भी इस अनुपात के बारे में लोगों को संदेह था, पर ईसाई अधिक पढे-लिखे और संपन्न थे और फ्रेंच शासकों का उन्हें समर्थन प्राप्त था। पर इन चालीस वर्षों में पूरा नक्शा ही बदल गया। ईसाई काफी संख्या में यूरोप, अमरीका और आस्ट्रेलिया में जाकर बस गये और जो लेबनान में रह गये उनकी जनसंख्या में वृद्धि मुसलमानों के मुकाबले कम हुई। पर यह बात ईसाई खासकर मैरोनाईट ईसाई मानने को तैयार नहीं थे। इसका मतलब होता कि देश के राजनीतिक, सामाजिक और आर्थिक जीवन पर से उसका प्रभुत्व समाप्त हो जाता। वर्तमान व्यवस्था में देश का राष्ट्रपति केवल मैरोनाईट ईसाई ही हो सकता है, संसद का अध्यक्ष शिया मुसलमान और प्रधानमंत्री सुन्नी मुसलमान। अन्य पद भी विभिन्न धर्मावलंबियों के लिए सुरक्षित थे, पर सभी महत्त्वपूर्ण पदों पर मैरोनाईट ईसाइयों का कब्जा था।

संसद की सीटें भी ६ : ५ के अनुपात में बंटी थी और इनमें भी ईसाइयों के भिन्न तबके और मुसलमानों के पंथों के लिए स्थान सुरक्षित थे।

इस जर्जर राजतंत्र के दो परिणाम हुए। पहला यह कि सत्ता कुछ परिवारों के हाथ में केंद्रित हो गयी। दूसरा परिणाम यह हुआ कि राजनीतिक दल पनप नहीं पाये। विभिन्न धर्मों को माननेवाले बीस पंचीस संपन्न परिवारों के हाथ में सत्ता केंद्रित हो गयी और इनके आपसी मतभेद कुछ भी हों, एक मुद्दे पर ये एकमत थे और वह यह था कि देश के संविधान और—उसकी नीति में कोई परिवर्तन न हो। चालीस वर्ष से भी अधिक समय में देश में कोई मतगणना हुई ही नहीं, क्योंकि अगर ईसाई डरता था कि उसका प्रभुत्व समाप्त हो सकता है तो सुन्नी मुसलमान को डर था कि कहीं शिया सबसे बड़े समुदाय के रूप में उभरकर अपना हक न मांगें।

सदियों से लेबनान ने राजनीतिक और धार्मिक अत्याचारों से त्रस्त लोगों को शरण दी है और ये शरणार्थी धीरे-धीरे वहां के जीवन में घुल-मिल गये हैं। सन १९४८, १९५६ और १९६७ के अरब इस्रायली युद्धों के बाद लेबनान में फिलिस्तीनी शरणार्थियों का आना शुरू हुआ, और इनकी

संख्या तीन लाख से ऊपर हो गयी। पुराने शरणार्थियों के मुकाबले ये कई मायने में बिलकुल अलग थे। ये राजनीतिक रूप से जागरूक थे और इनकी इच्छा लेबनॉन में स्थायी रूप से बसने की नहीं, फिलिस्तीन पर फिर कब्जा करने की थी।

लेबनॉन के मुसलमानों को फिलिस्तीनियों से स्वाभाविक तौर पर सहानुभूति थी और वे चाहते थे कि लेबनॉन और उसकी सरकार फिलिस्तीनियों के प्रश्न पर दृढ़ नीति अपनाये। इसके विपरीत लेबनॉन अरब-इस्रायली-विवाद में कोई ऐसी नीति अपनाये, जिससे इस्रायल को हमला करने का बहाना मिल जाए। सन १९६७ की लड़ाई के बाद लेबनॉन में अभूतपूर्व संपन्नता आयी थी, पर यह प्रायः समाज के ऊपरी वर्ग तक ही सीमित थी। यह वर्ग इस संपन्नता का उपभोग कर रहा था और करते रहना चाहता था। उसे मालूम था कि फिलिस्तीनी शरणार्थियों और खासकर छापामारों पर वामपंथी विचारधारा का गहरा प्रभाव है और इस विचारधारा से उनको डर था क्योंकि यह लेबनॉन में भी परिवर्त्तन की मांग को जोर दे रही थी।

मैरोनाईट ईसाइयों का सबसे बड़ा आक्षेप यह था कि फिलस्तीनी शरणार्थी मेहमान बनकर आये थे और अब मालिक बनकर बैठे हैं। उनके १६ कैंपों पर शासन लेबनॉन की सरकार का नहीं, उनका अपना था। दक्षिण लेबनॉन से वे इस्रायल के विरुद्ध तोड़फोड़ की कार्यवाई करते थे और इस्रायल इसके जवाब में लेबनॉन पर हमला करता था। जब कभी ऐसा हमला होता था, तब लेबनॉन अमरीका से दुहाई देकर हमला रुकवाता था। अमरीका इसलिए ऐसा करता था कि पूर्वी भूमध्य सागर में लेबनॉन ही अकेला अरब देश था, जो उसका समर्थन करता था।

अरब देशों की दोमुंही नीति

फिलिस्तीनियों की यह जायज शिकायत है कि अरब राष्ट्रों ने उनके हितों का नारा तो लगाया, पर जब-जब उनका अपना स्वार्थ सिद्ध होता दिखायी पड़ा, तब-तब उनको धोखा दिया। १९४८ में जब इस्रायल की स्थापना हुई, तब ट्रांस जॉर्डन के शाह अब्दुल्ला ने जॉर्डन नदी के पश्चिमी तट का प्रदेश हड़प लिया और अपने राज्य का नाम बदलकर जॉर्डन कर दिया। उनके पोते शाह हुसैन ने १९७० और १९७१ में अपने देश से फिलिस्तीनी छापामारों का पूरी तरह सफाया कर दिया। मिस्र के राष्ट्रपति नासिर भी आरंभ में छापामारों के विरोधी थे। कुछ लोग तो यह आरोप लगाते थे कि छापामार वास्तव में अमरीकी एजेंट हैं।

सन १९६७ की लड़ाई में इस्रायल ने मिस्र, सीरिया, और जॉर्डन की सेनाओं के छक्के छुड़ा दिये और इन तीनों देशों की विशाल भूमि पर अधिकार कर लिया। अरब जनता का मनोबल टूट चुका था और इसी समय फिलिस्तीनी छापामारों ने विमानों के अपहरण और दूसरी कार्य-

वाई से अरब जनता में आत्म-विश्वास जागृत किया। उन्हें यह आभास हुआ कि जो काम अरब देशों की सरकार नहीं कर सकती, वह छापामार कर सकते हैं। पर शीघ्र ही विमानों के अपहरण के विरुद्ध सभी देशों की तीव्र प्रतिक्रिया के कारण छापामारों ने यह रास्ता छोड़ दिया।

१९७३ तक दक्षिण लेबनॉन फिलिस्तीनी छापामारों का प्रधान गढ़ बन चुका था। बाकी अरब देश फिलिस्तीनियों का शाब्दिक और आर्थिक समर्थन तो करते थे, पर उन्हें अपने देश में काम नहीं करने देते थे। सऊदी अरब, कुवैत आदि देशों के नरेश ही नहीं, सीरिया और ईराक भी छापामारों के वामपंथी झुकाव से चिंतित रहते थे। पर दूसरी ओर वे लेबनॉन की सरकार से हमेशा यह आग्रह करते थे कि वह फिलिस्तीनी छापामारों पर प्रतिबंध न लगाये। यह दोमुंही नीति लेबनान के गृह-युद्ध में और भी उजागर हो गयी।

इस गृह-युद्ध में एक तरफ दक्षिण पंथी मैरोनाईट ईसाई दल थे जो चाहते थे कि लेबनॉन से फिलिस्तीनी छापामार निकाल दिये जाएं और वामपंथियों द्वारा उनके प्रभुत्व को जो खतरा उत्पन्न हुआ था वह समाप्त हो जाए। इन दक्षिणपंथियों को इस्रायल का समर्थन ही नहीं, सहायता भी प्राप्त थी। यह एक बड़ी विभीषिका थी कि इन दक्षिणपंथियों में पियर गमाएल का फलांजिस्ट दल भी शामिल था, जो नात्सी और फासिस्ट सिद्धांतों के आधार पर संगठित है। पिछले महायुद्ध में नात्सियों ने जरमनी में साठ लाख यहूदियों का सफाया कर दिया था और आज उन्हीं के वशंज नात्सियों के विचारों पर चलनेवाले दल का समर्थन कर रहे थे।

प्रधानमंत्री के भूतपूर्व जन संपर्क निदेशक श्री जोगलेकर, केंद्रीय सूचना एवं प्रसार मंत्रालय में विभिन्न महत्त्वपूर्ण पदों पर कार्य कर चुके हैं। वे बेरूत में 'आकाशवाणी' के विशेष प्रतिनिधि भी रहे हैं। हाल ही में वे रजिस्ट्रार ऑव न्यूज-पेपर्स के पद से सेवामुक्त हुए हैं। आजकल वे स्वतंत्र लेखन कर रहे हैं।

लेखक

वामपंथियों का नेतृत्व फिलिस्तीनी कर रहे थे क्योंकि ये राजनीतिक रूप से जागरूक और सैनिक दृष्टि से संगठित थे। सीरिया की इन्हें पूरी मदद थी। पर जब इस महायुद्ध में वामपंथियों की जीत करीब-करीब निश्चित हो गयी, तब सीरिया ने पैंतरा बदल दिया, और दक्षिणपंथियों का समर्थन करना आरंभ किया! कारण यह था,कि सीरिया भी नहीं चाहता था कि वामपंथी इतने ताकतवर हो जाएं कि सारें लेबनॉन पर उनका कब्जा हो। इससे किसी दिन सीरिया के

लिए भी खतरा हो सकता था।

नतीजा यह हुआ कि लेबनॉन कई हिस्सों में बंट गया। पश्चिमी बेरुत और दक्षिण लेबनॉन के अधिकांश भाग पर वामपंथियों का कब्जा था। पूर्वी बेरूत और उससे सटे हुए तटवर्ती प्रदेश पर दक्षिणपंथी ईसाईयों का कब्जा था। दक्षिण लेबनॉन में एक छोटे भाग पर भी एक भगोड़े ईसाई फौजी अफसर मेजर हद्दाद का अधिकार था। देश में केंद्रीय सत्ता समाप्त हो गयी।

इस्रायल के इरादे

इस परिस्थिति से इस्रायल न फायदा उठाता तभी आश्चर्य था। लंदन में इस्रायली राजदूत पर हुए हमले का बहाना बनाकर उसने दक्षिण लेबनॉन पर हमला कर दिया। यह उल्लेख्य है कि फिलिस्तीनियों ने पहले ही कह दिया था कि इस हमले में कोई हाथ नहीं। पर इस्रायल ने अंतर-राष्ट्रीय परिस्थिति से पूरा फायदा उठाया। फॉकलैंड युद्ध के कारण अमरीका इस परिस्थिति में नहीं था कि एक और मित्र देश को नाराज करे। ईराक को ईरान के साथ की लड़ाई में मुंह की खानी पड़ी थी और वह कुछ कर न सकता था। अजीब तो लगता है, पर शायद सीरिया के साथ इस्रायल का कोई समझौता हो गया हो, क्योंकि लेबनॉन की लड़ाई में वहां तैनात ३०,००० सीरियाई फौज ने इस्रायलियों का विरोध किया हो इसका कोई संकेत नहीं मिलता।

लेबनॉन में इस्रायल के इरादे कभी गुप्त नहीं रहे। आज से चौंतीस साल पहले इस्रायल के संस्थापक डेविड बेन गुरियन ने कहा था कि लेबनॉन में ईसाई राज्य की स्थापना होनी चाहिए और लिटानी नदी का प्रदेश इस्रायल में मिला लेना चाहिए। यहूदी धर्म पर आधारित राज्य के प्रणेता को लेबनॉन में भी धर्म के आधार पर बनी सरकार चाहिए, यह स्वाभाविक ही है। लिटानी नदी वर्तमान सीमा से पचीस मील अंदर है और इस्रायल की उस नदी के पानी पर हमेशा नजरें रही हैं। छापामारों को निकालने के बहाने से इस्रायल ने लेबनॉन के लगभग आधे हिस्से पर कब्जा जमा लिया है और संयुक्त राष्ट्र संघ के सभी प्रस्तावों को ठुकरा दिया है। यह दक्षिण लेबनॉन छोड़ेगा, इसकी उम्मीद कम ही है, और चाहेगा तो यह कि उसकी सीमा से लगा हुआ ईसाई राज्य हो। लेबनॉन का बाकी भाग अगर सीरिया के अधिकार क्षेत्र में चला जाए तो शायद इस्रायल को कोई आपत्ति न होगी।

पर इस सबके बाद भी मूल सवाल रह ही जाता है——फिलिस्तीनियों का क्या होगा? अब तक वे तीन बार उजड़ चुके हैं और अब चौथी बार उजड़ने जा रहे हैं। पर जब तक उनको अपनी कोई भूमि और देश नहीं मिलता, तब तक युवा फिलिस्तीनी तोड़फोड़ की कार्यवाई की ही ओर बढ़ता जाएगा, पर इससे तोड़फोड़ अपहरण और विध्वंस की घटनाएं समाप्त नहीं होंगी, उल्टी बढ़ेंगी।

डी ।।—३२९, विनयमार्ग, नयी दिल्ली

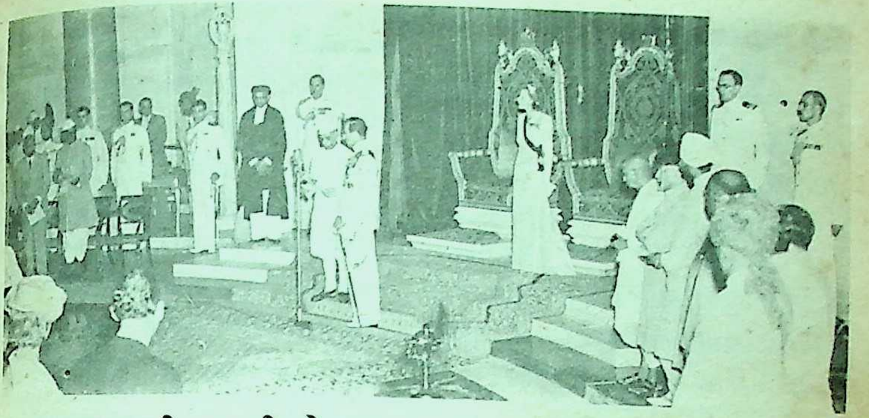

ऊपर: नेहरूजी को प्रधानमंत्री पद की शपथ दिलाते हुए लार्ड माउंटबेटन

एक पत्रकार की डायरी के कुछ पृष्ठ

जोधपुर के महाराजा पाकिस्तान में शामिल होना चाहते थे

• डी. आर. मानकेकर

उस दिन तीन जून थी। माउंटबेटन के अनुरोध पर तीन भारतीय नेता—नेहरू, जिन्ना और बलदेव सिंह—आल इंडिया रेडियो पहुंचे थे। वहां उन्हें अपने-अपने जाति-समुदायों की ओर से भारत के विभाजन की स्वीकृति देनी थी। सत्ता-हस्तांतरण के लिए पंद्रह अगस्त, १९४७ की तिथि निश्चित की गयी थी।

चार जून को वायसराय ने ब्रिटिश सरकार की ओर से इन निर्णयों की औपचारिक घोषणा के लिए एक प्रेस कांफ्रेंस बुलायी थी।

वैसे सत्ता-हस्तांतरण की मूल तिथि चौदह अगस्त तय हुई थी, किंतु ज्योतिषियों ने उसे अशुभ घोषित किया था, अतः चौदह अगस्त की मध्य-रात्रि के एक मिनट बाद वास्तविक सत्ता-हस्तांतरण का समारोह किया गया। इस तरह देवताओं को 'चकमा' दिया गया, यों वास्तविक सत्ता-हस्तांतरण के एक घंटा पहले से समारोह की अन्य कार्यवाहियां शुरू कर दी गयी थीं। इस तरह पंद्रह अगस्त की

डी. आर. (दिनकर राव) मानकेकर देश के जाने-माने पत्रकार हैं। ८ अगस्त, १९ में मंगलोर (कर्नाटक) में जन्मे श्री मानकेकर ने अपना पत्रकार-जीवन सन १९३ कराची में 'सिध आब्जर्वर' से शुरू किया। द्वितीय महायुद्ध के दौरान सन ४२-४३ में बरमा-मोरचे पर 'रायटर' एवं ए. पी. आई. के युद्ध-संवाददाता भी रहे। श्री मानके 'टाइम्स ऑव इंडिया' और 'इंडियन एक्सप्रेस-जैसे दैनिक पत्रों के संपादक भी रह चुके उन्होंने तेरह से अधिक पुस्तकें लिखी हैं। यहां हिंदी में पहली बार प्रस्तुत है, उनकी प्रकाश्य पुस्तक 'शीयर एनेक्डोट्स—लीव्ज फ्रॉम ए रिपोर्टर्स डायरी' का एक अं

तारीख भारतीय जनता के लिए स्वाधीनता-दिवस बन गयी।

वायसराय की घोषणा में कहा गया था कि सारी कार्यवाही नौ सप्ताहों में पूरी की जाएगी। अब उसका श्रीगणेश भी हो चुका था। माउंटबेटन ने सरकारी अधिकारियों को एक विशेष कैलेंडर दिया था। इस कैलेंडर के पृष्ठ अलग-अलग थे और उसके अंतिम पृष्ठ की तारीख थी—पंद्रह अगस्त! इस कार्यवाही की दैनंदिन की प्रगति पर नजर रखते हुए उन अधिकारियों को उस कैलेंडर का एक-एक पृष्ठ प्रतिदिन फाड़ना था।

इन नौ सप्ताहों में दोनों राष्ट्रों के बीच सेना का विभाजन करना था। कराची में पाकिस्तान सरकार का कामकाजी प्रबंध स्थापित करना था। ब्रिटिश-भारत के उत्तराधिकारी दोनों देशों के बीच देना-पावना का बंटवारा करना था। इसके अलावा विभाजन के कारण होनेवाली प्रशासनिक कठिनाइयों और उनके उपायों का अध्ययन किया जाना था।

इन सब बातों के अलावा स्वा होनेवाले नये भारत के सामने एक भीषण समस्या थी—यह आशंका थी पंद्रह अगस्त को ब्रिटिश साम्राज्य समाप्ति के बाद छह सौ रियासतें स्वयं को स्वाधीन घोषित न कर यदि यह आशंका सच हो जाती तो न केव देश के उत्तर-पश्चिमी और पूर्वी हि कट जाते, वरन् शेष भारत भी छोटे- स्वतंत्र राज्यों में बंट जाता। यह एक प्र से कांग्रेस के स्वाधीनता की मांग 'पाप' का 'दंड' होता!

यह एक चुनौती थी और उ हर कीमत पर सामना करना था। स्थिति में सरदार पटेल ने समय की चु का समुचित उत्तर दिया। इस का श्री वी. पी. मेनन ने उनकी भली सहायता की। और, उनकी कार्य में माउंटबेटन ने भी प्रभावपूर्ण ढंग से बंटाया। समय बहुत कम था। एक भी नहीं गंवाया जा सकता था।

अगस्त के पूर्व छोटे-बड़े छह सौ राजाओं को इकट्ठा कर भारतीय संघ में शामिल होने के लिए मनाना था।

नेहरू

सरदार पटेल

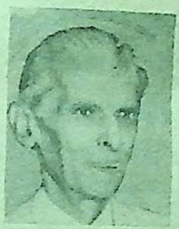

जिन्ना

माउंटबेटन

इस कार्य के लिए वी. पी. मेनन ने एक मोटी रूपरेखा तैयार कर ली थी। उन्होंने रियासतों के विलीनीकरण का एक फार्मूला तैयार किया था—जिसके अनुसार प्रतिरक्षा, संचार-माध्यमों एवं विदेशनीति के मामले में रियासतों को भारतीय संघ के आधीन होना था। इसके साथ ही पंद्रह अगस्त के बाद नयी दिल्ली और संबद्ध रियासत के बीच स्थायी समझौता होने तक की मध्यावधि में आनेवाली अड़चनों के लिए भी कोई इंतजाम करना था। इसके लिए वी. पी. मेनन ने अन्य मामलों में यथा-स्थिति का फार्मूला अपनाया था।

रियासतों का रुख

त्रावणकोर के महाराजा ने पहले ही घोषणा कर दी थी कि ब्रिटिश शासन की समाप्ति के बाद वे अपनी रियासत को स्वतंत्र घोषित कर देंगे। सबसे बड़ी रियासत हैदराबाद के निजाम ने भी त्रावणकोर का अनुकरण करने की मंशा जाहिर कर दी थी। इसी तरह भारत-तथा पाकिस्तान के साथ समान सीमावाली जम्मू-कश्मीर रियासत के महाराजा हरिसिंह ने भी इसी आशय की इच्छा व्यक्त की थी।

'चैंबर ऑव प्रिंसेस' के चांसलर नवाब भोपाल ने तो अपने बिरादर राजाओं को एक 'तीसरी शक्ति' के रूप में संगठित करना शुरू कर दिया था। यह तीसरी शक्ति भारतीय संघ ही नहीं, पाकिस्तान से भी अलग रहती। इस गुट में प्रमुख नरेश थे, इंदौर, जोधपुर और जैसलमेर के शासक। वे घबराहट के साथ सारे घटनाक्रम पर नजर रखे थे और देखना चाहते थे कि ऊंट किस करवट बैठता है!

स्थिति बेहद निराशाजनक थी। साथ ही कार्यवाई भी जल्दी करनी थी। सरदार पटेल और वी. पी. मेनन के पास अपनी कार्यवाइयों को नैतिकता की कसौटी पर

कसने का वक्त भी नहीं था। साध्य ही सब कुछ था, साधनों के औचित्य-अनौचित्य की चिंता करने का समय नहीं था। समस्या के निपटारे के लिए चाणक्य-निरूपित साम, दाम, दंड, भेद की नीति का पूरा पूरा अनुसरण किया जाना था।

त्रावणकोर महाराजा को समय रहते चेतावनी दे दी गयी थी कि ब्रिटिश शासन की समाप्ति के बाद उनकी रियासत में कम्युनिस्ट-विद्रोह होने पर कोई भी सहायता के लिए आगे नहीं आयेगा। भारतीय संघ में विलीनीकरण की योजना का अनुसरण करवाने के लिए इतना ही संकेत पर्याप्त था।

इसी तरह अन्य रियासती-नरेशों को भी समझाया-बुझाया और फुसलाया गया। जरूरत पड़ने पर धमकाया भी गया। होलकर-नरेश ने आनाकानी कर थोड़ी कठिनाई पैदा करने की कोशिश की थी, अतः विलीनीकरण-मसविदे पर हस्ताक्षर करने के लिए उन्हें भयभीत किया गया। अधिकांश नरेश जान गये थे कि भारतीय संघ में शामिल होने के सिवाय उनके पास और कोई चारा नहीं है। अतः बजाय 'दिलेरी' दिखाने के, उन्होंने दूरदर्शिता से काम लेना ज्यादा बेहतर समझा।

पच्चीस जुलाई को 'प्रिंसेस चेंबर' में अपने भाषण के माध्यम से माउंटबेटन ने भी इस प्रक्रिया में योगदान दिया। उन्होंने नरेशों से साफ शब्दों में कह दिया कि भारत या पाकिस्तान में शामिल होने के फैसले के अलावा उनके पास कोई औ चारा नहीं है। न तो वे स्वतंत्र रह सक हैं, और न ब्रिटिश राष्ट्रमंडल में ए सदस्य-उपनिवेश के रूप में! इस ऐति हासिक और भाग्य-निर्णायक बैठक बाद विलीनीकरण-संधि पर हस्ताक्ष करने के लिए नरेशों की कतार लग गयी

महाराजा गाय

इसी दौरान एक रहस्यमयी-उलझन डालनेवाली घटना घटी।

वह एक उमसभरी शाम थी। ह लोग इंपीरियल होटल के लॉन पर ब घुली बियर, या बर्फ-मिश्रित व्हिसकी औ सोडे का जाम ले रहे थे। हमारे बी सैयद हुसैन और के. एम. पणिक्कर भी थे सैयद हुसैन शीघ्र ही अमरीका में भारत प्रथम राजदूत नियुक्त होनेवाले थे। इ तरह के. एम. पणिक्कर भी इसी पद प पेकिंग जानेवाले थे। इनके अतिरि हमारे साथ सी. एस. वेंकटाचार, अ सी. एस. भी थे। वे इंडियन पोलिटि सर्विस के भूतपूर्व सदस्य थे और उन दि जोधपुर के युवा नरेश के प्रधानमंत्री थे जोधपुर-नरेश के बारे में यह प्रसिद्ध कि वे मनमौजी और जल्दबाज हैं, त कब क्या कर बैठें, कोई भरोसा नहीं अपना शाम का 'डिस्पैच' भेजने के कुछ आराम के लिए मैं भी इस जमात शामिल हो गया।

उस समय सैयद हुसैन हमें अमरी में बिताये गये निर्वासन-काल के संस्म

सुना रहे थे। बीच-बीच में वे अपना पसंदीदा तकिया कलाम दोहराते जा रहे थे—'हेल्स बेल्स्' ! हम सब दत्त-चित्त हो उन्हें सुन रहे थे। उनके बाद पणिक्कर ने भी अपने संस्मरण सुनाये। वेंकटाचार के पास भी पुरानी पीढ़ी के नरेशों के अपने कुछ संस्मरण थे। मैं एक जिज्ञासु श्रोता की भूमिका निभा रहा था।

सहसा जोधपुर-नरेश के ए. डी. सी. कर्नल केसरी ने हमारी बातचीत में विघ्न डाला। वेंकटाचार के पास पहुंचकर उन्होंने उनके कानों में फुसफुसाकर कोई बात की। ऐसा लगता था, जैसे वे किसी के जीवन-मरण की सूचना दे रहे हैं। वेंकटाचार तुरंत उनके साथ चल पड़े। वे इतनी शीघ्रता में थे कि उपस्थित लोगों से 'एक्सक्यूज मी' कहना भी भूल गये।

जिन्ना की पेशकश

बाद में पता चला कि जोधपुर-महाराजा, जो उसी शाम नयी दिल्ली आनेवाले थे, यहां पहुंचकर रहस्यमय ढंग से लापता हो गये थे। जोधपुर के युवा नरेश ने पहले कई बार पाकिस्तान-समर्थक रुख दर्शाया था। इसलिए वेंकटाचार और वी. पी. मेनन को, जिन्हें वेंकटाचार ने भागकर महाराजा के लापता होने की खबर दी थी, यह सही अंदाज लगाने में कोई कठिनाई नहीं हुई कि वे कहां मिलेंगे। यह पता चला कि सफदरजंग विमानतल पर नवाब भोपाल ने महाराजा जोधपुर और महाराजा जैसलमेर का स्वागत किया था। वे ही उन्हें श्री जिन्ना के यार्क रोड स्थित निवास-स्थान पर ले गये थे। जिन्ना ने इन दोनों नरेशों का बाहें फैलाकर स्वागत किया। यदि वे उन दोनों नरेशों को पाकिस्तान में शामिल होने के लिए राजी कर लेते, तब उनके पास गजब का तुरुप का पत्ता होता !

वी. पी. मेनन

जब जोधपुर-महाराजा ने यह पूछा कि पाकिस्तान की ओर से उन्हें क्या दिया जाएगा, जिन्ना ने युवा नरेश को एक कोरा कागज थमाते हुए कहा कि वे जिन शर्तों पर पाकिस्तान में शामिल होना चाहें, लिख दें, वे (जिन्ना) इस पर हस्ताक्षर कर देंगे।

इस उदारता से जोधपुर-महाराजा बहुत ही प्रभावित हो गये थे। इसके बाद उन्होंने अपने साथ आये जैसलमेर-महाराजा से कहा कि वे भी उनके साथ रहने पर सहमत हो जाएं। जैसलमेर-महाराजा एक शर्त पर उनका साथ देने के लिए राजी हो गये। शर्त यह थी कि हिंदू-मुसलिम दंगे होने पर उन्हें तटस्थ रहने का अधिकार दिया जाए। श्री जिन्ना ने उन्हें भी यह आश्वासन दे दिया।

जैसलमेर-महाराजा की इस मांग से जोधपुर-महाराजा की भी आंखें खुलीं। एक हिंदू राजा के पाकिस्तान में शामिल होने पर जो कठिनाइयां उत्पन्न होतीं,

उनकी ओर भी उनका ध्यान गया । अतः उन्होंने जिन्ना से कहा कि वे इस विषय पर विचार करने के लिए उन्हें थोड़ा समय और दें। उन्होंने जिन्ना को यह भी वचन दिया कि वे अगले दिन अपना जवाब भेज देंगे।

उस दिन शाम को जब जोधपुर-नरेश अपने होटल के कक्ष में लौटे, तब उन्होंने वी. पी. मेनन को अपनी प्रतीक्षा करते हुए पाया। उन्होंने महाराजा को संदेश दिया कि वायसराय आपसे इसी समय मिलना चाहते हैं। महाराजा ने विरोध तो किया, पर वे वी. पी. मेनन के साथ वायसराय हाउस जाने से इनकार नहीं कर सके। वे शिकवा-शिकायत करते हुए उनके साथ हो लिये।

वायसराय हाउस पहुंचने पर जोधपुर-महाराजा तो ड्राइंग रूम में वायसराय की प्रतीक्षा करने लगे और वी. पी. मेनन माउंटबेटन के शयनकक्ष की ओर दौड़े। उन्होंने उन्हें महाराजा के भावी कदम की जानकारी दी और यह भी अनुरोध किया कि वे युवा नरेश को इस 'एडवंचर' से रोकें।

माउंटबेटन ने वी. पी. मेनन के साथ ड्राइंगरूम में प्रवेश किया और यु नरेश को एक अच्छा-खासा लंबा 'लेक्च दिया। माउंटबेटन ने यह स्वीकार कि कि भारत का या पाकिस्तान, किसी देश में शामिल होने का जोधपुर के न ही अधिकार है, पर साथ ही उन्होंने य भी कहा कि एक हिंदू आबादीवा रियासत के हिंदू नरेश के मुस्लिम पा स्तान में शामिल होने पर जो कठिनाइ उत्पन्न होंगी, वे उस पर भी विचार करें

माउंटबेटन ने यह तथ्य भी प्रति पादित किया कि देश, हिंदू और मुस्लि बहुल राज्यों में विभाजित होने जा रहा है और यदि वे पाकिस्तान में शामि होंगे तो एक हिंदू आबादी बहुल रियास के नरेश होने के नाते वे उसी सिद्धांत खिलाफ जाएंगे, जिनके आधार पर भा को मुस्लिम और गैर-मुस्लिम देशों बांटा जा रहा है। पाकिस्तान में शामि होने के उनके फैसले से जोधपुर में सा दायिक दंगे भी हो सकते हैं, कारण भूमिगत तौर पर कांग्रेस आंदोलन का शक्तिशाली रहा है।

जब जोधपुर-महाराजा ने मा बेटन से जिन्ना द्वारा एक कोरे कागज हस्ताक्षर कर देने के प्रस्ताव का जि किया, तब वी. पी. मेनन ने कहा वे भी हस्ताक्षर के लिए उन्हें एक कागज दे सकते हैं, पर इससे सि झूठी आशा के, उन्हें और कुछ मिलेगा।

सेवा के लिए समर्पित चार्ल्स

आज इस बात से कोई इनकार नहीं कर सकता कि माल्टा का निवासी ५३ वर्षीय चार्ल्स सलीवा यूरोप का सबसे शक्तिशाली पुरुष है। वह अपने दांतों से खींचकर १३० टन के बोइंग हवाई जहाज को पचीस फीट दूर तक ले जा सकता है।

चार्ल्स सलीवा तरह-तरह के कई आश्चर्यजनक करतब दिखाता है जैसे वह दांतों से ही लोहे की मोटी सरिया को मोड़ देता है, कान में हुक लगाकर कार को दस फीट तक खींच सकता है, बालों से रस्सी बांधकर कार को खींच सकता है।

इतना सब करते हुए भी चार्ल्स सलीवा न तो मजमेबाज है और न धंधेबाज। वह माल्टा की सरकार में सुरक्षा सैनिक है और घर-परिवारवाला व्यक्ति। वह अपने इन करतबों के प्रदर्शन देता है और उससे होनेवाली आय का एक पैसा भी स्वयं नहीं लेता, बल्कि वह उस पैसे को समाज-सेवी कार्यों में लगा देता है।

उसकी बढ़ती परिपक्व उम्र को देखते हुए उसके डॉक्टरों का कहना है कि वह अब करतब दिखाना छोड़ दे, लेकिन समाज-सेवा के लिए समर्पित चार्ल्स सेलीबी इसे छोड़ने के लिए तैयार नहीं है।

अंततः विलीनीकरण संधि के प्रारूप में कुछ छोटी रियायतें दी गयीं और जोधपुर-महाराजा ने उस पर हस्ताक्षर कर दिये।

पिस्तौल तान दी

इसी बीच वायसराय थोड़ी देर के लिए भीतर गये तो युवा महाराजा ने वी. पी. मेनन पर पिस्तौल तान दी और चकमा देकर उन्हें वायसराय-हाउस में लाने के लिए गोली से मार देने की धमकी दी। इसकी खबर लगते ही वायसराय तुरंत ड्राइंगरूम में लौटे। उन्होंने महाराजा जोधपुर के हाथ से पिस्तौल छीन ली, और भविष्य में इस तरह का खतरनाक मजाक न करने के लिए झिड़की भी दी।

जब पंद्रह अगस्त १९४७ की भोर हुई तो छह सौ रियासतों में से तीन को छोड़कर शेष भारतीय संघ में शामिल हो गयी थीं। यह जबर्दस्त कूटनीति और संगठन-शक्ति का परिचायक थी। और एक महान उपलब्धि भी! तीन सप्ताहों से भी कम समय में।

छह सौ में से तीन रियासतों को छोड़कर भारतीय संघ में शामिल होने के लिए तैयार कर लेना, एक बहुत बड़ा कार्य था। जो तीन रियासतें बच रहीं —वे थीं—हैदराबाद, जम्मू-कश्मीर और जूनागढ़। इनमें से अंतिम रियासत ने पाकिस्तान में शामिल होना तय किया था, हालांकि उसके साथ उसकी कोई समरूपता नहीं थी।

—सी-४४, गुलमोहर पार्क, नयी दिल्ली

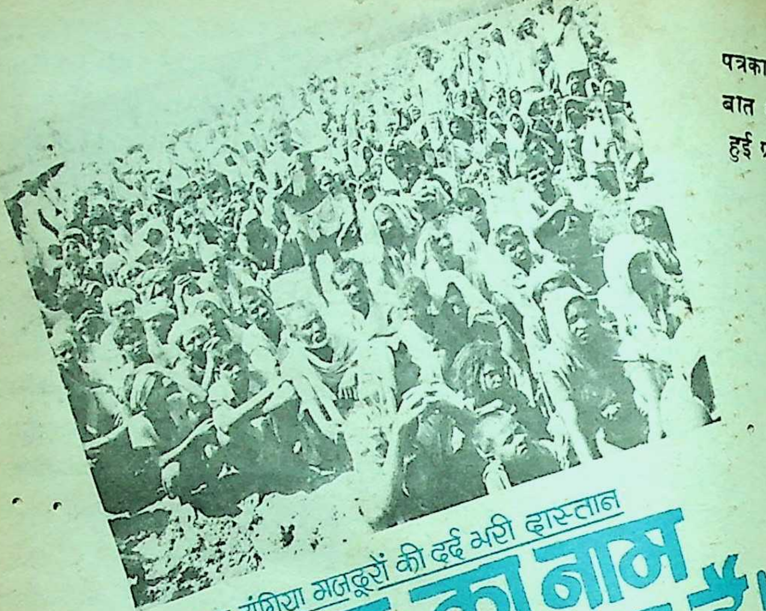

पत्रकारों
बात करते
हुई ग्रामी
भी

वन टांगिया मजदूरों की दर्द भरी दास्तान

हमारे मुल्क का नाम गोरखपुर है!

• गुंजेश्वरी प्रसाद

सावन का महीना था, और मौसम धूपछहियां। यात्री थे, कुछ पत्रकार और उनकी मंजिल थी—गोरखपुर जिले के महाराजगंज तहसील की पकड़ी रेंज की चौकी वीट नं. एक और चौकी वीट नं.—दो !

भैरहवा से नौतमवां और वहां से थरेंदा ! फिर थरेंदा से पकड़ी रेंज। रात भारी वरसात हुई थी, इसलिए वहां तक वस नहीं जा सकती थी। यात्रा जरूरी थी—इसलिए साइकिलों का प्रवंध किया गया था। यात्रा का उद्देश्य था, जंगल मजदूरी करनेवाले मजदूरों, जो 'व टांगिया' के नाम से जाने जाते हैं, जीवन का अध्ययन ! वनटांगिया मजदू जिनका मुल्क है 'गोरखपुर' और इस मुल् की 'वादशाह' हैं, इंदिरा गांधी ! आधुनि सभ्यता की एक किरण भी भूले-भट जिन तक अभी भी नहीं पहुंच पायी है

मीलों फैला जं

उत्तर-प्रदेश के पूर्वी जिलों में गोरखपु जिले के उत्तरी अंचल में कोई एक हजा वर्ग किलोमीटर में साखू, शीशम, सागौ

पीढ़ियों-दर-पीढ़ियों से वे जंगल लगाने और फिर उसे काटने का काम करते आ रहे हैं। उनकी मेहनत से सरकार को हर वर्ष करोड़ों रुपयों का लाभ होता है। फिर भी उनके जीवन में अभाव ही अभाव है। वे यह तक नहीं जानते कि उनके देश का नाम क्या है? गोरखपुर जिले के ऐसे ही गरीब वनटांगिया मजदूरों की व्यथा कथा

और पानन का विशाल प्राकृतिक जंगल फैला हुआ है। गोरखपुर मेडिकल कालेज (झुग्गियां-बाजार) के पास बनगाईं से जंगल शुरू होता है और ठूंठीबारी (भारत-नेपाल) के पार बुटवल (नेपाल) तक फैल जाता है। अंगरेजी राज में इन जंगलों पर जमीदारों का प्रभुत्त्व था। जंगल उनकी निजी मिल्कियत थे। जमींदारों के मजदूर उस समय जंगल काटते थे और जंगल लगाते थे। आजादी के बाद जमींदारी उन्मूलन हुआ और जंगलों पर सरकार का नियंत्रण स्थापित हो गया। जंगलों की लकड़ियों से जो आर्थिक लाभ पहले जमींदार लेते थे, वह लाभ सरकार लेने लगी, लेकिन उन मजदूरों की, जो जंगल लगाते और काटते थे, स्थिति में जरा भी परिवर्तन नहीं हुआ। श्री सुरेन्द्र तिवारी ने जंगलों में घूम वनटांगियां (जंगल-मजदूरों) समाज का जायजा ले लिया था और पत्र लिखकर इस समाज को देखने के लिए पत्रकारों को बुलाया था।

पकड़ी रेंज के घने जंगल में पत्रकारों का दल साइकिलों पर चल पड़ा। जंगल-विभाग का टूंठ-मुहर्रिर श्री रामनारायण यादव साथ था।

चौकी बीट नंबर–दो

सामने चौकी बीट नं. दो थी। घने जंगल के

अभावों के शिकार वन टांगियां मजदूर

CC-0. In Public Doma ukul Kangri Collection, Haridwar

बीच में झोपड़ियों का गांव बसा हुआ था। झोपड़ियों के किनारे बरसाती पानी जमा था और बड़े-बड़े मच्छर भनभना रहे थे। पूरा गांव सूना था। एक वनटांगिया मजूर अपनी झोपड़ी में भोजन कर रहा था। ठूंठ मुहर्रिर ने उससे पूछा, "और लोग कहां हैं?" उत्तर मिला, "बरसात हुई है। बढ़िया 'चानस' आया हुआ है। सभी मर्द-और‌त नर्सरी पर हैं।"

अतः नर्सरी पहुंचकर ठूंठ मुहर्रिर ने वनटांगियां मजदूरों को बुलवाया। सभी वनटांगिया स्त्री-पुरुष मजदूर हाथों में फावड़ा लिये आ गये।

वनटांगिया मजदूरों का मुखिया जंगली सामने खड़ा था और दूसरे लोग बैठे हुए थे। औरतें, जो गंधाती कपड़े पहने हुए थीं, आपस में कुछ बुदबुदाकर हंस रही थीं। एक वनटांगिया की औरत भनमतिया, जो कुछ हंसोड़ स्वभाव की थी, बोल पड़ी, "कैसे यहां आना हुआ है ?"

पत्रकारों ने जवाब दिया, "हम लोग तुम लोगों को देखने आये हैं।"

किस मुल्क से आये हैं ?

इस पर रामजस बोल पड़ा, "आप लोग किस मुल्क के हैं ?"

रामजस के सवाल का जवाब देते हुए एक पत्रकार ने कहा, "हम लोग भारतीय हैं।"

एक दूसरे पत्रकार ने हंसी में उन वनटांगिया मजदूरों से पूछ ही लिया, "तुम्हारे मुल्क का क्या नाम है ?"

इस पर जंगली ने कहा, "हमारे मुल्क का नाम गोरखपुर है।"

"कभी गोरखपुर देखा भी है ?" एक दूसरे पत्रकार ने पूछा।

रामजस ने कहा, "मेरे दादा गोरखपुर देखने के लिए महोराजगंज (गोरखपुर जिले की एक तहसील) तक गये हुए थे और वहीं से वापस लौट आये। उन्होंने बताया कि गोरखपुर बहुत दूर है।"

"और भारत कहां है ?" भनमतिया ने पूछा।

"भारत शहरों में हैं। गांवों में है। समुद्र के उत्तर में है। हिमालय के दक्षिण में है।" एक पत्रकार ने कहा।

"जंगल लगाने और जंगल काटने में तुम लोगों को सरकार क्या देती है ?"

जंगली ने कहा, "हम लोगों को सरकार पैसा-वैसा नहीं देती है। सामने जो नर्सरी दिखायी दे रही है, उस नर्सरी के बीच की भूमि खेती करने के लिए मिलती है। हर पांच फुट की दूरी पर शीशम, साखू, सागौन और पानन की पांत में हम नर्सरी लगाते हैं और बीच की जमीन फावड़े से गोड़कर खेती करते हैं। पांच वर्ष बाद जब नर्सरी के पेड़ बड़े हो जाते हैं, तब हम लोग नर्सरी को छोड़कर दूसरी जगह नर्सरी डालने चले जाते हैं।"

"सरकार जंगल लगाने और काटने की मजदूरी इतनी ही देती है !"

"जब हम लोग जंगल काटते हैं, तब काटने के बाद पेड़ों की जड़ों की ठूंठ हम

लोगों को मिल जाती है। उस ठूंठ को खोदकर हम लोग बाहर निकालते हैं और उसे जलाकर कोयला बनाकर पकड़ी बाजार में ले जाकर बेच देते हैं। नर्सरी की जमीन और जड़ों की ठूंठ ही हम लोगों को सरकार देती है।" जंगली ने बताया।

इस पर एक फॉरेस्ट गार्ड ने कहा, "नहीं। इतना ही नहीं। इन लोगों को झोंपड़ी बनाने के लिए हर साल बारह वल्लियां, सोलह बांस और खर फॉरेस्ट-विभाग की ओर से मिलता है।"

भनमतिया ने बीच में ही कहा, "ये सब लोग, जितना सरकार देती है, उतना नहीं देते हैं। ये लोग 'एच. टू.' (वन-विभाग का निरोधात्मक कानून) का झूठा मुकदमा बनाकर परेशान करते हैं।"

"यह 'एच. टू.' क्या है?"

'एच. टू'. का चंगुल

जंगली ने कहा, "वन-विभाग का एक ऐसा कानून है, जिसके द्वारा कभी भी वनटांगिया मजदूरों को लकड़ी तोड़ने और पेड़ों की डाल काटने के फर्जी आरोप में फॉरेस्ट गार्ड गिरफ्तार करते हैं। एच. टू. का भय दिखाकर, वन-विभाग के लोग हम लोगों को सताते हैं।"

रमरतिया एच. टू. का नाम सुनकर भभक पड़ी। उसने बताया कि अभी एक पखबारे पहले उसके पति को वन-विभाग के कर्मचारी एच. टू. के फर्जी आरोप में पकड़ ले गये थे। वह अपने पति को छुड़ाने गयी थी। उसे अपने पति को छुड़ाने में तीन रात तीन फॉरेस्टगार्डों के साथ गुजारनी पड़ी। 'एच. टू.' का भय दिखाकर फारेस्ट गार्ड जब चाहते हैं, वनटांगियां

वन लगाना
और वन में
रहना ही नियति

मजदूरों की औरतों को अपने चंगुल में फांस लेते हैं।"

"कितने दिनों से तुम लोगों का परिवार यह काम कर रहा है ?"

जंगली ने कहा, "मेरा जन्म जंगल में हुआ है। इसलिए मेरा नाम जंगली पड़ा। मेरे बाप-दादा कब से यह काम कर रहे थे, उन्हें नहीं मालूम था। जहां तक हम अनुमान लगाते हैं, पुश्त दर पुश्त से यह काम कर रहे हैं। हम लोगों के बीच में कई जातियों के लोग हैं। चमार, पासी, लोनियां और केवट-जाति के लोग हैं लेकिन यहां जाति-पांति का कोई भेद-भाव नहीं है। हम लोग आपस में शादी-विवाह रचाते हैं। हमारे दादा कहते थे कि जब जंगल जमींदारों का था, तब इतनी तकलीफ नहीं थी। जब से जंगल सरकारी हो गया, तब से तकलीफ बढ़ गयी है।

मुल्क की बादशाह

"इस क्षेत्र का एम. एल. ए. और एम. पी. कौन है ?"

"ये एम. एल. ए. और एम. पी. क्या होता है ?" रामजस ने पूछा।

"तुम्हारे मुल्क का प्रधानमंत्री कौन है ?"

रामजस ने कहा, "हम प्रधानमंत्री को नहीं जानते हैं ।"

"अरे भाई। तुम्हारे मुल्क का बादशाह कौन है ?"

जंगली ने कहा, "सुना जा रहा है कि हमारे मुल्क की बादशाह इंदिरा गांधी हैं।"

"तुम लोगों को इंदिरा गांधी का नाम किसने बताया ?" एक पत्रकार ने पूछा।

"फॉरेस्ट गार्ड कह रहे थे कि इंदिरा गांधी देश की बादशाह हैं।" जंगली ने कहा।

"वोट की मुहर किसे मारी थी ?"

इस पर रामजस ने कहा, "पकड़ी से टहर, ट्राली लेकर रमखला आया हुआ था और कहा कि चलकर पंजा पर मुहर मार दो। जंगल पर तुम लोगों का कब्जा हो जाएगा। हम लोगों ने पंजा पर मुहर लगायी थी, लेकिन उस दिन के बाद फिर रमखला नहीं मिला। मिट्टी का तेल और चीनी भी नहीं मिलती है। दुकानदार कार्ड मांगता है और हम लोगों के पास कार्ड नहीं है। ५ रुपया लीटर मिट्टी का तेल और ८ रुपया किलो चीनी खरीदना पड़ता है। हम लोग रमखला को पकड़ी में खोजते हैं। वह मिलता ही नहीं है।"

भनमतिया ने पूछा, "यह सब पूछताछ करके क्या होगा ?"

"हम लोग तुम्हारे बादशाह तक तुम्हारी तकलीफ पहुंचा देंगे।"

"चिट्ठी में यह जरूर लिख देना कि हम लोगों को बसने के लिए वह जमीन दें। हर पांच साल बाद हमारा गांव उजड़ जाता है और दूसरी जगह जाकर बसना पड़ता है। और यच. टू. को खतम कर दें।" भनमतिया ने संदेश दिया।

जहर-जैसी जिंदगी

सूरज जवान हो चुका था। धूप तेज थी। प्यास का अनुभव हो रहा था। सभी वनटांगिया मजदूर झोपड़ी की ओर जाने लगे थे।

वनटांगिया मजदूरों की झोपड़ियों की स्थिति और भी दयनीय थी। गांवों का सूअरबाड़ा भी वैसा नहीं होता। झोपड़ियों में कीचड़ था। रात की बरसात से किसी-किसी झोपड़ी में पानी था। सभी झोपड़ियों का मुंह आकाश की ओर खुला था। बरसात की बूंद झोपड़ियों के बाहर नहीं जा सकती थी। बड़े-बड़े मच्छर उड़ रहे थे। एक आदमी झोपड़ी के भीतर कराह रहा था। उसे मलेरिया का बुखार था।

उसकी कराह सुनकर एक पत्रकार ने पूछा, "अरे जंगली कौन कराह रहा है?"

"रतन है। उसको बुखार हो गया है।" जंगली ने बताया।

"कोई दवा चल रही है?"

"जंगल में कौन-सी दवा चलेगी?" यहां महुए की शराब ही हर रोग की दवा है। कच्चे कुएं का पानी पीते हैं। जब गांव ही मुस्तकिल नहीं है, तब पक्का कुआं कैसे बनेगा और नल कैसे लगेगा?"

पत्रकार-मंडली पानी पी रही थी। जंगली ने उसी समय कहा, "हम लोग कभी-कभार फॉरेस्ट गार्ड से कर्जा लेते हैं, तो वे लोग सूद जोड़ते समय कहते हैं, 'दस सवाइ बीस। उसमें पांच छोड़ दिया, फिर कहते हैं 'तीस रुपया दो'। चोरी-छिपे लोग हम लोगों से जंगल की लकड़ियां कटवाकर बेच देते हैं, और चेकिंग में जब पकड़े जाते हैं, तब हम लोगों को फंसा देते हैं"।

चौकी वीट नंबर एक और दौलतपुर में भी यही दुखड़ा सुनने को मिला। गोरखपुर जिले में ऐसे १० हजार वन टांगियां मजदूर हैं, जो अपने खून से वनों को सींचते और पालते हैं। हर साल इनके श्रम से उत्तरप्रदेश की सरकार को करोड़ों रुपयों का लाभ होता है।

सरकार ने देहाती क्षेत्र में आठ रुपया दैनिक मजदूरी तय कर दी है, लेकिन वनटांगिया मजदूरों को सरकार क्या दे रही है? इस वर्ग की आवाज भी नहीं है, क्योंकि इनके विषय में कोई कुछ जानता भी नहीं है। और जाने भी क्यों? ये लोग जंगली हैं। भारत को खूबसूरत बनाने के लिए जंगल लगाते हैं और शहरों के फर्नीचर के लिए लड़कियां तैयार करते हैं। इसी से उपेक्षित हैं, क्योंकि ये मजदूर हैं। **—कौड़ीराम, गोरखपुर**

—बांएर्स इतने धार्मिक प्रवृत्ति के लोग हैं उन्होंने सन १८९९ से १९०२ के दौरान जो युद्ध हुआ, उसमें पड़नेवाले रविवार के दिनों में लड़ाई नहीं लड़ी। उनके धर्म के अनुसार रविवार को युद्ध लड़ना वर्जित है।

समा गयी लहरों में रोल्स की परी

• डॉन हिग्स

सात दशकों तक रहस्य के अंतरिक्ष में उड़ती रही रोल्स-रायस की परी, अब पहचान ली गयी है। दुनियाभर में फैले ऊंची हैसियत के तलबगारों के दिलों की तमन्ना और आंखों का तारा बनी इस स्वप्न-सुंदरी के बारे में पता चल चुका है कि आखिर यह है कौन ? 'आनंदमयी' (स्पिरिट आवॅ एक्सटैसी) नाम से जानी जानेवाली यह नारी-मूर्ति रोल्स रायस कार के रेडिएटर के शीर्ष पर बनी रहती है। एक और यह शक्ति, सौंदर्य और गति की प्रतीक मानी जाती है, तो दूसरी ओर ब्रिटिश कला-कौशल की श्रेष्ठता की।

कब और कैसे आयी यह 'आनंद मयी' दुनिया की सबसे कीमती कार का शुभंकर-चिह्न बनकर ?

'आनंदमयी' —रोल्स रायस कारों के बोनट पर लगायी जानेवाली प्रतिमा की प्रेरणा—एलीनर थार्नटन

कारों का इतिहास बहुत पुराना नहीं है। यांत्रिक शक्ति से सड़क पर चलनेवाली गाड़ी बनाने के प्रयोग शुरू भले अठारहवीं सदी में हो गये हों, मोटरकार के निर्माण में सफलता पिछली सदी के अंत में ही मिल सकी, जब जरमनी के डैमलर ने अपनी कार बनायी। पिछली सदी के आखिरी दशक में व्यापारिक स्तर पर मोटरकारों के उत्पादन का सिलसिला चालू हुआ और लगातार जोर पकड़ता गया।

अमरीका के दो सबसे बड़े कारखानों, डेट्राइट के जनरल मोटर्स और फोर्ड, जो

आज भी दुनिया के क्रमशः पहले और दूसरे क्रम के सबसे बड़े मोटर कारखाने हैं, ने हर तरह के ग्राहकों के लिए कारें तैयार करने की कोशिश की। विभिन्न हैसियत के व्यक्तियों के लिए उनकी हैसियत के अनुकूल एक कार सस्ती और किफायती से लेकर बेशकीमती तक। दुनियाभर में उभरे अन्य कार-निर्माताओं ने भी इसी नीति का अनुसरण किया।

बेशकीमती कारों की दुनिया में सबसे बड़े नामों के रूप में उभरी जनरल मोटर्स की 'कैडलिक', फोर्ड की 'लिंकन' और जरमनी के डैमलर-बैंज की 'डैमलर,' जो अब 'मर्सीडीज' के नाम से जानी जाती है। आकल्पन में शोध और लगातार संशोधन के दौरों से निकलता इन कारों का हर नया माडल, पिछले से बढ़चढ़कर आता।

अलिफ-लैला के किस्से-भी मशहूर

रोल्स रायस की कहानियां अलिफ-लैला के किस्सों की तरह मशहूर हैं। जिसके पास यह कार हो, वह अपने आप विशिष्टों में आ जाता।

जिन दिनों दुनिया के बाजारों में एक सामान्य कार की कीमत पांच से दस हजार रुपये के बीच थी, उस समय भी रोल्स रायस लाखों की थी। और उसके चाहनेवालों का यह आलम कि खरीददारों की लंबी कतार लगी रहती। आदेश का पंजीयन कराने के बाद सालों इंतजार करना पड़ता। अकेले भारत में ही रोल्स-रायस के सैकड़ों ग्राहक थे। हर छोटी-बड़ी रियासत का राजा-महाराजा मानता था कि उसके कारों के बेड़े में जितनी रोल्स रायस गाड़ियां हों, उतनी ही उसकी शान। इनकी मांग पर रोल्स रायस कंपनी गाड़ियों में तरह-तरह के विशिष्ट और अनूठे उपकरण लगाकर देती थी। और रोल्स रायस के इंजन, कार्यक्षमता, मजबूती और टिकाऊपन का कोई सानी होने का तो सवाल ही नहीं था।

सात दशकों तक रहस्य के अंतरिक्ष में उड़ती रही, रोल्स रायस की परी ! उसकी मूर्ति के निर्माण की प्रेरणा के पीछे कौन था ? क्या वह कोई सुंदरी थी, जिसके रूप को मूर्तिकार ने सांचे में ढाल लिया था ! या वह मात्र उसकी कल्पना में उभरी थी . . .

कारों की इस महारानी के आनन पर विराजी परियों-जैसी सुंदरी 'आनंदमयी' रोल्स-रायस के हर चरचे के साथ सामने आती रही। लेकिन कोई नहीं जानता था कि दरअसल यह है कौन ? लोग एक-दूसरे से पूछते। सचमुच हुई है क्या ऐसी कोई सुंदरी या किसी कलाकार की कल्पना का रूपांतर मात्र है 'आनंदमयी'।

कहानी रोल्स रायस की सत्तर साल पुराने इस सवाल का हल

खोजने के लिए रोल्स रायस की एक टोली पूरी गंभीरता से प्रवृत्त हुई। उनकी खोजबीन से रोल्स रायस की कहानी पूरी हुई और कथा प्रकाश में आयी कि दक्षिणी लंदन की एक लड़की ने कैसे एक अभिजात्य पुरुष का दिल जीत लिया था और कुछ वर्ष बाद उस की दुखद मृत्यु कैसे हुई ?

'आनंदमयी' दरअसल एलीनर थार्नटन थी. लंदन के स्टाकवेल इलाके की एक छोटी-सी कुटिया में १८८० के अप्रैल में जन्मी लड़की। और जब १९१५ में उसकी मौत हुई, तब वह अपने प्रेमी 'बीउलियु' के दूसरे लार्ड मांटेग्यू के हाथ में हाथ डाले थी। अपनी प्रियतमा के विछोह का दुःख सहने के लिए, मांटेग्यू चौदह वर्ष तक और जीवित रहा।

जान मांटेग्यू और एलीनर की मुलाकात तब हुई थी, जब इस सदी के शुरू में 'आटोमोबाइल क्लब आव ग्रेट ब्रिटेन एंड आयरलैंड' की स्थापना होने पर एलीनर वहां काम करने पहुंची। उसकी असाधारण प्रतिभा का जादू जान के सर चढ़कर बोलने लगा। तत्कालीन इंगलैंड के एडवर्डियन समाज में घुलमिल जाने में उसके परिवार की मामूली हैसियत कभी आड़े नहीं आयी। मांटेग्यू ने उसे इस बात के लिए राजी कर लिया कि उसके व्यापारिक दौरों और सामाजिक कार्यक्रमों में वह सहायक के तौर पर काम करेगी। राजनीतिज्ञ, जमींदार, सैनिक और पत्रकार मांटेग्यू के पास समय की बहुत कमी थी, लेकिन झील-सी गहरी आंखोंवाली एलीनर के लिए नहीं।

यह सुंदरी दुनिया की सबसे उत्कृष्ट कार का निशाना कैसे बनी ? लगता है कि इस सदी के पहले दशक के अंत तक लोकप्रिय होनेवाले हास्यास्पद चिह्न से रोल्स रायस को चिढ़ हो गयी थी। इनमें टोने-टोटके और जादूगरी के चिह्न, थे, मसखरे पुलिसवाले थे। इस तरह का बेसिर पैर का कोई चिह्न रोल्स रायस अपनी प्रतिष्ठा के साथ नहीं जोड़ना चाहती थी।

मूर्तिकार की प्रेरणा

रोल्स रायस ने मूर्तिकार चार्ल्स साइक्स से ऐसे रूपाकार की मांग की, जो कार की प्रतिष्ठा के अनुरूप हो, भव्य हो। उसने पहला काम यह किया कि मांटेग्यू की रोल्स रायस में सवारी करने जा बैठा। कार की शांत और शानदार क्षमता ने उस पर प्रभाव डाला ही, कार-मालिक के साथ बैठी खूबसूरत लड़की—एलीनर ने भी उसके जेहन में नक्श हो जाने में कोई कसर नहीं छोड़ी। साइक्स के मस्तिष्क पर छायी एलीनर ही 'आनंदमयी' के रूप में साकार हुई। रोल्स रायसवाले देखकर विभोर हो गये और एलीनर अमर हो गयी। सदी का दूसरा दर्शक शुरू होते न होते वह रोल्स रायस की शुभंकर बन गयी, ऐसा व्यापारिक चिह्न, जिसके उत्कृष्टता सर्वमान्य रही।

पहला महायुद्ध छिड़ने पर सैनिक

अधिकारी मांटेग्यू बंबई रवाना होने के लिए तैयार हुआ। उसने पैसिफिक एंड ओरियंट के आरामदेह जहाज 'परसिया' में अपने और एलीनर के लिए जगह 'बुक' करायी। जहाज मिस्र पहुंचने पर एलीनर को लंदन के लिए लौट जाना था। जान को वहां तक पहुंचाकर और भारत सरकार के बारे में लंबी रपट देकर। दक्षिण फ्रांस में जहाज पर लौटते समय मांटेग्यू को एक अपना चचेरा भाई मिल गया, जो नौसेना में अधिकारी था। उसके आग्रह पर मांटेग्यू ने 'गीव' वेस्टकोट खरीदा, जिसे जरूरत पड़ने पर फुलाकार जीवन-नौका में बदला जा सकता था।

१९१५ के दिसंबर की ३० तारीख को आठ हजार टन का जहाज 'परसिया' भूमध्यसागर के क्रेट टापू से रवाना हो रहा था। उसमें ५०१ यात्री थे। प्रथम श्रेणी के भोजनागार में शानदार भोज चल रहा था।

मौसम खुला था और समुद्र शांत। लेकिन 'परसिया' पर नजर लगाये थी एक जरमन यू-बोट। दोपहर बाद एक बजा होगा कि यू-३८ पनडुब्बी ने टारपीडो छोड़ा और 'परसिया' जलराशि में समा गया।

एलीनर और मांटेग्यू हाथ में हाथ दिये समुद्र की खौलती लहरों में कूद पड़े। एलीनर को फिर नहीं देखा गया और मांटेग्यू को भी मरा हुआ मान लिया गया। हुआ यह कि जहाज पानी में समाते समय भीषण विस्फोट हुआ। और लहरों में हुई हलचल से मांटेग्यू ऊपर आ गया।

तीन दिन बाद भीड़ से भरी और डूबने को हो रही एक नौका द्वारा मांटेग्यू को उठाया गया। कुछ दिन बाद उसने अपनी संकट की घड़ियों की कहानी 'दि टाइम्स' में प्रकाशित करायी।

मांटेग्यू परिवार के आवास में आज भी वह वेस्टकोट रखा है, जिससे मांटेग्यू की जान बची। वहीं वर्तमान लार्ड की कारों का अमूल्य संग्रह भी है। और वहीं है मांटेग्यू की वह घड़ी, जिसकी सुइयां १ बजकर १० मिनट पर ठहरी हैं। वह समय जब जहाज डूबा था।

मांटेग्यू और एलीनर की कहानी में एक तीसरा पात्र और आता है। उनकी पुत्री, जो पहली मुलाकात के कुछ ही समय बाद जन्मी थी। 'आनंदमयी' की हकीकत खोजने निकली रोल्स रायस की टोली की इस लड़की से भी मुलाकात हुई, जो बूढ़ी हो चुकी थी और नौसेना के भूतपूर्व अधिकारी अपने पति के साथ एक कस्बे में रहती थी। कुछ दिन बाद उसने क्रीव स्थित रोल्स रायस के मुख्यालय को धन्यवाद का पत्र लिखा कि अतीत के बारे में जानकर उसे आनंद मिला है। पत्र मिलने के घंटेभर बाद ही मांटेग्यू के पुत्र और बीऊलियू के वर्तमान लार्ड का रोल्स रायस में टेलीफोन पहुंचा कि वह वृद्ध महिला यात्री एलीनर की पुत्री इस दुनिया में नहीं रही। ●

मिस्र के पदच्युत बादशाह फारुख ने एक बार कहा था--'अंग्रेज बादशाह को छोड़कर अब तो बादशाह सिर्फ ताश की गड्डियों में रह गये हैं।' यहां प्रस्तुत है--उन राजा-महाराजाओं की दास्तान जो आज पराये आंगनों में बैठे हैं कल की आस लगाये...

वे जिंदा हैं, उनकी बादशाहत ताश की गड्डियों में है

● बाला दुबे

जब वाजिदअलीशाह कलकत्ते के मटिया बुर्ज में बैठे, अपने खोये अतीत के स्वप्न दोहरा रहे थे, तब शायद अवध निवासियों की आंखें भी खुली थीं। हाथ से निकले राज्य को फिर से पा लेना कितना मुश्किल होता है। इसकी गवाह है--पेरिस में स्थित वाजिदअली शाह की मां मलिका किश्वर जहां की खामोश, तनहा कब्र। जिंदगीभर की पर्दानशीन भारतीय मुस्लिम नारी का 'सात समंदर' पार विलायत जाना—अपने बेटे से छिने राज्य को वापस लेने का फरेब खाकर। तलवारों से तराशे राज्य कहीं गिड़गिड़ाने से वापस मिलते हैं ? और थोड़े दिन बाद जब वाजिदअली शाह भी नहीं रहे, तब उनके किसी वफादार तरफदार के टूं दिल से यह आवाज निकली थी—

ये जमी पे जिसका था दबदबा
कि बलंद अर्श पे नाम था
उन्हें यों फलक ने मिटा दिया
कि मजार तक का निशां नहीं

वाजिदअली शाह ही क्या, हिं स्तान के बादशाह बहादुरशाह जफ तक के मजार को ना जाने यह जमीं कैसे निगल गयी। धीरे-धीरे उनके उजड़ें खानदान भी 'हुजूमे आम' की अपार भी में ना जाने कहां खो गये। आज जब हं किसी अखबार में उनके किसी भूले-भटकें वंशज का नाम पढ़ते हैं, तब हमें बरब

कुछ

पतझड़
पीली म
शीराजा
धीरे
के भूचाल
ही नहीं
कर उन
कोशिश
के बुजुर्गों
अंधेरों मे
पिसे आद
उसके ज
हुए राज्य
हुए स्वा
आखिर,
वीते हुए
पर उतारु
सिर्फ ताश
जब मिश्र
को वक्त
कि अब उ
है। अपनी
को लेकर
हिरात के

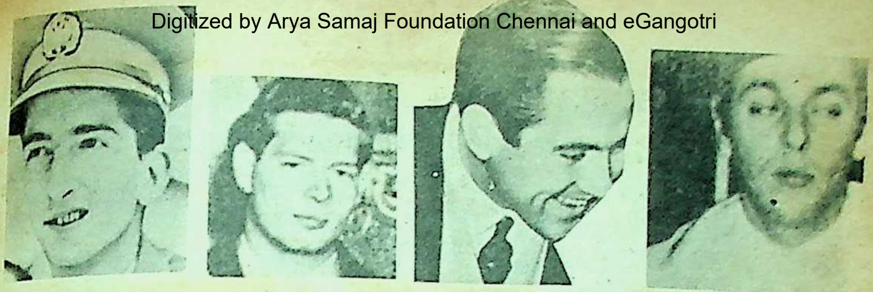

कुछ भूतपूर्व नरेश, बायें से, पीटर द्वितीय (युगोस्लाविया) माइकेल (रूमानिया) कांसटाइन (यूनान), हसन द्वितीय (मोरक्को)

पतझड़ का ख्याल हो उठता है—पकी पीली मुरदा पत्तियों का बिखरा हुआ शीराजा।

धीरे-धीरे ऐसा अहसास हुआ कि वक्त के भूचाल ने पुरानी सल्तनतों को हिलाया ही नहीं, बल्कि उन्हें धूल में मिलाकर उनका नामोनिशां ही मिटा देने की कोशिश की । इन भूले-बिसरे बादशाहों के बुजुर्गों के शजरे उदास इतिहास के अंधेरों में दुबके पड़े हैं। फिर सदियों से पिसे आदमी की नींद उचाट हुई और जब उसके जज्बात की आंधी उड़ी, तब जमे हुए राज्य भी उखड़ गये। जनता के कुचले हुए स्वाभिमान ने अंगड़ाई ले ही ली आखिर, और फिर वह अपने राजाओं से बीते हुए मुरझाये कल का बदला लेने पर उतारू हो गये।

सिर्फ ताश गड्डियों में

जब मिश्र के रंगीले बादशाह फारूक को वक्त ने झकझोरा, तब वे जान गये कि अब उनका ठहरा हुआ जादू टूट चुका है। अपनी चांद-जैसी बीवियों और रखैलों को लेकर वे इटली भागे थे । हीरे-जवाहिरात के अंबार पहले से ही खिसका दिये गये। अचल संपत्ति चल नहीं पायी वरना उसे भी साथ ले जाते। बुझते दीपक की लौ की भांति फारूक के उजड़ते वैभव का प्रकाश भी खूब फैला। जब कभी शराब का उदास खुमार गालिब हुआ, तब फारूक पुरानी यादों की वीरान भूलभुलैयां में भटक जाते। इसी इज्तिराब में उन्होंने एक बार कहा था, 'अंगरेज बादशाह को छोड़कर, अब तो बादशाह सिर्फ ताश की गड्डियों में ही रह गये हैं।'

कितना सच कहा था फारूक ने। इने-गिने कठपुतली बादशाहों के अतिरिक्त अब रहा ही कौन है ? यह अंगरेजों का ही दम है. जो वे अपने देश की बूढ़ी परंपरा को आज भी निभा रहे हैं।

इंग्लैंड के पड़ोसियों पर जब निगाह टिकती है, तब सब कुछ कितना बदला-बदला-सा लगता है। बल्गेरिया, रूमानिया, युगोस्लाविया, मोरोक्को, अलबानिया, ग्रीस. फ्रांस, रूस—उनके राजे-महाराजे आज पराये आंगनों में उदास बैठे हैं।

पृथ्वी का संपूर्ण पुत्र

रूमानिया के पदच्युत राजा माइकिल भी इसी उम्मीद में बैठे हैं। उनके वंश

का राजरा हौहनजोलर्न-सिगमैरिंजन से आरंभ होता है—सन १८६६ से १९४७ तक उनका वंश-वृक्ष हरा-भरा रह सका। कभी उनके पूर्वज राजा चार्ल्स ऐंथनी और राजमाता जोजफीन ने रुमानिया राज्य को पाल-पोसकर पांवों खड़ा किया था। वैसे रूस की प्रभाव-छाया रुमानिया के आंगन पर टंगी रही और क्रांति के उमड़ते बादल भी यदा-कदा गड़गड़ाते रहे, फिर भी राजा अपने राजमहल में निश्चित बैठा रहा। फिर कभी बल्गेरिया से खटपट हुई, तो कभी ग्रीस से—कभी युगोस्लाविया से संधि हुई तो कभी चैकोस्लोवाकिया से। १६ सितम्बर १९४० में रुमानिया के राजा किंग कैरल राज्य छोड़कर भागे थे। उनकी गद्दी पर फिर बैठाया गया उनके बेटे माइकिल को। माइकिल ३० दिसंबर १९४७ तक ही राजा रहे। कम्युनिस्टों के बढ़ते दबाव ने आखिर उन्हें परदेशी बनाकर ही छोड़ा। अपने देश से दूर आज राजा माइकिल अपने फार्म की स्वयं देखभाल कर रहे हैं। इतिहास ने शायद उन्हें यह रहस्य समझा दिया है कि किसान ही पृथ्वी का संपूर्ण पुत्र है।

बिजली के यंत्रों का व्यापार

इधर अलबानिया के राजा लेकन अपनी देहरी छोड़कर स्पेन के मेड्रिड शहर में जमे हुए हैं। इकतालीस वर्ष की आयु में वे पहले रोडेशिया भागे थे और वहां पर बिजली के यंत्रों के व्यापार को समझा बूझा। आज वे स्पेन में अंतरराष्ट्रीय व्यापार के परामर्शक बने बैठे हैं, पर फिर भी आस लगाये हैं कि कभी ना कभी उन्हें छीना हुआ राजसिंहासन मिलेगा जरूर। ग्रीस! अद्वितीय योद्धाओं को कभी जन्म देनेवाली भूमि।

सात लाख डालर की हवेली में शरण

सिकंदर महान के पश्चात, तुर्क आये और फिर आया राज्य-परिवार। वैसे आधुनिक ग्रीस अपने किंग एलेक्जेंडर प्रथम (१८६३–१९२०) एवं कांस्टेंटाइन प्रथम को याद रखेगा जरूर। बाद में जार्ज द्वितीय तो सेना अधिकारियों के हाथ की कठपुतली मात्र रहा, जिसे १८ दिसंवर १९२३ को ग्रीस छोड़ना पड़ा। पर सन १९३५ में जार्ज द्वितीय फिर अपने राज्य को संभालने आ पहुंचा। तभी कुछ दिन बाद समूचा ग्रीस ही द्वितीय विश्य-युद्ध की लपेट में आ गया। और जब वह युद्ध के जंजाल से छूटा, तब तक जन-जागरण हो चुका था। २१ अप्रैल १९६७ को सेना ने देश की बागडोर अपने हाथ में ले ली और आठ महीने बाद १४ दिसंबर १९६७ को ग्रीस का अंतिम राजा कांस्टेंटाइन भी भागकर रोम जा पहुंचा। रोम के बाद वह लंदन में बस गया—वहीं पर खड़ी अपनी सात लाख डॉलर की हवेली में।

लाल हवा की चपेट में

युगोस्लाविया ने भी समय के उतार-चढ़ाव देखे हैं। कई राजा गद्दी पर बैठे

उतरे और फिर बैठे। किंग निकोलस, किंग पीटर प्रथम, ऐलक्जेंण्डर प्रथम और अंत में किंग पीटर द्वितीय। युगोस्लाविया को जब रूस की गर्म-गर्म 'लाल हवा' लगी, तब वहां पर भी जनता भड़भड़ाकर उठ बैठी और २९ नवंबर १९४५ को वहां गणतंत्र राज्य स्थापित हो गया।

धन अभी समाप्त नहीं हुआ है

उधर उत्तरी अफरीका के पुराने राज्य मोरोक्को में भी शगूफे खिले। जब मुस्लिम साम्राज्य दिन-दूना चार-चौगुना बढ़ना शुरू हुआ था, तब तुर्क मोरोक्को तक छा गये थे। मोरोक्को के सुलतानों ने भी जी भरकर ऐश किया था। सब साधनों से वे खेले थे—सोने-चांदी से, हीरों-जवाहिरात से, शराब-कवाब से, गोरी-सांवरियों से। मोरोक्को का आखरी दमदार सुल्तान मुहम्मद पांचवा २६ फरवरी १९६१ को मरा था। उसके बाद उसका बेटा सुल्तान हसन द्वितीय लड़खड़ाते हुए राज-सिहासन पर बैठा। २५ जुलाई १९७० को वह भी गद्दी से नीचे उतर पड़ा—अपने पूर्वजों के बचे-खुचे वैभव का लुप्त होता हुआ आनंद भोगने को। राज्य समाप्त हो गया, पर धन अभी समाप्त नहीं हुआ है।

और भी कई उम्मीदवार आस लगाये बैठे हैं। वे समय का बहाव देख रहे हैं। बलगेरिया का राजा साइमन भी एक बार फिर गद्दी पर बैठना चाहता है। इटली का राजा ऐम्बर्टो आज पुर्तगाल में बैठा ललचाई दृष्टि से अपने देश को तक रहा है—ना जाने कब इटली उसे इशारे से बुला ले, सिहासन पर बैठने के लिए।

अप्सराओं के अखाड़े के बाद लेखन

और उधर है, फ्रांस—यूरोप की अप्सराओं का अखाड़ा। जहां कभी लुई चौदहवें और लुई पंद्रहवें नाम के इंद्रों ने अपनी राजधानी पेरिस में आधुनिक रूपजीविकाओं का क्रीड़ा-स्थल बनाया था। उनकी रखैलें मलाई-जैसी उजली और चिकनी थीं। धूप में वे कुम्हलाने लगती थीं, भरी चांदनी में वह मैली होने लगती थीं। विदेशी उर्वशी और मेनकाओं के झुंड का रसिया था फ्रांस का राजा। और आज उसी लुई पंद्रहवें का पड़पोता फ्रांस में बैठा-बैठा किताबें लिखता है। वह लेखक बन गया है। निःसंदेह लेखक का दर्जा एक उजड़े हुए बादशाह-जैसा ही है।

सैकड़ों आस के पंछी

जीवन का सबसे मीठा आश्वासन—आस। जब तक सांस, तब तक आस। हद तो यह है कि जिस देश में मानव-क्रांति अपने यौवन पर आयी, उसी देश रूस का पिटा हुआ राज-मोहरा भी यह आस लगाये बैठा है कि कभी ना कभी रूस की गद्दी उसे मिलेगी और वह अपने पूर्वजों की तरह फिर से स्वच्छंद हो सकेगा।

संसार के देशों में—देशों के अनजान कोनों में, सैकड़ों आस के पंछी अवसर के वृक्ष पर रैनबसेरा किये हुए प्रतीक्षा कर रहे हैं , किसी ना आनेवाली सुबह की। उदास मन, डबडबायी आंखें, आसभरे विश्वास—उनका कहना है कि वक्त बड़ा हरजाई होता है। ना जाने किस दिन उनकी सोयी हुई किस्मत का ऊंट सही करवट ले बैठे।

एफ, ४८ ग्रीन पार्क, नयी दिल्ली-११००१६

हंसाइयां

एक व्यक्ति पड़ोसी को अपना मकान दिखा रहा था। घूमते-घूमते उसने एक कमरे में पहुंचकर बताया, "यह है हमारा मनोरंजन कक्ष।"

"मनोरंजन कक्ष?" पड़ोसी ने आश्चर्य से पूछा, "लेकिन, यहां मनोरंजन का कोई सामान तो है ही नहीं!"

"वह तो आपके यहां है। यहां बैठकर हम आपके यहां बजनेवाला रेडियो बड़े आराम से सुन सकते हैं। और जब आप पति-पत्नी लड़ाई करते हैं, तब हमें ऐसा लगता है—जैसे साक्षात फिल्म देख रहे हैं।" —व्यक्ति ने भेद खोला।

. . . "यदि पत्रकारों ने इससे अधिक जानकारी चाही तो इतना ही कह दें कि 'अब अधिक कुछ कहना जनहित में न होगा'!!"

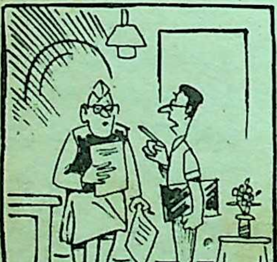

मजिस्ट्रेट ने अभियुक्त से पूछा—"क्या तुमने अपराध किया है?"

अभियुक्त शांति से बोला—" नहीं सकता हुजूर! मैंने अभी वकी की जिरह नहीं सुनी।"

★

एक जज महोदय अपना दांत निकलवा के लिए एक दंत-चिकित्सक के यहां ग और दांत निकलवाने से पहले चिकित्स से बोले, "तुम इस बात की शपथ लो तुम मेरा दांत निकालोगे, पूरा दांत निका लोगे और दांत के सिवाय और कुछ न निकालोगे।"

—सुरेन्द्र श्रीवास्त

★

एक सज्जन ने 'कोर्ट-मैरिज' करते अदालत में जज के सामने गीता उठाक शपथ ली,—"मैं यह शादी अपनी की मर्जी से कर रहा हूं और भविष्य इससे होनेवाले सभी परिणामों के लिए स्वयं जिम्मेदार रहूंगा . . .।"

—रा.

★

एक नर्तकी ने संयोजक से कार्यक्रम आने के लिए दस हजार रुपये की मांग की संयोजक बोला, "इतने रुपयों में तो ब से कवियों को बुलाया जा सकता है।" नर्तकी ने जवाब दिया, "तो ठीक है, कवि से ही नृत्य करा लीजिए।"

एक डॉ
रोग ठीक
सकता
"ठ
को लेक
गुस्से

"क्यों ब
में बड़ा
"हां
पहले ख
खाते।
पड़ोसियो

रात में
ने दूसरे
हैं, क्या
दूस
जवाब
से गायब
होकर

"कहिए,
रहे हैं?"
एक मित्र
"एक
गया है, अ
ही हैं।"

एक डॉक्टर मरीज कवि से: "मैं आपका रोग ठीक-ठीक नहीं समझ पा रहा हूं। हो सकता है, इसका कारण कविता हो।"

"ठीक है, अगली बार मैं 'कविता' को लेकर ही आऊंगा।" मरीज-कवि ने गुस्से के साथ कहा।

★

"क्यों बहन, क्या अपने हाथ से खाना बनाने में बड़ा फ़ायदा है?"

"हां बहन, क्योंकि मेरे पतिदेव जितना पहले खाते थे, अब उसका आधा भी नहीं खाते। और तो और, घर का कुत्ता तक पड़ोसियों के यहां से खाकर आता है।"

—निशिकांत भारद्वाज

★

रात में पहरा देते समय एक पहरेदार ने दूसरे से कहा, "तुम्हारी आंखें सूजी हुई हैं, क्या बात है?"

दूसरे पहरेदार ने सहज स्वर में जवाब दिया—"कल मैं दोपहरभर घर से गायब रहा, इससे मेरी पत्नी ने गुस्सा होकर मुझे मारा।"

★

"कहिए, आपके लड़के आजकल क्या कर रहे हैं?"—बहुत दिनों बाद मिलने पर एक मित्र ने दूसरे से पूछा।

"एक चित्रकार है, दूसरा कवि हो गया है, और हालात तो तीसरे के भी खराब ही हैं।"

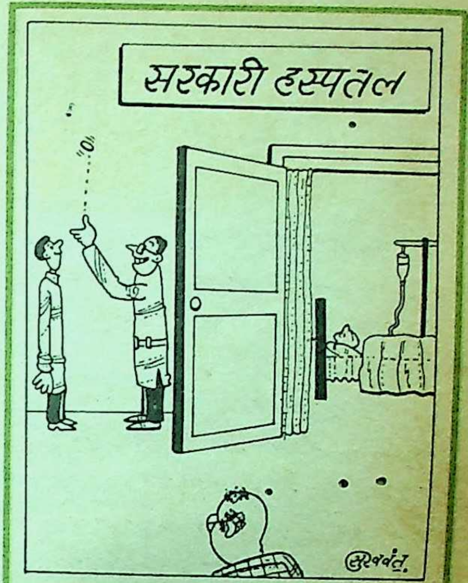

"चित आया तो मैं ऑपरेशन करूंगा, और पट आया तो तुम आपरेशन करना।"

★

इंग्लैंड के प्रसिद्ध विद्वान टामस कूपर अंगरेजी भाषा का शब्दकोष तैयार करने में लगे थे। काम में वे इतने खोयें रहते कि घर की बातों का ध्यान ही नहीं रहता था। उनकी पत्नी ने एक दिन गुस्से में उनके सारे कागज जलाकर राख कर दिये।

कूपर घर लौटे और अपना आठ वर्ष का परिश्रम इस तरह से नष्ट देखा तो एक नजर पत्नी पर डाली और मुसकराते हुए बोले, "तुमने आठ वर्ष का कार्य मेरे लिए और बढ़ा दिया।'- इसके बाद वे शब्दकोश नये सिरे से लिखने में फिर निमग्न हो गये। —अतुल गोस्वामी

सजा की एवज में ६६ लाख रुपये

बेचारा विलियम डी. पाल्मा अजीब मुसीबत में फंस गया था। डी. पाल्मा को एक सशस्त्र बैंक-डकैती में अपराधी पाया गया था। १८ अक्तूबर १९६९ को वह जमानत पर रिहा किया गया था, उसके वकील द्वारा प्रत्येक अदालत में की गयी अपील अस्वीकार कर दी गयी थी। लगभग दो सप्ताहों के भीतर ही; बत्तीस वर्षीय डी. पाल्मा की पंद्रह वर्ष लंबी कैद आरंभ हो जानेवाली थी। उसने लौस एंजेल्स तथा आसपास के विश्वविद्यालयों की अपराध-विज्ञान शाखाओं एवं कानूनी सहायता प्रदान करनेवाले बहुत से संगठनों से संपर्क किया था। इस दौरान वह प्राईवेट इंवेस्टीगेटर जोहन बांड से मिला।

• अश्विनीकुमार गोयल

प्रमाण उसके विरुद्ध थे

सैंतालीस वर्षीय जोह्न-बांड ने उसकी बातें गौर से सुनीं, क्रोधित डी. पाल्मा ने बांड को बताया, "व्यू ऐना पार्क के मर्करी बैंक की दो महिला क्लर्कों ने उक्त डकैती में मेरे विरुद्ध गवाही दी है। उनके अनुसार उन्होंने मुझे बैंक में डकैती डालते हुए अपनी आंखों से देखा था। पुलिस के अनुसार मेरी उंगलियों के निशान बैंक के काउंटर पर मिले हैं। परंतु मैं कसम खाकर कहता हूं, कि मैं अपने जीवन में कभी उस बैंक में नहीं गया। मेरे पक्ष के तेरह गवाहों ने यह कहा कि डकैती के समय मैं उन्हें सत्ताईस कि. मी. दूर खाना खिला रहा

कोई भी निरपराध व्यक्ति यदि अपराधी सिद्ध हो जाता है तो यह किसी भी कार्यशील न्यायालय के लिए निश्चित ही एक कलंक होगा। संयुक्त राज्य अमरीका में घटित एक ऐसी ही दुर्घटना के संदर्भ में वहां की अदालत ने डी. पाल्मा को ६३ लाख रुपये की क्षतिपूर्ति की थी।

प्रस्तुत है, डी. पाल्मा की वह दुखद कहानी, जिसमें एक सशस्त्र बैंक-डकैती में अपराधी साबित होने के दंडस्वरूप न्यायालय उसको जेल में भिजवा चुका था——

था। परंतु इसके बावजूद मेरे ऊपर मुकदमा चलाया गया।"

बांड ने अपने जीवन में बहुत बार निर्दोष होने के दावे सुने थे, जो कि बाद में गलत साबित हुए थे। परंतु डी. पाल्मा उसे सचमुच निर्दोष प्रतीत हो रहा था। फिर भी उसने डी. पाल्मा से कहा, "मैं तुम्हारा लाई डिटेक्टर पर परीक्षण करना चाहता हूं।"

लेकिन वह निर्दोष था

तीन घंटे तक परीक्षण करने के बाद आपरेटर ने बांड को बताया, "डी. पाल्मा पूर्णतः निर्दोष है। मैं उसकी इस बात से भी सहमत हूं, कि उसने उस बैंक में कभी कदम भी नहीं रखा है।" बांड ने इस केस को लेने का निर्णय कर लिया।

न्यायायिक कार्रवाही के संदर्भ में डी. पाल्मा से बातचीत के दौरान बांड को पता चला, कि बैंक की दो महिला क्लर्कों ने वास्तव में डी. पाल्मा के विरुद्ध गवाही दी हैं, उनके अनुसार, उन्होंने डी. पाल्मा को बैंक में डकैती डालते हुए देखा था और डकैती के स्थान पर एक काउंटर पर डी. पाल्मा की उंगलियों के निशान मिले हैं, जिनकी उसने स्वयं जांच की थी। तथा उसने पाया था कि बायें हाथ की तर्जनी उंगली का निशान (प्रिंट्स पर जिसे 'एक्जीविट–४' के नाम से अंकित किया गया था) निर्विवाद रूप से डी. पाल्मा का था। इस तथ्य की पुष्टि एफ. बी. आई. (फेडरल ब्यूरो ऑव इंवेस्टीगेशन) के एक 'फिंगर प्रिंट' विशेषज्ञ द्वारा भी की

गयी थी। जबकि तेरह गवाहों ने शपथ लेकर कहा था, कि डकैती के समय डी. पाल्मा बैंक से सत्ताईस कि. मी. दूर, उनकी फैक्ट्री के पास उन्हें सेंडविच तथा काफी बेच रहा था।

बांड का विचार था कि डी. पाल्मा को पहचानने में क्लर्कों से गलती भी हो सकती है। वह बैंक के पास रहनेवाले दूकानदारों से मिला और अंत में उसे पता चला कि वहां एक स्त्री ने अपनी दूकान की खिड़की में से उस दिन एक व्यक्ति को देखा था, जिसकी शक्ल, गवाहों द्वारा वर्णित डाकू के हुलिए से हू-ब-हू मेल खाती थी। बांड ने उस स्त्री को डी. पाल्मा की एक फोटो दिखायी। उस स्त्री ने कहा कि नहीं वह यह व्यक्ति नहीं है। उस स्त्री की गवाही पर न्यायाधीश, चाल्सकार ने डी. पाल्मा के वकील को बचाव-पक्ष में कुछ और ठोस साक्ष्य जुटाने के लिए अतिरिक्त समय देना स्वीकार कर लिया।

प्रमाण के अभाव में जेल

कठिन प्रयास के बाद भी जब कोई ठोस सूत्र हाथ न लग सका, तब फरवरी १९७१ में, न्यायाधीश चाल्सकार ने डी. पाल्मा की अपील खारिज करते हुए कहा, "कोई भी न्यायाधीश किसी निर्दोष व्यक्ति को अभियुक्त के तौर पर नहीं देखना चाहता।" उन्होंने आगे कहा, "परस्पर विरोधी गवाहियों के कारण मैं भी पूर्ण निश्चय पर नहीं पहुंच पा रहा था, परंतु 'फिंगर प्रिंट्स' ने सारी गुत्थी सुलझाकर रख दी है।"

इस निर्णय से बांड बहुत दुखी हुआ। वह अपने निर्दोष मवक्किल को बचा पाने में असमर्थ रहा था। अगस्त १९७१ के आरंभ में डी. पाल्मा को पुलिस हिरासत में ले लिया तथा दो सप्ताह बाद उसे दो हजार कि. मी. दूर, वाशिंगटन राज्य के मैक्नील द्वीप पर स्थित जेल में बंद कर दिया गया। डी. पाल्मा के लिए यह झटका बहुत बड़ा था। वह जेल से बांड को पत्र लिखकर याचना करता रहता कि वह सत्य की खोज में लगा रहे। वह निरंतर अपनी पत्नी और बच्चों के कष्टों के बारे में सोचता रहता।

'फिंगर प्रिंट्स' का रहस्य

इधर बांड भी अपने कार्य में लगा हुआ था, उसकी खोज अब सार्जें बेकन द्वारा अदालत में प्रस्तुत किये गये 'फिंगर प्रिंट्स' की एक्जिबिट-४ पर केंद्रित हो गयी थी। अपने खोज-कार्य के संबंध में उसे भिन्न-भिन्न लोगों से मिलना पड़ता। एक बार उसकी भेंट एक पुलिसमैन से हुई, जो पहले व्यूनापार्क पुलिस-दस्ते में था, परंतु अब एक दूसरी पुलिस फोर्स में नौकरी कर रहा था। उक्त पुलिसमैन ने बांड को बताया, "एक बार जब मैं व्यूनापार्क में था, एक ग्रौसरी स्टोर में चोरी की घटना हुई थी। जांच-कार्य के दौरान मुझे पास ही मैदान में बंदूक पड़ी मिली थी। मैंने फिंगर प्रिंट्स लेने के लिए उस पर 'एक्सपोजिंग पाउडर' छिड़का, तो उस पर कोई फिंगर प्रिंट्स नहीं उभरा। मैंने उस बंदूक को

पोंछकर साफ कर दिया। बंदूक फिर सार्जेंट के पास पहुंचा दी गयी। दो दिन बाद बेकन ने फिर सूचना दी कि उसे बंदूक पर तीन 'प्रिंट' मिले हैं, जो कि अभियुक्तों में से एक की उंगलियों के निशानों से मिलते हैं। मैं यह जानकर स्तब्ध रह गया, क्योंकि बंदूक पर 'फिंगर प्रिंट्स' मिलने का कोई प्रश्न ही नहीं होता था। अभियुक्तों ने मुकदमे से पहले ही अपराध स्वीकार कर लिया था। अतः अदालत में बेकन की गवाही की आवश्यकता ही नहीं पड़ी थी।

और वहीं से बांड के मन में बेकन के प्रति संदेह का बीजारोपण हो गया। बांड ने अभियोग से संबंधित तमाम कागजातों का ध्यानपूर्वक अध्ययन किया। सार्जेंट बेकन ने अदालत में शपथ लेकर कहा था, कि इससे पूर्व वह मिनेस्सोटा में 'फिंगर प्रिंट्स' विशेषज्ञ का कार्य करता था तथा उसने मिनेस्सोटा विश्वविद्यालय की अपराध विज्ञान-शाखा में प्रशिक्षण प्राप्त किया था। बांड ने जब बेकन की उक्त पृष्ठ-भूमि में जांच पड़ताल की, तब पाया, कि बेकन ने अपने पिछले जीवन के विषय में अदालत में असत्य विवरण दिया था। इसके बाद बांड व्यूनापार्क पुलिस अधिकारियों से मिला था तथा उन्हें अपनी इस नयी खोज के बारे में बताकर कहा था, "यदि बेकन अदालत के सामने झूठे बयान दे सकता है, तो डी. बाल्मा के केस में भी उसकी बातें विश्वसनीय क्यों समझी जाएं?"

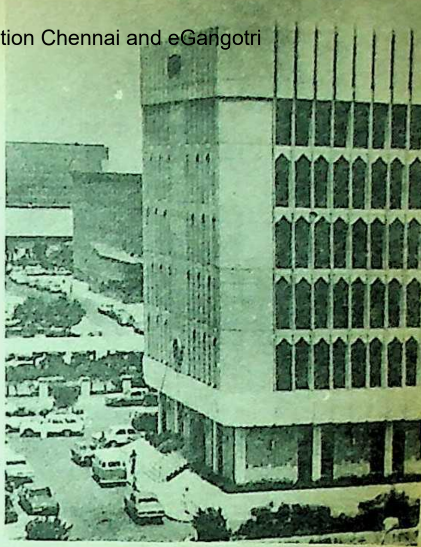

दोबारा जांच शुरू हुई

व्यूनापार्क पुलिस इस तर्क से सहमत हो गयी तथा पूरे नये संदर्भों सहित जिला 'एटर्नी' के पास 'केस' भेज दिया गया। 'फिंगर प्रिंट्स' भी दोबारा जांच हेतु अपराध-संधान विशेषज्ञ लारी रेगल तथा राबर्ट बेगन के पास भेज दिये गये। अपराध-विशेषज्ञों से प्रश्न किया गया था, क्या एक्जिबिट-४ पर अंकित डी. पाल्मा के 'फिंगर' असली हैं?

रेगल ने उस 'प्लास्टिक कार्ड' का सूक्ष्मतापूर्वक अध्ययन आरंभ कर दिया, जिस पर डी. बाल्मा के 'फिंगर प्रिंट्स' अंकित थे। कार्ड पर अंकित एक अन्य 'फिंगर प्रिंट्स' खुद बेकन का ही पाया गया, परंतु यह कोई संदेहास्पद बात नहीं थी, क्योंकि बेकन के द्वारा जांच किये जाने के समय हो सकता है, किसी समय उसने ध्यान न रहने पर अपनी उंगली कार्ड पर रख दी हो।

नितांत असंभव संयोग

विचित्र बात यह पायी गयी, कि कार्ड पर अंकित दो 'प्रिंट्स' पर पड़ा हुआ 'डस्टिंग पाउडर' पूर्णतः एक दूसरे से भिन्न प्रकार का था। बेकन के प्रिंट्स पर काले रंग का 'फिंगर प्रिंट्स डस्टिंग पाउडर' पड़ा हुआ था। जो कि विशेष रूप से व्यूनापार्क पुलिस द्वारा इस कांड की जांच के लिए प्रयोग में लाया गया था। डी० पाल्मा के 'फिंगर प्रिंट' पर पड़े पाउडर के कण बहुत बड़े थे तथा आकार में भी एकदम भिन्न थे। डी० पाल्मा के प्रिंट पर पड़ा हुआ पाउडर रेगल के अनुसार एक प्रकार की 'कॉपिंग' मशीनों में प्रयोग होनेवाला टोनर पाउडर था। अब प्रश्न उठता था कि यदि डी० पाल्मा का 'फिंगर प्रिंट' बैंक के काउंटर से नहीं लिया गया था, तब कहां से लिया गया था? रेगल और बेगन दोनों का निष्कर्ष यह था, कि जिस व्यक्ति ने एक्जिबिट-४ नामक कार्ड को तैयार किया था, उसने पहले से मौजूद डी० पाल्मा के किसी 'फिंगर प्रिंट कार्ड' से डी० पाल्मा के 'फिंगर प्रिंट' को 'फिंगर प्रिंट टेप' पर उतार कर एक्जिबिट-४ पर अंकित कर दिया था। पुलिस रिकार्ड की छानबीन से पता चला, कि डी० पाल्मा से किशोर अवस्था में कोई छोटा-मोटा अपराध हो गया था तथा तब उसके 'फिंगर प्रिंट्स' भी लिये गये थे। डी० पाल्मा की गिरफ्तारी के समय वह कार्ड व्यूनापार्क पुलिस के पास था।

बेगन ने पुराने कार्ड तथा एक्जिबिट-४ दोनों पर अंकित बायीं तर्जनी के 'प्रिंट्स' को परिवर्धित किया तथा दोनों को एक दूसरे के ऊपर रखकर देखा, तब दोनों में आश्चर्यजनक समानता पायी। दोनों 'प्रिंट्स' में उंगली का दबाव एक-जैसा था। उंगली भी एक ही स्थिति में रखी गयी थी। यह एक नितांत असंभव संयोग था। अंतिम निष्कर्ष यह निकला, कि एक्जिबिट-४ जालसाजी थी, अर्थात वह एक पुराने प्रिंट की प्रतिलिपि मात्र थी।

कोई भी व्यवस्था संपूर्ण नहीं

बेकन पर प्रमाणों को एकत्रित करने में धोखाधड़ी का आरोप लगाकर अभियोग चलाया गया, जिसमें अपनी सफाई में बिना कुछ कहे उसने अपराध स्वीकार कर लिया। इसके लिए बेकन को एक वर्ष का सश्रम कारावास का दंड दिया गया।

फरवरी १९७४ में डी० पाल्मा को ससम्मान मुक्त करते हुए न्यायाधीश ने टिप्पणी की, "कोई नहीं कह सकता कि कोई भी व्यवस्था संपूर्ण है।"

अगस्त १९७५ में अदालत ने एक निर्णय करके निर्दोष डी० पाल्मा द्वारा अकारण ही जेल काटने के लिए ६३ लाख रुपए देकर क्षतिपूर्ति की। माना जाता है कि यह संयुक्त राज्य में नागरिक अधिकारों के अंतर्गत किसी व्यक्ति को न्याय न मिल पाने के कारण हुई असुविधा की क्षतिपूर्ति करने के लिए दी गयी सर्वाधिक बड़ी राशि है।

—ट्रांसमिशन डिवीजन, देवीघाट हाइड्रो
इलैक्ट्रिक प्रोजैक्ट, पो० ऑ० बॉक्स-१२३३,
काठमांडू (नेपाल)

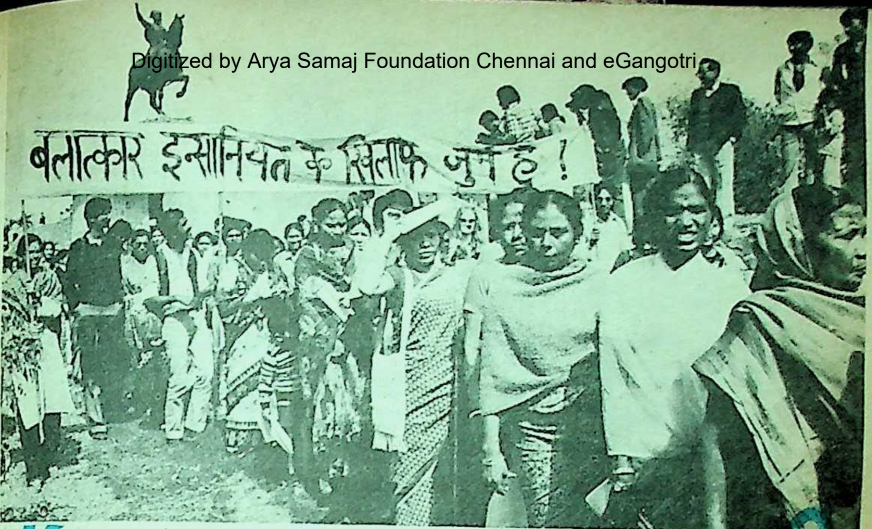
बलात्कार इन्सानियत के खिलाफ जुर्म है !

पैंतीस वर्षों की भटकती हुई जिंदगी

• सेवकराम ओखाड़ू

डियर संपादकजी,

आजादी का दिन हमारा सबसे बड़ा त्योहार है, इसलिए कि इसका संबंध किसी धर्म और जाति के साथ नहीं जुड़ा। पिछले ३५ वर्षों में हमारे देश में जातिवाद का बीज जितना पनपा और पला है, उसे देखते हुए तो हमारे रोंगटे खड़े हो जाते हैं। जातियों में जातियां, लगता है——जैसे आदमी से आदमी ही अजनबी हो गया है। चुनाव के दिनों में तो इन जातियों का खेल बहुत खुले रूप से देखने को तब मिलता है, जब मंत्रिमंडल बनते हैं। तब हर जाति के मेहमान को इस तरह बुलाया जाता है, जैसे बारात में दूल्हा-पक्ष के लोगों की आवभगत की जाती है। मंत्रिमंडल भी एक बारात ही तो बन गये हैं। संपादकजी, एक भेद की बात हम आपको बता दें, कुछ बरस पहले हम जरमनी गये थे। वहां के एक आदमी ने हमें बताया कि उनका पड़ोसी एक भारतीय है और उसका 'सरनेम' है——मिश्रा। आपको ताज्जुब नहीं होगा, लेकिन उस जरमनवासी मित्र को जरूर ताज्जुब हुआ था, जब हमने मिश्रा साहब के जन्म-स्थान और उनके खानदान के बारे में सब कुछ बता दिया।

उन्होंने आश्चर्य से हमारी ओर देखा और कहा——"आप तो भविष्यवक्ता मालूम पड़ते हैं।" मैंने उत्तर दिया, "जी

नहीं ! आपके देश में 'सरनेम' नदियों पहाड़ों और शहरों के नाम पर रखे जाते हैं, हमारे देश में 'सरनेम' एक परंपरा-सूचक संज्ञा बन गया है।"

अब आप ही देखिए, जातिवाद का कमाल। इसी संबंध में यह भी पता लगा कि पासवान नाम के एक और भारतीय रहते हैं और मिश्रा साहब और पासवान साहब में बिलकुल नहीं पटती। भला आप ही बताइए हम अपने विदेशी मित्रों को कैसे समझायें कि ये हमारे देश के लिए कोई नयी बात नहीं है।

आग सांप्रदायिकता की, जलता है——देश !

जातिवाद के भूत के साथ-साथ ३५ वर्षों में संप्रदाय वाद भी बहुत पनपा और फला-फूला। हिंदू-मुसलमान हों या हरिजन हों या कोई और। बात शुरू होती है दो आदमियों के आपसी झगड़ों से और आग लगती है—पूरे शहर में। शहर की इस आग को बुझाने के लिए आखिर कोई भी सरकार कितनी दमकलों का प्रयोग करेगी। हमारा तो सर चक्कर खा जाता है कि ये सब क्या हो रहा है ? परमपूज्य महात्मा गांधी ने एक सपना देखा था, जवाहरलाल ने गुलाब उगाये थे, कि देश खूबसूरत बने, दोनों की मेहनत में पानी फिरता जा रहा है। क्या आप बता सकते हैं कि अपने ही देश में अपने ही गांव में और अपने ही मोहल्ले में क्यों आदमी बेगाना हो गया।

> **महात्मा गांधी ने एक सपना देखा था, जवाहरलाल ने गुलाब उगाये थे कि देश खूबसूरत बने, दोनों की मेहनत पर पानी फिरता जा रहा है। क्या आप बता सकते हैं कि अपने ही देश में, अपने ही गांव में क्यों आदमी बेगाना हो गया है ?**

नजर हिंदुस्तान के नक्शे पर

संपादकजी, हिंदुस्तान के नक्शे में नजर दौड़ाइए और जरा ठहरकर सोचिए, तो क्या हो रहा है—

उत्तर-पूर्वी सत्ता राज्यों में अपनी पहचान की होड़ लगी है। दिन-दहाड़े कोई किसी को गोली मार दें, तो बड़ी बात नहीं, वहां के लोग चीनी-सीमा का पूरा फायदा उठाते हैं।

असम जल रहा है, और बातचीत के दौर शराब के प्यालों की तरह क्षणभर चलते हैं, और खत्म हो जाते हैं। पंजाब का एक तबका है, जो भारत से अलग होना चाहता है। वह चाहता है कि खालिस्तान के नाम से अलग देश बन जाए—शेख साहब कश्मीर में फिर से हंगामा शुरू करना चाहते हैं, और एक कानून बनाने पर आमादा हैं। तमिलनाडु के मुख्यमंत्री की हिम्मत की हम दाद देते हैं, उन्हें हिंदी से नफरत है, वे नहीं चाहते कि 'ऑल इंडिया रेडियो' और 'दूरदर्शन'-जैसे शब्दों का

प्रयोग किया जाए। मुश्किल हमें तब होती है, जब हम यह देखते हैं, कि बहुत से राज्य अंगरेजी का भी प्रयोग नहीं करते और अपनी भाषा में 'रेडियो' और 'दूरदर्शन' का नाम लेते हैं। जैसे महाराष्ट्र में कहा जाता है, 'हे नभोवाणी च नागपुर केन्द्र आहे' तमिल में कहा जाता है--'इद इंदिया वानोली निलयम'

यदि हिंदी का विरोध करना है और अंगरेजी ही पालनी है, तो ये भाषाओं की फिरकापरस्ती कहां से शुरू हो गयी ?

ईमानदारी को लग गयी ठंड

संपादकजी, बहुत दर्द के साथ हम यह चिट्ठी आपको लिख रहे हैं। ३५ सालों में ईमानदारी को ठंड लगती जा रही है। और उसे निमोनिया हो रहा है। जब ईमानदारी बीमार पड़ जाए, तब क्या होगा, यह आप जानते ही हैं। स्वतंत्रता के बाद दल-बदलने का सबसे बड़ा रिकॉर्ड शायद हमारे देश में ही मिलेगा ।सबसे पहले दल बदलू का जन्म हरियाणा में हुआ। कुछ नाम आपको गिनाना चाहता हूं, आशा है आप मुझे माफ कर देंगे—सन १९६७ में, भगवतदयाल शर्मा हरियाणा के मुख्यमंत्री थे, तब राव वीरेन्द्र सिंह बारह सदस्यों के साथ कांग्रेस छोड़कर चले गये और एक नयी जनता पार्टी उन्होंने बना ली। परम पूज्य चौधरी चरणसिंह ने उत्तरप्रदेश में सत्रह विधायकों से सांठ-गांठ की और कांग्रेस छोड़कर जन-कांग्रेस बना ली। उसके बाद उन्होंने कितनी पार्टियां

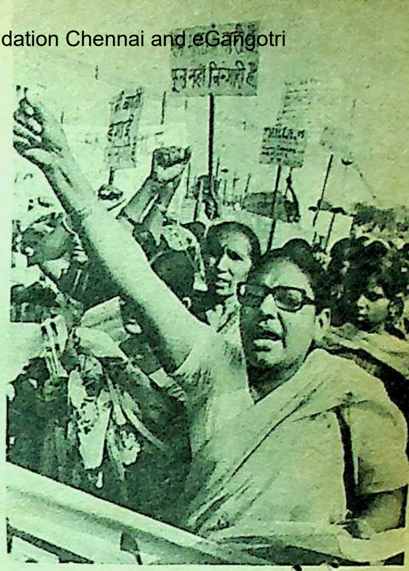

बनायीं हैं, हम सब जानते हैं। मध्यप्रदेश में सन १९६७ में पंडित द्वारिका प्रसाद मिश्र मुख्य मंत्री थे। ३६ विधायकों को लेकर ठाकुर गोविंद नारायण सिंह विरोधी दल में शामिल हो गये और उन्होंने सरकार पलट दी। पंजाब में गुरनाम सिंह और लक्ष्मण सिंह गिल के नाम जाने जाते हैं। बिहार में ४५ दिन एक सरकार चली और उसके साथ नाम जुड़ा सतीश प्रसाद सिंह का। राजस्थान में भी और बंगाल में भी यही कुछ हुआ, फिर असम में हुआ। और जरा नजर दौड़ाइए, तो कहां क्या नहीं हुआ ?

जादू-टोना अंगरेजों का

संपादकजी, अंगरेजों ने कोई जादू-टोना जरूर हमारे देश में किया है, तीन-चार लड़ाइयां हुईं, और हमारी अर्थ-व्यवस्था चौपट हो गयी। हमारे पड़ोसी पाकिस्तान ने धोखा दिया। और चीन ने तो हद ही कर

दी और आप हैं कि दोस्ती का हाथ बढ़ा रहे हैं।

सुख के दिन बनाम बंदरबांट

बीच में बड़े सुख के दिन आये। लगभग दो वर्ष आपातकाल के देखे, उसके बाद एक नयी सरकार बनी और उस सरकार में बंदरबांट शुरू हुई। और यही बंदरबांट झगड़े का केंद्र बनी। फल यह हुआ कि वह सरकार भी उलट गयी और इंदिराजी का राज फिर से वापस आया। इंदिराजी का राज हम देख चुके थे, सो सोचा खुशहाली फिर वापस आ जाएगी। यह एक नाजुक मसला है, सो हम कुछ नहीं कहेंगे लेकिन हम अब भी आस लगाये बैठे हैं कि हमारे दिन कभी तो फिरेंगे ही।

राजनीति में जब गड़बड़ होती है, तब समाज भी लपेट में आ जाता है। डाकुओं से लेकर चोर-उच्चके सभी सक्रिय हैं। हमारे देश की औरतों की इज्जत कितनी बची है, इस विषय में अखबारों में रोज ही कुछ न कुछ पढ़ने को मिलता है। हमें दर्द तो तब होता है, जब खूबसूरत लड़कियां सजायी जाती हैं, दूल्हाराजा घोड़े पर आते हैं, फिर सुहागरात के सुख के दिन बीतते हैं और उसके बाद दहेज के लालच में उसी लड़की को जला दिया जाता है। हम देखते रहते हैं, और परेशान इसलिए होते हैं कि हमारे देश का कानून कितना कच्चा है, इस तरह मारने का हक पाने के लिए तो हमने आजादी नहीं पायी थी।

संपादकजी, हम तो भरे गले से आपसे शिकायत कर रहे हैं कि आप इंदिराजी से कहिए कि ऐसे लोगों को तुरंत मृत्युदंड दिया जाना चाहिए।

दिल्ली की संसद और राज्यों की विधानसभाओं के हंगामों, लात-जूतों की बौछार, गालियों की बरसात हर छोटी-सी बात में हाथापाई की नौबत—इनकी बातें हम नहीं करेंगे, क्योंकि हममें से चुने हुए नेता ही इसे जिंदा दिली का एक लक्षण मानने लगे हैं।

संपादकजी, हमने बहुत दर्दभरी कहानियां आपको लिखी हैं। ये तो कुछ भी नहीं हैं, लिखना बहुत है, लेकिन तब इस गरीब सेवकराम उखाड़ू का पत्र इतना लंबा हो जाएगा कि आप इसे पढ़ेंगे भी नहीं! एक बात हम जरूर कहेंगे कि ३५ वर्षों में सब कुछ बुरा नहीं हुआ, बहुत कुछ अच्छा भी हुआ है और कई बातों में हमें नाज भी है कि हमारा देश अब गरीबी से धीरे-धीरे ऊपर उठ रहा है। अच्छे काम दिखायी दे रहे हैं, लेकिन ३५ सालों में बुरे कामों में फैलाव नहीं आना चाहिए था, उन्हें कम होना चाहिए था। यही हमारा दर्द है। इसीलिए हमने यह पत्र आपको लिखा है। इसके साथ एक छोटा-सा पत्र है इंदिराजी के नाम, सो उसे भी उनके पास भेज दीजिए। और आपकी मर्जी हो तो आइए, हम दोनों हरिद्वार चलें और गंगा में स्नानकर पाप धोकर नये कामों को करने का संकल्प कर लें।

आपका सेवक
—सेवकराम ओखाड़ू

मैडम प्राइम मिनिस्टर,

सेवकराम ग्रोखाड़ू का सलाम ग्रौर प्रणाम, दोनों एक साथ। कुछ गुस्ताखी हो तो उसे माफ कर दीजिए, क्योंकि आप तो बहुत उदार दिल की महिला हैं। हम दिन-रात सिर्फ सिर पीटते रहते हैं कि भारत की राजनीति में 'आया राम' ग्रौर 'गया राम' की बारातें शोर-शराबे के साथ सजधज रही हैं। ये प्रजातंत्र में कलंक का एक बहुत बड़ा धब्बा हैं। आपके काम ग्रौर आपके पहनावे, दोनों किसी तरह का धब्बा पसंद नहीं करते, फिर कौन-सी ऐसी मजबूरी है, जो इतना बड़ा कलंक धीरे-धीरे लगता जा रहा है। उस पर आपकी नजर क्यों नहीं पड़ रही है?

जय रामजी की!

—सेवकराम ग्रोखाड़ू

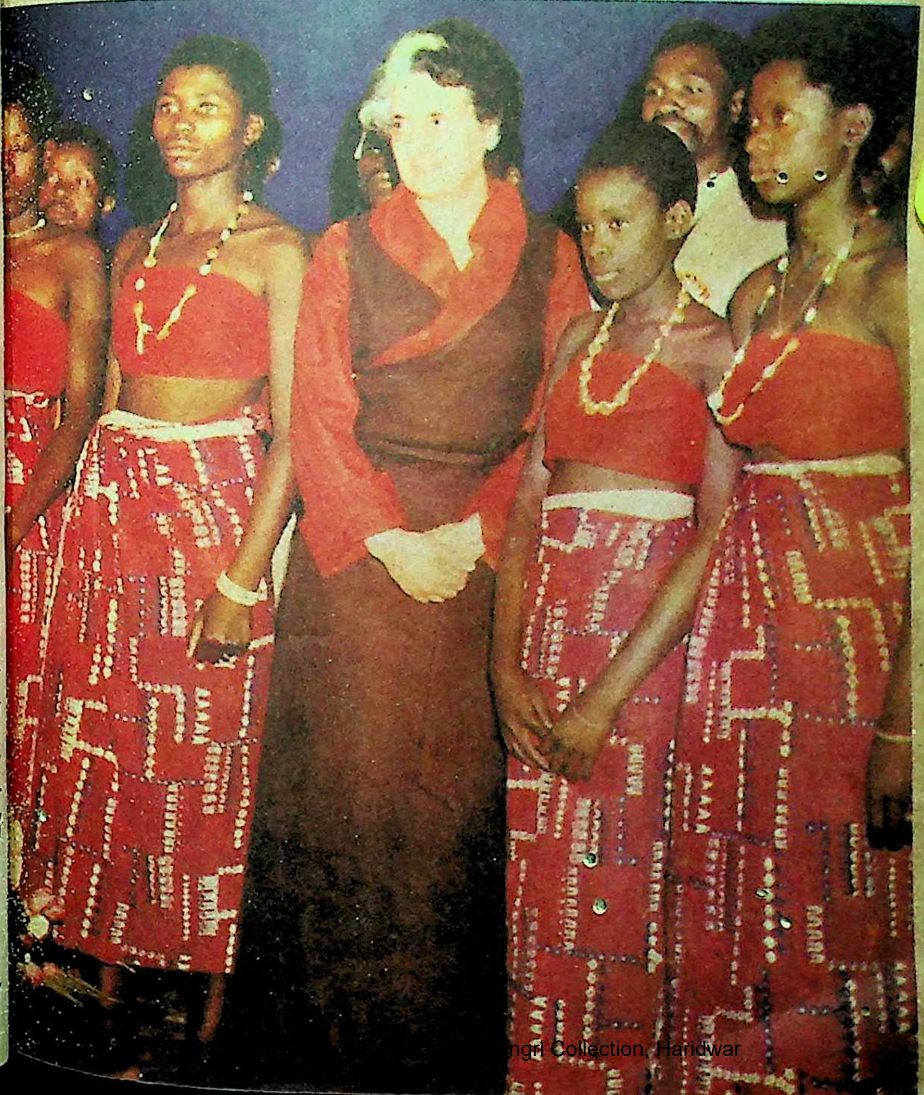

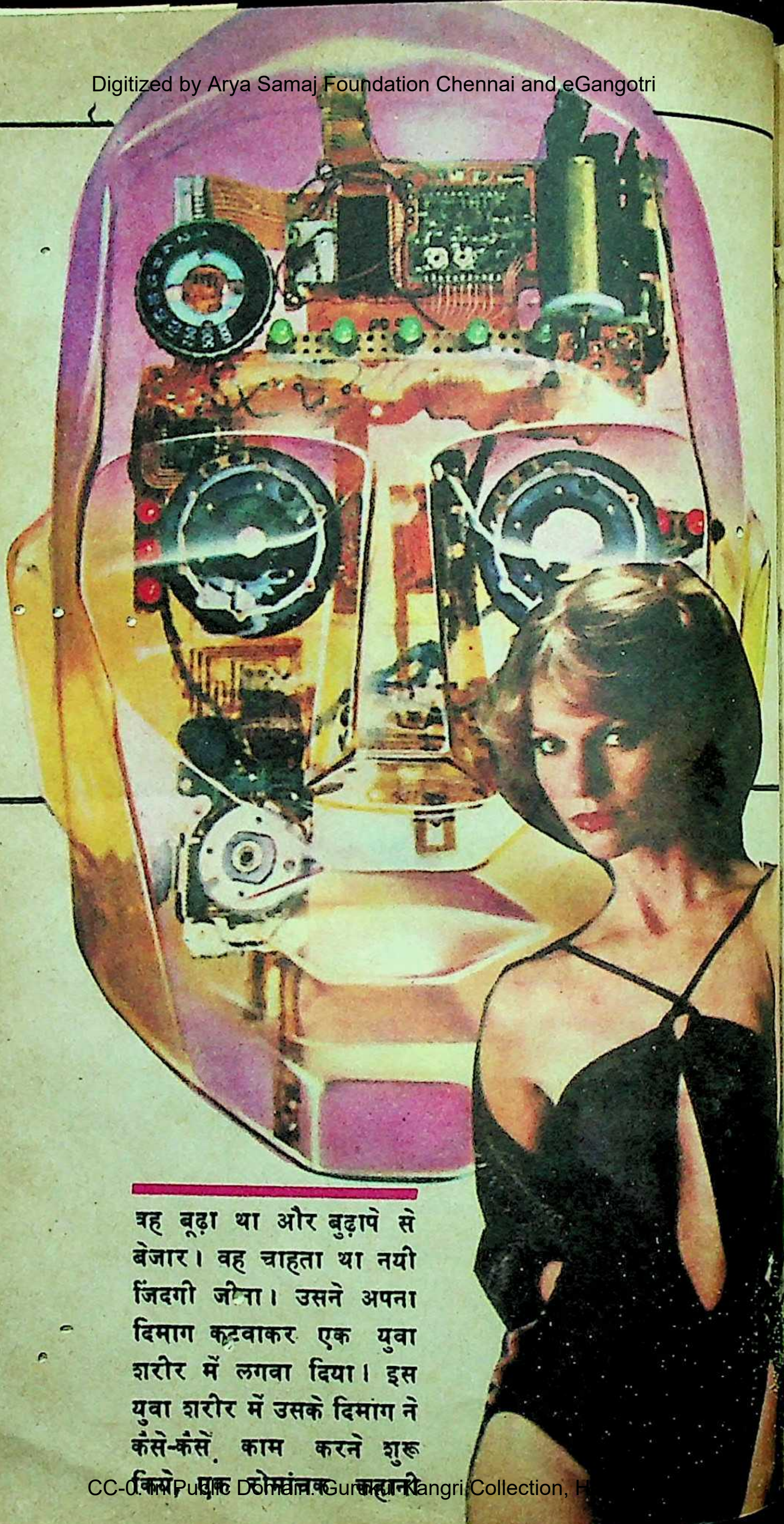

वह बूढ़ा था और बुढ़ापे से बेजार। वह चाहता था नयी जिंदगी जीना। उसने अपना दिमाग कटवाकर एक युवा शरीर में लगवा दिया। इस युवा शरीर में उसके दिमाग ने कैसे-कैसे काम करने शुरू किये, एक रोमांचक कहानी

कमर
बड़
के पास
कोई चा
ग्रौर एक
ग्रौर न
रही थीं
कुरसी प
के सिवा
का नाम
स्मिथ।
जिंदा था
पूर्णतः चे
रिक संस्थ
कोई क
उसके साम
वकील-मि
के सहारे
थक गया
है—एक
जेक
पर तुम्हार
संशोधन।

मैं किसी पाप से नहीं डरता

● रॉबर्ट ए. हाइनलाइन

कमरा पुराने ढंग का, किंतु काफी बड़ा और सुसज्जित था। खिड़की के पास अस्पताल का पलंग पड़ा था। कोई चालीस फुट की दूरी पर व्हील चेयर और एक मेज थी, जिससे बहुत-सी तारें और नलियां निकलकर पलंग तक पहुंच रही थीं। कुरसी के पास स्टेनो-डेस्क थी। कुरसी पर एक बूढ़ा बैठा था। चंचल आंखों के सिवा उसमें कोई गति नहीं थी। बूढ़े का नाम था—योहान सेवास्टियन बॉख स्मिथ। स्मिथ जीवन-रक्षक यंत्रों के सहारे जिंदा था। जिंदा, यानी उसका मस्तिष्क पूर्णतः चेतन था। इसलिए अपने व्यापारिक संस्थानों का संचालन करने में उसे कोई कठिनाई नहीं होती थी। लेकिन उसके सामने एक बड़ी समस्या थी। अपने वकील-मित्र जेक से उसने कहा, "मैं मशीनों के सहारे जिंदा नहीं रहना चाहता। मैं थक गया हूं। मुझे एक शरीर की जरूरत है—एक युवा शरीर की।"

जेक ने कहा, "संयुक्त राज्य में शरीर पर तुम्हारा अधिकार नहीं है। तेरहवां संशोधन। इसलिए तुम शरीर न बेच सकते हो, न खरीद सकते हो। परंतु, लाश संपत्ति हो सकती है। अगर तुम लाश खरीदना चाहो, तो मैं प्रबंध कर सकता हूं।"

"लेकिन, लाश . . . ज़ेक, मुरदा किसे कहते हैं?"

"जब आदमी का मस्तिष्क काम करना बंद कर दे। कानूनन!"

"तो ठीक है, मुझे एक मुरदा शरीर की ही जरूरत है। एक स्वस्थ और गरम शरीर की, जिसका हृदय अभी रुका न हो, किंतु मस्तिष्क कानूनी रूप से मर चुका हो . . . मैं अपने इस मस्तिष्क का उसमें प्रत्यारोपण कराना चाहता हूं।"

जेक ने शंका व्यक्त की, पर यह

. . . प्रत्यारोपण करेगा कौन?

"डॉ. बोयल," स्मिथ ने कहा।

"जिसे अपने प्रयोगों के कारण आस्ट्रेलिया से भागना पड़ा था?"

"हां, लेकिन उसकी वजह व्यावसायिक ईर्ष्या थी।" स्मिथ ने बात साफ की। "तुम अखबारों में विज्ञापन दे दो। ब्लड 'ग्रुप ए बी' नेगेटिव। कागजात तैयार करो। पति-पत्नी दोनों के हस्ताक्षर कराओ। कानूनी अड़चन नहीं आनी चाहिए।"

स्मिथ की सेक्रेट्री यूनिस का ब्लड-'ग्रुप ए बी' नेगेटिव था, उसके पति जो का भी। दोनों अनेक बार रक्त-दान भी कर चुके थे।

रात को जेक अपनी बख्तरबंद कार में यूनिस को घर पहुंचाने गया। बख्तरबंद गाड़ियां सुरक्षा के लिए बहुत जरूरी थीं। रास्ते में यूनिस ने पूछा, "क्या बॉस वास्तव में मस्तिष्क का प्रत्यारोपण कराना चाहते हैं? बांह, टांग, गुरदा, दिल तो ठीक है . . . लेकिन मस्तिष्क का प्रत्यारोपण? . . ."

जेक का विचार था कि स्मिथ इतना थक चुका है कि वह मरने का कोई कानूनी आधार ढूंढ़ रहा है। उसने कहा, "शायद, तुम ठीक कहती हो, यूनिस। लेकिन यह काम तो करना ही होगा। स्मिथ 'न सुनने का आदी नहीं है।"

●●

ऑपरेशन सफल रहा। स्मिथ क मस्तिष्क निकालकर एक ताजा मुर्दे प्रत्यारोपित कर दिया गया। लाखों तंतु को जोड़ना संभव नहीं था, इसलिए उ अपने आप नये शरीर को अपनाने के लि छोड़ दिया गया। यह सारा कार्य गोपनी ढंग से किया गया।

स्मिथ के सौभाग्य से उसके लिए शरीर मिला, वह एक ऐसे व्यक्ति का जिसने कागजात पर हस्ताक्षर कर दि थे। पति-पत्नी दोनों ने। यह भी सौभाग्य था कि उस व्यक्ति की लिपट में हत्या क दी गयी और उसके अंग-रक्षक ने उसे जीवि समझकर अस्पताल पहुंचा दिया, ज डॉक्टरों ने मशीनों की सहायता से शरीर को गरम रखा।

●●

स्मिथ कहीं और था। कहां, मालूम नहीं। उसे यह भी मालूम नहीं कि उसका अस्तित्व है भी या नहीं। . . . कुछ स्वप्नवत चल रहा था। . . .

रॉबर्ट ए. हाइन लाइन की गणना अग्रिम पंक्ति के विज्ञान-कथा लेखकों में होती है। अपने बहुचर्चित उपन्यास 'आई विल फीयर नो ईविल' में उन्होंने एक ऐसे कथानायक कल्पना की है, जो वृद्धावस्था के कारण जर्जर शरीर को त्यागकर युवा जिंदगी जीना चाह है। इसके लिए वह मस्तिष्क के प्रत्यारोपण का सहारा लेता है। यहां प्रस्तुत है इसी कृति सार—प्रस्तोता: सुरेश धींगड़ा

तमाम गोपनीयता बरतने के बावजूद समाचार फैल गया। धार्मिक कठमुल्लाओं ने इसे मानव के अहंकार की संज्ञा दी। डॉ. बोयल के खिलाफ वारंट जारी कर दिये गये, लेकिन वह कानूनी शिकंजे से बहुत दूर जा चुका था।

डॉक्टरों को मालूम हो गया कि मस्तिष्क की शिराएं और तंतु नये शरीर को स्वीकार कर रहे हैं, अपना निश्चित स्थान ग्रहण कर रहे हैं। . . . स्मिथ ने बोलने की कोशिश की। डॉक्टर हेडरिक ने स्मिथ से बात की। शुरू में सिर्फ हुंकार से जवाब मिला। डॉक्टर ने हुंकारों का कोड निर्धारित किया और यंत्र की सहायता से स्मिथ से वार्तालाप किया।

स्मिथ स्वस्थ होने लगा। नेत्र-ज्योति? सामान्य। रंगों की पहचान? सामान्य। श्रवण-शक्ति? सामान्य। वाणी? सामान्य। लेकिन स्मिथ अभी भी गरदन के नीचे पट्टियों और मशीनों की तारों से बंधा था। उसकी ठोड़ी के नीचे का हिस्सा उससे छिपाकर रखा गया था। स्मिथ अब मुक्त होना चाहता था। कम से कम दर्पण में अपनी नयी आकृति देखना चाहता था। उसने जेक को बुलवाया।

"स्मिथ, मैं तुम्हारी कोई मदद नहीं कर सकता। मैं जानता हूं, वे तुम्हें शीशा भी नहीं देखने देंगे क्योंकि मनोवैज्ञानिक का विचार है कि यह जान लेने के बाद कि तुम्हारा नया शरीर कैसा है, तुम विभाजित व्यक्तित्व का शिकार हो सकते हो।"

"लेकिन जेक, मैं जानता हूं कि मैं अब वह नहीं हूं, जो पहले था। मैं इस परिवर्तन के लिए तैयार था।" क्षणभर रुककर स्मिथ ने कहा, "अगर तुम मेरी कोई मदद नहीं कर सकते तो ठीक है, जेक। इस शहर में सिर्फ तुम ही वकील नहीं हो।" उसके स्वर में अक्खड़पन उभर आया।

"मुझे मालूम है। अदालत की ओर से अब मैं ही तुम्हारा अभिभावक हूं।"

"षड्यंत्र?"

"तुम्हारे व्यापार और पैसे को बचाने के लिए मुझे ऐसा करना पड़ा। तुम्हारी नातिनों की वजह से! तुम जब ठीक हो जाओगे तो अदालत में जाकर अपनी समर्थता सिद्ध करके सारे अधिकार वापस ले सकते हो। तुम्हारी नातिनों ने अदालत में प्रार्थना-पत्र प्रस्तुत किया था, कि तुम्हें कानूनी रूप से मृत घोषित कर दिया जाए।" जेक ने स्थिति स्पष्ट की।

"ओह! मेरी नातिनें क्या चाहती

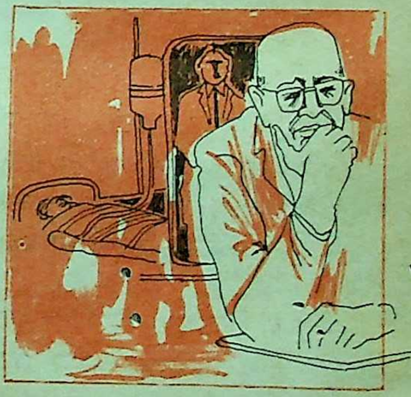

हैं?" स्मिथ ने पूछा।

"बेवकूफ! मैं उन्हें फूटी कौड़ी नहीं दूंगा सब जारज हैं।" स्मिथ ने कहा। "अच्छा, यूनिस कहां हैं?"

"मालूम नहीं, वह कुछ दिन बाद ही नौकरी छोड़ गयी थी।"

"बेवकूफ! ढूंढ़ो उसे।" स्मिथ ने हुक्म जारी कर दिया।

जल्दी ही स्मिथ को आभास होने लगा कि उसका नया शरीर किसी नारी का है, पुरुष का नहीं। जेक को उसे बताना पड़ा कि उसका शक ठीक है। आखिर स्मिथ को दर्पण दिखाया गया। गहन रुचि के साथ स्मिथ ने दर्पण देखा, फिर अविश्वास के चिह्न उसके चेहरे पर उभर आये, फिर भय के . . . "हे ईश्वर! यह इन्होंने क्या कर दिया? जेक, तुम्हें मालूम था?"

जेक को अपनी रुलाई रोकना मुश्किल हो रहा था। "हां, योहान, मुझे मालूम था। इसलिए जब तुमने ऑपरेशन के बाद उससे मिलना चाहा, तो मैं उसे ढूंढ़ नहीं सका—क्योंकि वह शुरू से यहीं थी . . . और मैं उससे ही बात कर रहा होता था।" जेक की रुलाई अंततः फूट पड़ी।

धीरे-धीरे स्मिथ को बताया गया कि यूनिस की उस समय हत्या हो गयी थी, जब वह रात को अकेले रक्त-दान करने के लिए अपने घर से लिफ्ट से नीचे उतर रही थी। उसने स्मिथ द्वारा नियुक्त अंगरक्षकों का इंतजार नहीं किया था। उसे यह भी बता दिया गया, कि जैसे ही लिफ्ट नीचे पहुंची अंगरक्षकों ने देख लिया औ एक ने लुटेरे को फौरन मार दिया।

स्मिथ को नींद की दवा दे दी गयी। लेकिन उसके स्वप्न पूर्ववत चलते रहे उधार की खोपड़ी में बैठा बूढ़ा स्मि कुनमुनाया, "यूनिस?" (मैं यहां हूं बॉस। सो जाओ!) "अच्छी बात है मैं सिर्फ जानना चाहता था, तुम कह चली गयी हो।" (घबराओ मत, बॉस मैं यहीं हूं। हमेशा की तरह)। स्मि नींद में मुसकराया और फिर सो गया

योहान स्मिथ ने तय कर लिया अब वह मिस स्मिथ कहलाएगा। घर नौकरों को बता दिया गया। कहीं भीत गहरे में वह अभी भी योहान स्मिथ था लेकिन उसका शरीर पूर्णतः नारी का था उसने डॉक्टर गार्सीआ को बुलाया औ आहिस्ता से पूछा, "तुम्हारा ख्याल डॉक्टर, मैं गर्भ धारण कर सकती हूं? स्मिथ, जो अब मिस स्मिथ था, ने पूछा

"हां," डॉक्टर गार्सीआ ने उत दिया, "क्योंकि तुम्हें पहले भी बच्चा चुका है।"

"क्या?" स्मिथ के चेहरे पर आश्च दिखायी दिया। उसकी जानकारी अनुसार यूनिस के कोई बच्चा नहीं (चुप रहो, बॉस! मैं खुद तुम्हें बता देत . . .। (बको मत, यूनिस।)

स्मिथ ने तय किया कि वह पूर्ण नार जीवन जिएगा। उसकी नर्स विनी उसका नया नामकरण कर दिया—

यूनिस स्मिथ ताकि यूनिस के प्रति आभार प्रकट किया जा सके।

●●

अदालत ने 'पहचान' के मुकदमे में फैसला दिया कि "जोन यूनिस स्मिथ ही योहान सेबास्शियन बॉख स्मिथ है। उसे अदालत की अभिभावकी से मुक्त किया जाता है।" यह फैसला अनेक गवाहों डॉक्टर बोयल, डॉक्टर गार्सीआ, जेक, यूनिस के पति जो की गवाहियों और योहान की नातिनों के वकीलों को लंबी बहसों के बाद दिया गया।

यूनिस के शरीर ने स्मिथ को आभास कराया कि वह जेक की ओर आकर्षित है। यूनिस मृत्यु से पहले जेक को प्यार करती थी—वैसे ही जैसे वह स्मिथ को करती थी। यूनिस प्यार का अगाध समुद्र थी। उसने कभी किसी को निराश नहीं किया था। स्मिथ कृशकाय और बूढ़ा हो चुका था, लेकिन यूनिस ने हमेशा उसे प्रसन्न रखने का हर संभव प्रयत्न किया था। जोन यूनिस ने एक बार अदालती कार्रवाही के दौरान जेक के सामने अपनी भावना प्रकट की, "मैं तुमसे प्यार करती हूं, जेक!"

जेक एक क्षण के लिए अचकचाया। फिर बोला, "मैं भी तुम्हें प्यार करता हूं—यूनिस। जोन यूनिस!"

"मुझे खुशी है, जेक कि तुमने हम दोनों का नाम लिया है। मुझसे शादी करोगे, जेक! नहीं? तुम जानते हो, तुम मुझसे शादी करोगे।"

"क्या? मूर्ख मत बनो, जोन। मैं तुमसे प्यार करता हूं, लेकिन तुममें और मुझमें उम्र का बहुत फर्क है।"

"क्या बकवास है? तुम्हें मालूम है कि मेरी उम्र तुमसे कम-से-कम पचीस साल ज्यादा है। और फिर जितना तुम मुझे समझ सकते हो, उतना कोई और पुरुष नहीं समझेगा।"

चौंकिए, नहीं, सांप भी खाने की चीज है, और वह भी जीवित व जहरीला। चीन का छब्बीस वर्षीय युवक ली वेई रोजाना ऐसे ही सांप खाता है और जिस दिन खाने को सांप नहीं मिलता, वह कमजोरी महसूस करता है। उसे चक्कर आने लगते हैं।

वह बचपन से ही ऐसा करता आ रहा है। वह सांपों के तरह-तरह के खेल भी दिखाता है। —श्याम शर्मा

"लेकिन मेरा मतलब था मैं तुमसे—जोन-से—काफी बड़ा हूं।"

"जेक, जरूरत पड़ने पर तुम्हारे लिए नये शरीर का इंतजाम किया जा सकता है।"

"नहीं, जोन। मैं स्वाभाविक जीवन और स्वाभाविक मौत मरना चाहता हूं, एक साधारण आदमी की तरह, अपने पूर्वजों की तरह।" जोन यूनिस और यूनिस के शरीर के बीच इस विषय को लेकर लंबा वार्तालाप हुआ। यूनिस ने बताया कि मृत्यु

से पूर्व वह स्मिथ से बच्चे की वांछा करती रही थी। जोन ने पूछा, "तुम अब भी यह चाहती हो, यूनिस!" (हां, लेकिन जैक से विवाह के पूर्व।) लेकिन अब यह कैसे संभव हो सकता है?)

(हो सकता है, प्रिय! मैंने शुक्राणु बैंक में अपने शुक्राणु सुरक्षित रखवाये हैं, जहां से वे दंपत्ति गर्भ-धारण करवा सकते हैं, जिनके प्राकृतिक रूप से बच्चे नहीं हो सकते। और मैं शुक्राणु-बैंक का ट्रस्टी हूं। इसका प्रबंध किया जा सकता है। सुन रही हो, यूनिस?) ...

(मैं रो रही हूं, बॉस! मैं बहुत खुश हूं।)

(तो कल सुबह! सुबह तक तुम अपना विचार बदल भी सकती हो।) ...

(मेरे पास दिमाग कहां है? वह तो तुम्हारा है। मैं नहीं बदलूंगी।)

जोन यूनिस ने अपना पहला मुक्ति-दिवस मनाया। उसने अपनी बख्तरबंद गाड़ी के ड्राइवर फिचले यानी टॉम, अं रक्षकों—शॉर्टी, यानी ह्यूगो और यानी एंटन को साथ लिया। सबसे प वह शुक्राणु बैंक गयी और डॉक्टर नौकरी का भय दिखाकर अपना शु निकलवाया—दान संख्या—५५१-२ ००५२ और गर्भ-धारण करवाया। गो नीय ढंग से यह काम करवाने के लिए उ संस्थान के निदेशक को नौकरी का दिखाकर धमकाना भी पड़ा। फिर अपने अंगरक्षकों के साथ शहर से बा बाड़ से घिरे खेतों में पिकनिक मन गयी। यह उसके नये जीवन का पह मुक्त और उन्मुक्त दिवस था। इसी दि से मालूम हुआ कि यूनिस के हत्यारे फिंच ने पकड़ा था और शॉर्टी ने करा चॉप के एक झटके से उसे धराशायी दिया था। अपने अंगरक्षकों के प्रति उ अपने भीतर दोस्ती और प्यार का अनुभव किया, उनके साथ यूनिस की भां व्यवहार किया और उन्हें प्यार दिया।

(अब कहां जाएं? यूनिस।)

(बॉस, मैं तुम्हें बताना चाहती थी मैं शुरू से चांद पर जाकर बसना चाह थी। मुझे मालूम था कि एक दिन तुम बसोगे। हो सकता है, जो भी मुझसे जाता।)

(हम अब भी जा सकते हैं। पहले कि हमारा पेट दिखायी देने लगे

(हां, बॉस। और वहां बच्चों के लि लायसेंस का भी चक्कर नहीं है।

प्रेमिका ने प्रेमी के साथ भाग चलने का वादा किया था। रात को प्रेमी ने सीढ़ी टिकायी और खिड़की तक पहुंचकर प्रेमिका से कहा, 'प्रिये, तैयार हो जाओ . . ।'

प्रेमिका ने डांटा, "धीरे बोलो, पिताजी सुन लेंगे।"

"तुम उसकी चिंता न करो। तुम्हारे पिताजी नीचे खड़े हैं और मेरी सीढ़ी थामकर छुटकारे की सांसे लें रहे हैं।'—प्रेमी ने समझाया।

बच्चों की जरूरत है।)

●●

ओकलेहामा स्टेट हाउस पर जनवादी कृषक आपातकाल सरकार का कब्जा जारी रहा। मंगल ग्रह प्रयोगशाला से रिपोर्ट मिली कि वहां जीवन के चिह्न मिले हैं। (काल १.४ × १०६ धन / ऋण १४% वर्ष) चंद्रमा-क्षेत्र में दो भोजन-गुफाओं का निर्माण पूरा हो गया।

जेन यूनिस ने विनी के साथ-साथ उसके प्रेमी और अपने पुराने डॉक्टर गार्सीआ को अपने मकान में रहने का निमंत्रण दे दिया। अब उस घर में जोन यूनिस, विनी, गार्सीआ और जेक चारों रहते थे। यूनिस में जेक के साथ-साथ गार्सीआ के प्रति भी यौन-आकर्षण उत्पन्न हो गया। लेकिन वह जो को भूल नहीं पायी। जेक सुप्रीम कोर्ट में पहचान मुकदमे की अपील के सिलसिले में वाशिंगटन चला गया और जोन जो के स्टूडियोनुमा घर पहुंची। उसने दरवाजे पर पहुंचकर अपनी आवाज को संयत करते हुए कहा, "मैं अंदर आ सकती हूं जो?"

"आना चाहो, तो!" जो ने हिचकिचाहट के साथ उत्तर दिया।

स्टूडियो में पहुंचकर जो अपनी दूसरी पत्नी यीयी का चित्र बनाने में व्यस्त हो गया। जोन की ओर उसने देखा तक नहीं।

(अब क्या करे, यूनिस?)

(बॉस मैंने तुम्हें यहां आने से मना किया था। तुम्हारे आने से जो को मानसिक परेशानी हो सकती है।)

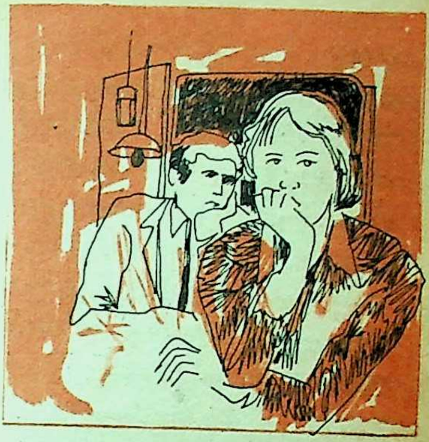

(तुम पहले क्या करती थीं, जब वह चित्र बना रहा होता था?)

(मैं नहाने-धोने और सफाई में व्यस्त हो जाती थी।)

(तुम चाहती हो मैं उसके सामनें...?)

(उसने यह शरीर हजारों बार देखा है।)

(ठीक है।)

जोन उठी, सैंडल उतारे और कपड़े उतारकर शॉवर के नीचे बैठ गयी। लौटकर उसने रसोईवाले हिस्से में देखा। बहुत कम खाने-पीने का सामान शेष था। जो के चित्र ज्यादा नहीं बिकते थे। लेकिन पैसे के लिए उसने कभी समझौता नहीं किया था। यूनिस की हत्या के बाद उसे वीमे और स्मिथ से जो पैसा मिला था, उससे उसने एक ट्रस्ट बनाकर हाथ साफ कर लिये थे। उसकी नजर में यह यूनिस के प्रति सबसे बड़ी श्रद्धांजलि थी।

जोन ने तीन लोगों के लिए खाना लगाया।

जो के लिए यह समय बहुत कठिन था। लेकिन 'ओम मणि पद्मे हुम्' से उसे बहुत शांति मिली। जोन ने बहुत प्रयास किया कि वह किसी तरह कुछ पैसा स्वीकार कर ले, लेकिन जो पहले की तरह दृढ़ निश्चयी था।

जोन पांच-छह दिन जो के स्टूडियो में बिताने के बाद लौट आयी।

●●

संयुक्त राष्ट्र संघ में बर्मी प्रतिनिधिमंडल ने आरोप लगया कि तथाकथित चंद्र-बस्तियां वास्तव में वहां सैन्य अड्डे बनाने के अमरीकी और चीनी बहाने हैं। सुप्रीम कोर्ट ने अरबपति योहान ऐबास्शियन बॉख स्मिथ की पहचान के मामले में फैसला दिया कि जोन यूनिस और स्मिथ को एक ही व्यक्ति माना जाए। मुकदमे के दौरान मतदान के समय एक जज ने नींद से जागकर कहा, "तलाक मंजूर !" और फिर सो गया।

●●

जोन यूनिस ने जेक के सामने रहस्योद्घाटन किया, "जेक, मैं मां बननेवाली हूं।"

"यूनिस—तुम्हें निश्चय है ?"

"हां, टेस्ट 'पॉजिटिव' है।"

"टेस्ट बॉब (गार्सीआ) ने किया है ? या किसी नीम-हकीम ने ?"

"डॉक्टर और मरीज का संबंध गोपनीय होता है। इस बारे में मत पूछो।"

"हमें फौरन शादी कर लेनी चाहिए।"

"कतई नहीं !"

"यूनिस, बेवकूफी नहीं !"

"श्रीमान, मैंने आपसे काफी समय पहले शादी करने को कहा था। आपने साफ इनकार कर दिया था। मैंने बाद में फिर मिन्नत की। आपने फिर मेरा हाथ थामने से इनकार कर दिया। मैंने तय कर लिया था कि तीसरी बार नहीं कहूंगी। मैं तुमसे शादी नहीं करूंगी। मैं तुमसे प्यार करती हूं, जेक, लेकिन शादी नहीं करूंगी।"

"मुझे तुम्हारी ठुकाई कर देनी चाहिए।"

"इससे मुझे कोई हानि नहीं पहुंचेगी, प्रिय ! लेकिन, मेरा ख्याल है कि तुम एक गर्भवती महिला पर हाथ नहीं उठाओगे। (एक झटका और दो, बॉस !) ...

(यूनिस, तुम बीच में टांग मत अड़ाओ। मैं एक नारी ही नहीं हूं, मैं योहान स्मिथ भी हूं, जिसे कोई भी ज्यादा नहीं दबा सकता। हम जेक के हैं, लेकिन इसका मतलब यह नहीं कि दबते जाएं।)

... (तो क्या हम जेक से शादी नहीं करेंगे ?) यह गलती है, बास, उसे हमारी जरूरत है। ...

(हमें भी उसकी जरूरत है, यूनिस, हम उससे शादी करेंगे—लेकिन बच्चा होने के बाद !)

(यह बहुत बड़ी गलती है, बॉस !)

(हां, और मैं ऐसी गलतियां करने के हक में नहीं हूं।)

"यूनिस यह बच्चा किसका है ? मेरा ?" जेक ने जानना चाहा।

"मैं इसका उत्तर नहीं दूंगी। तुम जानते हो कि मैं कम-से-कम एक और आदमी के साथ...जेक जब मैं कुमारी थी, तब तुमने मुझसे शादी नहीं की, जब तुम मेरे साथ रहने लगे, तब भी नहीं की। इसलिए बच्चे को लेकर तुम्हें परेशान होने की जरूरत नहीं है।...जेक, मैं बच्चे के बारे में कुछ नहीं बताऊंगी। मैं अकेली इसकी अभिभावक हूं।"

(सावधान, बॉस ! रहस्य मत खोलो।)

"ठीक है, यूनिस ! मैं बहस नहीं करूंगा। सिर्फ हां या ना सुनना चाहता हूं... फिर कहूंगा भी नहीं !" जेक ने कहा।

"तुम्हारा सत्यानाश हो, जेक। हां !"

उसी शाम जेक और जोन यूनिस स्मिथ का विवाह तय हो गया। गुपचुप शादी के बाद हनीमून के लिए गये विनी और और डॉ. गार्सीआ को बुला लिया गया। शादी के समय हूगो ने बाइबल से पढ़ा :

"प्रभु मेरा गड़रिया है, मैं वांछा नहीं करूंगा। वही मुझे हरी चरागाहों में चरने के लिए बनाता है, वही मुझे तालाब के किनारे बिठाता है। वही मेरी आत्मा को पुनर्स्थापित करता है, वह अपने लिए मुझे ठीक मार्ग पर चलाता है। हां, यद्यपि मृत्यु की छायावाली घाटी में से होकर गुजरता हूं, मैं किसी पाप से डरूंगा नहीं..."

●●

चंद्रमा पर चंद्रनगर और अपोलो औद्योगिक बस्ती के बीच पहली सुरंग के समांतर दूसरी सुरंग बना दी गयी। इस सफलता से प्रेरित होकर आयोग ने दो सुरंगें और बनाने का निर्णय लिया। एक हवाबाज अभिनेत्री ने हवा में लटके-लटके दो देशों की सीमाओं पर बच्चे को जन्म देकर नया रिकार्ड स्थापित किया। अखबारों में यौन-परिवर्तित मस्तिष्क-प्रत्यारोपणवाले व्यक्ति का अपने वकील से विवाह का समाचार आग की तरह फैल गया।

●●

समुद्र के किनारे होटल की पूरी ऊपरी मंजिल श्रीमती और श्री मैकेंजी ने किराये पर ले ली थी।

हमारे यहां गुलाब सौंदर्य का प्रतीक माना जाता है, पर चीन और यूरोप के कुछ देशों में गुलाब और लिली के फूलों को प्रायः शोक-संवेदना व्यक्त करने के काम में लाया जाता है। ब्राजील में बैंगनी रंग के फूल मूलतः शव-यात्रा के साथ जुड़े हैं। फ्रांस में पीले रंग के फूल अनास्था के प्रतीक हैं, जबकि मैक्सिको में मातम के अवसर पर पीले फूलों का प्रचलन है। रूस में किसी महिला को पीला फूल देने का तात्पर्य है कि आप उसका अनादर कर रहे हैं।

—सुधीर निगम

यह दंपति और कोई नहीं, यूनिस और जेक थे। खुली छत पर बैठे हुए जेक ने यूनिस से कहा, “वो देखो, ऊपर !”

“कहां, प्रिय ? मुझे तो कुछ दिखायी नहीं दे रहा है।”

“वहां।”

“चांद ?”

“हां, यूनिस ! वही एक जगह है, जहां बहुत स्थान है। हमारी सीमा—लेकिन असीम। उम्र हो, तो आदमी को वहीं चले जाना चाहिए। विशिष्ट गुण होते हैं ... वह हमेशा जाति की आशा होती है—मात्र बच्चा !... बच्चा जिंदा रहे, तो जाति को भी आशा बंधी रहती है ... अगर हम बच्चे को मर जाने दें, तो जाति भी मर जाएगी। उसे मारने के लिए हाइड्रोजन बमों की जरूरत नहीं है। हम ऐसे मोड़ पर पहुंच चुके हैं, जहां से न हम आगे बढ़ सकते हैं और न पीछे लौट सकते हैं—हम अपने ही जहर से मर रहे हैं। तभी उस चंद्रमा की बस्ती को जिंदा रहना होगा। क्योंकि हम जिंदा नहीं रह सकते ... इसलिए नहीं कि युद्धों का भय है, या सड़कों पर अपराध बढ़ गये हैं, या भ्रष्टाचार बढ़ गया है या रासायनिक खाद या शिक्षा इसके कारण हैं, सिर्फ यह कि लोग बढ़ गये हैं—लोग, आत्माएं नहीं ... बहुत लोग...सात अरब—एक-दूसरे की गोद में बैठे हुए, एक-दूसरे का गला काटते हुए लोग ! इसलिए जो जा सके, उसे तुरंत चांद पर चले जाना चाहिए।”

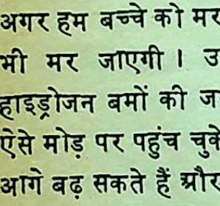

“मैं तो न जाने कब से जाना चाहती हूं। जब नील आर्मस्ट्रांग और एल्ड्रिन ने चांद पर कदम रखा था, तब मैं चालीस साल की थी। योहान स्मिथ के रूप में। जब वहां बस्ती बन गयी, तब वहां प्रवास के लिए आयु चालीस निर्धारित की गयी। मैं काफी बड़ी थी। जब यह आयु पैंतालीस कर दी गयी, तो भी मैं बड़ी थी, जब आयु पचास की गयी, तब भी मैं बड़ी थी। और फिर वहां, तो हर आदमी को अपना काम करना पड़ता है और वहां वकीलों की जरूरत भी नहीं। इसलिए तुम और मैं तो जा भी नहीं सकते !” यूनिस ने कहा।

जेक मुसकराया, “तुम जाना चाहोगी, तो मैं बाधा नहीं दूंगा, यूनिस।”

“जेक, तुम मुझसे इतनी आसानी से पीछा नहीं छुड़ा सकते।”

“यूनिस, मैं गंभीर हूं। अगर मुझे मालूम हो कि बच्चे का जन्म चांद पर होगा, तो मैं खुशी-खुशी मर जाऊंगा।”

“लेकिन, सुप्रीम कोर्ट तो मुझे बूढ़ा मानता है। मैं कैसे जा सकती हूं ?”

“उसका इंतजाम हो सकता है, अगर तुम चाहो, तो” जेक ने कहा।

“नहीं, जेकब जूनियर तभी चांद पर जाएगा, जब वह इस लायक होगा। अभी

इस सप्ताह तो नहीं !" यूनिस ने फैसला दे दिया।

जोन यूनिस ने अपने अंगरक्षक शॉर्टी (ह्यूगो) के लिए ट्रस्ट का निर्माण करके अपने मकान को चर्च में बदल दिया और उसे पादरी नियुक्त कर दिया। अनेक कर्मचारियों को जीवनभर के लिए वेतन देकर सेवा-मुक्त कर दिया या चर्च के कामों के लिए नियुक्त कर दिया। एक जहाज खरीदा और बाकी कर्मचारियों को बुलाकर समुद्री यात्रा पर निकल गयी। इस प्रकार जहाज में एक बड़ा परिवार इकट्ठा हो गया। जेक, यूनिस, गार्सीआ, विनी, यीयी, जो, फिचले, यूनिस का रसोइया, उसकी पत्नी और बेटी।

यीयी और जो इस यात्रा से जल्दी ही ऊब गये। इसलिए जोन यूनिस ने हेलिकॉप्टर से उनके लौटने का इंतजाम किया। लेकिन हेलिकॉप्टर से लटकी टोकरी में जो का सामान रखते समय जेक अचानक गिर गया।

"जेक, जेक !"

(यूनिस ! मेरी मदद करो ।)

ज़ोन यूनिस ने जेक का सिर अपनी गोद में रख लिया।

फ्रेड ने डॉक्टर गार्सीआ को बुलाया। बहुत कोशिश करने पर भी जेक को बचाया नहीं जा सका। गार्सीआ ने प्रमाण-पत्र दे दिया कि जेक की मृत्यु हृदय गति अचानक रुक जाने से हुई है। जोन यूनिस ने निर्णय लिया कि जेक को अंतरराष्ट्रीय समुद्र में जल-समाधि दे दी जाए। वह अपने पूर्वजों की भांति मरना चाहता था।

एक गरीब आदमी ने किसी लखपती को बताया, "मेरी सारी कमाई दाल-रोटी पर खर्च हो जाती है।"

लखपती ने उत्तर दिया, "यही तो तुम्हारी खराबी है कि तुम अपनी सारी की सारी कमाई दाल-रोटी पर खर्च कर डालते हो। मैं तो अपनी कमाई का सिर्फ पांच प्रतिशत ही अपने भोजन पर खर्च करता हूं।"

—भैरूंलाल गर्ग

सूर्यास्त से कुछ पहले।
इस आकाश के नीचे
"हर वस्तु की अपनी मृत्यु होती है, हर कर्म का अपना समय होता है, जन्म का समय, और मृत्यु का समय—"

जोन रुकी। क्षितिज में सूर्य नारंगी हो उठा था। रेलिंग के सहारे जेक का शव लटका था—कपड़े में लिपटा, पैरों में पत्थर बांध दिये गये थे ताकि वह सीधा पानी में उतर जाए।

"सब एक ही चीज में मिल जाते हैं! सब मिट्टी से बने हैं, और मिट्टी में मिल जाते हैं। मानव की आत्मा को कौन जानता है....?"

"....हम अनंत गहराइयों से आये हैं, और भ्राता जेकब के शरीर को अनंत में विलीन होने दो।"

जोन ने पुस्तक बंद की। फ्रेड और गार्सीआ ने रस्सी छोड़ी। जेक का शव समुद्र की अनंत गहराइयों में समा गया।

चंद्रमा-प्रवास के लिए परीक्षण-कक्ष में डॉ. गार्सीआ और विनी को चंद्रयान के रास्ते पर खुलनेवाला द्वार संकेतित कर दिया गया। अगली प्रत्याशी जोन यूनिस थी।

जोन ने विधान के अनुसार अपनी आधी संपत्ति चंद्रमा बस्ती-आयोग के नाम कर दी थी और आधी का ट्रस्ट बना दिया था, जिससे दूसरे ग्रहों तक पहुंचने के प्रयोग चलते रहें—हो सकता है, उसका बेटा उन नक्षत्रों की सैर करना चाहे।

गर्भ के नौ महीने पूरे होते-न-होते जोन यूनिस चंद्रमा पर पहुंच गयी। विनी से उसने वायदा लिया कि अगर प्रसव के दौरान उसकी मृत्यु हो गयी, तब वह बच्चे को पाल लेगी। उसने बच्चे का नाम भी सोच लिया। लड़का होने पर जेकब यूनिस स्मिथ और लड़की होने पर यूनिस जेकब स्मिथ। लेकिन जोन यूनिस को समय पर प्रसव-वेदना शुरू नहीं हुई।

चंद्रनगर के जमींदोज अस्पताल के आठवें तल्ले पर जोन यूनिस को आपरेशन के लिए तैयार किया गया।

"अस्वीकार के लक्षण।" गार्सीआ ने निराशा से कहा, "काश मेरे पास जीवन-रक्षक उपकरण होते!..."

"तो क्या होता?" प्रसव डॉक्टर ने पूछा।

"मैं इसे कुछ समय जीवित रख सकता।"

"नहीं, डॉक्टर गार्सीआ। चंद्रमा पर उनका कोई उपयोग नहीं है। यहां लोग स्वाभाविक मौत मरते हैं।"

जोन यूनिस की नब्ज धीमी होने लगी...स्वप्न चलने लगा....

"डॉक्टर!"

"हां, जोन!"

"तुम मुझे जोन कह रहे हो? मेरा नाम योहान है... आग्नेस ठीक-ठाक है—नहीं, डॉक्टर?...चीजें हमें दुःख देती हैं, बॉस!...मेरा मतलब यह नहीं था...जेक फिर गा रहा है....वह जब भी खुश होता है, गाने लगता है...मेरी तरफ झुको...शुक्रिया...छूना अच्छा लगता है...अब सो जाओ...ओम मणि पद्मे हुम्...अब मैं सोने के लिए लेट गया हूं...."

"सर्जन, धड़कन बंद हो रही है।"

बच्चे के होने की आवाज आयी, एक नयी दुनिया का जन्म हुआ।

"दिल डूब रहा है!"

(जेक? यूनिस?)

(मैं यहां हूं, बॉस! यहां, हमने तुम्हें थाम लिया है।)

(लड़का है या लड़की?)

(क्या परवाह है, योहान—यह बच्चा है! '. एक सबके लिए और सब एक के लिए!'.)

एक पुरानी दुनिया समाप्त हो गयी और फिर सब शून्य। ●

अवांछित अतिथि को आता देख वे बोले, "आइए, आइए। आपसे मिलकर हम पतित पावन हो गये।"

—मोहिनी जोशी

गोष्ठी

अनुराग भूषण, सुलतानपुर : सेनिलिति डिमेनतिया एलझीमर टाइप (Senility dementia Alzheimer Type) नामक रोग क्या है ?

यह बुढ़ापे के पागलपन की बीमारी है। इसका पहला विस्तृत विवरण १९०६ में एक जरमन चिकित्सक एलोईस एलझीमर (Alois Alzheimer) ने दिया था। अतः जिस वृद्ध रोगी के पागलपन में एलझीमर द्वारा बताये गये लक्षण मिलने लगे, उसे एलझीमर टाइप कहा जाने लगा। एलझीमर ने एक ५१ वर्षीया वृद्धा के बारे में बताया था कि पहले उसकी स्मरण-शक्ति का लोप हुआ, फिर उसे उदासीनता और आत्मविस्मृति घेरे रहने लगी, तत्पश्चात वह श्रुतिभ्रम, मतिभ्रम और दृष्टिभ्रम-जैसे मानसिक विभ्रमों की शिकार हुई और अंततः पागल होकर मर गयी। मृत्यु के बाद उसके मस्तिष्क की जांच करने पर पता चला कि उसका मस्तिष्क बुरी तरह सिकुड़ गया था और उसकी बाहरी परत की स्नायु-कोशिकाओं के तंतु परस्पर उलझकर विकृत हो चुके थे। एलझीमर ने तंतुओं के इस उलझाव को स्नायु-तात्विक गुत्थियों (neuro-fibrillary tangles) का नाम दिया और ये गुत्थियां एलझीमर टाइप बुढ़ापे के पागलपन का मुख्य कारण बन गयीं। एलझीमर ने बताया कि यह रोग वृद्धावस्था से पहले भी हो सकता है। बाद की खोजों से पता चला कि यह रोग स्नायु-तात्विक गुत्थियों के कारण ही नहीं, अन्य कारणों से भी हो सकता है और उसका उपचार संभव है, जैसे सिर में चोट लग जाने पर, तेज बुखार के कारण, पोषक आहार न मिलने पर, किसी दवा का गलत असर हो जाने पर अथवा बुढ़ापे में काम से अवकाश, प्रियजनों की मृत्यु और संतान के विवाह आदि के कारण अकेले पड़ जाने पर होनेवाले मानसिक कष्ट, चिंता, परेशानी, ऊब, उदासीनता आदि से भी वृद्धावस्था में आदमी पागल हो सकता है, परंतु अनेक अनुसंधानों के बावजूद स्नायु-तात्विक गुत्थियों से होनेवाला पागलपन अभी तक असाध्य रोग बना हुआ है। बुढ़ापे के पागलपन की बीमारी अमरीका में सबसे ज्यादा पायी जाती है, जहां लगभग ४० लाख वृद्ध पागल हैं और उनमें से लगभग पांच लाख एलझीमर टाइप पागलपन के शिकार हैं, जो सबसे खराब किस्म का और असाध्य रोग है।

सरयू प्रसाद, मुंगेर : 'आंध्र' शब्द (जैसे आंध्र प्रदेश में) किसी दिशा का सूचक है (जैसे उत्तर प्रदेश में 'उत्तर') अथवा भौगोलिक स्थिति (जैसे मध्य प्रदेश में 'मध्य') का ?

'आंध्र' शब्द न किसी दिशा का सूचक

है न किसी भौगोलिक स्थिति का। 'आंध्र' वास्तव में एक प्राचीन राजवंश का नाम था, जिसका अधिक प्रचलित नाम 'सातवाहन' राजवंश है। इतिहासकार रोमिला थापर के अनुसार इस राजवंश ने आधुनिक नासिक को केंद्र बनाकर दक्खन के पश्चिमोत्तर भाग में अपने राज्य की स्थापना की थी। सातवाहनों को आंध्र राजवंश भी कहा जाता था, जिससे यह धारणा बनी कि उनका मूल स्थान आंध्र अंचल--पूर्वी तट पर कृष्णा और गोदावरी नदियों का मुहाना था, जहां से वे गोदावरी नदी के उद्गम की ओर पश्चिम दिशा में बढ़ गये और अंततः उन्होंने मौर्य-साम्राज्य के पतन से उत्पन्न व्यापक राजनीतिक अव्यवस्था का लाभ उठाकर पश्चिम में अपनी सत्ता स्थापित कर ली। इसके विरुद्ध एक मत यह भी प्रकट किया जाता है कि इस वंश का मूल स्थान पश्चिम था, जहां से इसने पूर्वी तट पर अपना प्रमुत्व स्थापित कर लिया था, और इस प्रकार इस राजवंश के नाम पर इस अंचल का नाम भी आंध्र हो गया। आंध्रों को बहुत पहले मौर्य-काल तक में महत्त्वपूर्ण स्थान प्राप्त था, क्योंकि अशोक ने अपने साम्राज्य के जनजातीय लोगों में उनका विशेष रूप से उल्लेख किया है।

गंगासिंह, बुलंदशहर : अनन्नास मूलतः भारतीय फल है या कहीं बाहर से आया है ? इसकी कितनी और कौन-कौन-सी किस्में भारत में पायी जाती हैं ?

अनन्नास ब्राजील से भारत में आया है और यह फल भारत के लिए ब्राजील का सर्वोत्तम उपहार माना जाता है। यों तो इसकी बहुत-सी किस्में भारत में उगायी जाती हैं, लेकिन प्रमुख किस्में हैं: क्यू, जायंट क्यू, क्वीन, मारीशस, कोचीन, रत्नागिरी, जलधूप, अलेक्जेंड्रा, सिंगापुर, स्पेनिश, रेड स्पेनिश आदि। इनमें से पहली चार किस्मों की खेती बड़े पैमाने पर की जाती है और बाकी किस्में मुख्य रूप से अनुसंधान कार्यों के लिए उगायी जाती हैं। क्यू और जायंट क्यू किस्मों के अनन्नास की खेती बड़े पैमाने पर की जाती है क्योंकि इसकी उपज अन्य सभी किस्मों से अधिक है तथा डिब्बाबंदी के लिए भी यह सर्वोत्तम माना जाता है। इसके पत्ते कांटेदार नहीं होते और फल अधिक रसदार, सुगंधित तथा बड़े आकार के (दो-तीन किलोग्राम तक) होते हैं। क्वीन तथा मारीशस नामक किस्मों के अनन्नास छोटे होते हैं और इनके पत्ते कांटेदार होते हैं। डिब्बाबंदी के लिए भी ये फल उपयुक्त नहीं होते, परंतु ताजे फलों के रूप में इनका इस्तेमाल खूब होता है क्योंकि इन किस्मों के अनन्नास छोटे होने पर भी बहुत मीठे और स्वादिष्ट होते हैं।

चलते-चलते एक प्रश्न और ...

दिनेशचंद्र, गाजियाबाद : ऊपरवाला सब देखता है, तो कुछ करता क्यों नहीं ?

वह निष्क्रिय भाग्यवादियों का प्रतिनिधि है।

—बिंदु भास्कर

उपन्यास : २

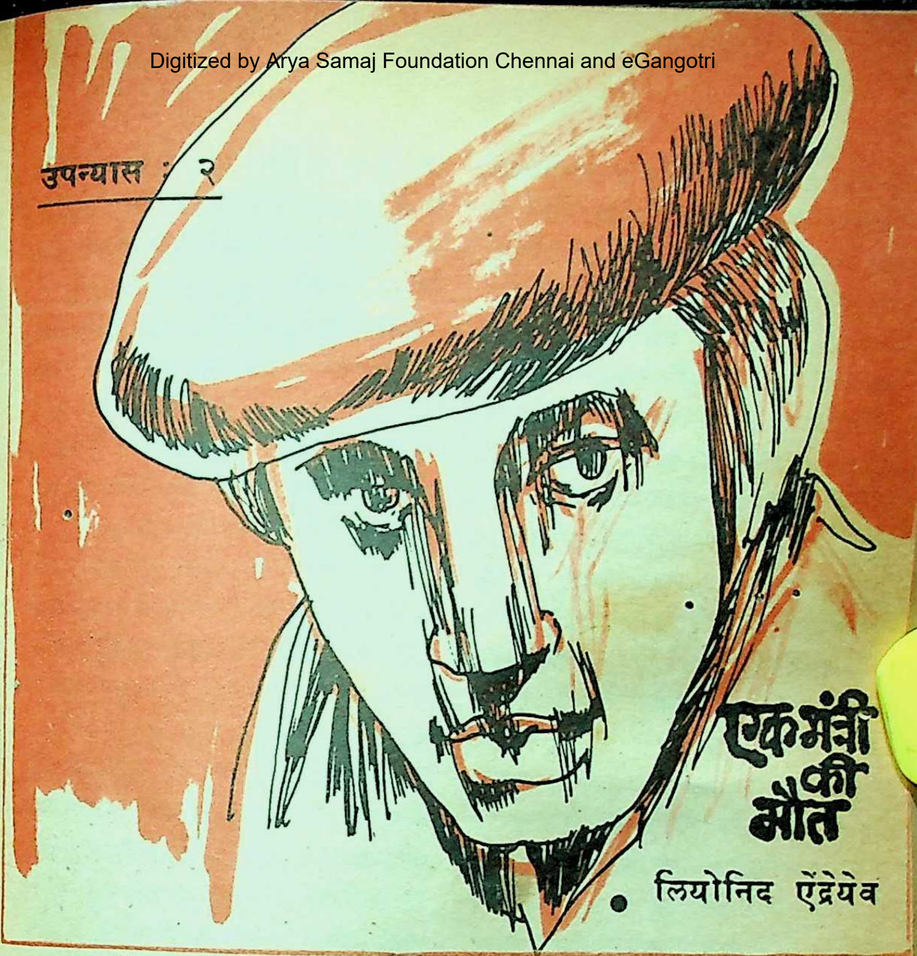

एक मंत्री की मौत

• लियोनिद ऐंद्रेयेव

रूस में जन्मे लियोनिद ऐंद्रेयव एक ऐसे उपन्यासकार, नाटककार एवं कहानीकार थे, जिनके साहित्य में सर्वत्र एक गहरे भय एवं आतंक की छवि गतिशील है। लियोनिद प्रकृति से विद्रोही एवं विरोधाभास के ज्वलंत उदाहरण थे।

उन्होंने प्रसिद्ध रूसी साहित्यकार गोर्की को लिखा था, "मैं उस व्यक्ति की कहानी अवश्य लिखूंगा, जो एक पागल की तरह सत्य की तलाश में भटकता रहा. . .जब उसका सत्य से साक्षात्कार हुआ, तब उसने अपनी आंखें फोड़ डालीं, कानों को बहरा बना लिया और बोला, 'संभव है कि तुम कल्याणकारी हो, निष्कलंक हो, लेकिन अब मैं तुम्हें स्वीकार नहीं कर सकूंगा। कारण, मैंने ताजिंदगी इतना दुःख झेला है कि आज मेरी रूह में तुम्हारे लिए नफरत के सिवाय कुछ नहीं है।' "

यहां प्रस्तुत है, बहुमुखी प्रतिभा के धनी ऐंद्रेयव के रोमांचक उपन्यास 'दी सेवन हू वेयर हैंग्ड' का हिंदी रूपांतर—प्रस्तोता : दुर्गाप्रसाद शुक्ल

यद्यपि मंत्री महोदय बेहद स्वस्थ और बलिष्ठ थे, फिर भी उन लोगों को भय था कि कहीं उनकी सूचना पाते ही वे घबरा न जाएं। इसीलिए उन्होंने बड़ी सावधानी बरती थी, उन्हें वह खतरनाक खबर देने में! उन्होंने मंत्री महोदय को विनमृतापूर्वक बताया था कि उनकी हत्या का षड्यंत्र किया जा रहा है, लेकिन चिंता की कोई बात नहीं, हत्यारे ऐंन वक्त पर पकड़ लिये जाएंगे।

जब मंत्री महोदय ने इस खतरनाक सूचना पर कोई घबराहट व्यक्त नहीं की, तब उन्हें षड्यंत्र की पूरी जानकारी दी गयी। उन्होंने उन्हें बताया कि कल जब वे अपनी एक महत्त्वपूर्ण रिपोर्ट लेकर घर से रवाना होंगे, तब ठीक एक बजे कुछ आतंकवादी उन पर कातिलाना हमला करेंगे। लेकिन भय की कोई बात नहीं। आतंकवादियों में से एक ने अपने साथियों के साथ विश्वासघात कर दिया है। उसने गुप्तचर पुलिस को आतंकवादियों के बारे में सब कुछ बता दिया है और अब उन पर कड़ी नजर रखी जा रही है। कल जब वे नियत समय पर मंत्री महोदय पर हमला करने आएंगे, तब सबको गिरफ्तार कर लिया जाएगा।

पुलिस-दल के प्रधान ने एक बार फिर कहा, 'कल ठीक एक बजे श्रीमान! ठीक एक बजे।'

इसके बाद पुलिस-अधीक्षक ने मंत्री महोदय को वह रात एक सुरक्षित स्थान पर बिताने के लिए कहा। मंत्रीजी की पत्नी और पुत्र पहले ही अन्यत्र भेज दिये गये थे। मंत्रीजी को पुलिस-प्रधान की बात माननी ही पड़ी।

एक विशाल प्रासाद। रोशनी से जगमगाते कक्ष। चेहरे पर विनमृता लिये परिचित चेहरे—और इन सबके बीच आतंकवादियों के षड्यंत्र की याद! मंत्रीजी उस नये सुरक्षित स्थान में जब-तब सिहरन अनुभव करते रहे।

अंधकारभरी रात के सूनेपन में-जैसे यह सिहरन स्थायी हो गयी। उस अपरिचित कमरे में मंत्रीजी पहले षड्यंत्र की आशंका से सिहरते रहे। धीरे-धीरे यह आशंका मृत्यु-भय में बदल गयी।

मंत्रीजी को गुरदे की कोई बीमारी थी। जब भी वे उत्तेजित होते, तब उनका मुंह, हाथ-पांव सूज जाते। इस समय वे शरीर में ऐसी ही सूजन अनुभव कर रहे थे। उन्हें बार-बार आतंकवादियों द्वारा रचे गये षड्यंत्र की याद आ रही थी। साथ ही याद आ रहे थे परिचित, जो आतंकवादियों के षड्यंत्र के शिकार हुए थे। अचानक बम का फटना—शरीर का क्षत-विक्षत हो जाना—खून का छितराना। उन्हें लगा-जैसे उनका शरीर किसी बम-विस्फोट की आवाज से दहल गया है! मौत! बम-विस्फोट से मौत! मंत्रीजी को लगा, जैसे कमरे में मौत उन्हें पहचानने आयी है।

'एक बजे, कल ठीक एक बजे।'

तभी एक सेवक कॉफी ले आया।

कॉफी ! मंत्रीजी ने सोचा, इस सेवक को क्या पता ! अगर आतंकवादियों का षड्यंत्र सफल हो गया तो यह कॉफी, यह शरीर, यह वेशभूषा, सब कहीं नहीं रहेंगे। अचानक उन्हें ख्याल आया, यदि पुलिस-अधिकारी उन्हें यह सब न बतलाता तो अच्छा रहता।' मैं आराम से कॉफी तो पी लेता। आराम से दिन तो बिता सकता। फिर मौत किसी भी रूप में आती। मैं गुरदे की बीमारी का शिकार हूं। एक न एक दिन तो मरना ही है। इतना सब जानने के बाद भी मैं कभी भयभीत नहीं हुआ, क्योंकि मृत्यु के समय का मुझे पता न था। पर आज ! वे मूर्ख कह गये हैं कि ठीक एक बजे आतंकवादी बमों से मुझ पर हमला करेंगे। मौत इतनी भयानक और यंत्रणादायक नहीं होती, जितनी कि उसके आने के समय की जानकारी ! और वे मूर्ख, मुझे इसी की जानकारी दे गये हैं।'

एकाएक मंत्रीजी स्वयं को बेहद हलका अनुभव करने लगे। उन्हें जाने क्यों यह विश्वास-सा होने लगा कि वे कल एक बजे नहीं मरेंगे। भले और किसी दिन वे आतंकवादियों का शिकार हो जाएं।

लेकिन उनका यह आत्मविश्वास क्षणमात्र में तिरोहित हो गया। सहसा उनके दिल की धड़कन भी बढ़ गयी। 'कल ठीक एक बजे, श्रीमान ! ठीक एक बजे।' उनके कानों में यही वाक्य बार-बार गूंजने लगा। मंत्रीजी को लगा, कहीं उनके दिल की धड़कन बंद न हो जाए ! दिल का दौरा ! मौत ! मंत्रीजी आतंकवादियों को भूल गये। अब उन्हें दिल की हर पल बढ़ती धड़कन परेशान करने लगी। उन्हें अपनी सांस घुटती-सी मालूम हुई। वे मृत्यु-भय से कांपने लगे। उन्हें आंखों में अंधकार छाता दिखायी दिया।

घबराकर उन्होंने घंटी का बटन दबा दिया।

क्षणभर में कमरा सेवकों, अधिकारियों से भर गया। डॉक्टर भी पहुंच गये। मंत्रीजी की पत्नी को खबर दे दी गयी। मंत्रीजी पर धीरे-धीरे बेहोशी छा रही थी।

उन्हें फांसी पर लटका दिया जाए

सब-कुछ वैसा ही घटा, जैसा कि पुलिस-अधिकारियों ने सोचा था। मंत्रीजी को

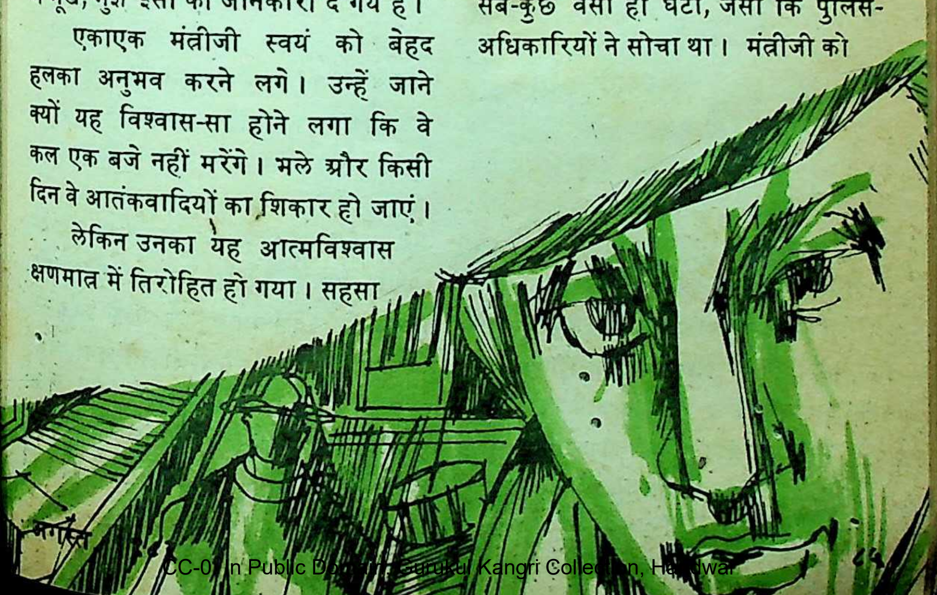

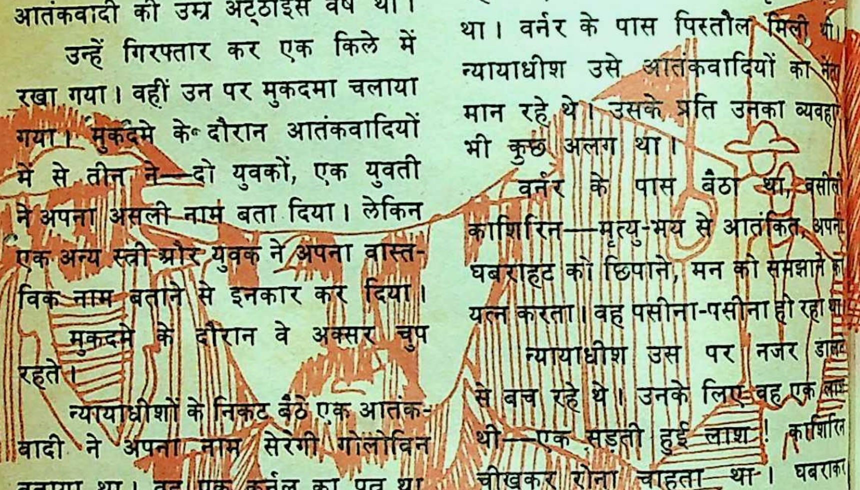

बताया था। आतंकवादी ठीक समय पर गिरफ्तार कर लिये गये थे। संख्या में वे चार थे—तीन युवक, एक युवती। उन के पास बम, पिस्तौलें और अन्य घातक हथियार बरामद हुए थे। बाद में एक और स्त्री पकड़ी गयी। वह एक आतंकवादी की प्रेमिका थी। आतंकवादी युवा थे। उनकी अवस्था ज्यादा न थी। सबसे बड़े आतंकवादी की उम्र अट्ठाइस वर्ष थी।

उन्हें गिरफ्तार कर एक किले में रखा गया। वहीं उन पर मुकदमा चलाया गया। मुकदमे के दौरान आतंकवादियों में से तीन ने—दो युवकों, एक युवती ने अपना असली नाम बता दिया। लेकिन एक अन्य स्त्री और युवक ने अपना वास्तविक नाम बताने से इनकार कर दिया।

मुकदमे के दौरान वे अक्सर चुप रहते।

न्यायाधीशों के निकट बैठे एक आतंकवादी ने अपना नाम सेरेगी गोलोविन बताया था। वह एक कर्नल का पुत्र था, स्वयं भी भूतपूर्व सैन्य अधिकारी था। वह खिड़की की राह नजर आनेवाले चमकते आकाश को देख रहा था।

उसके साथ बैठी दुबली-पतली युवती—मुस्या—भी आकाश की ओर ताक रही थी। अदालत के उस बोझिल वातावरण में केवल चमकता आकाश ही उसे सुकून देनेवाला लग रहा था।

न्यायाधीशों के मन में सेरेगी गोलोविन और मुस्या के प्रति सहानुभूति थी।

मुस्या के पास बैठे दूसरे युवक का नाम वर्नर था। वह हथेलियों को घुटनों में दबाये चुपचाप, मूर्ति-सा बैठा था। वह लकड़ी के फर्श पर अपनी दृष्टि गड़ाये था। वर्नर के पास पिस्तौल मिली थी। न्यायाधीश उसे आतंकवादियों का नेता मान रहे थे। उसके प्रति उनका व्यवहार भी कुछ अलग था।

वर्नर के पास बैठा था, वसीली काशिरिन—मृत्यु-भय से आतंकित, अपनी घबराहट को छिपाने, मन को समझाने का यत्न करता। वह पसीना-पसीना हो रहा था।

न्यायाधीश उस पर नजर डालने से बच रहे थे। उनके लिए वह एक लाश थी—एक सड़ती हुई लाश! काशिरिन चीखकर रोना चाहता था। घबराकर उसने वर्नर का हाथ पकड़ लिया।

'घबराओ नहीं, वास्या ! सब कुछ जल्दी निपट जाएगा'' वर्नर ने बिना आंख उठाये कहा।

आतंकवादियों को सबसे ज्यादा परेशानी हो रही थी—तान्या कोवालशु से ! वह निस्संतान थी, फिर भी उन सबके लिए मां के समान थी। उसकी आंखों में उन्होंने सदा प्रेम, मुसकराहट पायी थी। उस समय तान्या भी चुप थी, पर उसे फांसी पर लटकाये जाने का कोई

साठ साल के एक वृद्ध नेताजी ने नये खून को चुनाव टिकट दिये जाने की मांग का समर्थन किया, क्योंकि कल ही उन्होंने चार बोतल दूषित खून निकालकर नया खून चढ़वाया है।

भय नहीं था। उसके ही घर में आतंकवादी पकड़े गये थे। उनके हथियार बरामद हुए थे। वह स्वयं आतंकवादी नहीं थी। किसी की प्रेमिका या 'रखैल' मात्र थी, पर जब पुलिस ने उसके घर छापा मारा था, तब उसी ने पिस्तौल चलाकर एक गुप्तचर को घायल कर दिया था।

मुकदमा रात आठ बजे खत्म हुआ।

मुस्या ग्रौर गोलोविन की आंखों ने चमकते नीले आकाश को धीरे-धीरे स्याह होते देखा था। अब मुस्या फर्श की ग्रोर देख रही थी। गोलोविन अब बाल-सुलभ जिज्ञासा से न्यायाधीशों को देख रहा था।

फैसला हो चुका था। न्यायाधीश, वकील, अन्य अधिकारी उठकर जाने लगे थे। पहरेदारों ने आतंकवादियों को चलने के लिए संकेत किया। आतंकवादियों की आपस में निगाहें मिलीं।

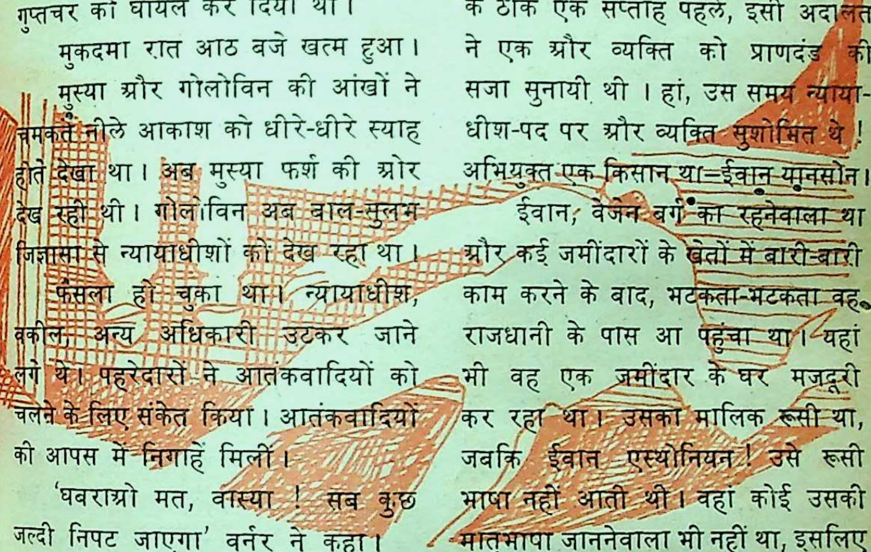

'घबराग्रो मत, वास्या ! सब कुछ जल्दी निपट जाएगा' वर्नर ने कहा।

'नहीं, मैं ठीक हूं, भाई।' काशिरिन ने प्रसन्न दिखने की कोशिश करते हुए कहा।

'उन्हें शैतान दोजख में ले जाए। उन्होंने हमें फांसी पर लटका दिया !' गोलोविन ने कहा।

'यह तो होना ही था !' वर्नर ने तटस्थ स्वर में उत्तर दिया।

'कल फिर फैसला ग्रौपचारिक रूप में सुनाया जाएगा। फिर फांसी पर लटकाये जाने तक हम लोग साथ-साथ रखे जाएंगे।' तान्या ने सांत्वना के स्वर में कहा।

मुस्या चुप रही। वह गंभीर हो सबके साथ चलने लगी।

मुझे फांसी पर क्यों लटकाया जाएगा ?

आंतकवादियों को फांसी की सजा सुनाने के ठीक एक सप्ताह पहले, इसी अदालत ने एक ग्रौर व्यक्ति को प्राणदंड की सजा सुनायी थी। हां, उस समय न्यायाधीश-पद पर ग्रौर व्यक्ति सुशोभित थे ! अभियुक्त एक किसान था—ईवान यानसोन।

ईवान, वेजेन बर्ग का रहनेवाला था ग्रौर कई जमींदारों के खेतों में बारी-बारी काम करने के बाद, भटकता-भटकता वह राजधानी के पास आ पहुंचा था। यहां भी वह एक जमींदार के घर मजदूरी कर रहा था। उसका मालिक रूसी था, जबकि ईवान एस्थोनियन ! उसे रूसी भाषा नहीं आती थी। वहां कोई उसकी मातृभाषा जाननेवाला भी नहीं था, इसलिए ईवान दो वर्षों तक किसी से बिना बोले ही रहा। वैसे भी वह चुप रहना ज्यादा पसंद करता। उसके जिम्मे मालिक के घोड़े की देखरेख का काम था। कभी-कभी ईवान गुस्से में घोड़े को चाबुक से पीटता ग्रौर बदले में मालिक की मार सहता। पर वह अपनी आदत से बाज नहीं आया। घोड़े को जब-तब पीटता ही रहता।

ईवान कभी-कभी नशा करता था। जब वह अपने मालिक को स्टेशन छोड़ने जाता, तब लौटते वक्त अकेला ही खूब

शराब पीता।

एक दिन उसे अपने गांव से एक चिट्ठी मिली। चूंकि ईवान अनपढ़ था और वहां किसी और को उसकी भाषा नहीं आती थी, उसने पत्र को गोबर के ढेर में फेंक दिया।

यद्यपि ईवान कुछ बोलता नहीं था, फिर भी वह औरों की न समझ आनेवाली बातों, और भिन्न-भिन्न आवाजों को पहचानने की कोशिश करता।

एक रात उसने पास के गांव के चर्च की घंटियों की धीमी-धीमी आवाज सुनी। वह कोठरी से बाहर निकल आया। अंधकार में दूर उसे आग की लपटें दिखीं।

दूसरे दिन उसे पता चला कि पास के गांव में डाकुओं ने एक धनी किसान को उसकी पत्नी-सहित मार डाला और फिर उसके घर को आग भी लगा दी।

ईवान का मालिक घबरा गया। उसने अपनी रक्षा के लिए ईवान को बंदूक देनी चाही, पर ईवान को अपने चाकू पर ज्यादा भरोसा था। उसने बंदूक लेने से इनकार कर दिया। फलतः उसे मालिक की कड़ी फटकार सुननी पड़ी।

एक रात जब और मजदूर किसी अन्य स्थान पर भेज दिये गये थे, ईवान ने एक विचित्र काम किया।

उसने मालिक के रसोइए को एक कोठरी में बंद कर दिया और चाकू लेकर अपने मालिक पर धोखे से आक्रमण कर बैठा। उसने मालिक को चाकू से बुरी तरह गोद डाला। इसके बाद उसने मालिक की पेटियां तोड़कर सामान निकालना शुरू किया। उसे कुछ धन मिला, जिसे उसने जेब के हवाले किया।

अब तक ईवान की नजर मालिक की रखैल पर नहीं पड़ी थी। वह भयभीत नजरों से कभी पागल ईवान और कभी अपने घायल मालिक को देख रही थी। ईवान उसकी ओर चाकू जमीन पर फेंककर बदनीयती से झपटा, लेकिन वह स्त्री उससे ज्यादा ताकतवर निकली। उसने ईवान का गला पकड़ लिया। ईवान भयभीत हो उठा। किसी तरह उसने स्वयं को छुड़ाया और कमरे के बाहर निकल भागा।

लेकिन वह शीघ्र ही पकड़ लिया गया। वह एक खेत में छिपा हुआ था, और पकी फसल में आग लगाने की कोशिश कर रहा था।

कुछ दिनों बाद ईवान के घायल मालिक की मृत्यु हो गयी और उस पर कत्ल का मुकदमा चला। उसे भी फांसी की सजा मिली।

अदालत में ईवान के होश ठिकाने नहीं थे। कभी वह गले में लिपटा मफलर ढीला करता, कभी उसे कसता।

फांसी की सजा सुनने के बाद ईवान ने न्यायाधीश से पूछा, 'मुझे फांसी पर क्यों लटकाया जाएगा ?'

और वह रह-रहकर यही पूछता रहा।

जेल में भी वह पहरेदारों से, अधिकारियों से यही पूछता, 'मुझे फांसी पर क्यों

लटकाया जाएगा ?'

जेल के वॉर्ड में फांसी की सजा पाये अन्य कैदी भी थे। डाकू, लुटेरे, हत्यारे ! उन्होंने ईवान को कोई महत्त्व नहीं दिया।

जब वार्डन को उसकी सजा का पता चला, तब उसने ईवान से कहा, "तो तुम्हें फांसी की सजा सुना दी गयी !"

'मुझे फांसी पर कब लटकाया जाएगा ?' ईवान ने सवाल दोहराया ।

'चिंता न करो ! कुछ और कैदी आ जाएं। सबको एक साथ लटका दिया जाएगा।'

'पर मैं फांसी पर नहीं लटकना चाहता।' ईवान ने अनुनय-पूर्वक कहा।

अब रोज सुबह ईवान यही सवाल दोहराता, 'मैं फांसी पर कब लटकाया जाऊंगा।' फिर कहता, 'मैं फांसी पर लटकना नहीं चाहता।'

दिन बीतते रहे। ईवान को यह भ्रम होने लगा कि वह फांसी पर नहीं लटकाया जाएगा। अब वह मृत्यु-दंड की बात भूलता-सा जा रहा था। अब वह खाट पर लेटा-लेटा हरे-भरे खेतों, बर्फ ढके पर्वतों, शराब के ठेके की दूकान के बारे में सोचा करता। जेल में उसे अच्छा भोजन मिल रहा था। इसलिए उसकी सेहत काफी सुधर गयी थी। वह सोचता, अब मालिक की पत्नी उसे पसंद करने लगेगी।

इसी बीच आतंकवादियों की गिरफ्तारी की खबर जेल में भी पहुंची। और, जब एक दिन सुबह ईवान ने आदत के मुताबिक वार्डन से पूछा, 'मुझे फांसी पर कब लटकाया जाएगा ?" तब उसे उत्तर मिला, 'जल्दी ही ! चिंता न करो।'

युवक ने अपनी प्रेमिका से पूछा, "मुझसे शादी करोगी?"

उसने शर्माते-झिझकते 'हां' कर दी।

युवक काफी देर खामोश बैठा रहा, तो उसने कहा, "कुछ बोलो न! क्या चुपचाप बैठे हो।"

युवक गहरी सांस लेते हुए बोला, —"अब कहने को रह ही क्या गया है ?"

— सुरेन्द्र श्रीवास्तव

'तुम मजाक तो नहीं कर रहे हो ?' ईवान ने भयभीत होते हुए पूछा ।

'खूब ! पहले तो तुम फांसी पर लटकने के लिए बेताब थे और अब जब फांसी का दिन पास आ गया है, तो डर रहे हो।' फिर वार्डन ने ईवान से पूछा, 'तुम्हें किसी से अलविदा तो नहीं कहना है। मसलन, मां से, बहन से, रिश्तेदारों से !'

'मुझे फांसी पर मत लटकाओ। मैं फांसी पर नहीं लटकना चाहता।' ईवान ने घबराकर विनती की।

दिनभर ईवान बेचैन रहा। शाम होते ही अकेलेपन ने ईवान को घेर लिया। बढ़ता अंधकार, धीरे-धीरे पसरती चुप्पी, स्वयं मौत का प्रतिरूप लग रही थी।

जैसे-जैसे रात बढ़ती गयी, ईवान मानसिक संतुलन खोता गया। उसे अंधकार से डर लगने लगा। वह उस बच्चे

की तरह था, जो यह सोचता है कि उसके इच्छा करते ही मनचाही वस्तु मिल जाएगी। ईवान ने सूरज को आदेश दिया, 'चमको, चमको ! !' फिर वह प्रार्थना के स्वरों में बोला, 'चमको।'

सूरज नहीं चमका, ईवान भय से कांपने लगा। ईवान ने इससे पहले कभी मृत्यु की कल्पना तक नहीं की थी। उसके पास उसके रूप का कोई अनुमान भी नहीं था। पर अब उसे लग रहा था—जैसे मौत उसकी कोठरी में घुस आयी है और पंजे फैलाये उसकी ओर बढ़ रही है। ईवान भयभीत, जान बचाने के लिए कोठरी में इधर-उधर भागने लगा।

कोठरी का द्वार बंद था। अंधकार में ईवान को कुछ दिखायी नहीं पड़ रहा था। वह चीखकर विलाप कर उठा। आतंक ने उसकी आंखों पर जैसे ताला जड़ दिया था। इसीलिए जब पहरेदारों ने उसे उठाया, उसके सिर पर ठंडा पानी डाला, तब भी ईवान ने अपनी आंखें नहीं खोलीं। काफी देर बाद उसने एक आंख जरा-सी खोली और एक कोने में पहरेदारों के जूतों पर नजर पड़ते ही वह रो पड़ा।

उसे दवा दी गयी। क्षणभर के लिए ईवान चैतन्य हुआ, फिर गहरी नींद सो गया।

दो दिन बाद ईवान को फांसी पर चढ़ाया जाना था। अब उसने कुछ भी सोचना छोड़ दिया। अब वह खाना भी नहीं खाता, न सोता, वह रात भर स्टूल पर, पैरों को आपस में फंसाये बैठा रहता। उसका मुंह भी अब सदैव अधखुला रहता।

वार्डन ऐसे दृश्यों का अभ्यस्त था। उसने अपने साथी से कहा, 'उसे जबरद धक्का लगा है। अब वह मृत्यु तक कु भी नहीं अनुभव करेगा।'

फिर उसने ईवान को पुकारा, 'ईवान! ओ, ईवान !'

ईवान ने धीरे से चिरौरीभरे स्वरों में कहा, 'मुझे फांसी पर मत लटकाओ।'

'तुमने भी तो एक व्यक्ति की हत् की है।'

"मैं मरना नहीं चाहता, मुझे फां पर मत लटकाओ।"

दूसरे दिन आधी रात को कुछ पह दार ईवान की कोठरी में आये। उनमें एक ने ईवान से कहा, 'उठो, तैयार जाओ।'

ईवान उठा, पर उसकी आंखें मुंद लगीं।

'अरे सोओ मत। चलो।'

'मैं मरना नहीं चाहता। मुझे फां पर मत लटकाओ।'

लेकिन जब पहरेदारों ने उसे चलने इशारा किया, तब वह आज्ञाकारी कि की तरह उनके पीछे हो लिया।

सामने एक काली गाड़ी खड़ी थ

ईवान पसीने-से नहा गया। गाड़ी चढ़ने से पूर्व उसने नाक पर आयी पसी की बूंदे पोंछीं, फिर गले में कसकर तं गये मफलर को ठीक किया।

हम ओरयाल से आये हैं

जिस सैनिक अदालत ने ईवान को फांसी की सजा सुनायी थी, उसी ने येलेत्जेक जिले के ओरयाल क्षेत्र के एक किसान सिगनको को भी फांसी पर लटकाये जाने का आदेश दिया था। वह एक कुख्यात डाकू और हत्यारा था। इस बात को वह स्वीकार भी करता था। अदालत में भी सिगनको ने स्वयं पर लगाये गये हर आरोप को 'बिलकुल सही' बतलाया था। यही नहीं, जब न्यायाधीशों ने सिगनको को एक पेशेवर हत्यारा मानकर, बिना किसी सहानुभूति के फांसी की सजा सुनायी थी, तब उसने वही वाक्य दोहराया था— 'बिलकुल सही!'

ईवान की तरह सिगनको को भी फांसी के पूर्व जेल में सत्तरह दिन बिताने थे। शुरू-शुरू में तो सिगनको ने जेल से निकल भागने का उपाय सोचना शुरू किया, पर शीघ्र ही उसे अपने इस विचार की निरर्थकता का भान हो गया।

अब वह दिन में कमरे में लट्टू-सा चक्कर काटता, फर्श पर थूकता और रात को गहरी नींद सोता।

एक दिन वार्डन ने उसकी कोठरी की ओर देखते हुए एक पहरेदार से कहा, 'देखो, कोठरी कितनी गंदी कर डाली है।'

उत्तर में सिगनको चीखा, 'तुमने सारी दुनिया गंदी कर रखी है। पर मैंने तो तुमसे कोई शिकायत नहीं की।'

वार्डन हंस पड़ा। फिर धीरे से उसने सिगनको से पूछा, 'क्या तुम जल्लाद बनोगे?'

सिगनको ठठाकर हंस पड़ा। 'वाह-वाह! रस्सी है, गरदनें भी हैं, पर गरदनों में फंदा डालनेवाला कोई नहीं।

'भले आदमी, तेरी जान बच जाएगी।' वार्डन ने उसे समझाना चाहा।

'ठीक है, ठीक है! सोचकर बताऊंगा।' सिगनको ने कहा।

वार्डन चला तो गया, पर सिगनको कल्पनाओं के रंगीन संसार में छोड़ गया। वह सोचने लगा, जल्लाद बन जाने पर उसकी जिंदगी कितनी बदल जाएगी।

इसके बाद वार्डन दो बार उससे पूछने आया कि क्या वह जल्लाद बनने को तैयार है? सिगनको ने हर बार उत्तर दिया, 'ओह, कितनी जल्दी पड़ी है तुम्हें।'

तीसरी बार वार्डन फिर आया, पर यह कहने के लिए कि 'बेवकूफ, तूने जिंदा बचे रहने का एक मात्र अवसर भी गंवा दिया। दूसरे जल्लाद का प्रबंध कर

एक बंदूकधारी युवक, जो स्नायविक तनाव से ग्रस्त था, मिचीगन की एक दूकान में घुसा और बोला, 'अगर कोई हिलने की कोशिश करेगा, तो गोली से उड़ा दिया जाएगा।' इसके बाद उसका साथी रकम बटोरने के लिए आगे बढ़ा, तो उसने उसे ही गोली से उड़ा दिया।

लिया गया है।'

'दोजख में जाओ तुम!' सिगनको गुर्राया।

जैसे-जैसे फांसी का दिन पास आता गया, सिगनको बेचैन होता गया। अब उसे नींद भी नहीं आती। यदि सोता तो, भयानक सपने उसे घेरने लगते। अब वह निरर्थक बातें करने लगा। कोठरी में कभी पागलों की तरह दौड़ता, कभी कोठरी के वीचोंबीच खड़ा हो भेड़िये की आवाज बनाकर गुर्राता, कभी चीखता, रोता, विलाप करता। फिर धीरे-धीरे बुदबुदाता, 'मेरे दिल की रानी, प्यारी!' कभी वह, इसके बाद अचानक उछल पड़ता। शाप की मुद्रा में चिल्लाता, 'तुम मुझे फांसी पर चढ़ाओगे। चढ़ाओ। मैं तुम्हें मार डालूंगा, समझे! चारों ओर आग लगा दूंगा।'

एक रात पहरेदार उसे लेने आये।

अपने कपड़े पहनते हुए सिगनको ने पूछा, 'मुझे कौन फांसी पर चढ़ाएगा? वही नया आदमी? उसे फांसी लगाना भी नहीं आता होगा?'

'तुम चिंता न करो।'

'वाह, मैं चिंता नहीं करूं। अरे इसकी चिंता मुझे ही होगी। श्रीमानजी, फांसी पर मुझे चढ़ना है, आपको नहीं!' और वह अट्टहास कर उठा।

इस बीच काली गाड़ी पर नजर पड़ते ही उसके पांव कांपने लगे। **'अलविदा', 'बस चुप रहो। कुछ मत कहो।'**

उस दिन गुरुवार था। आतंकवादियों से कहा गया था कि आज उनके संबं उनसे मिलने आएंगे। तान्या कोवालशु का कोई निकट संबंधी नहीं था। यही हाल मुस्या और वर्नर का था। केवल सेरेगी गोलोविन और वसीली काशिरिन को अपने अपने माता-पिता से मिलना था। वे दोनों अपने-अपने माता-पिता से मिलना नहीं चाहते थे—भय, वेदना से उनका हृदय डूबा जा रहा था, पर वे अंतिम भेंट से इनकार भी नहीं कर सकते थे!

सेरेगी गोवोलिन को ज्यादा पीड़ा हो रही थी। वह अपने माता-पिता को बेहद चाहता था। उससे अंतिम भेंट के दौरान उसके माता-पिता पर क्या बीतेगी? यह सोचकर ही सेरेगी परेशान था। उसने सोच लिया था कि वह अंतिम भेंट के समय माता-पिता के साथ कैसा व्यवहार करेगा। उसने तय किया था कि वह पिता के हाथ चूमेगा और पूछेगा, 'आप कैसे हैं पिताजी?'

पर भेंट के ऐन वक्त सारी योजना धरी-की-धरी रह गयी।

कमरे में सबसे पहले उसके पिता आये, फिर मां!

उसके पिता सेवा-निवृत्त कर्नल थे। उन्होंने भी, घर में, बेटे से अंतिम भेंट के दौरान कही जानेवाली बातों का बार-बार पूर्वाभ्यास किया था। उन्होंने पत्नी से कहा था, 'सेरेगी से मिलते ही

सबसे पहले तुम उसे चूमना। सबसे महत्त्वपूर्ण बात यही है। बाद में चाहो तो बात कर सकती हो।' यह कहते-कहते कर्नल बिलख-बिलखकर रो उठे थे। वे अपने मन को पक्का करते रहे थे।

सेरेगी ने पिता को देखा। उनका चेहरा जर्द था। तभी उनके पीछे खड़ी मां ने आकर सेरेगी को चूम लिया।

'से . . . से . . . से . . . से . . . रे . . .' मां बेटे का नाम पूरी तरह पुकार नहीं पायी।

'मां' सेरेगी का भी गला रुंध गया।

'उसे इस तरह यातना मत दो, मत दो।' कर्नल ने भर्राये स्वरों में कहा।

बेटे से अंतिम भेंट उन्हें काफी यंत्रणादायक सिद्ध हो रही थी।

कमरे में थोड़ी देर चुप्पी रही। फिर कर्नल ने कहा, 'बेटा, मैं तुम्हें आशीर्वाद देता हूं। तुम साहस के साथ मौत को गले लगाओ।'

वसीली काशिरिन से मिलने केवल उसकी मां आयी थी। वसीली का पिता एक धनी व्यापारी था, पर उसने अपने बेटे से अंतिम समय मिलने से इनकार कर दिया था।

मां से मिलते वक्त वसीली कांप गया। वह उससे ज्यादा देर बातें न कर पाया। उसकी मां ने कहा, 'बेटा, तुम्हें किसी को नुकसान नहीं पहुंचाना था . . .'

'मां . . . !' वसीली चीख उठा था, 'जानवर भी ऐसा व्यवहार नहीं करते . . .।' और वह फफककर रो पड़ा। मां के आंसुओं का बांध टूट गया।

यही नहीं, वसीली से विदा लेने के बाद, ज्यों-ज्यों वह कारागार से दूर होती गयी, उसकी रुलाई बढ़ती ही गयी।

समय भाग रहा है

जिस किले में आतंकवादी कैद थे, वहां एक पुरानी घड़ी थी। यह घड़ी न केवल घंटे, आधे घंटे में, बल्कि पंद्रह-पंद्रह मिनट में भी गजर बजाया करती थी। दिन में तो गजर की आवाज शोरगुल में डूब जाती, लेकिन रात को उसकी आवाज पूरे किले में तैरा करती।

इस किले में खतरनाक बंदी ही रखे जाते थे। इसलिए वहां के अलग नियम-उपनियम थे।

इस समय किले में सन्नाटा छाया हुआ था। बस, रह-रहकर घड़ी के गजर की आवाज उसे तोड़ती रहती। बार-बार

चश्मा पहननेवाले लड़के-लड़कियों को देखकर हंसिए नहीं, क्योंकि ऐसे बच्चे पढ़ने-लिखने और अपने जीवन में कहीं अधिक सफल होते देखे गये हैं। पश्चिमी जरमनी में एक प्रोफेसर ने एक सर्वेक्षण में पाया है कि चश्मा लगानेवाले लड़के-लड़कियों में से आधे से अधिक अपनी कक्षाओं में सर्वोच्च रहे हैं। ऐसे अधिकांश बच्चों के मां-बाप डॉक्टर, वकील, अध्यापक आदि बुद्धिजीवी वर्ग के हैं। इस सर्वेक्षण में एक और दिलचस्प बात सामने आयी है कि ऐसे बच्चों का कद अन्य बच्चों की अपेक्षा अधिक बढ़ता है।

टूटते सन्नाटे के बीच मौत की प्रतीक्षा में थे सात व्यक्ति—पांच पुरुष, दो स्त्रियां।

अपने-अपने तरीके से वे मौत से गले लगने के लिए तैयार हो चुके थे।

मृत्यु-जैसी कोई बात नहीं

तान्या कोवालशुक ने जिंदगीभर औरों का हित ही सोचा था। इस समय भी वह अपनी मृत्यु के बारे में नहीं सोच रही थी। उसके दिमाग में कभी सेरेगी गोवोलिन का, कभी मुस्या का, कभी औरों का ख्याल आता।

अदालत में तो उसने काफी धैर्य रखा था, पर काल-कोठरी में आते ही वह फूट-फूटकर रो उठी थी, अपने लिए नहीं, ममताभरी वृद्धाओं की तरह औरों के लिए।

उसे मुस्या से गहरी सहानुभूति थी। दुबली-पतली लड़की, जिसकी एक अंगुली में एक विचित्र अंगूठी थी। अंगूठी पर एक नरमुंड और उसके नीचे तिरछे क्रॉस की तरह दो हड्डियां बनी थीं। तान्या को वह अंगूठी मौत का पैगाम लगी थी। उसने मुस्या से वह अंगूठी मांगी भी थी, ताकि वह मौत के अभिशाप से मुक्त हो जाए। पर मुस्या ने इनकार कर दिया था। अंगूठी उसके लिए सम्मान का प्रतीक थी। वह सोच रही थी कि आतंकवादी एक दिन तान्या को भी ऐसी अंगूठी भेंट करेंगे। तान्या, मुस्या का ख्यालकर दुःखी हो रही थी।

उधर मुस्या प्रसन्न थी। उसे लग रहा था—जैसे फांसी पर चढ़कर वह सदा-सदा के लिए अमर हो जाएगी।

'पर क्या यह संभव है!' मुस्या सोचा, 'क्या लोग उसके-जैसी एक साध रण लड़की की मौत पर आंसू बहाएं

सहसा वह आनंद से भर उठी। फां पर चढ़कर वह अवश्य अमर हो जाएगी सदा याद रखी जाएगी। उसे याद आय उसने वर्नर से कहा था, 'वर्नर, मौत से क डरना! मैं तो चाहती हूं कि पिस्तौल ले अकेले फौजियों से जूझ पड़ूं। मैं उनमें किसी एक को मार पाऊं, यह महत्त्व नहीं है। महत्त्वपूर्ण यह है कि एक अके व्यक्ति ने हजारों से जूझने की कोशिश की मौत में भी उसकी जीत ही होगी। मौ जैसी कोई चीज ही नहीं है, वर्नर!'

अतीत को याद करते-करते मुस सो गयी।

मौत की तरह, जिंदगी भी सेरेगी गोवोलिन भी अपनी कोठरी बैठा-बैठा अतीत की गलियों में भटक था। एकाएक उसे लगा—जैसे उसके हा पैर सुन्न हो रहे हैं। वह घबरा उठ उसने हाथ उठाया। यह जानकर संतोष हुआ कि वह हाथ उठा सकता है वह उठ खड़ा हुआ। अब जिंदगी और मौ के बीच कुछ घंटों का फासला था। मौत से दुःख नहीं था। दुःख इस बात था, कि अब उसे जिंदगी और मौत, नजर आ रही थीं। मौत और जिंदगी बीच जो रहस्यमय परदा था, वह गया था।

उस पुराने किले में कैद हर व्यक्ति अपने-अपने ढंग पर मौत की घड़ियां गिन रहा था। वसीली काशिरिन प्रतिपल आतंक के दलदल में धंस रहा था। मृत्यु-भय ने उसे पूरी तरह दबोच लिया था। इस समय उसे अपना बचपन, अपने माता-पिता याद आ रहे थे। बीच-बीच में वह अपने फांसी पर चढ़ाये जानेवाले दृश्य की भी कल्पना कर लिया करता। उसने प्रार्थना करने की कोशिश भी की। कभी-कभी उसे लगता—जैसे वह पागल हो जाएगा। बाल नोच डालेगा। कपड़े फाड़ डालेगा। पर ऐसा कुछ नहीं किया उसने!

सहसा उसका यंत्रणादायक एकाकीपन टूटा। उसकी कोठरी में एक साथ कई व्यक्तियों ने प्रवेश किया। वसीली भयभीत बच्चे की तरह दुबक गया।

टूटती दीवारें

वर्नर जिंदगी और मौत की लड़ाई से ऊब चुका था। एक समय था, जब वह जिंदगी को बेहद प्यार करता था, पर अब? उसने मौत को चुपचाप, धैर्य से स्वीकार कर लिया था। वह शांति के साथ, बिना भय व्यक्त किये मरना चाहता था। इसी तरह वह मृत्यु-दंड के प्रति उपेक्षा व्यक्त कर सकता था।

इस समय उसके मन में भय की जगह, एक आदिम उत्साह था। प्रसन्नता थी। उसे लगा—जैसे उसकी कोठरी की दीवारें टूट गयी हैं। वह मुक्त है।

वह भाषण देने की मुद्रा में खड़ा हो गया। अदृश्य साथियों को संबोधित करते हुए उसने कहा, 'प्यारे साथियो'...'

फुटबाल के एक खिलाड़ी ने गेंद फेंकने के अपने अच्छे अभ्यास को देखते हुए उसे अपनी जीविका का साधन बनाने की बात सोची। उसने सोचा कि उसका सबसे अच्छा उपयोग किसी क्लब में हो सकता है अतः उसने जरमनी के एक समाचार-पत्र में विज्ञापन दिया—'बोतल को फेंकनेवाले युवक को एक स्थायी नौकरी चाहिए। ३० मीटर दूर तक बिलकुल ठीक निशाने पर बोतल फेंकने की गारंटी है।'

यही वाक्य उसने कई बार दोहराया और फिर उसकी रुलाई फूट पड़ी।

फांसी के तख्ते की ओर

अब वे पांचों एक जगह एकत्र थे। बाहर काली गाड़ी इंतजार करती खड़ी थी।

एक-दूसरे को देखकर उन्हें संतोष हुआ। उनकी हिम्मत भी बढ़ी। केवल वसीली शुरू-शुरू में घबराया हुआ लग रहा था। लेकिन वर्नर ने उससे बात करनी शुरू कर दीं। मुस्या भी उनके पास आ गयी। तान्या कभी-कभी उदास हो जाती, अपने लिए नहीं, औरों के लिए।

काली गाड़ी में उनकी मुलाकात ईवान और सिगनको से हुई।

ईवान अभी भी वही वाक्य दोहरा रहा था, 'मुझे फांसी पर क्यों लटका रहे हो? मैं मरना नहीं चाहता।'

सिगनको ने उसकी ओर उपेक्षा से देखा। उसने वर्नर से कहा, 'मौत से कैसा डर! कैसी शर्म! केवल कुत्ते मौत से

डरकर पूंछ हिलाया करते हैं।'

तभी काली गाड़ी चल पड़ी।

उस ओर, जहां मौत उनके इंतजार में बाहें फैलाये खड़ी थी।

फांसी का फंदा

वे सब फांसी के तख्तों के पास खड़े थे।

वर्नर ने लालटेनों की रोशनी में देखा, सिगनको का चेहरा पीला पड़ गया है।

तभी तान्या ने कहा, 'हम सब आखिरी बार मिल लें।'

इसी बीच अधिकारी आ गया था। उसने कहा, 'महाशयो, क्या आपको फांसी की सजा दोबारा सुनाना जरूरी है!'

'नहीं, नहीं रहने दो।' वर्नर ने कहा।

अधिकारी खुश हो गया। बोला, 'हमारे पास समय नहीं है। आप सब दो-दो कर फांसी पर चढ़ाये जाएंगे। कौन किसके साथ फांसी पर चढ़ेगा, यह स्वयं तय कर लें। मुझे कोई आपत्ति नहीं।'

वर्नर ने भयभीत ईवान की ओर देखा। फिर बोला, 'मैं ईवान के साथ फांसी पर चढ़ूंगा। सेरेगी, तुम वसीली के साथ जाओ।'

'आओ, मुस्या, हम-तुम साथ-साथ फांसी पर चढ़ें।' तान्या ने कहा।

> **दैव तुम्हारे धैर्य पर रुष्ट हो आता है, वह उस पर दृष्टि रखता है, और तुम्हें भी रखनी चाहिए, कि अपराधी बचकर भागने न पाए। ज्यों-ज्यों अपराध बढ़ते जाएं, न्याय को उग्र होते जाना चाहिए।**
>
> **—बैन जॉनसन**

फिर सबने एक दूसरे को अंतिम बार चूमकर विदा दी।

सहसा, सिगनको ने वर्नर से अनुनय-पूर्ण स्वरों में कहा, 'मेरी आखिरी इच्छा है। आप मेरे साथ फांसी पर चढ़ें।'

वर्नर ने ईवान की ओर देखा, फिर कुछ क्षण सोचकर मुस्या से बोला, 'तुम तान्या के साथ नहीं, इनके साथ फांसी पर चढ़ना।'

तान्या का स्वर भर आया, 'मैं अकेले चढ़ूं . . नहीं-नहीं'

सिगनको ने लपककर मुस्या का हाथ पकड़ लिया। फिर तान्या से बोला, 'तुम देवी हो। शुद्ध आत्मा! अकेली फांसी पर चढ़ सकती हो। मैं खूनी, डाकू, पर इस लड़की के साथ मरूंगा तो मुझे लगेगा-जैसे मैं एक अबोध बच्चा हूं। समझीं।'

'ठीक है, ठीक है!' तान्या ने उदास स्वरों में कहा।

बारी-बारी से वे सभी फांसी पर चढ़ा दिये गये।

अंत में अकेली बच रही तान्या। वह बुदबुदायी, 'फौजियो, मेरे सभी साथी फांसी पर चढ़ा दिये गये हैं। मैं अकेली बच रही हूं . . अकेली!'

समुद्र की सतह पर सूरज उग आया था।

पहरेदारों ने शवों को ताबूतों में रखा, गाड़ी में चढ़ाया। गाड़ी उसी सड़क पर फिर लौट पड़ी। इस बार भी उसके सवार वही थे, पर अब वे जिंदा नहीं, मृत थे!

अपनी ब
दिये प्रश
अंक में
प्रश्नों के
ज्ञान को
में साधा

१.
छहों फल
रंगना है
के रंग ए
कितने र
क. ३,

२. मू
क. ज्वाल
रण्य।

३.
पश्चिम)
दिनों में

४.
प्रयोग भा
हुआ ?

५.र
एशिया
साहित्य

६.
का पहला
क. डॉ.
घोष, ग.

७.
चर्चा किस

अगस्त,

बुद्धि विलास

अपनी बुद्धि पर जोर डालिए और यहां दिये प्रश्नों के उत्तर खोजिए। उत्तर इसी अंक में कहीं मिल जाएंगे। यदि आप सारे प्रश्नों के उत्तर दे सकें तो अपने सामान्य ज्ञान को श्रेष्ठ समझिए, आधे से अधिक में साधारण और आधे से कम में अल्प।

——संपादक

१. **लकड़ी** के एक घनाकार टुकड़े के छहों फलकों को विभिन्न रंगों से इस प्रकार रंगना है कि आपस में मिलनेवाले दो फलकों के रंग एक-से न हों। इसके लिए कम से कम कितने रंगों की आवश्यकता होगी? क. ३, ख. ४, ग. ५।

२. **मृगथूनी** क्या है, संक्षेप में बताइए? क. ज्वालामुखी, ख. पर्वत-चोटी, ग. अभयारण्य।

३. **हिमालय** को लंबाई में (पूर्व से पश्चिम) पहली बार किस दल ने, कितने दिनों में और कब पार किया?

४. **इलेक्ट्रानिक** वोटिंग मशीन का प्रयोग भारत में सबसे पहले कब और कहां हुआ?

५. **रवीन्द्रनाथ** ठाकुर के अतिरिक्त एशिया के अन्य कितने व्यक्तियों को साहित्य का नोबल पुरस्कार मिला है?

६. **स्वतंत्र** भारत में पश्चिम बंगाल का पहला मुख्य मंत्री कौन बना था?—क. डॉ. विधानचंद्र राय, ख. प्रफुल्लचंद्र घोष, ग. पी. सी. सेन, घ. अजय मुखर्जी।

७. **पिछले** दिनों निम्नलिखित की चर्चा किस सिलसिले में हुई? ये क्या हैं?—क. पोर्ट स्टैनली, ख. 'शेफील्ड', ग. 'इनविसिबल'।

८. **भारत** की महिलाओं में श्रमजीवी (आजीविका के लिए काम करनेवाली) महिलाओं का प्रतिशत कितना है?

९. **'डी डब्ल्यू एल-८०२३'** क्या है? संक्षेप में बताइए।

१०. **भारतीय** सिनेमा की प्रगति में महत्त्वपूर्ण योगदान के लिए इस वर्ष का दादासाहब फालके पुरस्कार किसे मिला है?

११. **वर्तमान** लोकसभा में किस वर्ग के सदस्य सर्वाधिक हैं? उसके बाद किनका नंबर आता है?

१२. **नीचे** दिये गये चित्र को ध्यान से देखिए और बताइए यह क्या है—

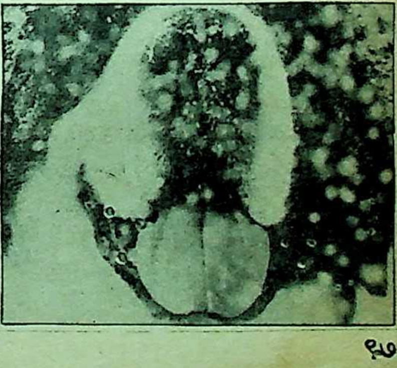

तनाव से मुक्ति

डॉ. सतीश मलिक

एकांत त्यागें

क. ख., रामपुर : मेरी उम्र अट्ठारह वर्ष है, कोई गलत आदत व बुरी संगति नहीं, फिर भी घर का हर सदस्य डांटता रहता है, तथा नीचा दिखाना चाहता है। कोई भी मुझे नहीं चाहता, इसलिए एकांत में बैठा रहता हूं। डॉक्टर साहब, कोई ऐसा उपाय बताएं, जिससे मैं जीवन खुशहाल बना सकूं।

आपके परिवार के सदस्य आपको अब भी बच्चे की तरह ही देखते हैं, जबकि आपके मन में स्वतंत्र रहने की प्रबल इच्छा है, इसीलिए यह तनाव की स्थिति बनी हुई है। आपके परिवार के सदस्यों को किशोरावस्था के मनोविज्ञान से अवगत कराना जरूरी है। अधिक एकांत में न रहें।

एक दूसरे को समझें

अ. ब. स., मेरठ : मेरे विवाह को अभी चार वर्ष हुए हैं। पत्नी हर समय जिद करती है कि मैं घर से अलग हो जाऊं। घर में मां, बाप व भाई हैं, जो मुझ पर ही निर्भर हैं। मैं पत्नी को धमकाता हूं तो वह आत्महत्या की धमकी देती है। डरता हूं, कहीं सचमुच उसने आत्महत्या कर ली तो क्या होगा? डॉ. साहब तलाक के सिवा और भी कोई रास्ता है? बेहद परेशान हूं, कृपया बताएं।

डराने-धमकाने के बदले आपको एक-दूसरे को समझने का प्रयत्न करना चाहिए। प्रेम और सहानुभूति तथा घर की दयनीय दशा से आपकी पत्नी के दृष्टिकोण में अंतर आ सकता है। केवल 'पॉजिटिव एप्रोच' से ही इस समस्या को सुलझाया जा सकता है।

हंसते-खेलते कैसे जीएं

अ. क. बंका, मुजफ्फरपुर : मैं २२ वर्षीय छात्र हूं, लंबाई सामान्य है। हाथ व छाती इस अनुपात में पतले हैं। बहुत चिंतित-सा रहता हूं। गुस्सा जल्दी आता है और तब आपे से बाहर होने लगता हूं। भविष्य अंधकारमय लगता है—जीवन को हंसते-खेलते जीने का कोई उपाय बताइए?

आपका अत्यधिक चिंतित रहना किशोरावस्था से ही आरंभ हो गया होगा। ऐसे में केवल सोचने व समस्याओं से भाग खड़े होने की प्रवृत्ति-सी हो जाती है। वास्तविकता से दूर भागने के कारण जब यथार्थ से सामना होता है, तब अत्यधिक झल्लाहट व गुस्सा आता है। स्वयं को वास्तविकता के करीब लाइए। सामाजिकता एवं दुनियादारी को केवल दुष्चक्र समझकर पूरे भविष्य को अंधकारमय मानना व्यर्थ है। हंसते-खेलते जीवन बिताने का कोई

डॉ. सतीश मलिक

बना-बनाया नुस्खा नहीं मिलता। अपने ही मन की उलझनें उलझाती रहती हैं। दृढ़ता से वास्तविकता का सामना कीजिए, कुछ भी कठिन नहीं लगेगा।

गला कौन दबाता है?

अ. ब. स., भागलपुर : मेरी शादी पिछले वर्ष हुई। प्रथम रात्रि से ही पत्नी को चिल्लाने का दौरा पड़ने लगा, पूछने पर वह कहती है, 'कोई व्यक्ति स्वप्न में गला दबाने का प्रयत्न करता है।' ऐसा केवल तभी होता है, जब मैं कहीं दौरे पर जाता हूं। डॉक्टर साहब, यह क्या है?

विवाह का प्रारंभिक समय स्त्री के लिए तनावपूर्ण होता है। नयी परिस्थितियां, नया परिवार। ऐसे में यदि उसमें असुरक्षा की भावना आ जाए तब समस्या बढ़ जाती है। स्वप्न में गला दबानेवाली स्थिति आपकी पत्नी की असुरक्षा की प्रवृत्ति की ही परिचायक है। यदि उसे सबसे प्रेम व सहानुभूति मिलेगी, तो वह ठीक हो जाएगी। आप भी यथासंभव कुछ समय बाहर 'टूर' पर न जाएं, ताकि आपकी पत्नी स्वयं को सुरक्षित पाकर आत्मविश्वास से युक्त हो सके।

चिड़चिड़ापन कैसे दूर हो?

ज्योति सागर, श्रीनगर : चौबीस वर्षीया विवाहिता छात्रा हूं। दो वर्ष के बच्चे की मां भी। तीन बार जल्दी-जल्दी गर्भपात कराना पड़ा, फिर आई. यू. डी. लगवा लिया। मासिक धर्म में रक्त अल्प मात्रा में आता है, जो मितलाना, उल्टियां व पेट-दर्द रहता है। दिन ब दिन कमजोरी बढ़ रही है। पढ़ने में मन नहीं लगता। चिड़चिड़ापन व मानसिक तनाव रहता है।

आपको गर्भपात कराने से तथा आई. यू. डी. लगवाने के बाद 'क्रॉनिक इन्फेक्शन' हो गया है, इसके लिए आपको प्रसूति-विशेषज्ञ को दिखाना चाहिए। गर्भ-निरोधक यदि आपके पति प्रयोग करें, तो बेहतर है। आपकी अरुचि चिड़चिड़ापन, तनाव आदि स्वास्थ्य गिरने के कारण है। निरोधक निकलवा देने पर पुनः गर्भवती होने की चिंता भी आप पर हावी है, इसके कारण भी आपको तनाव व डिप्रेशन हो रहा है।

अल्पबुद्धि कैसे?

प. च. पटनायक, बस्तर : मेरी सात वर्ष की छोटी बहन केवल मम्मी, पापा, पत्ता,

इस स्तंभ के अंतर्गत अपनी समस्याएं भेजते समय अपने व्यक्तिगत जीवन का पूरा परिचय, आयु, पद, आय एवं पते का उल्लेख कृपया अवश्य करें। ——संपादक

पानी आदि ही बोल पाती है। अ. ब. बोल लेती है, 'फ' इत्यादि नहीं बोल पाती। डॉक्टरों को दिखाया, पर निराशा ही हाथ लगी।

डॉक्टर साहब, निदान के लिए मार्ग-दर्शन करें। हम छह भाई व एक बहन में क्रमवार दो या ढाई साल का अंतर है।

आप सात भाई बहनों में दो-ढाई वर्ष का अंतर है। इससे प्रतीत होता है कि आपकी छोटी बहन जब पैदा हुई, तब आपकी माताजी की उम्र तीस-पैंतीस वर्ष रही होगी। इस आयु में मां बनने से भी अल्प-बुद्धि बच्चे का जन्म हो सकता है। ऐसी स्थिति में मां को पौष्टिक आहा की कमी, तीन माह में कोई बीमारी, क दवाइयों का उपयोग, जन्म के समय बच्चे की दिमागी चोट या लंबी अवधि तक बुखा आदि आने से बुद्धि अल्प विकसित रहती है। किसी भी दवाई द्वारा बुद्धि का विका नहीं हो सकता, घरेलू काम-काज सिखाएं। धैर्य से काम लें, क्योंकि वह हर काम के सीखने में बहुत समय लगाएगी।

अपनत्व

"क्यों कमला, तुम्हारी किरायेदारिन, मालती कहां है? आज, दिखायी नहीं दे रही?" रेखा ने पूछा।

"उसे मैंने निकाल दिया," कमला ने बुरा-सा मुंह बनाकर कहा।

"लेकिन क्यों? तुम तो कहती थीं कि वह तुम्हारे बच्चे को अपना बच्चा समझकर प्यार करती है, तुम्हारे घर को अपना घर समझ उसकी देखभाल करती है। फिर भला . . .?"

"अपनत्व की भावना के कारण ही उसे निकालना पड़ा।" कमला बोली।

"मैं तुम्हारा मतलब नहीं समझी?" रेखा ने चकित होकर कहा।

"दरअसल, बात यह हुई कि वह मेरे पति को अपना पति समझने लगी थी . . .।"

—मोहिनी जोशी

उसके बिना नहीं

ल., भोपाल : मैं बैंक में २६ वर्ष का अविवाहित क्लर्क हूं। १० माह पूर्व हमारे बैंक में एक विवाहित युवती, जो एक बच्चे की मां है, आयी और मैं उससे प्रेम करने लगा। अब मैं उसके बिना नहीं रह सकता। रात-दिन उसी का हंसता चेहरा दिखायी देता है। एक बार दो दिन उसने मुझसे बात नहीं की तो मैं आत्महत्या तक पर उतारू था। उसे मेरे सच्चे प्यार के बारे में मालूम है, पर क्या करूं? क्या वह मुझे अगले जीवन में मिल सकती है।

आपका प्रेम वास्तव में आपके (मदर फिक्सेशन) की वजह है। यह प्रेम यदि विवाह में परिणत हो गया, तो आपकी प्रेमिका की जिंदगी तो खराब होगी ही, आप भी मेरे विचार में सुखी नहीं रहेंगे। आप अपने प्रेम को अपनी व्यक्तिगत समस्या व द्वंद्वपूर्ण मानसिक स्थिति की उपज समझिए। आप, हो सके तो अपनी वहां से बदली करा लें। अपने मन को नियंत्रण में रख, उसे समझाएं। इस विजय से आपका मनोबल बढ़ेगा।

उपन्यास : ३

राष्ट्रपति जनता के कटघरे में

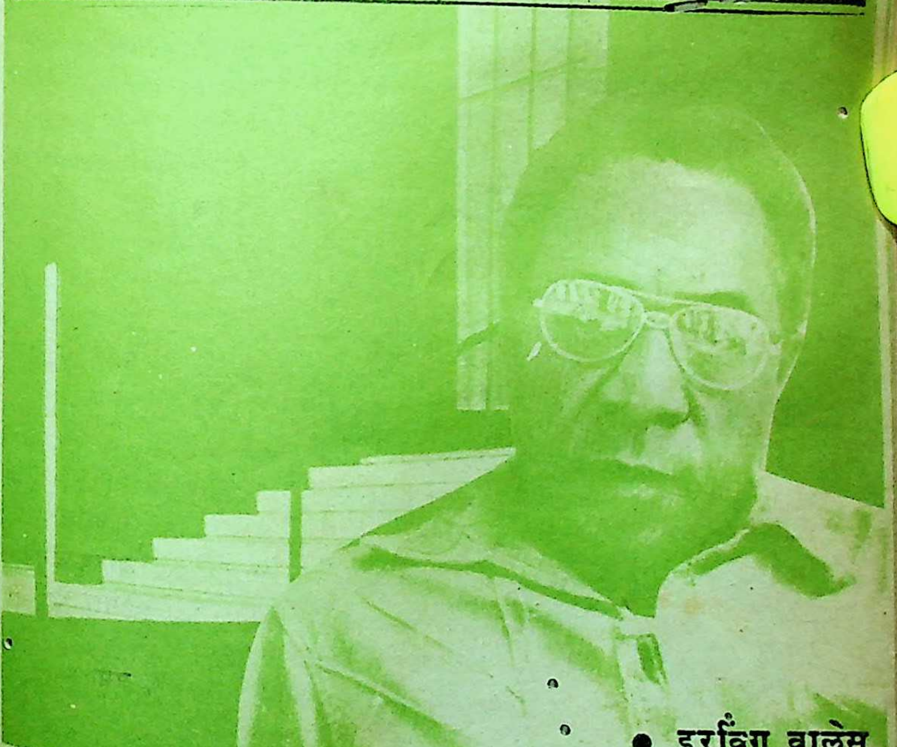

• इरविंग वालेस

अचानक ही यह हादसा हुआ था। एक इमारत के ढह जाने से राष्ट्रपति टी. सी. की मृत्यु हो गयी थी और उपराष्ट्रपति की भी कुछ देर अस्पताल में रहकर मृत्यु हो गयी थी। सर्वोच्च सत्ता में तीसरे स्थान पर था, एक नीग्रो—सीनेटर डगलस डिलमैन। राष्ट्रपति पद का उत्तराधिकारी वही था। अमरीकी संविधान के तहत उसे ही राष्ट्रपति बनाया जाना था।

अमरीका के इतिहास में यह एक अभूतपूर्व घटना थी। इसकी प्रतिक्रिया भी अलग-अलग लोगों पर अलग-अलग तरह से हुई। अश्वेत नीग्रो प्रसन्न थे कि उनका अपना आदमी राष्ट्रपति बना है और अब देश में उनका महत्त्व बढ़ेगा। श्वेत अमरीकी खिन्न थे। यह तथ्य उनके लिए कष्टकारी था कि एक काला नीग्रो उन पर शासन करेगा। राज्य का प्रमुख सचिव ईटन और गवर्नर टेली ऐसे ही श्वेत अमरीकी थे, जिन्हें एक नीग्रो का राष्ट्रपति होना पसंद नहीं आया था।

एक सुखद आश्चर्य

व्हाइट हाउस के कर्मचारी अपने भीतर यह भ्रम पाल बैठे थे कि नीग्रो राष्ट्रपति अब व्हाइट हाउस में श्वेत कर्मचारी नहीं रखेगा। वे अपने भविष्य के प्रति चिंतित थे। भूतपूर्व राष्ट्रपति टी. सी. की निजी सचिव कुमारी एड्न फास्टर भी ऐसे ही लोगों में थी। उसने अपना त्यागपत्र लिख लिया था और किसी भी समय नवनियुक्त राष्ट्रपति को थमाने ही वाली थी। लेकिन जब डिलमैन ने उससे उसी पद पर बने रहने का अनुरोध किया, तब उसे सुखद आश्चर्य हुआ और डिलमैन के प्रति श्रद्धा भी।

श्वेत अमरीकी अधिकारियों की धारणा थी कि डिलमैन हीन-भावना से ग्रस्त एक साधारण नीग्रो है और अपनी मूर्खता के कारण वह शासन चलाने के लिए अक्षम है।

पग-पग पर अपमान

जैक मिलर एक पत्र का संचालक था और सीनेट में प्रतिनिधि भी। अपने अखबार के माध्यम से वह नवनियुक्त राष्ट्रपति के व्यक्तित्व पर तरह-तरह के आरोप लगाया करता था और एक नीग्रो होने की वजह से उसके लिए अत्यंत अपमानभरी भाषा का भी प्रयोग करता था।

जैक मिलर ने ही प्रमुख सचिव ईटन और गवर्नर टेली को राष्ट्रपति डिलमैन के खिलाफ भड़काया था। उसने ईटन के मन में यह बात बिठाने का प्रयत्न किया कि वास्तव में टी. सी. का सही उत्तराधिकारी ईटन है और उसे ही सत्ता मिलनी भी चाहिए थी।

इस तरह के अपमान उसे पग-पग पर झेलने पड़ रहे थे। श्वेत लोग उसे मन से स्वीकार नहीं कर पा रहे थे। लेकिन उत्तराधिकार अधिनियम के अनुसार वह राष्ट्रपति पद का सही दावेदार था, इसलिए श्वेत अमरीकी मजबूर थे। सारे

संकट की जड़ यह उत्तराधिकार अधिनियम ही था। क्यों न इस अधिनियम को ही बदलवा दिया जाए ! परिवर्तन भी इस ढब से हो कि भविष्य में कोई काला नीग्रो अमरीका-जैसे महान राष्ट्र का सर्वोच्च पद ग्रहण न कर सके। यह विचार श्वेत अधिकारियों के मन को बेचैन किये था ! अंततः अधिनियम में संशोधन का बिल राष्ट्रपति डिलमैन के समक्ष प्रस्तुत किया गया।

इर्विंग वालेस अमरीका के एक प्रख्यात उपन्यासकार हैं। उनकी कृतियां न केवल रोचक, वरन विचारोत्तेजक भी होती हैं। अपनी कृतियों में वे एक ऐसे भयावह भविष्य की कल्पना किया करते हैं, जिसकी जड़ें वर्तमान में कहीं गहरे जमी हुई हैं । उनकी बहुचर्चित कृति 'आर डाक्यूमेंट' का सार 'कादम्बिनी' के पाठक पढ़ चुके हैं । यहां प्रस्तुत है, उनकी एक प्रसिद्ध कृति 'द् मैन' का सार। प्रस्तोता : योगेन्द्र दत्त शर्मा।

डिलमैन इस बिल में निहित श्वेत अमरीकियों के षड़यंत्र को समझ गया था और बिल पर हस्ताक्षर करते हुए वह हिचक रहा था। उसकी हिचकिचाहट देखकर ईटन और टेली सतर्क हो गये। अंततः क्षुब्ध डिलमैन को अनचाहे ही हस्ताक्षर करने पड़े।

इसके बाद आया अल्पसंख्यक पुनर्वास कार्यक्रम का बिल। डिलमैन ने पाया कि इस बिल में नीग्रो नागरिकों के अधिकारों को अनदेखा किया गया है। वह इससे कतई संतुष्ट नहीं था। लेकिन वह अपने सहयोगियों को अप्रसन्न भी नहीं कर सकता था। उसने बिल अपने पास रख लिया।

सामान्यतः यदि कोई बिल राष्ट्रपति के पास दस दिन तक पड़ा रह जाए, तो उसे पारित मान लिया जाता था, भले ही राष्ट्रपति ने उस पर हस्ताक्षर न किये हों। अल्पसंख्यक पुनर्वास कार्यक्रम बिल भी पारित मान लिया गया। लेकिन डिलमैन मन ही मन क्षुब्ध था।

काले पिता की गोरी पुत्री

डिलमैन विधुर था। सात-आठ वर्ष पूर्व उसकी पत्नी का निधन हो गया था और वह एकाकी जीवन व्यतीत कर रहा था। उसकी पत्नी का रंग गोरा था और इसी वजह से उसकी पुत्री मिंडी का रंग भी गोरा था। अश्वेत नीग्रो होने के अभिशाप से मुक्ति पाने के लिए वह अपने माता-पिता से अलग बहुत दूर रहती थी। उसने नाम बदल लिया था और श्वेत अमरीकियों के बीच श्वेत की हैसियत से रहती थी। पिता डिलमैन से उसका संपर्क बहुत गुप्त था। डिलमैन का पुत्र जूलियन अपने पिता की तरह काला नीग्रो था और ट्रेफोर्ड के नीग्रो-विश्वविद्यालय में पढ़ता था।

अपने पुत्र को लेकर डिलमैन चिंतित था; क्योंकि ट्रेफोर्ड विश्वविद्यालय के

चांसलर ने पत्र में शिकायत की थी कि जूलियन पढ़ाई से विरक्त हो गया है और इतर गतिविधियों में संलग्न है।

सीनेटर की हैसियत से डिलमैन जिस मकान में रहता था, वह उसने पांच वर्ष पहले खरीदा था। मकान में अन्य किरायेदारों के अतिरिक्त कुमारी वांडा गिब्सन भी थी। वांडा अपने घर से बहुत दूर अकेली रह रही थी। अपने भाई-बहनों को पढ़ाने-लिखाने की जिम्मेदारी से वह निपट चुकी थी। डिलमैन से उसे प्रेम था और डिलमैन भी उसे चाहता था। दोनों के बीच पवित्र प्रेम था। वांडा डिलमैन से विवाह करना चाहती थी, किंतु संकोचवश कह नहीं सकी थी। वह सुंदर थी। उसका रंग भी गोरा था। डिलमैन उसे चाहता भी था, किंतु विवाह का प्रस्ताव करने में हिचकिचाता था। दरअसल डिलमैन को डर था कि वांडा गिब्सन को उसके गोरे रंग के कारण श्वेत समझकर श्वेत अमरीकी कोई हंगामा खड़ा न कर दें। इसीलिए वह वांडा को मूक प्रेम करता रहा और विवाह के बारे में कभी कुछ सोचा ही नहीं। व्हाइट हाउस में वह अकेला ही गया।

वरिष्ठ सीनेटर वाटसन की पुत्री कुमारी सेली वाटसन काफी महत्त्वाकांक्षी महिला थी। चरित्र के मामले में भी वह कमजोर थी। राज्य का प्रमुख सचिव ईटन उसके पिता का मित्र था और आयु में भी उससे कहीं ज्यादा प्रौढ़ था। लेकिन आयु के इतने बड़े अंतर के बावजूद सेली वाटसन और ईडन में अनैतिक प्रेम संबंध थे।

सेली वाटसन ने पाया कि राष्ट्रपति डिलमैन चूंकि विधुर है, अतः उसे पत्नी की अनुपस्थिति में एक सामाजिक सचिव की आवश्यकता पड़ेगी। ईटन की सिफारिश पर राष्ट्रपति डिलमैन ने उसे अपना सामाजिक सचिव नियुक्त कर लिया। राष्ट्रपति डिलमैन के कानों तक कई बार यह खबर भी पहुंची कि ईटन और सेली वाटसन के बीच अनैतिक संबंध हैं। मगर उसने इन खबरों पर विशेष ध्यान नहीं दिया।

अश्वेत होने का दुखद अहसास

पर डिलमैन ने इन बातों में कोई दिलचस्पी नहीं ली। वास्तव में डिलमैन दब्बू किस्म का आदमी था और अपनी हीन-ग्रंथि के रहते वह ईटन या अन्य किसी श्वेत अधिकारी को अप्रसन्न करने का जोखिम नहीं उठाना चाहता था।

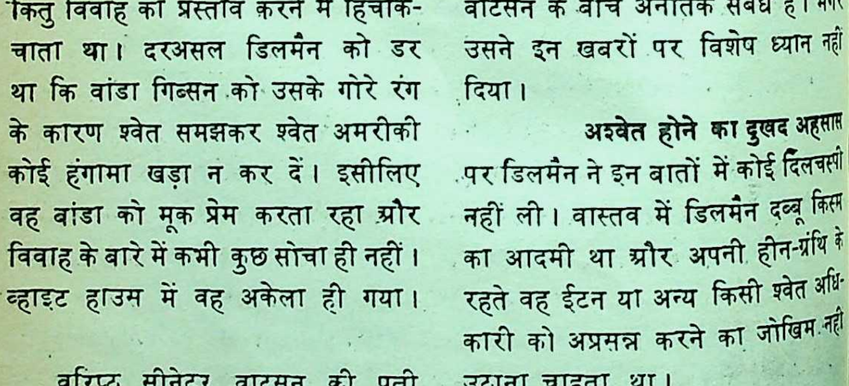

लेकिन तभी एक दुर्घटना हो गयी।

नीग्रो लोगों के एक आतंकवादी संगठन ने एक जज की हत्या कर दी। इस घटना से श्वेत अमरीकी उत्तेजित थे। वे चाहते थे कि नीग्रो आतंकवादी संगठन के साथ-साथ नीग्रो समाज के सांस्कृतिक संगठन पर पावंदी लगा दी जाए।

डिलमैन को यह प्रस्ताव जंचा नहीं। डिलमैन का कहना था कि इस कांड के लिए कुछेक व्यक्ति दोषी हो सकते हैं, पूरा संगठन नहीं। और जब तक संगठन के दोषी होने के पुष्ट प्रमाण नहीं मिल जाते, तब तक उस पर पावंदी लगाना उचित नहीं।

राष्ट्रपति के इस रवैये से श्वेत अमरीकी अधिकारी खिन्न हो गये। वे उस पर पक्षपात का आरोप लगाने लगे।

डिलमैन ने कहा कि वह इस मसले पर राष्ट्र के नाम संदेश प्रसारित करेगा। ईटन द्वारा संदेश तैयार किया गया, लेकिन डिलमैन ने उसे अस्वीकृत कर दिया और अपना संदेश स्वयं ही तैयार किया।

ईटन और उसके अन्य साथी डिलमैन के इस तौर-तरीके से बेहद रुष्ट हो गये। लेकिन डिलमैन ने तो सारे कायदे-कानूनों को ताक पर रखकर अपने सलाहकारों की अवहेलना कर दी।

असंतोष का वातावरण बनता जा रहा था।

उधर नीग्रो संगठन का उग्रवादी नेता पकड़ लिया गया था और जज की हत्या के आरोप में उसे मृत्युदंड की सजा मिली थी।

नीग्रो नेता को मृत्युदंड

इससे नीग्रो समुदाय में भी बेचैनी बढ़ने लगी थी। नीग्रो राष्ट्रपति के रहते हुए एक नीग्रो नेता को मृत्युदंड मिल रहा था और वह उदासीन बैठा था। समानता का अधिकार पाने के लिए संघर्षरत नीग्रो लोगों के लिए उनके ही बीच का एक नीग्रो राष्ट्रपति कुछ भी नहीं कर रहा था।

दोनों ही पक्षों में क्षोभ और असंतोष था—अलग-अलग तरह का! दोनों ही पक्षों का कोपभाजन था राष्ट्रपति डगलस डिलमैन!

डिलमैन को ट्रेफोर्ड यूनिवर्मिटी का निमंत्रण मिला था। वह उसे डॉक्टर की मानद उपाधि दे रही थी।

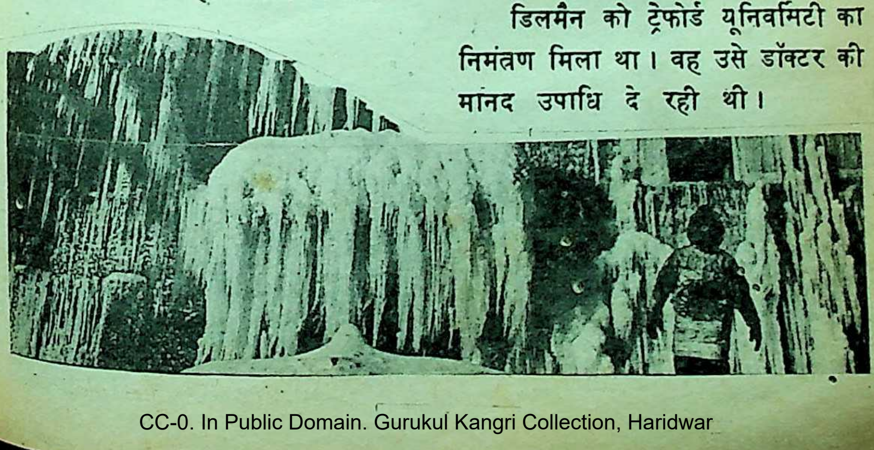

ऐसे नाजुक मौके पर उसने ट्रेफोर्ड यूनीवर्सिटी जाने का निमंत्रण स्वीकार कर लिया।

ट्रेफोर्ड यूनीवर्सिटी में उपाधि ग्रहण करने के बाद डिलमैन का भाषण शुरू हुआ।

भाषण के बीच ही उस पर अंडे के छिलके और अंडे फेंके जाने लगे। आवाजें आयीं—"गद्दार डिलमैन, वापस जाओ।" 'गोरों का पिट्ठू डिलमैन !"

अचानक उसकी नाक से कोई पत्थर टकराया और डिलमैन गिर पड़ा। तुरंत डॉक्टर दौड़े और अतिथि-कक्ष में ले जाकर मरहम-पट्टी की गयी।

कुछ स्वस्थ होने पर उसने अपने पुत्र जूलियन से मिलने की इच्छा व्यक्त की।

जूलियन से उसने सीधा सवाल किया—"जूलियन तुम्हारा आतंकवादी संगठन से संबंध है क्या ?"

"नहीं ! लेकिन उनसे मेरी सहानुभूति है !" जूलियन ने जवाब दिया।

"मैं उस उग्र संगठन के सख्त खिलाफ हूं ! तुम मुझे सिर्फ यह बताओ कि तुम्हारा उससे कोई संबंध तो नहीं है !" डिलमैन ने स्पष्ट शब्दों में पूछा।

"नहीं !" जूलियन ने कहा।

"ठीक है ! अब मैं आश्वस्त हूं !"

शाम तक राष्ट्रपति डिलमैन व्हाइट हाउस लौट आया।

आतंकवादी नीग्रो-संगठन के नेता के मृत्युदंड को आजीवन कारावास में बदलने के लिए, राष्ट्रपति डिलमैन से अपील की गयी थी, लेकिन मृत्युदंड की तिथि तक डिलमैन ने अपने निर्णय को स्थगित रखने की घोषणा की। श्वेतों के साथ-साथ अश्वेत नीग्रो लोगों में असंतोष जोर पकड़ता जा रहा था।

एक दिन डिलमैन व्हाइट हाउस के पार्क में अपनी सचिव के साथ घूम रहा था। अचानक राष्ट्रपति के गुप्तचर विभाग के निजी अंगरक्षक ऑटो बैग्स की दृष्टि एक माली पर पड़ी। माली नीग्रो था। उसकी गतिविधियां कुछ संदेहास्पद जान पड़ीं। ऑटो बैग्स राष्ट्रपति से काफी दूर था। वह माली पर दृष्टि गड़ाये हुए था। अचानक माली के हाथों में उसे पिस्तौल दिखायी पड़ी। उसने शोर मचाकर राष्ट्रपति को सावधान किया। लेकिन डिलमैन उसके संकेत को समझ नहीं सका।

"राष्ट्रपति महोदय, सिर नीचे झुकाइए !" ऑटो बैग्स चीखा।

डिलमैन जब तक सचेत हो, तब तक एक गोली उसके सिर के ऊपर से गुजरती हुई निकली। ऑटो बैग्स उछला और राष्ट्रपति के सामने जा खड़ा हुआ।

राष्ट्रपति डिलमैन सुरक्षित बच गया; लेकिन ऑटो बैग्स बुरी तरह घायल हो गया।

शांति वार्त्ता और षड्यंत्र

दिवंगत राष्ट्रपति टी. सी. और उप-

राष्ट्रपति की जरमनी में जिस समय मृत्यु हुई, उस समय वह रूसी प्रतिनिधियों से शांति-वार्ता कर रहे थे। टी. सी. की मृत्यु के बाद नव-नियुक्त राष्ट्रपति डिलमैन ने रूस के साथ शांति-समझौता किया। यह समझौता अफरीकी देश बराजा के संदर्भ में हुआ था।

शांति-समझौते के बाद सब कुछ सामान्य चल रहा था। डिलमैन भी निश्चित था।....

अचानक एक दिन वांडा गिब्सन का फोन आया। वांडा वाडुज एक्सपोर्टर्स् लिमिटेड नाम की कंपनी में कार्यकारी सचिव के पद पर काम करती थी। वांडा ने फोन पर डिलमैन को बताया कि इस कंपनी के रूस से गुप्त संबंध होने की जानकारी मिली है। और यह भी कि वह सामान्य उपकरण निर्यात करने की बजाय बराजा के विद्रोहियों को हथियार भेज रही है।

डिलमैन वांडा की सूचना पाकर सकते में रह गया। तो क्या अमरीका का गुप्तचर विभाग इतने बड़े षड्यंत्र से अनभिज्ञ है?

"मेरा ख्याल है, वांडा, तुम वहां से नौकरी छोड़ दो!" उसने कहा।

"मैंने आज इस्तीफा भी दे दिया है!" वांडा ने कहा।

"ठीक है! मैं अभी पता लगाता हूं! और सूचना देने के लिए मेरा धन्यवाद स्वीकार करो!" डिलमैन ने कहा और फोन रख दिया।

फिर डिलमैन ने गुप्तचर विभाग के निदेशक को फौरन ही फाइलें लेकर पहुंचने का आदेश दिया।

फाइलें लेकर निदेशक आ पहुंचा। डिलमैन ने उससे कंपनी के रूस से गुप्त संबंधों की जानकारी मांगी। निदेशक ने इसकी पुष्टि करते हुए बताया कि हमारा विभाग समय-समय पर इसकी सूचना देता रहा है। निदेशक ने बताया—"अभी पंद्रह दिन पहले भी हमने इस संबंध में आपको पत्र भेजा था।"

"लेकिन मैंने ऐसा कोई पत्र अभी तक नहीं देखा है! तुम्हारे पास मूल-पत्र तो होगा। उस फाइल में से देखकर मुझे बताओ।" डिलमैन ने कहा।

निदेशक ने फाइल देखी। मूल-पत्र उसमें भी नहीं था। लेकिन जिस जगह से मूल-पत्र निकाला गया वहां यह नोट था कि मूल-पत्र राज्य के प्रमुख सचिव ईटन को दिया गया था।

नाममात्र का राष्ट्रपति

राष्ट्रपति डिलमैन का सिर चकराने लगा। तो यह बात है। असली शासन तो ईटन और उसके लोग चला रहे हैं। वह तो नाममात्र का राष्ट्रपति है।

डिलमैन ने सारा मामला समझा और अपने निजी कागजों में नोट कर लिया।

वांडा गिब्सन की राष्ट्रपति डिलमैन से कभी-कभी फोन पर बातचीत हो जाती थी। सेली वाटसन ने इस बातचीत से यह अनुमान लगा लिया कि दोनों के बीच प्रेम-संबंध है। सेली वाटसन चूंकि स्वयं अनैतिक प्रेम-संबंध स्थापित करती रही थी और कर रही थी, इसलिए इस तरह के अनुमान लगाना उसके लिए स्वाभाविक ही था।

उस दिन उसने वांडा और डिलमैन के बीच हुई फोन की बातचीत सुन ली और फिर डिलमैन तथा गुप्तचर विभाग के निदेशक की भेंट का भी उसे पता चल गया। वह फौरन राज्य के प्रमुख सचिव और अपने प्रेमी ईटन के पास पहुंची। ईटन के पास गवर्नर टेली भी बैठा था।

सेली वाटसन की बातें सुनकर ईटन के होश उड़ गये। "न जाने डिलमैन को क्या क्या सूचना मिली होगी?" उसने कहा।

"ईटन, तुम कहो तो मैं राष्ट्रपति के पास से सूचनाएं लाने की कोशिश करूं।" सेली ने पूछा।

ईटन जानता था कि सेली मूर्ख है और ज्यादा चतुराई दिखाने के चक्कर में कहीं फंस न जाए और उन लोगों को भी मुसीबत में डाल दे। फिर भी उसने कहा, "कोशिश करके देख लो।"

सेली ने मन ही मन योजना बनायी और व्हाइट हाउस जा पहुंची।

उस दिन शाम को बराजा के राष्ट्रपति के सम्मान में व्हाइट हाउस में भोज दिया जा रहा था। भोज की व्यवस्था सेली वाटसन के ही जिम्मे थी। अतिथियों को निमंत्रण भेजने इत्यादि का काम उसी की देखरेख में हुआ।

भोज के समय डिलमैन अत्यंत खिन्न था। भोजन-कक्ष में सौ व्यक्तियों की व्यवस्था की गयी थी और आये थे मात्र पचास। अतिथि अपने मन में क्या सोचेंगे? डिलमैन की इज्जत मिट्टी में मिल रही थी। इस सब अपमान की जिम्मेदारी सेली की ही थी।

तभी डिलमैन की नजर सेली पर पड़ी। सेली बेहद पिये हुए थी। उसके कदम लड़खड़ा रहे थे। डिलमैन उसे पास पहुंचा, "क्या बात है, सेली? तुम्हारी तबियत ठीक नहीं है क्या?"

"राष्ट्रपति महोदय, क्षमा करें! मैं थोड़ी देर के लिए बाहर जाना चाहती हूं। स्वस्थ होने पर पुनः वापस आ जाऊंगी।"

"तुम्हारी तबियत ठीक न हो, तो तुम घर चली जाओ।" डिलमैन ने उदारता दिखाते हुए कहा।

"नहीं, मैं अभी कुछ देर में वापस आ जाऊंगी।" सेली वाटसन चली गयी।

भोज के बाद फिल्म-शो हुआ। डिलमैन उसमें चला गया।

सेली वाटसन चोरी-छिपे डिलमैन के निजी कक्ष में जा पहुंची। डिलमैन का

ब्रीफकेस खुला था । वह कागजात देखने लगी । गुप्तचर विभाग से संबंधित कागजात उसे मिल गये । वह पढ़ती रही, फिर उनकी नकल करने लगी । नशे की वजह से उसे नकल करने में देर लग रही थी ।

निर्वस्त्र महिला गुप्तचर

तभी दरवाजे पर आहट हुई और डिलमैन ने कमरे में प्रवेश किया ।

घबराहट में सेली ने अपने कपड़ों को अस्त-व्यस्त किया और बोली—"क्षमा कीजिए, महोदय, मैं नशे में गलती से आपके कमरे में चली आयी ।"

"कोई बात नहीं, सेली । नशे में हो जाता है ऐसा । तुम कपड़े व्यवस्थित कर लो । तब तक मैं बाहर ही खड़ा हूं ।" डिलमैन ने कहा और कमरे से बाहर निकलने लगा । लेकिन तभी उसकी दृष्टि खुले ब्रीफकेस और बिखरे-छितरे कागजात पर पड़ी । उसका माथा ठनका । वह कमरे में वापस लौटा । उसने सेली को कागज बटोरते देखा । सेली के हाथों में गुप्तचर-विभाग की रिपोर्ट थी और उसके लिये हुए नोट्स ।

सेली ने डिलमैन को घबरायी नजरों से देखा । वह रंगे हाथ पकड़ी जा चुकी थी ।

क्षमा मांगते हुए वह बोली—"माफ कीजिए, राष्ट्रपति महोदय । नशे में मैं आपके ब्रीफकेस से टकरा गयी और ये कागजात बिखर गये ।"

"आप जाइए सेली वाटसन ! मैं सब कुछ जानता हूं । जाइए और ये कागजात ईटन को दे दीजिए । और सुनिए कल से आप व्हाइट हाउस में आने की कृपा न करें ।" डिलमैन ने गुस्से में कहा ।

"माफ कीजिए, राष्ट्रपति महोदय ! इस गलती के बदले आप जो चाहें, वह कीमत वसूल कर सकते हैं . . . मैं . . . मेरी इज्जत भी !" सेली वाटसन अपने को धीरे-धीरे निर्वस्त्र करने की चेष्टा करने लगी ।

"आप जाइए, सेली वाटसन ! करामात ईटन को ही दिखाइए," डिलमैन गुस्से से चीखा—"दफा हो जाइए ।"

सेली पूरी तरह से निराश हो गयी थी । व्हाइट हाउस उसके लिए बंद हो ही गया था । ईटन को भी क्या मुंह दिखाएगी ? अपनी मूर्खता में वह क्या कर बैठी !

"मैं कहता हूं, दफा हो जाइए ।" डिलमैन चीखा ।

"नीच ! कमीने ! बदमाश ! डिलमैन, मैं तुझे कभी माफ नहीं करूंगी । यह बात तुझे मंहगी पड़ेगी ।" सेली चीखी ।

कोई चारा नहीं था । उसे जाना पड़ा—हताश, निराश ।

हताश सेली वाटसन ईटन के घर पहुंची । ईटन के साथ गवर्नर टेली और जैक मिलर भी बैठे हुए थे । सेली बेहद शराब पिये हुए थी । उसने अपने बदन पर खरोंचें लगायी हुई थीं ।

अपनी असफलता और निराशा को छिपाने के लिए उसने अजीब कहानी गढ़-

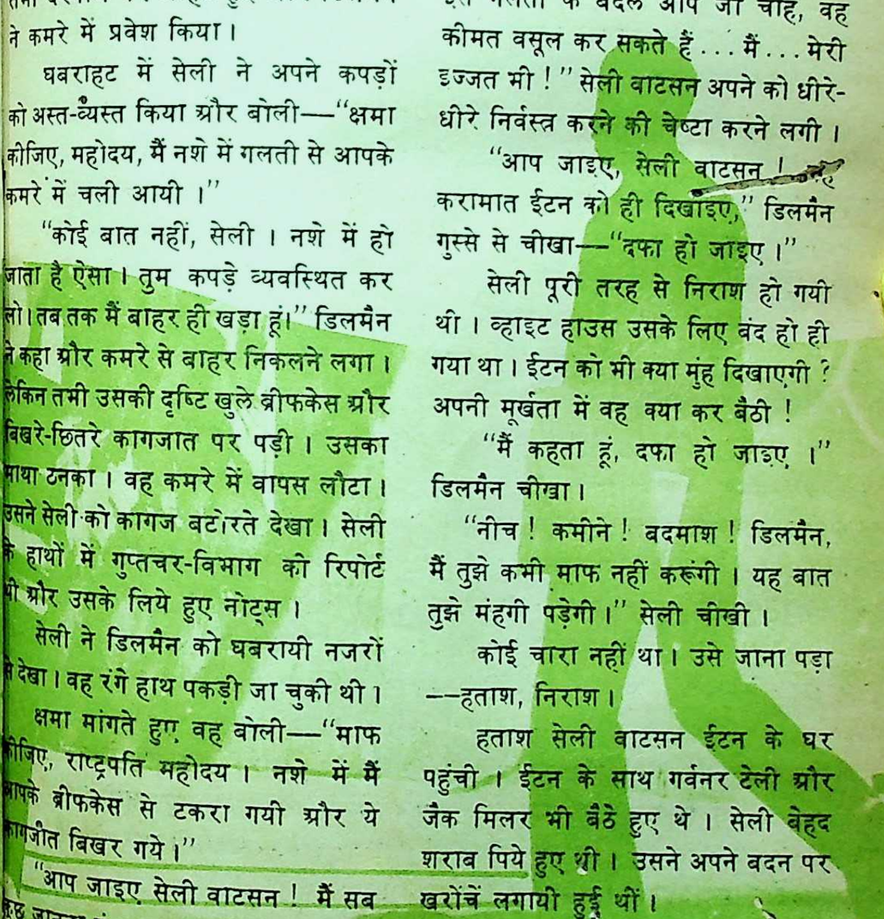

कर सबको सुनायी। उसने कहा कि भोज के बाद डिलमैन उसे अपने एकांत कमरे में ले गया ग्रौर गहरे नशे की हालत में बलात्कार करने की कोशिश की। उसने यह भी कहा कि बलात्कार की कुचेष्टा से पहले डिलमैन ने उसे जबरन शराब भी पिलायी थी।

वहां बैठे लोगों को सहसा उसकी बातों पर विश्वास नहीं हुआ। ईटन को भी दाल में कुछ काला नजर आया।

तभी फोन की घंटी टनटनायी। व्हाइट हाउस से ईटन को अगली सुबह के लिए तलब किया गया था।

सुबह व्हाइट हाउस पहुंचने पर डिलमैन ने उससे इस्तीफा देने को कहा।

पहले तो ईटन की समझ में कुछ न आया। फिर मामले को समझते हुए उसने भी आक्रामक मुद्रा अपनायी।

"राष्ट्रपति डिलमैन! आप मुझसे इस्तीफा मांगने का कष्ट न उठायें। आप पर तो स्वयं महाभियोग लगने जा रहा है। उसकी चिंता करें।" ईटन ने कहा।

"तुम मुझे ब्लैकमेल करना चाहते हो, ईटन!" डिलमैन भड़कते हुए बोला—"यह पैंतरेबाजी नहीं चलेगी।"

"ब्लैकमेल नहीं, डिलमैन! यह देखो . . ." ईटन ने जेब से दो कागज निकालकर दिखाते हुए कहा—"महाभियोग के लिए तुम पर सारे अभियोग तैयार हो चुके हैं।"

डिलमैन ने कागज पढ़े। उसके पांव-तले की जमीन खिसकने लगी। सं
संभलते हुए वह बोला—"महाभियोग
तो मैं निपट लूंगा, ईटन! तुम त
मुझे इस्तीफा दो।"

यह सुनकर पहले तो ईटन सकपका
निराशा में बदतमीजी पर उतर आया

डिलमैन बोला—"ठहरो, ईटन!
तुम्हें इस्तीफा देने का भी गौरव नहीं
चाहता। मैं तुम्हें बर्खास्त करता हूं।"

महाभियोग का

महाभियोग के लिए सीनेट की मी
बुलायी गयी। राष्ट्रपति डिलमैन ने अ
पैरवी के लिए अपने पुराने वकील दे
नैट अब्राहम को चुना। अन्य विपक्षी सद
का प्रतिनिधि था जैक मिलर। महाभि
के लिए प्रस्तुत अभियोग-पत्र में राष्ट्
डिलमैन पर प्रमुख आरोप थे—

पद का दुरुपयोग, चरित्रहीनता,
तथा कम्युनिस्टों से संबद्ध महिला
गिब्सन से अवैध संबंध, नीग्रो लोगों
प्रति अनुचित सहानुभूति, आतंकवा
से गुप्त संबंध, इत्यादि।

सीनेट में कई दिन तक बहस च
रही। डिलमैन की ग्रोर से नैट अब्राह
बहस की। उसने आरोपों का जो
जवाब दिया।

मानसिक बिखराव और पिता की

बहस के दौरान ही जैक मिलर के अ
में सुर्खियों में खबर छपी कि राष्ट्
डिलमैन अपनी पुत्री को श्वेत लोगों
बीच उन्हीं की हैसियत से रखकर अ

को धोखा देता रहा है।

यह खबर पढ़कर डिलमैन की पुत्री ने आत्महत्या की कोशिश की। इसकी सूचना जूलियन ने अपने पिता को फोन पर दी। डिलमैन सुनकर बेचैन हो उठा।

मानसिक बिखराव के इन क्षणों में उसे सहसा अपने पिता की याद हो आयी। उसे विस्मय हुआ, क्योंकि उसने कभी अपने पिता को नहीं देखा था। उसे लगा कि कोई ऐसा वयोवृद्ध व्यक्ति मिले, जो पिता की तरह डांट-फटकार सके और मार्ग-दर्शन कर सके।

तभी उसे याद आया कि राष्ट्रपति-पद की नियुक्त पर बधाई देते हुए भूतपूर्व राष्ट्रपति श्री जज ने कहा था कि 'भविष्य में कभी संकट की घड़ी आये, तो मेरे पास चले आना।'

संकट की घड़ी थी ही। डिलमैन तुरंत श्री जज के पास पहुंचा।

श्री जज ने उसकी हीन-ग्रंथि और क्षीण मनोबल के लिए उसे फटकार बतायी और सलाह दी कि इस संकट का मुकाबला साहस से करना चाहिए।

श्री जज के पास से लौटते हुए वह स्वयं को मानसिक रूप से मुक्त और स्वस्थ अनुभव कर रहा था। उसका आत्म-विश्वास और मनोबल लौट आया था। उसने अपने वकील दोस्त नैट अब्राहम से कहा कि आरोपों का उत्तर देने के लिए मैं स्वयं सीनेट की मीटिंग में जाऊंगा।

अगले दिन वह स्वयं भी सीनेट में उपस्थित हुआ। उसने आरोपों के मुंहतोड़ और खरे उत्तर दिये।

दस दिन तक बहस चली और ग्यारहवें दिन मतदान होना तय हुआ।

ईटन और उसके सहयोगियों को विश्वास था कि राष्ट्रपति डिलमैन मतदान में अवश्य हार जाएगा। डिलमैन को दृढ़ विश्वास था कि अंततः सत्य और मानवता की विजय होगी।

राष्ट्रपति का ऊंचा मनोबल

डिलमैन अस्पताल में घायल ऑटो बैग्स से मिलने गया। वहां जाकर उसने ऑटो बैग्स का हालचाल पूछा और एक गोल्ड-मैडल देते हुए बोला—"सुरक्षा कर्मचारी की हैसियत से तुमने अपनी जान पर खेलकर जो भी मेरी रक्षा की, उसी का यह छोटा-सा इनाम है। ऑटो बैग्स, जब तुम स्वस्थ होकर लौटोगे तब तुम्हें नया पद मिलेगा। मैंने तुम्हें सुरक्षा-विभाग का प्रमुख नियुक्त कर दिया है।"

ऑटो बैग्स की आंखों में श्रद्धा के आंसू उमड़ पड़े। डिलमैन चलने को हुआ तो ऑटो बैग्स बोला—"श्रीमान् राष्ट्रपति, मैं आपके प्रति कृतज्ञ हूं। अभी कुछ देर पहले आपके विरोधी मुझे फुसलाने आये

बेलटेक का वास्तविक
'वन-अप' टी वी

सुपर स्टार
डीलक्स
जिसमें है
हाई-गेन
वीडियो आई सी

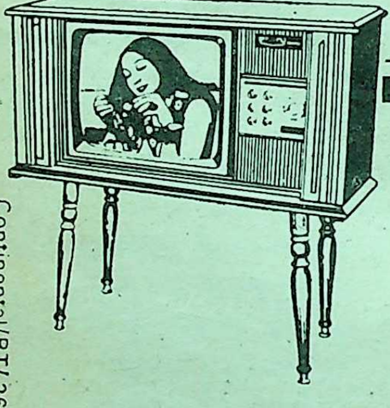

विशेषताऐं
1. सॉलिड स्टेट, 9 आईसीज
2. वीडियो प्लेइंग सुविधा
3. 3 स्पीकर्स
4. स्टीरियो जैसी आवाज के लिए ट्रेबल एवं बास कंट्रोल

Continental/BT/2681

हमेशा एक पग आगे
बेलटेक

थे, लेकि
देने से
यह
आया ।
है, उसने
चल दिय
को धन्य
सेल
से मुलाक
पति डिल
देने के ब्र
निश्चित
और उस
जाएगा ।
कि ईटन
महत्त्वपूर्ण
था कि ईट
नहीं निक
उसकी उ
सेली
और ईटन
के व्यवहा
उससे पह
रहा था ।
उसकी पत
उसके पास
एक और
सेली को इ
क्रूर महत्त्व
राष्ट्रपति
स्वच्छ छवि
अगस्त,

थे, लेकिन मैंने आपके विरुद्ध झूठी गवाही देने से साफ इनकार कर दिया है।"

यह सुनकर डिलमैन का गला भर आया। अभी मनुष्यता का क्षय नहीं हुआ है, उसने सोचा और वहां से बिना बोले चल दिया। उसकी आत्मा ऑटो बैग्स को धन्यवाद दे रही थी।

सेली वाटसन की ईटन से बहुत दिन से मुलाकात नहीं हो पा रही थी। राष्ट्रपति डिलमैन के खिलाफ सीनेट में गवाही देने के बाद वह यह जान चुकी थी कि अब निश्चित रूप से डिलमैन हार जाएगा। और उसका प्रेमी ईटन राष्ट्रपति बन जाएगा। उसके मन में कहीं यह बात भी थी कि ईटन को राष्ट्रपति बनाने में उसकी भी महत्त्वपूर्ण भूमिका है। लेकिन उसे अफसोस था कि ईटन उससे बात करने का समय क्यों नहीं निकाल रहा है। उसे लगा कि ईटन उसकी उपेक्षा कर रहा।

सेली वाटसन ने खूब शराब पी और ईटन के घर जा पहुंची। उसें ईटन के व्यवहार में अंतर लग रहा था। वह उससे पहले की तरह बात भी नहीं कर रहा था। बातचीत में ईटन ने बताया कि उसकी पत्नी तलाक का इरादा छोड़कर उसके पास रहने आ रही है।

एक और धोखा

सेली को झटका लगा। वह ईटन की इस क्रूर महत्त्वाकांक्षा को समझ रही थी। राष्ट्रपति पद पर जाने से पूर्व वह अपनी स्वच्छ छवि बनाने के चक्कर में था। सेली वाटसन को ऐसे मौके पर दुत्कारने के पीछे भी यही भाव था।

आवेश में वह ईटन से झगड़ बैठी। उत्तेजना में खूब शराब पीकर उसने ईटन का मुंह नोंच लिया।

हताशा के क्षणों में वह डिलमैन के सामने ईटन की धूर्तता का भंडाफोड़ करने के लिए व्हाइट हाउस की ओर चल दी।

वांडा गिब्सन उधर से गुजर रही थी। उसकी नजर घायल सेली वाटसन पर पड़ी। वह उसे उसके पिता सीनेटर वाटसन के पास ले गयी।

डिलमैन अपने कमरे में बैठा नैट अब्राहम से बातचीत कर रहा था। अचानक फोन की घंटी टनटनायी। डिलमैन ने फोन उठाया। उधर से वांडा गिब्सन बोल रही थी—"डिलमैन, सीनेटर गिब्सन तुमसे मिलना चाहते हैं।"

डिलमैन पसोपेश में पड़ गया। फिर बोला—"ठीक है। उन्हें यहां ले आओ।"

कुछ देर बाद वांडा गिब्सन के साथ सीनेटर वाटसन ने कमरे में प्रवेश किया।

सीनेटर वाटसन ने दुखी स्वर में कहा—"राष्ट्रपति महोदय! मैं क्षमा मांगने आया हूं। मेरी बेटी ने मुझे सारी बातें सही-सही बता दी है। मैंने उसका बयान एक एर्टोनी की मौजूदगी में कलम-बंद कर लिया है। लीजिए, और कल इसे सीनेट के सामने पेश कर दीजिए। आप निर्दोष हैं। सेली की मानसिक स्थिति ठीक नहीं है।"

सन् २००० का लघु उद्योगपति

नन्हे से अरूण में लघु उद्योगपति बनने के कुछ आसार नज़र आये थे. और इसलिए उसके पिता ने. सिडिकेट बैंक का साथ लेकर उसे वही बनाने के लिए पहले ही से कदम उठाएं थे.

अरूण के पहले जन्म-दिन पर, उसके पिता ने सिडिकेट बैंक में 25 रूपये जमा कर के अरूण के नाम पर एक बचत खाता खोला, और उसी समय उन्होंने सिडिकेट बैंक के संचयी जमा खाते में सिर्फ पांच वर्षों के लिए प्रति माह 100 रूपये की रकम जमा करना भी शुरू किया. जब अरूण 16, वर्ष का हो जाएगा. तब हम उसे हर महीना 173.55 रू. की रकम देंगे, जिससे उसकी तकनीकी शिक्षा का खर्च निकल जाएगा. इसके अलावा, जब वह 21 वर्ष का होगा, तब उसे 21,000 रूपये की पूंजी भी मिलेगी जिसे वह अपनी पहली लघु परियोजना में लगा सकेंगा.

सिर्फ 5 वर्षों के लिए की गयी बचत, आपके बच्चे के भविष्य को पलटा सकेगी.

सिंडिकेट बैंक में आइए. बिना को उठाए, आपके बच्चे का भविष्य ब हम आपकी सहायता करेंगे.

सिंडिकेट बैंक
जहां सेवा ही जीवन का उद्देश है

maa (S) SB 47 HIN

राष्ट्रपति की मानवीयता

डिलमैन हतप्रभ रह गया। घटनाचक्र के इस मोड़ से वह रोमांचित था। पर तभी उसने सीनेटर वाटसन को कागज वापस दिया और बोला—"सीनेटर, मुझे इसकी कोई जरूरत नहीं है। मैं अपना बचाव खुद कर लूंगा। मैं भी एक बेटी का पिता हूं। मेरी बेटी की स्थिति भी ठीक नहीं है। सेली वाटसन आपकी बेटी है। आप उसकी देखभाल कीजिए। इस कागज को सीनेट के सामने पेश करने से उसका जीवन बिगड़ जाएगा। मैं नहीं चाहता यह सब। सीनेटर, आप इसे अपने पास रखें।"

सीनेटर वाटसन का दिल भर आया। कागज के दो टुकड़े करते हुए वह बोले—"राष्ट्रपति डिलमैन, तुम महान आदमी हो। तुम-जैसा नेकदिल आदमी मैंने आज तक दूसरा नहीं देखा। ... लेकिन...लेकिन अपना वोट मैं तुम्हारी योग्यता के आधार पर ही दूंगा।"

बराजा में रूस के सैनिक हस्तक्षेप की सूचना मिलते ही राष्ट्रपति डिलमैन ने अपने पांच हजार श्वेत सैनिक वहां रवाना कर दिये। इसकी सूचना पाकर रूस के प्रधान मंत्री ने फोन पर डिलमैन से कहा। "राष्ट्रपति डिलमैन, बराजा में हमने कोई सैनिक हस्तक्षेप नहीं किया है। आपको गलत सूचना दी गयी है। हम युद्ध नहीं चाहते। हम अपने सैनिक वहां से वापस बुला रहे हैं।"

यह राष्ट्रपति डिलमैन की ही नहीं, वरन अमरीका की विजय थी।

सत्य की विजय

अगले दिन अखबारों में अमरीका की इस विजय को सुर्खियों में छापा गया। यह मतदानवाला ही दिन था।

मतदान शुरू हुआ।

एक-एककर सीनेटर अपना मत बताते जा रहे थे। कोई दोषी बता रहा था, कोई निर्दोष।

लोगों के दिल की धड़कन बढ़ती जा रही थी।

एक मत पड़ना शेष रह गया था। मत सीनेटर वाटसन का था।

सीनेटर से पूछा गया—"राष्ट्रपति डिलमैन दोषी हैं, अथवा निर्दोष?"

काफी देर चुप रहकर और दो-तीन बार पूछने पर सीनेटर वाटसन ने कहा—"निर्दोष।"

डिलमैन पर महाभियोग रद्द कर दिया गया।

पत्रकारों और संवाददाताओं के पूछने पर सीनेटर वाटसन ने कहा—"राष्ट्रपति पद के लिए डिलमैन सर्वथा सक्षम व्यक्ति हैं। मैंने उनकी योग्यता के आधार पर ही अपना मत दिया है।"

राष्ट्रपति डिलमैन महाभियोग से मुक्त होकर अगली सुबह सूर्य की ओर निहारते हुए सोच रहा था कि सत्य और मानवीय मूल्यों के प्रति आस्था ही अपने आप में विजय है। ●

विधि विधान

व्यापार में साझेदारी

चंद्रप्रकाश गर्ग, पिलखुआ : मैं एक महिला के साथ साझे में व्यापार करना चाहता हूं। इसमें धन उक्त महिला का लगेगा और कार्य मैं करूंगा। इस तरह के व्यापार में कौन-कौन-सी परेशानियां सामने आ सकती हैं?

व्यापार में धन कोई एक या अनेक भागीदार लगा सकते हैं। धन एक भागीदार लगाये और काम का उत्तरदायित्व दूसरा निभाये, यह कोई आश्चर्य की बात नहीं। इस प्रकार के समझौते व्यापार के क्षेत्र में प्रायः देखने को मिलते हैं। महिला के साथ साझे में व्यापार करने पर कोई कानूनी प्रतिबंध नहीं है। भागीदारी-पत्र में सभी शर्तें स्पष्ट लिख लें। भारतीय भागीदारी अधिनियम के अंतर्गत उसका पंजीकरण भी करवा लेना उपयोगी रहेगा।

परिवार के लोगों में आपकी भागीदारी को लेकर कोई संशय पैदा न हो, इसकी सावधानी तो आपको ही बरतनी पड़ेगी।

पैतृक संपत्ति का बंटवारा

राजेन्द्र जैन, शहडोल : मेरे पिता
एवं चाचाजी की पैतृक संपत्ति का
वारा नहीं हुआ है, परंतु मेरे पिताजी
नाम से जिस मकान की रजिस्ट्री है, उ
मेरे चाचा जी विगत पंद्रह वर्षों से
हैं, और चाचाजी के नाम से जिस म
की रजिस्ट्री है, उसे उन्होंने किराये प
रखा है। मैं अपने पिताजी के नाम
मकान खाली करवाना चाहता हूं। इ
लिए क्या हमें अपनी तहसील से क
वाही करनी होगी और क्या उक्त समय
किराया भी हमें मिलेगा?

आपके पत्र से ऐसा लगता है
आपके पिताजी के नाम रजिस्ट्री व
मकान और आप के चाचा के नाम रजि
वाला मकान, दोनों ही पैतृक संपत्ति
और उनका बटवारा अभी तक नहीं हु
आप संपत्ति के बटवारे के लिए कार्य
कर सकते हैं। इसमें आप किराये का हि
मांगने के साथ-साथ अपने हिस्से की सं
का खाली कब्जा दिलवाये जाने का
आवेदन कर सकते हैं। मुकदमा तो आ
उस तहसील में ही करना पड़ेगा, जि
आपकी संपत्ति है। साधारणतः मुक
सुनने का क्षेत्राधिकार उक्त तहसील
संबंधित न्यायालय को ही होता है

राम प्रकाश
गुप्त

संपत्ति का उत्तराधिकारी

महेन्द्रसिंह, डूंगरपुर : मेरी शादी एक ऐसी लड़की से हुई है, जो बचपन से अपनी विधवा बुआ के यहां पली। उन्होंने ही भारतीय रस्म-रिवाज के साथ उसकी शादी की थी। अब वे मेरी पत्नी को अपनी समस्त संपत्ति देना चाहती हैं, लेकिन उसके ताऊ अड़चनें पैदा कर रहे हैं। बुआ भी अपने जेठ से डरती हैं। हम इस समस्या को कानूनन कैसे सुलझा सकते हैं? क्या बुआ मेरी पत्नी के नाम वसीयत कर सकती हैं?

आपकी पत्नी के नाम वसीयत करके उन्हें संपत्ति का उत्तराधिकारी बनाया जा सकता है। वसीयत में इस बात का भी उल्लेख करवा दें कि बुआ ने आपकी पत्नी को बेटी की तरह पाला है और उसके विवाह का दायित्व भी उन्होंने ही निभाया है। आप भी उनका पूरा आदर सत्कार करते हैं। वसीयतनामा दो साक्षियों के समक्ष लिखा जाना चाहिए और दोनों साक्षियों तथा वसीयत करनेवाले को एक दूसरे के सामने हस्ताक्षर करने चाहिए। वसीयतनामे की रजिस्ट्री करवा लें। वसीयत करनेवाले की मानसिक तथा शारीरिक स्थिति के बारे में डॉक्टर का प्रमाण पत्र भी ले लेना उपयोगी रहेगा। इससे भविष्य में आनेवाली उलझनों से राहत मिल सकेगी।

स्वतंत्रता सेनानी की पेंशन प्राप्ति हेतु

अशोक, जमदशेपुर : मेरे पिताजी एक स्वतंत्रता सेनानी रह चुके हैं, परंतु अर्थाभाव के बावजूद वे सरकार द्वारा दी जा रही पेंशन सुविधा से वंचित हैं। कारण यह है कि जिस अवधि में वे अट्ठारह महीने की सजा काट रहे थे, उस अवधि का रेकार्ड पटना जेल में उपलब्ध नहीं है। जिन प्रमुख व्यक्तियों के साथ वे जेल में थे, उन लोगों में से कोई भी अब जीवित नहीं हैं, जिनसे उनके जेल-जीवन को प्रमाणित किया जा सके। थाने में दर्ज तत्कालीन प्रथम सूचना-रिपोर्ट (एफ. आई. आर.)

'विधि-विधान' स्तंभ के अंतर्गत कानून-संबंधी विविध कठिनाइयों के बारे में पाठकों के प्रश्न आमंत्रित हैं। प्रश्नों का समाधान कर रहे हैं राजधानी के एक प्रसिद्ध कानून-विशेषज्ञ—रामप्रकाश गुप्त

ज्ञान-गंगा

साधोः प्रकोपितस्यापि मनो नायाति विक्रियाम।
नहि तापयितुं शक्यं सागराम्भस्तृणोल्कपा।।

क्रोध दिलाने पर भी सत्पुरुषों के हृदय में कुछ विकार नहीं होता है, जैसे-घास की अग्नि समुद्र के जल को गरम नहीं कर सकती।

ब्रह्माण्डमण्डली मात्रं किं लोभाय मनास्विनः।
शफरीस्फुरितैनब्धेः क्षुब्धता जातु जायते।।

मनस्वी पुरुष को ब्रह्मांडों का समूह भी लोभ उत्पन्न करनेवाला नहीं होता। मछलियों के इधर-उधर फिरने से समुद्र में कभी भी क्षोभ नहीं होता।

दोषामपि गुणावति जने दृष्ट्वा गुणरागिणो न खिद्यन्ते।
प्रीत्यैव शशिनि पतितं पश्यति लोक कलङ्कमपि।।

किसी गुणवान मनुष्य में कोई दोष भी देखकर गुणानुरागी व्यक्ति खिन्न नहीं होते। चंद्रमा में पड़े हुए कलंक को भी लोग प्रेम से ही देखते हैं।

योगः कर्मसु कौशलम्।

योग अर्थात सिद्धि और असिद्धि में समस्त-भावना ही कर्मों के विषय में कौशल या बुद्धिमता है।

—प्रस्तोता : महर्षिकुमार पाण्डेय

और सुनायी गयी सजा की सत्य प्रतिलिपि को क्या प्रमाण स्वरूप प्रयोग में नहीं लाया जा सकता? इस संदर्भ में कहां से जानकारी प्राप्त की जा सकती है?

प्रथम सूचना रिपोर्ट की प्रतिलिपि के लिए आपको संबंधित थाने में आवेदन करना होगा। वहां से नकल मिल सकती है। जिस फैसले के तहत आपके पिताजी को सजा दी गयी, उसकी सत्यप्रतिलिपि न्यायालय में आवेदन देकर प्राप्त की जा सकती है। फैसले की नकल तो निश्चित रूप से प्रमाण है। आपको बिहार सरकार या गृहमंत्रालय से संपर्क करना चाहिए। केंद्रीय अखिल भारतीय स्वतंत्रता सेनानी समिति, नयी दिल्ली आपको सहयोग दे सकती है।

पुरानी बातें भुला दें

सु. कुमार, लाडनूं (राजस्थान): मेरी पत्नी बिना बताये गहने एवं अन्य सामान लेकर अपने मायके चली गयी है। अब उसके मायके वाले उसे पुनः मेरे पास भेजना चाहते हैं। क्या उसे रखना उचित होगा? हमें कानूनी सुरक्षा की दृष्टि से क्या ध्यान में रखना चाहिए?

घर में छोटी-मोटी कहासुनी को अधिक महत्त्व नहीं देना चाहिए। यदि आपकी पत्नी आपके पास आकर रहना चाहती है तो पुरानी बातें भुलाकर आपको उन्हें स्वीकार करना चाहिए। जहां तक सुरक्षा का प्रश्न है, आप अपनी पत्नी के नाम कोई संपत्ति अभी नहीं करवाएं, जब तक कि वे आपके साथ घुलमिल न जाए। ●

उपन्यास : ४

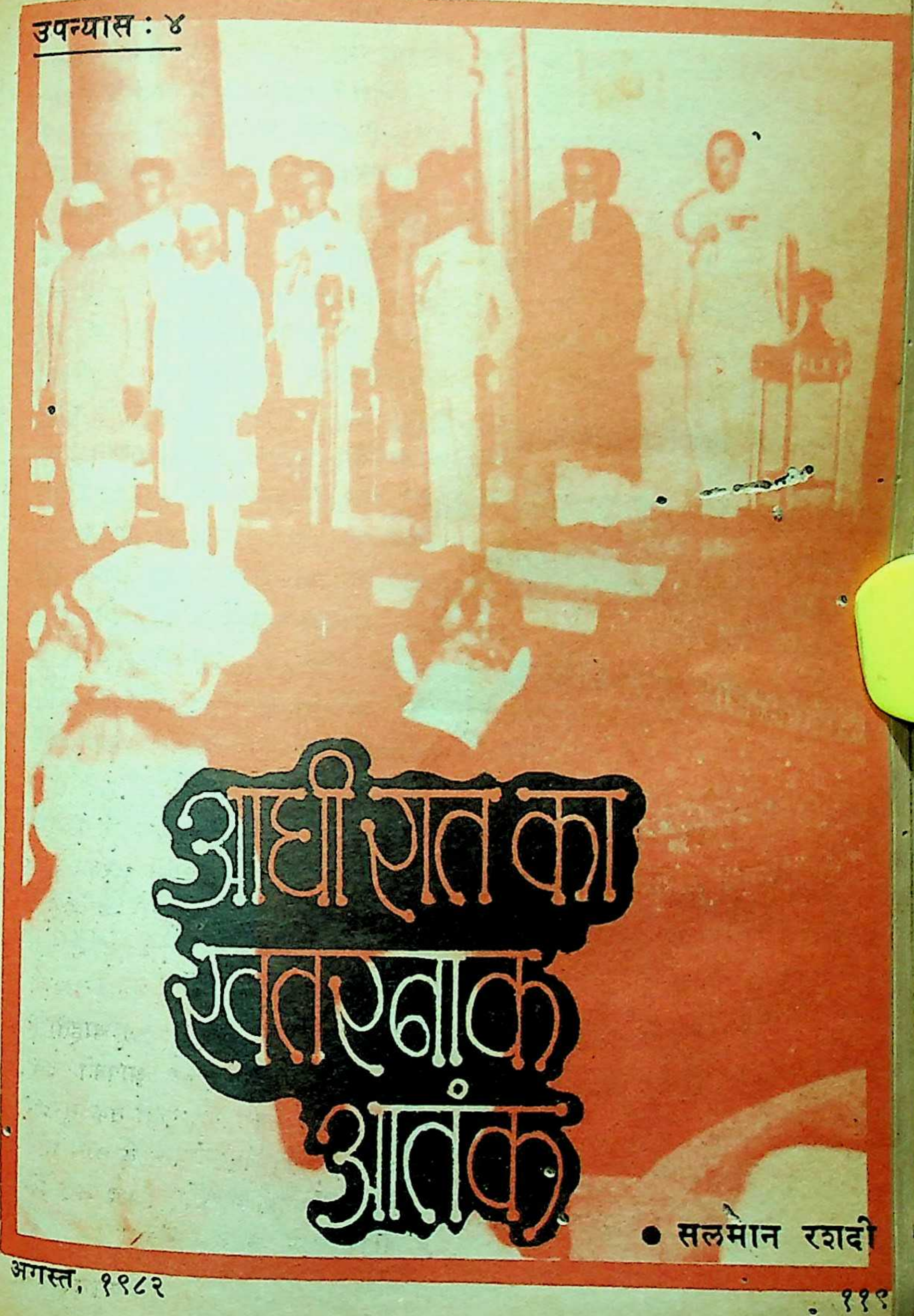

आधी रात का खतरनाक आतंक

• सलमान रशदी

समय बहुत ही तेजी से दौड़ रहा है और उम्र भी डग भर रही है। फिर भी जर्जर तथा अत्यधिक प्रयोग में लायी गयी मेरी देह यदि आज्ञा दे तो मैं बहुत कुछ बताना चाहता हूं। हजारों रातें और दिन देख चुकने के बावजूद अपनी सार्थकता को सिद्ध करने के लिए मुझे बहुत तेजी से कार्य करना पड़ेगा।

अपनी जिंदगी को समझने के लिए मैंने अनेक जिंदगियों को निगल डाला, जीवन के अनेक चमत्कारों में हस्तक्षेप किया—बहुत-सी यादों को नकारा पर यादें मुझे जब-तब उकेरती ही रहती हैं!

एक बड़ी-सी चादर है मेरे पास बतौर यादगार, जिसे मैं जिंदगी कहता हूं। इस चादर में बड़ा-सा छेद है; जिसमें से मैं यादों को देखता हूं। यह चादर मेरे लिए ताबीज है, मेरे लिए नजर से बचने का डिठोना है। उस चादर पर पड़े धुंधले खून के निशान मुझे रह-रहकर कुरान की उस आयत से जोड़ देते हैं, जिसका आशय है—उस खुदा का, सृष्टि-कर्ता का नाम बार-बार लो, जिसने खून के कतरों से आदमी को बनाया है।

यादों में बसे : खून के कतरे

यादगार में बसे ये खूनी कतरे मुझे अपने होने के इतिहास से जोड़ देते हैं। यादें अतीत की अंगुली छुड़ा-छुड़ाकर मेरे वर्तमान में इस तरह से खो जाती हैं, मानो सब कुछ अभी ही हुआ हो।

मैं एक बार बंबई में पैदा हुआ, या यूं कहूं कि एक दफा मैं १५ अगस्त १९४७ को डॉ. नारलिकर नर्सिंग होम में पैदा हुआ। रात्रि ने ही मेरे आगमन की सूचना दी यानी जब घड़ी की दोनों सुइयों ने हाथ जोड़कर प्रार्थना की, मैं आ गया। यह वह समय था, जब भारत ने स्वतंत्रता की पहली सांस ली। आतिशबाजी और हर्ष-ध्वनियां सुख की सांसें ले रही थीं। मेरे पिता के पांव में बहुत जोर की चोट लगी थी और मैं बड़े ही रहस्यमय तरीके से प्रारब्ध और इतिहास की जंजीरों से बांध दिया गया था। पिछले तीस वर्षों से लगातार कोशिश करने के बाद भी उनसे छुटकारा नहीं मिल रहा।

भविष्यवक्ताओं ने मेरे आगमन की भविष्यवाणी की, समाचारपत्रों ने मेरे पैदा होने की सूचना दी और पूरे देश ने मेरे जन्म का जश्न मनाया। सभी अपने-अपने तरीके से मेरे जन्म को आंक रहे थे और मैं था कि अपने होने से बिलकुल बेखबर था।

कोई मुझे बुद्ध कहता, कोई चांद का टुकड़ा, कोई मुंहफट, कोई नकचढ़ा तो कोई मुझे चिड़चिड़ा कहता...।

हीरे से चमकते आंसू

कश्मीर की एक बासंती सुबह...सन १९१५ की बात रही होगी, मेरे दादा आदम अजीज की नाक में चोट लगी और ऐसा तब हुआ जबकि वह नमाज पढ़ते हुए नीचे झुके और उनकी नाक बरफीले गुच्छों से आच्छादित चट्टान से जा टकरायी,

उनके बायें नथूने से खून की दो बूंदें टपकीं, जो चटाई पर गिरकर भुरभुरा गयीं और बेशकीमती लाल (रूबी) में बदल गयीं। चोट खाकर जब तक वे अपने सिर को ऊपर करते, दर्द ने आंख से आंसू निकाले और चटाई पर फेंक दिये। टपकते ही आंसू हीरे से चमकने लगे। उन हीरों को तिरस्कार से फटकराते हुए उन्होंने यह निर्णय लिया कि वे किसी के आगे सिजदे के लिए कभी नहीं झुकेंगे, चाहे वह आदमी हो या भगवान ही क्यों न हो! उनके इस निर्णय ने उनके अंतस में एक खालीपन भर दिया और तबसे वे इतिहास के आलोचक हो गये, उससे चिढ़ने लगे।

आरंभ में तो वे अपने इस निर्णय के प्रति अनभिज्ञ ही रहे। वे भूल गये कि हाल ही में उन्होंने डॉक्टरी की शिक्षा प्राप्त की है। उन्होंने उस चटाई को उठाया, जिस पर बैठकर वे प्रार्थना किया करते थे। चटाई को बगल में दबाया और घाटियों का निरीक्षण किया। उनके लिए पूरा संसार एकदम बदल चुका था। उनकी आंखों में अश्रु नहीं रहे थे—शुभ्रता के बीच वादी का चेहरा, उन्हें साफ-साफ नजर आ रहा था। सरदी, वापस बरफीले खोल में चली गयी थी, बासंती ओस चारों ओर छाने लगी थी, नयी घास ने भीतरी जमीन से विदा लेकर सतह पर आकर जमना शुरू कर दिया, पहाड़ों ने अपने ठंडे मिजाज को गरमी मनाने के लिए कहा।

'मिडनाइट्स चिल्ड्रन' सलमान रशदी का एक बहुचर्चित उपन्यास है, जिसे सन १९८१ के 'बुकर पुरस्कार' से सम्मानित भी किया गया। बंबई में जन्मे, इस लेखक ने स्वाधीनता दिवस की ओर बढ़ते परतंत्र भारत के तत्कालीन समाज की आर्थिक-राजनीतिक गतिविधियों का रोमांचक विवरण इस पुस्तक में चित्रित किया है और उल्लेखनीय रूप से उन माताओं की बेचैनी को शब्दों में समोया है, जो अपने बच्चों का जन्म १४ अगस्त की रात्रि में ठीक १२ बजे चाहती थीं ताकि वे आजाद देश की भाग्यशाली संतान कही जा सकें। पढ़िए इस उपन्यास का सार-संक्षेप। --प्रस्तोता: अनिल कपूर।

उस समय पचीस वर्षीय मेरे पितामह को संपूर्ण दुनिया ही अजीब-सी लगती, जिसका एक बहुत बड़ा रहस्य यह भी था कि वह पांच साल के बाद घर वापस लौटकर आये थे, जिससे वादियों का विस्तार भी उन्हें संकीर्ण लगने लगा था। ऐसा लगने लगा था कि क्षितिज उन्हें बांधकर घोंट देगा। और उनकी नाक में खुजली तकलीफ-देह हो गयी थी।

• लंबी नाकवाले पितामह

मेरे पितामह खूबसूरत नहीं थे, छह फुट से अधिक ही लंबे भी थे। चेहरे पर घनी

भूरी दाढ़ी, जिससे उनकी मां बहुत चिढ़ती थीं। क्योंकि उनकी यह मान्यता थी कि कि ऐसी दाढ़ी केवल हाजी लोग ही रख सकते हैं। उनके पूरे व्यक्तित्व में रंग-रूप महत्त्वपूर्ण नहीं था। महत्त्वपूर्ण थी उनकी नाक, जो सदैव फूली रहती और परिस्थितियों के अनुसार उसके नथुने नाचने लगते।

वैसी ही नाक मुझे भी उत्तराधिकार में मिली है। सच मानिए, इस कारण से ही लोग मुझे उनका पौत्र समझते हैं। उनकी इस देन के प्रति मैं उनका आभारी भी हूं।

ताई नामके एक नावचालक ने उन्हें नाक के महत्त्व को अवगत कराते हुए कहा था कि नाक साख है, वंश-प्रतिष्ठा की द्योतक है।

हमारे परिवार में नाक के प्रति सबका अलग-अलग मत रहा—मां के लिए नाक सरलता, मौसी के लिए दंभ, तथा इजरी के लिए नाक बुद्धि की प्रतीक थी। मामा हनीफ के लिए नाक गौरव की व मामा मुस्तफा के लिए नकचढ़ा कहने का संबोधन थी नाक। घर में रखे पीतल के बंदर के चेहरे पर नाक ही नहीं थी। और मेरे चेहरे पर ?

नाक के संकेत

नाक की खुजली के रहस्य और झील के सारे रहस्य ताई ने दादा को सिखाये थे। शायद ही किसी को याद पड़ता हो कि ताई कभी युवा भी थे। जब झील पर से बर्फ का जमघट हट जाता, तब ताई का छोटा शिकारा भी जाग जाता। शिकारे के पीछे झुककर ताई खड़े हो जाते और पतवार को जैसे ही पानी में चलाते जल-तरंग बज उठती। वे ही मेरे दादा को समझाते कि जीवन-इतिहास को गति दो, हर पल इतिहास है। मगर दादा थे कि इतिहास से चिढ़ते थे, उसके आलोचक थे। हां, बाबा के पिताजी की ताई के बारे में यह धारणा थी कि दांतों के साथ-साथ उसका दिमाग भी झर गया है।

नाक का महत्त्व बताते हुए ताई ने दादा से कहा था कि, "यह वह बिंदु है, जहां भीतर का संसार, बाहर के संसार से भेंट करता है। बाह्य संसार के आक्रमण को, नाक से ही महसूस करो। तुम कभी उससे परेशान होकर उसे दबाते हो, खुजाते हो; सहलाते हो। नाक के संकेतों को समझना सीखो, कभी मात नहीं खाओगे।" हर तकलीफ और परेशानी के समय दादाजी की नाक में खुजली होने लगती है !

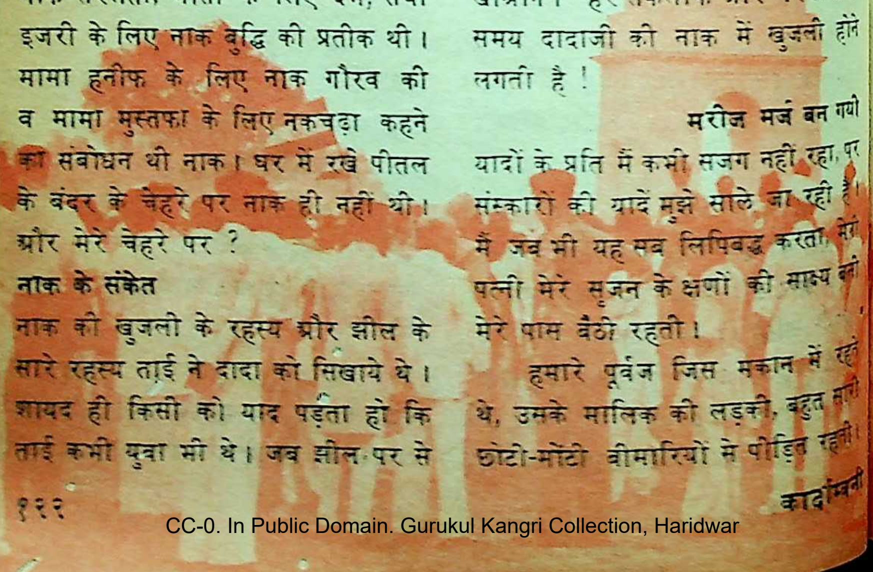

मरीज मर्ज बन गयी

यादों के प्रति मैं कभी सजग नहीं रहा, पर संस्कारों की यादें मुझे सालते जा रही हैं। मैं जब भी यह सब लिपिबद्ध करता, मेरी पत्नी मेरे सृजन के क्षणों की साक्ष्य बनी मेरे पास बैठी रहती।

हमारे पूर्वज जिस मकान में रहते थे, उसके मालिक की लड़की, बहुत सारी छोटी-मोटी बीमारियों से पीड़ित रहती।

हर बार किसी शिकारेवाले को भेजा जाता कि वह जाकर मेरे दादा डॉ. आदम अजीज को बुलाकर लाये। नसीम को कोई भी एक बीमारी दुबारा नहीं होती थी।

धीरे-धीरे नसीम मरीज से खुद दादा का मर्ज बन गयी। उसकी तसवीर उनके मस्तिष्क में उतरती चली गयी। एक कोलाज-सा बन गया—वे उसे देखने गये हैं, उसे दवाई दे रहे हैं, सांत्वना दे रहे हैं; वह उन्हें टुकुर-टुकुर निहार रही है। वह उसकी चमेली सुगंध को महसूसते। हां, नसीम का चेहरा सामने साकार कभी नहीं हो पाता, क्योंकि संकोचवश उन्होंने गौर से उसे कभी नहीं देखा।

१९१८ के आसपास नसीम के घर जाना डॉक्टर आदम अजीज की आदत ही बन गयी।

६ अप्रैल, १९१९ को पवित्र शहर अमृतसर के एक होटल की खिड़की से खड़े वह शहर के नजारे देख रहे थे। एक अजीब-सी गुबरैली गंध उनके नथुनों को परेशान कर रही थी। पास में ही थी, नसीम, जो अब नसीम अजीज हो चुकी थीं।

यह पहला अवसर था जबकि किसी बीमारी की उनके सिर में पुनरावृत्ति हुई हो। और डॉ. अजीज थे कि शहर को अपनी सांसों से समेट लेना चाहते थे। स्वर्ण गुरुद्वारा चमक रहा था। सहसा डॉ. आदम अजीज की नाक में खुजली होने लगी। एक लड़के ने आकर तभी उन्हें एक पैंफलेट पकड़ा दिया, जिसमें हड़ताल की सूचना थी।

लाल दवाई है, खून नहीं

जब आदम अजीज ने नसीम को हड़ताल के बारे में बताया तब उन्हें हड़ताल शब्द में मातम का अभिप्राय लगा। वह समझ नहीं पा रही थीं कि जब कोई मरा नहीं तो मातम कैसा? फिर उनकी परेशानी यह भी थी कि गाड़ियां नहीं चलेंगी, तो हम यहीं फंस जाएंगे।

उधर डॉ. अजीज ने अपना चमड़े का बैग उठाया और चल दिये सेवा के लिए। जब लौटे तब कपड़ों पर खून के धब्बे लगे हुए देखकर, नसीम घबरा गयीं, "अल्लाह यह क्या? हाय, मैंने किससे ब्याह कर लिया जो गुंडों से लड़ता रहता है! अच्छा अब बैठ तो जाओ। मैं इन धब्बों को तो धो दूं।"

डॉ. साहब समझाते रहे, "यह लाल दवाई है, खून नहीं है।" और नसीम तर्क देती रहीं, "तुमने जानबूझकर कहानी बनायी है, तुम क्या समझते हो? मैंने भी किताबें पढ़ी हैं।"

१५ अप्रैल, १९१९ तक वे लोग वहीं पर थे। नसीम भयभीत हो रही थीं कि वे लोग वहां से नहीं जा सकते क्योंकि, अमृतसर में डॉ. अजीज की जरूरत जरूर पड़ेगी।

उस दिन अमृतसर में दोपहर को लोग सड़कों पर जनरल डायर की चर्चा कर रहे थे, जिसने सार्वजनिक सभाओं और

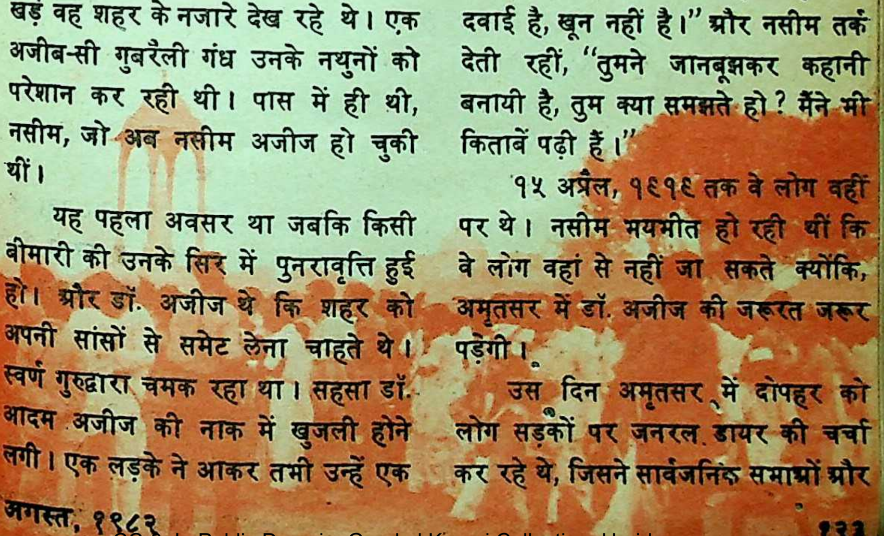

जुलूसों पर प्रतिबंध लगा दिया था। अमृतसर के सबसे बड़े कंपाउड जलियांवाला बाग में एक आमसभा का आयोजन था।

जिंदगी निगलतीं मशीनगनें

डॉ. आदम अपने बैग के साथ वहां पहुंचे और उस भीड़ के मुंह पर खड़े हो गये। कोई व्यक्ति अत्यधिक भावुक शैली में भाषण दे रहा था और डॉ. आदम की नाक में खुजली बढ़ती जा रही थी। एक प्रशिक्षित डॉक्टर होने के नाते वे बार-बार उसे नकार रहे थे। हॉकर जोर-जोर से चने बेच रहे थे।

मेरे दादा ने चारों ओर नजर दौड़ायी। उन्हें एक भी गुंडा नजर नहीं आया, पर नाक में तीव्र सनसनी वे महसूस कर रहे थे। वे भीड़ के बीचों बीच चले गये और उनकी नाक कुछ अजीब-सा महसूस करती रही। तभी डायर अपने पचास सिपाहियों के साथ बाग के संकरे मुंह पर आकर खड़ा हो गया और तुरंत ही सिपाही दो भागों में बंटकर उसके दायें-बायें खड़े हो गये।

डायर की मूंछों से आदेश निकला ही था कि एक सरसराहट बड़ी तेजी से दादा की नाक में हुई और एक जोर की छींक के साथ वह जमीन पर आ पड़े। डॉक्टरी अटैची गिरकर खुल गयी, दवाइयां चारों ओर शीशियों को तोड़कर छितर गयी। उधर लाल दवाई के छींटे उन पर पड़ते रहे और मशीनगन से निकली गोलियां जाने निगलने लगीं। निगले जाने की आवाज मेरे दादा डॉ. आदम अजीज जमीन पर पड़े-पड़े सुनते रहे, लोग उन पर गिरते रहे। और अंत में उन्होंने डायर को अपने आदमियों से यह कहते सुना—"हमने सचमुच में बहुत अच्छा कार्य किया—शाबाश!" उन्होंने अपनी-अपनी मशीनगनें कंधों पर टांगीं और चले गये।

मशीनगनों ने छह सौ पचास राउंड निरीह लोगों पर चलाये और पांच सौ साठ लोगों की जाने लीं।

उस दिन की घटना के बाद रात को मेरे दादा जब घर लौटे, तब दादी एक आधुनिक महिला की तरह अभिनय करने लगीं। वह बोलीं, "आज फिर मरक्यूरोकोर्म लगा लिया।"

"नहीं, यह खून है।" डॉक्टर साहब ने कहा।

"क्या चोट बहुत आयी है?"

"नहीं, यह तो लोगों का खून है।"

"पर तुम गये कहां थे?"

"इसी धरती पर ही था।"

बस किसी तरह दादा को पुनर्जीवन मिला। वे बच गये।

सच मानिए, यह सब लिखते हुए मेरे हाथ रह-रहकर कांपते हैं, हम सब ही

तो मृत्यु के देनदार हैं।

कुछ यथार्थ-जैसा अतीत, कुछ किवदं-ियां, सब मिलाकर एक बहुत बड़े सत्य का निर्माण करती हैं, संस्कारों का निर्माण करती हैं। जनश्रुतियां—यथार्थ से कहीं अधिक उपयोगी सिद्ध हो जाती हैं।

ऐसी ही ढेर सारी ऐतिहासिकता का इतिहास है मेरा परिवेश, जिसमें मैंने जन्म लिया, मेरा परिवार जिसने मुझे पाला।

ुरस्कृत होने का आत्मविश्वास

स्वतंत्रता के शुभ अवसर को मनाने का देश देते हुए बंबई से प्रकाशित होनेवाले क महत्वपूर्ण अखबार के इस समाचार ने रेक आंख को आकर्षित किया—'बंबई में ो भी महिला स्वतंत्र-राष्ट्र-जन्म-क्षण पर तान को जन्म देगी, उसे पुरस्कृत किया ाएगा।'

अमीना सिनाई, अभी पूरी तरह ाग भी न पायी थीं, उनकी आंखें अखबार ी इन पंक्तियों को देखते ही चमक उठीं। खबार को तुरंत अपनी ओर खींचा; अपनी ावाज में सारे आत्मविश्वास को समेट-र पति के सामने घोषणा की, "जानम, बना यह पुरस्कार हमें ही मिलेगा।"

और उस दंपत्ति की आंखों के आगे ह समाचार घूम गया जो, अखबार छपेगा, 'बालक सिनाई का जन्म—तंत्रता के शुभ अवसर पर। बालक ी कि महान क्षणों की देन है।' उन्होंने ल्पना की कि उनके होनेवाले नन्हे का त्र भी समाचारपत्र में छपेगा।

अमीना के पति अहमद ने ऐसी संभावनाओं के प्रतिकूल तर्क भी दिया, किंतु आत्मविश्वास ने निश्चय कर दिया, बालक के जन्म के समय को।

स्त्रियों की अंतःप्रज्ञा सचमुच ही विलक्षण होती है। पड़ोस की महिला वनीता भी गर्भवती थी और उसने भी निश्चय ही उस समाचार को पढ़ा होगा, पर मेरी मां को विश्वास था, यह पुरस्कार उनको ही मिलेगा। और सिर्फ यही नहीं। जुड़वां बच्चे होंगे।

जून के अंत में वर्षा के आगमन के साथ-साथ संतान ने मां की कोख में लगभग अधिकार जमा लिया था। नाक, आंख; घुटनों के साथ-साथ निश्चित हो गया था कि कितने सिर होंगे। नियति सब कुछ निर्धारित कर चुकी थी।

भटकना कागज के जंगल में

जिसे अंततः पूर्ण विराम ही बनना है, वह अल्प विराम बना, शब्द बना, वाक्य बना, पैराग्राफ बना; अध्याय बना और प्रगतिवश उलझता चला गया। पुस्तक बनने के क्रम में एनसाइक्लोपीडिया और समूची भाषा ही बनने को जो आतुर हो गया। जी हां! मां का पेट अब बहुत बड़ा आकार ले चुका था।

उस दिन खूब वर्षा हुई। पानी खिड़की की संदों को चीरता हुआ कमरे

में आ जाता। तौलियों के बांध भी उसे कमरे में प्रवेश करने से रोक नहीं पाते थे। सागर अब फैलने लगा था। वह निकट क्षितिज पर तैरते बादलों से गले मिलना चाहता और उधर बालक धरा पर आना चाहता था।

वर्षा आ-आकर मां के कान के निकट ढोल बजाती और वे आशंकित हो जातीं। उल्टा-सीधा सोचतीं—महसूसतीं मानो वह मुगलकालीन कातिल हैं।

घड़ी की सुइयां बड़ी तेजी से पंद्रह अगस्त की ओर बढ़ने लगी थीं। मां को विश्वास था कि जैसे ही टिक्-टिक् एक पल को बंद होगी, बालक का जन्म होगा। मानो बालक उद्भव का क्षण आते ही घड़ी को रोक देगा।

हमारे पिता का नौकर मूसा इस खबर को लेकर उड़ चला रसोई की तरफ। सभी नौकर यही कहने लगे, 'यह बालक दस रुपये का होगा।' दस रुपये बख्शीश के रूप में उन्हें मिलनेवाले जो थे!

ज्योतिषी कांग्रेस पार्टी के नेताओं को भविष्यफल बता रहे थे और मां दोपहर में ऊंघ रही थीं। जब श्रीमती मांउटबेटन अपने स्टाफ में प्रशिक्षित लोगों की कमी महसूस कर रही थीं, मां पंखे के नीचे लेटी गहरी नींद सो रही थीं।

एम. ए. जिन्ना ग्यारह घंटे पहले से ही पाकिस्तान बनने के स्वप्न देख रहे थे; अमीना का मन कुछ और ही सोचने में लगा था। सोते-सोते वह एक भयावह स्वप्न देखती हैं कि वह पतंग की तर रही हैं—कभी कोई गोलाकार वस्तु अपने में समेटकर उड़ाये लिये जा र और अचानक उन्हें कागजी जंगल में देती है। वह जंगल उन्हें जकड़ लेता वह छूटने के लिए संघर्षरत हैं, रो र और अचानक उनके आंसू भी कागज हो जाते हैं। जंगल उन्हें पकड़े रहता उनके कपड़े फाड़ता है, उनके गर्भ को करना चाहता है; जिसे बचाने के वह जोर-से चीखती हैं और उनका रुंध जाता है। चीखने की कोशिश क हैं और मूसा उन्हें झझकोर कर उठा है, 'बेगम साहिबा, क्या कोई दुः देखा!'

मेरे द्वारा संस्कारों के साथ षिक्त होने से कुछ घंटे पूर्व मेरी मां का स्वप्न देख रही थी और मेरे पिता अंगरेज मित्र के साथ बैठे दारू पीते नशे में भावुक होकर अपने आपको का वंशज बता रहे थे। उनकी इस की बातों से यह सिद्ध होता है कि वे भी यही चाहते थे कि उनकी अनुवां किंवदंतियों की चर्चा बार-बार हो।

उड़ते हुए कागजी सपनों तथा क निक वंशक्रम का वंशज होनेवाला जिसके होने में एक दिन से अधिक बाकी था। टिक-टिक की आवाज बता रही थी कि अब २६ घंटे रह . . . २८ घंटे रह गये . . . २७ रह गये . . .।

और क्या स्वप्न उस अंतिम रात को देखे जा सकते हैं! उधर डॉ. नारलिकर इस बात से अनिभिज्ञ थे कि कौन-सा ड्रामा उनके नर्सिंग होम में मंचित होनेवाला है। उसी रात को ही पाकिस्तान का जन्म होनेवाला था। मेरे मामा हनीफ, जो अपनी बहन की तरह बंबई आये थे, अभिनेत्री पिया के प्रेमपाश में पड़ गये। पिया के बारे में प्रसिद्ध था कि उसका सौंदर्य ही उसका परिचय है, उसका भविष्य है।

ऐसा लगने लगा था कि वह रात 'मिथ', दुःस्वप्नों व फंतासियों की रात है। उसी रात को कॉर्नविलास रोड स्थित अपने घर में मेरे बाबा अतीत की यादों में खोये हुए थे। हां, दादी की जिजीविषा ने फिर भी उन्हें जीवंत बनाया हुआ था।

१४ अगस्त की सुबह जबकि १५ अगस्त आने में १६ घंटे शेष थे, किसी शक्ति ने सोते हुए मेरे बाबा को अतीत-कक्ष में ले जाकर पटक दिया। वह यादों के पृष्ठों को पलटते रहे और बड़ी जोर से चीख पड़े।

उधर उल्टी गिनती जारी थी १८ घंटे, १७ घंटे, १६ घंटे . . . और डॉ. नारलिकर के नर्सिंग होम में वनिता पिछले आठ घंटे से प्रसव दर्द को सह रही थी। नर्सिंग होम उसकी चीखों से गूंज रहा था। जब उसको पहला दर्द हुआ, तब मीलों दूर एम. ए. जिन्ना ने पाकिस्तान के जन्म की घोषणा की। और वनिता अभी तक 'डॉ. नारलिकर चैरिटी वार्ड' में प्रसव पीड़ाएं सह रही थी। स्थिर नेत्रों और पसीनों से तरबतर वह अपने सिर को इधर से उधर पटक रही थी और बालक था कि जन्मने का नाम ही नहीं ले रहा था। वह भी शायद निश्चय कर चुका था कि अर्धरात्रि को ही जन्म लेगा।

दो कोख अपने आपको स्वतंत्रता के शुभ तथा पुनीत अवसर पर ही संतान को जन्म देने के लिए दृढ़प्रतिज्ञ थीं।

शहर में अफवाहें थीं कि नक्षत्र प्रतिकूल हैं। तमाम आशंकाओं के बावजूद शहर की आंखों में चमक थी। सारे शहर में त्यौहार मनाया जा रहा था। अब केवल १४ घंटे शेष थे, जबकि एक नये 'मिथिकल त्यौहार' का प्रादुर्भाव होने जा रहा था। राष्ट्र, जो कहीं अपना अस्तित्व खो चुका था, पुनः स्वतंत्र होनेवाला था। शतरंज के खेल को जन्म देनेवाला देश कुछ घातों (चालों) को नहीं समझ पाया, मात खा गया।

१२ घंटे बाकी रह गये। अमीना सिनाई किसी दुःस्वप्न को देखकर चौंक उठीं। अब वह सो नहीं पा रही थीं, समुद्र की लहरों की तरह हिलोरें खा रही थीं—जिसकी गहराइयों में एक आशंका थी, अंधकार की झलक थी। बिना किसी चेतना द्वारा निर्देश पाये वें अपने पेट को सहलातीं, सूखे अधरों पर जीभ फेरतीं, बुदबुदातीं, "बच्चे अब तो जन्म ले लो।"

एक साधु ने आकर द्वार खटखटाया।

हमारे नौकर मूसा ने पूछा, "क्या चाहिए ?" साधु ने उत्तर दिया, "मैं मुबारक समय में आनेवाले की प्रतीक्षा कर रहा हूं।"

विश्वास कीजिए, मेरे जन्म को लेकर दो बार भविष्यवाणियां हुईं, सब कुछ हुआ, पर मैं नहीं हुआ। इसका कारण यह था कि मेरी मां ने जन्म के समय को लेकर जो कुछ भी सोचा था, वह ध्रुवसत्य सिद्ध होना था!

उन साधु महाराज के मुख से निकले शब्दों ने अब असर दिखाना शुरू कर दिया। माँ ने पिता से कहा, "बालक जन्म लेने के लिए हठ कर रहा है।"

मेरे पिता ने तुरंत मां को अपने मित्र होमी कैटराक की कार में बिठाया और डॉ. नारलिकर नर्सिंग होम ले आये। नर्सिंग होम के बाहर लोग पटाखे छोड़ रहे थे। केसरी, हरे और सफेद रंगों से बंबई रंगा हुआ था।

दो नन्ही किलकारियां

रात के बारह बजने में २६ मिनट शेष रह गये थे—नर्सिंग होम का स्टाफ बहुत कम था—अधिकतर लोग राष्ट्र के जन्म को मनाना चाहते थे—मानवीय जन्म के प्रति उन्हें इतनी चिंता थी भी नहीं।

अब २० मिनट रह गये थे। हर मिनट के बाद अमीना सिनाई की आहें वातावरण में गूंजतीं तो दूसरे वार्ड में, जो गरीबों के लिए था, वनीता की आहें आ रही थीं।

गलियों में, सड़कों पर लोग खुशियां मना रहे थे, रंगों में नयी उमंग बह रही थी—और खून में केसरी और हरी उमंगें बह रही थीं।

बारह बजने में दो मिनट बाकी रह गये हैं। डॉ. नारलिकर नर्सिंग होम में काले रंग के डॉक्टर, फ्लोरी नामक दाई के साथ अमीना सिनाई को प्रसव के दौरान प्रोत्साहित कर रहे थे।

उधर पड़ोसवाले कमरे में डॉ. बोस, दाई मेरी फरेरा के साथ वनीता को चौबीस घंटे पूर्व से आ रही प्रसव पीड़ा के परिणाम के साक्ष्य बने हुए थे, "बस अब आखिरी प्रयास और करो . . . सबकुछ ठीक हो जाएगा।" महिलाओं की आहें और चीख की आवाज नर्सिंग होम में गूंज रहीं थी जबकि आदमी लोग शांत बैठे थे। अहमद सिनाई बैठने के लिए कुरसी खोज रहे थे। उन्होंने कमरे का दरवाजा खोला। स्वागत-कक्ष, जो वीरान-सा पड़ा था; उसमें एक कुरसी पड़ी थी, जिसे घसीटते हुए वह कमरे में ले जाने लगे और उधर—मध्य रात्रि की घोषणा हो गयी।

गलियों में लोगों की चहल-पहल गूंजने लगी। दिल्ली में जवाहरलालजी की ओजस्वी वाणी गूंज रही थी, "बारह के घंटे के बजते ही हमने स्वतंत्रता की सांस ली। हम सब अब जागे हैं, जबकि सारा संसार सो रहा है।" उत्साह और उमंग के आवरण को तोड़ता हुआ दो नये जन्मे बालकों का क्रंदन एक साथ सुनायी पड़ता है। मानो वे भी खुशियों को अपने

तरीके से
में तिरंगा
कह रहे थे,
आते हैं जब
हैं और पु
जुट जाते
ऐसा ही
कमरे में अ
पकड़े बैठे
में। तभी
करते हैं--'
आपकी बेग
को जन्म दि
पैरों पर गि
बिलबिला
वातावरण
यह चोट भ
क्योंकि उस
से ओतप्रोत
थे। उधर
"आज हमा
चारों ओर
लगा।

पिताजी
और आक
उनके पास
और वनीता
दोनों ने ए
डॉ. बो
मद सिनाई
चार करने

तरीके से व्यक्त करना चाहते हैं। आकाश में तिरंगा लहराने लगा। जवाहरलालजी कह रहे थे, "ऐसे क्षण इतिहास में बहुत कम आते हैं जबकि हम पुनः नवीन होना चाहते हैं और पुराने को त्याग नये निर्माण में जुट जाते हैं—ऐसा लगता है, जैसे हमें ऐसा ही नया जीवन मिला है।" उधर कमरे में अहमद सिनाई जड़वत कुरसी को पकड़े बैठे थे—भावी घटनाओं की कल्पना में। तभी डॉ. नारलिकर उन्हें सूचित करते हैं--"मध्यरात्रि के प्रादुर्भाव के साथ आपकी बेगम साहिबा ने एक स्वस्थ बालक को जन्म दिया है।" खुशी में कुरसी उनके पैरों पर गिर पड़ती है और वे चोट से बिलबिला उठते हैं। एक चीख फिर से वातावरण में गूंज जाती है। मैं समझता, यह चोट भी उन्हें मेरी वजह से ही लगी क्योंकि उस समय वह मेरे प्रति अनुराग से ओतप्रोत थे, मेरे ही बारे में सोच रहे थे। उधर जवाहरलालजी कह रहे थे, "आज हमारे दुर्भाग्य का अंत हो गया।" चारों ओर स्वतंत्रता का शंखनाद गूंजने लगा।

पिताजी की चीख ने सबको अपनी ओर आकर्षित किया और दौड़कर सब उनके पास पहुंच गये। अमीना सिनाई और वनीता की सिसकारियां दब गयीं। दोनों ने एक-एक पुत्र को जन्म दिया।

डॉ. बोस और डॉ. नारलिकर अहमद सिनाई के पंजे पर लगी चोट का उपचार करने में लग गये और उन्होंने दोनों दाइयों को आदेश दिया कि वे बच्चों को नहला-धुला दें। दाई मेरी फरेरा ने तत्काल अपना सहयोग कार्य शुरू कर दिया।

ऑफिसर अपने एक क्लर्क के काम से नाखुश थे। वह बेहद कामचोर तो था ही, मगर कभी-कभी बड़ी जल्दी में काम निबटा देता, जिससे गलतियां स्वाभाविक थीं। एक दिन इसी प्रकार कोई गलती देख बॉस ने क्लर्क को बुलाया और कहा, "मिस्टर, जानते हो जल्दबाजी काम बिगाड़ती है।"

"जी हां।" क्लर्क ने कहा, "इसीलिए तो मैं आज का काम कल पर छोड़ता हूं।"

भाग्य-लिपि बदल दी

अब वह अकेली थी और दोनों नवजात बच्चे उसके हाथ में थे। और दो जीवन उसकी शक्ति के वश में। उसने दोनों बच्चों के नाम की पट्टियों को बदल दिया। गरीब बच्चे को अमीरी का अधिकार दे दिया और अमीर बच्चे के भाग्य में गरीबी लिख दी।

मेरी फरेरा ने, उस बच्चे की, जिसकी आंखें कश्मीरी आकाश जैसी नीली तथा बिलकुल अंगरेजों के समान थी, नाक नाटकीय रूप से कश्मीरी दादा-जैसी थी, उसकी एड़ी पर सिनाई नाम की पट्टी लगा दी।

मेरी फरेरा के इस अपराध का आभार प्रकट करता हूं मैं। उसी वजह से मैं सिनाई पुत्र कहलाया। मुझे तिरंगे में लपेटा गया।

माथे को सजाए, चेहरे की शोभा बढ़ाए

आइटेक्स
डीलक्स कुंकुम
matt finish

आपकी खूबसूरती में चार चाँद लगाए...
चेहरे की सुन्दरता पर फूलों सा निखार लाए
...आइटेक्स डीलक्स कुंकुम १४ रंगों में
आपके मन भाए.
वैज्ञानिक तौर से बने इस कुंकुम का आपकी
त्वचा पर कोई बुरा असर नहीं होता.

आइटेक्स
३१ वर्षों से बेहतरीन उत्पादनों
के लिए भरोसेमंद नाम

अरविंद लेबोरेटरीज़, मद्रास-[illegible]३३

Imageads M-AL-1427 Hin

DELUXE KUMKUM
EYTEX
EYTEX

मुझे ही मध्यरात्रि में जन्मा हुआ, वह ना हुआ बालक माना गया। जी हां, मुझे जिसके माता-पिता अब वह नहीं थे न्होंने उसे जन्म दिया। मेरी ने उस बच्चे को, जिसे मेरे अब की माता ने अपनी कोख से जन्म दिया, हरे कपड़े में लपेटा और नीता के पति के हाथों में सौंप दिया। से नहीं पता कि बीच में क्या घपला हो या। उसे तो यही मालूम पड़ा कि डॉक्टरों की सारी कोशिशों के बावजूद वनीता पने प्रसव-पीड़ा के दौरान अधिक खून ह जाने से मर गयी।

मुझे अमीना सिनाई के पास ले जाया या, जिसे मेरी सत्यता पर तनिक भी देह नहीं हुआ। अहमद सिनाई टूटा हुआ ना लिये अपनी पत्नी के बिस्तरों पर ठे हुए थे। अमीना बोली, "देखो जानम, च्चे की नाक बिलकुल दादा पर गयी है।" रे पिता रहस्यपूर्ण ढंग से मुझे देखते हे। और मां इस बात की टोह लेती रहीं क मेरे एक ही सिर है या दो हैं।

फिर उन्होंने मेरे पिता से कहा कि अखबारवालों को सूचित तो कर दो। ने कहा था कि मैं ही जीतूंगी।"

और कहीं दूर वातावरण में जवाहर ल की आवाज सुनायी पड़ रही थी ब समय आ गया है, जब हमें छोटी-टी आलोचनाओं की ओर ध्यान नहीं ना है। हमें स्वतंत्र भारत को एक आदर्श ष्ट्र बनाना है, जहां उसके हर बच्चे यें, प्रफुल्लित रहें।" और तिरंगा झंडा

मैं गलत हूं

बहुत पुराने समय की बात है, चीन में आवंती नाम का एक बुद्धिमान आदमी रहता था। एक रात आवंती कब्रिस्तान के पास से गुजर रहा था। कुछ घुड़सवारों को अपनी ओर आता हुआ देखकर उसे संदेह हुआ कि उनके इरादे अच्छे नहीं हैं अतः उसने हाल ही की खुदी एक कब्र में अपने आपको छुपा लिया। लेकिन कब्र में उतरते समय उसे घुड़सवारों ने देख लिया था, वे हैरान थे कि वह करना क्या चाहता है?

वे कब्र के पास आये और चिल्लाकर बोले, "तुम कौन हो?"

आवंती ने कब्र से सिर बाहर निकाला तथा बोला, "भाई! मैं इस कब्रिस्तान में दफन मृत आदमियों में से एक हूं।"

"पर मृत आदमी रात के समय ऊपर क्या करने आया है?"

"केवल ताजा हवा लेने।"

"क्या मृत आदमी को भी ताजा वायु की आवश्यकता होती है?"

"आ, हां, हां--तुम ठीक हो, मैं गलत हूं।"

ऐसा कहते हुए आवंती पुनः कब्र में सरक गया।

मूल चीनी से --अनु.: स. प्र.

लहराने लगता है।

शैतान नहीं हूं

यह सब सुनते ही मेरी पत्नी पद्मा असंयत होकर उठती है—"इसका मतलब तुम एंग्लो-इंडियन हो। तुम्हारा यह नाम भी तुम्हारा नहीं है।"

"नहीं मेरा नाम ही सलीम सिनाई है, चिड़चिड़ा, नकचढ़ा, गंजा, चांद का टुकड़ा।" मैंने समझाया।

"पर तुम मुझे अब तक मूर्ख बनाते रहे, तुम्हारी मां, तुम्हारे पिता, तुम्हारे अंकल, तुम्हारे दादा वास्तव में ये लोग नहीं हैं। तुमने अभी तक यह नहीं बताया कि तुम्हारी असली मां तुम्हें जन्म देकर मर गयी। तुम्हारे पिता कहीं गरीबी में

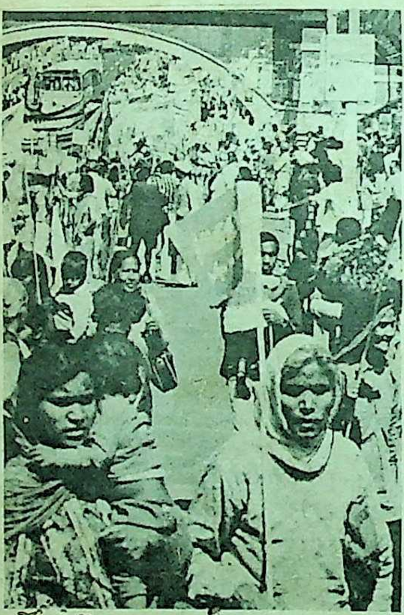

दर-दर की ठोकरें खा रहे होंगे। वास्तव में खौफनाक शैतान हो।"

"नहीं, मैं शैतान नहीं हूं। नही
उस छल का दुःख है। मैंने तो खुद
सारी पड़ताल की। और सबसे बड़ी
तो यह रही कि जब मेरी फरेरा
छल का पता भी चल गया तो भी
दंपत्ति पर इसका कोई प्रभाव नहीं पड़
तो अब भी उनके लिए उन्हीं का पुत्र

सबने हमें सपना माना। हमारे
के समय ही भारत का स्वतंत्र होने
सपना साकार हुआ। हमें अंशतः ही
माता-पिता का वंशज माना गया।
हम तो उस क्षण के वंशज हैं जबकि
ने पहली स्वतंत्र सांस ली थी।

अब यदि कोई उनसे इस बारे
कि उनका बेटा कौन है, तो गलती
वे उसे नहीं बताएंगे, जो कि मेरे
बदला गया।

सच जानिए, हमारे देश में लोग
को सत्य मान लेते हैं। बहुत भोले
बच्चे जरूरी नहीं, माता-पिता की
हों। वे तो वक्त द्वारा जन्मते हैं।
पिता तो मात्र माध्यम बनते हैं।
रीति में जन्मे ये दोनों बालक
समय द्वारा ही संचालित हुए—
अगस्त, १९४७ को बारह बजे। ऐसा
देश में संभव है—हमारे देशवासी
जीवी जो हैं।

सच जानिए, समाचारपत्रों ने
जन्मोत्सव मनाया, राजनीतिज्ञों ने

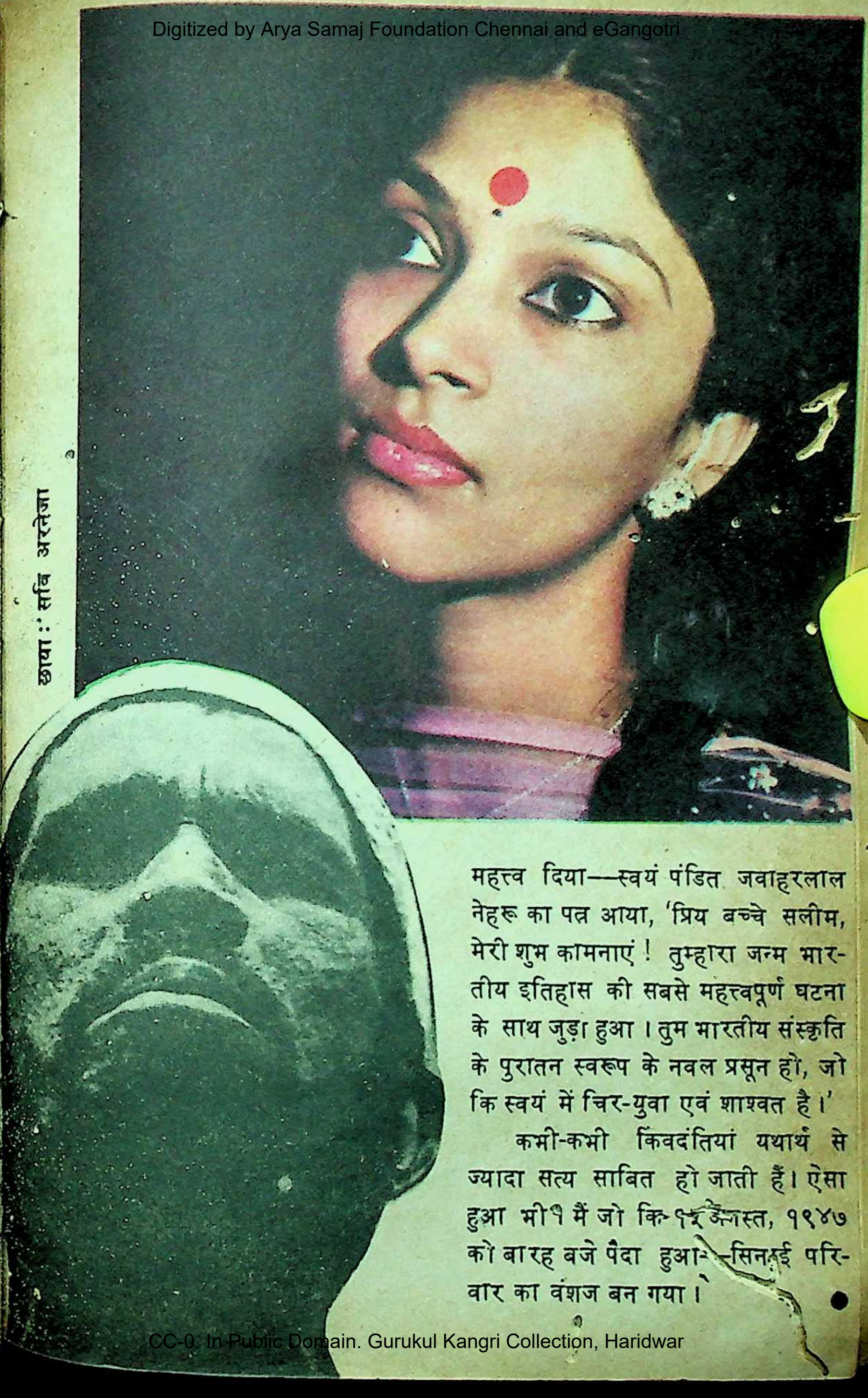

छाया : सवि अरोड़ा

महत्त्व दिया—स्वयं पंडित जवाहरलाल नेहरू का पत्र आया, 'प्रिय बच्चे सलीम, मेरी शुभ कामनाएं! तुम्हारा जन्म भारतीय इतिहास की सबसे महत्त्वपूर्ण घटना के साथ जुड़ा हुआ। तुम भारतीय संस्कृति के पुरातन स्वरूप के नवल प्रसून हो, जो कि स्वयं में चिर-युवा एवं शाश्वत है।'

कभी-कभी किवदंतियां यथार्थ से ज्यादा सत्य साबित हो जाती हैं। ऐसा हुआ भी। मैं जो कि १५ अगस्त, १९४७ को बारह बजे पैदा हुआ—सिनाई परिवार का वंशज बन गया। ●

ESTAMPILLAS 1976 RARAS Y FAMOSAS
1847 MAURICIO 'OFICINA DE CORREOS'
correo 1 ct NICARAGUA
correo 3 cts NICARAGUA
1854 AUSTRALIA OCCIDENTAL "MARCO INVERTIDO"
correo 2 cts NICARAGUA
STAMPEX · LONDON · 1967
SOUTH ARABIA
QU'AITI STATE IN HADHRAMAUT

एक गलती ऐसी होती है, जिसके लिए लाखों का जुरमाना भरना पड़ सकता है, और एक गलती ऐसी होती है, जो लाखों रुपयों का फायदा करा जाती है। डाक-टिकटों में मुद्रण या डिजाइन संबंधी गलती, ऐसी ही एक गलती है। अनजाने में हो गयीं इन गलतियों ने कुछ डाक-टिकटों को अमूल्य बना दिया है।

डाक-टिकटों की इन गलतियों के सबसे पुराने व रोचक उदाहरण मारिशस में ३० सितंबर, १८४७ को जारी कि एक पेनी व दो पेंस के नारंगी व हरे टिकटों के रूप में मिलते हैं, जिन पर इनकार जे बर्नार्ड की भूल से 'पोस्ट के स्थान पर 'पोस्ट आफिस' छप था। ये डाक-टिकट अब 'मारिशस प आफिस' के नाम से मशहूर हैं। ऐसे पेनीवाले १४ डाक-टिकट और २ पेंस १२ डाक-टिकट अब तक खोज नि गये हैं। एक ऐसा लिफाफा, जिस

गलतियों से भी फायदा होता है!

• गोपीचंद श्रीनागर

ये दोनों डाक-टिकट लगे हुए हैं, एक डाक-टिकट नीलामी में ४ लाख पौंड की बोली पर छूटा है। केवल एक पेनीवाले डाक-टिकट की कीमत ३ लाख पौंड कूती गयी है। २ पेंसवाले डाक-टिकट की कीमत भी लगभग ३ लाख पौंड है।

१८६५ में वेस्टर्न आस्ट्रेलिया के २ पेंस व ६ पेंस के हंस चित्रवाले कुछ हरे डाक-टिकटों के रंग या तो फीके थे या दो-दो बार छप गये थे। ४ पेंसवाले इन कुछ डाक-टिकटों में मध्य की डिजाइन उलटी छप गयी थी। बस, फिर क्या था, नीलामी में इनकी कीमतें ऊपर चढ़ गयीं।

भारतीय डाक-टिकटों में, १८५४ में निकला महारानी विक्टोरिया के उलटे सिरवाला चार आने मूल्य का छिद्रणरहित, हलका-नीला डाक-टिकट आज कीमतों की बुलंदी पर जा पहुंचा है। आज ऐसे डाक-टिकट केवल दो दर्जन ही बच रहे हैं। इनमें से एक-एक की कीमत लगभग सवा तीन लाख रुपये लगायी गयी है।

डाक-टिकटों में बीच की उलटी छपी डिजाइनों के और भी कुछ नमूने बतलाये जाते हैं। १८६९ में १५ सेंट के अमरीकी डाक-टिकटों का एक पूरा पत्ता उलटा छप गया था। १३ मई, १९१८ में निकाले २४ सेंट के डाक-टिकटों में भी ऐसा ही हुआ था, जब एक पूरे पत्ते में इन डाक-टिकटों के बीच का उड़ता हुआ हवाई जहाज उलटा छप गया था। १८७१ में निकाला ५०० मोन का अमूल्य जापानी एकमात्र डाक-टिकट भी इसी श्रेणी में आता है। न्यूजीलैंड का ४ पेंसवाला एक डाक-टिकट अपनी उलटी डिजाइन में मिलता है।

POSTAGE
H
ONE PENNY

पेनी ब्लैक डाक-टिकट

अब जहां भी कहीं, कोई अंतरराष्ट्रीय डाक-टिकट प्रदर्शनी जुड़ती है, वहां इन टिकटों को देखने के लिये दर्शक टूट पड़ते हैं। इन कुछ डाक-टिकटों की इतनी अधिक कीमतें लग जाने के कारण आज के डाक-टिकट संग्राहक जरा-जरा-सी गलतियों को भी सावधानीपूर्वक सहेजकर रखने लगे हैं।

इधर आधुनिक डाक-टिकटों में कुछ अन्य महत्त्वपूर्ण गलतियां भी देखने में आयी हैं, जिसके कारण इन डाक-टिकटों का मूल्य बाजार में अनाप-शनाप बढ़ा है।

सामने के पृष्ठ पर (रंगीन पारदर्शी) : कुछ दुर्लभ डाक-टिकट

इन में से कुछ उदाहरण यहां प्रस्तुत हैं।

१९७८ में फारोय आइलैंड ने अपने माइकिंस आइलैंड पर १३० ओर मूल्य के बहुरंगी डाक-टिकट निकाले थे। इन २० डाक-टिकटों का एक पूरा पत्ता रंगों की गड़बड़ी से देश के नाम, मूल्य, अंक और माइकिंस-जैसे महत्त्वपूर्ण शब्दों के बिना ही छपा हुआ बिक गया था।

१९७३ के बड़े दिन पर निकले इंगलैंड के साढ़े तीन पेंस के बहुरंगी कुछ डाक-टिकट छपाई में, रंगों की गड़बड़ी से, अपने पर छपे राजा वेंसलास व प्रजाजनों के शरीर को छिन्न-भिन्न कर गया है। ऐसा डाक-टिकट अब इंगलैंड में सवा नौ पौंड की दर से बिक रहा है।

नाउरू देश ने डाक-टिकट के जनक सर टोलैंड हिल पर ५, १५ व ६० सेंट के डाक-टिकट निकाले थे। इनमें से कुछ पत्ते बिना छिद्रण के बाजार में आ गये थे। आज ५ सेंट के ऐसे डाक-टिकट का एक जोड़ा इंगलैंड में केवल ४७५ पौंड में बिक रहा है।

नयी दिल्ली में आयोजित 'भारत-८०, अंतरराष्ट्रीय डाक-टिकट प्रदर्शनी' में पुरानी जयपुर रियासत का एक ऐसा डाक-टिकट प्रदर्शित हुआ था, जो अपने दोनों ओर छपा हुआ था। छपाई की इस गलती ने उसे कीमती बना दिया है।

—नया राय गंज
पानी की टंकी के पास
सीपरी बाजार, झांसी

किस्से कुछ दुर्लभ डाक-टिकटों के

● **किसलय बंद्योपाध्याय**

२९ जनवरी, १९६५ की शाम। लंदन के हीथ्रो एयरपोर्ट पर बी. बी. सी. न्यूजरील कैमरामैन और प्रेस रिपोर्टरों की भीड़ एक डाक-टिकट का इंतजार कर रही थी। इस डाक-टिकट का बीमा ३६ लाख रुपये का था और इसे न्यूयार्क से एक विशेष विमान द्वारा लंदन लाया जा रहा था, लेकिन ऐसी क्या बात थी उस छोटे से कागज के टुकड़े में?

इस टिकट की कहानी शुरू होती है सन १८५६ से। ब्रिटिश गायना के एक

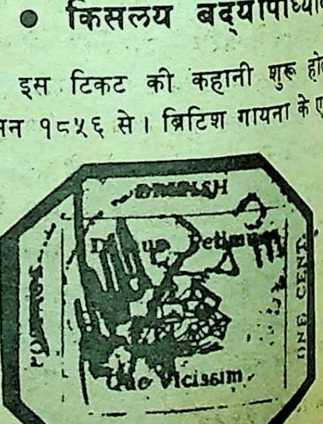

ब्रिटिश गायना का एक सेंट का डाक-टिकट

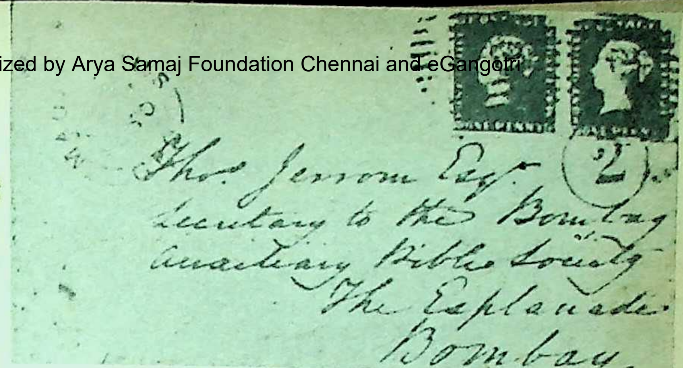
Thos. Jerrom Esq.
Secretary to the Bombay
Auxiliary Bible Society
The Esplanade
Bombay.

'मॉरिशस पोस्ट-ऑफिस' : लिफाफे पर एक पेनीवाले दो टिकट

शहर के पोस्ट-ऑफिस में अचानक डाक-टिकटों का अकाल पड़ गया। तब स्थानीय मुख्य पोस्ट-मास्टर ने चार सेंट के कुछेक डाक-टिकट शहर में ही छपवा लिये और नकल से बचने के लिए उन्होंने यह आदेश दिया कि इन्हें बेचते समय पोस्ट-मास्टर हर टिकट पर अपने दस्तखत कर दे।

इस घटना के १७ वर्ष बाद वर्नन वान नामक डाक-टिकट जमा करनेवाले को ऐसा ही एक टिकट पुराने पत्र पर मिला, लेकिन उसे यह नहीं मालूम था कि उस टिकट पर गलती से एक सेंट छप गया है। उसने काफी कोशिशों के बाद उस टिकट को लगभग ५ रुपये ८० पैसे में बेच दिया। पांच वर्ष बाद वही टिकट दो हजार एक सौ साठ रुपये में थॉमस रिडयाथ ने खरीदा और फिर फ़ेरे को दो हजार सात सौ रुपये में बेच दिया। १९२२ में यही टिकट एक लाख बत्तीस हजार रुपए में बिका, खरीदनेवाले थे सर आर्थर हिंड। अभी सन १९७० में यह टिकट २१ लाख रुपयों में बिका और आज इस टिकट की कीमत है ७६ लाख रुपये।

इसी तरह की एक और कहानी है मॉरिशस की। १८४७ में वहां पहली बार डाक-टिकट छपना था, जिन्हें मॉरिशस के गवर्नर की पत्नी ३० सितंबर, १८४७ को होनेवाले एक समारोह के निमंत्रण-पत्रों पर लगाना चाहती थीं। इसके लिए एक स्थानीय 'एनग्रेवर' (डाक-टिकट छपने से पहले उसका चित्र बनाकर, ब्लॉक बनानेवाले) जे. बर्नार्ड को 'डिजाइन' बनाने के लिए कहा गया। पोस्ट-मास्टर जनरल ने उसको हिदायत दी कि टिकट के चारों तरफ 'पोस्टेज', 'मॉरिशस', 'पोस्ट-पेड' और टिकट का दाम लिखा जाएगा, लेकिन किसी कारणवश जे. बर्नार्ड को तमाम बातें याद नहीं रहीं। तीनों तरफ 'पोस्टेज', 'मॉरिशस' और टिकट का दाम लिख देने के बाद चौथे ओर के शब्द पूछने के लिए वह पोस्ट-ऑफिस की ओर चल दिया, लेकिन पोस्ट-ऑफिस के बाहर बोर्ड देखते ही उसे लगा कि चौथे तरफ पोस्ट-ऑफिस ही तो लिखने को कहा गया था। और उसने पोस्ट ऑफिस ही लिख दिया। लिहाजा तमाम टिकटें गलत छप गयीं और किसी ने भी गौर नहीं किया। आज इस तरह की कुल बारह टिकटें प्राप्त हैं। और उसमें से दो टिकटें एक ही लिफाफे पर चिपकी हुई हैं।

गलतियों का नामकरण

डाक-टिकट संग्रहकर्त्ताओं के बीच अंतरराष्ट्रीय संबंध बनाये रखने के लिए विशेष रूप से पाये जानेवाली छपाई की गलतियों के अलग-अलग नाम भी हैं और उसी नाम से टिकटों की जांच और परख भी होती है।

डाक-टिकटों की छपाई से पहले जिस प्लेट पर 'डिजाइन' को उतारा जाता है, उसके घिस जाने पर या एक ही प्लेट पर एक और ब्लाक बनाने तक जो गलतियां हो जाती हैं उसे 'फ्रेश-एंट्री' और 'रि-एंट्री' कहते हैं।

टिकटों का एक पूरा पत्ता छापने से पहले कई डिजाइनों को प्लेट पर उतारा जाता है, तब अकसर कोई 'डिजाइन' उलटा भी रह जाता है, ऐसे दो टिकटों को 'टेटे-बेचे' कहते हैं।

दो रंगों में छपनेवाली टिकटों को दो बार में छापा जाता था और कभी-कभी कागज उलटा लग जाने पर एक रंग तो सीधा छप जाता था, दूसरे रंग का चित्र उलटा। ऐसी गलतियों को 'इनवर्ट' कहा जाता है। 'इनवर्टस्' में विश्व की सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण टिकटें हैं--'इंडियन फोर आना इनवर्टेड हेड', जिसमें महारानी विक्टोरिया का सिर उलटा छपा हुआ है। यह टिकट भारत में सन १८५४ में जारी किया गया, लेकिन गलती का अहसास बीस साल बाद हो पाया। **--संध्या बनर्जी**

विश्व का सबसे पहला टिकट

विश्व का पहला डाक-टिकट ९ मई, १८४० में निकला, जो 'पेनी ब्लैक' के नाम से प्रसिद्ध है। इस टिकट को निकालने से पहले ग्रेट ब्रिटेन ने एक निबंध प्रतियोगिता का आयोजन भी किया था, जिसमें छब्बीस सौ प्रतियोगियों ने भाग लिया था। टिकट कैसी होनी चाहिए, इस विषय पर १८०० रुपए के चार पुरस्कार भी दिये गये थे।

भारत में सर्वप्रथम सिंध में सन १८५२ में डाक-टिकट प्रचलन में आया, जो 'सिंध डाक' के नाम से प्रसिद्ध है। संपूर्ण भारतवर्ष में सितंबर, १८५४ में टिकटें निकली, जो कि दो पैसे, एक आना, दो आना और चार आने मूल्य की थीं। पहले भारत के टिकट लंदन से छपकर आते थे। सन १९२६ में भारतीय सिक्युरिटि प्रेस की स्थापना हुई, और यहां से छपी भारतीय चित्रात्मक डाक-टिकटों को सन १९३१ में जारी किया गया। इन टिकटों पर नयी दिल्ली के प्रमुख स्थान अंकित थे।

भारत ही 'कामनवेल्थ' में प्रथम देश है, जिसने हवाई डाक-टिकटों को प्रचलित किया और विश्व में प्रथम देश है, जहां हवाई जहाज द्वारा डाक को लाना-ले जाना प्रथम बार आरंभ किया गया। १८ फरवरी, १९११ को एन. पीके. वाईप्लेन द्वारा ६ हजार ५ सौ पत्रों को प्रथम बार इलाहाबाद से नैनी तक ले जाया गया था।

--सी-१०, नया गांधी नगर, गाजियाबाद

तीन प्रश्न

"रबी, सुनते हैं कि तुम यहूदियों ने 'तालमुदीय तर्की' नामकी कोई तर्क-पद्धति बना रखी है, जिसका उपयोग तुम अपनी धर्म-शास्त्रीय बहसों में करते हो। मुझे वह सिखाओ," नात्सी दल के प्रचार-मंत्री गोयबल्स ने एक यहूदी पादरी से एक बार एक भोज में कहा।

"हुजूर, वह बड़ी उलझनभरी, कुछ वाहियात-सी तर्क-पद्धति है; छोड़िए उसे।"

मगर गोयबल्स अड़ गया, तो रबी ने बताया, "जब कोई यहूदी छात्र धर्म-शास्त्र पढ़ने आता है, तब हम उससे तीन सवाल पूछते हैं। पहला सवाल, दो आदमी एक साथ एक कारखाने की चिमनी में गिर पड़े। जब वे नीचे पहुंचे, तब उनमें से एक बिलकुल साफ-सुथरा और दूसरा कालिख से पुत गया था। अब बताइए, उनमें से कौन फौरन घर जाकर नहायेगा।"

"वही जो कालिख से पुत गया हो।"

"नहीं, दोनों आदमी एक-दूसरे पर नजर डालेंगे। साफ-सुथरा आदमी अपने साथी को देखकर सोचेगा कि अरे, मैं तो एकदम मैला हो गया हूं, और फौरन घर जाकर नहाएगा, मगर कालिख-पुता आदमी साफ-सुथरे आदमी को देखकर अपने को भी साफ-सुथरा समझेगा।"

"दूसरा सवाल, दो आदमी एक साथ कारखाने की चिमनी में से गिर पड़े। जब वे नीचे पहुंचे, तब उनमें से एक बिलकुल साफ-सुथरा था और दूसरा कालिख से पुत गया था। अब...."

"यही न कि उनमें से कौन नहाएगा? साफ-सुथरा नहाएगा।"

"नहीं, वह तो पहले सवाल का उत्तर था। यह सवाल जरा अलग है और इसका सही उत्तर है कि कालिख-पुता आदमी नहाएगा। कारण, नीचे गिरते ही दोनों आदमी अपने हाथों और कपड़ों पर नजर डालेंगे और कालिख-पुता आदमी अपने को मैला पाकर फौरन नहाएगा।"

"तीसरा सवाल, दो आदमी एक साथ किसी कारखाने की चिमनी में से गिर पड़े...."

गोयबल्स चीख उठा, "फिर वही सवाल!.... उत्तर भी वही कि कालिख पुता आदमी नहाएगा।"

"न-न श्रीमान," रबी ने बड़े सब्र से समझाया, "सुनने में यह सवाल पहले दो सवालों–जैसा ही लगने पर भी है उनसे बिलकुल भिन्न है, सो इसका सही उत्तर भी उनसे भिन्न है। उत्तर यह है कि यह सवाल ही सरासर वाहियात है। ऐसा हो ही नहीं सकता कि दो आदमी एक साथ कारखाने की चिमनी में गिरें और उनमें से एक तो कालिख से पुत जाये और दूसरा साफ-सुथरा रहे।"

रबी का यह उत्तर सुनते ही झुंझलाहट में पैर पटकता हुआ गोयबल्स वहां से चला गया।

—अमिताभ

उपन्यास : ५

'हरा तोता' (हार्प ऑव बर्मा) उपन्यास युद्ध के बाद पराजय की स्थिति में सैनिकों का मानसिक चित्रण है। यह कृति विश्व की एक महान रचना मानी गयी है और इसका अंगरेजी में प्रकाशन 'यूनेस्को' द्वारा किया गया है। प्रस्तोता : डॉ. सुरेश धींगड़ा।

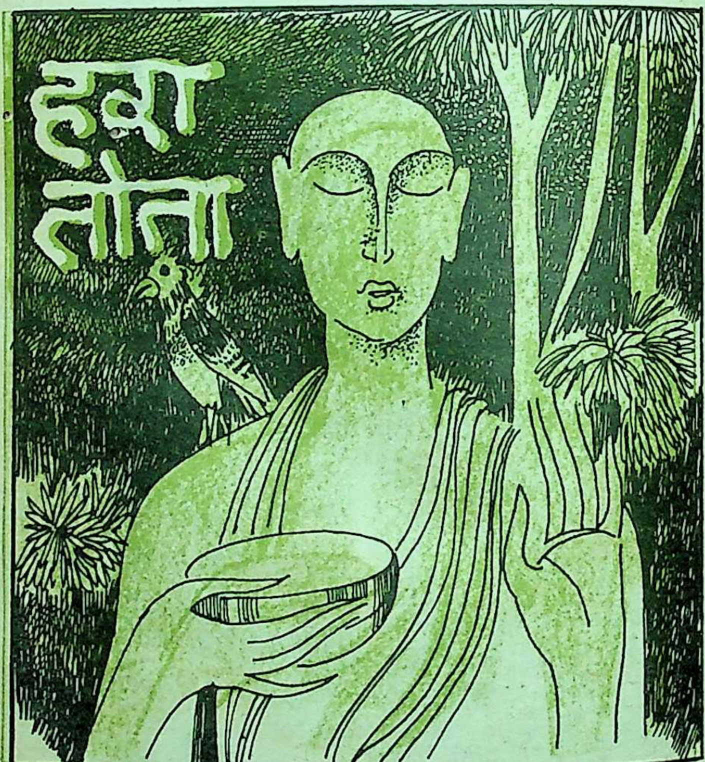

• मिचियो ताकियामा

मिचियो ताकियामा जापान के प्रख्यात उपन्यासकार। सन १९०३ में जन्मे ताकियामा ने २३ वर्ष की उम्र में जरमनी भाषा में स्नातक परीक्षा उत्तीर्ण की। अनेक उपन्यासों की रचना के बाद ताकियामा सार्वजनिक जीवन से दूर लेखन में रत हैं।

समुद्र-पार देशों से लड़ाई के बाद लौट रहे हमारे जापानी सैनिकों की हालत दर्दनाक थी——शक्तिहीन, कमजोर, थके, घायल और अपंग। लेकिन लौट रहे सैनिकों में एक दस्ता सदाबहार सैनिकों का भी था। उसी दस्ते के एक सैनिक ने मुझे यह दास्तान सुनायी थी।

बर्मा का आसमान दूधिया रंग के चकमक पत्थर-जैसा था। बर्मा में अपने पड़ाव के प्रारंभिक दिनों में हमने रातों में जागकर संगीत और नयी-पुरानी धुनों और गीतों का अभ्यास किया था। कार्पोरल मिजूशिमा बहुत जल्दी बहुत कुछ सीख गया था, मानों जन्मजात प्रतिभाशाली हो। उसने एक वीणा भी बनायी, जो बर्मी वीणा की नकल थी। उसने वीणा बजाने में भी प्रवीणता प्राप्त कर ली थी।

धीरे-धीरे युद्ध का पासा पलटने लगा और हमारी हालत बदतर होने लगी। हमें अनेक भयावह अनुभवों से गुजरना पड़ा। कई बार ऐसे मौके आये, जब हमें लगने लगा कि हम अपने आखरी वक्त में पहुंच गये हैं। परंतु ऐसे मौकों पर कार्पोरल मिजूशिमा का बाजा दैवी चमत्कार बन जाता।

अपनी वीणा लेकर मिजूशिमा बर्मी गायकों के समान लुंगी बांधकर हमारे लिए स्काउटिंग करने चला जाता और हमारा रास्ता साफ करने का काम भी करता। एक बार वह गुरखों के दस्तों में चला गया। उसने ढाक के पेड़ों में गुरखे सैनिकों को देख लिया था। मिजूशिमा ने कोई पुरानी बर्मी धुन बजानी शुरू की। एक गुरखे ने उसे मांगनेवाला गायक समझकर उसकी ओर एक सिक्का फेका। अन्य गुरखे सैनिकों ने भी उसका अनुसरण किया। पेड़ पर छिपे गुरखे सैनिक ने जोरदार आवाज में पूछा, "सुनो, तुमने जापानी देखे हैं?"

मिजूशिमा ने अपनी बाहें ऊंची कीं और दूर पहाड़ी की तरफ इशारा किया। गुरखे ने स्वीकार में सिर हिलाया और कमर में बंधी खुंखरी निकाली तथा पेड़ से एक सुगंधित फल काटा और वह उसकी तरफ नीचे फेका।

मिजूशिमा दोबारा धन्यवाद के लिए झुका। अब उसने पेड़ के नीचे खड़े होकर,

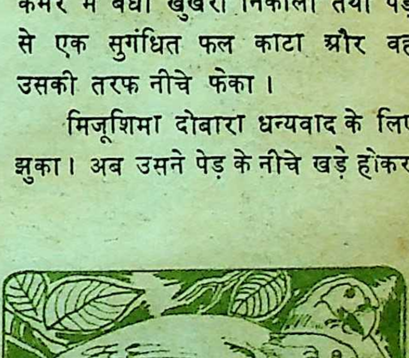

जिस पर बहुत से गुरखे छिपे बैठे थे, उसने गुरखों के साथ मिलकर वंह धुन बजायी, जो हमारे लिए खतरे की सूचना थी।

ऐसे ही एक मौके पर हमने मिजूशिमा को लुंगी के स्थान पर केले के पत्ते लपेटे खड़ा पाया।

'तुम्हें क्या हुआ?' हमने पूछा। उसने बताया, 'एक बर्मी से लगनेवाले आदमी ने सड़क के किनारे से उस पर झपट्टा मारा और पिस्तौल उसके सिर पर तान दी। वह उन लुटेरों में से एक था, जो इस तरफ दिखायी देते हैं, जो जापानी सैनिकों के छोड़े हुए शस्त्रों का इस्तेमाल करते हैं। पर क्योंकि बर्मियों के पास लूटने की खातिर कुछ चीज नहीं होती सिवा लुंगी के, सो उस आदमी ने उसकी लुंगी उतरवा ली।'

भेद लेने जाने के वक्त मिजूशिमा बर्मी देश में हमेशा शस्त्रविहीन जाता था। एक लुंगी के लिए अपनी जान गंवाने का मतलब था अपने कर्तव्य में असफल होना, इसीलिए उसने अपनी लुंगी उतार दी।

उन लुटेरों के बारे में मजेदार बात यह थी कि वे हमेशा अपने साथ केले के पत्तों का ढेर रखते थे। बर्मी अपनी लुंगी के नीचे कुछ नहीं पहनते। अगर लुंगी ले ली जाए, तो उनकी हालत दयनीय और शर्मनाक हो जाती है। इसलिए लुटेरे सहानुभूतिवश अपने शिकार को के के पत्ते दे देते थे, ताकि वह अपना शरी ढंक ले।

●●

एक बार हम अंगरेजी फौजों से ब बचाते एक गांव पहुंचे। गांव के लोगों हमारा स्वागत किया। एक मैदान के पा पक्के मकान में हमें ठहराया और फि गांववालों ने हमारे स्वागत में नृत्य-गी और शराब का आयोजन किया।

हम गाते रहे, गाते रहे। हममें हर एक ने अपने गीतों पर वे भाव उड़े जिन्हें वे साधारणतया व्यक्त नहीं पाते थे। अचानक हमने महसूस किया हम अकेले पड़ गये हैं। सब के बर्मी लोग वहां से खिसक गये थे।

एक आतंक-सा हम पर छा गया और कोई चीखा, 'गाना बंद करो।' ऐ अकसर घटता था। हमारी फौजों को ब गांवों में सुखद स्वागत मिलता और उस बाद ग्रामीण गायब हो जाते तथा दुश्म

छिपी जगहों से हम पर आक्रमण करते। अब हम जिस स्थिति का सामना कर रहे थे, वह वैसी ही प्रतीत होती थी। हमें तुरंत लड़ने के लिए अपने को तैयार करना था। हमें अपनी जगहें, जैसे लड़ाई में नियत होती हैं, संभाल लेनी थीं। अपना साजों-सामान सुरक्षित जगहों पर रखना था तथा अपने लिए सुरक्षित जगह खोजनी थी। कुछ लोगों ने अपनी बंदूकों को खोजना आरंभ कर दिया, तथा कुछ मकान के बाहर दौड़ने लगे।

'ठहरो', कैप्टेन ने आदेश दिया, फिर हलकी-सधी आवाज में कहा, 'गाते रहो।'

अपने बचाव के लिए यह अनिवार्य था कि हम मैदान में छोड़ा हुआ गोला-बारूद का छकड़ा सुरक्षित स्थान पर ले आयें। एक गोली हमारे सारे शस्त्रागार को समाप्त कर सकती थी। मिजूशिमा ने ही योजना बनायी। वह अपनी वीणा लेकर छकड़े पर चढ़ गया और हम गाते-बजाते छकड़े को खींचकर लाने लगे, मानो कोई पालकी कंधों पर लिये आ रहे हों। कोई एक गोली छकड़े समेत मिजूशिमा को उड़ा सकती थी।

हमने 'मेरा प्रिय घर' गीत गाया। जंगल के बीचों-बीच उस गीत की आवाज में दो-तीन आवाजें और जुड़ीं, फिर गीत सब तरफ से अनगिनत आवाजों में गूंज उठा। सामने जंगल में फैली छायाएं वह गीत गा रही थीं। फिर एक-एक कर के वे छायाएं दौड़कर उस खाली जगह में आने लगीं। वे ब्रितानी सैनिक थे। उस गीत ने उन सबको द्रवित कर दिया। इससे पहले कि हम जानते कि क्या हुआ, हम इकट्ठे गाते हुए एक-दूसरे से हाथ मिलाते नजर आ रहे थे।

उस रात हमें पता चला कि युद्ध तीन दिन पहले ही खत्म हो चुका था। अपने निर्दय शत्रुओं से किसी भी तरह बचाने का कोई रास्ता न पाकर ब्रितानी सैनिकों ने सोच लिया था कि उन्हें हमारे प्रतिरोध को रोकने के लिए हमारा सफाया करना पड़ेगा। अंत में हमने अपनी बंदूकें समपर्ण के रूप में फेक दी।

ब्रितानी फौजों ने तीन-चार दिन के लिए गांव में ठहरने का निश्चय कर

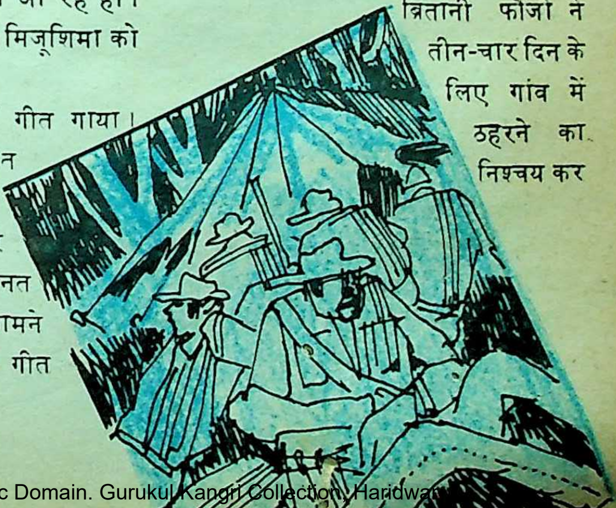

लिया था। हमें दासों का काम करने के लिए बाहर भेजा जाता था। एक दिन हमें रसोई में नियुक्त किया गया। बर्मी रसोइया 'डाह' से मुरगे की गरदन अलग करता और उसके पंख छीलने को हमें दे देता।

हमारे लिए यह अचरज की बात थी कि एक मुरगा, जिसका सिर काटकर अलग रख दिया था, अपने पंख फड़फड़ाने लगा। अपने पंख फड़फड़ाकर वह निचले पंखों को फैला किसी उम्मीद में चारों तरफ अस्थिरता से घूमा। हम अचानक आश्चर्य-चकित रह गये और हमने अपने हाथों से मुरगे छोड़ दिये। वे सब जीवित-से हो उठे, और अपने सिरहीन गलों को फैलाते हुए एक दायरे में दौड़ने लगे।

तभी हमें खबर मिली कि सामने-वाले पहाड़ों की एक चोटी पर कुछ जापानी सिपाही हैं और ब्रितानी फौज उन पर हमला करने जा रही है। उन्हें खत्म होने से बचाने के लिए उन्हें आत्म-समर्पण के लिए तैयार करना जरूरी था। ब्रितानी अफसर से बातकर हमारे कैप्टेन ने मिजूशिमा से कोशिश करने को कहा। मिजूशिमा एक ब्रितानी सैनिक और एक मार्ग-दर्शक के साथ पहाड़ों की ओर चल पड़ा।

●●

ब्रितानी सेना के हुक्म से हमें पर्वतों से मैदान की ओर आना पड़ा और हमें मुडान के युद्ध-बंदी कैंप में पहुंचा दिया गया। शुरू में हमें पूरा विश्वास था कि मिजूशिमा कुछ ही दिनों में हमारे पास आ जाएगा। अकसर हम लोग दरवाजे की ओर टकटकी लगाये बैठे रहते। कभी-कभी तो हमें उसकी पदचाप तक सुनायी देने लगती। लेकिन मिजूशिमा नहीं लौटा।

मिजूशिमा हमारे ऊपर इस तरह छाया हुआ था कि एक दिन हम सचमुच चकित रह गये। यह लगभग मुडान पहुंचने के तीन महीने बाद की बात थी। कस्बे के बाहर हमारा दस्ता टूटे हुए पुल की मरम्मत कर रहा था।

जैसे ही हम पुल पर उसके पास से गुजरे, मिजूशिमा से उसकी शक्ल मिलती जुलती देखकर ठिठक गये। भिक्षुक अभी युवा ही था उसका सिर घुटा हुआ था उसके हाथों में भिक्षा-पात्र कटोरा था तथा नया पीला दुशाला उसने अपने कंधे पर लपेटा हुआ था, जिस पर एक हरा तोता बैठा हुआ था। निःसंदेह वह किसी पड़ोसी गांव से आया था।

वह मिजूशिमा का हमशकल था

छोटा कद, स्वस्थ, बड़ी और गहरी आंखें भिंचे हुए होंठ। धूप के कारण उसका रंग काला पड़ गया था। सिर पर एक जापानी टोपी से वह मिजूशिमा को भी मात कर रहा था। वह व्याकुल और कुछ-कुछ गुस्से में लगा, क्योंकि हम सब कैदियों ने उसके चेहरे को एक-एक कर ताकना शुरू कर दिया था।

बर्मी भिक्षु अकसर मुडान आता था। जब कभी हम उसे देखते, हमें मिजूशिमा की याद ज्यादा सताने लगती। लेकिन, जैसे-जैसे वक्त गुजरता गया, वैसे-वैसे मिजूशिमा की मृत्यु का संदेह हम सबके दिलों की गहराइयों में उतरता गया। हम सभी इस विषय को सायास टालने की कोशिश करते। तभी हमें अनपेक्षित किस्म की खबर मिली, जिससे मिजूशिमा की मृत्यु का संदेह विश्वास में परिणत हो गया। यह खबर हमें कैंप में चीजें बेचने आनेवाली बूढ़ी औरत ने दी थी। उसने बताया कि जापानी सैनिक बंदियों का एक दस्ता कहीं सुदूर जंगलों से लाया गया है। इस दस्ते के बारे में कहा जाता है कि उसने एक जंगली चट्टानी पहाड़ में आमरण लड़ाई की कोशिश की थी। करीब-करीब सारे बंदी घायल हैं और मुडान के ब्रितानी अस्पताल में उनका इलाज चल रहा है। मृतकों को अस्पताल के कब्रगाह में ही दफना दिया गया है। उसने यह भी बताया कि किसी दूसरे दस्ते के फौजी ने उन्हें खत्म होने से बचाया और गोलाबारी के बीच वह संदेश इधर से उधर पहुंचाता रहा, निश्चित ही वह खत्म हो गया होगा।

उस दिन बूढ़ी औरत एक तोता भी लायी थी, जिसके बारे में उसने बताया था कि यह उस तोते का भाई है, जो मिजूशिमा की शक्लवाले भिक्षु के पास है। कैप्टेन ने अपने सिगरेट केस के बदले वह तोता ले लिया।

हमारे जापान लौटने से पहले साल-डेढ़ साल आश्चर्यचकित कर देनेवाली अनेक घटनाएं घटीं, जिनका संबंध मिजूशिमा की शक्लवाले बर्मी भिक्षु से था। एक बार जब एक समारोह के दौरान हमें मंदिर जाने की छूट मिली, तब हमने वहां एक लड़के को वीणा बजाते सुना। वह ठीक मिजूशिमा-जैसी वीणा

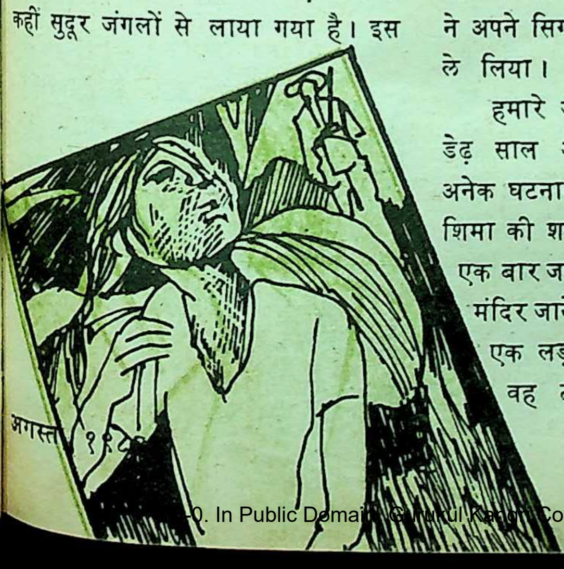

बजा रहा था। वह धुन-'मेरा प्रिय घर' की धुन थी। हम उसे सुनकर भावावेश से भर गये। कैप्टेन ने उसे मुट्ठीभर सिक्के दिए और फिर धुन सुनी।

उस रात कैप्टेन ने कहा, 'आज मुझे महसूस हुआ-जैसे मैं मिजूशिमा की पद्धति का संगीत सुन रहा हूं।' कैप्टेन की बात में दम था।

तो क्या मिजूशिमा जिंदा है? सवाल फिर उभर आया। हो सकता है, जो भिक्षु भीड़ के पीछे खड़ा होकर हमें गाते हुए सुनता है, जिसके कंधे पर हरा तोता बैठा होता है, वह मिजूशिमा ही हो?

● ●

अंत में उस भवन के बड़े कमरे का काम खत्म हो गया, जिसका निर्माण हम लोग कर रहे थे। अब वह मृत ब्रितानी सैनिकों के शव-स्थापन के लिए तैयार हो गया था। शव-स्थापना के समय जुलूस निकाला गया। तावूतों के आगे भी लोग थे और पीछे भी। शवों के साथ बर्मी रिवाज के मुताबिक भिक्षु भी थे। हम एक बार फिर आश्चर्यचकित हो गये। क्या वह भिक्षु जो मिजूशिमा की तरह था, वही नहीं था। वह शांत मुद्रा में अपनी आंखें सामने टिकाये चल रहा था। वह सफेद कपड़े में लिपटा हुआ एक चौकोर डिब्बा लिये हुए था, ठीक जापानी रिवाज में। जब वह हमारे पास से गुजरा, तब उसने आंखें झुका ली थीं।

● ●

कैप्टेन ने उसके बाद तोते को पढ़ाना शुरू कर दिया, 'चलो, जापान साथ-साथ चलें।' सीखने के बाद तोता आधी रात को भी अपनी मर्मभेदी आवाज में कह उठता, 'हे मिजूशिमा, हे मिजूशिमा, चलो, जापान साथ-साथ चलें।'

शव-यात्रा के कुछ दिनों बाद वह बूढ़ी औरत हमारे कैंप में आयी। कैप्टेन ने तोते समेत एक खत उसे दिया कि वह उन्हें उस भिक्षु के पास पहुंचा दे। बूढ़ी औरत बहुत मुश्किल से राजी हुई।

'पता करना कि वह इस शहर में पहले-पहल कब आया,' कैप्टेन ने कहा, 'और पूछना कि क्या वह वीणा बजाता है, और शव-यात्रा समारोहवाले दिन वह डिब्बा लिए हुए चल रहा था, वह डिब्बा किस किस्म का था।'

बूढ़ी औरत ने कुछ दिन बाद लौटकर बताया कि वह एक ऊंची पदवीवाला भिक्षु है, और उसने यह भी बताया कि लोग कहते हैं कि उस डिब्बे में कोई बहुत बड़ा नग है। शायद, वह उस नग को ब्रितानी सैनिकों की स्मृति में देना चाहता था।

उस रात तोता फिर चीखा, 'हे मिजूशिमा, हे मिजूशिमा, चलो, जापान साथ-साथ चलें।'

मृत ब्रितानी सैनिकों की स्मृति में शांति-समागमों का वह दौर कई दिन तक चला। उसके बाद शव-गृह की चीजों को करीने से रखने के लिए हमें वहां भेजा गया। वहां जाकर हमने अपनी मूक प्रार्थना की ही थी कि हमारा एक साथी चिल्लाया, 'देखो, मिजूशिमा इधर है।'

एक अंधेरे कोने में निचले खाने में वह चौकोर डिब्बा रखा था। कैप्टेन ने सावधान की मुद्रा में डिब्बे को सलाम किया। उसी वक्त हमारे एक बूढ़े साथी ने हमें भवन से बाहर कर दिया। कैप्टेन का व्यवहार कुछ अजीब-सा था। उसने हमें गाने को कहा।

अभी हमें गाते हुए कुछ ही देर हुई होगी कि एक खूबसूरत आवाज गूंजती सुनायी दी, मानों पेड़ों के शिखरों से झर रही हो, या किसी गुफा से आ रही हो। वह आवाज वीणा की थी। हम आवाज के स्रोत को ढूंढ़ने के लिए इधर-उधर दौड़ पड़े। पास ही एक जीर्ण-शीर्ण बुद्ध-विहार था। वहां एक बुद्ध-प्रतिमा थी, जिसके पीछे की ओर एक दरवाजा था। हमने उसे खोलने की कोशिश की, लेकिन असफल रहे। तभी हमें चौकसी करनेवाले हिन्दुस्तानी सिपाही ने वापस जाने का हुक्म दिया।

उस रात हम निराशा में हमेशा की तरह अपने विवाद से अलग चुपचाप बैठे रहे।

'मुझे लगता है कि यह मिजूशिमा का प्रेत न हो,' किसी ने कहा था।

स्पेन की कारमेन मोंटिजो ने अनेक वर्षों तक होटलों में काम किया। और वह बहुत-से होटल-मैनेजरों की प्रणय-लीलाओं की प्रत्यक्षदर्शी रही। इसलिए उसने इस विषय पर एक किताब लिखने की योजना बनायी। लेकिन, वह लिख नहीं पायी, क्योंकि, जैसे ही मैनेजरों को योजना की भनक पड़ी, वे दौड़े-दौड़े आये और उसे इतने सारे पैसे दे गये कि अब उसे किताब लिखने की जरूरत ही नहीं रही।

बूढ़ा साथी तोते के पास गया और बोला, 'हे मिजूशिमा, चलो,जापान साथ-साथ चलें।' तोते ने वाक्य पूरा किया।

●●

इसके बाद हमें जापान पहुंचाने का प्रबंध कर दिया गया। बूढ़ी औरत को एक बार फिर काम सौंपा गया—तोते को उसी भिक्षु को सौंपने का। शायद, यही तरीका था, मिजूशिमा को जापान ले जाने का! यही तरीका था यह जानने का कि वह मिजूशिमा है भी या नहीं! हम तीन दिन गाते रहे। हमारे गले बैठ गये। बाड़ के,बाहर लोगों की भीड़ थी। तीसरे दिन भीड़ में एक भिक्षु दिखायी दिया। उसके दोनों कंधों पर हरे तोते बैठे थे। एक तोता उसके कान में चीखा, 'हे मिजूशिमा, चलो, जापान चलें।'

परंतु भिक्षु जड़वत खड़ा रहा।

क्या वह मिजूशिमा नहीं था? हम-

शक्लों की समानता पर चकित थे।

'मेरा अंदाजा है कि यह गलत आदमी है', कोई धीरे-से बोला। लेकिन हमने 'मेरा प्रिय घर' गाने का निश्चय किया। हमने अपनी आवाज पूरी उठायी। तभी हमारे आश्चर्य की सीमा न रही। भिक्षु ने लड़के के कंधे से वीणा ली और बजाने लगा। वह मिजूशिमा ही था।

'मिजूशिमा, हम कल जापान जा रहे हैं।'

'यह बहुत अच्छी बात है, आखिर तुम वापस जा रहे हो।'

'जल्दी करो और अंदर आ जाओ। तुम अब तक कहां थे, बताओ।'

परंतु मिजूशिमा बाड़े की ओर सूनी आंखों से देखता रहा। धीरे-धीरे उसने एक विदाई गीत की धुन बजानी शुरू की। धुन खत्म करके वह झुका और घूमकर भीड़ में खो गया। और हम चिल्लाते रह गये—

'मिजूशिमा, आओ साथ-साथ जापान लौट चलें।'

मिजूशिमा भगौड़ा था। वह भिक्षु बनकर बर्मा में रह जाना चाहता था। देश के पुनर्निर्माण का उसका आदर्श थोथा था।

●●

हम लौटने की तैयारी करने लगे। लौटते समय वह बूढ़ी औरत फिर आयी। उसने अपने कपड़ों में से एक तोता निकाला। तोता बोला, 'आह! मैं घर नहीं जा सकता!'

तोता मिजूशिमा ने भेजा था, साथ में एक पत्र भी था। कैप्टेन ने वह पत्र अपनी जेब में रख लिया। कुछ ही देर बाद हम जहाज में सवार थे। मटमैली नदी को चीरता हुआ जहाज समुद्र की ओर बढ़ने लगा। हमें 'मुक्ति' का अहसास हो रहा था, लेकिन हमारा साथी मिजूशिमा

इटली के ब्रूनो अटोरियों को एक ट्रैफिक पुलिसमैन की जेब काटने के अपराध में अदालत के सामने पेश किया गया। अदालत ने पूछा, "तुमने ऐसा क्यों किया?"

"मुझे फ्लोरेंस जाने के लिए किराये के पैसे चाहिए थे।'

"फ्लोरेंस क्यों जाना चाहते थे?"

"वहां मेरी पत्नी रहती है। मैं अपनी पत्नी को और उसके प्रेमी को देखने के लिए जाना चाहता था।"

अदालत ने उसे सजा सुना दी।

तीन दिन बाद समुद्र की छाती पर कैप्टेन ने भिक्षु का पत्र खोला। पत्र का विवरण अद्भुत था। भिक्षु ने लिखा था—

मैं आपको बता नहीं सकता कि मेरे अंदर देश लौटने की और अपने परिवारवालों के साथ फिर से रहने की इच्छा कितनी तीव्र है। लेकिन, मैं लौट नहीं सकता। मैंने बर्मा में रहने की प्रतिज्ञा कर ली है। उसी वेश में, जिस वेश में आप लोगों ने मुझे देखा है, तब तक यहां रहूंगा, जब तक कि मैं अपना काम खत्म नहीं कर लेता। शायद, अपना सारा जीवन यहीं व्यतीत करना पड़े, क्योंकि अब मैं भगवान बुद्ध का

एक सेवक भिक्षु हूं।

मैं मृत जापानियों की देख-रेखकर रहा हूं, जो पूरे देश में यत्र-तत्र बिखरे पड़े हैं। उन्हें अंतिम विश्राम-स्थल देने की नीयत से मैं उनके लिए कब्रें खोदता हूं और उनकी सफेद पड़ी हड्डियों को दफनाता हूं——उन युवाजनों की हड्डियां, जो पराजित होने और मरने के लिए, जो सेना में भरती किये गये थे। इन मृत अवशेषों को दफनाने के लिए ही मैंने अपने मन में जापान के पुनर्निर्माण की अपूर्व इच्छा दबाई है।

इसके बाद पत्र में उस दिन से पूर्ण विवरण था, जिस दिन से मिजूशिमा पहाड़ी की चोटी पर लड़ रहे जापानी सैनिकों से आत्म समर्पण कराने गया था।

जब मैं उस जापानी दस्ते को आत्मसमर्पण की बाबत बताने जा रहा था, तब मेरे चारों ओर गोलियां तड़ातड़ा रही थीं। मैं सीधा लेट गया। कुछ देर बाद उठा और हाथ हिलाया। गोलियों की दूसरी बौछार ने मेरा स्वागत किया। मैं दोबारा सीधा लेट गया। थोड़ी देर बाद मैं एक ऊंची जगह से कूदा और सामने की ओर भागने लगा। गोलाबारी बंद हो गयी। शायद, उन्होंने पहचान लिया था कि मैं जापानी हूं। मैं पहाड़ी चट्टान पर जा चढ़ा।

लेकिन, उन्हें समझाने का मेरा सारा प्रयत्न व्यर्थ गया : 'ऐसे पूरी तरह मिट जाने में क्या फायदा है।' मैंने उन्हें समझाया 'हमें जीना है और संघर्ष करना है, और अपने देश के लिए काम करना है।

'अपने देश के लिए,' एक सैनिक तिरस्कारपूर्ण ढंग से अपने कैप्टेन की ओर देखकर बोला, 'इस तरह आत्मसमर्पण करने में कौन-सी ऐसी राष्ट्रभक्ति है।'

वहां की अंगरेज फौज ने मिजूशिमा को केवल तीस मिनट दिये थे। समय बीत रहा था। जापानी सैनिकों ने अंत तक लड़ने का फैसला किया था। उन्होंने मिजूशिमा से कहा था, 'कमजोर कीड़े, कायर! जाओ, अपनी चमड़ी बचाओ।'

'मैं कायर नहीं हूं,' वह चीखा था। उसने निश्चय किया था कि अब मरनेवालों वह पहला आदमी होगा।

मैं गुफा से कूद पड़ा और एक पेड़ के ठूंठ से टकराकर चट्टानी चोटी और ब्रितानी-क्षेत्र के बीच अधिकारहीन क्षेत्र में जा गिरा। एक मिनट बाद ब्रितानी फौज ने गोलाबारी प्रारंभ कर दी और जापानी दस्ते ने भरपूर उसका जवाब दिया। बारूद की धुंध के बीच मैं वीणा बजाने लगा।

'गाओ,' वीणा के तारों को छेड़ते हुए मैं चीखा, संगीत ध्वनि बिखरती रहे जब तक तुम्हारी तारें नहीं टूट जातीं।

शायद, तुम्हारे रहने से हे संगीत, तुम्हारे देशवासी बच जाये।

परंतु तभी जोर की आवाज के साथ वीणा पर सजे फूल और लाल पंखों को बिखेरती एक गोली वीणा पर लगी। वीणा टूट चुकी थी।

'बस, अब मैं ही शेष हूं', मैं चिल्लाया।

मेरा काम पूरी तरह असफल ही रहा! मैं खाली निराशा में खड़ा रहा। वीणा मेरे हाथ पर झूल रही थी और तभी मैंने गदा जैसी किसी चीज की मार अपनी जांघ पर महसूस की। मैं लुढककर जा गिरा। इसके बाद मैं अचेत होने लगा। मैंने स्वप्नवत देखा कि गुफा के द्वार पर एक सफेद झंडा फहराने लगा है। इसके बाद मैं संज्ञाशून्य हो गया।

अपने पत्र में मिजूशिमा ने आगे लिखा था—'जब मैं होश में आया, तो एक आदिम किस्म की फूस की झोपड़ी के अंदर खुशनुमा हवा की ठंडक में लेटा हुआ था। मेरे घावों पर सावधानी से पट्टियां बांधी हुई थीं। मैं एक मुलायम, चमड़े के बिछावन पर लेटा था, जिसमें कोयल के पंख भरे हुए थे। जो लोग मेरी दवा कर रहे थे, वे सब जंगली लोग थे।

अभी भी बर्मा की पहाड़ियों में अनेक तरह के जंगली कबीले हैं। उनमें से कुछ मनुष्य-भक्षी या नरमुंडों का शिकार करनेवाले हैं। ऐसा लगता है कि जब मैं उस खाली जगह में, पत्थर के नीचे, अचेतनावस्था में पड़ा था, तब ब्रितानी फौजें जापानी कैदियों को पकड़कर ले गयी थीं। उसके बाद जंगली लोग वहां से गुजरे और उन्होंने मुझे बचाया।

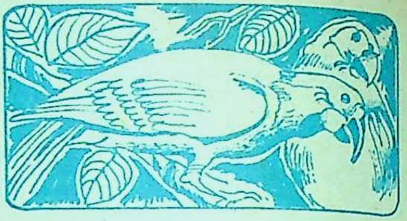

इस कबीले के लोग करीबन पूरी तरह नंगे थे। उनके पूरे शरीर पर गुदने गुदे हुए थे। और भिन्न-भिन्न डिजायनों के चिन्ह थे। उन्होंने अपने पावों और हाथों में लोहे के कड़े पहने हुए थे। उनकी आंखें छोटी तथा होंठ मोटे और फटे पड़े थे। लेकिन, वह बहुत ही विनम्र और अच्छे थे। तथा मुझे नुकसान पहुंचानेवाले नहीं दिखायी देते थे।

उन्होंने मेरी अच्छी देखभाल की। मैं जल्दी ही ठीक हो गया। कुछ दिन के बाद कबीले ने एक उत्सव मनाया। मुझे स्वादिष्ट भोजन दिया गया। भोजन में भुना हुआ मुरगा भी था। मैंने अपनी देखभाल करनेवाले बूढ़े का हाथ थपथपाकर उसका आभार प्रकट किया।

'मुझे खुशी है कि तुम इतने स्वस्थ हो, उसने कहा।

'शुक्रिया', मैंने झुककर कहा।

'तुमने, जो-जो मैं लाता रहा, खाया, इसलिए मेरा काम आसान कर दिया। दूसरे कैदियों ने खाने से इनकार करके

काफी दिक्कतें पैदा कीं ।'

'मैं अब पहले से भी ज्यादा शक्तिशाली महसूस करता हूं, मैं तुम्हारी इस मेहरबानी का कोई प्रतिदान देने की इच्छा रखता हूं ।'

बूढ़े आदमी ने मेरी गर्दन पर सावधानी से चिकोटी काटी और बोला, 'अब तो सबके लिए काफी होगा ।'

'क्या ?'

'और गांव का हर आदमी एक-एक टुकड़ा भी ले ले, तब भी वह काफी होगा ।'

'तुम्हारा मतलब है तुम मुझे खाने जा रहे हो ।'

'हां,' वह बूढ़ा अपने झुर्रीदार चेहरे पर मुसकान उगाते हुए बोला ।

वह कबीला खासिनक कबीला था, नर-भक्षी कबीला ।

उत्सव शुरू हुआ। कबीले के लोगों ने कई तरह का बलि-पूजन किया । तरह-तरह के जादुई मंत्र पढ़े और फिर हाथों में छुरे तथा भाले लेकर नाचना शुरू किया ।

नृत्य धीरे-धीरे उन्मादमय होता गया। वे प्रेतात्माओंवाले पेड़ की ओर घूमते और अपने सिर जमीन तक झुकाकर जोर-जोर से कांपते हुए ऊपर उठ जाते। आखिर, उन्होंने उस पिंजरे की परिक्रमा शुरू की, जिसमें मुझे नहलाकर बिठला दिया गया था। उनके भाले और छुरियां चमक रही थीं। वे मुझे मारने ही वाले थे कि मैंने यह सोचकर कि यही समय है; वीणा बजाना शुरू कर दिया। मुझे पूरा विश्वास था कि जब तक यह वीणा है, मैं जीत सकता हूं। मैंने अनेक गीत बजाये खुशीभरे भी और दर्दभरे भी, लेकिन सब व्यर्थ गया। जंगलियों पर कोई असर नहीं हुआ। उन्होंने मुझे आग के पास रख दिया ।

तभी अचानक जोर से हवा बहने लगी। आग की लपटें हवा की वजह से करीब-करीब जलाती हुई मुझे घेरने लगी, कबीले के लोग मुझे पानी देते रहे और मैं पसीना बहाता रहा। हवा तेज होती गयी, जैसे हवा पेड़ों से टकराकर शोर करती रही, वैसे-वैसे पेड़ों की पत्तियां उड़-उड़कर मेरे नंगे जिस्म पर गिरती रहीं।

मैं व्याकुल और इतना प्यासा हो गया कि मैं पानी के लिए चिल्लाया, लेकिन उन्होंने पानी देने से इनकार कर दिया ।

१०००वीं कार बेचने पर मिचीगन के कार-विक्रेता रोलफ व्हिटमैन को इतनी खुशी हुई कि उसने सोचा, आज इस खुशी को नये ढंग से मनाया जाए । इसके लिए शो-रूम में रखी बिलकुल नयी कीमती कार 'लिमोसिन' में बैठकर वह शहर में निकल पड़ा। लेकिन, दुर्भाग्य कि कार एक दुर्घटना में इस तरह टूट-फूट गयी कि उसकी मरम्मत पर ही इतना खर्च आया, जितना कि उसने तीन सौ कारों के बेचने पर कमीशन के रूप में कमाया था ।

न्यूजीलैंड के ऑकलैंड की एक महिला एक दिन पुर्स्तकालय से एक पुस्तक लायी। जब वह उसे पढ़ने बैठी, तो उसमें उसे एक छोटा-सा पत्र मिला। वह भौचक्की रह गयी, क्योंकि वह पत्र उसकी दादी के हाथ का लिखा था। पत्र में लिखा था, 'विली, अगर तुम मुझे सचमुच ही प्यार करते हो, तो शनिवार की सुबह डेयरी के बाहर मिलो। –तुम्हारी पौली, २३ अक्तूबर १९३५।'

वह विली कौन था? वही लड़का, विली फैलोज, जिसके साथ उसकी दादी ने शादी की थी, यानी उसका दादा।

अंत समय सोचकर मैंने आंखें बंद कर लीं। थोड़ी देर बाद जब आंखें खोलीं, तब मैं यह देखकर आश्चर्यचकित रह गया था कि सब व्यग्र होकर विशाल प्रेत वृक्ष को देख रहे थे, जो जोर-जोर से हिल रहा था और हवा में विलाप-सा कर रहा था।

हवा के दूसरे झोंके ने पेड़ को बुरी तरह कंपा दिया। कबीलेवालों ने अपने कान ढंक लिये और जमीन पर दंडवत लेट गये। पेड़ गुस्से में था। वे डर रहे थे कि उन्होंने प्रेतात्माओं को नाराज कर दिया है।

वह मेरा मौका था। पांव पीछे कर वहां बैठे अभी मैं वीणा पकड़े हुए था कि मैंने उत्सवधर्मी संगीत बजाना शुरू कर किया। वही संगीत, जो बर्मी लोग प्रेतात्माओं की पूजा के वक्त बजाते हैं। मैं बजाता गया और चिल्लाता गया, 'प्रेत।' जब फिर हवा दुबारा चीखी। मैंने डरावनी आवाजें वीणा के तारों पर पैदा कीं। कबीले के लोग आतंक में चिल्लाये।

मैंने 'प्रेत-प्रेत' चिल्लाना जारी रखा। और बकवास किस्म का मर्मभेदी चीत्कार करता रहा। तब मैंने तारों से ऐसी झंकारें निकालनी आरंभ कीं, जैसे प्रेतात्मा नीचे उतर रही हो। और अट्टहास कर रही हो या गुस्से में आक्रमण कर रही हो। विशाल पेड़ एक तरफ से दूसरी तरफ झूमता रहा। लोग विलासपूर्ण लंबा चीत्कार करने लगे तथा डरने लगे। पेड़ के साथ हिलने की गति के साथ-साथ मैं वीणा बजाता रहा।

धीरे-धीरे कबीले के लोग खिसकने लगे और अपने चेहरे छुपाने लगे। किंतु अंत में वे डरते हुए मेरे पास रेंगते हुए आये। फिर उन्होंने मेरे बंधन खोले। मैं अपने पावों पर खड़ा हुआ और मैंने अपने को पर्याप्त गौरवमय प्रदर्शित किया, तथा मुखिया की बगल में बैठने चल दिया।

हवा अभी बह रही थी, इसलिए मैंने प्रेतात्मा की शांति के लिए मंद स्वर में बजाना आरंभ किया। अंतः में कबीले के लोगों को शांति मिली।

मुखिया बेहद खुशी में था, वह गा रहा था और लोलुप की भांति खाने में

मस्त था। परंतु, अचानक उसने सींग-जैसा प्याला जमीन पर टिकाया, ग्रौर अपना चेहरा झुकाकर मेरे पास किया।

'तुम', अपने दांतों को पीसते हुए वह गुर्राया, 'तुम मेरी लड़की से शादी करो', उसने अपनी खूनी आंखें झपकायीं ग्रौर बोला, 'नहीं तो तुम्हें मार डालूंगा।'

'लेकिन, मैंने तय कर लिया था कि मैं उस नरभक्षी की लड़की से शादी नहीं करूंगा। मुखिया मुझे फिर मारकर खाने को तैयार हो गया। परंतु उसकी लड़की ने अपने हाथों से उसे रोका ग्रौर मेरे जीवन की भीख मांगी।

बाद में विदा के समय उस लड़की ने मुझे एक ताबीज भी दिया, जिसके कारण मुझे हर स्थान पर सम्मान मिला।

●●

मिजूशिमा इसके बाद ग्रंदाज से मुडान की ग्रोर चलने लगा। अनेक अनुभवों से गुजरने के बाद वह एक दूसरे पर्वतीय इलाके में पहुंचा। उसकी एकमात्र चिंता दक्षिण की ग्रोर से मुडान पहुंचने की थी। जब वह एक रेतीली सड़क पर चल रहा था, तो जापानी गोलियां ग्रौर कारतूस देखे। आस-पास कोई नहीं था। दर्रे की ऊपरी घाटी में पहुंचने पर उसने देखा कि वहां छह-सात घोड़े ग्रौर क़रीब तीस आदमी मरे पड़े हैं। वे जापानी सैनिक गलने की अवस्था में पहुंच चुके थे। मिजूशिमा ने उन्हें दफनाना शुरू किया। वह एक दिन का काम नहीं था। मिजूशिमा रात में पास के एक गांव में चला जाता ग्रौर दिन में लौटकर लाशों को दफनाने का काम शुरू कर देता।

उस इलाके के जंगलों में उसने अनेक शव देखे। वह उन्हें दफनाता रहा। किंतु यह लंबा काम था।

उसने अपने पत्र में आगे लिखा—

जितने भी मृत शरीर जंगल में पड़े मिले थे, किसी तरह दफना दिये। फिर मैं रास्ते पर आगे बढ़ता हुआ शितांग नदी पर पहुंचा। जब मैं पार जाने के लिए नाव ढूंढ़ रहा था, मैंने एक भयावह दृश्य देखा।

वहां सड़कों पर मृत शरीर पड़े सड़ रहे थे। वे जैसे नदी के दलदल में फेंक दिये गये थे। किंतु उन्हें दफनाना मेरी सामर्थ्य से बाहर था। इसलिए मैं मुडान की ग्रोर बढ़ आया।

मुडान पहुंचकर मैंने देखा कि अस्पताल के कब्रगाह में ग्रंगरेज सैनिकों को सम्मानपूर्वक दफनाया जा रहा है। वहीं पता चला कि तिकोनी पहाड़ी चोटी पर लड़नेवाले सिपाही वहीं घायलावस्था में हैं। वहीं मैंने शव-यात्रा देखी थी। जिस मठ में मैं रुका था, वहां मैंने एक लड़के को

'मेरा प्रिय घर' धुन भी सिखायी। वहीं मैंने तय किया कि जापानी सैनिकों के शवों को ऐसे ही नहीं छोड़ूंगा। एक अनपेक्षित कर्त्तव्य मुझ पर आ पड़ा था।

इसलिए मैं बीच-बीच में शितांग नदी जाकर गांववालों की सहायता से सैनिकों के शव दफनाने चला जाता। वहीं मुझे एक मणि मिली, जो मैं जापानी सैनिकों के सम्मान में देना चाहता था। इसीलिए मैं शव-यात्रा में सम्मिलित हुआ। जब आप लोग मुझे ढूंढ़ रहे थे, तब भी मैं बुद्ध की प्रतिमा के दरवाजे के पीछे छिपा बैठा था। मैं तब तक सचमुच एक बर्मी भिक्षु बन गया था, लेकिन तब भी मैं कहीं दूर अपने मृत देशवासियों को दफना रहा था। लेकिन मैं आप लोगों को लेकर भी परेशान था। इसलिए जब-जब मुडान आता, तब-तब मैं भीड़ में बाड़े के पास खड़ा होकर आप लोगों को गाते सुनता।

मेरे पालतू तोते ने वे शब्द सीख लिये थे, जो मैं फुसफुसाया करता। मैं कल्पना करता हूं कि मेरा तोता अब आपके पास होगा। आपका भेजा हुआ तोता मेरे पास है, जो यदा-कदा पुकार उठता है, 'हे मिजूशिमा, चलो, साथ-साथ जापान चलें।'

जो काम करना चाहता था, वह दिन-ब-दिन बढ़ता दिखायी देता है। मुझे केवल मृत जापानी सैनिकों की मृतात्माओं को विश्राम शांति नहीं देनी है, अपितु बर्मी भिक्षु के रूप में अपने कर्त्तव्यों की पूर्ति भी करनी है, और मैं वह कुछ करना चाहता हूं, जो मैं इस देश के निवासियों के लिए कर सकूं। मैं बर्मा में रहूंगा, इस देश को प्यार करता हूं। और हर जगह, वर्फ ढंकी पहाड़ी चोटियों से लेकर दक्षिणी तटों के चमकते किनारे तक भटकता रहूंगा। और जब आप लोगों के लिए मेरी इच्छा बहुत ज्यादा असहनीय हो जायेगी, तब वीणा बजा लिया करूंगा।'

जहाज धीमी रफ्तार से बढ़ता जा रहा था। लहरों की आवाज पूरे जहाज को अपने में लपेट लेती। और हम उमड़ती लहरों के बीच से उठती एक वीणा की आवाज सुनते। ●

दूरदर्शन के प्रति हमारे यहां जहां मोह बढ़ रहा है, वहीं यूरोप के देशों में विरोध। विरोध का कारण है कि दूरदर्शन ने परिवारों को तोड़ना, सामाजिक संबंधों को तोड़ना शुरू कर दिया है। दूरदर्शन के कारण पति-पत्नियों को आपस में बात करने तक का समय नहीं मिल पाता। इन्हीं कारणों से दूरदर्शन-विरोधी क्लबों की स्थापना होने लगी है। पश्चिम जर्मनी के एक ऐसे ही क्लब के संस्थापक ने अपने दूरदर्शन सेट को मुक्का मारकर तोड़ डाला है। क्लब के २५३ सदस्यों ने शपथ ली है कि वे अब कभी दोबारा दूरदर्शन सेट नहीं खरीदेंगे।

बंगाली मुसलिम कवियों का वैष्णव राग

• डॉ. रमानाथ त्रिपाठी

ब्रजबुलि में कविताओं का सृजन १५–१६वीं शती से आरंभ हुआ होगा, किंतु उसका यह नामकरण ईश्वर गुप्त ने १९वीं शती में किया। सच में यह ब्रज की बोली नहीं है। ग्रियर्सन के मतानुसार विद्यापति की पदावली से प्रभावित होकर कवियों ने ब्रजबुलि की सृष्टि की होगी। यह मैथिली-बंगला मिश्रित भाषा थी। डॉ. सुकुमार सेन भी पहले ऐसा ही मानते थे, किंतु बाद में उन्होंने घोषित किया कि इस बोली का विकास अवहट्ठ भाषा से हुआ है। किसी समय शौरसेनी अपभ्रंश उत्तर भारत के पूर्वांचल तक प्रचारित था। इसका प्रभाव सिद्धों के चर्या-गीतों पर पड़ा। अतः यह असंभव नहीं कि अवहट्ठ या अपभ्रंश ने ब्रजबुलि के उद्भव-विकास में योग दिया हो। किंतु यह भी स्पष्ट है कि विद्यापति के पश्चात ही ब्रजबुलि की कविताओं की बाढ़ आयी और इन कविताओं की भावधारा तथा भाषा विद्यापति की पदावली के अति निकट है।

मुसलमानों के आक्रमणों से पीड़ित होकर मिथिला-नरेश श्री हरिसिंह देव ने मिथिला का सन १३२४ में परित्याग कर हिमालय की तराई में राजधानी स्थापित की। नेपाल-नरेश के साथ इनके परिवार के वैवाहिक संबंध स्थापित हुए। नेपाल-दरबार में मैथिली पंडित और विद्यापति की पदावली दोनों ही पहुंची। वहां ब्रजबुलि में अनेक नाटक लिखे गये।

अपने से पश्चिम ओर की भाषा, जिसमें विद्यापति ने राधा-कृष्ण के लीला-पदों का गायन किया, पूर्वांचलीयों के लिए ब्रज-भाषा या ब्रजबुलि ही थी। बंगला भाषा के अतिरिक्त असमिया और उड़िया भाषा में भी इस प्रकार के प्रयास किये गये। इसमें ब्रज-भाषा के भी शब्दों का प्रयोग हुआ। वह ब्रज-भाषा भले ही न हो, पर उसमें ब्रज की छोंक अवश्य है।

ब्रजबुलि का प्रथम पद बंगाली यशोराज खां ने लिखा था। यह पद हुसेन शाह को उसी प्रकार अर्पित है—जैसे कि विद्यापति के पद राजा शिवसिंह को अर्पित हैं। उन्मत्ता अभिसारिका का वर्णन इस प्रकार प्रस्तुत किया गया है—

एक पयोधर चंदन लेपित
आंरे सहजइ गोर
हिम धराधर कनक भूधर
कोरे मिलल जोड़
. . .   .
श्रीयुत हुसन जगत भूषण
सेह इह रस जान

चैतन्य महाप्रभु की विह्वला-भक्ति से प्रेरणा प्राप्त कर ब्रजबुलि में १९वीं शती तक पद-रचना होती रही। रवीन्द्रनाथ टाकुर ने भी भानुसिंह के नाम से कई पद लिखे थे। असम में शंकर देव ने कई अंकीया नाटकों और बड़गीतों में इसी भाषा का प्रयोग किया। असम में ब्रजबुलि को ब्रजावली कहा गया है। शंकर देव के पश्चात भी कई कवियों ने नाटक लिखे। शंकर देव ने नाटकों में गद्य के लिए भी ब्रजबुलि का प्रयोग किया।

उड़ीसा के राजा प्रतापरुद्र के प्रतिराज (प्रतिनिधि) राय रामानंद ने सन १५११—१२ में चैतन्य को ब्रजबुलि का पहला पद—'**पहिलहि राग नयन भंग भेल**' सुनाया था।

सरस भूमि बंगाल की

बंगाल की सरस भूमि राधाकृष्ण के प्रेम के लिए अत्यंत अनुकूल थी। बंगाली पदकर्ताओं ने लीला-विषयक हजारों पदों का निर्माण किया। ब्रह्मवैवर्त-पुराण के अनुसार राधा की उत्पत्ति रास-परायण कृष्ण के वाम अंग से हुई। उनका विवाह कृष्ण से हुआ। राधा की छाया का विवाह रायाण नामक गोप से हुआ। पुराणकार ने चतुरतापूर्वक राधा को स्वकीया और परकीया दोनों ही दिखा दिया है।

बंगाल में परकीया-प्रेम भक्ति के क्षेत्र में आदर्श माना गया है। इसमें प्रियतम ब्रह्म को पाने की तीव्र छटपटाहट होती है। प्रेम की यही छटपटाहट बंगाल के संस्कृत कवि जयदेव में मिलती है तथा मैथिल कवि विद्यापति और बंगला कवि चंडीदास में भी। चंडीदास की राधा केश खोलकर नहीं बांधती, आंखों में काजल नहीं लगाती, क्योंकि इन दोनों को देख उसे अपने काले कन्हाई की याद आ जाती है—

कालो केश एलाइया केश नाहि करि
कालो अंजन आमि नयने ना परि

कृष्ण-राधा के मधुर प्रेम ने बंगाली

राधा-कृष्णमय चैतन्य महाप्रभु की सरस भूमि बंगाल राधा-कृष्ण के प्रेम के लिए अत्यंत अनुकूल रही है, जिसने हिंदुओं को ही नहीं, अपितु मुसलमान कवियों को भी आकृष्ट किया है। प्रस्तुत है इन कवियों के रचना-जगत की एक झांकी।

मुस्लिम कवियों को भी आकृष्ट किया। अठारहवीं शती में नाछिर मोहम्मद ने वैष्णव पदों का संकलन किया था। इस संकलन में कई मुस्लिम कवियों की रचनाएं हैं। हरेकृष्ण मुखोपाध्याय द्वारा संकलित 'वैष्णव-पदावली' में भी कतिपय मुसलमानों के बंगला और व्रजबुलि पद हैं।

जहां कृष्ण-राधा हैं, वहां जमना है, वंशी है, रासलीला है, मदनोत्सव है, और है विरहिणी राधा की कातरोक्ति। संयोग में जहां वे कृष्ण के साथ उन्मुक्त विहार करती हैं, वहीं कृष्ण से एक पल का वियोग सह नहीं पातीं। व्रज की यह राधा-कृष्ण-संस्कृति इन वैष्णव कवियों में भी रूपायित हुई है। उन्होंने राधाकृष्ण को सामान्य नायिका-नायक के रूप में ही नहीं देखा, राधा ब्रह्म कृष्ण की शक्ति है।

इन कवियों के कृष्ण भी वेत्र-वेणु-मुरली-गुंजाहार धारण करनेवाले ब्रज-नायक हैं। वे लीला करने के लिए अवतीर्ण हुए हैं, तभी नसिर मामुद उनके चरणों में शरण मांगते हैं—

अगम निगम बेद सार
लीलाय करत गोठ बिहार
नसिर मामुद करत आश
चरणे शरण दान रि

कृष्ण की मुरली का स्वर तो गोपियों को बेचैन कर देता है, इसलिए, जहां सूरदास की गोपियां इस 'कुलजारी' मुरली को अपनी सौत मानकर डाह करती हैं, वहां कवि चांद काजी की राधा उलाहना देती हुई कहती है, 'हे कान्ह, तुम बांसुरी बजाना नहीं जानते। तुम असमय बांसुरी बजाते हो। मेरा मन नहीं मानता। जब मैं गुरुजनों के बीच बैठी होती हूं, तब तुम नाम लेकर बांसुरी बजाते हो, मैं लाज से मर जाती हूं। तुम उस पार से बांसुरी बजाते हो, मैं इस पार से सुनती हूं। मैं विरहिन तैरना नहीं जानती। यदि मैं बांस का झाड़ पा जाऊं, तो डालमूल-सहित उखाड़कर

एक संसद-सदस्य अपने निर्वाचन क्षेत्र में एक सभा में भाषण कर रहे थे, 'देखिए, मेरे आग्रह करने पर ही 'लैंड-रिफार्म' होने जा रहा है। मैं 'हाउसिंग-रिफार्म' के लिए भी जोर दे रहा हूं और 'एजुकेशन-रिफार्म' भी करवाकर ही दम लूंगा।'

'बस, अब क्लोरोफार्म की और जरूरत है', भीड़ में से किसी मनचले श्रोता की आवाज उछाल दी।

सागर में फेक दूं——

बांशी बाजानो जानो ना
असमये बाजाओ बांशी पराण माने ना
यखन आमि बैसा थाकि गुरु जनार माझे
नाम धैरा बाजाओ बांशी आमि मरि लाजे
ओपार हैते बाजाओ बांशी ए पार हैते शुनि
बिरहिणी नारी आमि हे सांतार नाहि जानि
ये झाड़ेर बांशी से झाड़ेर लागि पांओ
डाले मूले उपाड़िया सागरे भासांओ

वसंत सभी ऋतुओं में उन्मादक होती है। नर-नारी तीव्र मादन-भाव का अनुभव करते हैं। होली का फागरंग मदन-देवता का उल्लास है। होली के पद में देखिए, व्रजबुलि के कबीर साहब के कृष्ण, राधा, ललिता आदि होली खेलते हुए उन्मत्त हो उठते हैं—

बरज किशोरी फागु खेलत रंगे
चुया चंदन आबिर गुलाब
देयत श्यामेर अंगे
फागु हाते करि फिरत
श्री हरि फिरि बुलत राइ
घुमट उठाये बायान छापाये
जैछे चांद लुकाइ
ललिता सखि फागु हाते करि
देयत कानु॰न यान

यह होली का पद सूरदास के होली के पद की याद दिला देता है।

विरह की तीव्रतम अकुलाहट

कृष्ण के विरह में राधा तीव्र अकुलाहट का अनुभव करती हैं। प्रिय के प्रति पूर्ण समर्पण के पश्चात ही यह छटपटाहट होती है। सैयद मरतुजा की राधा 'राग वेलावलि करुण' में कातरोक्ति देखिए—

श्याम बंधु चित्त निवारण तुमि
को न शुभ दिने देखा तोमा सने
पासरिते नारि आमि
यखन देखिये ए चांद वदने
धैरज धरिते नारि
अभागीर प्रान करे आनचान
दंडे दश बार मरि

——श्याम प्रिय तुम चितचोर हो। किस शुभ दिन तुम्हें देख लिया कि भूल नहीं पाती। तुम्हारा चांद मुख देख लेती हूं तो धीरज नहीं धर पाती। अभागी के प्राण बेचैन हो उठते हैं। मैं एक पल में दस बार मरती हूं। हे प्रान कान्हा, सुनो, मुझ पर दयाकर चरन-छाया दे दो। मैंने कुलशील सब जल में वहा दिया है। तुम्हारे बिना प्राण नहीं रहेंगे।

भारतीय साधना में गुरु को विशेष महत्त्व दिया गया है। परब्रह्म कृष्ण गुरु के रूप में ही अवतरित माने गये हैं। बंगाली कवि चैतन्य महाप्रभु को कृष्ण का अवतार मानते थे। मुरारि गुप्त लिखते हैं—

शचीर आंगिना माझे भुवन मोहन साझे
गोरा चांद देय हामागुड़ि

—यानी माता शची के आंगन में भुवन-मोहन रूप धारण किये गोरा चांद (चैतन्य) घुटनों के बल चल रहा है।

कृष्णदेव घोष का गोरा चांद नदिया नगर में फाग खेलता हुआ अपने नयन-बाण से युवतियों का चित्त हर रहा है—

फागु खेले गोरा चांद नदीया नगरे
युबतीर चित्त हरे नयनेर शरे

ब्रजबुलि के साह आकबर साहब भी गौरांग प्रभु चैतन्य के विषय में कहते हैं—'मेरा मनचोर गोरा जियें। यह तो अपने ही रस में, अपनी ही भक्ति के रस में विभोर हो कर नाच रहा है।'

चैतन्य रूपी कृष्ण के प्रेमभिखारी साह आकबर ऐसे प्रभु की बलिहारी जाते हुए लिखते हैं—

ऐछन पहुं के जाहु बलिहारी
साह आकबर तेरे प्रेम भिखारी

किसी समय बंगाल में हिंदी के प्रेमाख्यानों की बड़ी धूम थी। वहां के हिंदू-मुस्लिम शासकों ने कई ग्रंथों का अनुवाद कराया था। १७वीं शती के आलाग्रोल नामक कवि ने जायसी के पदमावत का बंगला अनुवाद 'पद्मावती पांचाली' के नाम से किया था। मुल्ला दाउद के 'चांदायन' का बंगला अनुवाद दौलत काजी ने किया, जो अधूरा रह गया। इसे भी बाद में आलाग्रोल ने पूरा किया।

बंगाली मुस्लिम कवि देश की मुख्यधारा से स्वतः सहज जुड़ गये थे। इनका तन-मन-प्राण, इनकी भाषा, इनकी भावधारा सभी कुछ विशुद्ध भारतीय थी। हिंदी के मुस्लिम कवियों को लक्ष्यकर भारतेंदु हरिश्चंद्र ने जो कहा है—'**इन मुसलमान हरिजनन पै कोटिन हिंदू वारिये**।' उसे इन बंगाली कवियों के लिए भी निवेदित किया जा सकता है।

—हिंदी विभाग,
दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली

कर्त्तव्य-बोध

ट्रेन में बैठते ही उसने डिब्बे की दीवार पर छपा हुआ पढ़ा, 'रेलवे आपकी अपनी संपत्ति है, इसकी रक्षा कीजिए।'

कुछ देर बाद उसने देखा, एक आदमी 'वाश-बेसिन' पर लगा शीशा उतार रहा है। उसे अपने कर्त्तव्य का ध्यान आया और उसने उस चोर को शीशा चुराने से रोक दिया।

घंटे-आधे घंटे के सफर के बाद उसने फिर देखा कि कोई दूसरा आदमी उसी शीशे को उतारने की कोशिश में है। उसने फिर उसे भी रोक दिया।

रातभर लंबे सफर में उसने इसी तरह कई चोरों से रेलवे की संपत्ति (शीशे) की रक्षा की, लेकिन उतरने से पहले वह सोचने लगा कि मेरे उतरने के बाद इस शीशे की रक्षा कौन करेगा ? कोई-न-कोई चोर इसे ले ही जाएगा। 'मुझे क्या करना चाहिए', वह सोचता रहा।

कुछ सोचकर वह उठा और कर्त्तव्य-बोध के वशीभूत होकर उसने शीशा उतारा और अपने घर ले गया। उस यात्री का नाम तो मुझे याद नहीं, हां, उसके कमरे की दीवार पर आज भी वह शीशा टंगा है। शीशे को देखकर वह अकसर बड़बड़ाता है, 'देखा, तू डिब्बे में लगा होता, तो तेरी रक्षा कैसे हो पाती ? कोई-न-कोई चोर तुझे ले ही जाता।'

—सत्यराज

कहानी नकली पेंटिंग, नकली रुपयों की!

प्रख्यात कला-पारखियों का कहना था कि यह चित्र सत्रहवीं शताब्दी के एक प्रसिद्ध चित्रकार का है, और इस सदी के एक चित्रकार का कहना था कि यह चित्र मेरा बनाया हुआ है . . . और जब सचाई खुली तो वह चौंकानेवाली थी।

• चंद्रमोहन प्रधान

सन १९३६ ! रॉटरडम (हॉलैंड) के बोएमान'स म्यूजियम के बाहर भीड़ उमड़ रही थी। संग्रहालय में १७वीं शती के मूर्धन्य डच चित्रकार ज्यां वर्मियर (१६३२–१६७५) के नये खोज निकाले गये चित्र 'क्राइस्ट एवं शिष्य एम्मास पर'–(एम्मास बाइबिल के युग में जेरुसलम के पश्चिम में एक पर्वतीय जगह थी) को प्रथम बार प्रदर्शित किया जा रहा था।

ज्यां वर्मियर के अब तक कुल चालीस चित्र ही प्राप्त हुए हैं। वर्मियर को दक्ष क्राफ्ट्समैन भी माना जाता है। इसकी प्रसिद्धि का रहस्य इसके चित्रों में छाया और प्रकाश के सामंजस्य तथा छोटी-सी छोटी चीज-जैसे कालीन की जरा सी सिकुड़न, दीवार पर कोई धब्बा और वस्तुओं के वास्तविक प्रभाव का अंकन है। उसके प्रत्येक चित्र में विभिन्नता मिलती है, किंतु शैली सबकी एक ही है।

वर्मियर का चेहरा कैसा था, यह भी रहस्य ही है। अन्यान्य चित्रकारों की तरह उसने अपना व्यक्ति-चित्र (पोर्ट्रेट) बनाया भी तो स्टूडियो में काम करते हुए पीठ की ओर से। इस चित्र को देखने से वर्मियर तंदुरुस्त, चुस्त और जवान लगता है!

एक महान उपलब्धि!

वर्मियर के इस नये चित्र की खोज करने

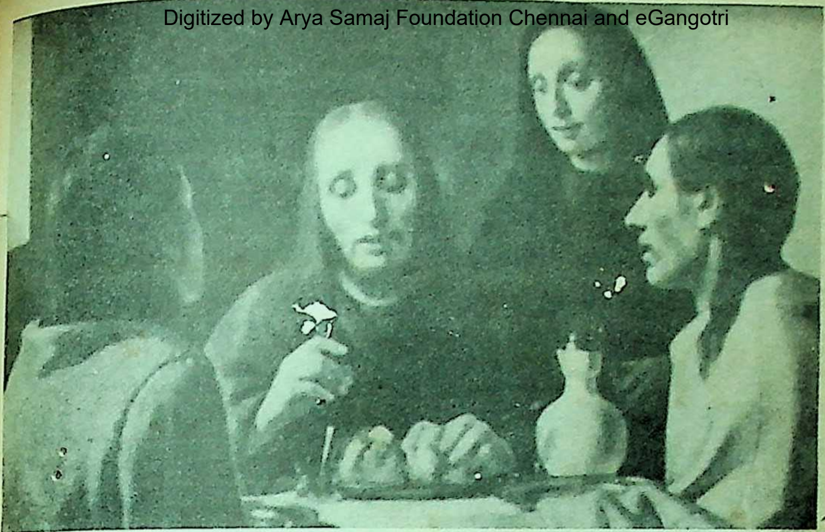

ज्यां वर्मियर का चित्र : 'क्राइस्ट एवं शिष्य : एम्मास पर', जो नकली है

के लिए डॉ. अब्राहम ब्रेडियस को बहुत सम्मान दिया गया। डॉ. ब्रेडियस प्रख्यात कला-पारखी व समीक्षक थे। भीड़ उन्हें बधाई दे रही थी और इस खोज को एक महान उपलब्धि की संज्ञा।

किंतु, इस जन-समूह में एक व्यक्ति ऐसा भी था, जिसकी प्रसन्नता का कारण दूसरे सभी लोगों से भिन्न था। इस व्यक्ति का नाम था हांस वॉन मीजेरन। दरअसल, जिस चित्र को एक महान उपलब्धि माना जा रहा था, उसका चित्रकार वर्मियर नहीं, बल्कि हांस वॉन मीजेरन ही था। उसके लिए यह एक महान अवसर था। वह मन ही मन उन कला-समालोचकों की मूर्खता का आनंद ले रहा था, जो अपने को बहुत बड़ा कला-पारखी मानते थे।

मीजेरन की इस मनोवृत्ति को समझने के लिए कुछ पीछे लौटना होगा। जब वह स्वयं कला के क्षेत्र में ख्याति प्राप्त करने लगा था, तब एक बार एक भ्रष्ट कला-समीक्षक ने उसके चित्रों की अच्छी समालोचना करने के लिए घूस की मांग की। उसने उसे दुत्कार दिया। फलस्वरूप, उस समीक्षक ने उसके चित्रों की गलत-सलत व ध्वंसात्मक आलोचना करनी शुरू कर दी। नतीजा यह हुआ कि अन्य समीक्षकों ने भी उसे भुला-सा दिया।

इसके बाद, वर्षों बीत गये।

लूटा गया कला-संग्रह

सन १९४५ में, जब नाजी जरमनी का पतन हुआ, हिटलर के दाएं हाथ, मार्शल हरमन गोएरिंग के द्वारा लूटकर जमा किये गये अकूत मूल्यवान कला-संग्रह का पता चला। इस संग्रह में १२०० चित्र थे। जिनमें ज्यां वर्मियर का प्रख्यात चित्र 'वोमैन टेकन फॉर एडल्ट्री' भी था। यह

चित्र गोएरिंग ने लूटकर नहीं, बल्कि लगभग १२ लाख रुपये में खरीदा था।

इस कला-संग्रह के प्रकट होने पर और यह पता चलने पर कि डच चित्र को नाजी जरमनों के हाथ बेचा गया है, डच पुलिस ने मामले की छान-बीन की। बात सीधी वॉन मीजेरन तक जा पहुंची। इन दिनों, वह एक नाइट-क्लब का मालिक था और काफी धनी था। दरअसल, मीजेरन के पास ज्यां वर्मियर के छह चित्र थे, जिसमें से पांच चित्र उसने डच संग्रहालयों को, और छठवां गोयरिंग को बेचा था। इन छह चित्रों के बेचने से ही वह धनी बना था। वर्मियर की ये पेंटिंगें उसने एक इटैलियन परिवार से खरीदे थे, और ग्राहकों पर विश्वास रखते हुए उसने उन्हें ये चित्र बेचे थे। लेकिन उसे क्या पता था कि उसका बेचा हुआ कोई चित्र नाजियों के हाथों में भी पड़ जाएगा। गोएरिंग को भी उसने सीधे-सीधे चित्र नहीं बेचा था।

रहस्य ऐसे खुला

पूछताछ करने पर पुलिस अधिकारियों को उसकी सफाई पर विश्वास न हुआ और उसे पुलिस ने गिरफ्तार कर लिया। तीन सप्ताह जेल में रहने के बाद वह एक दिन अधिकारियों पर फट पड़ा, और बोला, "मैंने जरमनों को बेवकूफ बनाया है, क्योंकि मैंने उन्हें वर्मियर का कोई चित्र नहीं बेचा, जो बेचा है, वह मेरा ही बनाया हुआ है।"

यह भेद खुलते ही हंगामा मच गया। उसने इससे आगे स्वीकार किया कि अ तक उसने हाल्स, हूच, वर्मियर आदि-जै प्रख्यात डच चित्रकारों के चौदह चि की नकली प्रतियां बनायी और बेची तथा 'क्राइस्ट एवं शिष्य : एम्मास पर' वा चित्र भी उसका बनाया हुआ है।

यह रहस्योद्घाटन डॉ. अब्राह ब्रेडियस-जैसे कई कला-समीक्षकों की सा को धक्का लगानेवाला सिद्ध हुआ। बद की भावना से प्रेरित वॉन मीजेरन् चाह भी यही था। लेकिन इन कला-समीक्ष ने भी मोर्चा बांधा और वान मीजेरन क एक स्वर से झूठा सिद्ध करने की कोशि करते हुए उसे चुनौती दी कि वह अप बात को सही साबित करने के लिए 'क्राइ एवं शिष्य' चित्र फिर से बनाकर दिखाये

वॉन मीजेरन ने चुनौती को स्वीकार क लिया। उसने जेल अधिकारियों के वर्मिय की शैली में 'बालक क्राइस्ट : मंदिर शिक्षा देते हुए' बनाया। इस दौरान ब से अधिकारी सजग दृष्टि के साथ, सा गवाह के तौर पर बैठे रहे। उसे उस मांग के अनुसार उसके रसायनों का संग्रह दिया गया, जिससे वह वर्मियर जमाने के रंगों का निर्माण करता था औ चित्र का वही प्रभाव पैदा करता था। उ का बनाया यह चित्र इतना सुंदर था कि व वर्मियर-जैसे बनाये चित्र लग रहा था।

उंसकी इस सफलता का परिणा यह निकला कि उसके विरुद्ध जरमनों साथ सहयोग करने का आरोप स्वयं निर

हो गया। किंतु, उसे जाली हस्ताक्षर बनाने के अपराध में अदालत में पेश होना पड़ा। उसके बनाये चित्र न्यायालय की दीवार पर टांगकर न्यायाधीश के सम्मुख प्रदर्शित किये गये। उसे दोषी पाया गया और न्यायाधीश ने घर पर रहकर उसे दंड की प्रतीक्षा करने का आदेश दिया। दो सप्ताह बाद उसे एक साल की सजा सुनायी गयी। किंतु, सजा सुनाने से पहले ही उसे दिल का दौरा पड़ा और छह सप्ताह बाद, वह ५८ वर्ष की अवस्था में चल बसा।

और इसमें एक विचित्र हास्यास्पद बात रही। जहां वॉन मीजेरन ने गोएरिंग को वर्मियर का नकली चित्र देकर ठगा, वहां गोएरिंग ने भी वॉन को जाली करेंसी देकर ठगा। उन दिनों मित्र-राष्ट्रों की अर्थ-व्यवस्था और मुद्रा-प्रणाली को चौपट करने के लिए हिटलर ने बहुत बड़ी संख्या में उन देशों के जाली नोट जरमनी में छपवाये थे और उन्हें गुप्त रूप से उन देशों में जारी कराया था। इस तरह वॉन और गोएरिंग दोनों ने एक दूसरे को ठगा था।

वॉन मीजेरन भले ही ठग और जालसाज रहा हो, किंतु इसमें संदेह नहीं कि उसने स्वयं को सदियों पुराने महान चित्रकारों की श्रेणी का साबित कर दिखाया था।

—निदेशक,

ज्ञान-कला-केंद्र, आमगोला मुजफ्फरपुर

रेनी चेनी की अजीब शर्त

रेनी चेनी नामक एक महिला ने एक फ्रेंच पत्रिका में विज्ञापन दिया—'आवश्यकता है एक पुरुष-मित्र की, जिसे विवाह किये बिना ही वैवाहिक-जीवन की सभी सुख-सुविधाएं उपलब्ध होंगी, लेकिन केवल एक ही शर्त है कि वह एक सुंदर-सी अंगूठी खरीदवाने के लिए तैयार हो।'

विज्ञापन के जवाब में दूसरे दिन ही उसे तीन सौ पत्र मिले। इनमें बीस अति-उत्साही व्यक्ति ऐसे भी थे, जिन्होंने शर्त की पूर्ति के प्रमाण-पत्र स्वरूप हीरे की कीमती अंगूठियां भी भेज दीं।

तीसरे दिन रेनी को घर से लापता पाया गया उन सभी अंगूठियों के साथ, जिनकी कीमत लगभग ७६ हजार पौंड थी। उसके लापता होने पर जब अंगूठी भेजनेवालों ने पुलिस का दरवाजा खटखटाया, तब जवाब मिला कि 'मालूम पड़ता है कि निश्चय ही कोई धोखेबाज औरत अपना छद्मनाम 'रेनी चेनी' रखकर अपना कमाल दिखा गयी है। आप लोग अपने-अपने घर जाइए और अंगूठियों के वापस मिलने की उम्मीद छोड़ दीजिए।'

उछल-कूद भी एक बीमारी है

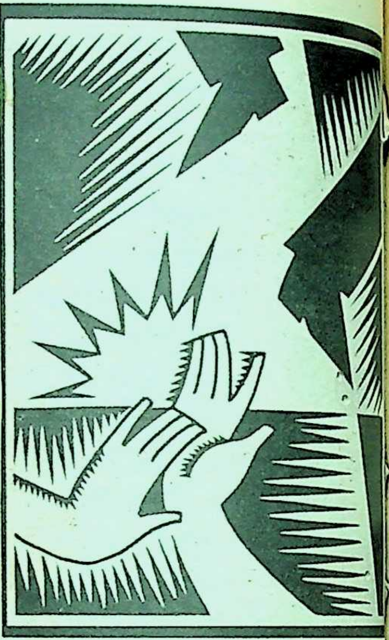

● **एम. रुडोल्फ**

पेटे के पड़ोसियों ने उसका नाम ही 'जंपर' यानी 'उछल-कूद' रख दिया है। कारण ? एक बार जब पेटे के घर के पास ही नयी रेल पटरी बनी और वहां से रेलगाड़ी घरघराती हुई जाती सुनायी दी, तब पेटे एकदम जोरों से उछलने लगा। उसने पास पड़ी हुई मेज उलट दी, जिससे सारी प्लेटें टूट गयीं। सभी उसे हैरानी-से देख रहे थे, लेकिन गाड़ी की 'वू हूं . . . की आवाज ने पेटे को ऐसी अजीब स्थिति में डाल दिया कि वह बेहूदी उछल-कूद के लिए विवश हो गया।

जरा-सी आवाज पर चौं पड़ना, किसी का स्पर्श हो ही उछल-कूद करने लगना, जि फिलिपाइंस में 'माली-माली' कहा जाता है और मलयेशिय में 'लाटह' । मनोविज्ञान क्षेत्र में एक दिलचस्प खोज क विवरण . . .

अचानक उछल-कूद या अजीब व्यवहार करना, वास्तव में एक बीमारी है। सन १८७८ में डॉ. जार्ज बियर्ड ने अमेरिकन न्यूरोलॉजी की एसोसियेशन की वार्षिक

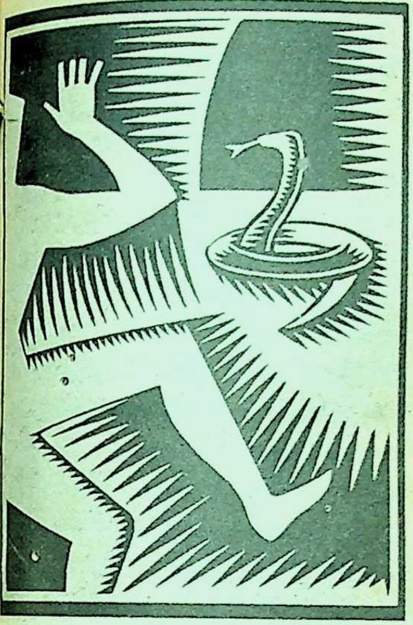

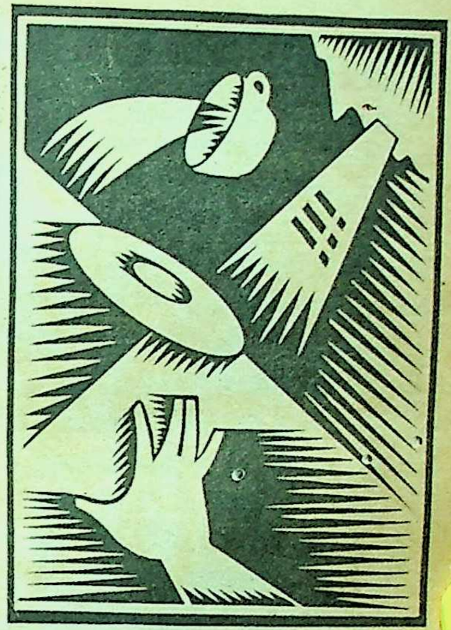

बैठक में घोषित किया था कि वह इस तरह व्यवहार करनेवाले, यानी जरा-सी बात पर चौंक जानेवाले, उछल-कूद करनेवाले लोगों की बीमारी की खोजबीन करने के लिए 'मूज हेड लेक' नामक स्थान जा रहे हैं।

यह बीमारी बचपन से संभव

दो वर्ष पश्चात डॉ. बियर्ड ने बताया कि उन्होंने उछल-कूद करनेवाले पचास 'केस' लिये, जिनमें पंद्रह 'केस' सिर्फ चार परिवारों में से ही थे। उनका कहना था कि प्राय: ऐसी मानसिक विक्षिप्त अवस्था बचपन से भी हो सकती है। इसमें व्यक्ति किसी भी प्रकार की आवाज अचानक सुनकर अजीब तरह-से नाचना-कूदना आरंभ कर देता है। जरा-सा चौंकने पर भी वह ऊंचा कूदना शुरू कर देता है। कई बार ऐसे व्यक्ति को जो कुछ कहा गया, वह तेजी-से वही दोहराने लगा। कुछेक को जब कोई आदेश चिल्लाकर दिया गया तो वह उस आदेश को जोरों-से दोहराता रहा और आदेश का पालन भी करता रहा।

'फेंक दो इसे'

एक नवयुवक जिसकी मानसिक स्थिति कुछ ऐसी ही थी, पाइप में तंबाकू भर रहा था। तभी पीछे-से किसी ने उसके कंधे पर थप्पड़ मारते हुए कहा, 'फेंक दो इसे।' युवक ने तुरंत पाइप व तंबाकू फेंक दिया।

डॉ. बियर्ड का कहना है कि इस युवक को जब उन्होंने धीमे-से थपथपाकर फिर उसे मारने के लिए सिर्फ हाथ-से इशारा किया, तब वह अपनी जगह से जरा-सा

ऊंचा उछला, लेकिन जब भी उसे अचानक 'किक' किया जाता या मारा जाता, तब वह तेजी-से उछल पड़ता। यहां तक कि जब उस पर अचानक एक रूमाल फेक दिया गया, तब भी वह ऐसे उछल पड़ा-जैसे उस रूमाल से उसे बहुत जोर की चोट लगी हो। कहते हैं, एक बार जब 'जपर' यानी उछल-कूद के रोग से ग्रस्त दो व्यक्तियों को एक दूसरे के समीप पाकर उनसे कहा गया, 'स्ट्राइक' यानी मारो तो दोनों ने एक दूसरे को जोरों-से मारना शुरू कर दिया।

इस रोग को फ़िलिपाइंस में 'माली-माली' ग्रौर मलयेशिया में 'लाटह' कहा जाता है (यहां हम ऐसे रोगी को लाटह के नाम से ही संबोधित करेंगे)।

मनोरंजन के लिए चौंकना

एक लाटह विशेषकर मलयेशिया में चौंकने पर विशेष रूप-से अजीब शारीरिक प्रतिक्रियाएं करता है। कई बार वह हाथ की चीजें जोरों-से फेकने लगता है ग्रौर भद्दी बातें (अपशब्द) कहता है। जानेमाने लाटह बहुत बार जान-बूझकर चौंकते ग्रौर प्रतिक्रियाएं करते हैं। कहते हैं, यह रोग विभिन्न देशों में विभिन्न रूपों में विद्यमान है। कहीं-कहीं लाटह विशेष आवाजों पर एकदम चौंककर प्रतिक्रिया करते हैं तो कहीं-कहीं जान-बूझकर ग्रौरों का मनोरंजन करने के लिए भी अजीब हरकतें करने लगते हैं।

एक अमरीका निवासी ने, जो इसी रोग से ग्रस्त था, जूडो सीखा ग्रौर जब भी वह कोई जोरों की आवाज सुनता, तब चौंककर वह जूडो की मुद्रा में खड़ा हो जाता। यहां तक कि वह कहीं जरा ठोकर खाता, तुरंत जूडो की मुद्रा में आ जाता।

क्रिया की प्रतिक्रिया में

वैसे चौंकना एक आदिम प्रवृत्ति है। व्यक्ति किसी भी क्रिया पर प्रतिक्रिया करता है ग्रौर यह तत्पर आंख झपकाने तथा विभिन्न प्रतिक्रियाग्रों के रूप में विद्यमान है। 'सस्पेंस' फिल्मों में, प्रायः चौंकानेवाले दृश्य जोड़ने के लिए फिल्म-निर्माता पहले एक भूमिका बनाते हैं—घुप्प ग्रंधेरा—कदमों की आवाज, तेज संगीत ग्रौर फिर एकदम अजीबो-गरीब स्थिति! ऐसी स्थिति में लोग सहज ही प्रतिक्रिया करते हैं!

लाटह स्त्रियां कम ही देखने को मिलती हैं, तथा जो होती भी हैं, वे भिन्न रूप से प्रतिक्रिया करती हैं।

समाज के कुछ वर्गों में आपस में एक दूसरे पर मजाक करना, छेड़खानी तथा जानबूझकर चौंकानेवाली स्थितियां सहज रूप-से विद्यमान हैं। यही कारण है कि अनेक महानगरों में लाटह एक रोग का रूप धारण नहीं कर पाया। उछल-कूद की स्थितियां तो प्रायः सारे संसार में विद्यमान हैं—ग्रौर चौंक जाना एक सहज प्रतिक्रिया भी। लेकिन जरा-सी बात-से बहुत अधिक चौंकना, उछल-कूद मचाना एक रोग है। शुक्र है, यह रोग अभी भारत में नहीं आ पाया, या यों कहें यहां पहले से ही इतनी उछल-कूद विद्यमान है कि इसे रोग की संज्ञा दी ही नहीं जा सकती। ●

ज्योतिष समस्या और समाधान

३

'कादम्बिनी' के नये स्तंभ--'ज्योतिष : आपकी परेशानियों का निदान'--का पाठकों ने बड़े उत्साह से स्वागत किया है। प्रविष्टि क्रमांक--तीन के लिए हमें बहुत बड़ी संख्या में पाठकों के पत्र मिले हैं। सभी प्रश्नों के उत्तर दे पाना व्यावहारिक रूप से संभव नहीं है, अतः यहां कुछ चुने हुए प्रश्नों के उत्तर दिये जा रहे हैं। इस अंक में पाठकों की समस्याओं का समाधान कर रहें हैं चंडीगढ़ के सुपरिचित ज्योतिषी--डॉ. आचार्य कुसुम, एम. ए., पी. एच-डी.

रामस्वरूप सक्सेना, छतरपुर (म. प्र.)

प्रश्न : पैतृक संपत्ति का विवाद कव तक सुलझेगा ?

उत्तर : आपके ग्रह-योग के अनुसार मंगल उच्च का होते हुए भी अष्टम भावगत है। सूर्य भी श्रेष्ठ नहीं है। १९८३ में समाधान होगा और आपके पक्ष में होगा।

ब्रजेन्द्रकुमार शर्मा, सहारनपुर

प्रश्न : पत्नी से समझौता कब तक होगा ?

उत्तर : ग्रह-योग के अनुसार आपका सप्तम भाव एक दम नेष्ठ है, इसलिए स्थायी समझौता नहीं हो पाएगा।

अजयकुमार सलूजा, सागर (म. प्र.)

प्रश्न : सफेद दाग कव तक ठीक होंगे ?

उत्तर : आपकी कुंडली के अनुसार इस समय आपके शनि, राहु तथा केतु ठीक नहीं हैं। यह १९८३ के बाद ठीक हो सकता है।

शिवगोपाल महरोत्रा, देहरादून

प्रश्न : मंदिर या धर्मशाला बनाने का योग कव तक है ?

उत्तर : इसके लिए ५१ वर्ष की आयु के बाद समय अनुकूल है और यदि आपका मंगल लग्नरूप न होता, तो यह अब तक वन भी गया होता।

प्रदीपकुमार त्रिपाठी, दुर्गापुर

प्रश्न : दमा के लिए कौन-सा रत्न आजीवन धारण करना चाहिए ?

उत्तर : आपके ग्रह-योग के अनुसार आपको मोती धारण करना चाहिए। शंकर की उपासना भी करें।

नरेन्द्रकुमार पंवार, बीकानेर

प्रश्न : मैं दुर्बलता तथा वायु रोग से पीड़ित हूं। यह कब तक रहेगा ? रत्न बताएं।

उत्तर : आपके ग्रह-योग के अनुसार आपकी

कुंडली में ग्रहण-योग है अतः यह सामान्य है। ३३ वर्ष की आयु के बाद यह ठीक हो जाएगा। मोती एवं नीलम धारण करें।

बालकृष्ण शर्मा, वाराणसी

प्रश्न : बुरे ग्रह समाप्त होकर भाग्योदय कब तक होगा ?

उत्तर : आपका भाग्योदय १९८३ से होगा। इस समय में आपको शनि, गुरु एवं बुध अनुकूल फल देंगे। गोमेद धारण करें।

अशोककुमार, लखनऊ

प्रश्न : मुझे भविष्य में क्या करना है ताकि मेरा भविष्य बन सके।

उत्तर : ग्रह-योग सामान्य है। आपका जीवन सामान्य ही रहेगा। शंकर की उपासना से भविष्य उज्ज्वल होगा।

विश्वजीत सिंह गौतम, दिल्ली

प्रश्न : मुझे व्यवसाय में फायदा नहीं हो रहा है। यह कब तक ठीक होगा ?

उत्तर : आपके ग्रह-योग के अनुसार आपको शनि, राहु एवं मंगल शुभ नहीं हैं। इसीलिए अस्थिरता है। २८ वर्ष की आयु के बाद यह ठीक हो जाएगा।

रवीन्द्र गोयल, दिल्ली

प्रश्न : व्यवसाय में अस्थिरता है। कब तक ठीक होगी ?

उत्तर : अभी शनि, राहु एवं सूर्य ठीक नहीं है। १९८३ से व्यवसाय में स्थिरता आएगी।

रामकृष्ण अग्रवाल, जबलपुर

प्रश्न : मानसिक अशांति है। नौकरी छिन गयी, मकान छिन गया पत्नी छोड़कर चली गयी क्या ये पुनः मिलेंगे ?

उत्तर : आपके ग्रहयोग के अनुसार चतुर्थ, पंचम, षष्ट एवं दशम भाव ठीक नहीं है। इसलिए नौकरी में अस्थिरता एवं संपत्ति का अभाव रहेगा। किंतु पत्नी पुनः मिलेगी। इसकी संभावना अगले वर्ष है।

एस. एल. चन्देल, रायपुर

प्रश्न : मैं सुप्रीम कोर्ट का जज कब तक बनूंगा ?

उत्तर : आपकी कुंडली में ग्रहण-योग है, वैसे ग्रह स्थिति उत्तम है। अतः आगामी वर्ष तक धैर्य रखें।

चन्द्रसिंह, जोधपुर

प्रश्न : विगत चार वर्ष से चल रहे गबन के मामले में परिणाम क्या रहेगा?

उत्तर : आपके ग्रह-योग के अनुसार शनि, सूर्य, राहु, एवं केतु ठीक नहीं हैं। १९८३ से परिणाम आपके अनुकूल रहेंगे।

देवीदास, आगरा

प्रश्न : मेरा स्वास्थ्य दो वर्ष से खराब है यह कब तक ठीक होगा ?

उत्तर : इस समय सूर्य, राहु एवं केतु अच्छे नहीं हैं। मंगल भी शुभ नहीं है। अतः नवंबर, १९८४ के उपरांत स्वास्थ्य ठीक होगा।

विजय कुमार, जालन्धर

प्रश्न : अपना व्यवसाय शुरू किया है। सफलता मिलेगी या नहीं ?

उत्तर : शनि, राहु एवं चंद्र ठीक नहीं है। १९८३ से व्यवसाय में सफलता के योग हैं।

श्रीमती नीरा जैन, बूंदी

प्रश्न : परिवारजनों को लेकर पति से मतभेद है। क्या परिवार विघटित तो नहीं होगा ?

उत्तर : आपके तथा पति के ग्रह-योग के अनुसार शनि अच्छा नहीं है। सप्तम का स्वामी भी वही है। अष्टम में राहु है इसलिए मतभेद रहेगा। विघटन संभव है, अतः विवेक से काम लें।

शशिकांत, लाढ़ौरा

प्रश्न : मुझे क्या करना चाहिए ? नौकरी या व्यापार ?

उत्तर : आपको नौकरी ही उपयुक्त रहेगी। व्यवसाय में मेडिकल स्टोर, जमीन आदि का व्यवसाय ठीक रहेगा।

प्रवीण कुमार, रस्तोगी

प्रश्न : जीवन की जिम्मेदारियों से ऊब गया हूं। भविष्य के आर्थिक आदि पक्षों पर प्रकाश डालें।

उत्तर : आपके ग्रह-योग के अनुसार मंगल, राहु, केतु एवं गुरु प्रगति में बाधक हैं। १९८५ से सभी प्रकार से ठीक रहेगा। धैर्य रखें।

पन्नालाल, गोपालगंज (बिहार)

प्रश्न : भाग्योन्नत्ति एवं शारीरिक कष्ट निवारण कब तक ?

उत्तर : आपके ग्रह-योग के अनुसार राहु एवं मंगल अच्छे नहीं हैं। १९८३ से ही आपका समय अच्छा आरंभ होगा किंतु आप गोमेद तथा मूंगा धारण करें।

दुर्गेशनारायण जायसवाल, जबलपूर

प्रश्न : सात वर्ष से संतान सुख नहीं। संतान का योग है, अथवा नहीं। है तो कब तक?

उत्तर : इसके लिए पत्नी की जन्म कुण्डली भी होना आवश्यक है। इसके बिना किसी निष्कर्ष पर नहीं पहुंचा जा सकता।

चन्द्रकुमार शर्मा, दिल्ली

प्रश्न : पत्नी के व्यवहार से मानसिक परेशानी कब तक दूर होगी ?

उत्तर : लग्नस्थ सूर्य, द्वादश शुक्र एवं मंगल और पंचम का शनि आपके अनुकूल नहीं हैं इसलिए थोड़े बहुत मतभेद रहेंगे।

श्यामलाल अग्रवाल, सिलीगुड़ी

प्रश्नः भाग्योदय कब होगा। उद्योग एवं व्यापार के किस क्षेत्र में सफलता मिलेगी ?

उत्तर : ग्रह-योग के अनुसार २१ वर्ष की आयु में आपका भाग्योदय है और विलास की वस्तुओं के व्यापार तथा आयात और निर्यात में आपको लाभ रहेगा।

—३१४३, सेक्टर ३७-डी, चंडीगढ़

ज्ञानी पुरुष का हृदय दर्पण के सदृश्य होना चाहिए, जो किसी वस्तु को बिना दूषित किये परिवर्तित कर देता है।

ग्रामीण पाठकों के लिए

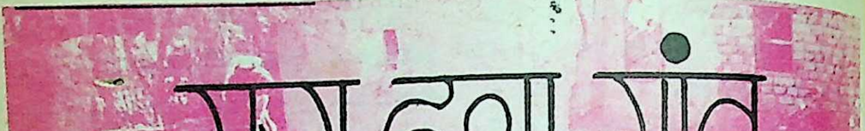

मरा हुआ गांव मरे हुए लोग

• भगवती प्रसाद द्विवेदी

मैं दुआर पर पड़ी हुई टुटही खटिया पर उठंगा हुआ हूं। सांझ धीमे-धीमे उतर रही है। पिछवाड़े चुपचाप खड़ा नीम का गाछ रह-रहकर चरमरा उठता है। सूरज का गोला तो यहां से नहीं दिख रहा है, मगर आसमान आहिस्ता-आहिस्ता लाल सुर्ख होता जा रहा है। दो-तीन कौवे कांव-कांव करते हुए पश्चिम से पंख फड़फड़ाते चले आ रहे हैं मुंह बायें। सालिकराम चाचा अपने बैल की नांद में सानी-पानी गोत रहे हैं। घिनावन अपने चरन पर बैठकर खैनी पीट रहा है। अचानक पुरवैया हवा का एक झोंका आता है और क्षणभर की खातिर मेरे तन-मन को तरोताजा करता हुआ बगल से होकर सर्र-से गुजर जाता है।

एक लंबे अंतराल के बाद गांव आया हुआ हूं। इस दरम्यान बहुत कुछ बदल गया है। पूरा गांव बदल गया है, यहां के लोग बदल गये हैं। सींघा बगड़चा में अब एक भी गाछ नहीं रह गया है। पहले बचपन में हम उधर दिन में भी जाने से सकपकाते थे। घुप्प अंधेरा छाया रहता था चौबीसों घंटे। पंद्रह बीघे का यह बगीचा अब खेत में तबदील हो गया है। पंपिंगसेट हरहराता हुआ पानी छोड़ता है और आम-महुआ की जगह अब धान-गेहूं की बालियां झूमने लगी हैं। मड़ई और माटी के मकान कुछ बाढ़ में और कुछ शौकिया ढहने लगे हैं और उनके स्थान

पर अब ईंट के घर-द्वार बनने शुरू हो गये हैं। इन पक्के मकानों में गांव की असली पहचान कहीं दब-सी गयी है। गांव के दक्खिन बधार की तरफ खड़ा इकलौता प्राइमरी स्कूल अब ढहने लगा है। छाजन हट चुकी है, मगर उस तरफ किसी का भी ध्यान नहीं गया है। लड़के बाहर बैठते हैं, खेलते हैं, कूदफांद करते हैं, धमाचौकड़ी मचाते हैं और इस तरह पढ़ाई-लिखाई की खानापूरी हो जाया करती है।

बाबूजी बाजार से सामान ले-देकर आ गये हैं, मैं खटिया की गोड़तारी की तरफ सरक जाता हूं और वे सिरहाने बैठकर अपने गमछे से पंखा झलने लगते हैं। मैं घर के अंदर हांक लगाता हूं, तब मुनिया एक लोटा पानी एक बताशे के साथ लेकर आती है। बाबूजी पानी गटकते हैं और फिर इतमीनान से सुस्ताने लगते हैं। उनके सिर्फ आगे के दांत ही बचे हुए हैं। उमर पचास की लक्ष्मण-रेखा पार नहीं कर पायी है। चेहरे पर झुर्रियों के झुरमुट नजर आ रहे हैं—और आंखें -जैसे पत्थर-सी हो गयी हैं—सूनी-सपाट-सी।

बाबूजी बतकही का सिलसिला आरंभ कर देते हैं। शुरुआत देश की राजनीति से होती है और अंत में खेत-बारी पर उतर आती है। वे बतला रहे हैं कि कुंडवा पर के खेत की मकई कैसी है, कि गड़हा में का धान इस साल की बाढ़ में स्वाहा हो गया है, कि ऊपर की भूईं और पेड़वा पर इस बरस पटउवा गेहूं बोना ठीक रहेगा। न जाने क्यों मेरा मन कहीं और उड़ रहा है—उनकी बातों से दूर—बहुत दूर। यही बाबूजी मुझे कभी डॉक्टर बनाने के सपने देखा करते थे—एक एम. बी. बी. एस. डॉक्टर। मगर मैं बखूबी जानता था कि एक निपट किसान का बेटा ज्यादा-से-ज्यादा दफ्तर में किरानीगीरी कर सकता है, डॉक्टर-वॉक्टर नहीं बन सकता। इन गये-गुजरे स्कूल-कॉलेजों की पढ़ाई भी कोई पढ़ाई ठहरी! लड़के एम. ए. पास कर लेंगे, पर पता नहीं चलेगा कि एन. सी. ई. आर. टी. और यू. पी. एस. सी. कौन-सी बला है। बाबूजी की बतकही खेत से चलकर अब घर तक

हिन्दी का सर्वश्रेष्ठ दैनिक

हिन्दुस्तान

एक सम्पूर्ण पत्र

बाकी सभी अखबारों से अलग है

१५ लाख से अधिक पाठक इसे पढ़ते हैं

क्योंकि

- यह महत्वपूर्ण खबरों का आईना है
- हिंदी का एकमात्र अखबार है जो अपनी धरती से जुड़ा है
- हर आयु, वर्ग और स्तर के पाठकों की जरूरत पूरी करता है, उन्हें कुछ सोचने को मजबूर करता है

●

हर बुधवार तथा रविवार को विशेष परिशिष्ट
मनोरंजक एवं उपयोगी सामग्री का खजाना जो अन्यत्र दुर्लभ है।

आप अपने क्षेत्र के समाचार पढ़ना चाहते हैं
और हम वही देते हैं।

हिन्दुस्तान टाइम्स प्रकाशन

पहुंच चुकी है, कि अंदर का ओसारा बनवाना बहुत जरूरी है, कि फलां का कर्ज चुकाये बगैर अब चलने को नहीं। मैं जम्हाई लेता हुआ उठ खड़ा होता हूं।

सुमेसर के दरवाजे पर पहुंचकर मैं किवाड़ खटखटाता हूं। सुमेसर के साथ चाची भी आ जाती हैं, मैं हाथ जोड़ता हूं। मेरा हाल-चाल पूछने के बाद सुमेसर के संबंध में चर्चा छेड़ देती हैं और उसकी खातिर नौकरी-चाकरी का जुगाड़ बैठाने की आरज़ू-मिन्नतें करने लगती हैं। मैं उन्हें पूरी तरह आश्वस्त करता हुआ कहता हूं, 'चाची, आप चिंता न करें। अबकी बार जाकर मैं पूरी कोशिश करूंगा और जाते ही, जैसी खबर होगी, लिखूंगा, हालांकि मुझे बखूबी पता है कि मैं उसके लिए कुछ भी नहीं कर पाऊंगा।

सुमेसर मेरे पीछे-पीछे आ रहा है। हम दोनों नहर की ओर बढ़ रहे हैं। आगे बढ़ने पर सुखदेव के बाबूजी के मिलते हैं और कुशल-क्षेम पूछने के बाद वे भी अपने बेटे की रोजी-रोटी की समस्या मेरे माथे मढ़ते हैं। मैं सवाल जड़ता हूं, 'मगर आपके पास तो सैकड़ों बीघे खेत हैं, फिर भी आप सुखदेव से दूसरे की गुलामी करवाना चाह रहे हैं?'

वे मेरी बात पर बिजुक जाते हैं, ठीक वैसे ही-जैसे नील गाय आदमी के पुतले को देखकर बिजुकती है, 'अरे बबुआ, उस अल्हड़ लड़के से भला खेती होगी? खेती-बारी के लिए तो हम हैं ही।'

आगे बढ़कर मैं सुमेसर से गांव का हाल-चाल पूछता हूं एक लंबी चुप्पी साधने के बाद वह कुछ बातें बतलाता है—चोरी-चमारी की बातें, हत्या-बलात्कार की बातें। नहर से इस साल भी पानी नहीं मिला और सभी फसलें सूखकर लकड़ी हो गयीं। जिंदगियां भी तो यहां ऐसे ही सूख जाती हैं जब आस-विश्वास मर-खप जाते हैं, तब अदना-सा चलता-फिरता आदमी जीती-जागती लाश ही तो रह जाता है

आज मठिया पर झूलन है। आसमान पर पूनम का चांद सज-धजकर निकला है और रात पीली साड़ी में घूंघट काढ़े आहिस्ता-आहिस्ता दुल्हन-सी कदम रख रही है। हर साल सावन की पूर्णिमा को मठिया पर झूलन होता है। इस साल भी ठाकुरजी झूले में बैठाये गये हैं और महाराजजी रस्सी खींच-खींचकर उन्हें झुला रहे हैं। ढाबे में गांव के लोग कजरी गा रहे हैं—'हरि हरि कृष्ण बनेले मनिहारिन पहिनि के साड़ी ए हरी . . .।' तभी गांव के कुछ नवहा आते हैं और फिल्मी धुन के गाने शुरू हो जाते हैं। गांव के लोग आकर ठाकुरजी को दंडवत प्रणाम करते हैं, रुपये-पैसे चढ़ाते हैं, महाराजजी को दंडवत बोलते हैं और ढाबे में इतमीनान से बैठकर रसदार गीतों का रस लेने लगते हैं।

अचानक हड़बड़ी मच जाती है। गवनई की जगह अब झगड़े-झंझट ने ले ली है। वजह यह है कि झगरू चमार आज सारे बंधन तोड़कर मठिया में घुस आया है।

साथ और संग में है मौज-मस्ती का रंग

क्लोज़-अप
ज़्यादा ताज़ा सांस,
और ज़्यादा सफ़ेद दांतों के लि

जब आप साथ-साथ मिलकर मौज-मस्ती का आनंद ले रहे हों, तो यह बात ज़ाहिर होती है कि, ऐसी नज़दीकियों के लिए, आप में भरा-भरा है आत्मविश्वास. क्लोज़-अप में एक ज माउथवाश है, जो आप सांसों में लाए भरपूर ताज़गी. और दो ज़बर्द सफ़ेदीकारक तत्त्व जो आपके दांतों में लाएं भरपूर सफ़ेदी.

ये नज़दीकियां — क्लोज़-अप के सा

टूथपेस्ट और माउथवाश एक

हिन्दुस्तान लीवर का एक उत्कृष्ट उत्पादन

LINTAS-CX-45-15

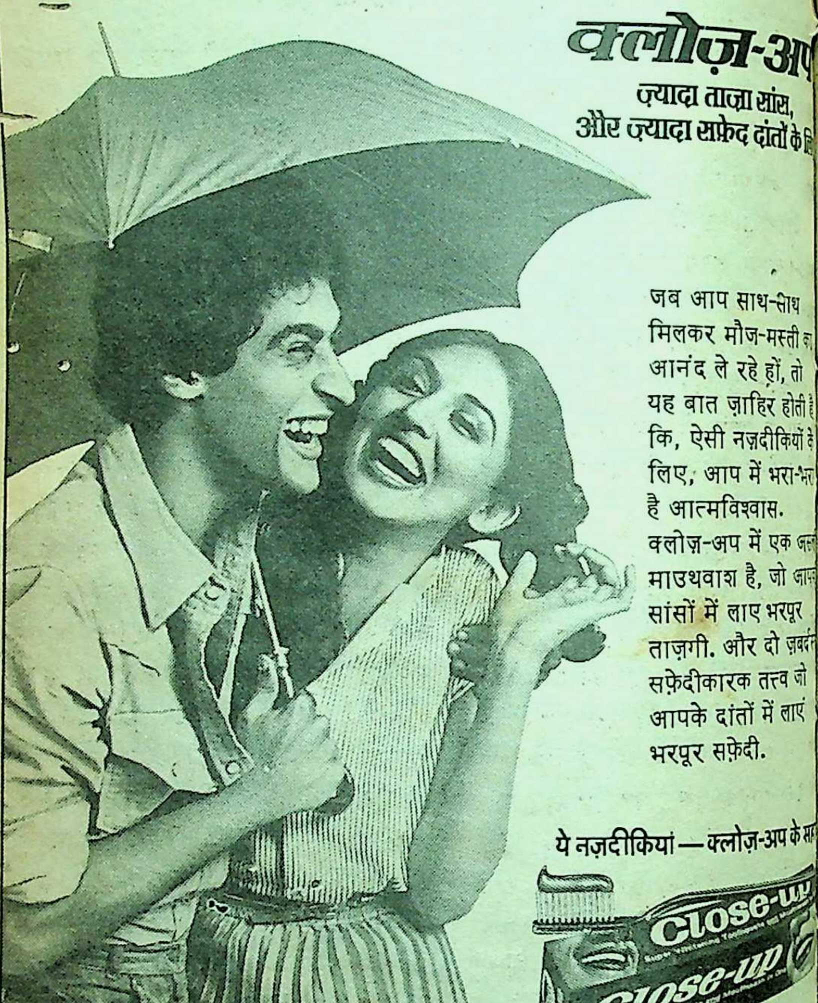

'इस चमार
को' . . .आ
मैं समझान
जमाना लद
पूजा-पाठ क
मुझ पर डप
में ही यह शे
नहीं . . . यह
मैदान
कुल्ला-कल्ला
दुआर बुहा
डुबोये बैलों
हैं। घरभर
गिर्द आकर
भाई बेटे के
से घर भर
बेटियां जनम
भाई की श
हाई-स्कूल के
कि घरभरन
प्यारी हो ग
लिए उन्हें ए
जिसे कुछ दे
भरन भाई
एक अंगूठा-
भरन के जीव
घरभरन भा
भी हो गये है
गरमी की छु
गांव आते है
मुताबिक, बे

'इस चमार की ऐसी औकात', 'मारो साले को'...आवाजें जोर पकड़ती जा रही हैं। मैं समझाना चाहता हूं—'भाईजी, वह जमाना लद गया। इनका भी अधिकार है पूजा-पाठ करने का' मगर तभी महाराजजी मुझ पर डपट पड़ते हैं—'ऐ...सुनो, शहर में ही यह शेखी बघारना ... समझे ... यहां नहीं ... यह गांव है ... गांव ...।'

मैदान होकर मैं दुआर पर आकर कुल्ला-कल्लाली करने लगता हूं। बाबूजी दुआर बुहार रहे हैं। सानी-पानी में थुथनें डुबोये बैलों के गले की घंटियां टुनटुना रही हैं। घरभरन भाई की तीन बेटियां मेरे इर्द-गिर्द आकर खड़ी हो गयी हैं। घरभरन भाई बेटे के आगमन की आशा में बेटियों से घर भरते जा रहे हैं। अब तक पांच बेटियां जनमा रखी हैं। चाचा ने घरभरन भाई की शादी तभी कर दी थी, जब वे हाई-स्कूल के विद्यार्थी थे। वजह यह थी कि घरभरन भाई की मां परमेश्वर को प्यारी हो गयी थीं। और रसोई-पानी के लिए उन्हें एक ऐसी दाई की जरूरत थी, जिसे कुछ देना न पड़े। बस, उन्होंने घरभरन भाई का ब्याह रचा दिया था और एक अंगूठा-छाप दुल्हन का भविष्य घरभरन के जीवन के साथ जुड़ गया था। अब घरभरन भाई पी-एच. डी. करके डॉक्टर भी हो गये हैं, प्रोफेसरी करते हैं। साल में गरमी की छुट्टी में एक-दो माह की खातिर गांव आते हैं और घरवालों की इच्छा के मुताबिक, बेटा लाने के उद्देश्य से एक और बेटी के आने का इंतजाम कर जाते हैं।

मेरा भाई अचानक दौड़ा हुआ आता है और हांफता हुआ कहता है—'भइया, गजब हो गया!'

'क्या हुआ?' मैं अचरज से उसकी तरफ देखने लगता हूं।

वह बतलाता है कि रिझावन और बहोरन में लाठियां चल गयीं, कई आदमी घायल हो गये। हुआ यों कि बहोरन के घर की औरतें भोर में दिशा-मैदान होने गयीं और छवर के किनारे ही बैठ गयीं। रिझावन ने दुआर पर निकलकर कहा कि वे गड़ही की तरफ जाएं, नहीं तो ठीक नहीं होगा। दो चार गालियां भी दीं। औरतों ने घर जाकर सारी बातें बतलायीं और दोनों तरफ से लाठियां खिच गयीं।

यह मैं क्या देख-सुन रहा हूं इस गांव में? घर-घर मारपीट, खून-कत्ल और मुकदमे। यहां जो जितना ही अधिक कित्ता मुकदमा लड़ता है, वह उतना ही बड़ा आदमी है। वाह रे मानदंड! हमारा बरसों पहलेवाला वह गांव कहां गया?

शहर के लोग मुझे गांव का समझते हैं और यहां के लोग शहरी मानकर मुझसे कतराते हैं, तब फिर मैं कहां जाऊं? शहर और गांव के बीच मैं त्रिशंकु-सा लटका हूं।

—कार्यालय, जिला प्रबंधक दूरभाष,
निर्देशिका अनुभाग, पटना-८००००१

भविष्य को समझने के लिए अतीत का अध्ययन कीजिए।

लाल आंखें, चढ़ी भौहें और गरजदार आवाज--इन तीन विशेषताओं में सिमटकर रह गया है--हमारी फिल्मों के खलनायकों का व्यक्तित्व। --क्या हमारी फिल्में खलनायकों के साथ न्याय कर रही हैं . . .

खलनायक बुरा आदमी नहीं होता

• कैलाश सेंग

बुरा क्या है ?

इस प्रश्न पर बहुत लंबी बहस की जा सकती है तथा 'पाप ?'—से आरंभकर 'चित्रलेखा'-जैसा महान उपन्यास भी लिखा जा सकता है। पर यहां इस लंबी बहस या उपन्यास की देहवाली लंबी कृति की जरूरत नहीं है। सामाजिक संदर्भों में बुरा और भला क्या है, यह तय करने के लिए कुछ मान्यताएं होती हैं। जिस काम से देश, समाज या व्यक्ति को हानि पहुंचती है या उसकी भावनाएं दुखायी जाती हैं, वह बुरा काम है, यह सामान्य विचारधारा होती है। इस सोच में प्रमुख बात यह है कि कोई काम बुरा होता है, और वह काम उन विशिष्ट स्थितियों में जब कोई व्यक्ति करता है, तब वह बुरा कहलाता है। पर वही व्यक्ति अपने में स्थित सद्गुणों का उपयोग करते हुए कोई अच्छा कार्य भी करता है, तब उसे भला भी कहा जा सकता है। संक्षेप में यही कहना है कि एक व्यक्ति एक ही समय पर अलग-अलग संदर्भों में बुरा और भला भी होता है।

परंतु हमारी फिल्मों का बुरा आदमी यानी खलनायक यहां से वहां तक मि बुरा ही होता है। यदि किसी पात्र को फिल्म के आरंभ में हम खलनायक के रू में देखते हैं, तो अंत तक वह व्यक्ति कोई भी भला कार्य कर ही नहीं सकता; यह त जानिए। ऐसे समय यह प्रश्न सहज ही उठता है, कि समाज की बुराइयों और अच्छाइयों को चित्रित करने का ढिंढोरा

पीटनेवाली ये फिल्में क्या खलनायक व खलनायकत्त्व के साथ न्याय कर रही हैं? क्या हमारे रोज के जीवन में हमें हर कद पर मिलनेवाला 'बुरा आदमी' सिर्फ वह होता है जो हमें मारता-पीटता रहता है चाकूबाजी से लेकर जूडो-कराते त के दावपेंचों में माहिर होता है, 'स्मग लिंग' करता है या जो बलात्कार करता है

मनोविज्ञान समझना जरूरी

नकारात्मक उत्तर देनेवाला यह प्रश्न हमारी फिल्मों के संदर्भ में खलनायक की

सीमाओं को भी स्पष्ट करता है। यदि यह मान भी लिया जाए कि खलनायक सिर्फ मार-धाड़ करनेवाला, चोर, 'स्मगलर' ही हो सकता है, तब चोरी करनेवाला या डाका डालनेवाला व्यक्ति 'अनहोनी' के मैक-मोहन-जैसा जोरदार 'डाइलॉग' बोलते हुए घर के मालिक से यह नहीं कहता कि 'हम खामोशी से आते हैं, खामोशी से अपना काम करते हैं और खामोशी से चले जाते हैं।' शायद ऐसा भयंकर व्यक्ति किसी के घर में जाकर यह कहे, तब आसपास के लोग जाग जाएंगे और बिना खामोशी के सब मिल के उसे पीटेंगे या पकड़कर पुलिस को दे देंगे। 'शोले' के गब्बरसिंह के समान या 'वारिस' के अशोकनवाले पात्र के समान कितने खलपुरुष समाज में पाये जाते हैं? पर हमारी फिल्मों के कई पात्र, उनके खलनायक भी शामिल हैं, इस हद तक 'लाउड' हो जाते हैं कि उनका संबंध सच से दूर-दूर तक नहीं होता। वे अपने 'चरित्र' से अकसर भटके हुए ही पाये जाते हैं। ऐसे समय आवश्यक यह होता है, कि जो स्थितियां व्यक्ति में खल तत्त्वों को जन्म देती हैं या उकसाती हैं उन स्थितियों का चित्रण हो। खलनायक के मनोविज्ञान को लेखक, दिग्दर्शक और अभिनेता समझे। पर ऐसा नहीं होता। जिन फिल्मों में उन स्थितियों का तथाकथित चित्रण होता भी है, वे बेहद नकली एवं फूहड़ता से भरी हुई लगती हैं। नायक को बहुत अच्छा दिखाने के लिए खलनायक को बहुत बुरा दिखाना अनिवार्य तो नहीं है।

एक और बात! हिंसक कार्मों के बिना भी किसी खलनायक के अभिनय को रचा जा सकता है, यह हमारी फिल्मों के लेखकों, दिग्दर्शकों को शायद मालूम ही नहीं है। यदि ऐसे पात्र, ऐसी कहानियां सामने आएं तो शायद फिल्मों का खलनायकी का बासीपन कुछ परिमाण में तो अवश्य कम होगा ही।

खलनायक हमेशा बुरे ही कार्य करता है और नायक के सभी कार्य अच्छे ही होते हैं, इसी विचारधारा को लेकर

हमारी फिल्मों के कुछ खलनायक

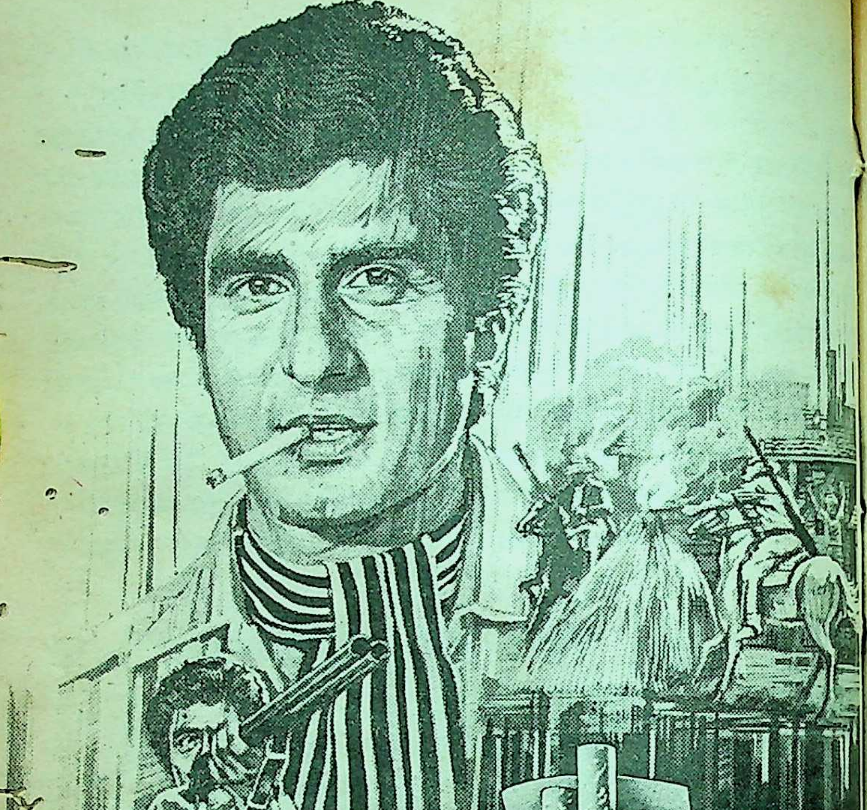
"हम रेड एण्ड व्हाईट
पीनेवालों की
बात ही कुछ और है."
RED &
WHITE
FILTER
STATUTORY WARNING
CIGARETTE SMOKING
IS INJURIOUS TO HEALTH
Rediffusion

वैधानिक चेतावनी सिगरेट पीना स्वास्थ्य के लिए हानिकारक है।
STATUTORY WARNING: CIGARETTE SMOKING IS INJURIOUS TO HEALTH.

हमारी अ
में भी ख
हमारे f
नहीं हैं।
अपने ख
ग्रंतिम र
जाए, तब
एक मिनि
के साथ
जाता है
एकाध पि
जैसी कि
हो सकते
तर्कहीन
हमारे ख
बेहद अक
जाता है
व्यवस्था
मंजे हुए
बुद्धिमान
भ्रष्ट या
सामने
नायक अ
दर्शक तो
खलनायक
खलनायक
सवार हो
वंदी हीरो
उसमें 'डा
को अवस
डालने की

हमारी अधिकांश फिल्में बनती हैं। नायक में भी खल-प्रवृत्तियां हो सकती हैं, यह बात हमारे फिल्मकार मानने को तैयार ही नहीं हैं। यदि किसी फिल्म में नायक को अपने खलकृत्यों के फलस्वरूप फिल्म की अंतिम रील के चंद मीटरों में सजा हो भी जाए, तब उसकी सजा के दस-बीस साल एक मिनिट में ही समाप्त करा कर नायिका के साथ उससे मिलन-गीत गवा दिया जाता है। इस बात में 'रेड-रोज'-जैसी एकाध फिल्म का राजेश खन्ना या 'इत्तफाक'-जैसी किसी फिल्म की नंदा अपवाद भी हो सकते हैं। पर ऐसे उदाहरण कितने हैं?

तर्कहीन चित्रण

हमारे खलनायक को एक ही फिल्म में बेहद अक्लमंद और बेहद मूर्ख भी बताया जाता है। स्कॉटलैंड-यार्ड-जैसी पुलिस-व्यवस्था को हिला देनेवाली एवं सैकड़ों मंजे हुए अपराधियों को पालने-पोसनेवाले बुद्धिमान खलनायक की बुद्धि तब एकदम भ्रष्ट या लुप्त हो जाती है, जब उसके सामने मामूली-सी दाढ़ी-मूंछ लगाकर नायक आता है, जिसे 'थर्ड क्लास' में बैठा दर्शक तो पहचान लेता है पर वह बुद्धिमान खलनायक पहचान नहीं पाता। कभी-कभी खलनायक को ऐन मौके पर क्या सनक सवार हो जाती है, राम जाने, कि वह बंदी हीरोइन को मार डालने के बजाय उससे 'डांस' करवाने लगता है और हीरो को अवसर होते हुए भी जान से मार डालने की बजाय 'तड़पा-तड़पाकर मारूंगा' स्टाइल में पीटता है।

ढर्रेबाजी या बनी-बनायी लीक पर चलना भी हमारी फिल्मों का एक विशेष दुर्गुण है। इसके अभ्यस्त दर्शक इतने समझदार हो गये हैं कि फिल्म के आरंभ में ही जब उन्हें प्रेम चोपड़ा, अमजदखान या रंजीत, इन में से कोई दिख जाए, तब वे यह समझने में जरा भी भूल नहीं करते कि यह व्यक्ति जरूर कुछ-न-कुछ बदमाशी करेगा जबकि वह व्यक्ति परदे पर बस आया ही होता है। अच्छा हो कि हमारे अभिनेता, विशेषकर चरित्र अभिनेता भी खलनायक का पात्र अभिनीत करें तथा खलनायक अपनी लीक से हटकर भूमिकाएं भी निभाएं जिससे अभिनेता के नाम से या उसकी बनी-बनायी इमेज से नहीं बल्कि उसके पात्र से दर्शक उसके साथ जुड़ेगा। ऐसे कुछ प्रयोग हुए भी हैं। इस संदर्भ में प्राण, मदनपुरी आदि खलनायकों के नाम तथा ओम शिवपुरी, पिंचू कपूर, अजीत, इफ्तेखार, प्रेमनाथ आदि चरित्र अभिनेताओं के नाम महत्त्वपूर्ण हो जाते हैं।

'जिस देश में गंगा बहती है' में प्राण द्वारा अभिनीत 'राका' के पात्र का उल्लेख करना यहां उचित ही होगा। राकावाले पात्र में फांसी का डर उस पात्र के अचेतन मन में कहीं गहरा जमा हुआ है और वह पात्र इसीलिए बार-बार अपनी उंगलियां गले पर से घुमाता है। यह 'मैनरिज्म' अत्यंत स्वाभाविक भी लगता है। पर कई अन्य फिल्मों में 'खलनायक

आपका नुक़सान
हमारा नुक़सान

बिना टिकट यात्रियो

अब छुटकारा नहीं

- भारतीय रेल लगभग दस लाख यात्रियों को प्रतिदिन सेवा प्रदान करने वाली जन-उपयोगी सेवा-संस्थान है इसका नुक़सान जनता का नुकसान है।
- जिम्मेवार नागरिक के नाते, बेहतर सेवा प्रदान करने के लिए, हमें आपके सहयोग की अपेक्षा है।

टिकट खरीद कर यात्रा करें।

- बिना टिकट यात्रा एक अपराध है जिसके लिए भारतीय रेल अधिनियम के अन्तर्गत अभियोग चलाया जा सकता है।

उत्तर रेलवे

अतिनाटकीयता का शिकार हो जाते हैं और बनावटीपन से घिरकर पात्र को अस्वाभाविक कर बैठते हैं। हीरालाल, जीवन, के. एन. सिंह आदि की कई फिल्में एवं पात्र इसके उदाहरण हैं। खुद प्राण भी कई अन्य फिल्मों में इसका अपवाद नहीं है।

खलनायकों के संदर्भ में एक और महत्त्वपूर्ण पक्ष यह भी है, कि इन्हें दर्शकों की सहानुभूति कभी नहीं मिलती। इस तरह जितना कुछ ये फिल्म-व्यवसाय को देते हैं उतना नाम या पारिश्रमिक (नायक तथा चरित्र अभिनेताओं की तुलना में) इन्हें नहीं मिल पाता। समाज में ही नहीं, घर में भी खुद अपने बच्चों का अपने प्रति भय-ग्रस्त दृष्टि का सामना इन्हें करना पड़ता है। यह दृष्टिकोण तब ही सुधर सकता है, जब हमारे फिल्मकार खलनायकों को भी एक विशिष्ट चरित्र ही मानेंगे, अन्न को दूषित करनेवाली एक मक्खी नहीं। खलनायक का रोल करनेवालों की एक अलग जमात न बने। उन पर खलनायकी की मुहर न लगे। इससे अभिनय-कला की गहराइयों को छूनेवाले अन्य अभिनेता भी इस क्षेत्र में आने का साहस करेंगे। इससे हमारी फिल्म-कला का स्तर निश्चय ही ऊंचा होगा, साथ ही खलनायकी के साथ-साथ संपूर्ण फिल्म में स्वाभाविकता भी आ सकेगी।

क्या यह अपेक्षा हमारे फिल्मकारों से की जाए?

—कैलाश विजय भवन, राजपूतपुरा,
अकोला, महाराष्ट्र-४४४००१

बुद्धि-विलास के उत्तर

१. क., २. ख (नंदादेवी तथा त्रिशूल चोटियों के मध्य, गढ़वाल में २२,४९० फुट ऊंची चोटी, सबसे पहले १९५८ में इस पर सफल चढ़ाई हुई, ३. भारतीय सेना के ४–सदस्यीय दल ने (कप्तान एच. सी. कोहली के नेतृत्व में) अरुणाचलप्रदेश के सीमावर्ती गांव गोलिंग से १५ जनवरी १९८१ को चलकर लद्दाख में कराकोरम दर्रे तक ८,००० कि. मी. पैदल पार किया, ५ मई, १९८२ को अभियान की समाप्ति, कुल ४७५ दिन लगे, ४. परूर निर्वाचन - क्षेत्र (केरल), १९ मई, १९८२ के चुनाव में, ५. दो साहित्यकारों को—सेमुएल योसेफ एग्नान, इसरायल (१९६६) तथा यासुनरी कवाबाता, जापान (१९६८), ६. ख, ७. ब्रिटेन-अर्जेंटीना युद्ध के सिलसिले में—क. फॉकलैंड द्वीप की राजधानी, ख. ब्रिटिश विध्वंसक, ग. ब्रिटिश विमानवाहक पोत दोनों अर्जेंटीना द्वारा बुरी तरह क्षतिग्रस्त, ८. २०.९ प्रतिशत (१९८१ की जनगणना के अनुसार), ९. इस वर्ष पंजाब कृषि विश्वविद्यालय द्वारा विकसित गेहूं की एक चमत्कारी किस्म—अनेक विनाशक कीड़ों से सुरक्षित, ५४ क्विंटल प्रति-हेक्टेयर पैदावार, १०. संगीतनिर्देशक नौशाद अली, ११. कृषि-व्यवसायीवर्ग (३९.५ प्रतिशत), वकील (२२ प्रतिशत), राजनीतिक एवं सामाजिक कार्यकर्त्ता (१७.५ प्र. श.), १२. कुत्ता ●

नेपाली कविता: आरंभ से लेकर आज तक

भौगोलिक ही नहीं, सांस्कृतिक एवं धार्मिक दृष्टि से भी नेपाल, भारत के अत्यधिक निकट है। साहित्यिक परंपराओं की दृष्टि से भी दोनों देश कितने निकट हैं, यह श्री नरेन्द्र जैन की सद्यः प्रकाशित पुस्तक **'नेपाली कविता'** पढ़कर ज्ञात होता है। यद्यपि नेपाल हमारा निकटतम पड़ौसी देश है, फिर भी कई कारणों से उसके साहित्य के बारे में हमें कोई अधिक जानकारी नहीं है। प्रस्तुत पुस्तक इस अभाव को पूरा करती है, और पाठक को एक सुखद आश्चर्यजनक सत्य से परिचित कराती है।

नेपाल राजकीय प्रज्ञा प्रतिष्ठान के रजत जयंती समारोह के अवसर पर भारतीय राजदूतावास द्वारा प्रकाशित इस काव्य-संकलन में १८१४-१८६९ में हुए स्व. भानुभक्त आचार्य से लेकर आज तक के अनेक युवा कवियों की प्रतिनिधि रचनाओं का हिंदी अनुवाद प्रस्तुत किया गया है।

प्रारंभ में लेखक ने 'नेपाली कविता' शीर्षक अध्याय में नेपाली काव्य का इतिहास दिया है। उन्होंने विगत दो सौ वर्षों के काव्यों को पांच भागों में बांटा है—आदिकाल, पूर्व-मध्यकाल, उत्तर मध्यकाल, आधुनिक काल और वर्तमान युग।

नेपाली साहित्य के आदिकाल (१७७६-१८४१) में पंडित उदयानंद अर्ज्याल, सुवानंद राम, रघुनाथ पोखर्याल आदि के नाम उल्लेखनीय हैं। पूर्व मध्यकाल के प्रमुख कवि हैं—भानुभक्त, जिन्हें 'नेपाल का तुलसीदास' भी कहा जाता है। इस काल के कवियों को तीन श्रेणियों में बांटा गया है—राम-भक्ति शाखा, कृष्ण-भक्ति शाखा और निर्गुण-भक्ति से प्रभावित जोसमणि संप्रदाय। उत्तर मध्य-काल के मुख्य कवि हैं, मोतीराम भट्ट, जिन्होंने नेपाली काव्य को दिशा-बोध की विविधता प्रदान कर, उसकी व्यापक आधारशिला रखी। श्री नरेन्द्र जैन ने नेपाली साहित्य के आधुनिक काल को तीन भागों में बांटा है—क्रांति से पूर्व का काल—१९१३ से १९५०, क्रांति-उत्तरकाल पूर्वार्द्ध—१९५० से १९६० और क्रांति-उत्तरकाल उत्तरार्ध—१९६० से १९७०। १९७० से अब तक वर्तमान काल।

आधुनिक काल के प्रारंभ में नेपाली

साहित्य पर अंगरेजी के 'रोमांटिज्म' और हिंदी काव्य के छायावाद का प्रभाव पड़ा। स्व. लेखनाथ पौड़याल ने सबसे पहले साहित्य में समसामयिक समस्याओं को अभिव्यक्ति दी। राष्ट्रीयता के अतिरिक्त विश्वबंधुत्व की भावना उनके काव्य की विशेषता रही। स्व. बालकृष्ण 'सम', स्व. लक्ष्मीप्रसाद देव कोटा, स्व. भीमनिधि तिवारी इस काल के प्रमुख कवि हुए।

इस युग के अन्य कवि हैं—श्री केदारमान व्यथित, जिन्होंने नेपाली के अतिरिक्त हिंदी और नेवारी में भी कविताएं लिखीं। उनकी प्रगतिशील रचनाओं में आर्थिक विषमताओं पर कठोर व्यंग्य है। उनकी कविताओं में जबर्दस्त आस्था भी है--

कांतभाव के हम सभी प्रतिज्ञा करते हैं / प्रत्येक जीवन को सामुदायिक बनाने के कार्य संपादन करने में/हम मेघ की तरह दाता बनेंगे।

क्रांति-उत्तरकाल पूर्वार्द्ध में नेपाली कविता एकदम नयी भावभूमि पर आ खड़ी हुई। १९५० में नेपाली जन-क्रांति हुई और उसका प्रभाव साहित्य पर भी पड़ा। प्रगतिवाद, और यथार्थवाद से प्रभावित कवियों ने कुछ तीखी रचनाएं भी लिखीं। यथा--

एक शव-यात्रा हो गया हमारा वसंत
किसी के करुण क्रंदन-जैसी हो गयी हमारी फुलवारी (कालीप्रसाद रिजाल)

इस बार मैंने जिस समय शहर में प्रवेश किया / परिचित वेश्याओं को अंधेरे में खोजते हुए / कुछ माताएं कतार में खड़ी मिलीं।

(हरि अधिकारी)

वे हमें नारे देकर
चाट जाएंगे
दीमक की तरह
इधर अपनी क्रांति सिर्फ नोक-झोंक बन गयी

(ध्रुवचंद्र गौतम)

श्री माधवप्रसाद घिमरे की कविताओं में यदि एक ओर स्व. निराला, स्व. पंत और महादेवीजी-जैसी प्रेमरस की अभिव्यक्ति है तो दूसरी ओर दिनकर के काव्य-जैसा ओज भी। यथा उनकी 'हाइड्रोजन वम' शीर्षक कविता का यह अंश—

उड़ा हो धूल टाप से
थे अश्व हिन-हिना रहे
उलट-पलट हो सर्प-से
थे शस्त्र झन-झना रहे
महारथी था एक मैं
करोड़ बीर मारता
था रिपु-प्रिया को नागपाश
बांध मैं घसीटता

क्रांति-उत्तरकाल की नेपाली कविता अपने समय के साथ जुड़ी हुई है। उसने अपने समय की विषमताओं, विसंगतियों को तो अभिव्यक्ति दी ही है, साथ ही उसमें आस्था का स्वर भी पाया जाता है। श्री जीवन

पहले बच्चे का होना सुखद है

हां, लेकिन यह तभी अच्छा है—जब आप अगले बच्चे के शीघ्र जन्म को रोकने में सफल हो सकें।

उसके साथ ही जब तक चाहें आप बच्चे के जन्म को रोक सकते हैं। निरोध एक भरोसेमंद तथा सुविधाजनक गर्भनिरोधक है, सरकार की ओर से रियायती दामों पर बेचा जाता है।

उच्च कोटि के गर्भ निरोधक निरोध का प्रयोग करें

davp 81/234

वितरक : बुक बाण्ड, लिपटन, हिन्दुस्तान लीवर, आई. टी. सी., टाटा ऑयल मिल्स, यूनियन कार्बाइड, आई. डी. पी. एल., स्मिथ स्टेनस्ट्रीट, इंडियन ऑयल कार्पोरेशन, भारत पैट्रोलियम, हिन्दुस्तान पैट्रोलियम और अरसन माचिस उद्योग।

आचार्य की एक कविता का अंश--

कल से ही मनुष्य अपने मस्तिष्कों में
युद्ध का निर्माण कर रोकने की संभावना
के विषय में घोषणा कर चुके हैं
साल्ट को भूमिसात कर
कैंप डेविड को तोड़फोड़ कर
या एवरेस्ट के शिखर पर
बुद्ध का पुतला जलाकर

इन भावनाओं की अभिव्यक्ति में कवयित्रियां भी पीछे नहीं हैं। श्रीमती मोमा, श्रीमती वानीरा गिरि, श्रीमती चांदनी शाह, श्रीमती बेंजू शर्मा, श्रीमती बेटी बज्राचार्य, श्रीमती मंजू दुबे 'कांचुली' श्रीमती तोया गुरंग आदि की कविताओं में न केवल परंपरा और सामाजिक कुरीतियों के विरुद्ध विद्रोह, वरन भविष्य के प्रति आस्था भी है।

वर्तमान अपना न होने पर भी
भविष्य है

(श्रीमती बेंजू शर्मा)

ओ दाने की भांति अक्षरगण
तुम क्योंकर तितर-बितर हो विकृत
हो गए ?

. . .

मैं विकास के बीज बोती आऊंगी
उन पर तुम जल सिंचन
करते जाना

(श्रीमती बेटी बज्राचार्य)

श्रीमती वानीरा गिरि की कविता 'महाभारत' में कर्ण का कुंती को संबोधन--

मैं तुम्हारी कोख का बहिष्कार करता हूं
नामर्द सूर्य के मुंह पर थूक दूंगा
'माता' शब्द को बंदी बना लूंगा

. . .

पांच-पांच पुत्रों की मां होने का आडंबरकर
तुम अभी भी मुझे नहीं पहचान पायीं ?

श्रीमती चांदनी शाह वस्तुतः नेपाल की वर्तमान महारानी ऐश्वर्य राज्यलक्ष्मी देवी शाह ही हैं। उनकी कविताओं में नारीमन की स्नेह-मातृत्व और वात्सल्य भावनाओं की कोमल अभिव्यक्ति हुई है। उनकी कविताओं में प्रकृति के भी कुछ अच्छे चित्र हैं--

पर्वत-श्रेणी बीच-बीच
रुक-रुक भावना जगाऊं
चुन-चुन सुंदर छटा
प्रकृति की दृग में उन्हें सजाऊं
अपने लिए यहां जीते ही हैं
सब तो इस लोक में
और के हित जीकर देखो
दुःख शोक-संताप में

न केवल नेपाली कविता, वरन् कविता मात्र में रुचि रखनेवाले पाठकों के लिए प्रस्तुत संकलन एक सुखद अनुभव सिद्ध होगा। विगत दो-सौ वर्षों में नेपाली कविता परंपरागत भक्ति भावना से निकलकर आधुनिक युगबोध तक किन-किन वादों को छूती हुई पहुंची है, इसका सम्यक् विश्लेषण भी उसमें प्रस्तुत है।

नेपाली कविता को अपने समग्र रूप में हिंदी पाठकों तक पहुंचाने के लिए श्री नरेन्द्र जैन, जो संप्रति नेपाल में भारतीय राजदूत हैं, धन्यवाद के पात्र हैं।

प्रकाशक--भारतीय दूतावास, काठमांडू
मूल्य--साढ़े रुपये। --दुं. प्र. शु.

अन्य ग्रहों के अंतरिक्ष यात्रियों के शव, जो आज भी सुरक्षित हैं!

● डॉ. शेखर आदित्य

उड़न-तश्तरियों के रहस्य जानने के लिए, जहां विश्वभर के उड़न-तश्तरी-वैज्ञानिक प्रयत्नशील हैं, वहीं इन अनजान, अज्ञात अंतरिक्षयानों का रहस्य उलझता ही चला जा रहा है। अभी हाल ही में ब्रिटेन के उड़न-तश्तरी-शोध-संस्थान के वरिष्ठ सदस्यों ने एक उड़नतश्तरी को अपने से सौ गज दूरी पर उड़ते हुए देखा है। संस्थान के सदस्य जो उड़नतश्तरी के चश्मदीद गवाह हैं—उन एल्वेट डायर के अनुसार जब उड़न-तश्तरी उनके पास से उड़ती हुई गुजरी, तब वह एक तेज चमकीले प्रकाश में नहा गये और यह प्रकाश उसके बीच में से निकल रहा था। उड़न-तश्तरी-सिगार के आकार की लगभग बीस फुट लंबी एक रचना थी और जितनी एक 'डबल डेकर' बस की ऊंचाई होती है, उतनी ऊंचाई पर से वह उड़ रही थी। एल्वेट डायर के अनुसार, जब वह उड़न-तश्तरी इतनी कम ऊंचाई पर उड़ती दिखी, तब उन्हें लगा, कि यह अब टकराकर गिरने ही वाली है, किंतु जब वह उसका पीछा करते-करते एक मैदान में पहुंचे तब वहां कुछ नहीं था। उड़त-तश्तरी गायब हो चुकी थी। यह क़िस्सा किसी साधारण आदमी द्वारा उड़ाया हुआ शगूफा नहीं बल्कि स्वयं एक वैज्ञानिक की आंखों के सामने घटी एक सत्य घटना है।

चमकीली आग का अद्भुत दृश्य

ब्रिटेन के ही बिली और पाउलिन दो ऐसे व्यक्ति हैं जिन्होंने इन उड़न-तश्तरियों को अपने खेत में उतरते हुए स्वयं देखा है। ये दोनों व्यक्ति अपने फार्म में बनी सुनसान झोपड़ी में एक दिन बैठे थे। लगभग १ बजे उन्होंने एक चमकीली आग के पुंज को अपने खेत में उतरते हुए देखा। जब वे दौड़कर उस आग तक पहुंचे, तब उन्होंने वहां एक सात फुट लंबी पैशाचिक आकृति को भी देखा, जो चांदी की तरह चमकीला लबादा पहने हुए थी। सिर पर इस आकृति के एक हेलमेट बंधा हुआ था और चेहरे के स्थान पर एक काला धब्बा-सा था। इस डरावनी छवि को देखकर ये दोनों ब्रिटेनवासी इतने घबरा गये, कि इन्होंने मदद के लिए पुलिस को फोन किया। मगर जब तक पुलिस वहां पहुंची, तब तक वह आकृति गायब हो चुकी थी।

लास एंजेल्स के प्रसिद्ध फोटोग्राफर वेरोन निकल्सन बॉन पैयोन का दावा था कि उनके पास एक उड़न तश्तरी और अन्य ग्रहों से आये चार अंतरिक्ष यात्रियों के चित्र हैं। अब यह भी दावा किया जा रहा है, कि लेन स्प्रिंग फील्ड के एक केंद्र में ऐसे तीस और अंतरिक्षयात्रियों के शव भी रखे हुए हैं। एक रोमांचक विवरण...

एक आमने-सामने की मुठभेड़

हेवर फार्डवेस्ट के एक किशोर छात्र स्टीफन टायलर ने आदमिमों की इस अज्ञात-नस्ल के जीव से अपनी बेहद नजदीकी मुठभेड़ का हवाला देते हुए बताया है, कि एक दिन वह घर की ओर आ रहा था कि अचानक वह एक तेज रोशनी में नहा गया। उसके सिर के बिलकुल पास से लगभग ५० फुट चौड़ी एक आकृति उड़ती हुई उसने देखी, जो थोड़ी ही दूरी पर उतर गयी। उस अनजान उड़ती हुई रहस्यमयी तश्तरी में से एक आकृति निकली जिसके गालों की हड्डियां काफी उभरी हुई थीं, तथा आंखें मछलियों की तरह बिलकुल गोल थीं। वह एक चमकीला लबादा पहने हुए था। उस पैशाचिक आकृति को बिलकुल अपने समीप खड़ी देखकर स्टीफन टायलर इतना डर गया कि तीन मील तक भागता ही चला गया। और तब कहीं जाकर घर पहुंचा।

एक यादगार सुबह

वह सुबह एक यादगार सुबह ही मानी

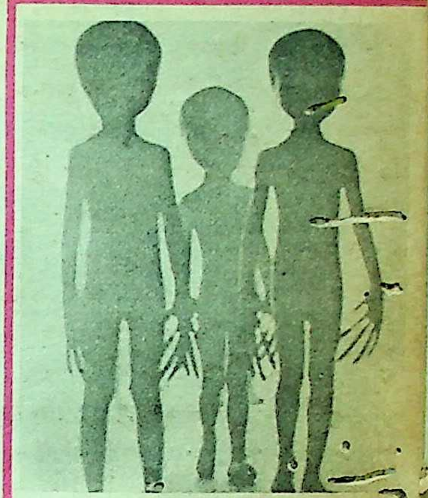

क्या अन्य ग्रहों के लोग ऐसे होंगे? फिल्म 'थर्ड एनकाउंटर ऑव द थर्ड काइंड' का एक दृश्य।

जाएगी जब कि न्यू मैक्सिको के सिविल इंजीनीयर बार्नें बार्नेट ने अपने फील्ड-सर्वेक्षण के दौरान एक रहस्यमयी उड़न-तश्तरी को जमीन पर गिरते देखा था। वह उड़न-तश्तरी १५ से ३० फुट व्यास की एक गोलाकार रचना थी और उस पर सवार थे—छह अंतरिक्ष-यात्री। इन अंतरिक्ष-यात्रियों को मनुष्य नहीं कहा जा सकता, क्योंकि ये यात्री पृथ्वी-मानव से काफी भिन्न हुलियावाले जीव थे। इनके सिर एकदम गोल, तथा आंखें बेहद छोटी थीं। और विचित्र बात यह थी कि इनके कान नहीं थे, कान की जगह दो छोटे-छोटे छेद बने हुए थे तथा सिर पर बाल

सुपर रिन की चमत्कार
ज़्यादा सफ़ेद

किसी भी अन्य डिटर्जेंट टिकिया
या बार से ज़्यादा सफ़ेद.

सुपर रिन से नियमित धुलाई करने पर आपके कपड़ों में ऐसा फ़र्क आये कि दूर से दिखे. किसी दूसरी डिटर्जेंट टिकिया या बार के मुकाबले सुपर रिन कहीं अधिक सफ़ेदी लाता है, क्योंकि सुपर रिन में अधिक सफ़ेदी की शक्ति है.

आज़माइए और सबूत पाइए:

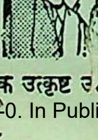

किसी अन्य
डिटर्जेंट बार से
धोया हुआ

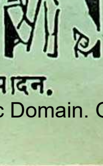

सुपर रिन
से धोया हुआ

सुपर
रिन
डिटर्जेंट टिकिया

सुपर रिन—अधिक सफ़ेदी की शक्ति से भरपूर

लिंटास-RIN. 35-1611 HI

हिन्दुस्तान लीवर का एक उत्कृष्ट उत्पादन.

बिलकुल भी नहीं थे। पृथ्वी-मानव की अपेक्षा इनके कद भी बहुत छोटे थे। इन अंतरिक्ष-मानवों का कद ३ या ३।। फुट का पाया गया तथा सिर पूरे शरीर के अनुपात में काफी बड़ा था। उड़न-तश्तरी के जमीन पर अचानक गिर जाने के कारण छहों अंतरिक्ष-यात्री मरे हुए पाये गये। इस अंतरिक्ष उड़न-तश्तरी का मलबा अमरीकी 'एयर फोर्स' के पास एक कीमती अमानत के रूप में रखा है तथा इन यात्रियों के शव 'फॉर्मेल्डीहाइड सोल्यूशन' में आगामी वैज्ञानिक परीक्षणों के लिए सुरक्षित रखे हैं।

अमूल्य तसवीरें

लॉस एंजेल्स के प्रसिद्ध फोटोग्राफर वेरोन निकल्सन वान पैपोन पृथ्वी के उन भाग्यशाली तथा दुर्लभ फोटोग्राफरों में एक थे, जिन्होंने ऐतिहासिक उड़न-तश्तरी के रहस्य को अपने कैमरे में कैद कर सकने में सफलता पायी थी। उनके पास एक उड़न-तश्तरी तथा इस तश्तरी के चार मृत अंतरिक्ष-यात्रियों के चित्र भी थे।

वेरोन निकल्सन के अनुसार इन अंतरिक्ष-यात्रियों के चेहरे पीले तथा हाथ बच्चों की तरह मुलायम तथा घुटनों तक लंबे थे। ये अंतरिक्ष-यात्री एक लंबे चोगे-जैसी कोई काले रंग की पोशाक पहने हुए थे। वेरोन निकल्सन ने इन अंतरिक्ष-यात्रियों की तसवीर की 'निगेटिव' को एक लिफाफे में संभालकर रखा हुआ था तथा उसे अपनी मृत्यु के बाद ही लोगों को खोलने की अनुमति दी थी। उल्लेखनीय है कि छह वर्ष हॉलीवुड में ६० वर्ष की उम्र में वेरोन निकल्सन का देहांत हो गया और उस ऐतिहासिक लिफाफे की खोज अब भी जारी है, जिसमें कि इन अंतरिक्ष-यात्रियों की तसवीरों की 'निगेटिव फिल्म' बड़ी सहेजकर निकल्सन महोदय ने रखी थी।

अंतरिक्ष यात्रियों का 'पोस्टमार्टम'

लेनस्प्रिंगफील्ड स्थित यू. एफ. ओ. के शोध-चिकित्सकों ने, इन अंतरिक्ष-यात्रियों के शवों के 'पोस्टमार्टम' का अध्ययन करने के बाद इनके हुलिया का वर्णन इस प्रकार किया है—

उसके अनुसार इनके हाथों की अंगुलियों के बीच झिल्ली का होना पाया गया है और ये लंबी-लंबी अंगुलियां घुटनों तक पहुंचती हैं। मुंह में दांत इन अंतरिक्ष-यात्रियों के नहीं होते तथा कान की जगह मछलियों की तरह दो छेद भर पाये गये। विलियम मोटे के अनुसार राइट पैटर्सन में अभी ३० और अंतरिक्ष-यात्रियों के शव परीक्षण हेतु सुरक्षित रखे हुए हैं, जिनसे रहस्य की कई गुत्थियों के सुलझाये जाने की वैज्ञानिकों को संभावनाएं हैं। ●

शाप आकाश की ओर फेंके हुए पत्थर के समान है और बहुत करके वह लौटकर उसके सिर पर गिरता है, जिसने उसे फेंका था। --स्कॉट

रोना बच्चे के स्वास्थ्य का सूचक

नवजात शिशु को उसके कमर से नीचे के भाग पर जोर से थप्पड़ मारकर रुलाया गया और फिर कंप्यूटर द्वारा उसकी रुलाई को रिकार्ड कर उस पर विभिन्न प्रयोग किये गये।

प्रयोगकर्त्ता था—हार्वर्ड मेडिकल स्कूल का एक छात्र हार्वर्ड एल. गोलब ! गोलब ने पचपन नवजात शिशुओं को सहसा सुई चुभोकर उनके रोने की आवाजें रिकार्ड कीं। फिर उन्हें ८८ भागों में वर्गीकृत किया—जैसे रोने का स्वर, रोना कितना जोरदार था, कितनी देर कौन बच्चा रोता रहा, वह रुक-रुककर रोता था अथवा लगातार। उस सारी वर्गीकृत सामग्री की, एक कंप्यूटर द्वारा जांच की गयी ताकि रोने के स्वस्थ लक्षण ज्ञात किये जा सकें। इन प्रयोगों द्वारा गोलब निम्न परिणाम पर पहुंचा—

बच्चे के रोने से जाना जा सकता है कि वह स्वस्थ रहेगा अथवा किसी रोग का शिकार होगा; क्योंकि रोना अपने आप में ही एक शारीरिक प्रक्रिया है, सुई चुभते ही स्नायुओं से तरंगें मस्तिष्क तक तथा मस्तिष्क से मांसपेशियों पर पहुंचकर बच्चे को क्रंदन करने, चीखने चिल्लाने पर मजबूर करती हैं। जिससे शरीर की मांसपेशियों में हलचल होती है, यदि बच्चा पूर्ण स्वस्थ न हो तो उसके रोने में और बच्चों से भिन्न स्वर सुनायी देंगे—

कुछ शोधकर्ताओं ने तो यह निष्कर्ष निकाला है कि बच्चों की ची रोने की आवाजों से उनके मस्तिष्क स्वस्थ होने का तो पता लगाया ही सकता है, साथ ही यह भी ज्ञात किया सकता है कि उसका मस्तिष्क अस्व तो नहीं है। कुछ बच्चों के जां (पीलिया) रोग आदि के लक्षण भी आवाजों की जांच परख द्वारा ज्ञात हैं। इस संबंध में एक अन्य वि डॉ. बेरी लेस्टी का कहना है कि बच्चे रुलाई से उसकी भावुकता, स्नायु-प्र तथा उसके प्रति माता-पिता के या उपेक्षा का भी पता लगा सकता

—स.

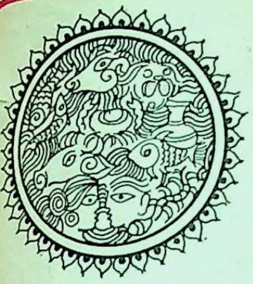

यह महीना और आपका भविष्य

● प्रो. के. ए. दुबे 'पद्मेश'

ग्रह स्थिति : मंगल एवं गुरु तुला में, शनि कन्या में, राहु मिथुन में, केतु धनु में, ५ से बुध सिंह में, ९ से शुक्र कर्क में, १६ से सूर्य सिंह में, २३ से बुध कन्या में . . .

मेष (चु, चे, चो, ल, ली, ले, लो; अ)

९ से १६ अगस्त के मध्य बेरोजगार व्यक्तियों को अपनी शक्ति का उपयोग रोजगार प्राप्त करने की दिशा में करने से सफलता मिलेगी। नवीन व्यापार की योजना को कार्यरूप में परिणत करने पर सफलता मिलेगी। स्थानांतरण तथा यात्रा का प्रयास भी सुखद होगा। रचनात्मक, शोध, लेखन, उच्च शिक्षा; प्रतियोगिता आदि की दिशा में चल रहे प्रयास सफल होंगे। राजनीतिक महिला से लाभ उठाने के प्रयास सफल हो सकते हैं। गुरु-मंगल की युति सप्तम भाव में है। १६ से २३ के मध्य व्यावसायिक एवं पारिवारिक उलझनों के प्रति सतर्क रहें। हस्तक्षेप के कारण व्यवधान आ सकता है। २३ से २८ के मध्य शिक्षा अथवा संतान को लेकर मानसिक क्लेश की स्थिति से बचें।

वृष (ई, उ, ए, ओ, ब, बी, बे, बू; बो)

२ से ८ तारीख के मध्य ससुराल-पक्ष या पत्नी के द्वारा आर्थिक एवं मानसिक सुख की आशा है। पत्नी की उन्नति, शिक्षा, नौकरी आदि के संबंध में चल रहे प्रयास सफल होंगे। आर्थिक क्षेत्र में बनायी गयी योजना सफल होगी। ९ से १६ के मध्य महिला-मित्र के माध्यम से लाभ व मित्र या भाई से विवाद, तनाव की स्थिति न आने दें। पुत्री के संबंध में सुखद सूचना मिल सकती है। यदि विदेश-यात्रा का प्रयास कर रहे हैं, तो उस दिशा में अधिक बल दें, सफलता मिलेगी। महिलाओं को उपहार एवं वस्त्रादि प्राप्त होने की भी

बवासीर
शुरू होते ही
इलाज़ कीजिये
विश्वसनीय
हडेन्सा
मरहम
लगाइये
-ऑपरेशन की
नौबत न आने
दीजिये !

7405 HIN

संभावना है। पुरस्कार के लिए च प्रयास भी सफल होंगे। शत्रु-पक्ष की होगी।

मिथुन (क, की, कू, के, को, घ, छ;

९ से १६ तथा १८ से २३ के आर्थिक दिशा में किये जा रहे प्रयास सफलता मिलेगी। भौतिक सुख में भी संभव है। मित्र तथा भाई के लाभ भी संभव है। राजनीतिक उठाने के प्रयास में व्यवधान तो आ हैं, लेकिन अंत में सफलता मंगल-गुरु की युति पंचम भाव में से शिक्षा के क्षेत्र में व्यवधान आ बुध के प्रभावी होने के कारण, प्रयास पर सफलता भी मिल सकती है। के कारण मानसिक क्लेश की स्थिति आने दें। पत्नी एवं अपने स्वास्थ्य उपेक्षा न करें।

कर्क (ही, हू, हे, हो, ड, डी, डू, डे;

९ से २४ तक प्रगति का समय अपनी शक्ति का उपयोग, अपने व्यव की उन्नति हेतु करें, सफलता प्रतीक्षा रही है। प्रमोशन, धन, शिक्षा, व्यापार शोध आदि किसी भी कार्य के प्रति समर्पित होकर जुट जाएं सफलता मिले मंगल के चतुर्थ भाव में होने से सुख साधनों में वृद्धि होगी। मकान, वाह आभूषण; वस्त्रादि के संदर्भ में किये जा प्रयास सफल होंगे। महिलाओं को वि उपहार मिलने की आशा है। बारहवें का शुक्र मानसिक क्लेश देता है। सतर्क

सिंह (म, मी, मू, मे, मो, ट, टी, टू; टे)

१६ से २८ के मध्य, आत्मविश्वास वृद्धि होगी। आर्थिक दिशा में किये जा रहे प्रयास भी सफल हो सकते हैं। नयी नौकरी, प्रमोशन, व्यापार आदि की दिशा में प्रयास फलीभूत होंगे। मित्र, भाई की मदद से रुका हुआ कार्य संपन्न हो सकता है। एक लंबे समय से टूटे हुए रिश्तों में, सुधार। मित्रता में प्रगाढ़ता भी संभव है। २ से १४ के मध्य नेत्र-विकार, स्वास्थ्य, आर्थिक हानि, पारिवारिक तनाव आदि के प्रति सतर्क रहें।

कन्या (टो, प, पी, पू, ष, ण, ढ़, पे; पो)

१ से १६ के मध्य तथा २३ से २८ की अवधि में आर्थिक दिशा में उठाये गये कदम सफल होंगे। नवीन रोजगार, प्रमोशन, आदि की दिशा में लाभ मिलेगा। संतान के संबंध में सुखद समाचार संभावित है। पारिवारिक दायित्वों की पूर्ति की दिशा में चल रहे प्रयास सफल होंगे। पत्नी की शिक्षा या नौकरी के प्रति किये जा रहे प्रयास सफल होंगे। मंगल एवं गुरु द्वितीय भाव में हैं, जो कि आर्थिक उलझनें दे सकता है। स्वास्थ्य के प्रति सतर्क रहें। अनचाहा व्यय करना पड़ सकता है। दुर्घटना, षडयंत्र से अत्यंत सावधान रहें।

तुला (र रा, रु, रे, रो, त, ती, तू; ते)

६ से १४ तथा १६ से २२ के मध्य

पर्व एवं त्योहार

२ अगस्त--सोमप्रदोष, ४--श्रावणी-रक्षाबंधन, ८--कज्जली (कजरी) एवं गणेश चतुर्थी, ११--हलषष्ठी, १२--श्रीकृष्ण जन्माष्टमी, १५--जया एकादशी व्रत एवं भारतीय स्वतंत्रता दिवस, १६--सोम प्रदोष, १९--अमावस्या, २१--हरितालिका (तीज), २२--गणेश चतुर्थी, २३--ऋषि पंचमी, २४--लोलार्क छठ; ३०--पद्मा एकादशी, ३१--भौम प्रदोष।

राशियां और प्रभाव--इस माह में मिथुन, कन्या, मकर, मीन राशियां सर्वाधिक प्रभावित होंगी। मंगल-गुरु की युति के कारण पारिवारिक तनाव, आकस्मिक व्यय, दुर्घटना, अर्थ-हानि; नौकरी में व्यवधान तथा अप्रिय समाचार की स्थिति आ सकती है। वर्षा के कारण देश के कुछ अंचलों में बाढ़ का प्रकोप होगा। कई प्रदेशों में राजनीतिक तूफान भी आ सकते हैं। वर्षा के कारण कुछ क्षेत्रों में भारी हानि की संभावना है। किसी मुस्लिम देश में राजनीतिक संकट की स्थिति आ सकती है। सत्ता-परिवर्तन की घटना भी घट सकती है।

शांति कैसे करें ? मिथुन, कन्या, मकर; मीन राशियों के व्यक्ति इस माह विभिन्न प्रकार की परेशानियों के शिकार हो सकते हैं। वे निम्न मंत्र का जाप करें।

मंत्र—नारायणं सर्वकालं क्षुतप्रस्खलनादिषु। ग्रहनक्षत्रपीडासु देववाधासु सर्वतः।।

प्रातः काल १०८ बार या उससे अधिक संख्या में इस मंत्र का जाप करने से लाभ मिलेगा।

मसूड़ों को मज़बूत बनाइये दाँतों की ज़िन्दगी बढ़ाइये

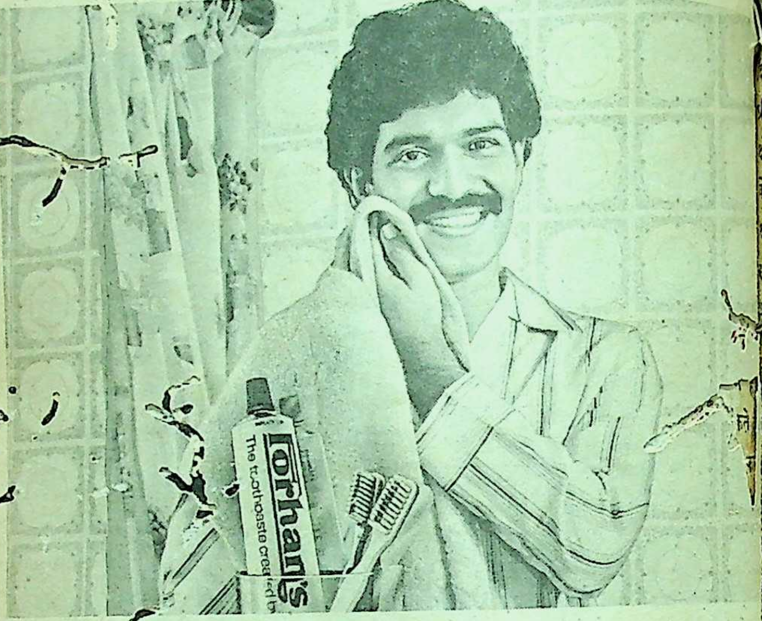
forhan's
The toothpaste created by

सिर्फ़ फोरहॅन्स में ही मसूड़ों को मज़बूत बनाने वाला विशेष ऐस्ट्रिंजेंट है

इसका अनोखा स्वाद ही इसके असर का सबूत है!

फोरहॅन्स का ऐस्ट्रिंजेंट मसूड़ों की विशेष तौर से देखभाल करता है. सूजन रोक कर ऐस्ट्रिंजेंट कमज़ोर और मुलायम मसूड़ों को संकुन्चित करके उन्हें स्वस्थ बनाता है. आपके दाँतों को लम्बी ज़िन्दगी और मज़बूत आधार स्वस्थ मसूड़े ही दे सकते हैं. यहाँ तक कि मजबूत दाँतों को भी स्वस्थ मसूड़ों की ज़रूरत होती है. इसीलिये आपको चाहिये फोरहॅन्स-ऐस्ट्रिंजेंट वाला अनोखा टूथपेस्ट.

forhan's
for the GUMS
The toothpaste created by a dentist
FOR THE GUMS
forhan's
The toothpaste created by a dentist
फोरहॅन्स लगाइये
दंत-सुरक्षा
घर ले आइये

फोरहॅन्स पर भरोसा रखिये

ये दाँतों के डॉक्टर का बनाया हुआ टूथपेस्ट है

288 F 171

के समय में किये गये कार्य-परिणाम सुखद होंगे। नौकरी, प्रमोशन, आर्थिक और व्यारिक मामले में तथा व्यापार की किये गये प्रयास सफल होंगे। कार्य-क्षेत्र में वृद्धि संभव है। परिचय-क्षेत्र भी बढ़ेगा। महिलाओं को उपहार के अवसर प्राप्त होंगे। उच्च शिक्षा के क्षेत्र में भी प्रयास सफल होंगे। पत्नी के स्वास्थ्य के प्रति अवश्य ही सतर्क रहें।

वृश्चिक (तो, न, नी, नू, ने, नो, य, यी; यू)
६ से २४ के मध्य का समय व्यवसायियों के लिए उत्तम समय है। नौकरी में चल रहे व्यवधान का समाधान संभावित। प्रमोशन की दिशा में भी लाभ मिल सकता है। नवीन व्यापार या

पद्मेश

पहले से ही चल रहे व्यापार से ही लाभ मिल सकता है। राज-नेता, अधिकारी वर्ग से सहयोग की आशा पूर्ण होगी। गुरु मंगल की युति बारहवें भाव में है। आकस्मिक अर्थहानि, अनचाहा व्यय, स्वास्थ्य तथा व्यवसायिक तनाव दे सकता है। विदेश-यात्रा के प्रयास में अवश्य रत रहें। मानसिक क्लेश की स्थिति न आने दें सफलता मिल सकती है।

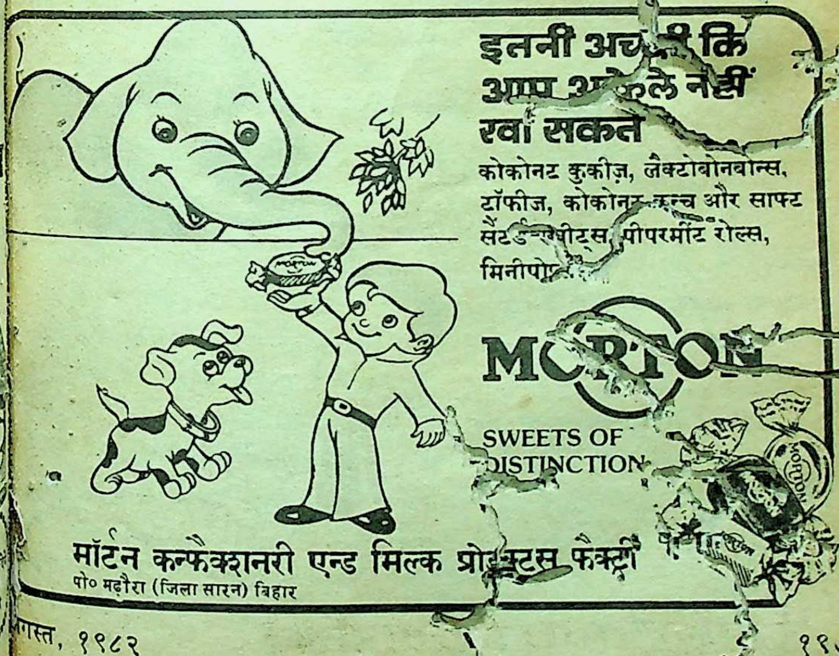

इतनी अच्छी कि
आप अकेले नहीं
खा सकते

कोकोनट कुकीज़, लैक्टोबोनबोन्स, टॉफीज, कोकोनट क्रन्च और साफ्ट सैंटर्ड स्वीट्स, पीपरमिंट रोल्स, मिनीपोप्स

MORTON
SWEETS OF
DISTINCTION

मॉर्टन कन्फैक्शनरी एन्ड मिल्क प्रोडक्ट्स फैक्ट्री
पो० मढ़ौरा (जिला सारन) बिहार

[illegible]ते, यो, भ[illegible]भी, भू, ध, फ, ढ़; भे)

१७ [illegible] २४ के मध्य प्रतिष्ठा, कीर्ति तथा धन [illegible] दिशा में आश्चर्यजनक आकस्मिक लाभ मिल सकता है। प्रमोशन, स्थानांतरण तथा व्यापारिक समस्याओं का निदान संभव है। संतान के संबंध में भी सुखद समाचार की आशा है। समारोह या पारिवारिक कार्य के कारण यात्रा भी करनी पड़ सकती है जो कि काफी सुखद होगी। २ से १६ तक सूर्य आठवें भाव में रहेगा। इस अवधि में विदेश-यात्रा का प्रयास करनेवालों के लिए प्रयास लाभप्रद होंगे। प्रयास में सफलता भी मिल सकती है।

मकर (भो, ज, जी, जू, [illegible], जो, ख, खी, ग; गी)

९ से १६ [illegible] रोजी-रोटी के साधनों में भारी सफलता मिलेगी। यदि बेरोजगार व्यक्ति अपनी शक्ति का उपयोग रोजगार प्राप्त करने में ही लगा दें, तो सफलता निश्चित रूप से मिल सकती है। पत्नी की शिक्षा, नौकरी के संबंध में [illegible] प्रयास भी सफल होंगे। आर्थिक मामले भी लाभप्रद होंगे। ५ से ९ तथा १७ से २९ के मध्य स्वास्थ्य, व्यवसाय, परिवार के प्रति विशेष सावधानी रखें। पत्नी के स्वास्थ्य के प्रति भी लापरवाही न बरतें। कष्टप्रद यात्रा भी करनी पड़ सकती है।

कुंभ (गू, गे, गो, स, सी, सु, से, सो; द)

१६ से २३ तथा १ से ९ [illegible] का समय शिक्षा-प्रतियोगिता, विभागीय परीक्षा, नौकरी, प्रमोशन; व्यापारिक का सहायक होगा। नवीन योजना को रूप में परिणत करने पर आशातीत लता मिलेगी। उच्च शिक्षा या अ कार्य हेतु विदेश-यात्रा का प्रयास भ होगा। लेखन, शोध, रचनात्मक; जिक कार्य आदि के प्रयास से आर्थि कीर्ति लाभ मिल सकता है। प संतान के स्वास्थ्य के संबंध में मा क्लेश की स्थिति न आने दें। १० तथा २४ से ३१ के मध्य शा मानसिक क्लेश से बचें। शत्रु, हमला तथा षडयंत्र से बचें।

मीन (दी, दू, थ, झ[illegible], दो,

१ से १६ अगस्त तक बन योजना को कार्यरूप में परिणत ही लाभ मिल सकता है। शो लेखन, संगीत; व्यापार आदि की में किये गये प्रयोग सफल होंगे। मा श्रम सफल होगा। सफलता पर कुछ भी मिल सकता है। १७ अगस्त से षडयंत्र, बीमारी का प्रभाव हो सक व्यापार, नौकरी एवं परिवार के प्रति रहें। आर्थिक मामलों में खतरा न भावुकता पर नियंत्रण रखें। खा पर महिलाओं को। मंगल एवं गुरु होने के कारण आर्थिक एवं शारीरिक हो सकता है।

—'ज्योतिष योग' पत्रिका—१८
लेन, रतनलाल नगर, का

दी हिन्दुस्तान टाइम्स [illegible] की ओर से डा. गौरीशंकर राजहंस
हिन्दुस्तान टाइम्स प्रेस नयी दिल्ली में मुद्रित तथा प्रकाशित।

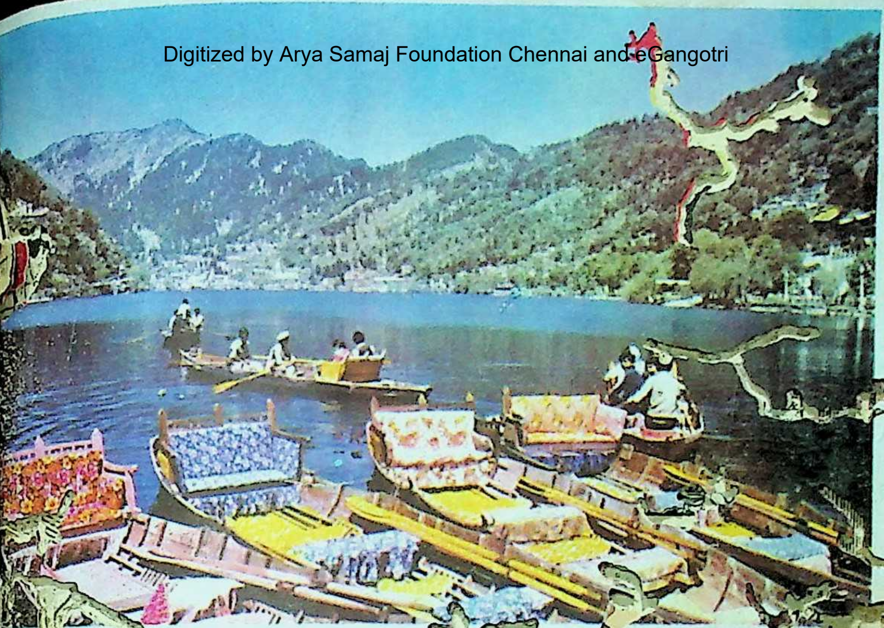

स्या पूर्ति—४०

इंतजार

ऊपर प्रकाशित चित्र को ध्यान से देखिए और उसके नीचे बड़े अक्षरों में लिखी पंक्ति पढ़िए। इसे लेकर आपको एक कविता लिखनी है। गीत, गजल या छंदहीन पंक्तियां भी। आपकी रचना मौलिक तथा अधिकतम छह पंक्तियों की हो। प्रविष्टि पोस्ट कार्ड पर ही भेजें। जो श्रेष्ठ रचना होगी, उसे पुरस्कृत किया जाएगा।

प्रथम पुरस्कार—२५ रुपये
द्वितीय पुरस्कार—१५ रुपये
अंतिम तिथि—२० अगस्त, १९८२

मंद्र अरनेजा

पार्ले
PARLE
Gluco
DELICIOUS AND NOURISHIN
PARLE
Gluco
BISCUITS

नन्हे मुन्नों की मुस्कान से आबाद है जहां

उन्हें दीजिये प्यार की देखभाल

पार्ले ग्लूको—
स्वाद में निराले, शक्ति से भरपूर

गेहूं, शक्कर, और ग्लूकोज़ के
स्वाद और पौष्टिक गुणों से भरपूर

पार्ले ग्लूको भारत के सबसे ज़्यादा बिकनेवाले बिस्किट

वर्ल्ड पारितोषिक

82

प्रकाशन

कादम्बिनी

जून, १९८२

भारतीय भाषाओं की विशिष्ट पत्रिक

खण्ड
डाक
आज
14
डाक
पर
० रु०
ग्रन्थ
प्लाई
क है।

ार उन्हें प्रक्षरशः
पश्चात् ताड़ वृक्ष के प
या। बाद के काल वर्षमि
ो नष्ट करने का सामूहिक तथा योजनाबद्ध
यह हुआ कि सर्वांगीण पूर्ण ग्रन्थ दुष्प्राप्य हो गये। य
तो उसके भी खंड-खंड हो गये अथवा विदेशी उठा कर ले
र्लभ ग्रन्थों में "भृगुसंहिता महाशास्त्र" की गणना होती है, जिसका
नाम सुना था। कहा जाता है, किसी समय भृगु ऋषि ने विष्णु
की छाती में लात मारी जाने पर लक्ष्मी जी ने शाप दिया था कि
सदा निर्धन रहेंगे। तब भृगु जी ने लक्ष्मी जी से कहा था—"मैं एक
ग्रन्थ रचूंगा कि जिस किसी के पास वह महाग्रन्थ (भृगुसंहिता) होगा,
तेरा उसका चरण-चुम्बन करेगी।"
ग्रन्थ को
के
इण्डस्ट्रियलिस्टों

कु
तक
वर्तमान
नहीं गया था, है

निवेदन- संसार में कुछ भी
विचार पूर्णतः सात्विक है और
शांतिपूर्वक जीवन बिताने के लिए
महानुभाव हाथ धोकर तथा मुख-शुद्धि
खद्दर में लपेटकर पवित्र स्थान में रखें। प्रतिदिन
देखें इसका चमत्कार! दूसरे का अहित चाहने
धार्मिक ग्रन्थों में करने वाले अश्रद्धालु
मंगाने का कष्ट न करें हीरे को पत्थर समझकर जो बैठते
फिर अपने भाग्य को रोता है। वी०पी०पी० द्वारा पुस्तक मंगाना

इस घोर कलियुग में
भी जिसका भाग्योदय
होने वाला है, वह ही
यह ग्रन्थ मंगायेगा।

पुस्तक

देहाती पुस्तक भंडार
चावड़ी बाज़ार, दिल्ली-110006
टेलीफ़ोन-2610
प्रकाश

ह महाग्रन्थ सर्व-साधारण जनता, व्यापारी, इण्डस्ट्रियलिस्ट तथा
सर्विसमैन आदि सभी वर्गों के लिए हितकारी है।

फोरहॅन्स–दाँतों के डॉक्टर का बनाया हुआ टूथपेस्ट

forhans
The toothpaste created

दाँतों को साफ़ करने के साथ–
मसूड़ों को मज़बूत बनाने में मद

मसूड़ों की तकलीफ़ से स्वस्थ दाँत

दाँतों के डॉक्टर कहते हैं कि दाँ
कीटाणुओं की [illegible] परत
जमा [illegible] ती है। [illegible]
कमजोर [illegible] रकर [illegible]
मसूड़ों [illegible]

फोरहॅन्स – मसू

डॉ
[illegible] देखभाल

Gluco
PARLE
DELICIOUS AND NOURISHING
PARLE
Gluco
BISCUITS

ग्लुको—
स्वाद में निराले, शक्ति से भरपूर

गेहूं, शक्कर, और ग्लूकोज़ के
[illegible] और पौष्टिक गुणों से भरपूर

पार्ले ग्लुको भारत के सबसे ज़्यादा बिकनेवाले बिस्किट

एवरेस्ट/[illegible]
वल्डे पारितोषिक

31
29-5-82

सकल पदारथ हैं जगमाहीं । भाग्यहीन नर पावत नाहीं ।।

भारत ही क्या, विश्व के समस्त श्रद्धालु महानुभावों के लिए भूत, भविष्य, वर्तमान का कुण्डली के आधार पर फलादेश बताने वाला अनमोल ग्रन्थ।

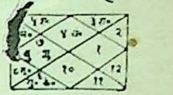

असली, प्राचीन, हस्तलिखित

प्रथम बार प्रकाशित

गुसंहिता महाशास्त्र (भा०टी०)

ॐ
अथ श्री भृगु संहिता महाशास्त्रम्
भाषा टीका सहितम्

आज 80,00,00,000 (अस्सी करोड़) भार[illegible]वासी ही नहीं, वरन् विश्व की 5,0[illegible],00,00,000 (पांच अरब) [illegible]नता में असन्तोष व्याप्त [illegible] चिन्तित है तो कोई संतान के लिए दुखी है। किसी को [illegible] है [illegible] कोई दूसरे को फलते-फूलते देख द्वेष की अग्नि में जल [illegible] किसी के पास सांसारिक भोग-वस्तुओं के साथ-साथ धन-संपत्ति का [illegible] कि वह स्वयं को असुरक्षित अनुभव कर [illegible] है। [illegible] ऐसे भी [illegible] हैं जो आत्म-शांति की खोज में इधर-उधर [illegible] है। [illegible] के विपरी[illegible] [illegible]न्त खोज करने पर ऋ[illegible]यों-मुनियों [illegible] भारत में कहीं-कहीं ऐसे महानुभाव भी देखने को मिल [illegible] जो [illegible]कालज्ञ हैं अर्थात् भूत, भविष्य और वर्तमान की बातें जानते [illegible] सकते हैं। यदि किसी व्यक्ति को आने वाले संकट अथवा [illegible] भूल का पता चल जाये तो उससे बचाव या प्रभाव को कम [illegible] प्रयास किया जा सकता है।

[illegible] जब कि आज की भांति छपाई आदि का प्रचलन नहीं [illegible] [illegible]नियों ने ग्रन्थों की रचना करके अपनी शिष्य परम्परा [illegible] अक्षरशः स्मरण कराकर इस ज्ञान भण्डार को आगे बढ़ाया [illegible] ताड़ वृक्ष के पत्तों तथा भोजपत्र आदि पर इन ग्रन्थों को [illegible]। बाद के कालखंड में विधर्मियों तथा आतंकवादियों ने इन [illegible] नष्ट करने का सामूहिक तथा योजनाबद्ध प्रयास किया। इसका [illegible] यह हुआ कि सर्वांगीण पूर्ण ग्रन्थ दुष्प्राप्य हो गये। यदि कहीं पर कोई [illegible]ना तो उसके भी खंड-खंड हो गये अथवा विदेशी उठा[illegible]र ले गये। [illegible]दुर्लभ ग्रन्थों में "भृगुसंहिता महाशास्त्र" की गणना [illegible]ती है, जिसका [illegible]नाम सुना था। कहा जाता है, किसी समय [illegible]गु ऋषि ने विष्णु [illegible] की छाती में लात मारी जाने पर लक्ष्मी जी ने शाप दिया था कि [illegible]सदा निर्धन रहेंगे। तब भृगु जी ने लक्ष्मी जी से कहा था—"मैं एक [illegible]न्थ रचूंगा कि जिस किसी के पास वह महाग्रन्थ (भृगुसंहिता) होगा, [illegible] उसका चरण-चुम्बन करेगी।"

[illegible]स ग्रन्थ को [illegible]त के [illegible]ट्रयलिस्टों

असंख्य कुण्डलियों [illegible] 20x30/6 (पुराण साइज) [illegible]ले पत्राकार 141[illegible] पृष्ठ, सचित्र सम्पूर्ण 14 खण्ड। [illegible]छावर 5[illegible]1/- (पाँच सौ एक रुपये) डाक [illegible] (पन्द्रह [illegible]) पृथक। यह कटिंग भेजने पर डाक खर्च माफ। आज ही 51/- (इक्यावन रुपये) एडवान्स भेजकर 4[illegible]/- (चार सौ पचास) की वी० पी० द्वारा दुर्लभ ग्रन्थ घर बैठे प्राप्त करें। ग्रन्थ सीमित संख्या में छपा है, अतः क्रमशः सप्लाई किया जायगा।

विदेशी पाठकगण 100 £ (स्टे॰ पौ॰) या 200 $ ([illegible]) एडवांस DEHATI PUSTAK BHA[illegible]R, DELH.-6 के नाम पर भेज[illegible]

कलियुग के [illegible] करने के लिए [illegible] समस्त परिवार में इस ग्रन्थ के [illegible]ना आवश्यक है।

अनेक अल्पज्ञ पंडित "भृगुसंहिता महाशास्त्र" के असली होने में सन्देह करते हैं। यह ग्रन्थ प्राचीनकाल से श्रवणगोचर होता रहा है। कुछ पंडित एवं ज्योतिषी जिनके पास हस्तलिखित ग्रन्थ का कुछ भाग पाया जाता है, वे कई पीढ़ियों से ग्रन्थ [illegible] छिपा[illegible]कर जनता से उनकी कुण्डली का फलादेश बताकर हजारों रुपया अथवा मुंहमांगी दक्षिणा तक ले लेते हैं। श्री भृगु ऋ[illegible]रचित "भृगुसंहिता" जैसा भूत भविष्य, वर्तमान काल का [illegible]ग बताने वाला महाग्रन्थ आज तक देखा, नहीं गया था, हाँ [illegible] नाम जरूर सुना था।

निवेदन- संसार में कुछ भी [illegible] सनातनि ठ, धर्मप्राण जिनके विचार पूर्णतः सात्विक हैं और [illegible]य पा[illegible] पर[illegible] अनुसार सुख-शांतिपूर्वक जीवन बिताने के लिए [illegible] वैभव प्रा[illegible] महानुभाव हाथ धोकर तथा मुख-शुद्धि [illegible] इस ग्रन्थ को रेशमी वस्त्र या शुद्ध खद्दर में लपेटकर [illegible]वित्र स्थान में रखें। प्रतिदिन [illegible]पूर्वक धूप-दीप दें और फिर देखें इसका चमत्[illegible]र! दूसरे का अहित चाहने[illegible] कुविचारी, नास्तिक तथा धार्मिक ग्रन्थों में [illegible] करने वाले अश्रद्धालुजन [illegible] भृगुसंहिता महाशास्त्र को मंगाने का कष्ट न करें [illegible] हीरे को पत्थ[illegible] [illegible] बैठता [illegible] फिर अपने भाग्य को [illegible]ता है। वी० पी० पी० द्वारा [illegible] म[illegible]न [illegible]ना

इस घोर कलियुग में भी जिसका भाग्योदय होने वाला है, वह ही यह ग्रन्थ मंगायेगा।

देहाती [illegible]क [illegible]र
चावड़ी बा[illegible], [illegible]ली-1100[illegible]6
टेलीफ़ोन-2610[illegible]

प्रकाश

[illegible]ह महाग्रन्थ सर्व-साधारण जनता, व्या[illegible]री, इण्डस्ट्रियलिस्ट [illegible]या सर्विसमैन आदि सभी वर्गों के लिए हितकारी है।

सुपर रिन की चमकार
ज़्यादा सफ़ेद

किसी भी अन्य डिटर्जेंट टिकिया या बार से ज़्यादा सफ़ेद.

सुपर
रिन
डिटर्जेंट टिकिया

सुपर रिन से नियमित धुलाई करने पर आपके कपड़ों में ऐसा फ़र्क़ आये कि [illegible] किसी दूसरी डिटर्जेंट टिकिया या बार के मुकाबले सुपर रिन कहीं अधिक सफ़ेदी लाता है, क्योंकि सुपर रिन में अधिक सफ़ेदी की शक्ति है.

आज़माइए और सबूत पाइए:

किसी अन्य
डिटर्जेंट बार से
धोया हुआ

सुपर रिन
से धोया हुआ

सुपर रिन—अधिक सफ़ेदी की शक्ति

लिंटास-RIN. 35.

हिन्दुस्तान लीवर का एक उत्कृष्ट उत्पादन.

क्या उन्हें जो मिल रहा है, काफ़ी है?

अधिकतर माताएं इस बारे में निश्चित नहीं हो पातीं कि उनके परिवार को दैनिक भोजन से पूरी तरह पोषक तत्व मिलते हैं कि नहीं।

इसीलिए वे हॉर्लिक्स पर भरोसा करती हैं।

क्योंकि हॉर्लिक्स नियमपूर्वक लेने से आपके परिवार को पर्याप्त मात्रा में पोषक तत्व मिलते हैं और सारा परिवार सदा स्वस्थ रहता है।

हॉर्लिक्स में भरपूर क्रीम वाला दूध, मॉल्ट-युक्त जौ और गेहूँ होने के कारण यह पौष्टिकता का एक मुख्य साधन है।

हॉर्लिक्स हर रोज़ लेने से आपका परिवार स्वस्थ और चुस्त रहता है। और आपकी कई चिन्ताएं कोसों दूर रहती हैं।

Horlicks
THE IDEAL FOOD

ब से हमारे डाक्टर ने हॉर्लिक्स लेने की सलाह दी है, मैंने सारे परिवार को रोज़ाना हॉर्लिक्स देने की आदत बना ली है। आप भी अपने परिवार को हॉर्लिक्स देती हैं न ?"

हॉर्लिक्स-महान शक्तिदाता

HTD-HMM-7033

100 रु. लीजिए

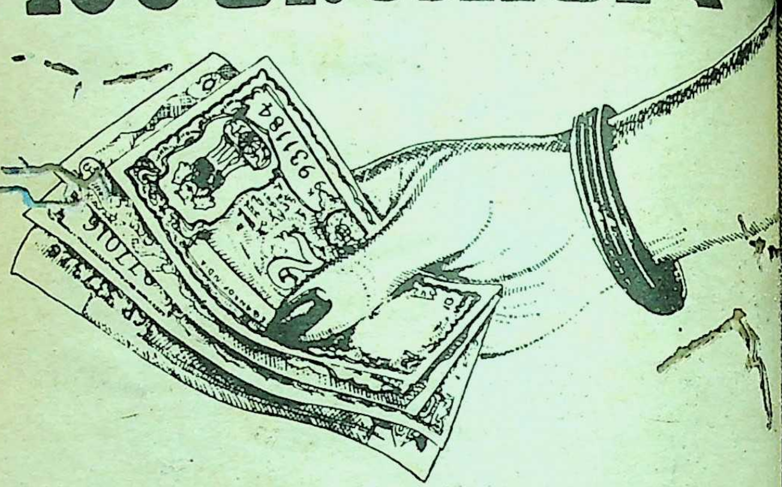

केवल 37.20 रु. दीजिए

यदि आप अपनी रकम को तिगुना करने का रहस्य जानना चाहते है तो पी एन बी आइए। इसका सबसे आसान तरीका है पी एन बी की नकदी प्रमाण पत्र योजना । आप हमें सिर्फ 37.20 रु. दीजिए, हम आपको 100.00 रु. का नकदी प्रमाण पत्र देगें जिसे आप 10 वर्ष बाद भुना सकते हैं । 100.00 रु. के गुणितों में 3 वर्ष से 10 वर्ष की अवधि के लिए ये नकदी प्रमाण पत्र पी एन बी की सभी शाखाओं में उपलब्ध हैं ।

पंजाब नैशनल बैंक

(भारत सरकार का उपक्रम)
...भरोसे का प्रतीक!

आपके लिए उपयोगी निवेश

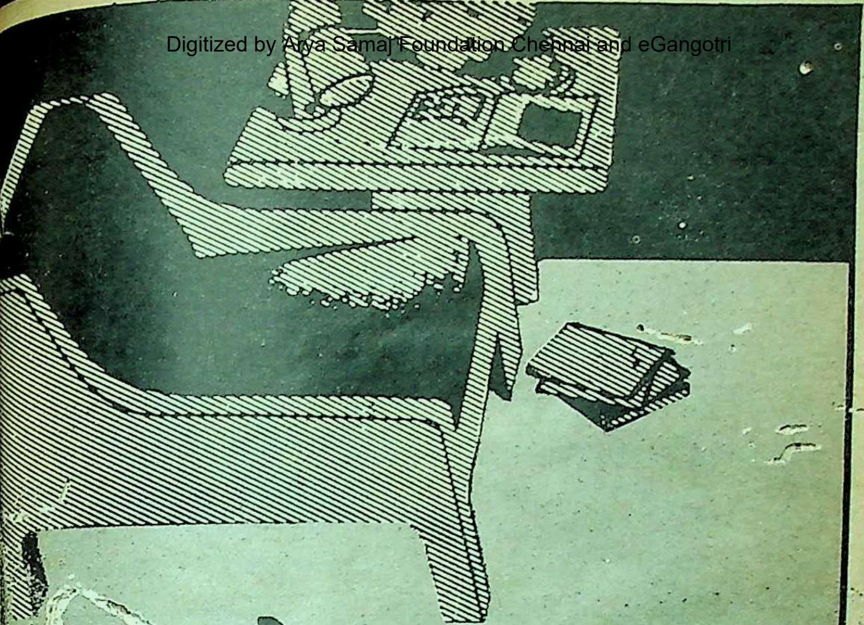

घर हो या दफ़्तर
निखार लाते हैं

कोचर कार्पेट्स

नमोहक रंगों में हाथ की बनी हुई ऊनी कार्पेट्स अपने
मनचाहे साइज में निर्धारित उचित मूल्यों पर लें

Kocher CARPETS

R-4, Green Park, Mehrauli Road,
New Delhi-110016 Phone : 665010

AUDIO VISUAL

शब्द-सामर्थ्य बढ़ाइए

● ज्ञानेन्द्र

नीचे कुछ शब्द दिये हैं, और उसके बाद उनके उत्तर भी। उत्तर देखे बिना आपकी दृष्टि में जो सही उत्तर हों, उन पर निशान लगाइए और फिर यहां दिये गये उत्तरों से मिलाइए। इस प्रक्रिया से आपका शब्द ज्ञान अवश्य ही बढ़ेगा।

१. **इतस्ततः**—क. दूर-दूर, ख. विस्तार से, ग. इधर-उधर, घ. गड़बड़।

२. **एकचित्त**—क. केंद्रित, ख. जिसका मन किसी एक बात में लगा हो, ग. स्वार्थी, घ. समाधिस्थ।

३. **एकनिष्ठ**—क. विश्वासपात्र, ख. विश्वसनीय, ग. केवल एक में विश्वास रखनेवाला, घ. आस्तिक।

४. **अंतर्यामी**—क. विद्वान्, ख. सबके अंतर में व्याप्त, ग. सूझबूझवाला, घ. संन्यासी।

५. **औरस**—क. दूसरा, ख. वैध, ग. गुप्त, घ. श्रेष्ठ।

६. **कदापि**—क. अभी, ख. कभी, ग. शायद, घ. जरूर।

७. **अंगज**—क. बड़ा, ख. पुत्र, भाई, घ. भागीदार।

८. **संकल्प**—क. दान, ख. ग. विश्वास, घ. निश्चय।

९. **औढरदानी**—क. मस्त, ख. खोलकर खर्च करनेवाला, ग. घ. अपने भक्तों को शीघ्र संतुष्ट करनेवाला।

१०. **हड़कंप**— क. हिलना-डुलना ख. विद्रोह, ग. तहलका, घ. भगदड़

११. **तथापि**—क. और भी, फिर भी, ग. लेकिन, घ. जैसा भी हो

१२. **ठटरी**—क. चौकी, ख. ग. ढांचा, घ. बीमारी।

उत्तर

१. ग. इधर-उधर। सभी **इतस्ततः** चले गये। (इतः+ततः)

२. ख. जिसका मन किसी एक में लगा हो। **एकचित्त** होने से ही कार्य में दक्षता प्राप्त होती है।

३. ग. केवल एक में विश्वास वाला। वह शिव का **एकनिष्ठ** उपा है। वह राजनीति में **एकनिष्ठ** हो कार्य कर रहा है। (संज्ञा—एकनिष्ठ

४. ख. सबके अंतर में व्याप्त, ईश्व क्या तुम्हें **अंतर्यामी** का डर नहीं?

५. ख. वैध, विवाहिता से उत्प **औरस** संतान के अभाव में कई राजा की गद्दी छिनी।

६. ख. कभी, हरगिज। वह इस मान को **कदापि** सहन नहीं करेगा।

७. ख. पुत्र, बेटा। उसके **अंगज** ने भी उसी की तरह सम्मान अर्जित किया। (**अंगजा** = पुत्री)

८. घ. निश्चय, इरादा। अपने दृढ़ **संकल्प** से उसने कार्य को पूरा कर लिया।

९. घ. अपने भक्तों को शीघ्र संतुष्ट करनेवाला। उस **औढरदानी** ने किसी को अपने द्वार से निराश नहीं जाने दिया।

१०. ग. तहलका, हलचल। उसके भाषण ने **हड़कंप** मचा दिया।

११. ख. फिर भी, तो भी। यद्यपि वह निर्धन है **तथापि** उदारभाव है। (प्रायः वाक्य में 'यद्यपि' शब्द के साथ प्रयुक्त)

१२. ग. ढांचा (शारीरिक)। बीमारी के कारण वह **ठटरी** मात्र रह गया है। ('ठठरी' का भी प्रयोग)

पारिभाषिक शब्द

एनक्लोजर = अनुलग्नक
एनडोर्समेंट = पृष्ठांकन
नोटिस = सूचना
नोटीफिकेशन = अधिसूचना
नोट = टिप्पणी
रिसेप्शनिस्ट = स्वागती
रजिस्ट्रार = पंजीकार
ट्रस्टी = न्यासी
कंडेंसर = संधारित्र
डिटेक्टर = संसूचक

समस्या पूर्ति-३६

लहरों पर लहरें

प्रथम पुरस्कार

कुरते की सलवट-सी उठतीं
लहरों पर लहरें सरिता में
उर की सहज विकलता जैसे
झांक उठी हो लघु कविता में

--रामस्वरूप दुबे

१११९ १, सदर बाजार, लखनऊ

द्वितीय पुरस्कार

एक शोख गहरायी की अरमान हैं लहरें
चढ़ती हुई एक उम्र की अरमान हैं लहरें
लहरों पर लहरें और ये मस्ती का आलम
एक दूसरे की हस्ती की निगहबान हैं लहरें

--विनोद कुमार सिन्हा

द्वारा श्री मिथिलेश प्रसाद
वार्ड नं. ८, सहरसा (बिहार)

आशा के आयाम

परोपकार की मूर्ति

जयपुर जिले के कूलामन नामक ग्राम में एक अत्यंत परंपरावादी धार्मिक जैन-श्रावक परिवार में उनका जन्म हुआ। १२ वर्ष की अवस्था में ही विवाह और फिर दो वर्ष बाद ही वैधव्य का दारुण दुःख। दुःख ! चारों ओर शोक और निराशा का साम्राज्य ! लेकिन उन्होंने अपने शोक पर काबू रखा, अध्ययन किया और फिर आदिवासी मीणाओं की सघन आबादीवाले सवाई माधोपुर क्षेत्र में एक विद्यालय स्थापित किया।

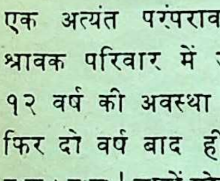

कमला बाई

ये संकल्पशील महिला हैं—कमलाबाई। कमलाबाई ने श्रीमहावीरजी स्थित मुमक्षु महिलाश्रम में अध्ययन किया था।

उन्होंने जैन-धर्म के मूलतत्वों का अध्ययन किया, संस्कृ में न्यायतीर्थ तक की शिक्षा प्राप्त की। वे सदा ही समाज में नारी जाति की उपेक्षा, उनके साथ किये जा रहे अपमान-जनक व्यवहार, विशेषकर अशिक्षा त विधवाओं की विषम स्थिति के प्रति सोच विचारा करतीं और उनका मन इन बह के लिए कुछ कर गुजरने को लाला रहता। अतः १९५३ के आरंभ में उन्हों दृढ़-संकल्प और इच्छा-शक्ति से प्रे होकर एक धर्मशाला में 'आदर्श महि विद्यालय' की स्थापना की। आरंभ वर्षों में आनेवाली आर्थिक तथा अ बाधाओं का कुहरा धीरे-धीरे स्वतः छं लगा और जैन समाज के उदार लो विद्यालय को पूर्ण समर्थन तथा आर्थि सहयोग देने लगे।

आज कमलाबाई द्वारा लगाया ग यह पौधा एक विशाल वटवृक्ष का र ले चुका है, जिसकी शीतल छाया में लगभ १००० बालिकाएं तथा विधवाएं लौकिक धार्मिक, नैतिक, हस्तकला-कौशल की शि ले रही हैं।

अत्याचार का प्रतिरोध

८ अप्रेल, १९४०।

जरमन फौजों का डेनमार्क में प्रवेश औ आतंक—अत्याचार के दौर की शुरुआत दिन सप्ताहों में बदले और सप्ताह मही में, फिर वर्ष में। डेनमार्क पर जरम

फौजों की पकड़ मजबूत होती गयी। लेकिन डेनिश जनता ने आसानी से समर्पण से इनकार कर दिया। भूमिगत कार्रवाइयों से उन्होंने जरमन फौजों के आतंक का सामना किया।

अब जरमनों का क्रोध यहूदियों पर टूटा, इस घोषणा के रूप में—

> 'डेनमार्क के सारे यहूदी अपनी बांह में पीली पट्टी बांधें, जिस पर 'डेविड का सितारा' अंकित हो।'

डेनमार्क के नरेश क्रिश्चियन का मनोबल टूटा न था। वे प्रतिदिन अपने महल से घुड़सवारी के लिए निकलते। उन्होंने इस जरमन-घोषणा के खिलाफ एक वक्तव्य दिया, जो भूमिगत रेडियो से प्रसारित किया गया।

वक्तव्य यह था—

'डेनमार्क-नरेश अपने नागरिकों में भेद नहीं करते। उनके लिए प्रत्येक नागरिक समान है। वे स्वयं अपनी बांह पर डेविड के सितारेवाले पट्टी बांधेंगे और अपनी प्रजा से भी यह उम्मीद करते हैं कि वह भी अपनी बांह पर ऐसी पट्टी बांधेगी, भले उनमें से अधिकांश यहूदी न हों।'

दूसरे दिन कोपेन हेगन के समस्त नागरिकों की बांह पर डेविड के सितारे वाली पट्टी बंधी हुई थी।

जरमन फौजी शासकों को इस प्रतिरोध के आगे झुकना पड़ा और अपना आदेश वापस लेना पड़ा। ●

ज्ञान-गंगा

न विद्यया, न शौर्येण धनेनाभिजनेन च
न बलेन प्रमत्तः स्यात चातिमानी कदाचन

--विद्या, शूरता, धन, कुल और बल से अभिमानी नहीं होना चाहिए। अभिमान किसी भी अवस्था में ठीक नहीं।

कस्यात्यन्तं सुखमुपनतं दुःखमेकान्ततो वा।
नीचैर्गच्छत्युपरि च दशा चक्रनेमिक्रमेण।।

—ऐसा कौन है जिसको नियत रूप से सुख या दुःख ही प्राप्त होता हो? मनुष्य की दशा पहिये की नेमि (घेरे) की तरह क्रम से नीचे और ऊपर आती जाती है।

रिक्तः सर्वो भवति हि लघुः पूर्णता गौरवाय।

--जो कोई रिक्त (अर्थात सारहीन) होता है, वह लघु होता है। पूर्णता गौरव के लिए होती है।

महीयांसः प्रकृत्या मितभाषिणः।

बड़े लोग स्वभाव से ही मितभाषी होतेहैं।

कामं व्यसनवृक्षस्य मूलं दुर्जनसंगति।

--यह ठीक है कि दुर्जनों का संग ही व्यसन-रूपी वृक्ष का मूल है।

कः परः प्रियवादिनाम्?

—प्रियवादियों के लिए पराया कौन है?

प्रस्तोता : महर्षिकुमार पाण्डेय

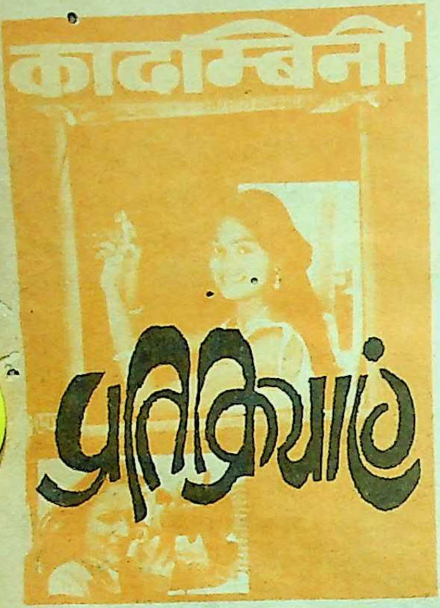

प्रतिक्रियाएं

मई अंक में प्रकाशित 'मंत्र : १०८ का रहस्य' लेख ने बहुत अधिक प्रभावित किया। पूरी 'कादम्बिनी' में यही लेख सारी रचनाओं पर हावी रहा। लेख पढ़कर ऋषि-मुनियों के सामने मस्तक खुद-ब-खुद झुक गया। —**रमेश राज, दिल्ली**

पहली बार 'कादम्बिनी' (अप्रैल अंक) पढ़ी। बस, यूं समझ लीजिए कि इस पत्रिका ने मेरे दिल को छू लिया। इसने मेरा तीन रुपये महीने का खर्च और बढ़ा दिया है, लेकिन यह मुझे कतई नहीं अखरा है, क्योंकि डॉ. शशि शर्मा की 'धरती' और रमणिका गुप्ता की 'घरौंदा' कविताएं, 'मैं डाकुओं की रानी', 'कुत्ते जो इतिहास बने' तथा 'भारत की पहचान-जैसे लेख व 'टूटी हुई जिंदगी'-जैसी कहानी पढ़ने का अनुपम सुख मिला।

——मुकेश श्रीवास्तव 'कुमार', भोपाल

भारत की पहचान

'भारत की पहचान अंगरेजी माध्यम से नहीं हो सकती है' लेख में पोलिश लेखक-हिंदी अध्यापक मा. क्रि. बेस्कीं के हिंदी के विषय में व्यक्त विचार प्रेरणादायक, उपयोगी, विद्वत्तापूर्ण एवं स्वागत-योग्य हैं। जिस प्रकार इंग्लैंड के 'भारत-मेले' में भारतीय साहित्य का प्रतिनिधित्व कोई हिंदी या भारतीय भाषा का लेखक न कर अंगरेजी साहित्य के लेखक डॉ. मुल्कराज आनंद कर रहे हैं, उससे इस बात की पुष्टि होती है कि हमारे देश के शिक्षा व विदेश विभाग के अधिकारी स्वाधीनता-प्राप्ति के ३५ वर्ष बाद आज भी अंगरेजी साहित्य को ही भारत का वास्तविक साहित्य तथा अंगरेजी जानने-वालों को ही भारत का सुशिक्षित, सुसभ्य एवं साहित्यप्रेमी नागरिक मानते हैं।

—शकुनचंद गुप्त विशारद, रायबरेली

—डॉ. कुमारी आशा कपूर, रुड़की

पिटाई कवियों की

'कादम्बिनी' के अप्रेल अंक में 'समय के हस्ताक्षर' स्तंभ के अंतर्गत कवि-सम्मेलनों और विदूषक-कवियों के संदर्भित— 'बदायूं में कवियों की पिटाई: विदूषक सम्मेलनों के नजारे' में आपके दो टूक विचार पढ़कर हार्दिक संतोष मिला। स्पष्टोक्ति के लिए मेरी आत्मिक बधाई स्वीकार करें। आपके विचारों से मैं शत-प्रतिशत सहमत हूं।

महादेवी वर्मा को एक लाख का पुरस्कार

छायावाद की हिंदी की श्रेष्ठतम कवयित्री श्रीमती महादेवी वर्मा को उत्तर प्रदेश शासन ने पहली बार एक लाख रु. का 'भारत-भारती' पुरस्कार देने की घोषणा की है। महादेवीजी हमारी स्थायी लेखिका हैं। 'कादम्बिनी' परिवार की ओर से बधाई। —संपादक

एक बात इस संबंध में अवश्य कहना चाहूंगा, वह यह कि इन विदूषकों को लोकप्रिय बनाने में साहित्यिक पत्र-पत्रिकाओं के संपादकों का हाथ रहा है और अब ये कथित कवि अपनी लोकप्रियता का नाजायज फायदा उठा रहे हैं। क्या बड़े पत्र या जनप्रिय पत्रिकाएं इन कवियों को स्थापित कर अच्छे रचनाकारों को विस्थापित करने का मोह छोड़ सकेंगी?

--रामस्वरूप 'सिंदूर', कानपुर; कन्हैयालाल बाजपेई, कानपुर; एम.सी. सांख्यधर, मंडावर (बिजनौर); राजकुमार 'हंस', इंदौर; परमानंद अश्रुज, जबलपुर; मंजुल भारती, बनमनखी (पूर्णिया); महेंद्रप्रताप गुप्त, कानपुर; आदि

कुछ पाठकों ने 'समय के हस्ताक्षर' में व्यक्त विचारों से अपनी असहमति व्यक्त की है, उनके नाम हैं—

--सुबोधसिंह पंवार, बेरमो (गिरिडीह), सुमन कुमार टुनमुन, मुंगेर; अव्यनु वार्ष्णेय, हाथरस; प्रकाश नवाल, भीलवाड़ा; महेंद्र 'गाफिल', भरतपुर।

अब हम इस अंक से इस विवाद को समाप्त कर रहे हैं। --संपादक

बच्चूप्रसाद सिंह राजदूत बने

'कादम्बिनी' के सुपरिचित लेखक और विदेश मंत्रालय में विशेष अधिकारी श्री बच्चूप्रसाद सिंह सूरीनाम में भारत के नये राजदूत नियुक्त हुए हैं।

श्री सिंह हिंदी एवं अंगरेजी में एम. ए. हैं और सरकारी सेवा में आने के पूर्व पत्रकार तथा अध्यापक भी रह चुके हैं। विदेश मंत्रालय के अपने पंद्रह वर्ष के कार्यकाल में श्री बच्चूप्रसाद सिंह प्रधानमंत्री और विदेश मंत्री के प्रतिनिधि-मंडलों के साथ नेपाल, मारिशस और रूस, यूरोप एवं दक्षिण-पूर्व एशिया के अनेक देशों के साथ-साथ अमरीका, आस्ट्रेलिया की भी यात्रा कर चुके हैं। प्रथम और द्वितीय विश्व हिंदी सम्मेलन के आयोजन में भी श्री सिंह ने प्रभाव पूर्ण भूमिका निभायी है।

'कादम्बिनी'-परिवार की ओर से बधाई! **--संपादक**

अमृता प्रीतम को भारतीय ज्ञानपीठ पुरस्कार

काव्य की तरल संवेदनशीलता, आत्मीय अनुभूति, युग-सापेक्ष यथार्थ-बोध ग्रौर सहज कला दृष्टि देकर पंजाबी काव्य को एक विशिष्ट आयाम देनेवाली अमृता प्रीतम बहुचर्चित कवयित्री हैं। उनके काव्य-संग्रह 'कागज ग्रौर केनवास' को वर्ष १९८१ का भारतीय ज्ञानपीठ पुरस्कार प्रदान कर अमृताजी की काव्य की इन्हीं विशेषताग्रों का सम्मान किया गया है। उन्हें सन १९५६ में साहित्य अकादमी द्वारा ग्रौर सन १९५८ में पंजाब सरकार द्वारा सम्मानित किया जा चुका है।

'कादम्बिनी' परिवार की बधाई। —सं.

'बूची टेरेस' पुरस्कृत

उत्तर प्रदेश सरकार ने इस वर्ष श्री राजेन्द्र अवस्थी को उनके नाटक 'बूची टेरेस' के लिए पुरस्कृत कर सम्मानित करने की घोषणा की है।

राजेन्द्र अवस्थी 'मेरु-स्तंभ' पुरस्कार से सम्मानित

वराह मिहिर खंड पीठ द्वारा वराह मिहिर जयंती पर भोपाल में आयोजित एक समारोह में मध्य-प्रदेश के खाद्य एवं आपूर्ति मंत्री पं. माधवलाल दुबे ने 'कादम्बिनी' के संपादक एवं यशस्वी कथाकार श्री राजेन्द्र अवस्थी को 'मेरु-स्तंभ' पुरस्कार से सम्मानित किया। अवस्थीजी को शाल, मान-पत्र एवं पांच हजार रु. की राशि भेंट की गयी। समारोह का उद्घाटन पं. भगवत दयाल शर्मा ने किया। इस अवसर पर 'आठवें दशक के ज्योतिष' पुस्तक के लेखक डॉ. सोमेश्वर शुक्ल को पं. बालमुकंद त्रिपाठी पुरस्कार एवं सर्वश्री एस. के. केलकर, प्रो. के. ए. दुबे पद्मेश, बी. एन. गच्छ, पं. शिवप्रसाद पाठक, पं. लक्ष्मीकांत मिश्र को, म. प्र. के राजस्व मंत्री डॉ. टुमनलाल ने 'ज्योतिष-महर्षि' की उपाधि से सम्मानित किया।

पुरस्कार-समारोह में बायें से श्री राजेन्द्र अवस्थी, खाद्यमंत्री पं. माधवलाल दुबे एवं राज्यपाल पं. भगवतदयाल शर्मा।

आगामी आकर्षण

बंधुआ मजदूर! केवल भारत या तथाकथित अविकसित देशों में ही नहीं! वे अमरीका में भी हैं। पढ़िए—पुलिटज़र पुरस्कार प्राप्त एक सशक्त कृति—

देवनगरी के गोरे बंधुआ मजदूर

वे स्वयं को राम का वंशज और लव-कुश की संतान कहते हैं। दो हजार वर्ष पहले भारत से बिछुड़े ये लोग राजनीतिक तानाशाहों और धर्मांध गुरुओं के अत्याचारों का भी शिकार हुए हैं। कौन हैं ये यायावर!

यूरोप-अमरीका में भटकती लव-कुश की संतानें

कुछ दिलचस्प शीर्षक

○ रुक्मिणी का बेपर-वाह ईश्वर ○ जब एक क्षत्रिय ने ऋषि को शाप दिया ○ कथा साहित्य में अश्लीलता का प्रश्न ○ जहां औरतें मर्दों पर शासन करती हैं

जंगल कट रहे हैं। पहाड़ अपनी प्राकृतिक सुषमा खोते जा रहे हैं। और पहाड़ों पर रहनेवाली नयी पीढ़ी? वह खो रही है एक वायवी-मायाबी दुनिया में।

सफेद धुंए की काली दुनिया

'कादम्बिनी' का जुलाई अंक भी किसी विशेषांक से कम नहीं। अपनी प्रति आज ही सुरक्षित कराएं।

'कादम्बिनी' पढ़िए: समय के साथ चलिए

वर्ष २२ : अंक ८
जून, १९८२

कादम्बिनी

आकल्पं कविनूतनाम्बुदमयी कादम्बिनी वर्षतु

निबंध एवं लेख

डॉ. जगदीश चंद्रिकेश
अमीर देशों के बच्चे........... २१
डॉ. ऋतुराज अवस्थी
शहरी आंखें जंगलों में......... २६
डॉ. प्रभात त्यागी
जहां जिंदा व्यक्ति दफन है...... २९
नवीन खन्ना
बोलता है कौवा.............. ३२
डॉ. महेंद्र भानावत
देशभक्त डाकू ३८
डॉ. पी. वी. वर्तक
बृहस्पति-लोक की यात्रा........ ४४
डॉ. शिवनंदन कपूर
विश्व का सबसे बड़ा छलिया ४९
आचार्य देवेंद्रनाथ शर्मा
जैसी प्रजा वैसा राजा.......... ५६
राजशेखर
एक प्रेत : दो बहनें............ ६९
डॉ. धीरेंद्रकुमार दीक्षित
मौत के साये में पलती मीनारें..... ७३
मिरयाना बाशोवा
कविता : मेरी प्रेमिका ७८
मुकुंददास माहेश्वरी
नेपोलियन की वसीयत ९६
कोजी फुरुसावा
इक्कीसवीं सदी एशिया की..... १०९
कुमार अनुपम
बर्नार्ड शॉ की प्रेमिका १२२
विष्णुप्रताप सिंह
मिट्टी का रेफ्रिजरेटर १२६
डॉ. राजेशकुमार उपाध्याय
नर्मदा के परिक्रमावासी १२८
रामानंद राठी
उनकी कला की धूम है...... १३४
एस. एस. बतरा
पनीर से बनी झील......... १४५
सुदीप
जालसाजी में वैज्ञानिक भी..... १५०
सायरा बानू
मुस्लिम औरतें बहुविवाह प्रथा... १५८
राधेश्याम
कला मेला १७०

स्थायी स्तंभ

शब्द-सामर्थ्य—८, आस्था के आयाम—१०, ज्ञान-गंगा—११, प्रतिक्रियाएं—१२, काल-चिंतन—१८, हंसाइयां—५४, विधि-विधान—८४, क्यों हैं जुदा-जुदा—११९, बुद्धि-विलास—१२१, तनाव से मुक्ति—१५५, घरलू उपचार—१५७, गोष्ठी—१६४, ज्योतिष: आपकी समस्याओं का निदान—१६७, नयी-कृतियां—१७३, प्रवेश—१८०,

आवरण : ज्ञान दीक्षित (युवती), वी. राजगोपाल (लोक-नर्तक)

आचार्य कृष्णकुमार गुप्ता
ज्योतिष समस्या : और समाधान . . . १६८
प्रो. के. ए. दुबे 'पद्मेश'
यह महीना और आपका भविष्य . . . १७६

कहानी एवं हास्य-व्यंग्य

माखनलाल चतुर्वेदी
माया तेरे तीन नाम ३५
उमेश सहगल
शहीद की पत्नी ६१
गुलाबदास ब्रोकर
मेघजी का पैतृक ऋण ८७
अखिलेश तिवारी
मास्टर दा १०१
डॉ. एस. डी. एन. तिवारी
कन्हर गांव के चीतल ११६
वीना सिंह
निर्णय के घेरे १३८

कविताएं

राजेंद्र शर्मा
दो लघु कविताएं ५५
कंचन रिछारिया
सत्य लिये बैसाखी ६४
वीरेंद्र डांगी
नाम तुम्हारे ६४
डॉ. वीरेंद्र शर्मा
पल में वर्ष गुजरते ६५
असीम शुक्ल
घुटनों तक रोशनी १४८
सत्यपाल सक्सेना
गजल १७२

सार-संक्षेप

हेरल्ड शरमन
कैनेडी की हत्या का पूर्वाभास . . . १८२

संपादक
राजेन्द्र अवस्थी

कार्यकारी अध्यक्ष :
एस. एम. अग्रवाल
हिंदुस्तान टाइम्स प्रकाशन समूह

संयुक्त संपादक :
शीला झुनझुनवाला

सह-संपादक : दुर्गाप्रसाद शुक्ल

उप-संपादक :
प्रभा भारद्वाज, डॉ. जगदीश चंद्रिकेश, भगवती प्रसाद डोभाल, सुरेश नीरव, घनंजय सिंह, चित्रकार : सुकुमार चटर्जी
प्रूफरीडर : स्वामी शरण

पता : संपादक—'कादम्बिनी', हिंदुस्तान टाइम्स लि., १८–२०, कस्तूरबा गांधी मार्ग, नयी दिल्ली-११०००१

वार्षिक मूल्य : ३८ रुपये

काल-चिंतन

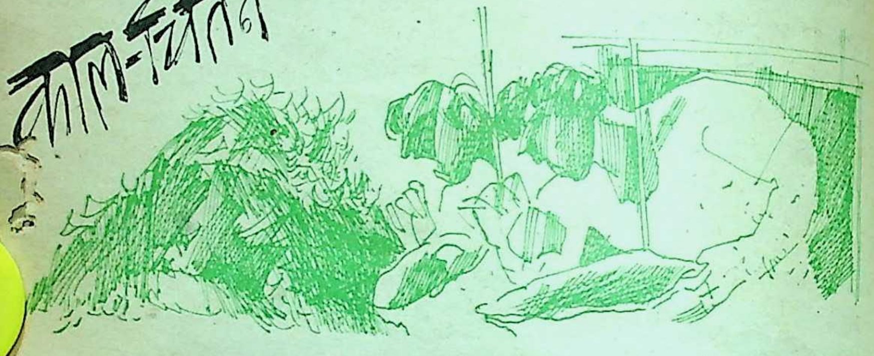

——वह कूड़े-कचड़े से कुछ बीन रहा था। उसके हाथ यहां-वहां बेतहाशा कुछ खोजने में व्यस्त थे; कोई हीरा खोज रहा हो जैसे! उसकी विस्फारित आंखें चुंबकीय दृष्टि से संपन्न थीं!

——क्या कर रहा था वह? कूड़े-कचड़े से आखिर उसे क्या मिलेगा! . . . लेकिन नहीं, उसके हाथ कचड़े से भी कुछ निकालकर बोरे में रख रहे हैं!

——कचड़ा भी व्यर्थ नहीं है उसके लिए, इसी तरह रोज वह कुछ खोजता है और जीविका चलाता है!

●●

——वास्तव में पहचान की दृष्टि ही सार्थक है। जिसने व्यर्थ समझकर कूड़ेदान में कुछ फेका है और जिसने उसी कूड़ेदान से कुछ बटोरा है, यह दो दृष्टियों का ही तो फेर है!

——एक कछुआ है और एक झील है। कछुआ का चित्र झील में लगा हुआ है। वह झील सेवाल और पद्म-पत्रों से आच्छन्न है। कछुआ मुक्त आकाश को देखने के लिए विवर को प्राप्त नहीं हो रहा है!

——यह संघर्ष की स्थिति है: प्राप्त करने की आकांक्षा और उपलब्धि में व्यवधान!

——व्यवधान हमारे जीवन-संघर्ष को जीवंत कथाएं हैं। वे न आयें तो हमारे पैर आगे नहीं बढ़ेंगे। हम गतिहीनता की स्थिति तक भी पहुंच सकते हैं।

——गतिहीनता से निर्ममतापूर्वक संघर्ष करना चाहिए। गति को काल-चक्र की नियति मानकर उसका आह्वान करना एक अभ्यर्थना है!

——अभ्यर्थना प्रार्थना भी तो है!

--प्रार्थना कभी व्यर्थ नहीं जाती ।

--प्रार्थना में कई शक्तियों का केंद्रीकरण होता है : आत्म-शक्ति, पराशक्ति, दृढ़ता, चुनौती, परीक्षण और विवेक !

--विवेक इसकी शीर्ष प्रक्रिया है; इसलिए विवेक के बिना शांति नहीं मिल सकती !

--प्रार्थना के लिए शांति और संयम दो आवश्यक तत्व हैं ! इनका समन्वय सिद्धि के द्वार खोलता है !

* * *

--कुछ भी व्यर्थ नहीं है; सार्थक भी शायद सभी कुछ नहीं है !

--जिसे हम सार्थक समझते हैं, कई बार वह एक भ्रम सिद्ध होता है; उसी तरह व्यर्थ समझनेवाली वस्तु दृष्टि-पारखी के हाथों हीरा बनती है !

--यह स्वीकारते हुए कि व्यर्थ और अ-व्यर्थ समय-सापेक्ष हैं, हमें अपनी दृष्टि को तराशना होगा ।

--दृष्टि देखती है । मैं नहीं देखता ।

--मैं देखता हूं । दृष्टि नहीं देखती ।

--क्षितिज शून्य है । क्षितिज शून्य नहीं है ।

--पृथ्वी का अंत पानी है । पृथ्वी का अंत पानी नहीं है !

--मन अचेतन है । मैं अचेतन नहीं हूं ।

--भाषा अर्थ-निष्पत्ति है । मैं भाषा नहीं हूं ।

* * *

--तो मैं क्या हूं ?

--शांति की तलाश का पहरुआ ?

--सांसों को लहरों की तरह गिननेवाला गणितज्ञ !

--अंधेरे के पीछे भागता और अंधेरे में छिपा भूत !

--प्रकाश की जाज्वल्यमयी किरण अथवा उसमें समाविष्ट स्वयं उसका एक अंश !

--जो भी हो, मैं यह, वह और सब हो सकता हूं । शायद कुछ भी नहीं हो सकता । मेरे होने-न-होने की स्थिति समझ और परख पर निर्भर है !

--परख के बिना चेतना एक विभाजित व्यक्तित्व है ।

--विभाजित व्यक्तित्व में संकल्प-शक्ति का अभाव होता है ।

--शक्ति के बिना क्षमता नहीं आती और क्षमता के बिना विकास नहीं हो सकता ।

--यह सचमुच एक भीतरी लड़ाई है ।

--हम सब चेतन, अचेतन रूप से इस भीतरी लड़ाई में ग्रस्त हैं । बाह्य युद्ध लड़ना आसान

है, भीतरी लड़ाई बहुत कठिन है, क्योंकि ऐसी स्थिति में दीमक की तरह ढेर से कीटाणु समूचे शरीर में फैल जाते हैं और वे खून पीने लगते हैं। मनुष्यभक्षी चींटियां भी तो यही काम करती हैं। तब मस्तिष्क शून्य हो जाता है और विवेक के द्वार पर परदा उतर आता है।

—अविवेकी व्यक्ति सांसों के उपहार से अभिशिक्त भी हो तो उसकी उपस्थिति व्यर्थ है!

●●

—विवेकशीलता हम सबके भीतर है!

—वह एक नन्हा-सा अंकुर है, उसे पानी की आवश्यकता है। जो जितना पानी देगा अंकुर उतना ही पनपेगा।

—हमारे प्रयत्न और संकल्प उस अंकुर की रक्षा के सजग प्रहरी होने चाहिए।

—इसलिए भी कि हमारी यात्रा बहुत लंबी नहीं है। कब अचानक हमारा मार्ग अवरुद्ध हो जाए, नहीं मालूम। मैं ज्ञाता हो सकता हूं, द्रष्टा नहीं।

—अकेले ज्ञाता होने से काम नहीं चलेगा, दृष्टि उसका अटूट अंग है।

—यही दृष्टि हमारा विवेक है!

—कूड़े-कचड़े के ढेर का खोजी विवेकी भी है और दृष्टि-संपन्न भी। एक तो वह व्यर्थ में से सार्थकता की खोज कर रहा है, दूसरे कौन जानता है इस खोज में उसके हाथ हीरे का नग लग जाए, क्योंकि हमारे यहां दंभी, अविवेकी और ऐश्वर्य का खोखला प्रदर्शन करने वालों की कमी नहीं है। उनके हाथ कभी विवेकी नहीं होते।

राजेन्द्र अवस्थी

'तंत्र-विशेषांक' और 'विश्व-साहित्य में हास्य' विशेषांक की सभी प्रतियां हाथों-हाथ बिक गयी थीं। अब अगस्त में हम अपने पाठकों को एक और विशेषांक भेंट कर रहे हैं—

विश्व के दस महान उपन्यास

स्वतंत्रता की ३४वीं वर्षगांठ के अवसर पर हम पाठकों को विश्व के आधुनिक उपन्यास-साहित्य की दस महान एवं बहुचर्चित कृतियां भेंट करने जा रहे हैं। इनका सार हिंदी के जाने-माने लेखकों ने किया है। विस्तृत घोषणा अगले अंक में। लेकिन उसकी प्रतीक्षा न कीजिए। अपनी प्रति आज ही सुरक्षित करा लीजिए। कहीं ऐसा न हो, आपको निराश होना पड़े।

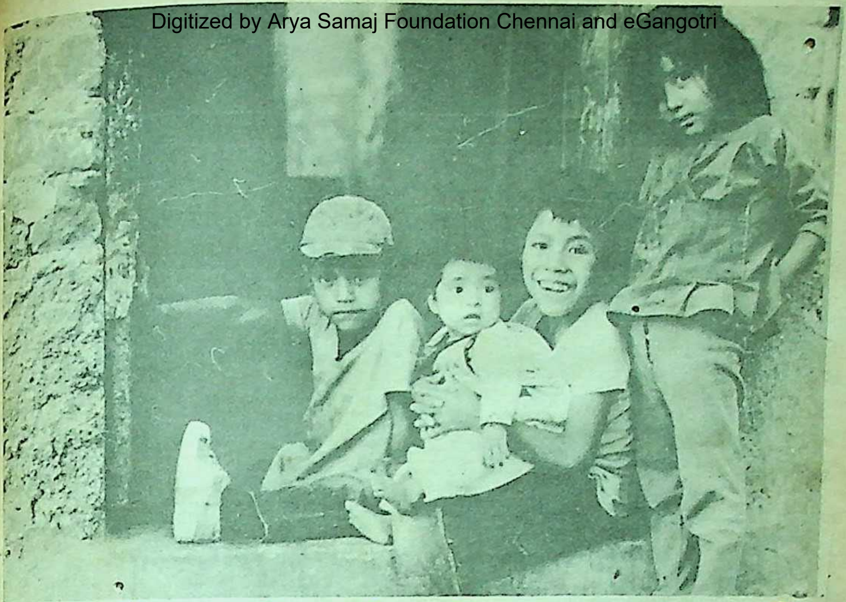

अमीर देशों के बच्चे भी अत्याचार के शिकार हैं

● डॉ. जगदीश चंद्रिकेश

उसकी उम्र ही क्या होगी ? यही मुश्किल से दस-बारह साल यानी खेलने-खाने की उम्र। मैं देख रहा था वह हाथ में रिंच लिये स्कूटर के नट-बोल्ट खोलते-खोलते पसीने से नहा उठा था, चेहरा तमतमा आया था। नाम था उसका पन्नू। वह अपना काम करता रहा और मैं उससे बात। जो कुछ उसने बताया, उसका सार यह था कि गरीब मजदूर बाप, बूढ़ा दादा, बीमार-अपाहिज मां और छह-सात बच्चे-बच्चियां यानी खानेवाले दो दर्जन हाथ और कमानेवाले सिर्फ दो। चौथाई पेट भी नहीं भरता। जहां पेट ही नहीं भरता, वहां पढ़ाई-लिखाई खेल-कूद और कपड़े-लत्ते का सवाल ही बेमानी है। मजबूर बाप ने अपने दो हाथों के साथ अपने इस नन्हें पन्नू के भी दो हाथ शामिल कर लिये हैं रोटी की जुगाड़ में। उसने उसे स्कूटरों की मरम्मत करनेवाली इस दुकाननुमा खोखे में काम पर लगा दिया है। सुबह आठ से रात के आठ बजे तक काम पर लगा रहता है

ऊपर : हर तरह के शोषण का शिकार : अमरीका के मासूम बच्चे-बच्चियां

चाहे कितनी भी सुख-सुविधाएं क्यों न हों, यदि बच्चे को मां-बाप का प्यार नहीं मिलता, तो वह उन रास्तों पर चल पड़ता है, जो उसे एक ऐसी दुनिया में पहुंचाते हैं, जिनका कहीं अंत नहीं होता।

वह, तब कहीं उसे मिल पाते हैं तीन रुपये रोज। जिससे, और कुछ नहीं, बस एक किलो आटा खरीदकर हर रोज रात को घर ले जाता है वह।

मेरा मन बहुत देर तक पन्नू के कल के बारे में सोचता, अटकलें लगाता रहा। जब नहीं रहा गया तो पूछ ही बैठा, "पन्नू तुम्हारा कल क्या होगा? कैसा होगा कल यानी तुम बड़े होकर क्या बनोगे, क्या बनना चाहोगे?"

ईंटों का भार ढोती एक बालिका

"कल, कल क्या होता है, बाबूजी वह तपाक से बोला, "हमारा तो सि आज है।" और फिर वह कुछ पल रुककर बोला, "और बाबूजी, हमारा आज, सि एक किलो आटा है, जिस दिन छुट्टी प जाए या मैं बीमार पड़ जाऊं और काम प न आ पाऊं तो उस दिन तो हमारा आ भी नहीं रहता. . .कल की बात छोड़िए।

सच्चाई, लेकिन कड़वी सच्चाई यह कि पन्नू के लिए एक किलो आ ही सब कुछ है, वही उसकी जिंदगी वही उसकी दुनिया; वही उसका आज और वही उसका कल भी। यह बात केव किसी एक पन्नू की नहीं, बल्कि मेरे देश असंख्य-असंख्य पन्नुओं की है, जो खेल खाने की उम्र में ही पेट भरने की खा हर तरह की जी-तोड़ मेहनत करने लिए मजबूर हैं और अत्याचार सहने अपने शोषण के लिए भी।

संपन्न देशों के शोषित ब

बेरोजगारी, गरीबी, अशिक्षा और अं विश्वास व अज्ञानता की वजह से बे हाशा बढ़ती जनसंख्या—ये कुछ का हैं, जिनकी वजह से अविकसित त विकासशील देशों में पन्नुओं को शोषण शिकार होना पड़ता है, लेकिन आश्चर्य बात तो यह है कि संपन्न और विकसि देशों में, जहां ये सब कारण नहीं हैं, व भी बच्चे शोषण का शिकार हो रहे हैं और ये शोषण उन पर अत्याचार सीमा तक पहुंच चुका है।

अमरीका विश्व का सबसे अधिक धनी और सुविधा-संपन्न देश है। यह देश जितना धनी है, उतने ही अधिक यहां के बच्चे शोषण और अत्याचार के शिकार हैं। एक आंकड़े के अनुसार छह से अठारह साल की उम्र के एक करोड़ से अधिक बच्चे स्कूल में भरती ही नहीं हो पाते। वे स्कूली शिक्षा तक से वंचित रह जाते हैं। जो भर्ती हो पाते हैं, उनमें से बहुत से बीच में ही पढ़ाई छोड़ भागते हैं। अनुमान है कि ऐसे भगोड़े स्कूली-बच्चों की संख्या एक करोड़ प्रति वर्ष है। दरअसल, ये बच्चे सामाजिक तनाव को झेल नहीं पाते, और जिंदगी से भाग खड़े होते हैं। उनके ये भागने के रास्ते होते हैं, पहला तो, पढ़ाई से भगाकर आवारागर्दी करना, दूसरा, आत्महत्या का रास्ता अपनाना, तीसरा, मादक द्रव्यों की शरण में जाना। ये भगोड़े बालक-बालिकाएं अपना खर्च चलाने के चक्कर में गलत लोगों के हाथों में पड़ जाते हैं, जो उन्हें वेश्यावृत्ति, योन-दुरुपयोग, व्यभिचार तथा अपराध-कर्मों में डालकर उनका शोषण ही नहीं करते बल्कि उन पर अत्याचार भी करते हैं।

बिकते हैं नवजात शिशु

शारीरिक श्रम, और असामाजिक कार्यों जैसे, चोरी, लूट-पाट, हत्याएं, अवैध सामान की बिक्री, तस्करी के लिए तो बच्चों का प्रयोग किया ही जाता है, बल्कि इससे भी अधिक भयंकर स्थिति यह है कि बच्चों को गुलामों की तरह खरीदा व बेचा जाता है। यह धंधा पूरे एक व्यवसाय की तरह पनप रहा है। बारह-तेरह साल की बालिकाओं द्वारा संतानें पैदा करना यहां कोई चौकानेवाली बात नहीं है, लेकिन चौंकानेवाली बात यह है कि ऐसी माताएं अपने नवजात शिशुओं को बेच देती हैं, जिससे उन्हें बच्चे की सार-संभाल और दायित्व से छुट्टी तो मिलती ही है, साथ ही पैसा भी मिलता है।

कम उम्र की एक गर्भवती बालिका

बालक-बालिकाओं का दुरुपयोग यौनाचार के लिए तो किया ही जाता है, इधर उनका इस्तेमाल अश्लील पत्रिकाओं, व टी. वी. फिल्मों में यौन-उत्तेजना पैदा करने के लिए भी किया जाने लगा है। अश्लील पत्रिकाओं, फिल्मों, वीडियो-फिल्मों व टी. वी. पर ऐसी फिल्में दिखायी जाती हैं, जिनमें आठ-दस वर्ष के बालक-बालिकाओं से प्राकृतिक और अप्राकृतिक यौन-

कार्य कराये जाते हैं। 'पैंटहाउस' व 'प्लेबॉय' जैसी सैक्स-पत्रिकाओं में अबोध बालक-बालिकाओं के संभोग-रत, नग्न व गुप्तांगों के चित्र प्रमुखता के साथ छापे जाने लगे हैं। इनके लिए मां-बाप कुछ पैसों के लालच में अपने बेटे-बेटियों को इन कुकृत्यों के लिए सहज सुलभ कराने लगे हैं। क्या यह अबोध बच्चों के साथ अत्याचार नहीं है कि जो यह नहीं जानते कि यौन-व्यापार क्या है, उनसे ही यौन-व्यापार कराया जाए।

न्यूयार्क में ऐसे बालक-बालिकाओं के कल्याणार्थ एक संस्था है 'कोवनेंट हाउस।' उसकी रिपोर्ट से पता चलता है कि अबोध बालक-बालिकाओं का जितना शोषण और अत्याचार यौन-संतुष्टि के लिए अमरीका विशेषकर न्यूयार्क में होता है, इतना दुनियाभर में और कहीं नहीं होता। यहां की 'मिनेसोटा स्ट्रिप' नामक जगह तो इसका खुलेआम अड्डा है, जहां हजारों लड़के-लड़कियां और उनके दलाल ग्राहकों को तलाशते सड़क पर मिल जाएंगे। रिपोर्ट का कहना है यहां पर किसी भी समय बीस हजार के लगभग लड़के-लड़कियां देखे जा सकते हैं। प्रायः बच्चे घर से भागे हुए और दस-बारह साल से लेकर अठारह उन्नीस वर्ष की उम्र के होते हैं। इस प्रकार के यौन-व्यापार की कमाई १-१ बिलियन अमरीकी डॉलर आंकी गयी है।

इन बालक-बालिकाओं की मानसिक-स्थिति का अनुमान लगाना भी कठिन है कि वे किन मानसिक-यंत्रणाओं और शारीरिक-यातनाओं के दौर से गुजरते हैं। इनका उपयोग करनेवाले लोगों में ऐसे 'सेडिस्टों' की भी कमी नहीं होती जो उन्हें यौन-व्यापार के दौरान तरह-तरह की क्रूर-यातनाएं देकर ही आनंद प्राप्त करते हैं। इन क्रूर-यातनाओं से बहुत से बच्चे अपनी जान भी गवां बैठते हैं।

मिनेसोटा स्ट्रिप—जैसी जगह यूरोप के कई देशों, अफ्रीका और मध्यपूर्व के कई देशों और केनेडा व दक्षिण-पूर्व एशिया के देशों में भी हैं। श्रीलंका की राजधानी कोलंबो भी इसका एक गढ़ है।

अत्याचार खुद करते हैं मां-बाप

बाल-वेश्यावृत्ति से भी एक और घोर शोषण का रूप यह भी है कि लोग गरीब-पिछड़े देशों से बच्चों को गोद ले लेते हैं, और उनसे घरेलू नौकर का काम लेते हैं। घर के हर तरह के काम लेने के साथ उनका उपयोग यौन-संतुष्टि के लिए भी करते हैं, और जब मन भर जाता है, तो उसे बेचकर पैसे खड़े कर लेते हैं। खरीदे गये या गोद लिये बच्चों का भविष्य क्या होगा, इसका अनुमान इस बात से लगाया जा सकता है कि जो मां-बाप अपने बच्चों का पालन नहीं कर सकते, वे गोद लिये बच्चों की क्या देख-रेख करेंगे?

संयुक्त राष्ट्रसंघ की बाल-कल्याण योजना की एक रिपोर्ट के अनुसार दक्षिण अमरीका व एशिया के दूरांत पहाड़ी इलाकों में मादक द्रवों के पौधों की फसल

बड़े पैमाने पर उगायी जाती है। यहां के गरीब मां-बाप सुबह से लेकर रात तक खेतों में जुते रहते हैं। काम करके की उम्र होते ही वह बच्चों को काम पर लगा लेते हैं। मांओं के पास बच्चों को पालने के लिए इतना भी समय नहीं है कि वे उन्हें खिला सकें, रोते बच्चे को चुप करा सकें, लिहाजा बच्चा जब रोता है, तो वे उसकी दाढ़ों के नीचे अफीम की गोली दबा देती हैं, जिससे बच्चा बेहोशी में सोता रहता है। ऐसे बच्चे जिदगीभर नशे के आदी, मंदबुद्धि, संवेदनाओं से रहित ऐसे यंत्र-मानव बन जाते हैं, जो केवल मशीन की तरह खेतों में काम कर सकें। क्या बच्चों के प्रति यह क्रूरतापूर्ण अत्याचार नहीं है, और वह भी उनके मां-बापों द्वारा किया हुआ अत्याचार।

बालकों के साथ दुनियाभर में किये जा रहे तरह-तरह के अत्याचार और शोषण के प्रति समाज-विज्ञानी जागरूक हैं। संयुक्त राष्ट्रसंघ ने मानव-अधिकार की भांति 'बच्चों के अधिकार का घोषणा-पत्र' भी तैयार किया है और बाल-वर्ष में इस दिशा में काम भी, लेकिन अफसोस यह है कि जितना कुछ होना चाहिए, उसका शतांश भी हो नहीं पा रहा और एक पूरा दौर अंधकार के बीच से गुजरा रहा है, जो आनेवाली न जाने कितनी पीढ़ियों के लिए अंधकार की विरासत ले कर आएगा।

—ए-१/२४२ ए, लारेंस रोड,
नयी दिल्ली-३५

नवजात शिशुओं की तस्करी का धंधा

श्रीलंका में अबोध शिशुओं की तस्करी का धंधा खतरे की सीमा तक पहुंच चुका है। हाल ही में समाज-कल्याण विभाग के एक प्रवक्ता ने रहस्योद्घाटन किया है कि श्रीलंका में कुछ गिरोह खुले आम, बच्चों की तस्करी में लगे हुए हैं। वे गरीब और असहाय मांओं से उनके नवजात और अबोध शिशुओं को कम से कम रकम दस डालर में खरीद कर लेते हैं और उसे योरोप के लोगों द्वारा गोद लिये जाने की आड़ में, उनसे पांच हजार डालर तक वसूल कर, बेच देते हैं। बच्चों के गोद लिये जाने को, जो कानूनी रूप से वैध है, इन लोगों ने धंधा बना लिया है। यह धंधा खूब फल फूल रहा है, इसलिए ये लोग इस तरह की मांओं को इस बात के लिए बढ़ावा देते हैं कि वे अधिक से अधिक बच्चे पैदा करें और उन्हें बेच जाएं। बच्चों की इतनी मांग है कि कभी-कभी तो बच्चे पैदा होने से पहले ही बिक जाते हैं।

सरकार इससे इतनी चिंतित है कि वह गोद लेने के मौजूदा कानून को कड़ा करने की बात सोच रही है।

इन 'गोद लिये बच्चों' का क्या किया जाता है और उनका भविष्य क्या होता है, यह कहने की आवश्यकता नहीं।

आवरण-कथा

शहरी आंखें जंगलों में

● डॉ. ऋतुराज शर्मा

खुले मैदान में जंगलों के बीच लोगों को नाचते हुए देखने का अपना आनंद है। आदिवासी तो अपनी सभी शामें मस्ती और रंगरेलियों में बिताते हैं। किसी को जीना सीखना हो, तो इनसे सीखे।

गोंडों के अपने मनोरंजन हैं। बांस की गैंडी पर नृत्य करना उनके लिए बहुत आसान काम है। मुख-पृष्ठ पर छपे चित्र को देखकर सिर्फ कल्पना ही की जा सकती है कि कैसे ये नर्तक बांस की गैंडी पर अपना भार संभालते हैं। भार ही नहीं संभालते, उसी गैंडी पर बहुत आसानी से, न जाने कितने तरह के नृत्य भी करते हैं। पोलो के खेल की तरह ये गैंडियों पर चढ़े हुए मस्ती में झूमते हैं, आपस में टकराने का खेल भी खेलते हैं, और लड़ाई भी लड़ते हैं। गजब का अंदाज है इनका, और अपने को संभाले रखने की अजीब ताकत बांस, गैडी के रूप में उनका सहारा भी है और बांसुरी भी। मध्यप्रदेश में एक जिला है मंडला। उसके पास एक छोटा-सा गां है बरेली। वहां के स्कूल के एक अध्याप ने तो विशेष रूप से गोंड आदिवासियों लड़कों को गैंडी के खेल की 'ट्रेनिंग' दी है गुलाम रसूल नाम के इस व्यक्ति को रा धानी में गणतंत्र दिवस की परेड में दे गया।

'शहर से दूर' में श्री राजेन्द्र अवस्थ के अनुसार, भारत के सघन वनों औ उपत्यकाओं में रहनेवाली जितनी भी वन्य जातियां है, उनमें एक तिहाई लगभ गौंड हैं। इनका निवास-केंद्र नर्मदा की घाटी है, परंतु उनकी अनेक उपजाति दूर-दूर तक फैली हुई हैं। नागरी-जीव इनसे बहुत दूर है। जंगल के झाड़-पे उनके रक्षक हैं और जंगली जानवर उन

साथी। उनकी दैनिक जिंदगी भी पहाड़ों की ऊबड़-खाबड़ घाटियों की तरह ही बेढंगी और अनियमित है। कभी घी-चना, कभी मुट्ठीभर चना और कभी वह भी नहीं, उनकी जिंदगी में सदा लागू रहा है, परंतु इसके बावजूद उन्होंने कभी अभाव का अनुभव नहीं किया, कभी भूख को नहीं पहचाना। इसका कारण कदाचित उनके वे मनोरंजन हैं, जो उनकी जिंदगी की हर सांस के साथ बंधे हुए हैं। वास्तव में, चाहे खेतों में काम करते समय अथवा घर में रात्रि को सोते समय, उनकी आपस की बातें ही मनोरंजन से सराबोर होती हैं।

दिनभर खेतों और जंगलों में काम करने के बाद रात को गीत और नृत्य गोंडों के सबसे बड़े मनोरंजन हैं। अंगीठी के चारों ओर आबाल, वृद्ध-युवा सब बैठ जाते हैं। उनमें से कोई पहल लेता है। ददरिया, सजनी झरपट, झूमर या करमा गीत की धुन छेड़ देता है। सारे साथी उसकी तान मिला देते हैं। रात्रि का एकांत गीतों की गूंज से भर उठता है और उसका संगीत सारे गांव की आत्मा के तार हिलाने लगता है। तब न केवल गायक बल्कि, श्रोता भी उसमें डूब जाते हैं, खो जाते हैं और अपना दुख-दर्द भूलकर उमंग की तरंग में हिलोरे लेने लगते हैं। कभी-कभी गाते-गाते वहीं नाच का मजमा जम जाता है और धीरे-धीरे सारा गांव उस नृत्य में सम्मिलित हो जाता है। नृत्य उनका जीवन है, मनो-

आदिवासी गोंडों को बांस को गंडी पर चढ़े मस्ती में झूमकर नृत्य करते, आपस में टकराते हुए, खेल खेलते और गंडी पर ही लड़ाई लड़ते भी देखना अपने-आप में एक अजीब अनुभव होता है

रंजन का उनका सबसे बड़ा साधन है।

और उनके त्यौहार, उनके पीछे चाहे कितनी भी धार्मिकता क्यों न छिपी हों, वे सब मनोरंजन के माध्यम पहले हैं। वर्ष के प्रारंभ का भीमुल पांडुम, वसंत का हरपू पांडुम और विज्जा पांडुम, वर्षा का कोरता पांडुम, दीवाली का नुकानोरदाना पांडुम तथा शीत का जाता पांडुम और कारा पांडुम--चाहे जो भी पर्व क्यों न हो, उसकी तह में देवाराधना से भी ज्यादा मनोरंजन की भावना छिपी रहती है। प्रायः प्रत्येक ऋतु के प्रारंभ में दो-तीन विशेष पर्व गोंड जाति के लोग मनाया करते हैं। इन सभी पर्वों में नाच-गाने मुख्य होते हैं।

इसी तरह मेले, जत्रा दिवाली और दशहरा के समारोह हैं, जिनमें सब कुछ भूलकर प्रत्येक आदिवासी भाग लेता है। झुंड के झुंड ढोल पीटते मीलों पैदल जाते हैं और मेले में पहुंचकर खुद 'करतब' दिखाते हैं या दूसरों के करतब देखते है। बांस का ऊंचा मंडप बनाकर उस पर सरकस की भांति गोंडों के अनोखे करतब जाटों द्वारा नंगे पैर आग में चलने की याद दिलाते हैं। दीवाली में गोंड घर-घर जाकर नाचते हैं और अहीरों की तरह मड़ई की स्थापना करते हैं। दंतेश्वरी के नाम पर जगदलपुर का दशहरा देश के कोने-कोने में लोगों को आकर्षित करता है। इन समारोहों के समय कई जगह भजन, गीत और छोटे-छोटे नाटक तथा प्रहसनों का भी आयोजन सोत्साह किया जाता है।

मनोरंजन के केंद्र: घोटु

बस्तर के माड़िया गोंडों में घोटुल अथवा कुमार-गृह की प्रथा है। प्रत्येक गांव में एक घोटुल होता है, जो उस गांव की सामूहिक संपत्ति समझी जाती है। घोटु अथवा कुमार-गृह इनके सामाजिक कें हैं, और रात्रि के मनोरंजन के वे एक-मात्र स्थान होते हैं। इसकी सदस्य केवल कुमार और कुमारियों तक ही सीमि है। रात्रि का खाना खाने के बाद छ सात वर्ष से लेकर किशोर और यु लड़के-लड़कियां अपने साथ एक चटा लेकर घोटुल की ओर चल पड़ते हैं वहां किस्सा-कहानी, नाच-गाना आ मन-बहलाव के सारे साधन मौजूद हैं काफी रात गये एक-एक लड़का, एक-ए लड़की को साथ लेकर सो जाता है औ मुर्गे की बांग होने के पूर्व सब अपने-अ घर चले जाते हैं। घोटुल के ये प्रेमी जो दिनभर के सुख-दुखों का यहां आदान प्रदान कर अपना मन बहलाते हैं।

थाइलैंड में लड़कियों को बेचने लिए दुकानें भी होती हैं जहां बारह सा जैसी—कम उम्र की लड़कियां वेश्यालयों को बेची जाती हैं। प्रायः मां-बाप सी ही वेश्यालयों को अपनी लड़कियां बे देते हैं। इन वेश्यालयों में लड़कियों कैदियों की तरह रखा जाता है।

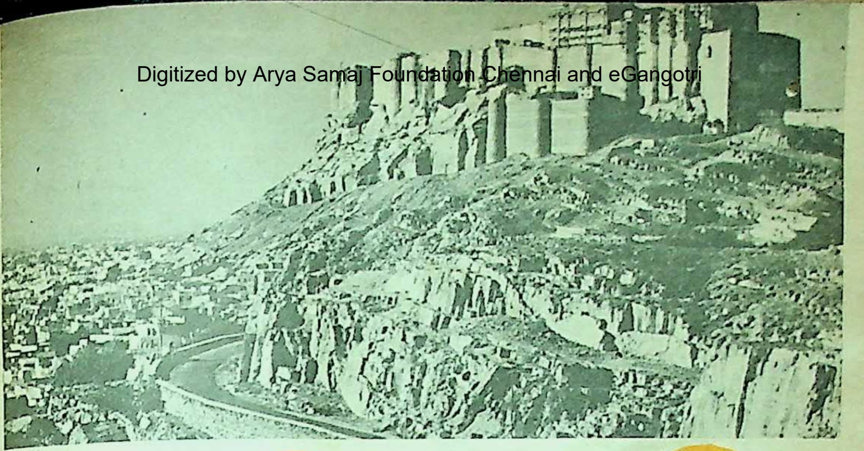

जहां जिंदा व्यक्ति दफन है नींव में

● डॉ. प्रभात त्यागी

जिसने भी वह घोषणा सुनी, ठगा-सा खड़ा रह गया। घोषणा थी ही बड़ी अनोखी। डुगडुगी बजाकर उद्घोषक नागाद्री नदी पर स्थित मांडव्यपुर (मंडोर) मारवाड़ की राजधानी के नागरिकों को चिल्ला-चिल्लाकर बता रहा था—'आवश्यकता है एक ऐसे जांबाज व्यक्ति की, जो नयी राजधानी में बननेवाले विशाल दुर्ग की नींव में अपने आपको जीवित गाड़े जाने के लिए तैयार हो। ऐसे व्यक्ति को नकद पुरस्कार देने के अतिरिक्त उसके रिश्तेदारों व वंशजों को स्थायी रूप से निवासस्थान बनाने के लिए नयी राजधानी में भूमि भी दी जाएगी। इच्छुक व्यक्ति यहां से पांच मील दूर स्थित चिड़िया टूंक पहाड़ी की ऊंची चोटी पर पहुंच जाए। १२ मई, १४५९ को प्रातः ९ बजे से ११ बजे तक ऐसे आत्म-बलिदानी नरपुंगव की प्रतीक्षा की जाएगी।' लोग मुंह बना-बना कर आगे बढ़ गये। कौन होगा ऐसा मूर्ख, जो जानबूझकर ऐसी कष्टदायक मौत का वरण करे?

निश्चित तिथि पर उत्तर में बीकानेर, उत्तर-पश्चिम में जैसलमेर, पश्चिम में थर व पारकर जिले, दक्षिण-पश्चिम में कच्छ के रण, दक्षिण में पालनपुर व

ऊपर : जोधपुर का दुर्ग, जिसकी नींव में एक व्यक्ति जिंदा दफन हुआ था

सिरोही, दक्षिण-पश्चिम में उदयपुर, पूर्व में अजमेर-मेरवाड़ा व उत्तर-पूर्व में जयपुर राज्य से घिरे मारवाड़ की नयी राजधानी के दुर्ग का निर्माण करने की पूरी तैयारी हो चुकी थी। कुदालियां, फावड़े और चिनाई का समान लिये हजारों व्यक्ति खड़े हुए थे, जिन्हें बेगार में पकड़कर यहां लाया गया था। पहले से अनोखी घोषणा हो जाने के कारण लोग झुंड के झुंड बनाकर चट्टान को चारों ओर से घेरे खड़े थे। राव जोधा—राजा रिड़मल का पुत्र व चूड़ा का पौत्र भी चट्टान पर बैठा था।

जयचंद के वंशज

जोधा, कन्नौज के राजा जयचंद का वंशज था। शहाबुद्दीन गोरी से हारकर जब जयचंद ने गंगा में डूबकर अपने प्राण दे दिये, तब गोरी से बचने के लिए जयचंद का पुत्र सियाजी अपने दो सौ साथियों सहित मारवाड़ में आकर बस गया। जोधपुर के राठौड़ों की उत्पत्ति सियाजी से ही हुई थी। राणा रणमल अपने पिता के मेवाड़ में मारे जाने पर, जोधा एक बार फिर अपने पूर्वजों की भूमि मारवाड़ में आ गया। मंडोर को जीत कर उसने राठौड़ों का शासन फिर एक बार मारवाड़ पर प्रारंभ किया। मंडोर को अपनी राजधानी के लिए अनुपयुक्त मानकर जोधा चिड़िया टूंक या विहंगकूट की इस चट्टान पर नया किला और पहाड़ी की तलहटी में नयी राजधानी बनाने का निश्चय किया। अपने नाम पर उसने इसका नाम जोधपुर रखा।

राज्य के पंडितों से यह सुनकर कि जीवित इंसान को नींव में चिने जाने पर दुर्ग कभी भी राठौड़ों के हाथ से नहीं निकलेगा, जोधा ने पूरे राज्य में वह विचित्र मुनादी करायी थी। इस समय पल-पल किसी ऐसे व्यक्ति की ही प्रतीक्षा की जा रही थी। किसी को भी आगे बढ़ता न देख जोधा ने किले की नींव भरे जाने का इशारा किया।

"ठहरिये", अचानक एक व्यक्ति की आवाज सुनकर सबकी दृष्टि उधर उठ गयी। वह व्यक्ति भीड़ को चीरकर आगे आ गया।

"मैं जीवित इस नींव में खड़े होने को तैयार हूं।"

"क्या नाम है तुम्हारा?" अधिकारियों ने पूछा।

"राजिया भांबी, बलाई जाति का हूं मैं। पर घोषणा की सब शर्तें पहले लागू होनी चाहिए!"

"लो, ये रहा जमीन का पट्टा, जिसमें तुम जिसका चाहो, नाम लिखा दो! उन्हें जमीन मिल जाएगी। और यह रहा नकद दस हजार रुपया।"

"आप इन दोनों को इस पते पर भेज दीजिए।" राजिया ने अपनी पत्नी व बच्चे का नाम, गांव सहित लिखा दिया।

ब्राह्मणों ने उसका तिलक करना चाहा, पर सबको अलग रहने का इशारा कर वह चुपचाप नींव में जाकर खड़ा हो गया। कारीगरों ने उसके चारों ओर

तांत्रिकों का विश्वास रहा है कि नर-बलि सबसे बड़ी बलि है, और वह किसी बड़े काम की सफलता की गारंटी मानी जाती रही है। ऐसे ही नर-बलि का एक अविस्मरणीय उदाहरण है जोधपुर का दुर्ग, जो इतिहास की कई लोमहर्षक घटनाओं का मूक साक्षी है।

पत्थर चिनने प्रारंभ कर दिये। उसके पैरों से उठकर किले की दीवार छाती, मुंह और होंठों तक पहुंच गयी। अब सिर्फ उसकी आंखें टुकुर-टुकुर सबको ताक रही थीं। सहसा ऐसा लगा मानो उसके शरीर में तेज हलचल हुई। वह कुछ बोलना चाहकर भी इस समय असमर्थ था। केवल उसके नेत्रों से आंसू ढुलके। लोग इन आंसुओं को देखें, इससे पहले ही उसके मुंह व सिर पर पत्थर रखकर, उसका अस्तित्व ही कारीगर ने समाप्त कर दिया। दर्शकों में से कई बेहोश होकर गिर पड़े।

राजिया के ठीक ऊपर, पंडितों के कहने से, दुर्ग का खजाना व नक्कारखाना बनाया गया! दुर्ग की दीवारें बीस से एक सौ बीस फुट ऊंची हैं। कहीं-कहीं इनकी चौड़ाई बारह से सत्तर फुट तक है। पांच सौ गज लंबे व दो सौ गज चौड़े जोधपुर के इस दुर्ग को देखने पर वास्तव में दर्शकों की टोपियां व पगड़ियां पीछे गिर कर धरती को चूम जाती हैं।

राजिया भांबी के तन पर खड़ा यह दुर्ग इतिहास की कई लोमहर्षक घटनाओं, प्रेम-कहानियों व क्रूर यातनाओं को अपने सीने में छिपाये हुये है। राठौड़ शासकों की कई हत्याएं इसी दुर्ग में हुईं।

जरा धीरे चलिए

आज इस दुर्ग को स्थापत्य-कला का एक सुंदर उदाहरण मात्र समझकर दूर-दूर से पर्यटक इसे देखने आते हैं। पर दुर्ग के भीतर पैर रखते ही एक मूक स्वर पुकार-पुकार कर कहता है—'जरा धीरे चलिए, मेरे सिर पर आप पैर रखकर चल रहे हैं। क्या मुझे भी आपकी तरह जीने का अधिकार नहीं था? क्या मैं जीवन से कम प्यार करता था? पर गरीबी क्या नहीं करा देती . . . ? खैर, छोड़िए, मेरे वंशज आज जोधपुर के 'राज बाग' में रह रहे हैं। न जाने गरीबी व शोषण के बल पर राज करनेवाले राठौड़ों का शासन आज कहां लुप्त हो गया? कभी अपने शासन को समाप्त न होने देने का स्वप्न देखनेवाले, आज स्वयं ही इतिहास की कहानियां बनकर रह गये हैं।' कभी-कभी राजिया का ठहाका भी दुर्ग में सुनायी पड़ जाता है—'राजतंत्र तो आज नष्ट हो ही गया है, एक दिन यह दुर्ग भी समय की चपेट में धूल-धूसरित हो जाएगा तब? तब मैं शायद मुक्ति की सांस ले सकूंगा।'

—बालाजी सेठ की हवेली
आजाद चौक, कोटपूतली (राज.)

बोलता है कौआ विभिन्न बोलियां

• नवीन खन्ना

काग अर्थात कौआ ! एक ऐसा पक्षी, जिसके हिस्से आम तौर पर उपेक्षा ही आयी है। लेकिन उपेक्षा का पात्र होने, पक्षियों में चांडाल समझा जाने और धूर्तता का पर्याय माने जाने के बावजूद काग ने लोक-साहित्य में भी स्थान पाया है और भक्ति-साहित्य में भी ! 'काग के भाग बड़े सजनी' से लेकर 'काग सब तन खाइओ' तक में उपेक्षा के पात्र इस कृष्ण-वर्णी पक्षी का एक नया रूप देखने को मिलता है।

काग अर्थात कौए से हम सब अच्छी तरह परिचित हैं। उसकी एक नस्ल 'डोडर' होती है, जो अकसर पहाड़ों और वनों में पायी जाती है। इसका आकार सामान्य कौए से बड़ा होता है और शरीर गहरे काले रंग का। इसे देख एक विचित्रता का आभास होता है, कदाचित इसीलिए इसने जन-लोकोक्तियों में अपना विशिष्ट स्थान बना लिया है—जैसे, **'कोठे उत्ते डोडर कां / पें दी खट्टी, पिओ दा नां'** अर्थात 'कोटे ऊपर डोडर काग—पति ने खटा, पिता का नाम''

यह उक्ति अथवा ताना सास तब देती है, जब बहू पति द्वारा खरीदी गयी प्रत्येक वस्तु का श्रेय पिता को देती है।

किसी नंदोई और सलहज के अंतरंग संबंध देखकर कोई ताना कस देता है—**'हिल दा निणानवैया डोडर कांय !'** यानी 'चील का नंदोई डोडर काग !'

ऋषि का शाप ढोता कौआ

सामान्य कौआ डोडर की तरह काला

कौआ कहत मराल सों कौन जाति को गोत
तोसों बदरूपी महा, कोउ न जग में होत
कोउ न जग में होत, कुटिल मैल-मल खाने
ऊपर बैठि अचार सबै मरजाद नसाने
कह गिरधर कविराय कहां ते आयो हौआ
धन्य हमारो देश, जहां सज्जन जन कौआ

●

कौए पर और भी कई कवियों ने लिखा है, पढ़िए कौओं की कुछ और खूबियां।

नहीं होता। सामान्य कौए की गरदन पर कुछ सफेदी होती है। एक लोककथा है कि प्राचीनकाल में कौए का रंग सफेद होता था। एक ऋषि ने कौए को अमृत का स्रोत पता लगाने की आज्ञा दी। अमृत के स्रोत का पता लगाने पर कौआ स्वयं पर काबू न रख सका और उसने ऋषि के निर्देश का उल्लंघन करके अमृत का पान कर लिया। ऋषि ने क्रोधित होकर उसे श्राप दिया कि तू सर्वत्र घृणित अविश्वसनीय व निंदनीय प्राणी माना जाएगा। इसके साथ ही ऋषि ने कौए को गरदन से पकड़कर काले रंग से भरे हुए एक पात्र में डुबो दिया। गरदन को, क्योंकि ऋषि ने अपने हाथ में पकड़ा हुआ था, इस कारण कौए की गरदन पर गहरा काला रंग नहीं चढ़ पाया। ऐसा विश्वास किया जाता है कि कौआ अमृतपायी होने के कारण कभी भी स्वाभाविक मृत्यु से नहीं मरता। इसे भविष्यदृष्टा भी माना जाता है।

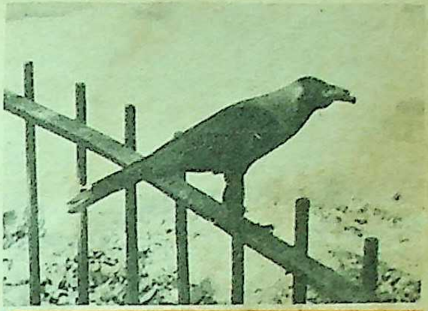

मेरा मित्र कौआ

विभिन्न बोलियां कौए की

कौआ 'कांय-कांय' के अतिरिक्त कई अन्य प्रकार की ध्वनियां भी उच्चारित कर सकता है। ये ध्वनियां निम्नलिखित हैं—

१. मधुर स्वर में : कु-कु-कु अथवा कीं-कीं-कीं।
२. मधुर स्वर में : कउ-कउ—कउ।
३. शांत स्वर में : क-क-क। (इस 'क' का उच्चारण पंजाबी 'घ' की तरह होता है।
४. चेतावनी के स्वर में : श—श—श (इसके उच्चारण को वह सांस भीतर खींचते हुए करता है।)

काग-तंत्र में कौए की विभिन्न प्रकार की बोलियों पर व्यापक चर्चा की गयी है, और उन बोलियों के अलग-अलग अर्थ बताये गये हैं। जैसे—कौवा यदि 'क्वां-क्वां' बोले तो कल्याण होता है। 'कूं-कूं' बोले तो प्रियजन से भेंट होती है। 'कु-कु' शब्द करे तो पुत्र लाभ होता है। 'कें-कें' बोले तो स्त्री-लाभ होता है। 'कों-कों' बोले तो

भोगों की प्राप्ति होती है। 'कीं-कीं' बोले तो इच्छित भोजन मिलता है।

ऐसा प्रतीत नहीं होता कि सभी कौए विभिन्न प्रकार की बोलियां बोल सकते हों। काग-तंत्र में कौओं का ब्राह्मण, क्षत्रिय, शूद्र और अंत्यज इत्यादि जातियों के आधार पर वर्गीकरण किया हुआ है। इनमें से शकुन विचार के लिए ब्राह्मण कौए को सर्वोत्तम माना गया है। प्रत्येक जाति के कौए की विशेष पहचान भी बतायी जाती है, परंतु ये बातें वैज्ञानिक आधार पर परखी नहीं जा सकीं। लेकिन कौआ विभिन्न प्रकार की बोलियां निकाल सकता है, इसकी पुष्टि वैज्ञानिक आधार पर परखी जा चुकी है।

मेरा मित्र कौआ

इस विषय में मेरे निजी अनुभव का विवरण अप्रसांगिक नहीं होगा। एक कौआ मेरे पास पिछले लगभग पंद्रह वर्ष से आ रहा है। वह कई प्रकार की बोलियां बोलता है। इतने वर्ष की मित्रता के कारण उसने अपनी कई विशेषताओं को भी तिलांजलि दे दी है। जैसे, कौआ मनुष्य पर विश्वास नहीं करता; लेकिन इस कौए को हमारे परिवार के सभी सदस्यों पर विश्वास है। वह नित्य मेरे हाथ से आहार ग्रहण करता है। कई बार मेरी अंगुली अपनी चोंच में डालकर एक प्रकार से हाथ भी मिलता है। कई बार वह मेरे बच्चे के साथ जोखिम के खेल भी खेलता है। उड़द की दाल की पकौड़ी, दही, आमलेट और पनीर उसके प्रिय आहार हैं। पनीर को हवा में पकड़ने की उसकी 'कैच' क्रिकेट खिलाड़ी को भी मात दे देती है।

मानव के इतना अधिक निकट होने के कारण उसकी आदतों में भी बदलाव आ गया है। वह साधारण कौए की तरह वस्तु को गटककर नहीं निगलता, बल्कि कौर काट-काटकर खाता है। उसे यह भी पता है कि हम उसे 'कौआ' कहकर बुलाते हैं। पुकारने पर तो कई बार वह तेजी से आ जाता है।

पिछले दस-पंद्रह वर्ष में उसके कई बच्चे भी हुए। इनमें से केवल एक ही बच्चा केवल दो-तीन दिन के लिए मानव के प्रति अपनी शंका मिटा पाया था। कौए की मादा भी अधिकांशता उसके साथ आती है, लेकिन मानव के प्रति अपना विश्वास वह नहीं मिटा पायी है।

कौओं की एक और विशेषता भी है। कौए एक-दूसरे से छीना-झपटी करते अवश्य हैं, लेकिन एक-दूसरे को चोट नहीं पहुंचाते। यदि हम इतनी-सी शिक्षा भी कौए से ले पाते, तो आधे झगड़े तो स्वयमेव समाप्त हो जाते।

—ई-१२८, कालकाजी, नयी दिल्ली-१९

ब्राजील के शहर विक्टोरिया में दो महीने के दौरान पुलिस ने छापे मार कर १२०० लड़कियां पकड़ी हैं, जिनकी उम्र ११ से १७ साल की है। इनसे वेश्यावृत्ति करायी जाती है।

कहानी

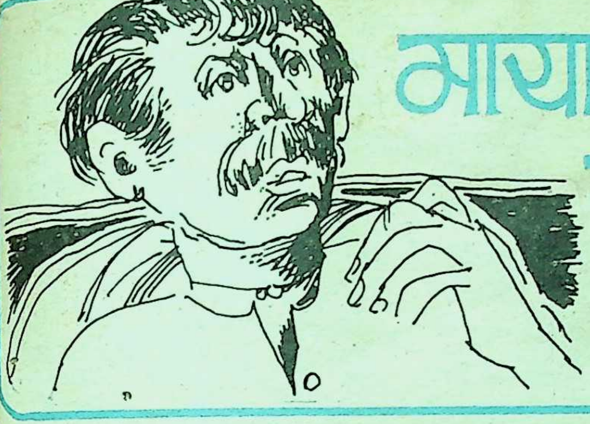

माया तेरे तीन नाम

● स्व. माखनलाल चतुर्वेदी

पांच अगस्त, सन १८९६

हम लोग रामकरण के पिता गोविंद बढ़ई की गोसार के आधे हिस्से का मकान बनाकर रहते थे। किराया कुछ न था। मैं एक दीवार पर चढ़ा था और मेरी छोटी बहन को भी ऊपर चढ़ा रहा था। मैं आठ वर्ष का था, वह तीन वर्ष की थी। बहन को बुखार चढ़ा हुआ था, किंतु मां कुएं पर पानी लेने गयी थी। मुझे हुक्म था कि मैं बहन के पास बैठूं, परंतु रामकरण आ गया। सिर पर फूलदार काली टोपी, कान में सोने की मुरकियां, बदन पर पैबंद लगी हुई बाराबंदी, पांव में चमरौधा जूते, मगर धोती गायब।

मां कहती, "मैं रामकरण के साथ खेलने नहीं दूंगी।" रामकरण प्याज के पत्ते मुंह से तोड़कर खाता, तो उसके लटकते हुए दूसरे सिरे को मुंह से तोड़कर मैं खाता। मैं पानी पीता, तो वह मेरे हाथ से छीनकर उस गिलास से पानी पी लेता।

हां, तो पांच अगस्त, सन १८९६ की बात है। पिताजी जाति की पंचायत में गये थे। इस बात का जवाब देने कि उनका लड़का यानी मैं, बढ़ई के लड़के रामकरण का जूठा क्यों खाता हूं?

मां कुएं पर पानी भरने गयी ही थी और मैं रामकरण के साथ दीवार पर चढ़ा-चढ़ा अपनी बहन को दीवार पर चढ़ा रहा था, चूंकि मां कह गयी थी कि बीमार बिटिया को अकेली मत छोड़ना। आखिर, दीवार पर चढ़ाते हुए राधा मेरे हाथ से छूट गयी और बिना रोये ही सो गयी। रामकरण बोला, "अरे यह तो मर गयी! अब तेरी दूसरी पंचायत होगी।"

स्वर्गीय माखनलाल चतुर्वेदी राष्ट्रवादी कवि, कुशल संपाद और स्वातंत्र्य सेनानी ही नहीं, उच्च कोटि के गद्यक भी थे। उन्होंने कई रेखा-चित्र एवं मर्मस्पर्शी कहानियां लिखीं। यहां हम उनकी एक सर्वथा अप्रकाशित कह प्रस्तुत कर रहे हैं। यह कहानी हमें स्व. चतुर्वेदीजी भाई श्री ब्रजभूषण चतुर्वेदी से प्राप्त हुई है।

पांच अगस्त, सन १९०३

मैं अंगरेजी स्कूल से लौट रहा था। रेलवे स्टेशन पर मुझे हरिया शिकारी मिल गया। मालूम हुआ कि गांव में प्लेग पड़ा हुआ है। मेरे माता-पिता गोमुखवाले झरने पर मालगुजार के पास ही झोपड़ा डाले हुए थे और रामकरण के बाप की कुटिया कोई एक मील दूर अपने खेत के एक आम के झाड़ के नीचे थी। मैंने गांव के पास की बड़ी नदी का रेलवे पुल पार किया और पटरी से उतरकर पक्की सड़क से चलने लगा। मार्ग ही में रामकरण मिल गया। उसकी टोपी की जगह अब बदरंगी लाल पगिया ने ले ली थी और मेरी बचपन की मंकी कैप की जगह फेल्ट टोपी विराजमान थी। उसके सिर पर जंगल से काटी हुई जलाऊ लकड़ियों का बोझा था और मेरे गले में अंगरेजी-हिंदी किताबों का बस्ता। मेरे पैर में स्लीपर था, उसके पैर उबाहने।

गोरा रामकरण सांवला हो गया था, मेरे सांवले चेहरे को देखकर वह बोला, "धरमपुर स्कूल में जाकर तुम बड़े अच्छे दीखने लगे बनवारी।' 'मेरी नजर रा करण के बोझे पर थी। उसकी नजर में छोटी-सी रूमाल की पुटलिया की थी, जिसमें मिठाई भी थी।

नाला आ गया। 'पुटलिया खु ब्रह्म-भोज होने लगा—एक सा पिताजी की सख्त हिदायत के बाद मैं धरमपुर में लड़कों के साथ बीड़ी पी सीख आया था। नाले का वह स्थ खूब परिचित था, क्योंकि पिताजी भी के उसी भटकुंडी स्थान पर नित्य स करने आया करते थे। हम एक ही बी से तानकर धुआं खींच रहे और होड़ा-हों से उसे छोड़ रहे थे। इतने ही में गी धोती ओढ़े, हाथ में माला लिये पीछे पिताजी आ गये। वे चुपचाप खड़े हमा तमाशा देखते रहे। फिर उन्होंने धीरे कहा, "अगर काम निपट गया हो, तो च चलो, सपूत ! यह साला गोविंद बढ़ई क लड़का पीछा न छोड़ेगा।"

रामकरण लकड़ी का बोझा उठा लगा। भारी था, उठता न था। पति हाजिरी में अपने प्रियजन की ओर दे

में कोई नववधू उतनी न डरती होगी, जितना मैं पिताजी से डर रहा था। रामकरण मेरी और मेरे पिताजी की ओर सहायता की आशा से देखता रहा और जंगल में बोझे के पास रोने लगा। मेरे पिताजी ब्राह्मण थे, उनमें दया क्यों चाहिए ! मैं अंगरेजी पढ़ने लगा था, मुझमें साहस क्यों होता !

पांच अगस्त, सन १९१०

कानपुर से हम आ रहे थे। अपने गांव चित्रपुर को जा रहे थे। मैं अपनी धर्मपत्नी के साथ था। पिताजी आजकल चित्रपुर गांव के कारिंदे थे। मेरी चिट्ठी पिताजी को मिल चुकी थी। गांव की एक बड़ी पल्टन लेकर वे अपने नायब तहसीलदार बेटे का स्वागत करने के लिए उसी छोटे गांव के रेलवे स्टेशन पर हाजिर थे। मेरे पास सामान थोड़ा न था, लोहे के बड़े बक्से थे, टिफिन कैरियर था, कुकर था, बड़े-बड़े बिस्तर थे, फलों का बास्केट था, व्हिस्की की दो बोतलें भी थीं, बरतनों का थैला था और हमारे बारह-तेरह जोड़ी जूतों की छोटी-सी गठरी थी। आये हुए लोगों में नौ बेगारी थे, एक कांस्टेबल था, जो पतरोल पर गांव आया हुआ था और मेरा आना सुनकर मेरा स्वागत करने पिताजी के साथ आ गया था। तिरपन वर्ष के पिताजी इस समय जवान दीख पड़ते थे।

कांस्टेबल ने मुझे फौजी सलामी दी और अटेंशन खड़ा हो गया। गांववालों ने मुझे प्रणाम किया। मालगुजार साहब ने श्रद्धा से मुझसे हाथ मिलाया और अधकचरी अंगरेजी में बातचीत करने लगे। बेगार में आये हुए आदमियों में से एक गांव का कोटवार था और आठ किसान। सबने जमीन तक झुककर मुझे सलाम किया। मैंने देखा कोटवार से छठवें नंबर पर खड़ा हुआ सलाम करनेवाला बेगारी रामकरण था। अब वह बाल के पट्टे नहीं रखाये हुए था और उसके कानों की मुरकियां उतर चुकी थीं।

मैं घर पहुंचा। सामान थोड़ा बाकी रह गया था। मैं अपने कपड़े खोल रहा था, इतने में रामकरण एक गठरी लेकर आया। वह गठरी मेरे और मेरी बीवी के जूतों की थी। मेरे मन ने विद्रोह करना चाहा, किंतु लगातार कमीनापन सीख-सीखकर मैं उसे बोथरा कर चुका था।

मैंने पूछा, "रामकरण, छोटा बच्चा कहां है?" जिस तरह किसी काव्य-पंक्ति का पहला शब्द बताकर पूरी पंक्ति की याद दिहानी की जाती है, उसी तरह मैंने बच्चे की बात कहकर, अपनी बीवी और बच्चे के विषय में रामकरण से पूछा। रामकरण ने अपनी होशंगाबादी बुंदेलखंडी में कहा, "सरकार, मैं बच्चे को गोद में लाना चाहता था, मगर कारिंदा दद्दा ने बच्चे को सिपाहीजी को दे दिया और मुझसे कहा, 'यह पोटरी उठा ले चल।' सो मैं उठा लाया। वे आते ही होंगे।"

कितने अप्रत्यक्ष अपमान को, इतने प्रत्यक्ष ढंग से कह गया वह। ●

देशभक्त डाकू जिसने हमेशा पाकिस्तान में डाका डाला

● डॉ. महेन्द्र भानावत

माथे पर मंदिर बनाये और पूंछ जितनी मूंछवाला बहुचर्चित डाकू--करणा, जो आजक पेरोल पर रिहा है, और नड़ बजाकर पर्यटकों का मनोरंजन करता है। जैसलमेर लगे पाकिस्तान के सीमावर्ती क्षेत्रों के लिए करणा डाकू आतंक बन गया था। इन दि करणा की एक साध है—किसी विदेशी युवती से उसकी शादी हो जाए, जो उसे घ रहनेवाले विदेशी पर्यटकों के सवालों के जवाब देती रहे, ताकि उसका शोषण न हो पाये एक दुर्दांत डाकू की रोमांचक कथा--

उदयपुर में भारतीय लोक-कला मंडल का पंचम लोकानुरंजन मेला। नगर के प्रमुख मार्गों पर चलता गाते-बजाते नाचते कलाकारों का शोभा-जुलूस। चारों ओर उल्लास और उत्साह का वातावरण! इस शोभा-जुलूस में सबसे आगे चल रहा है एक व्यक्ति—हाथ में नंगी तलवार—रौबदार मुख पर जलेबी की तरह मुड़ी बंटखानी बांकी मूंछे! गर्वोन्नत भाल और आंखों में अनोखी चमक—यह है करणा, जो कभी 'करणा डाकू' था।

करणा अपने जीवन में ही कई किंवद तियों का केंद्र बन गया है। इनके कार भी लोगों की उत्सुक निगाहें उसका पीछ नहीं छोड़तीं।

राजस्थान के रेगिस्तानी इलाके जैसल मेर के बैया गांव में जन्मे करणा ने बचप में डाकू जीवन की कई कहानियां सु रखी थीं। उसमें भी डाकूपन की रहस् एवं रोमांचकारी दास्तानें, नजदीक से जानने-देखने की उत्कंठा जागी, फलस्व रूप धन-माल की कोई कमी न हों

डाकू से नड़वादक करणा

फिर भी उसके मन में डाकू बनने की धुन सवार हो गयी और पत्नी के बहुत समझाने, मना करने पर भी तीस वर्ष की उम्र में अपने दो लड़के और एक लड़की को छोड़, डकैती के लिए निकल पड़ा।

पहला डाका पाकिस्तान में

सबसे पहले उसने तीन हजार रुपये में एक अच्छी बंदूक और दो हजार में बढ़िया ऊंट खरीदा। आठ-दस व्यक्तियों का एक गिरोह बनाया और निकल पड़ा, डाका डालने। उसने पहला डाका पाकिस्तान के मीठी गांव में डाला। जहां डाका डालना होता, वह पहले से सारी सूचनाएं इकट्ठी करवा लेता। इस काम के लिए दो-तीन आदमी अलग से रहते। फिर पुलिस वेश में सभी लोग हथियारों से लैस हो धमाके से जा पहुंचते और देखते-देखते सारे गांव की नाकेबंदी कर, जहां से जितना माल होता, सारा लूट ले जाते। वे दूरदराज फैले छिपे ऐसे स्थानों में चले जाते, जहां आवागमन तक के कोई साधन नहीं होते। न कोई सड़क, पगडंडी यहां तक पीने के लिए पानी तक नहीं।

औरत की हमेशा इज्जत

करणा ने बताया कि वे लोग डाका हमेशा रात के पहले संध्या को डालते। हमारे पहुंचते ही सारा गांव भय से आक्रांत हो जाता। परिवार के सभी सदस्यों को ताले में बंदकर देते और गोलियां चलाते। सोना-चांदी, जेवर-जवाहरात, माल-असबाब जो भी होता, सब लूटते। घी, शक्कर, चावल भी खूब लूटते, मगर किसी औरत के शरीर पर धारण किया गहना कभी नहीं उतरवाते और न उसके साथ कोई छेड़खानी करते। "औरतों को हमने सदा ही मां-बेटी की इज्जत दी। एक बार हमारे में से ही एक साथी ने एक औरत पकड़ ली, तो वहीं गोली से उसका काम तमाम कर दिया।"

पुलिस से कभी तगड़ी मुठभेड़ हो

जाती, तो डटकर मुकाबला किया जाता। कभी कोई साथी गोली का शिकार हो जाता, तो वे उसे वहीं नहीं छोड़ते, अपितु हिम्मत कर अपनी पीठ पर लादे यथा-स्थान पहुंचते और उसकी मरहमपट्टी करते।

एक बार तो ऐसी स्थिति पैदा हुई कि करणा स्वयं अपने ऐसे ही एक घायल साथी को अपनी पीठ पर लादे चालीस किलोमीटर तक ले गया, मगर पुलिस के हाथ तक नहीं आया।

हिंदुस्तान में डाका नहीं डाला

करणा की बहादुरी और शूरपन की ढेर सारी बातें जानने के पश्चात, जब मैंने उससे पूछा कि आठ-दस वर्ष के अपने डाकू-जीवन में उसने कुल कितने डाके डाले, तब इस सवाल का सीधा जवाब देने की बजाय उसने यही कहा, "यदि किसी ६५ वर्ष के कसाई से जब यह पूछा जाए कि उसने कितने बकरे काटे, तो वह क्या उत्तर देगा ?"

मैंने करणा से कहा, "मुझे उत्तर मिल गया। मगर अब यह बताओ कि क्या कभी हिंदुस्तान में भी कोई डाका डाला ?"

इस पर करणा की बंटखाती मूछों ने थोड़ा ताव खाया और अपनी आंखें तेज करता वह बोला, "हिंदुस्तान में मैंने कभी कोई डाका नहीं डाला। अपने देश का यदि कोई जवान ताकतवर हो, तो क्या वह अपना ही घर लूटे ?" फिर उसने बताया कि एक बार पाकिस्तान से उसे एक पत्र मिला, जिसमें लिखा था कि 'हिंदुस्तान छोड़कर यदि तुम पाकिस्तान आ जाओ तो तुम्हें रहने के लिए एक लाख का बना सुंदर मकान, सवारी के लिए दस हजार का अच्छी नस्ल का घोड़ा, दो किलो दूध देनेवाली बढ़िया भैंस तथा थ्री नॉट थ्री बंदूक-पिस्तौल दे दी जाएगी।' मगर वह नहीं गया। उसने कहा, "मैं हिंदुस्तान का जाया-जन्मा हिंदुस्तान ही में रहूंगा और अपने देश की सेवा करूंगा।"

मूछों पर मलाई-मक्खन

करणा डाकू के रूप में जितना चर्चित है उतना ही चर्चित वह अपनी मूंछों के लिए है। संगीत-समारोह हो या कोई मेला-ठेला, सब जगह उसकी मूंछें भी उसे एक भिन्न रूप में प्रतिष्ठित करती हैं। ये मूंछें भी कोई साधारण मूंछें नहीं हैं, पूरी छह फुट आठ इंच लंबी, जिन्हें वह बड़े जतन से संभाले रखता है। इन मूंछों की सप्ताह में एक बार सफाई की जाती हैं और सरसों के तेल के अलावा मलाई व मक्खन से उन्हें मुलायम व खूबसूरत बनाये रखा जाता है।

इतनी बड़ी मूंछें रखने के कारण के संबंध में पूछने पर करणा ने बताया, "आदमी की शोभा ही उसकी मूंछ है। मूंछ है, तो आदमी की पूछ है। मूंछवाला आदमी सवाया लगता है, बहादुर और बांका लगता है।"

•

इस संबंध में उसने 'मूंछालो चावल' नामक एक कहावत का जिक्र करते हुए सुनाया कि एक बार रेगिस्तान में निरंतर

दस साल तक अकाल पड़ा। ठाकुर के घर में तक खाने को लाले पड़े पर इज्जत तो बनाये रखनी थी, अतः उसने एक चावल पानी में भिगो दिया। जब वह फूल गया, तो ठाकुर ने उसे अपनी मूंछ पर रख लिया। लोगबाग ठाकुर साहब के पास आते, तो ठाकुर अपनी अकड़ में रहता और मूंछ पर बट देने का नाटक करता रहता। ऐसे में जब लोगों की निगाह ठाकुर की मूंछ पर पड़ती, तो उसमें लगे चावल को देख सभी यह धारणा बना लेते कि भयंकर अकाल की स्थिति में भी ठाकुर के घर खाने को चावल हैं, इसीलिए एक चावल मूंछ पर रह गया है। तात्पर्य यह कि समय आने पर मूंछें इज्जत बनाये रखने में भी बड़ी महत्त्वपूर्ण भूमिका अदा करती हैं।

करणा ने बताया कि आठ-आठ, दस-दस आंटे-वींटे खानेवाली उसकी मूंछों से उसमें हर समय शूरापन बना रहता है। उसने यह भी बताया कि उसकी मूंछें कोई साधारण मूंछें नहीं हैं। "मेरी एक मूंछ हनुमानजी की तथा दूसरी प्रणवीर पाबूजी की है। यही कारण है कि मैं इन्हें हर किसी की रस्ते चलती फरमाइश पर नहीं खोलता हूं। यदि कोई मेरी मूंछें खुलवाकर देखना चाहे तो एक हजार रुपया उसकी फीस है।"

श्रेष्ठ नड़वादक भी

मूंछकार यह डकैत पहुंचा हुआ नड़वादक भी है। नड़—बांसुरी की ही तरह का लगभग तीन फुट लंबा सुपारी की लकड़ी का बना फूंक-वाद्य है, जो पाकिस्तान में बड़ा लोकप्रिय है और जिसे प्रायः बरोच मुसलमान बजाते हैं। इसके बजाने पर ललाट व गले की नसें तन जाती हैं।

करणा ने बताया कि नड़ और शरीर की नाड़ी की सुरतां एक हो जाती है, तब धुन निकलती है। "कभी-कभी तो इसे बजाने में इतना लीन हो जाता हूं कि रात-रात भर बजाता रहता हूं। वैसे सुबह-शाम अपने भगवान को रिझाने के लिए तो इसे बजाता ही हूं।"

करणा जितना शक्तिवान है, उतना ही भक्ति से सराबोर है। भक्ति-भावना तो उसमें बचपन से ही है। उसके भगवान युगल रूप में हैं, जो सदैव उसके सिर पर साफे में विराजमान रहते हैं। लोगबाग मंदिरों में भगवान के दर्शन को जाते थे परंतु करणा का मंदिर तो उसके माथे (सिर) पर ही है। करणा का विश्वास है कि राधा-कृष्ण और शिव-पार्वती सदैव उसकी रक्षा करते रहे हैं। इस संबंध का उसने एक गीत सुनाया—

मंदरियो चुणायो माथे रे मांई
जींके रे दुसमण करे कांई?
अरज करे करणाराम सुणे मुजा सांई
भले जो दुसमण नहीं समझे, तो
गोली ठोकां वांरे पेट रे मांई।

उसके सिर के साफे में राधा-कृष्ण के ऊपर मयूरपंख सुशोभित है। उसने बताया कि इन युगल-रूप भगवान के साथ-साथ ब्रह्मा, विष्णु, महेश की भी इस

हिन्दी का सर्वश्रेष्ठ दैनिक

हिन्दुस्तान

एक सम्पूर्ण पत्र

बाकी सभी अखबारों से अलग है

१५ लाख से अधिक पाठक इसे पढ़ते हैं

क्योंकि

- यह महत्वपूर्ण खबरों का आईना है
- हिंदी का एकमात्र अखबार है जो अपनी धरती से जुड़ा है
- हर आयु, वर्ग और स्तर के पाठकों की जरूरत पूरी करता है, उन्हें कुछ सोचने को मजबूर करता है

●

हर बुधवार तथा रविवार को विशेष परिशिष्ट
मनोरंजक एवं उपयोगी सामग्री का खजाना जो अन्यत्र दुर्लभ है।

आप अपने क्षेत्र के समाचार पढ़ना चाहते हैं
और हम वही देते हैं।

हिन्दुस्तान टाइम्स प्रकाशन

मंदिर में 'बिराजणी' करने का विचार है।

मैंने करणा से पूछा कि सिर पर शोभित भगवान ने कठिन समय में क्या कभी कोई रक्षा की ?

उसने बताया कि 'हां, कई बार रक्षा की। एक बार जब वह पाकिस्तान डकैती डालने जा रहा था, तब बीच रास्ते में उसका ऊंट लंगड़ा हो गया। इस पर करणा के साथियों ने उसे लौट जाने की राय दी, पर करणा नहीं माना। उसने वहीं ऊंट रोका और अपने सिर के भगवान को जमीन पर प्रतिष्ठित कर उनके सामने अगरबती ज़लायी और कहा कि मालिक ऊंट को ठीक कर देना, नहीं तो इसे गोली मारकर पाकिस्तान चला जाऊंगा।

यह कहकर उसने अगरबत्ती की राख ऊंट के लगायी और देखते-देखते ऊंट का लंगड़ापन जाता रहा।

पांच वर्ष जोधपुर की जेल की हवा खाने के बाद अभी करणा पेरोल पर हैं। उसके आत्मसमर्पण की भी एक दिलचस्व घटना है। उसने बताया कि जब उसकी जमीन एक सिंधी मुसलमान के नाम कर दी गयी तब उससे नहीं रहा गया। उसका 'वीरापन' चढ़ आया और खून खौल उठा। इसी बीच इसका एक साथी गांववालों के साथ मिल गया और करणा के खिलाफ बगावत करने लग गया, तब करणा अपने आपे से बाहर हो गया और उसने गोली दागकर उसका काम तमाम कर दिया। इस पर उसे आजीवन कारावास की सजा हुई।

करणा जाति से भील है। उसके छह लड़के हैं। ये सभी कलाकार हैं। इनमें हीराराम नड़ व अलगोजा बजाता है। धन्नाराम मटकीवादक है। हुकमाराम मोरचंग और टीकूराम खड़ताल बजाने में माहिर है। लक्खूराम और मोटीराम दो छोटे लड़के हैं, जो डंडिया की घूमर रमते हैं। मेवाड़ और महाराणा प्रताप करणा से अपरिचित नहीं है। उसे यह भी मालूम है कि प्रताप के सैनिक भील ही थे, जो तीर कमान से दुश्मनों का डटकर मुकाबला करने में सिद्ध थे।

आठ-दस वर्ष डाकू-जीवन व्यतीत करने के बाद करणा अब बड़ा शांत व गंभीर हो गया है। वह अधिक बोलता भी नहीं है। वह चाहता है कि किसी विदेशी महिला से उसकी शादी हो जाए ताकि लोगों के अनगिनत सवालों का वह उत्तर देती रहे और कोई उसका शोषण भी नहीं कर पाये। करणा को इस बात का दुख है कि सरकार उसकी कोई मदद नहीं कर पा रही है। उसके पास रहने को तलिया तक नहीं है। दुश्मन अभी भी उसके पीछे पड़े हुए हैं, मगर उसके पास कोई भी हथियार नहीं है।

—भारतीय लोक-कला मंडल, उदयपुर

जो शत्रु तुम्हारा विरोध करते हैं उनसे मत डरो। उन मित्रों से डरो, जो तुम्हारी चापलूसी करते हैं।

—जनरल आवूगोन

सूक्ष्म शरीर की सहायता से बृहस्पति-लोक की यात्रा

● डॉ. पी. वी. वर्तक

सूक्ष्म शरीर की सहायता से अपनी मंगल-यात्रा के परिणामों से मैं बेहद उत्साहित हुआ था। यह प्रयोग मैंने दिनांक १० अगस्त, १९७५ तथा १२ अगस्त, १९७६ को किया था। अपनी मंगल-यात्रा के इस प्रयोग की सफलता से उत्साहित होकर, मैंने बृहस्पति ग्रह की यात्रा का निश्चय किया। स्वाभाविकतः यह यात्रा भी मैं सूक्ष्म शरीर के द्वारा ही करता। बृहस्पति पृथ्वी से एक सौ करोड़ किलोमीटर की दूरी पर है। २७ अगस्त, १९७७ को मैंने बृहस्पति पर अपना सूक्ष्म-शरीर प्रक्षेपित किया। मैंने यह प्रयोग दिन में एक बजे से सवा बजे के बीच किया। यहां यह उल्लेख करना अप्रासंगिक नहीं होगा कि मेरा यह प्रयोग, अमरीका द्वारा बृहस्पति को 'वायजर-२' भेजने के दो वर्ष पूर्व हुआ था।

कैसा है बृहस्पति ग्रह

मैंने अपनी बृहस्पति-लोक की यात्रा के अनुभवों की एक परिपत्र द्वारा जनता को जानकारी दी। बृहस्पति लोक की यात्रा संबंधी मेरी रिपोर्ट का एक अंश इस प्रकार था—

बृहस्पति पर पीले एवं बैंगनी रंगों का बाहुल्य है। बृहस्पति के आकाश में और कोई रंग नहीं देखा गया। आकाश में स्थित पीले रंग में हरे रंग की आभा थी। बादल बैंगनी रंग के थे। और वे तेजी से एक दूसरे के पास आ रहे थे। आपस में घुलमिल रहे थे। हमारे अर्थात पृथ्वी के बादलों की तुलना में वे काफी घने थे। वे धरती पर जल में जम जानेवाली काई की तरह थे। जिस तरह किसी पोखर में पत्थर फेंकने पर काई फट जाती है, लेकिन शीघ्र ही फिर मिल जाती है, उसी तरह ये बादल थे। बृहस्पति पर हलका-सा प्रकाश भी था। ठीक वैसा ही-जैसा कि महाराष्ट्र में सितंबर मास में शाम साढ़े सात बजे के

आस-पास होता है। बृहस्पति पर मैं सूर्य को नहीं देख पाया।

धरती के आकाश का रंग नीला नजर आता है, लेकिन बृहस्पति से गहरा लाल नजर आता था। मैंने बृहस्पति के आकाश से तीन चंद्रमा देखे। उनकी स्थिति इस प्रकार थी—

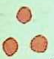

इसके बाद मैंने एक साथ चार पूर्ण चंद्र देखे। उनकी स्थिति निम्नांकित चित्र की तरह थी—

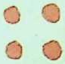

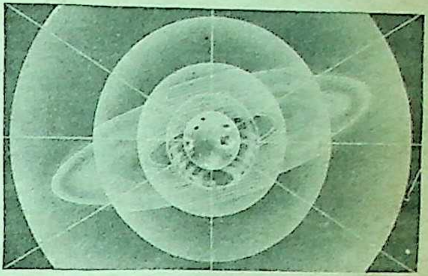

बृहस्पति—हमारे सौर-मंडल का, सूर्य को छोड़कर, सबसे विशाल ग्रह। पृथ्वी के आकार के १,४१० गोले इस विशाल ग्रह में समा सकते हैं। इसका द्रव्यमान पृथ्वी से ३१८ गुना है। विषुव व्यास ८८,८७०० मील और ध्रुवीय व्यास ८२,९०० मील है। यह ग्रह ११.८६ वर्ष में एक बार सूर्य की परिक्रमा करता है।

प्रस्तुत लेख के लेखक का दावा है कि उन्होंने सूक्ष्म शरीर की सहायता से बृहस्पति लोक की यात्रा की और उन्हें इस ग्रह के बारे में जो जानकारी मिली, उसकी अमरीकी अंतरिक्ष-यान 'वायजर' से प्राप्त रिपोर्टों से पुष्टि भी हुई।

इसके बाद मैंने एक साथ कई चंद्रमा देखे। संख्या में वे शायद चार या पांच रहे होंगे। ये सब अर्द्ध चंद्र थे।

मेरे दायीं ओर उनका प्रकाशमान भाग था और बायीं ओर अंधकार से घिरा हिस्सा। ये चंद्रमा आकार में हमारे चंद्रमा से छोटे थे, लगभग तीन चौथाई आकार के। उनका प्रकाश भी हमारे चंद्रमा के प्रकाश से धूमिल था।

मैंने आकाश में गोल आकार की काली आकृतियां भी देखीं। उनकी स्थिति इस प्रकार थी—

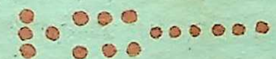

मंगल-लोक की यात्रा के दौरान मैंने अनुभव किया था कि मैं उसकी धरती पर खड़ा हूं। पर बृहस्पति लोक की यात्रा के समय मुझे ऐसा कोई अनुभव नहीं हुआ। मुझे ऐसा कतई नहीं लगा कि मैं बृहस्पति के तल पर खड़ा हूं। वरन मुझे ऐसा प्रतीत हुआ कि मैं तैर रहा हूं।

वहां मुझे काली चट्टान दिखायी दी। वहां धूल भी नहीं थी। न पवन के झकोरे थे। मंगल-लोक की भांति बृहस्पति का आकाश सुंदर नहीं था, इसलिए मुझे कोई उत्साह या आनंद का अनुभव नहीं हुआ।

इसके विपरीत मैंने उदासी से स्वयं को आक्रांत पाया।

वृहस्पति पर जल नहीं था। न स्थिर, न प्रवाहमान। वहां कोई व्यक्ति भी नहीं था। न पशु, न पक्षी, न जीवन का कोई और चिह्न! मैंने वृहस्पति पर और किसी सूक्ष्म शरीर के दर्शन नहीं किये। मैंने अनुभव किया कि वृहस्पति पर कभी भी कोई जीवन नहीं रहा होगा। मैंने वातावरण में घनत्व का भी अनुभव किया। ऐसा लगा-जैसे वायु में घनत्व ज्यादा है। ऐसे वातावरण का दबाव भी धरती के दबाव से अधिक था। स्पर्शेन्द्रियों द्वारा मैंने इस तथ्य की अनुभूति की।

मैं वृहस्पति के क्षितिज पर स्थित अर्ध चंद्रों की गिनती कर ही रहा था कि मेरा ध्यान टूट गया। मैं चेतनावस्था में आ गया। मैंने घड़ी देखी, इस समय १३.१५ (सवा बजा था) था। मैंने अपना ध्यान १३.०० अर्थात एक बजे शुरू किया था। इस तरह केवल पंद्रह मिनटों में मैंने वृहस्पति लोक की यात्रा पूरी कर ली थी। ध्यान भंग होने के बाद मैंने वृहस्पति लोक-यात्रा संबंधी विवरण लिख लिया।

यात्रा की गति

अपनी इस यात्रा में मैंने वृहस्पति के चंद्रमाओं को एक साथ अर्द्ध एवं पूर्णाकार में देखा। पाठक पूछ सकते हैं कि ऐसा कैसे संभव हो सकता है! उत्तर में निवेदन है कि वृहस्पति लोक की पचास करोड़ मील की यात्रा और वहां से वापसी में कोई समय लगा ही नहीं। मैं निमिष मात्र में वृहस्पति पर था, अतः तीव्र गति से यात्रा करने में समय और अंतरिक्ष ('टाइम' और 'स्पेस') संकुचित हो गये थे, लगभग समाप्त ही समझिए। अत पूर्णचंद्र एवं अर्द्ध चंद्र के बीच की आठ दिनों की अवधि भी संकुचित हो गयी। इसलिए मैं अर्द्ध एवं पूर्णचंद्र, दोनों एक साथ देख सका।

मैंने २७ अगस्त, १९७७ शनिवार को वृहस्पति को देखा था। समाचार-पत्रों में भी इस यात्रा के बारे में प्रकाशित हुआ। मैंने यह भी लिखा कि मेरे प्रयोग की सत्यता 'वायजर' द्वारा वृहस्पति-संबंधी रिपोर्ट भेजने के बाद ही परखी जा सकेगी। मेरा यह प्रयोग सद्भावनावश आध्यात्मिक स्तर पर ही था।

'वायजर' की रिपोर्ट

'वायजर' की पहली रिपोर्ट २१ दिसंबर, १९७८ को मिली। उसमें कहा गया था कि १. बादलों की अनेक परतें हैं। २. वे अमोनिया कणों से बने हैं। मैंने भी अपनी रिपोर्ट में कहा था कि वहां बादल काफी घने हैं। अमोनिया कणों के कारण ही उनका रंग बैंजनी था। इस तरह मेरी रिपोर्ट के दोनों मुद्दे सही निकले थे।

३ मार्च, १९७९ को प्राप्त 'वायजर' की रिपोर्ट में कहा गया था कि ३. वहां बादलों का जैसे मंथन हो रहा है और ४. बादल काफी घने हैं। 'वायजर' की रिपोर्ट में ये शब्द प्रयुक्त हुए थे—'वहां

का वातावरण संकुल है। वह बादलों को मथता रहता है।'

मेरी रिपोर्ट में कहा गया था कि हमारी धरती के बादलों की तुलना में बृहस्पति लोक के बादल ज्यादा घने थे। वे बिलकुल जल पर जमी काई के समान थे। मैंने यह भी लिखा था कि जैसे काई जमे जल पर पत्थर फेंकने से काई फट जाती है, लेकिन शीघ्र ही फिर मिल जाती है, ठीक उसी तरह बृहस्पति लोक के बादलों की भी गति है।

९ मार्च, १९७९ को 'वायजर' ने खबर दी कि (५) बृहस्पति के चारों ओर कणों का एक चपटा घेरा है। यह बर्फ और चट्टानों के टुकड़ों का बना हो सकता है। मैंने भी अपनी रिपोर्ट में लिखा था कि बृहस्पति के आकाश में मैंने काली गोल आकृतियां देखी हैं। मैंने उनका आकार भी बतलाया था।

'वायजर' ने यह भी खबर दी थी कि (६) बादलों में नारंगी एवं नीले रंग की झलक दी है। इन रंगों का सम्मिश्रण बैंजनी रंग बनाता है। मैंने भी अपने अनुभव में यही लिखा था।

'वायजर' ने (७) लाल चट्टानों की खबर दी थी, जबकि मैंने उन्हें काला रंग का बताया था। वहां चट्टान की उपस्थिति बहुत महत्त्वपूर्ण है और मेरा पूरा विश्वास है कि उसका रंग काला है। 'वायजर' ने चट्टान के लाल रंग के होने की सूचना गलती से दी है। यह गलती हो सकती है, क्योंकि 'वायजर' ने काफी लंबी दूरी से ये चित्र लिये थे। यह एक जाना-माना तथ्य है कि कैमरे के कोण एवं दूरी के कारण भी रंग बदल जाते हैं। मंगल के बारे में 'वाइकिंग' द्वारा भेजी गयी रिपोर्ट में रंगों को पहचानने में गलती हो गयी थी।

लेखक

मैंने अपनी रिपोर्ट में लिखा था कि बृहस्पति का लाल रंग एक भीषण अग्नि के रंग की भांति है। 'वायजर' ने भी रिपोर्ट दी कि (८) बृहस्पति के अनेक चंद्रों में से एक में ज्वालामुखी है। हो सकता है कि यात्रा की तेज रफ्तार के कारण मैंने चंद्रमा के ज्वालामुखी को बृहस्पति पर देख लिया हो। मैंने बृहस्पति के अर्द्ध चंद्रों का भी उल्लेख किया था। इन चंद्रों का दायां भाग प्रकाशमान था, (मेरे दायें हाथ की ओर वाला भाग) १३ फरवरी, १९७९ को 'वायजर' द्वारा प्रेषित रेडियो फोटो में (९) एक चंद्रमा को बिलकुल उसी स्थिति में दिखाया गया, था। ३ मार्च, १९७९ को 'इंडियन एक्सप्रेस' ने यह चित्र भी प्रकाशित किया था। इसमें चंद्रमा के बायें हाथ वाला हिस्सा प्रकाशमान दिखलाया गया था। यह अंतर मेरे और 'वायजर' की स्थितियों के कारण हुआ था। मैं बृहस्पति पर था, जब कि 'वायजर' उससे एक करोड़

चौबीस लाख मील की दूरी पर था। और हमारे बीच में वही अंतिम चंद्रमा था। इसीलिए मेरे दायें अनेवाला हिस्सा 'वायजर' के बायीं ओर पड़ा था। यह चित्र एवं दिशाओं का परिवर्तन इस तथ्य का प्रबल प्रमाण है कि सूक्ष्म शरीर की सहायता से यात्रा की जा सकती है। इससे सिद्ध होता है कि मैं स्वयं बृहस्पति पर पहुंचा था और मैंने चंद्रमा को देखा था।

विवरणों की पुष्टि

'वायजर - द्वितीय' के फोटोग्राफी के प्रमुख श्री एंड्रिव इंगरहाल के अनुसार तेज गति तैरते-घूमते बादलों के बावजूद (१०) बृहस्पति का वातावरण मूलतः स्थिर है, यद्यपि कतिपय रूप नाटकीय ढंग से समय-समय पर बदलते रहते हैं, उन बादलों का एक रूप ऐसा भी है, जो अ-परिवर्तित रहता है। यह रिपोर्ट १३ जुलाई, १९७९ के 'इंडियन एक्सप्रेस' में प्रकाशित हुई थी। इसी समाचार-पत्र ने १४ मई, १९७९ के अंक में इस शीर्षक से एक समाचार प्रकाशित किया था--'वायजर कंफर्म्स वर्तक्स आवजरवेशंस।'

जापान में एक अनोखा और सफल प्रयोग किया गया है। गर्भवती महिला के गर्भाशय से आनेवाली आवाजों को टेप कर उसका एक एल. पी. रिकार्ड बनाया गया। प्रयोगों के दौरान यह देखा गया कि इस रिकार्ड को बजाने से नवजात बच्चों पर बहुत अच्छा प्रभाव पड़ता है। रिकार्ड की आवाज सुनकर रोते हुए ४०३ बच्चों में से सभी ने ४१ सेकंड में रोना बंद कर दिया और उनमें से १६१ गहरी नींद में सो गये।

आजकल यह रिकार्ड जापान में खूब बिक रहा है। इसको अंगरेजी में 'लुलेबी इनसाइड मम' का नाम दिया गया है।

इस तरह स्पष्ट हो जाता है कि मेरे दसों तथ्यों की 'वायजर' की रिपोर्टों से पुष्टि हो गयी थी। इनमें से तीन काफी विस्मयकारी हैं। पहला, बादलों की गति से संबंधित है। 'नासा' के प्रमुख ने इस बात को स्वीकार किया है कि 'वायजर' की रिपोर्टों ने पूर्व-धारणाओं को झुठला-सा दिया है और इसीलिए वैज्ञानिक परेशान हैं। 'वायजर' के फोटोग्राफी दल के प्रमुख श्री ब्राड फोर्ड स्मिथ के अनुसार बृहस्पति के चारों ओर 'मलबे' की उपस्थिति बिलकुल अनपेक्षित थी। तीसरी बात बृहस्पति पर एक स्थिर वातावरण की थी। इसने इस सिद्धांत को झुठला दिया था कि बृहस्पति पर भीषण आंधी-तूफान आया करते हैं।

मैं मंगल ग्रह की धरती पर खड़ा हुआ था, जब कि बृहस्पति के तल पर मैं खड़ा नहीं हो पाया। उसके वातावरण में तैर रहा था और दूर से ही मैंने चट्टान देखी थी। मेरा सूक्ष्म शरीर यह जानता था कि यदि वह बृहस्पति के तल पर जाएगा तो उसका लौटना संभव नहीं होगा। कारण, बृहस्पति की गुरुत्वाकर्षण शक्ति बहुत प्रबल थी। इस प्रयोग से एक बात और सिद्ध होती है और वह यह कि गुरुत्वाकर्षण शक्ति सूक्ष्म शरीर को भी आकर्षित करती है। --५२१, शनिवार पेठ, पुणे-३०

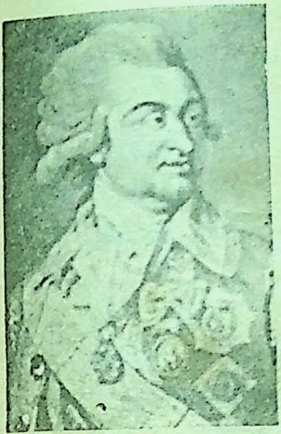

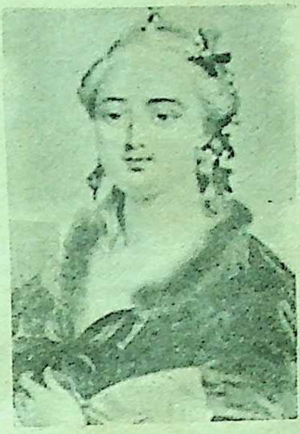

ऊपर: छलिया पोटेमकिन (बायें), सम्राज्ञी कैथरीन (दायें)

विश्व का सबसे बड़ा छलिया

● डॉ. शिवनंदन कपूर

द्वापर में पांडवों ने एक माया-महल बनवाया था, जिसकी माया ने दुर्योधन को चक्कर में डाल दिया था। उसी माया-महल ने महाभारत की नींव डाल दी थी। आधुनिक काल में भी एक ऐसी ही विचित्र मायापुरी बसायी गयी थी। उसे बसानेवाला अपने समय का सबसे बड़ा छलिया था। उसने वीराने में स्वप्न-महल बनाकर अपनी प्रेमिका को चक्कर में डाल दिया था। और यह प्रेमिका कोई साधारण स्त्री नहीं, रूस की सम्राज्ञी थी कैथरीन।

कैथरीन रूस की महान सम्राज्ञी हुई है। उसे 'कैथरीन महान' कहा जाता था। उसकी प्रणय-लीला के किस्से सारे यूरोप में मशहूर थे। मगर जितना लगाव उसे एक व्यक्ति से हुआ, उतना दूसरों से न हो सका। इस व्यक्ति का नाम था—ग्रिगोरी पोटेमकिन। कैथरीन पोटेमकिन पर पूर्णतः आसक्त थी। वह कहती थी, 'इस आदमी ने क्या आला दिमाग पाया है! गजब का है।'

उसने उसे अनेक उपाधियां दीं, 'कोर्ट चेंबरलेन' बनाया, 'तातारों का रक्षक' कहा। कई महत्त्वपूर्ण पदों पर बैठाया। १७८३ में कैथरीन ने क्रीमिया को अपने राज्य में मिला लिया और पोटेमकिन को उसका

गवर्नर बनाया और उसने उसे उस उजड़े इलाके को हरे-भरे, सभ्य आबादीवाले प्रदेश में बदलने का भार सौंपा।

कागजी योजनाएं

यह काम पोटेमकिन को भी भा गया। उसने इस काम के लिए सैकड़ों योजनाएं तैयार कीं। उसने सेवस्तापोल पर नौ-सेना का बंदरगाह बनाने, चीन से रेशम के कीड़े मंगाने और अंगूर के बाग लगाने की योजनाएं बनायीं। नयी सड़कें, नये कारखाने, नयी इमारतें नक्शे पर उभरने लगीं। नीपर नदी के किनारे नयी राजधानी बनाने की घोषणा भी की गयी, जिसका नाम 'स्कातेरीनो स्लाव' अर्थात 'कैथरीन का यश' रखा गया।

योजना बनाकर वह कई बार कैथरीन को अपनी अनोखी योजनाओं के बारे में बताने आया। उसके कल्पित चमत्कारों को रानी ने सच माना। उसने रानी को बताया, 'जहां चारों ओर वीरानी थी, अब लहलहाते खेत हैं। गांववाले संतुष्ट हैं। किसान संपन्न हैं।' कैथरीन बेहद खुश हुई। उसने निश्चय किया कि वह अपने नये प्रांत की यात्रा अवश्य करेगी। अपनी आंखों से उन चमत्कारों को देखेगी।

यद्यपि रानी उस समय अट्ठावन साल की थी, पर उसका उत्साह किसी तरुणी के उत्साह से बढ़कर था। उसकी काम करने की क्षमता और मन की प्यास उसे युवा बनाये हुए थी।

एक अनोखा सूत्रधार!

पोटेमकिन की सारी बातें केवल कागजी थीं, पर रानी की यात्रा की बात सुनकर वह घबराया नहीं। वह अनोखा सूत्रधार था। नाटक का संचालन करना जानता था। रानी की क्रीमिया-यात्रा एक अनोखे बड़े नाटक के रूप में इतिहास में मशहूर हो गयी। एक अजीब छलावा, विचित्र भ्रम था वह!

४ जनवरी, १७८४ को रानी अपनी क्रीमिया-यात्रा के लिए रवाना हुई। इस यात्रा का पोटेमकिन ने स्वयं सारा प्रबंध किया था। रानी के साथ चालीस हजार लोग थे। रानी की स्लेज में सोलह घोड़े लगाये गये। वह बर्फ-गाड़ी एक छोटे महल-जैसी ही थी। उसमें हर दीवार में तीन खिड़कियां थीं। रानी जिधर से चाहे हर तरफ का दृश्य देख सकती थी। हर पड़ाव पर ५६० ताजा दम घोड़े इंतजार में बंधे मिलते थे।

नकली आनंद

रात में सड़क के दोनों ओर आग जलाकर उत्सव मनाते लोग नजर आते थे। मार्ग के गांववालों को अपना घर रंगने का आदेश दिया गया था, लेकिन उनकी केवल सड़क की ओर पड़नेवाली दीवारें ही रंगायीं गयी थीं। बाकी घर वैसा ही था। जहां-जहां कोई खराब दृश्य या ऊजड़ स्थान था, वहां उस छलिये ने नकली पेड़ लगवा दिये थे। टूटी छतों पर गत्ते रंगवाकर, ढंग से जमा दिये गये थे। लोगों को अपने

उसकी प्रेमिका कोई साधारण स्त्री नहीं बल्कि, सम्राज्ञी थी। उसने उसे प्रसन्न रखने के लिए रातों-रात नकली महल बनवा दिये, घने जंगल बसा दिये और गरीबी में पलते दुःखी लोगों को हंसना-गाना सिखा दिया था। सम्राज्ञी इस 'नाटक' को वास्तविकता समझ अपने प्रेमी की कार्यक्षमता से खुश थी। कौन थी यह सम्राज्ञी और कौन था उसका छलिया प्रेमी ?

सबसे अच्छे कपड़े पहनकर, रानी के स्वागत में सड़क के दोनों ओर जमा होने का आदेश दिया गया था।

बूढ़े और बीमारों को घर से बाहर आने की मनाही थी। रानी से कोई शिकायत करने या मांग-पत्र रखने पर सख्त पाबंदी थी। उन्हें मुसकराते रहकर अपने को खुश दिखाते रहने का भी हुक्म दिया गया था।

नियत समय पर कैथरीन इन गांवों से गुजरी। वहां के निवासियों ने दंडभय से प्रसन्न रहने का अभिनय किया।

उन्हें खुश देखकर कैथरीन प्रसन्न हुई। जब उसने इस मार्ग की पहले यात्रा की थी, उसे लोग गरीब, दुःखी, चिथड़ों में लिपटे, भूखे और चेहरे पर शत्रुता का भाव लिये दिखायी दिये थे। अब वे ही अच्छे कपड़ों में नाचते-गाते, मौज मनाते लग रहे थे। उसे विश्वास हो गया कि अब उसकी प्रजा संपन्न और सुखी है।

चलते-चलते यह काफिला कीव पहुंचा। वहां सबके ठहरने के लिए एक सजे-सजाये महल का प्रबंध था। नौकरों की भरमार, बेशुमार गाड़ियां, शानदार खाना। हर भोजन के बाद लोगों में वस्त्र-वितरण का प्रबंध था। हर रोज वहां नया दृश्य दिखायी देता। रानी कैथरीन वहां मेजबान की तरह रहती। हालांकि, उसका स्थूल शरीर कठिनाई से चलता था, पर दिमाग तीर-जैसी तेजी से काम करता था। वह खेती, बच्चों की शिक्षा, नगर-विकास, शिल्प-जैसे विषयों पर देर तक चर्चा करतीं। पर ठीक दस बजे रात वे विश्राम करने उठ जाती थीं। उनकी शैया के पास एक शीशे की दीवार थी। उसे पीछे सरकाते ही एक और सेज बिछी मिलती थी। वह उसके उस समय के प्रेमी मामोनोफ की होती। इस बात का प्रबंध भी पोटेमकिन ने ही सारी यात्रा में कर रखा था।

परी-लोक की यात्रा !

सब नीपर नदी के किनारे पहुंच गये। जब नदी की बर्फ पिघली, तब काफिला किनारे लगी नावों पर चढ़ा। यहां से पोटेमकिन के विचित्र परी-लोक का सफर शुरू हो गया। उसने नावों पर सात बहते हुए महल बनवा रखे थे। तीन हजार अन्य लोग अस्सी नावों पर उन मेहमानों की खातिर में लगे थे। रानी के शाही पोत को किमखाब से सजाया गया था। उसकी

दीवारें, नौकरों की वरदियां सभी सोने के काम से चमचमा रही थीं। सभी लोगों को सोने की तश्तरियों में भोजन परोसा जाता था।

सिल्क के सायबान के नीचे लेटी साम्राज्ञी देखती, नगर बसा हुआ है। उसमें मालाग्रों से सजे विजय-तोरण बने हैं। चरागाह में अनेक प्रकार के पशु चर रहे हैं। सेना परेड कर रही है। शाम के धुंधलके में किसान फुरसत पाकर, अलाव जलाकर, नाच-गा रहे हैं।

इन दृश्यों का जैसे ग्रंत ही न होने आ रहा था। पोटेमकिन के बड़े से बड़े आलोचकों की जबान भी इन चमत्कारों को देखकर बंद थी।

रानी यह न जानती थी कि यह नाटकीय दृश्य उसकी शाही नाव के आगे बढ़ने के कुछ देर बाद ही जादुई तरीके से गायब हो जाता था। उन विजय-तोरणों या फाटकों के पार नगर में बने मकान बिना छतों के थे। उनमें दरवाजे ग्रौर खिड़कियां भी न थीं। मकानों के पीछे कोई सड़क न थी। वे मकान लकड़ी, कार्ड-बोर्ड आदि को सुंदरता से रंगकर बनाये गये थे। गांव उस समय भी वीरान थे। चरागाहों में चरते पशु भी बहुत दूर से लाये गये थे। शाम को नाचनेवाले खुश किसान दास थे। उन्हें आतंकित कर अभिनय सिखाया गया था।

सूर्यास्त होते ही नाटक के इन दृश्यों को 'पैक' कर गाड़ियों में उसी तरह आगे भिजवा दिया जाता, जैसे एक नाटक कंपनी किसी जगह नाटक खत्म कर अगले स्थान पर जल्दी-जल्दी खेमा खड़ा करती है। अगली जगह फिर वही खुशनुमा नजारा नजर आने लगता था।

तीन मायावी पड़ाव

रानी के ठहरने के लिए तीन पड़ाव बनाये गये थे। हर पड़ाव पर एक शानदार नये ढंग का महल दिखायी दिया था। वहां नकली झरने भी बनाये गये थे। छायादार पार्क थे। पोटेमकिन ने वहां ऐसे पेड़ ला रोपे थे, जो कुछ दिन हरे-भरे नजर आयें, बाद में मुरझाते चले जाएं।

'स्कातेरीनो स्लाव' अर्थात 'कैथरीन का यश' पहुंचने पर रानी ने वहां एक धर्म-पीठ का शिलान्यास किया। उस धर्म-पीठ का नक्शा इतना जोरदार था कि निर्माण के बाद रोम का धर्म-पीठ भी उसके आगे शरमाता, पर वह धर्म-पीठ कभी न बना। बस, नींव का पत्थर पड़ गया।

इस स्थान से यात्रा फिर गाड़ियों में प्रारंभ हुई। उन्होंने गांव देखे। गांवों में कारखाने नजर आये। हर जगह सक्रियता थी। कहीं ईंटें बन रही थीं। कहीं सड़क बनायी जा रही थी। हर तरफ खुश लोगों की भीड़, आनंद करते मनुष्यों का हुजूम। सभी कार्य व्यस्त भी लगते थे।

पोटेमकिन ने बीस गांवों के लोगों को वहां अपने कागजी मकानों में अस्थायी तौर पर बसने के लिए बुलवाया था।

पोटेमकिन ने कैथरीन और उसके

दरबारियों के आमोद-प्रमोद का हर प्रबंध कर रखा था। एक पड़ाव पर एक नकली ज्वालामुखी रातभर शोले फेंकता था। सेवस्तापोल में १८० वादकों और गायकों का समूह जमा था।

अपनी खिड़की से रानी देखती, जहां दो साल पहले कुछ न था, वहां अब खाड़ी तक सैनिक परेड कर रहे थे। काले सागर में नया जहाजी बेड़ा चमचमाता खड़ा था। जहाजों के डेक से तोपों की गर्जना गूंजती। उसके साथ ही 'रानी चिरकाल तक जीवित रहें' का नारा भी गूंज उठता। यात्रा की चरम घड़ी भी निकट आ रही थी। पोलटावा में दो सेनाओं के द्वारा एक नकली युद्ध का अभ्यास दिखाया गया।

कैथरीन खुशी के मारे फूली न समा रही थी। उसने इन सारे दृश्यों, परिवर्तनों और प्रगति के लिए पोटेमकिन को बार-बार खुले दिल से सराहा। अगर उसे इन नाटकीय दृश्यों के रहस्य का पता लग जाता, तो उत्साह पर ठंडा पानी पड़ जाता। उसे क्या पता था कि दूर दिखायी देते जंगी जहाज नकली हैं! दूर दिखायी देनेवाला किला बालू और मिट्टी का बना, ताश महल-जैसा है!

इस नाटक पर सात करोड़ रूबल खर्च हुए थे। मानवीय शक्ति जो लगी, उसकी तो कोई सीमा ही नहीं थी। इस नाटक का नतीजा बस, इतना ही निकला था कि पोटेमकिन रानी की निगाहों में और चढ़ गया था।

—३८७, टपाल चाल, खंडवा

खरीद मकान की

विलियम हैंपशायर अपनी सास के घर में एक कमरे में रहता था, अपनी पत्नी मार्गरेट और तीन साल की लड़की ऐलन के साथ। मार्गरेट की बड़ी ख्वाहिश थी कि किसी तरह उसका अपना भी घर हो। पर इसकी संभावना बहुत कम थी, क्योंकि विलियम हफ्ते में सिर्फ नौ पौंड कमाता था।

किस्मत से एक दिन मार्गरेट को एक घर मिल ही गया, जो वह आसानी से खरीद सकती थी। डिपाजिट के तौर पर उसे सिर्फ १५० पौंड देने थे। उसकी मां उसे यह रकम बतौर कर्ज देने के लिए तैयार हो गयी। यह रकम उसने सारी जिंदगी में पैसा बचाकर जमा की थी।

इस रकम को लेकर विलियम अपनी लड़की ऐलन को लेकर एस्टेट एजेंट के पास पहुंचा। पर, एस्टेट एजेंट ने उसे बताया कि घर कुछ समय पहले ही बिक चुका है। विलियम को लगा कि वह खाली हाथ घर पहुंचेगा, तो मार्गरेट बहुत नाराज होगी, उसके मन में एक विचार आया। वह एक टैक्सी लेकर शानदार होटल 'वेस्ट एंड' पहुंचा। अगले दो दिनों तक वे दोनों उस होटल में बड़े ठाट से रहे। और सारे पैसे खत्म कर वापस लौट आये।

हंसाइयां

'आवश्यकता है--वधू की। वर और वधू की जन्मपत्रियां आपस में मेल न खाएं, तो कोई बात नहीं, लेकिन वधू और होनेवाली सास की जन्मपत्रियां आपस में जरूर मिलनी चाहिए।'

—निशिकांत भारद्वाज

★

प्रेम में निश्चित सफलता के लिए आधुनिक प्रेमियों को सलाह—'वे अपनी प्रेमिकाओं से चांद तारे तोड़कर ला देने के स्थान पर हर माह कंट्रोल से पर्याप्त राशन ला देने का वादा करें।'

—नीरज जैन

डॉक्टर ने आराम करने की सलाह दी है, इसलिए आफिस जा रहा हूं

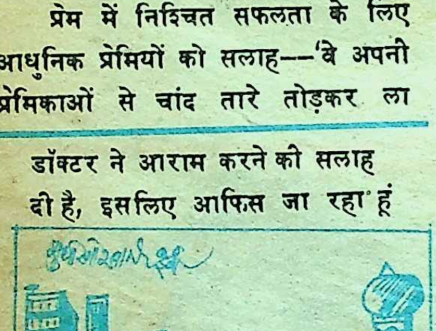

★

"जवान आदमी होकर तुम्हें भीख मांगते शर्म नहीं आती?"

"आती है साहब! लेकिन एक बार बिना मांगे ले लेने पर छह माह की सजा काटी है, इसलिए अब तो मांगकर ही लेता हूं, इसमें शर्म की क्या बात है?"

—मदनमोहन लोहिया

★

"देखिए, आपके लड़के ने मेरी नाक में दम कर रखा है। पत्थर मार-मारकर रोज मेरे घर के शीशे तोड़ देता है।"

"जी क्या करूं उसका, यह तो पागल है।"

"पागल है, तो अपने घर के शीशे क्यों नहीं तोड़ता?"

"इतना पागल थोड़े ही है कि अपने ही घर के शीशे तोड़े।"

—अनिल रसवंत राही

★

"कल रात एक लड़की ने मेरा बड़ा अपमान किया।"

"भला कैसे?"

'वह मुझसे पूछने लगी कि क्या आपको गाना आता है?"

"इसमें अपमान की क्या बात है?"

"पर उसने काफी देर तक मेरा गाना सुनने के बाद यह सवाल किया था।"

—कैलाश जैन

"क्या आपकी लड़की खाना अच्छा बना लेती है ?" अच्छे खाने के शौकीन लड़के के बाप ने शंका प्रकट की।

"जी हां, आप बेफिक्र रहिए, उसने खाना बनाना मुझसे सीखा है," लड़की के बाप ने विश्वासपूर्वक कहा।

—शकील अख्तर कुरेशी

★

एक युवती का विवाह एक नेता से हुआ। जब वह युवती ससुराल जाने लगी तो बड़ी-बूढ़ी औरतें उसे शिक्षा दे रही थीं, "बेटी ! कोई ऐसा कार्य न करना, जिससे तुम्हारे और तुम्हारे पति के बीच दरार पड़े, बल्कि ऐसा व्यवहार करना जिससे तुम्हारा पति तुमसे जुड़ा रहे और उसे इधर-उधर देखने का मौका ही न मिले . . . ।"

इसी बीच एक सहेली ने चुटकी ली, "दीदी ! तुम अपना उपनाम 'कुर्सी' रख लो, फिर देखना तुम्हारे नेताजी पति कैसे तुमसे चिपके रहते हैं।"

—श्रीनिवास वत्स

★

"क्या मुझे एक करोड़पति से जिसके आठ बच्चे हैं, शादी कर लेनी चाहिए," एक युवती ने अपनी सहेली से सलाह मांगी।

"यदि तुम उस स्थापित फर्म के साथ व्यापार की इच्छुक हो तो जरूर कर लो।"

—राकेश पाठक

दो लघु कविताएं

'रेवड़'

भेड़ों के रेवड़ को हांकने के लिए
सिर्फ एक भेड़ को
डंडा दिखाना होता है
पर आज ये अनगिनत भेड़ें
बिना हांके किधर जा रही हैं
आश्चर्य ! सबने स्वयं
डंडे भी ऊपर उठा रखे हैं
और घास की जगह
डंडे खाना ही इनकी नियति है
जिसे ये जन्म देंगी,
वही डंडा-संस्कृति है

इत्ता

हिमालय से आनेवाली हवाएं
ठंडी हैं
रेगिस्तान से आया पवन
तत्ता है
और समुद्र को छूकर वायु
शीतल है
कौन है जो ठंडा, तत्ता, शीतल है ?
मन ? शरीर ? या वह
जो दोनों से परे है
जो सर्वत्र व्याप्त है
इत्ता है ?

—— राजेन्द्र शर्मा

'गवाह चश्मदीद' शीर्षक, शीघ्र प्रकाश्य, काव्य-संग्रह से

१६२५, द्वारकापुरी दिल्ली-११००३२

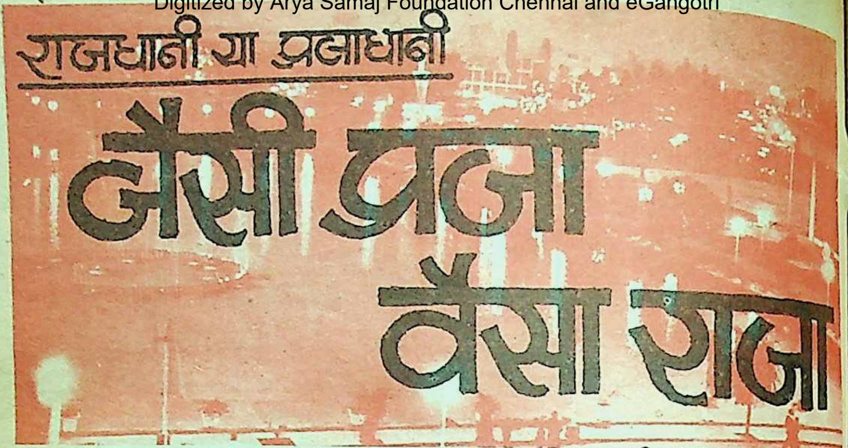

राजधानी या प्रजाधानी

जैसी प्रजा वैसा राजा

● आचार्य देवेन्द्रनाथ शर्मा

राजधानी शब्द बहुत पुराना है; इसलिए इससे आप परिचित हैं। प्रजाधानी शब्द से आपका परिचय पहली बार हो रहा है, क्योंकि इसका जन्म आज ही हुआ है; मैंने अभी-अभी इसे गढ़ा है। भाषाविज्ञान का विद्यार्थी रहा हूं; इसलिए जब नये अर्थ सामने आ खड़े होते हैं, तब उनके लिए नये शब्द गढ़ने पड़ते हैं। प्रजाधानी, राजधानी के वजन पर गढ़ा गया शब्द है; यों, अच्छा-बुरा, गोरा-काला, धनी-गरीब, विद्वान्-मूर्ख आदि की तरह आप इसे राजधानी का विपरीतार्थक भी समझ सकते हैं।

राजधानी का अर्थ आप जानते ही हैं; अतः प्रजाधानी के अर्थ में कोई उलझन नहीं होगी। फिर भी अध्यापक का जो सहज दोष है, वह पुनरुक्ति के लिए बाध्य कर रहा है। राजधानी वह है, जहां राजा रहे और प्रजाधानी वह, जहां प्रजा रहे। इसे साफ करने की जरूरत इस कारण पड़ी कि जहां राजा रहता है, वहां प्रजा नहीं रहती और जहां प्रजा रहती है, वहां राजा नहीं रहता, क्योंकि प्रजाधानी में रहने पर वह राजा होगा ही कैसे?

मंत्रीजी आपके नहीं, अपनों के

राजा शब्द राज् धातु से बना है, जिसका अर्थ है, चमकना; मतलब कि राजा वह जो चमकता रहे। और प्रजा? प्रजा को चमकने से क्या वास्ता? प्रजा चमकेगी तो उसमें और राजा में अंतर क्या रहेगा? इस अंतर को प्रत्येक राजा कायम रखना चाहता है और कायम रखने के लिए हर संभव-असंभव प्रयास करता है। कहिए कि अब राजा होता कहां है? अब तो मंत्री होता है, जो हमीं में से, हमारे ही द्वारा निर्वाचित, हमारा प्रतिनिधि है। तो मैं इतना ही कहूंगा कि आपका मन-मोदक आपको मुबारक हो। मंत्री होने के

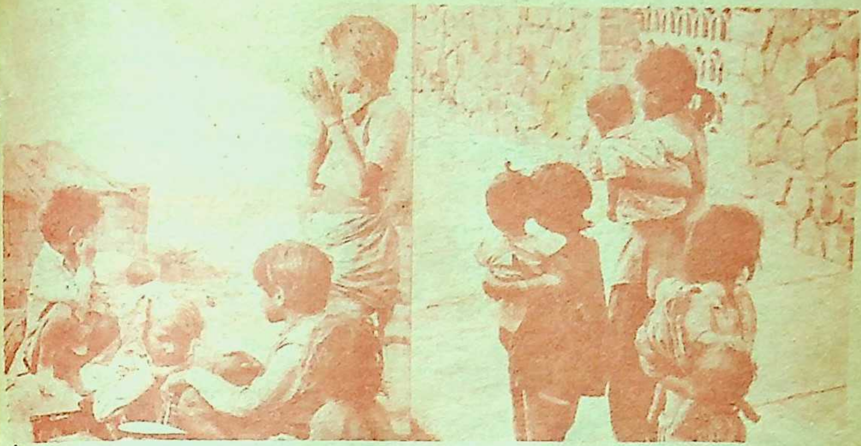

बाद अपने बीच से, अपने द्वारा निर्वाचित, अपने प्रतिनिधि से कभी मिले हैं आप? नहीं मिले हैं, तो पहले मिलने का कष्ट कीजिए; फिर, जो कहना है, कहिए। एक बार अपने प्रतिनिधि से अर्थात् मंत्री से मिलने के बाद सारा भ्रम दूर हो जाएगा।

याद रखिए, राजा और मंत्री का अंतर सिर्फ नाम का है। नागनाथ कहिए या सांपनाथ, बात एक ही है। प्रजा के लिए जैसा राजा, वैसा मंत्री। मंत्री पहले राजा को मंत्रणा देता था; मंत्रणा देते-देते एक दिन उसने सोचा कि मंत्रणा देने से राजगद्दी ले लेना कहीं अच्छा है। इसलिए उसने राजगद्दी हथिया ली। प्रजा को धोखे में रखने के लिए नाम उसने पुराना ही रखा।

राजधानी : जहां शासक रहते हैं

लोग राजधानी का अर्थ पूरा नगर समझते हैं; मैं राजधानी केवल उस भाग को कहता हूं, जिसमें शासक रहते हैं अर्थात् शासन-तंत्र के छोटे या बड़े पुर्जे। नगर का शेष भाग, जिसका शासन से साक्षात् संबंध नहीं है, प्रजाधानी है। इसको यों कहें कि जहां शासक रहते हैं, वह राजधानी; जहां शासित रहते हैं, वह प्रजाधानी। राजधानी में वैभव पलता है, प्रजाधानी में अभाव। राजधानी में विलास की अठखेलियां चलती हैं, प्रजाधानी में दुःख-दर्द की कहानियां। राजधानी की मादक चमचमाती रातें अपनी चकाचौंध से दिन को चुनौती देती हैं; प्रजाधानी की उदास, अंधेरी रातें, दिन की प्रतीक्षा में गुमसुम सो जाती हैं। राजधानी की रातों में उमंगों का ज्वार उठता है; प्रजाधानी की रातों में पस्ती का भाटा। राजधानी के दिन हीरे-मोती के होते हैं, प्रजाधानी के दिन धूप, धूल, और धुएं के। जब प्रजाधानी में आग बरसती है, तब वातानु-

कूलित राजधानी में जाड़ा लगता है और जब प्रजाधानी में हड्डी ठिठुरती है, तब राजधानी में पसीना छूटता है। गरमियों में प्रजाधानी के प्यासे कंठों को राजधानी के रंगीन फव्वारे व्यंग्य से देखते हैं। राजधानी की सड़कें टूटने के पहले बनती हैं, प्रजाधानी की सड़कें मरम्मत की प्रतीक्षा में अपना अस्तित्व खो देती हैं। राजधानी में प्रजाधानी को धोखे में रखने के रोज नये शगूफे छूटते हैं; नये नारे ईजाद होते हैं; नये जाल फैलाये जाते हैं और भोली-भाली प्रजाधानी उनमें फंसकर, भविष्य की दुराशा में, वर्तमान को झेलने का साहस बटोरती रहती है।

तुम नहीं तो हम नहीं

राजधानी और प्रजाधानी की एक पहचान और है। प्रजाधानी में जिंदगी बसर करने के सामानों के लाले पड़े रहते हैं और उन्हें पाने के लिए दर-दर की ठोकरें खानी पड़ती हैं; राजधानी के दरवाजों पर वे चीजें, आपसे आप पहुंचती रहती हैं; और, रखने की कमी से कुछ को निराश ही लौटना पड़ता है। फिर भी प्रजाधानी को नाज है, अपनी अहमियत का, क्योंकि बीचबीच में राजधानी उस अहमियत को यह कहकर उकसाती रहती है कि हमारा तो सारा दारोमदार तुम्हीं पर है; तुम नहीं तो हम भी नहीं। बेचारी प्रजाधानी! हद है मासूमियत की।

राजतंत्र हो या लोकतंत्र, शासक पहले स्व और स्वकीय को देखता है। मनुष्य का स्वभाव एक ही है, तंत्र चाहे कोई हो। सुख से किसे वितृष्णा है? बाल-बच्चों के मोह से कौन मुक्त है? राजधानी के कार्य-कलाप इन्हीं दो प्रेरणाओं से परिचालित रहे हैं। अपना सुख और बाल-बच्चों का आश्वस्त भविष्य। सत्ता की कुरसी पर जो भी बैठता है, उसकी चिंता यही रहती है। साधु, संत या संन्यासी को आज तक कुरसी किसी ने दी? प्लेटो ने आदर्श राज्य के लिए दार्शनिक राजा (फिलॉसफर-किंग) की कल्पना की, किंतु प्लेटो-जैसे महान और अद्वितीय दार्शनिक को भी किसी ने सत्ता के पास फटकने नहीं दिया और तब, जब एथेंस में लोकतंत्र था। अर्थात् निर्वाचन से कोई भी शासन की कुरसी पर बैठ सकता था, पर प्लेटो को उस कुरसी के योग्य नहीं माना गया।

लक्ष्मी-सरस्वती का शाश्वत संघर्ष

लक्ष्मी और सरस्वती के विरोध का अर्थ केवल आर्थिक विरोध नहीं है। धन को ही लक्ष्मी नहीं कहते : लक्ष्मी शब्द में श्री शोभा, सत्ता, संपत्ति इन सबका समाहार है। इसलिए लक्ष्मी और सरस्वती का विरोध ज्ञान और अधिकार के विरोध का सूचक है। ज्ञान और अधिकार कभी साथ नहीं चले हैं। अधिकार ने ज्ञान को हमेशा अपनी मुट्ठी में रखने का प्रयास किया है, क्योंकि ज्ञान खतरनाक चीज है। देवासुर-संग्राम का तात्पर्य बहुत लोग नहीं समझते। वे समझते हैं कि देवों

राजधानी में वैभव पलता है, प्रजाधानी में अभाव। राजधानी में विलास की अठखेलियां चलती हैं, प्रजाधानी में दुःख-दर्द की कहानियां। राजधानी की मादक, चमचमाती रातें, अपनी चकाचौंध से दिन को चुनौती देती हैं, प्रजाधानी की उदास, अंधेरी रातें दिन की प्रतीक्षा में गुमसुम सो जाती हैं। राजधानी की रातों में उमंगों का ज्वार उठता है, प्रजाधानी की रातों में पस्ती का भाटा। राजधानी के दिन हीरे-मोती के होते हैं, प्रजाधानी के धूप, धूल, और धुएं के।

और असुरों की दो भिन्न योनियां होती हैं और बहुधा असुर, देवों पर आक्रमण कर उन्हें पराजित, मर्दित किया करते हैं।

देवों और असुरों की न तो कोई विशेष योनियां होती हैं और न कोई निराला लोक। देव और असुर वस्तुतः शास्त्र-बल और शस्त्र-बल के, सात्विकता और तामसिकता के, सत् और असत् के प्रतीक हैं जिनका संघर्ष शाश्वत है। और, इस संघर्ष में विजय सदा शस्त्रबल की ही हुई है। आखिर निरीह ऋषि-मुनियों पर राक्षस आक्रमण क्यों करते थे? उनकी पर्ण-कुटियों में धन-दौलत का, हीरे-जवाहरात का कोई ढेर तो होता नहीं था? तब आक्रमण किसलिए? ध्वंस किसलिए? वस्तुतः भय और आतंक का कारण ऋषि-मुनियों का वल्कल नहीं, उनके ज्ञान का दीप्त आलोक था, जिसकी ज्वाला आसुरी शक्ति को भस्मशेष कर सकती थी। यज्ञ-विध्वंस का अर्थ भी हवन-कुंड को तोड़ना नहीं, ज्ञान-यज्ञ में बाधा डालना है, ज्ञान-साधना में विघ्न डालना है। देवासुर-संग्राम का अथवा ऋषि-मुनियों के यज्ञ-विध्वंस का प्रतीक पुरातन होते हुए भी अद्यतन है, क्योंकि शाश्वत है।

बुद्धिजीवी को सत्ता नहीं मिलती

लोकतंत्र से प्लेटो का विश्वास उसी दिन उठ गया, जिस दिन ५०१ निर्णायकों की अदालत ने ६० के बहुमत से, सुकरात-जैसे पहुंचे हुए ज्ञानी, विवेकी, सर्वहितकामी को इसलिए मृत्युदंड के योग्य मान लिया, क्योंकि वह एथेंस के नवयुवकों को तर्क और बुद्धि से काम लेने की सलाह देता था। रूढ़ि और अनीति का विरोध करने के लिए सुकरात को जहर का प्याला पीना पड़ा। इन ढाई हजार वर्षों में मनुष्य की प्रकृति अधिक उदार या विवेक-संपन्न हुई हो, इसका प्रमाण कहीं नहीं दीखता। चाहे जो कहिए, अधिकार ज़हर का प्याला पिलानेवालों के ही हाथों में रहा है। कहते हैं कि सत्ता बंदूक की नली में रहती है। जब बंदूक नहीं थी, तो सत्ता तलवार में थी पर थी, उन्हीं लोगों के हाथों में, जो या तो बंदूक पकड़ सकते हैं या तलवार। गीता और बाइबिल पकड़नेवाले को किसी ने सत्ता के पास नहीं जाने दिया। भारतीय लोकतंत्र को ही ले लें। अब तो यह बात सिद्ध हो चुकी है कि चुनाव में जीतने के

लिए दो चीजें अनिवार्य हैं—धनबल और बाहुबल। इसमें ज्ञान-बल के लिए कहीं भी गुंजाइश नहीं है। मेरे एक परिचित विधायक निर्वाचित होने के बाद मुझसे मिलने आये। मैंने उन्हें बधाई दी और कहा कि मुझे भरोसा था कि आप जीतेंगे, क्योंकि आपके पास पैसे हैं और चुनाव जीतने के लिए पैसे जरूरी हैं। उन्होंने बड़े अदब से मेरे कथन में संशोधन करते हुए कहा—"जी, आपकी कृपा से मेरे पास पैसे तो हैं हीं, साथ-साथ बाहुबल भी है। यहां चुनाव में धनबल से बाहुबल ज्यादा जरूरी है।"

कुरसी की भाषा एक है

आपने गौर किया ही होगा कि कुरसी की भाषा एक होती है, उस पर चाहे जो भी बैठे। इसी तरह विरोधी दल की भाषा भी एक ही होती है। लगता है, जैसे फार्मूला बना हुआ है—कुरसी पर बैठने के बाद ऐसा बोलेंगे और विरोध में बैठने पर ऐसा बोलेंगे।

एक बड़े राजनीतिज्ञ ने कहा है कि, सफल राजनीतिज्ञ वह है जो जनता की आवश्यकता और मनःस्थिति को आंककर एक आकर्षक नारा दे और जब उसे असफल होते देखे, तो कोई बहाना बनाकर उस नारे को छोड़ कोई दूसरा नारा उछाल दे। इसी तरह नारे बदल-बदलकर जनता को धोखे में रखता रहे। जनता को सामाजिक कल्याण तथा सार्वजनिक विकास नहीं चाहिए; उसे योग्य, कर्मठ, चरित्रवान् प्रतिनिधि नहीं चाहिए; उसे अपनी जाति का आदमी चाहिए, अपने संप्रदाय का आदमी चाहिए। ऐसे प्रजातंत्र में प्रजा की जो दशा होनी चाहिए, वही तो हो रही है। पेड़ लगाइएगा नीम का और फल चाहिएगा आम का, तो क्या होगा? पहले कहावत थी—'यथा राजा तथा प्रजा।' अब इसे उलट दीजिए—यथा प्रजा तथा राजा। प्रजा जैसी होगी, उसे शासक वैसा ही मिलेगा, क्योंकि वह प्रजा का ही प्रतिनिधि है। आपका प्रतिनिधि बेरोजगार था। आपने उसे रोजगार दे दिया। पांच वर्ष बाद रोजगार कायम रहे, इसका उसे इंतजाम करना है। उन बाहुबलियों को प्रसन्न रखना है जिनकी सहायता से वह गद्दी-नशीन हुआ है। को सहलाने में चौबीसों घंटे लगे रहते हैं। प्रजा के लिए वह समय कब निकाले?

मेरे द्वारा परिभाषित राजधानी को ही देखकर किसी ने स्वर्ग की कल्पना की होगी; जहां सुरा, सुंदरी, सुख, सुषमा, सुविधा, सिद्धि, समृद्धि सुलभ हों, वहीं तो स्वर्ग है। और नरक देखना हो तो प्रजाधानी में चले जाइए। नरक इसलिए कायम है कि रहनेवाले उसमें रह रहे हैं। जिस दिन रहनेवालों को नरक में रहना गवारा नहीं होगा, उसी दिन नरक मिट जाएगा।—पथ-४, राजेन्द्रनगर, पटना-८

> **पाप से सबसे अधिक डरो, तो समझ लो कि तुम्हारी नैतिक वीरता परिपूर्ण हो गयी।**
>
> —सिमन्स

कहानी

शहीद की पत्नी

● उमेश सहगल

पेट्रोल की कीमत बढ़ने से व्यवसाय मंदा पड़ गया था। सुबह से केवल दो ही कारों ने पेट्रोल लिया और वह भी केवल पांच-पांच लीटर। अपनी छोटी-सी केबिन में बैठी, रोहिणी चिंता-मग्न थी।

केबिन में उसका दम घुटने लगा था। उसने माथे पर छलक आयीं पसीने की बूंदें पोंछी और भटकती निगाह सामने दीवार पर लगी फूलमाला से सुसज्जित तसवीर पर टिक गयी। विनोद अपनी शानदार सैनिक पोशाक में मुसकरा तो रहा था, पर ऐसे, जैसे मुसकराहट बाहर से चिपका दी गयी हो... चेहरे पर भाव—हर्ष का नहीं, अट्टहास का था।

बाहर कार के रुकने की आवाज सुनायी दी तो सुस्त, थकानभरी नजरों से उसने उस ओर देखा। श्वेत अम्बेसडर कार थी, वरदीपोश ड्राइवर पेट्रोल भरवाने बाहर निकला, बाहर निकल रहा था।

कार में 'अटेंडेंट' पेट्रोल भर रहा था कि पीछे का द्वार खुला और एक साहब बाहर निकले। वह एकाएक चौंककर अपने स्थान से उठी।

'अशोक ! यहां कैसे ?'

वही तीखी नाक, वही बिखरे बाल !

अशोक की नजर उस पर पड़ी, तो आंखें खुली की खुली रह गयीं।

"रोहिणी ... तुम !"

"तुम ... यहां ... ?" रोहिणी के थरथराते ओठ सिर्फ इतना ही कह पाये।

कुछ देर दोनों चुप ...! एक दूसरे को देखते रहे। फिर रोहिणी ने अपने को संभाला और संकेत से अशोक को पीछे आने को कहकर वह केबिन में दाखिल हुई।

विनोद की फूलमाला से सुसज्जित फोटो को देखकर वह हड़बड़ाकर रुका।

"अरे, यह क्या ... ?" फिर, जैसे उसे पूरी बात समझ आ गयी, वह रोहिणी की ओर देखने लगा, "हे भगवान ! यह कब ... कैसे ... ?"

रोहिणी ने अलमारी से पदक निकाला, साड़ी के पल्लू से उस पर जमी गर्द साफ की और अशोक की ओर बढ़ा दिया। पदक पर लिखा था, 'मरणोपरांत ...'

अशोक स्तब्ध उसे ताकता रहा।

"बंगला देश युद्ध में ... तुम्हारे विदेश जाने के कुछ ही दिनों बाद . . ."

फिर रोहिणी की आंखों के भीतर का बांध टूट पड़ा। वह फूट-फूटकर रोने लगी।

"दस वर्ष. . .दस लंबे वर्ष। मुझे बता ही दिया होता !"

"तुम्हारा पता . . . तुमने बताया ही नहीं . . ."

"रूही . . . !" उसने उसका हाथ लपक लिया।

रोहिणी का दिल धड़कने लगा। उसने अपना हाथ छुड़ाया।

"माफ करना, भूल गया था . . . तुम . . . शहीद की पत्नी . . ."

दोनों चुप हो गये, आंखें मेज पर गड़ाये रहे। फिर चुप्पी भारी लगने लगी। —"चाय पिओगे?" और बिना उत्तर की प्रतीक्षा किये उसने 'अटेंडेंट' के लिए 'बेल' दी।

"अपने बारे में बताओ," एक घूंट लेते हुए रोहिणी ने कहा, "दस वर्ष बीत गये . . . इतना लंबा अरसा, कई युगों के बराबर लगता है।' रोहिणी की आंखें धूमिल पड़ने लगी थीं।

"दस वर्ष !" अशोक कुछ चौंका, जैसे उसे इसका आभास प्रथम बार अभी-अभी हुआ हो। "समय ऐसा बीता कि पता ही नहीं चला। विलायत से पी. एच-डी. की, फिर अमरीका चला गया। . . . काम इतना कि समय के प्रवाह से भी बेखबर . . . या यूं कहो कि समय के चक्र से मुक्त होने के लिए ही काम में जुटा रहता . . ."

अशोक चुप हो गया। आंखों के सामने जैसे धुंधले बादल छा गये। फिर, जैसे एकाएक कुछ स्मरण हुआ हो, वह अपने स्थान पर खड़ा हुआ।

"भूल ही गया था, जरूरी काम से जाना था।"

कार में बैठने ही वाला था कि रोहिणी ने कुछ साहस बटोरा। "फिर आओगे न?"

"हां, अवश्य . . . अभी दो दिन और यहां हूं। जाने से पूर्व एक बार . . ."

जब वह केबिन में लौटी, तब जैसे यादगारों का तूफान मन में उठ रहा था।

विनोद और अशोक गहरे मित्र थे। दस वर्ष स्कूल में एक साथ पढ़े, जब कालेज में बी. एस-सी. कर रहे थे। रोहिणी भी उसी कालेज में मनोविज्ञान की छात्रा थी। उसकी मुलाकात पहले अशोक से हुई

उसी ने विनोद से परिचय कराया था।

अशोक लंबा-चौड़ा हृष्ट-पुष्ट नवयुवक था—किसी फिल्म के नायक से कम नहीं। कक्षा में भी प्रथम 'पोजिशन' और खेल के मैदान में भी सबसे आगे।

रोहिणी को अशोक से पहले दिन से ही प्यार हो गया था। शायद वह भी उसकी ओर खिंचा था, कई बार उसे आंख के कोने से उसे झांकते पाया था। पर वह अपनी भावनाओं का इजहार नहीं कर पाया था। शायद इसीलिए कि जब भी वह उससे मिली, विनोद हमेशा साथ होता। पर अब सोचने से क्या लाभ?

याद आया... सन १९७२ का फरवरी मास था... बंगला देश युद्ध अभी समाप्त ही हुआ था। श्वेत साड़ी में, सिर लटकाये, राष्ट्रपति भवन के शानदार दीक्षा-कक्ष में प्रवेश कर रही थी। लगता था, सभी उपस्थित लोगों की नजरें उसी पर टिकी थीं। एक ऊंचे लंबे वरदीपोश ने उसे एक कुरसी पर बैठाया।

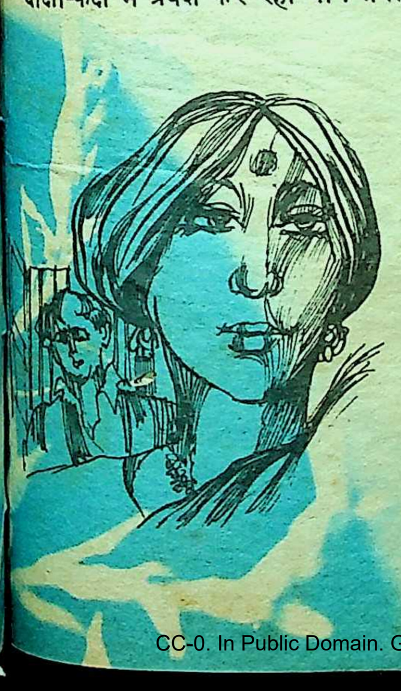

'हाल' में राष्ट्रपति प्रविष्ट हुए... सभी अपने-अपने स्थान से उठे। अभी बैठे ही थे कि शांति को चीरती हुई एक आवाज लाउड स्पीकर से निकली और समस्त वातावरण पर छा गयी।

"देवियों और सज्जनो, हम आज देश के एक महान सेनानी...लेफ्टीनेंट विनोद शर्मा का नाम..."

अपने पति का नाम सुनकर चौंकी, पर नतमस्तक अपने स्थान पर अडिग बैठी रही।

"४ दिसंबर अर्ध रात्रि से कुछ बाद, शत्रु ने भारी गोला-बारी आरंभ कर दी। यह क्षेत्र हमारी रक्षा के लिए अत्यंत महत्त्वपूर्ण था। लेफ्टीनेंट खन्ना, जिनका विवाह अभी एक माह पहले ही संपन्न हुआ था..."

सिर्फ एक माह! कितना अल्प समय लगता था, पर कितना लंबा और भयावह... अब भी कभी उसके बारे में स्मरण हो आता, तो रोंगटे खड़े हो जाते...

विवाह के कुछ ही दिन पहले अशोक ने उससे यह कहकर चौकन्ना कर दिया कि वह हमेशा के लिए देश छोड़कर अमरीका जा रहा है।

'विनोद से विवाह कर लो,' उसने कुछ ऐसे लहजे में कहा था, जैसे वह रात के खाने की दावत दे रहा हो। वह

बहुत प्यार करता है तुम्हें, जानती हो ?'

न जाने कितनी बार बाद में वह जोर-जोर से चिल्ला चुकी थी वह शब्द कक्ष के एकांत में, आंधी की तेज हवाओं और गगन के मुक्त बादलों से। पर उस दिन यह शब्द उसके गले में ही सूखकर रह गये थे, 'पर मैं तुम्हें प्यार करती हूं, अशोक, तुम्हें ! सिर्फ तुम्हें !'

पिछले दस वर्षों में कितनी बार संतप्त हुआ था मन . . . पर वक्त था, एक बार गुजर गया, तो क्या फिर कभी लौटकर आ सकता है ?

रोहिणी की चुप्पी को अशोक ने 'हां' मान लिया।

विनोद अस्वस्थ था। दोनों जब रोज की तरह काफी हाउस में मिले, तब कनॉट प्लेस जाने का सुझाव अशोक का ही था।

इसी बीच उनके हाथ एक दूसरे की गिरफ्त में जकड़ गये . . . जैसे आकाश में स्वतंत्र मदमस्त मंडराते बादल के दो टुकड़े एक दूसरे में लीन हो गये हों।

टैक्सी लेकर होस्टल की ओर लौटे हाथ अभी भी एक दूसरे के आलिंगन में लीन . . .

होस्टल के गेट पर थमे। अशोक के ओंठ थरथराये, "रूही . . . !"

फिर वह चला गया। रोहिणी के कान एक बार फिर उसी शब्द सुनने हेतु तरस गये . . .

विवाह संपन्न हुआ . . . डोली में बैठी वह विनोद के साथ घर पहुंची . . . लाउडस्पीकर से आती आवाज से विचारों का प्रवाह टूटा।

". . . ले. खन्ना ने शत्रु के टैंकों पर गोले बरसाने आरंभ कर दिये और, इससे पहले कि शत्रु अपने को संभाल पाता, उसके चार टैंक तहस-नहस हो गये। पर पांचवें टैंक ने मशीन गनों से उन पर वार कर दिया—इस साहस और दिलेरी से प्रोत्साहित होकर टुकड़ी के अन्य जवानों ने धुंआंधार गोलाबारी आरंभ कर दी। ले. खन्ना शहीद हो गये, उनके अभूतपूर्व साहस, और नेतृत्व को देखते हुए उन्हें परमवीर चक्र से सम्मानित किया जा रहा है . . ."

. . .शादी के पश्चात पहली रात . . . सुहागरात। सुसज्जित शैया पर बैठी रोहिणी विनोद की प्रतीक्षा कर रही है।

किवाड़ खुला और पद-चाप उसी की ओर बढ़ते हुए . . . कहना कठिन था कि किसका स्वर कानों में अधिक तेज... उनका या हृदय की धड़कन का . . .

चेहरे से घूंघट हटा. . .दो आंखें उसके चेहरे पर टिक गयी। उसकी नजरें विनोद के चेहरे से फिसलकर अपनी सैंडलों पर टिक गयीं।

'मैं तुम्हें प्यार करता हूं . . !'

शब्दों के जाल में मधु की मिठास... पर इसके पीछे कर्कशता के कुछ संकेत। या उसका भ्रम तो नहीं ? आंखें सैंडलों पर ही टिकी रहीं।

'तुम भी ... मुझसे प्यार करती हो ?'

आवाज के पीछे चौंकानेवाला रूखापन।

'हां-हां, क्यों नहीं...' अनायास ही कंपकंपाते लबों से स्वर निकला।

'झूठ!' दिल दहला देनेवाली गर्जन।' चुड़ैल! झूल ले उसकी बाहों में!"

'क्या...क्या कह रहे हैं?' हाथ कंपकंपाने से चांदी के कलीरे खनके।

विनोद विष उगलता गया, 'मेरा सबसे उत्तम मित्र! कितनी बार डींग मारी...तुम्हारे लिए मैं अपना सब कुछ कुरबान कर सकता हूं...क्लास में प्रथम 'पोजिशन' लेता, तो मुझसे माफी मांगता, जैसे अपने कम नंबर देखकर मैं शर्म से पृथ्वी पर धंसा चला जा रहा हूं! क्रिकेट का कप्तान चुना गया...फिर अपना मनहूस चेहरा लेकर मेरे सामने खड़ा हो गया। 'यह सब तुम्हारी प्रेरणा का फल है 'विनोद' वह गिड़गिड़ाते हुए बोला, जैसे उसका कप्तान चुना जाना कोई मैदान मारने के बराबर हो! ... प्रतिशोध की आग में भड़कता ही रहा। अवसर मिला...तुम्हारा हाथ मांग लिया।'

रोहिणी सकपकाकर अपने स्थान पर उठी।

'विनोद! क्या कह रहे हो? अपने सबसे पुराने मित्र ...' कंधे से पकड़कर धक्का दिया, वह धड़ाम से बिस्तर पर गिरी।

'आखिर दिल बोल ही पड़ा!'

'बस करो, बस करो!' रोहिणी चिल्लायी। 'और कुछ कहोगे तो कान के परदे फट जाएंगे।'

'क्यों नहीं', विनोद तेजी से उसकी ओर बढ़ा और क्षणों में उसके शक्तिशाली बाजुओं ने उसे पलंग पर गड़ा लिया। कुछ ही क्षणों में उसके कपड़े तार-तार हो गये, चीख भी नहीं निकल सकती थी।

दूसरे ही दिन उसे युद्ध भूमि की ओर प्रस्थान करना पड़ा...

"श्रीमतीजी, राष्ट्रपति आपकी प्रतीक्षा कर रहे हैं" साथ से ही एक नम्र आवाज ने ख्वाब तोड़ा। नम आंखों से राष्ट्रपति की ओर बढ़ी, तालियों के गड़गड़ाहट के बीच...

अतीत की इन यादगारों से कब से सूख चुके अश्रु आंखों को कांटों की तरह चुभने के लिए उमड़ पड़े और दिल में भड़कती हुई क्रोधाग्नि...

दिन बेचैनी से बीता और फिर रात। दूसरे दिन भी बाट जोहती रही। पर वह नहीं आया। तीसरा दिन आया तो भय

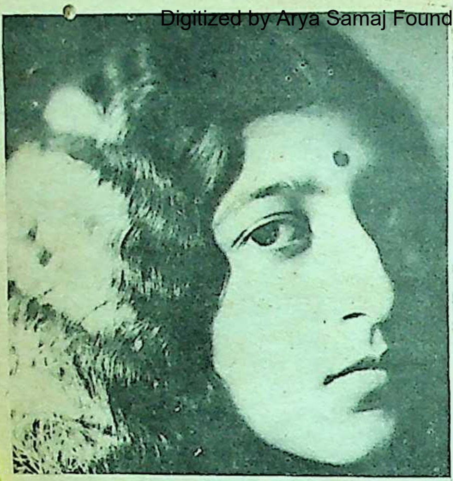

था कि कहीं उसे मिले बगैर ही न चला जाए। आज जाने को कहा था ... चारों ओर निराशा के बादल मंडराने लगे थे जब ...

“बहुत देर हो गयी रोहिणी !” एक आंधी के झोंके की तरह अशोक केबिन में दाखिल हुआ। “जहाज जाने में सिर्फ एक घंटा रह गया है। चलो, कार में ही बातें कर लेंगे।”

“क्या जल्दी है ?” वह चीखना चाहती थी। “आज नहीं तो कल चले जाना। एक दिन की ही तो बात है। दस वर्ष के बाद मिले हैं ... फिर न जाने कब ... ?”

पर जबान से एक भी शब्द नहीं निकला। चुपके से अपनी जगह से उठी और उसकी बगल में कार में बैठ गयी।

“कल क्यों नहीं आये ?” रोहिणी आखिर मौन तोड़ने में सफल हो गयी।

“आज जाना था न ? इतना काम था, एक क्षण की भी फुर्सत नहीं मिली।”

कार तेजी से हवाई अड्डे की ओर बढ़ती रही।

“शादी तो कर ही ली होगी ?” आखिर रोहिणी की भवनाएं शब्दों के जाल में बुन ही गयीं।

अशोक ऐसे हंसा, जैसे उसने कोई मजाक कर दिया हो। “इस बारे में सोचने की फुर्सत ही कहां मिली।”

रोहिणी का दिल धड़कने लगा... अभी कंवारा ही था। भीतर से एक आवाज उठी ... कह दो ... “थाम लो मेरा हाथ। मैं तुम्हारी थी, हूं और हमेशा रहूंगी ...” पर लब निःस्वर थर्राते रहे ... टूटी वायलिन के तार की तरह ...

कार रुकी। “अरे, तुम तो बिलकुल चुप ही रही !”

“कह दे, कह दे !’ मन में एक हथौड़ा पीट रहा था।’ कुछ ही क्षण और हैं... फिर न जाने कब लौटे ...’

“कुछ कहा तुमने ?” अशोक ने एकाएक पूछा।

“नहीं” रोहिणी का सरल-सा उत्तर था।

हवाई अड्डे में प्रविष्ट हुए तो लाउड स्पीकर में अशोक की ‘फ्लाइट’ का ही ऐलान हो रहा था।

‘अभी भी वक्त है।’ अंदर से कांटों-सी चुभती आवाज बाहर निकलने को बेकरार थी। ... ‘कह दो ... कह दो। एक बार कह दो।’

“तुम महान हो रूही, सचमुच महान।”

अशोक की आंखें भर आयी थीं। "ईश्वर तुम्हें शांति दे, अपना कर्तव्य निभाने की। एक शहीद की महान पत्नी...."

रोहिणी का गला सूख गया, जो स्वर वहां बुलबुलों की तरह फुदक रहे थे, वही बर्फ के ढेले बनकर रह गये।

एकाएक अशोक घूमा और तेजी से कस्टम के काउंटर के पास चला गया। रोहिणी भी धीरे से घूमी और हवाई अड्डे से बाहर निकल आयी।

क़ेबिन में लौटकर न जाने कितनी देर अपने मृत पति के स्वर्ण परमवीर चक्र को ताकती रही।

—१४/६, तिलक मार्ग, नयी दिल्ली

काला-जादू, प्रेत-विद्या, अशरीरी आत्माओं से संपर्क—यह सब आज के अंतरिक्ष युग में अंध-विश्वास और बेमानी लगता है। लेकिन आज भी ऐसे लोग हैं, जो स्वयं काला-जादू जानते हैं, प्रेतों के कोप के शिकार हुए है: प्रस्तुत हैं, कुछ ऐसे ही रोमांचक प्रसंग।

एक प्रेत दो बहनें

• राजशेखर

वह ब्रिटेन की एक प्रख्यात गायिका है, साथ ही बी.बी.सी. लंदन की सुपरिचित कलाकार भी। नाम है—टोया विलकॉक्स! संगीत और अभिनय के अलावा टोया ने एक और कला में महारत हासिल की है, और यह है—'काले-जादू की कला!'

तेइस वर्षीया टोया विलकॉक्स स्वयं बताती है कि उसने काले-जादू का प्रयोग कई लोगों पर किया है। यही नहीं, वह एक ताबूत में भी कई रातें बिता चुकी है, बिल्कुल नग्न!

अपनी किशोरावस्था की एक घटना याद करके टोया आज भी रोमांचित हो उठती है। स्वयं उसके शब्दों में—

'तब मैं चौदह वर्ष की थी। मेरी बड़ी बहन एक कैंसर-वार्ड में काम करती थी। एक दिन वहां एक वृद्धा की मृत्यु से वह अत्यंत विचलित-सी हो गयी। उसी रात जब मेरी बहन सो रही थी, तब वह मृत वृद्धा धन्यवाद देने के लिए आयी। तब मेरी बहन कांपने लगी थी। बगल के कमरे में सो रहे पिता की भी यही स्थिति थी। उनको लगा कि जैसे दिल का दौरा पड़नेवाला है। उसी दौरान मेरे कमरे में लगे चित्र हवा में उड़ने लगे थे। मेरे साथ इस तरह की छोटी-छोटी दुर्घटनाएं अक्सर घटने लगीं। हमें लगता था कि हमारा घर किसी भूत-प्रेत की गतिविधियों का केंद्र हो गया है।

'उन्हीं दिनों मुझे अनेक किशोरों के पत्र मिले, जिनमें ऐसे ही कटु अनुभवों का उल्लेख था। तब मैं सोचा करती थी कि मैं पागल होती जा रही हूं।'

ताबूत में सोना

टोया यहां तक कहती है कि इस सबके बावजूद पूरे परिवार में वही एक सदस्य ऐसी थी, जो पुराने शयन-कक्ष में सो सकती थी। वहां सोना न जाने, क्यों उसे अच्छा लगता था। लगता था, उस शयन-कक्ष से उसे विशेष लगाव हो गया है।

पहले टोया की मां भी उसी शयन-कक्ष में सोती थी। वे एक अज्ञात पुरुष की आवाज सुनकर जब-तब जाग जाती थीं, जो उनको 'कुछ' करने का आग्रह करता था।

टोया अनुभव करती थी कि उसका यह शयन-कक्ष पहले के कमरे से कहीं ठंडा है। वह दक्षिणी लंदन में एक खाली कबाड़ीखाना था। उस शयन-कक्ष में उसका पलंग एक ताबूत हुआ करता था, जिसमें वह सोती थी।

इससे पूर्व वह ठंडी जमीन पर एक कंबल बिछाकर सोया करती थी। फिर फ्रांस के दो कलाकारों से उसने 'फाइबर ग्लॉस' का यह ताबूत प्राप्त कर लिया, जो जमीन पर सोने की बजाय कहीं गरम था।

घृणा का नतीजा

उन्हीं दिनों टोया के कुछ कागजात और डायरियां चोरी हो गयीं। उसी कबाड़ीखाने के नीचे दो अन्य लोग काम किया करते थे, जो टोया को देखकर हंसा करते थे।

टोया उनको लेकर बुरा सोचती और घृणा करती थी। इसका नतीजा तीन सप्ताह के पश्चात उस समय सामने आया, जब गुप्तचर विभाग के एक अफसर ने कबाड़ीखाने का दरवाजा खटखटाया। उन दोनों व्यक्तियों को बाहर बुलाया और तत्काल गिरफ्तार करवा दिया। शीघ्र ही इन लोगों से टोया की खोयी हुई साम भी बरामद हो गयी।

टोया अब भी उत्तरी लंदन के फ्लेट में रहती है, जहां उसके प्रशंसक हैं।

हॉर्पर-परिवार में

हार्पर-परिवार भी तीन वर्ष तक एक की गतिविधियों का केंद्र-बिंदु बना लंदनवासी इस परिवार की ग्यारह जैनिट ही सबसे पहले इस रूह का हुई। कोई अज्ञात शक्ति सोयी हुई को पलंग से उठाकर फेंक दिया करती और जब-तब उसका चेहरा विकृत हो था। वह आश्चर्यजनक ढंग से दीवारों बीच से गुजर जाया करती। इसके जब परिवार के लोग टेलीविजन देख होते थे, घर की विभिन्न वस्तुएं उड़-उड़ उन्हें आहत कर दिया करतीं... स्वतः ही एक कमरे से दूसरे कमरे में जातीं...।

हार्पर-परिवार ने इन घटनाओं जांच करवायी, तब पता चला कि घर पर एक ऐसे व्यक्ति की रूह की है, जो वहां तिरेपन वर्ष पहले रह था। कुछ अन्य घटनाओं के बाद ओझा ने बताया कि इस रूह की उम्र बहत्तर है, और वह अपने परिवार को देखने

लिए यहां आती है, जो अब नहीं है। कभी उसके परिवार में तीन लड़कियां, दो लड़के, एक वयस्क जोड़ा और एक बच्चा था . . .।

उसी घर में नीचे के हिस्से में कुरसी पर बैठे-बैठे बहत्तर वर्ष पूर्व उस व्यक्ति की मृत्यु हो गयी थी।

जिस प्रकार अचानक ये घटनाएं शुरू हुई, उसी तरह एकाएक समाप्त भी हो गयीं। तीन वर्ष का यह समय चाहे किसी अन्य के लिए 'एग्जार्सिस्ट' फिल्म के किसी अंश के समान हो सकता है, लेकिन हार्पर-परिवार के लिए यह एक सचाई थी।

एक प्रेत और दो बहनें

एक सुनसान फॉर्म स्थित घर में दो बहनें अकेली सो रही थीं। तब एक सैनिक की रूह उनके शयन-कक्ष में घुम आयी। उसने सोती हुई एक लड़की के मुंह पर चपत लगाकर उन्हें आतंकित कर दिया।

सोलह वर्षीय शीना डॉनस का विश्वास था कि अपनी बहन को बचाने के लिए उसने प्रेत को कुपित कर दिया है। डॉनस परिवार मूलतः यार्कसॉट का रहनेवाला था। छियालीस वर्षीय निकोलस डॉनस के आयन नामका एक पुत्र और उससे छोटी शीना एवं ऐम्या दो पुत्रियां थीं। इस परिवार को अत्यंत हर्ष हुआ, जब वे गांव के फॉर्म स्थित नये मकान में आये।

अक्तूबर, १९७८ में शीना को लगा कि घर में स्वजन के अतिरिक्त भी एक प्राणी मौजूद रहता है। शीघ्र ही दस वर्षीय ऐम्या एवं उसकी मम्मी ने भी कुछ ऐसा ही महसूस किया।

हार्पर का पड़ोसी जॉन बरकोंव
सामने अधर लटकी जैनिट

एक दिन एक मेहमान ने उनको बताया कि वह एक ऐसे व्यक्ति से यहां मिल चुका है, जो फौजी वरदी में था। यही नहीं, डॉनस-परिवार का वफादार कुत्ता भी उस कमरे में नहीं जाता था, जिसमें यह घटना घटी थी।

गहरी सांसों का स्पर्श

एक बार रात के तीन बजे शीना गरम सांसों के स्पर्श से जाग गयी।

इसके दो सप्ताह पश्चात उसकी मम्मी को भी कुछ अज्ञात आवाजें सुनकर सदमा-सा पहुंचा था।

ऐम्या ने अपने माता-पिता को बताया कि वह रोज रात के तीन बजे जाग जाती है और अपने पेट पर वजन अनुभव करती है। एक बड़ी छाया-सी उसके शयनकक्ष में घूमती रहती है।

कुछ रातों के उपरांत उसने हवा में

उड़ती हुई एक पुस्तक देखी । इससे ऐम्या बेहद डर गयी । उसने अपनी मम्मी से कहा, 'वह अकेले में एक भयावह आदमी से डरती है ।'

यह गतिविधियां कुछ समय के बाद रुक गयीं, क्योंकि डॉनस-परिवार ने उस भुतहे कमरे में जाना छोड़ दिया था । कुछ समय उपरांत दोनों लड़कियों को एक साथ सुलाना भी शुरू कर दिया गया, ताकि वे डरें नहीं । परंतु इस पर भी हर रात तीन बजे ऐम्या की नींद टूट जाती । वह अपनी छाती पर वजन अनुभव करता और भयभीत होकर चीख उठती ।

सौ वर्ष पूर्व मरे आदमी का भूत

तब डॉनस-परिवार ने लिबरल कैथोलिक चर्च के पुजारी रेवरेंट जोहन को भूत भगाने के लिए बुलाया गया । पुजारी ने दो घंटे के विविध कठिन क्रिया-कलापों के बाद बताया, कि 'हम एक ऐसे आदमी की रूह का सामना कर रहे हैं, जो लगभग सौ वर्ष पूर्व मरा था । मैं दुःसाध्य प्रयासों से इस रूह को बंदी बना रहा हूं ।'

झाड़-फूंक के बाद फॉर्म स्थित उस घर का वातावरण सुखद हो गया, जहां लड़कियां पुनः गहरी नींद सो सकती थीं ।

कटे हुए हाथों का चमत्कार

फ्लोरिस वारविक्क ने कभी कहीं सुना था कि 'डारटाकूर' के 'डेवन' में अपराधियों को आतंकित करनेवाले भूतों के हाथ भी होते हैं ।

जब एक शाम अट्ठाइस वर्षीया फ्लोरिस भ्रमण के पश्चात लौट रही थी, तब उसकी गाड़ी एकाएक घरघरा रुक गयी । फ्लोरिस बाहर आकर गा की जांच करने लगी । तब उसे लगा कि कोई अन्य भी वहां मौजूद है, जो उसे दे रहा है । उसके खुद के शब्दों में, ' देखा, दो रोंयेदार बड़े हाथ 'विडस्क्री' पर ठहरे हुए थे ।'

उसने बिना शरीर के उन हाथों को भयभीत नजरों से देखा, जिन्होंने साठ वर्षों से वहां के लोगों को डरा र था । वे भयावह हाथ उससे कुछ इंच दूरी पर ही थे । उसके चिल्लाने पर हाथ एकाएक लुप्त हो गये ।

जब वह बीस मील की दूरी तय कर अपने निवास-स्थान को वापस आयी, उसे लगा कि यह एक दुःस्वप्न था । पर उसके मित्रों ने बताया कि सन १९ में उन हाथों ने खच्चरों के एक बड़े को गिरा दिया था ।

इसके बाद अनेक भयावह घटन घटीं, जिनमें उन हाथों का हाथ था ।

लोगों ने उन अज्ञात हाथों द्वा अपनी गाड़ी का स्टीयरिंग हथियाते देखा था, जिससे गाड़ियां बेकाबू हो दुर्घटनाग्रस्त हो गयी थीं । अंतिम हादसा सन १९६० में हुआ, जब एक कार चालक की मृत्यु हो गयी । उसकी लाश एवं मलबे की जांच से दुर्घटना का कोई खास कारण प्रकाश में नहीं आ सका था ।

फ्लोरिस वास्तव में भाग्यशाली थी कि एक बड़ी दुर्घटना का शिकार होते बच गयी ।

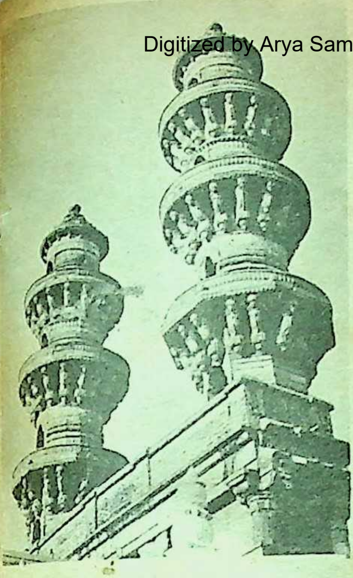

मौत के साये में पलती हिलती मीनारें

● डॉ. धीरेन्द्रकुमार दीक्षित

अहमदाबाद की सिद्दी बशीर मस्जिद की हिलती मीनारें : वास्तुशिल्प का अद्भुत उदाहरण और पर्यटकों की जिज्ञासाओं एवं आकर्षण का केंद्र। अफसरशाही, लालफीता-शाही, राजनीतिक दबावों और कुछ लोगों के न्यस्त स्वार्थों के कारण ये मीनारें सर्वनाश की कगार पर पहुंच गयी हैं।

अहमदाबाद की विख्यात हिलती मीनारें—जो 'संसार का हिलता आश्चर्य, के रूप में भी विख्यात हैं, गत दो वर्षों मे जिज्ञासु दर्शकों के लिए बंद हैं।

औसतन तीन सौ पर्यटक अहमदाबाद-दर्शन के लिए प्रतिदिन आते हैं, परंतु मध्ययुगीन इस्लामी वास्तुशिल्प की इस बेजोड़ मिसाल की दूर से ही झलक उन्हें निराश कर देती है। शासकीय उपेक्षा तथा स्वामित्व के झगड़े का शिकार यह विचित्र वास्तु-वैभव 'मरम्मत व रख-रखाव' के अभाव में कहीं अपने 'हिलने' के आश्चर्य का रहस्य खो बैठे, तो आश्चर्य न होगा।

साबरमती नदी के किनारे बसे प्राचीन हिंदू नगर असावल के स्थान पर सन १४११, में सुलतान अहमदशाह ने अहमदाबाद बसाया था—एक मुसलिम फकीर अहमद खट्टूगंज बख्श की सलाह पर। अहमदाबाद मंदिर-मस्जिदों, मकबरों और स्मारकों के लिए ख्यात है। इनमें हिलती मीनारों का अपना आकर्षण है।

१५वीं तथा १६वीं शताब्दियों में इंडो-सरासेनिक वास्तुशिल्प-शैली में निर्मित आलीशान और भव्य इमारतें मुगलकाल

ऊपर : सिद्दी बशीर की मसजिद की हिलती मीनारें

के पूर्व के स्थापत्य-युग की साक्षी हैं। बलुए पत्थर से बनी इन इमारतों का, उन पर की गयी जटिल व नाजुक नक्काशी की वजह से महत्त्व बढ़ जाता है। इस श्रेणी में भारत की सबसे विशाल मस्जिदों में एक अत्यंत खूबसूरत स्मारक है जामा मस्जिद, जो अहमद शाह ने बनवायी थी। दूसरे दो अनुपम उदाहरण हैं—सिद्दी बशीर एवं राजपुर बीबी की मस्जिदें, जो अपनी हिलती मीनारों के कारण विश्वविख्यात हैं। एक विशिष्ट पत्थर पर जोर लगाने से ये मीनारें हिलती हुई प्रतीत होती हैं। राजपुर बीबी मस्जिद (मकबरा) की एक मीनार को तो अंगरेजों ने हिलने का राज जानने के लिए जिज्ञासावश तोड़ डाला था। लेकिन इस रहस्यान्वेषण-कार्य में वे असफल रहे!

राजपुर बीबी मस्जिद १४५४ में कुतुबुद्दीन अहमद शाह द्वितीय की मां ने बनवायी थी। मस्जिद के पूर्व में स्थि मकबरे में ही इस शाही महिला को द नाया गया था। यहां की हिलती मीनारें शहर से दूर होने पर भी खुली हैं त सिद्दी बशीर मस्जिद की हिलती मीनारों -जैसी प्रसिद्ध न होने पर भी दर्शक उ बंद होने से यहां आकर अपनी जिज्ञा शांत करते हैं।

अहमदाबाद के कालूपुर रेलवे स्टे के पास शहर के आसमानी क्षितिज ऊपर २६-३४ मीटर ऊंची गगनचुं मीनारें अहमद शाह प्रथम के प्रिय गु सिद्दी बशीर के नाम से जानी जाती हालांकि पुरातत्त्ववेत्ताओं का विश्वास कि ये मीनारें दूसरे सुल्तान मह बेगदा के सरदार मलिक सारंग (जि पास ही स्थित सारंगपुर बनवाया था ने १५ वीं अथवा १६ वीं सदी में बनवायीं

मूल मस्जिद के लिए ये दो उ

आखिर ये मीना

१९७८ में समाज विज्ञान शोधार्थी डॉ. पनुभाई भट्ट ने मीनारें हिलने की विचित्र घटना की जो कारण-मीमांसा प्रतिपादित की, वह अब विद्वानों में प्रायः स्वीकृत व्याख्या मानी जाती है। उनके अनुसार :

(१) मीनारों की इंजीनियरिंग डिजाइन मीनार की टेरेस तक की ऊंचाई व टेरेस के ऊपरी भाग की ऊंचाई के बीच १:१.५ के गणितीय अनुपात पर आधारित है। तात्पर्य यह कि जोड़-पुल के ऊपर का भाग नीचे के हिस्से से डेढ़ गुना ज्या लंबा है।

(२) मीनार के अंदर एक सम खोखलापन।

(३) बनावट में प्रयुक्त दोहरे पत्थ की 'फिटिंग' में गारे की मौजूदगी, परिणा स्वरूप स्थायित्वदायी लचीला प्रभाव।

(४) मीनार के अंदर की घुमावदा सीढ़ियों के केंद्र का अक्ष के कालम

मीनारें, उन्हें जोड़नेवाले पुल के साथ प्रमुख तोरणद्वार का काम करती थीं। अब तो मस्जिद का कुछ भी भाग शेष नहीं है। मीनारों के सामने अलबत्ता बत्तीस स्तंभों का सपाट छतवाला विशाल हाल मौजूद है। छत की सतह से ऊपर तीन बालकनीवाली इन मीनारों पर अंकित सूक्ष्म डिजाइनें दर्शक को मोहित करती हैं। जब सबसे ऊंची मंजिल से दो में से एक मीनार पर बल प्रयुक्त किया जाता है तब आवेग से पूरा हिस्सा जोड़नेवाले पुल के माध्यम से दूसरी मीनार को कंपन संप्रेषित करता है, जिसके परिणामस्वरूप दूसरी मीनार भी हिलने लगती है।

मजे की बात यह है कि दोनों मीनारें एक ही दिशा में नहीं हिलतीं। दोनों मीनारों को जोड़नेवाला पुल या टेरेस खुद नहीं हिलता, अप्रभावित रहता है।

१९७९ के मध्य में भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण संस्था द्वारा इस ऐतिहासिक स्थान के 'असुरक्षित' घोषित कर दिये जाने के बाद ये मीनारें 'मरम्मत' हेतु सार्वजनिक दर्शन के लिए बंद कर दी गयी थीं, किंतु आश्चर्य यह है कि अभी तक मरम्मत का कोई कार्य हाथ में नहीं लिया गया है।

स्वार्थ और विवाद

दरअसल झगड़ा इस ऐतिहासिक स्मारक पर मालकी के हक का है, जो भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण ('भापुस') संस्था और 'बैतूलमल धर्मादाय न्यास' के बीच संघर्ष से उत्पन्न हुआ है। कुछ वर्ष पूर्व जब 'भापुस' ने न्यास को व्यापक जन-हित में इस स्मारक पर अपना प्रभुत्व छोड़ने का आग्रह किया था, तब 'भापुस' को प्रचंड विरोध का सामना करना पड़ा था। जब १९७९ में पुरातत्वशास्त्रियों तथा इंजीनियरिंग-विशेषज्ञों का एक 'भापुस' दल

क्यों हिलती हैं ?

भांति कार्य, कालम का लचीला होना सतत नहीं।

(५) मीनार के आधार में प्रयुक्त चूने के पत्थर का पिछली कई सदियों में नरम हो जाना।

उपर्युक्त सभी बातों का सामूहिक प्रभाव हिलने की प्रक्रिया के लिए उत्तरदायी है। दोनों मीनारों को जोड़ने में अमल में लाया गया ३१ सें. मी. : ६२ सें. मी. का अनुपात संपूर्ण इमारत को हलका बना देता है तथा जमीन से जमकर पकड़कर नहीं रखने देता। इसी वजह से जब किसी एक मीनार के शीर्ष भाग पर बल प्रयुक्त किया जाता है, तब वह बल सीधे जमीन में न जाकर (नीचे खोखलेपन के कारण) वापस ऊपर आता है तथा जोड़ पुल (टेरेस) के तोरणद्वार के माध्यम से दूसरी मीनार को संप्रेषित कर दिया जाता है।

—धी. कु. दी.

रीना के रंगरूप की रौनक बरकरार रखता है लक्स.

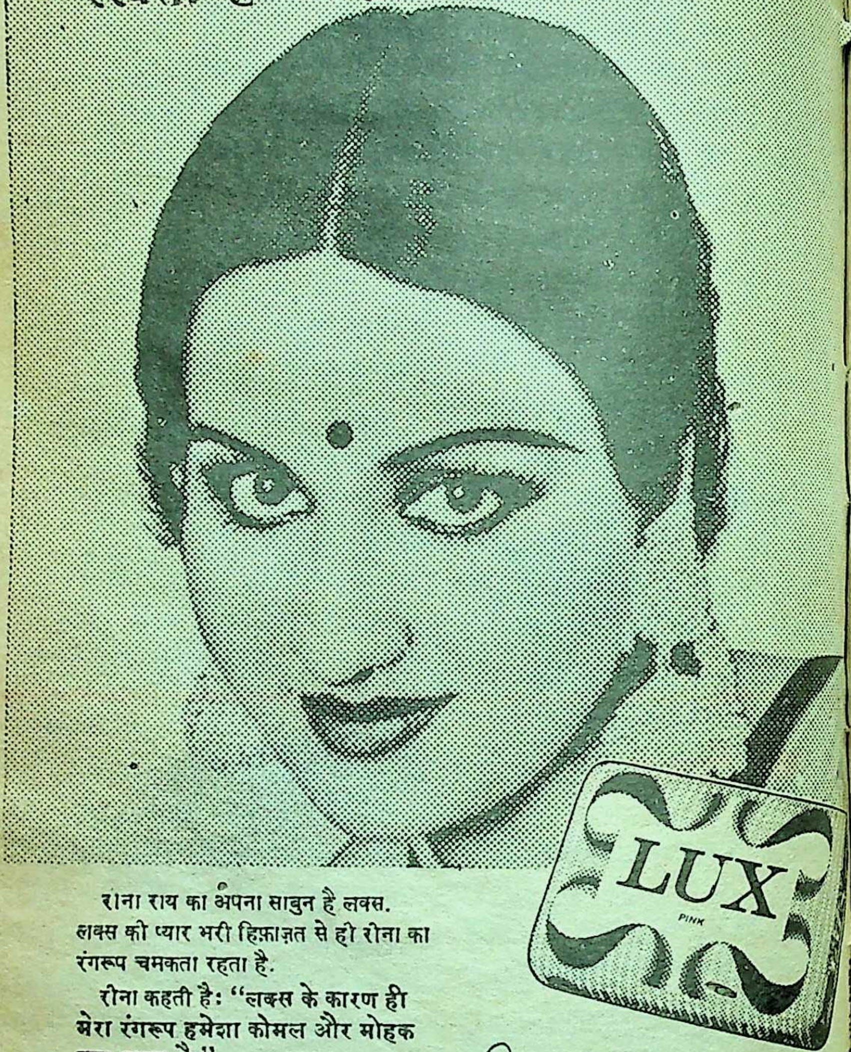

रीना राय का अपना साबुन है लक्स. लक्स की प्यार भरी हिफ़ाज़त से ही रीना का रंगरूप चमकता रहता है.

रीना कहती है: "लक्स के कारण ही मेरा रंगरूप हमेशा कोमल और मोहक बना रहता है."

शुद्ध, सौम्य लक्स —
फ़िल्मी सितारों का सौंदर्य साबुन

हिन्दुस्तान लीवर लिमिटेड का एक उत्कृष्ट उत्पा

एक
कनी
घटन
आय
वानो
तक
दिया
में स्थ
के बा
कि
सैकड़
के क
रही
स्थि
रोका
हिलने
धरा

को
ट्रस्ट
प्रवेश
सायी
यदि
हिलने
उन्हें
हाथ
कमज
विशे
के लि
से मी
नुकसा
जून

एक छायाकार के साथ, मीनार की बालकनी से टूटकर गिरे एक भारी 'स्लैब' की घटना के बाद, स्थल का निरीक्षण करने आया, तब ट्रस्ट के ड्यूटी पर तैनात 'पहलवानों' ने इन वैज्ञानिकों को अहाते में घुसने तक नहीं दिया और खदेड़कर उन्हें भगा दिया। फलतः स्थानीय पुलिस के संरक्षण में स्थल का अभियांत्रिकी सर्वेक्षण करने के बाद 'भापुस'–अधिकारियों को पता चला कि इन हिलती मीनारों की हालत गत सैकड़ों वर्षों से चली आ रही क्षरण-प्रक्रिया के कारण दिन-ब-दिन बदतर होती जा रही है तथा समय रहते अगर इस गिरती स्थिति को उचित मरम्मत कर तुरंत रोका न गया तो न केवल ये मीनारें हिलने का गुण खो बैठेंगी, बल्कि वे ढहकर धराशायी भी हो सकती हैं।

'भापुस' के स्मारक-मरम्मत-प्रस्तावों को बैतूलमल ट्रस्ट ने ठुकरा दिया है। ट्रस्ट के लोगों ने पचास पैसे प्रति दर्शक प्रवेश शुल्क रखकर इस जगह का व्यवसायीकरण सा कर दिया है। उन्हें डर है कि यदि मीनारें मरम्मत-कार्य पूरा होने पर हिलने का अपना वैशिष्ट्य गंवा बैठीं, तो उन्हें अच्छी-खासी नियमित कमाई से हाथ धोना पड़ेगा।

कमजोर होती मीनारें

विशेषज्ञों का मत है कि लोगों के मनोरंजन के लिए बार-बार और जोरों से हिलाने से मीनारें कमजोर पड़ गयी हैं, पर वस्तुतः नुकसान कितना हुआ है, इस विषय पर वे एकमत नहीं हैं। कई विशेषज्ञों का विश्वास है कि स्मारक में अंदरूनी नुकसान काफी हुआ है तथा इसकी कल्पना हम ऊपरी तौर पर देखकर नहीं कर सकते। उनका तर्क है कि व्यापक क्षति को ध्यान में रखते हुए सतही तौर पर मरम्मत करने की बजाय मीनारों को पूरा नीचे गिराकर व्यवस्थित व वैज्ञानिक तरीके से यह कार्य संपन्न हो, ताकि उनके पुनर्स्थापन के पश्चात यह प्राचीन शिल्प वक्त और मौसम के उलट-फेरों से अप्रभावित रह सके। इन विद्वानों का दावा है कि गिराकर, सुधार के बाद, फिर खड़ी करने पर ये मीनारें अपनी अप्रतिम विशेषता 'हिलना' नहीं खो बैठेंगी।

बिना मरम्मत के हिलती मीनारों का तमाशा लोगों को दिखाते रहने में यदि एक दिन मीनारों का सर्वनाश हो गया तो ट्रस्ट को नियमित आय से स्थायी रूप से वंचित हो जाना पड़ेगा। लेकिन शायद ट्रस्टी इस खतरे को जानबूझकर अनदेखा कर रहे हैं।

यों भारतीय पुरातत्व-सर्वेक्षण संस्था को सारे वैधानिक अधिकार व अनुमति प्राप्त है, पर अफसरशाही, लालफीताशाही और ऊपर से पड़नेवाले राजनीतिक दबाव ने इस संस्था को निष्प्रभ बना दिया है।

—एच. १/१८५, आई. आई. टी., बंबई-७६

अशुभ लाभ की आशा क्षति का श्रीगणेश है। —डेमोक्रेटिस

शहर में घूमते हुए

'कविता मेरी प्रेमिका है'

• मिरयाना बाशेवा

MIRYANA BASHEVA
C/o Bulgarian Television
Sofia (Bulgaria).

ग्यारह मार्च की दिलचस्प और महत्त्वपूर्ण शाम। प्रसिद्ध युवा बल्गारी कवयित्री मिरयाना बाशेवा के सम्मान में 'भारत-बल्गारी-साहित्य-संस्था' द्वारा आयोजित सभा की आत्मीयता, सार्थक संवाद की गंभीरता और सौहार्द की तरलता में सराबोर बल्गारी सांस्कृतिक केंद्र का सभागार। उपस्थित हैं अनेक कवि, लेखक। बल्गारी और भारतीय संस्कृतियों के इस महत्त्वपूर्ण साक्षात्कार के जरिए इस निष्कष पर पहुंचना कतई मुश्किल न था कि कवि (लेखक भी) अपने देश में सांस्कृतिक कार्यकर्ता और विदेशों में सांस्कृतिक दूत की अहम भूमिका अदा करता है।

मिरयाना का जन्म बल्गारिया की राजधानी सोफिया में १९४७ में हुआ। १९४४ की 'सितंबर क्रांति' के लगभग तीन वर्ष बाद। उनकी मां नर्स थीं और पिता राजनयिक। पिता की साहित्य में गहरी रुचि थी। मिरयाना ने सोफिया विश्वविद्यालय में अंगरेजी और रूसी भाषाशास्त्र का अध्ययन किया। कविता उन्होंने पचीस वर्ष की उम्र से (काफी देर से) लिखना शुरू की। दूरदर्शन और 'पितृभूमि' नामक पत्रिका के लिए स्वतंत्र लेखन भी किया। आजकल वे बल्गारी चलचित्रकला विभाग की कथाचित्र शाखा में, पटकथा के संपादन से संबद्ध हैं।

अब तक उनके दो कविता संग्रह, 'एक हठी आदमी' और 'जाड़े का मंद संगीत', छप चुके हैं। बल्गारी पॉप गायकों के लिए वे गीत भी लिखती हैं। वे अब तक रूस, अमरीका और यूरोप के कई देशों की सैर कर चुकी हैं। पिछले वर्ष उन्होंने प्रख्यात बल्गारी फिल्मकार रांगेल वाल्चनोव, जो संयोग से उनके पति भी हैं, के सहयोग से एक फिल्म-नाटक भी लिखा है, जिसे वे जुलाई में फिल्माएंगे। उनकी एक बेटी है, जो चौदह वर्ष की है। यहां प्रस्तुत है, मेरे और मिरयाना के बीच 'कादम्बिनी'

कार्यालय में हुई बातचीत :

सामाजिक प्रतिबद्धता से जुड़ी कविता

प्रश्न : क्या आप भी मानती हैं कि समकालीन कवि की प्रासंगिकता सामाजिक प्रतिबद्धता से जुड़ी है ?

मिरयाना : इसमें कोई संदेह नहीं कि हमारे युग की सामाजिक प्रतिबद्धताएं और खासकर उनके नैतिक और व्यावहारिक पक्ष, युवा बल्गारी-कविता पीढ़ी की महत्त्वाकांक्षाओं और प्रेरणा-स्रोतों का प्रतिनिधित्व करते हैं ।

प्रश्न : आधुनिक बल्गारी कविता के संदर्भ में आपकी पीढ़ी का क्या कोई विशेष योगदान है ?

मिरयाना : हां, है। हमारी पीढ़ी अभिव्यक्ति की वे बड़बोली घोषणात्मक मुद्राएं छोड़ चुकी है, जो पूर्ववर्ती कविता की, कुछ हद तक, विशेषताएं समझी जाती थीं। युवा कवि अपने सूक्ष्म कथ्यों का कवितांतर ज्यादा कलात्मकता और दक्षता से करते हैं। इनकी रचनाएं अधिक परिष्कृत हैं और भाषा अधिक सहज। यहां आत्मविश्लेषण की प्रवृत्ति तेजी से उभर रही है। मगर यह सच है कि युवा कवि, सबसे ज्यादा निर्मम स्वयं अपने प्रति है और इस निष्पक्ष आत्मालोचन का प्रमाण है—दृढ़ और गुणी व्यक्तित्व, जो अच्छे समाज की नीव, गढ़ने के लिए बेहद जरूरी है।

प्रश्न : 'ऑब्जोर' और 'बल्गेरियन हैराइजन'—जैसी प्रतिनिधि पत्रिकाओं में युवा पीढ़ी को पर्याप्त प्रतिनिधित्व नहीं मिलता। क्या इच्छित अथवा निर्धारित स्तर तक आने में नये रचनाकारों को समय लगेगा ?

मिरयाना बाशेवा

मिरयाना : इसमें कोई शक नहीं कि कविता छपवाने में नये कवियों को वक्त भी लगता और प्रयत्न भी करने पड़ते हैं। और देशों की मानिंद हमारे मुल्क में भी कवि को पहले अपनी पहचान स्थापित करनी पड़ती है। इसके बाद ही प्रमुख पत्रिकाएं उनकी रचनाएं छापना शुरू करती हैं। वैसे लेखक-संघ, युवा-लेखकों के प्रति काफी उदारता बरतता है और उनकी मदद भी करता है। युवा रचनाकारों की पहली कृतियों को खास तौर से प्रकाशित करने के लिए, एक प्रकाशन-गृह की सेवाएं भी उपलब्ध हैं। हमारे देश में कविता बहुत ज्यादा बिकती है और युवा कवि (युवा, किंतु श्रेष्ठ) पाठकों में बेहद लोकप्रिय हैं, यह बताते हुए मैं अत्यंत गर्व महसूस करती हूं।

निरोध इस्तेमाल करने से
भला हमें क्या मिलेगा?

davp 81/250

कुछ नहीं, बल्कि आनन्द और सुरक्षा

और साथ ही जब तक हम चाहें बच्चे के जन्म को टाल सकते हैं
निरोध एक भरोसेमंद और सुविधाजनक गर्भ निरोधक है
जो सरकारी सहायता से बहुत ही
रियायती दामों पर बेचा जाता है।

निरोध इस्तेमाल करें उच्च कोटि का भरोसेमन्द गर्भ निरोधक

वितरक : बुक बांड, लिपटन, हिन्दुस्तान लीवर, आई. टी. सी., टाटा आयल मिल्स, यूनियन कार्बाइड, आई. डी. पी. एल., स्मिथ स्टेनस्ट्रीट इंडियन आयल कार्पोरेशन, भारत पेट्रोलियम, हिन्दुस्तान पेट्रोलियम और अरसन माचिस उद्योग.

इतिहास-सम्मत आशावाद

प्रश्न : क्या युवा पीढ़ी के कृतित्व में 'इतिहास-सम्मत आशावाद' दिखायी देता है?

मिरयाना : मेरे ख्याल में तो दिखायी देता है, बशर्ते कि आप जानते हों कि उसे कहां और कैसे खोजना है! सतह पर यह शायद ही दिखायी दे। आपको अंतर्निहित अर्थ की गहराई में धंसना पड़ेगा। यही नहीं, युवा पीढ़ी की अभिव्यक्ति की शैलियों में व्यंग्योक्ति और आत्मव्यंग्य के माध्यम से व्यक्त संशयवाद के लहजे की गुंजाइश भी है।

बल्गारी कविता की उल्लेखनीय विशेषता है, 'प्रबल विनोद-वृत्ति।' यहां तक कि नितांत गीतात्मक प्रेम कविताओं में भी 'हास्य' घुस चुका है। व्यंग्य का विशेषाधिकार छिन चुका है। मेरे विचार में सिर्फ आशावादी ही विनोदवृत्ति से लैस होता है। अतः यह बिलकुल स्पष्ट है कि युवा पीढ़ी के कृतित्व में इतिहास सम्मत आशावाद है।

पटकथा की दुनिया से कविता की दुनिया

प्रश्न : कथाचित्रों की पटकथा के संपादन और पत्रकारिता की दुनिया से कविता की दुनिया में लौटते वक्त आपको कैसा लगता है?

मिरयाना : पत्रकारिता मेरा पेशा है और मैं इसे प्यार करती हूं। अब रहा कविता लिखने का सवाल, यह बिलकुल अलग चीज है। अंतोन चेखव के शब्दों का भावानुवाद कर मैं इस प्रश्न से छुटकारा पाना चाहूंगी, 'पत्रकारिता मेरा पेशा है और कविता मेरी प्रेमिका, जिससे मैं छुपकर मिलता हूं।'

प्रश्न : मैं भारत और भारतवासियों के बारे में आपकी राय जानना चाहूंगा।

मिरयाना : आपके देश और देशवासियों के बारे में अपनी मेरी राय? जिस क्षण मैंने हिंदुस्तान के हवाई अड्डे की जमीन पर कदम रखा, मैं तभी से मंत्र-मुग्ध हूं।

त्रिआयामी विकास में आस्था

प्रश्न : हम लोग मनुष्य के त्रिआयामी विकास में यकीन रखते हैं—शारीरिक, मानसिक, बौद्धिक और आत्मिक। यही नहीं, हमने काम और अध्यात्म में भी संबंध खोजने की कोशिश की है।

मिरयाना : मनुष्य के त्रिआयामी विकास की अवधारणा से मैं प्रभावित हुई हूं। आत्मिक विकास की चिंता महत्त्वपूर्ण है और हर देश के दर्शन में यह पक्ष उपस्थित रहना चाहिए। इसे धार्मिक दृष्टिकोणों से जोड़कर नहीं देखना चाहिए। मगर मैं थोड़ा पक्षपात कर रही हूं, क्योंकि कविता आखिर है क्या? आत्मा का प्रदर्शन ही न? मुझे गर्व है कि हमारे मुल्क के एक प्रमुख राष्ट्रीय कार्यक्रम योजना में जनता के सांस्कृतिक, बौद्धिक और आत्मिक विकास की चिंता शामिल है। हालांकि एक कतई भिन्न आधार पर (धार्मिक नहीं); मगर उत्साह वही है और लक्ष्य भी वही—मनुष्य को बेहतर, श्रेष्ठतर और अधिक सुखी बनाना। काम

60 वर्षों से लोकप्रिय
शुद्धता तथा कम मूल्य के प्रतीक

एम डी एच

मसाले

एम.डी.एच मसाले पोली-पेक में सील किये जाते हैं ताकि इनकी ताज़गी और स्वाद बने रहें। ये मसाले आपके लिये क्वालिटी की गारंटी हैं।

हमारे अन्य लोकप्रिय उत्पादन :
किचन किंग, देगी मिर्च, गरम मसाला,
चना मसाला, चाट मसाला इत्यादि

KITCHEN KING
DEGGI MIRCH
AGMARK
CURRY POWDER
GARAM MASALA
CHANE KA MASALA
CHAT MASALA

महाशियां दी हट्टी प्राइवेट लिमिटिड
9/44 इंडस्ट्रियल ऐरिया, कीर्ति नगर, नई देहली-110015 फ़ोन : 585122
सेल्स आफिस : खारी बावली, दिल्ली-110006 फ़ोन : 258714

और शृंगारिकता का दर्शन आपकी सांस्कृतिक और आध्यात्मिक परंपरा का काफी बड़ा और महत्त्वपूर्ण हिस्सा है। यह सूक्ष्म भी है और महत्त्वपूर्ण भी। क्योंकि प्यार न हो तो फिर नर-नारियों और अन्य सभी जीवित प्राणियों के हृदयों और आत्माओं को कौन-सी चीज उदात्त बनाती है?

प्रश्न : कविता के जरिए संस्कृति की खोज के संदर्भ में अनुवाद की भूमिका के बारे में आप क्या सोचती हैं?

मिरयाना : अनुवाद के महत्त्व को नकारा नहीं जा सकता। दो देशों के संबंधों के विस्तारों के संदर्भ में साहित्य (सिर्फ कविता ही नहीं बल्कि सभी कलाएं) सर्वश्रेष्ठ माध्यम सिद्ध हो सकता है। मुझे उम्मीद है कि जो फिल्म हम यहां बना रहे हैं, वह हमें और आपको, एक-दूसरे को बेहतर ढंग से समझने और हमेशा के लिए दोस्त हो जाने का अवसर देगी।

यहां प्रस्तुत है, मिरयाना वाशेवा की एक कविता का भावानुवाद—

काफी सोचा है मैंने
आपके बारे में महोदय!
तबसे
जब मैं सिर्फ नौ साल की थी
कितने जवान थे तब आप!
मगर अफसोस विवाहित थे
तब मैं स्कूल में पढ़ती थी
और काफी अच्छी चल रही थी
भाषण सुने मैंने मार्क्स और डारविन पर
(पढ़ी चोरी से डी. एच. लॉरेंस)
ओह—विज्ञान के हर पन्ने में से उभर
कितने बड़े, कितने कद्दावर लगते थे आप!
अब मुझे लगता है जैसे युग बीत गये हों
ईसा से भी कुछ सप्ताह पूर्व अगर मैं यों
कहूं?
तब जो था निषिद्ध और घृणित
अब इतना सहज है
जितना आना और जाना
इसलिए नमस्ते श्रीमन् र. व.
याद करती हूं मैं आपको—
नमस्कार, शुभ कामना!
अब आप उतने जवान भी नहीं रहे
और न अविवाहित ही
मगर अब भी हैं आप
एक कर्मठ डॉन जुआन
फिर क्यों मेरी उम्मीद के प्रतिकूल
हालांकि अब नहीं होती इससे मेरी हानि—
तुम्हारी विशाल बांहों के घेरे में
लौट जाती हूं मैं, अपने बचपन की सरहदों में
पुराने दिनों की तरह
जब बिना किसी
तैयारी के
पहुंचती थी स्कूल में देर से सुलगती हुई
शर्म से
कहती रहती हूं मैं . . . श्रीमन् . . .
महोदय . .
और डरती हूं मैं पुकारते हुए
आप का प्यारा नाम

बातचीत : विनोद शर्मा

विधि विधान

पेड़ किसका है

बीरबल मेहर, रायगढ़ : मेरे पड़ोसी के घर के अहाते में एक बहेड़े का वृक्ष है। उसका एक डगाल हमारे घर के छप्पर के ऊपर तक आता था। हमने घर को नये ढंग से बनवाने के लिए पड़ोसी से अनुमति लेकर उस डगाल को कटवा दिया। इसके बाद गांव के गौंटिया ने हमें धमकी दी कि वृक्ष उसका है और उससे बिना पूछे उसका डगाल काटने के कारण वह कानूनी कार्यवाही करेगा। वृक्ष बहुत पुराना है और गौंटिया का नहीं है, फिर वह किस आधार पर कार्यवाही कर सकता है? अभी तक उसने कोई कार्यवाही नहीं की है।

गांव के दूसरे व्यक्ति का वृक्ष पर अधिकार है या नहीं, यह बात तो इस तथ्य पर आधारित है और इसका निर्णय प्रमाण देकर किया जा सकता है। आपको किस प्रकार की कार्यवाही का भय है, इसका उल्लेख आपने नहीं किया। अब तक आपके विरुद्ध कोई कार्यवाही हुई ही नहीं। मुझे आपके भय का कोई समुचित कारण दृष्टिगत नहीं हो रहा। वैसे भी, आपने पड़ोसी की अनुमति से डगाल को कटवाया है और वृक्ष पड़ोसी के मकान के अहाते में लगा है।

पिता की संपत्ति में पुत्री का अधिकार

उषा नंदिनी, गम्हरिया : मैं अपने पिता की दूसरी, जीवित पत्नी की इकलौती बेटी हूं। पहली, मृत पत्नी से भी एक पुत्र है। मैं शादीशुदा, बाल-बच्चेदार हूं। क्या मैं पिताजी की संपत्ति में आधी की हकदार हो सकती हूं? यदि हां, तब पिता के न चाहने या उनके मेरे नाम वसीयत किये बिना मर जाने की स्थिति में, क्या मैं अपने हक का दावा कोर्ट में कर सकती हूं?

हिंदू उत्तराधिकार अधिनियम पिता की संपत्ति में पुत्र तथा पुत्री के समान अधिकार को मानता है। आपके पिताजी अपनी संपत्ति वसीयत किये बगैर स्वर्ग सिधार जाएं, तब उनकी संपत्ति में आप अपना हिस्सा मांग सकती हैं, तथा प्राप्त करने के लिए कानूनी कार्यवाही भी कर सकती हैं। परंतु यदि आपके पिताजी अपनी संपत्ति में से आपको हिस्सा नहीं

देना चाहें और अपने जीवनकाल में संपत्ति को हस्तांतरित कर दें, तब बंटवारे का प्रश्न नहीं उठ सकेगा। वसीयत किये जाने की स्थिति में, संपत्ति का बंटवारा वसीयत में उल्लिखित शर्तों के अनुसार होता है।

उत्तराधिकार का प्रश्न

ग्लोरिया सैमुअल स्वीट, कानपुर: मैं एक ईसाई अविवाहित लड़की हूं। मेरे चाचा के न कोई स्त्री थी, न संतान। चाचा ने मुझे लड़की की तरह मानकर पाला। वह मिल में काम करते समय गिरकर मर गये। एंपलॉइज स्टेट इंश्योरेंस कारपोरेशन से उनके हित-लाभ संबंधी पत्र आते हैं, जो उनकी स्त्री के नाम होते हैं। स्त्री उनकी कोई थी ही नहीं, इसलिए हम उनका उत्तर नहीं देते। क्या मैं ई. एस. आई. कारपोरेशन से मृतक के आश्रित का हित-लाभ मांग सकती हूं? क्या 'सक्सेशन सर्टिफिकेट' लेने से मैं उनकी आश्रित मान ली जाऊंगी?

चाचा ने आपको गोद तो लिया नहीं, इसलिए आप उनकी पुत्री का अधिकार नहीं पा सकतीं। आपके पत्र से यह स्पष्ट नहीं होता, कि आपके परिवार में अन्य कौन-कौन जीवित है। यदि आपके बाबा जीवित हैं, तब भारतीय उत्तराधिकार अधिनियम १९२५ की धारा ४२ के अंतर्गत वे ही अपने स्वर्गवासी पुत्र की सारी संपत्ति के अधिकारी हैं। बाबा के जीवित न होने की स्थिति में आपके चाचा, ताऊ, पिता, बुआ व दादी संपत्ति के अधिकारी हैं। पिताजी के न रहने पर उक्त अधिनियम की धारा ४४ के अंतर्गत आप भी उत्तराधिकारियों की श्रेणी में आ सकती हैं। यह ठीक है कि उत्तराधिकार प्रमाण-पत्र प्राप्त कर लेने से अधिकार की पुष्टि हो जाती है।

'विधि-विधान' स्तंभ के अंतर्गत कानून-संबंधी कठिनाइयों के बारे में पाठकों के प्रश्न आमंत्रित हैं। प्रश्नों का समाधान कर रहे हैं, राजधानी के एक प्रसिद्ध कानून-विशेषज्ञ—रामप्रकाश गुप्त

किरायेदारी का अधिकार

विनोद शर्मा, बर्दवान: मेरे पिताजी एक व्यक्ति के यहां २५ साल से काम कर रहे थे। उसने पिताजी को रहने के लिए अपना एक मकान बिना किराये के दे रखा था। पिताजी ने उसकी नौकरी छोड़ दी है, तो वह मकान खाली करने के लिए

ये हवा के नर्म झोंके जो चमन से आ रहे हैं
तेरी जुल्फ छूके आते तो कुछ और बात होती
—मजरूह सुल्तानपुरी

कह रहा है। क्या हम उचित किराया देकर उस मकान में रह सकते हैं, या वह मकान खाली करने के लिए हमें कानूनन बाध्य कर सकता है?

मकान-मालिक ने मकान किराये पर नहीं दिया, इसलिए आपके पिताजी अनुमति-पत्र ग्रहीता (लाइसेंसी) हुए। किरायेदार के अधिकार उनको नहीं दिये गये। मकान में रहने की अनुमति का आधार नौकरी ही था, और अब जब नौकरी समाप्त हो गयी है, तब आपके पिताजी को मकान में रहने का कानूनी अधिकार नहीं रहता। जहां तक किरायेदारी प्राप्त करने का प्रश्न है, वह आपके परिवार तथा मकान-मालिक के मध्य आपसी समझौते पर आधारित हो सकता है। आप मकान-मालिक को किरायेदारी देने के लिए बाध्य नहीं कर सकते।

बच्चे वापस कैसे मिलें

रामरतन लाल, टोड़ा रार्यसिंह: मेरी पत्नी का एक स्टोव दुर्घटना में जल जाने से स्वर्गवास हो गया। पत्नी जब अस्पताल में भरती थी, तभी ससुरालवाले मेरे चारों बच्चों को ले गये थे। कृपया सुझाव दीजिए कि ससुरालवालों से अपने बच्चे प्राप्त करने के लिए मुझे क्या करना चाहिए।

अपने बच्चों को लाने के लिए आप कार्यवाही कर सकते हैं। गार्जियनशिप एंड वार्ड्स एक्ट के अंतर्गत न्यायालय में आवेदन किया जा सकता है। अल्पवयस्क बच्चों का भी प्राकृतिक संरक्षक उनका पिता या माता ही होते हैं। माता के स्वर्गवास के बाद आप अपने बच्चों के प्राकृतिक संरक्षक हैं। अगर न्यायालय में यह प्रमाणित हो जाए कि पिता के साथ रहना बच्चों के हित के विरुद्ध है, तभी न्यायालय अन्य किसी व्यक्ति को संरक्षक नियुक्त कर सकता है।

पिता के कर्ज की अदायगी

रानू शर्मा, गुना: मेरे पिता ने एक परिचित महाजन से दो हजार रुपये बतौर कर्ज लिये थे और हुंडी लिख दी थी। मेरे पिता की आकस्मिक मृत्यु हो गयी। वह आधे से अधिक पैसा दे चुके थे, किंतु महाजन पर विश्वास करके रसीदें नहीं ली थीं। उनकी मृत्यु के बाद उस सेठ ने हमारे ऊपर पूरे पैसों का दीवानी दावा कर दिया है। क्या पिता की मृत्यु के बाद उसके वारिसों से उक्त रकम वसूलने का वह सेठ अधिकारी है?

रकम अदा करने का प्रमाण लिखित होना अच्छा रहता, है परंतु इसका मतलब यह नहीं कि लिखित प्रमाण के अभाव में अन्य प्रमाण स्वीकार नहीं किये जा सकते। आप रुपया दिये जाने के अन्य प्रमाण न्यायालय में देकर अपना पक्ष रख सकते हैं। यदि आपको अपने पिताजी से कोई संपत्ति प्राप्त हुई है तो उस संपत्ति के मूल्य की सीमा तक का कर्ज देने की जिम्मेदारी आप पर आती है।

गुजराती कहानी

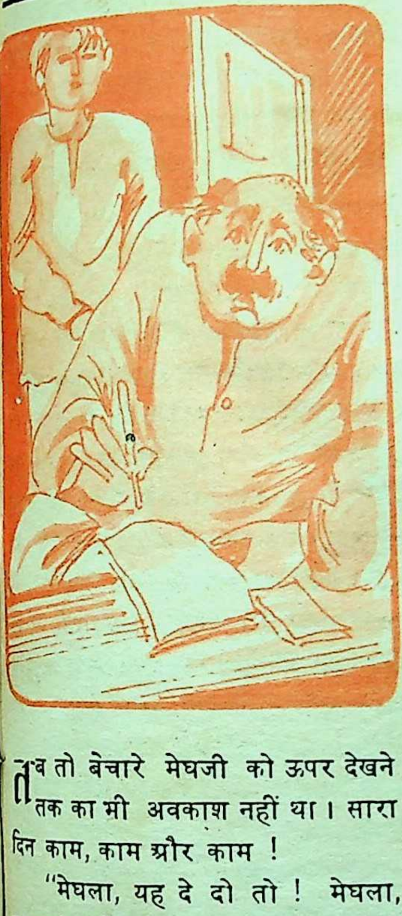

मेघजी का पैतृक ऋण

• गुलाबदास ब्रोकर

तब तो बेचारे मेघजी को ऊपर देखने तक का भी अवकाश नहीं था। सारा दिन काम, काम और काम !

"मेघला, यह दे दो तो ! मेघला, वह वहां रखो ! मेघला, वहां चले जाओ ! मेघला, यहां आओ !"

रात में भी चैन नहीं। रात में ग्यारह-साढ़े ग्यारह तक उसके मामा बैठे-बैठे बहीखाता लिखते रहते और एक कोने में सिकुड़-सिमटकर बैठा मेघजी नींद के तीव्र आक्रमण से बचने का निष्फल प्रयास कर रहा होता। निष्फल ही; क्योंकि अंत में नींद की ही विजय होती और उसके साथ ही मामा की आवाज सुनायी पड़ती—

"मेघला !"

"जी !" कहता हुआ कुछ सोता-सा, कुछ जागता-सा मेघजी उठकर बैठ जाता।

"यह डाक छोड़ आओ।"

रास्ते में वह चल रहा है या सो रहा है, इसका भी ज्ञान उसे नहीं हो पाता था।

लौटते समय अधिकतर वह रास्ते पर फुटपाथ पर ही सो जाता और भोर के पहर में मामा के उठते ही दूसरे दिन का कार्यक्रम शुरू हो जाता। बदले में उसे मिलता खाना-पीना और हर महीने पचास रुपये !

ऐसी स्थिति में मेघजी दूसरी बात क्या सोचता ? मात्र अपनी स्थिति के लिए संताप करता और माता तथा दूसरों द्वारा कही पिछले समय की बातों का सुनहला स्वप्न उसकी आंखों में आंसू ला देता।

आंसू आने, जैसी ही बात थी। वह भी अच्छे कुटुंब का लड़का था। ये उसके मामा हैं—इतने ही संपन्न कुटुंब के ! उसके घर पर भी, थोड़ी बहुत तो लाट साहबी चलती ही थी। उसके पिता समाज तथा राज-दरबार में भी उचित मान-मर्यादा पाते थे। लेकिन, जब गरीबी के दिन आये, तब गरीबी के दु:ख के घने प्रत्याघातों को देखकर चिंता की चिता में जलते-जलते एक दिन वे इस संसार से चले गये और अपनी माता का एकमात्र दीपक-सा वह यह सब सहने के लिए बैठा रहा। वह इस बात की फरियाद मां से कर सके, यह भी संभव नहीं था, क्योंकि मामा उसे व्यापार-धंधे के योग्य बनाने के लिए बंबई लाये थे, तब उसकी मां से यह शर्त करके ही लाये थे कि 'मेघला से मैं केवल मजूरी ही कराऊंगा और इस विषय में तुम्हें चूं-चां कुछ भी नहीं करना होगा, क्योंकि सेठ होने के लिए मजदूर होना पड़ेगा। जो मनुष्य मजदूर नहीं बनेगा, वह सेठ भी नहीं बन सकेगा। यदि बन भी गया तो वह टिकेगा नहीं और मेघला को तो मुझे बहुत बड़ा सेठ बनाना है, जितना इसके बाप ने सोचा होगा, उससे भी बड़ा !'

और मां, बेटे को सेठ बनाने के ही सपने देख रही थी—'मेरा बेटा सेठ बनेगा, मेघजी सेठ !'

'मेघजी सेठ !' इन शब्दों का जैसे एक दूसरे से मेल नहीं बैठता था। मेघजी कटुतापूर्ण हास्य करता और मन ही मन सोचता, 'पिताजी ने मुझे ऐसा सेठ बनाने का विचार किया होगा तो कौन जाने कब होऊंगा, इसी प्रकार चला, तो पिताजी के पास स्वधाम जल्दी ही पहुंच जाऊंगा।'

इस प्रकार, तब तो मेघजी को ऊपर

देखने या अगल-बगल, आगे-पीछे कुछ सोचने-विचारने का भी अवकाश नहीं था; लेकिन इस बात को तो अब वर्षों हो गये थे, मेघला से धीरे-धीरे वह मेघा बना और मेघा से मेघजी। मेघला से मेघजी बनने योग्य बनानेवाले मामा तो स्वर्ग सिधार गये थे, परंतु मेघजी उनकी दूकान के प्रत्येक काम का अधिकारी हो गया था। मामा के लड़के भले हो दूकान की देख-रेख सम्हालें, लेकिन मेघजी स्वयं भी उस दूकान का एक आवश्यक अंग-सा बन गया था। रात-दिन काम करने में उसे आलस नहीं लगता था और साधारण से साधारण काम में भी उसकी निगाह रहा करती थी। जिस मामा को उसने अनेक बार मन ही मन कोसा था और शाप भी दिए थे, कठोर स्वभाव के किंतु प्रेमी-हृदय अपने मामा को अब वह हृदय से वास्तविक कृतज्ञतापूर्वक याद करता और अपनी नयी बनी स्थिति के लिए और आनेवाले भविष्य में और अधिक सुखी दिखती परिस्थितियों के लिए सारा यश उनका ही मानता।

और अब उसे अपने पिता के इतिहास की ओर दृष्टि डालने का अवकाश मिला था। अतः समय मिलने पर वह पुराने बहीखातों में उलझ जाता और उन रकमों पर विचार करता।

इस इतिहास में अधिक संशोधन की कुछ आवश्यकता नहीं थी। उसके पिता ने भी अच्छा पैसा अर्जित किया था और खर्च भी बहुत करते थे, यह वह उन खातों से जान सका। फिर उसे घर का क्रम-बद्ध इतिहास भी मिल गया। इन वर्षों में पिताजी को कुछ न कुछ ऋण लेकर पैसा लाना पड़ा था, यह भी उसने देखा और थोड़ी हालत सुधरने पर उस ऋण को देने के लिए वे कितना भगीरथ प्रयत्न करते, यह भी उसने देखा। अंत में घर का, सब-कुछ बिक गया और ऋण लगभग सारा चुका दिया गया था। लेकिन एक ही रकम ऐसी थी, जो पिता जी चुका नहीं पाये थे, क्योंकि बाद में उनकी स्थिति ऋण चुकाने योग्य कभी हुई ही नहीं। फिर भी घर का सब कुछ बेचकर छोटे-छोटे ऋण भी चुकता करनेवाले पिता को उस ऋण को न चुकाने का कितना दुःख रहा होगा, इसकी भी उसे

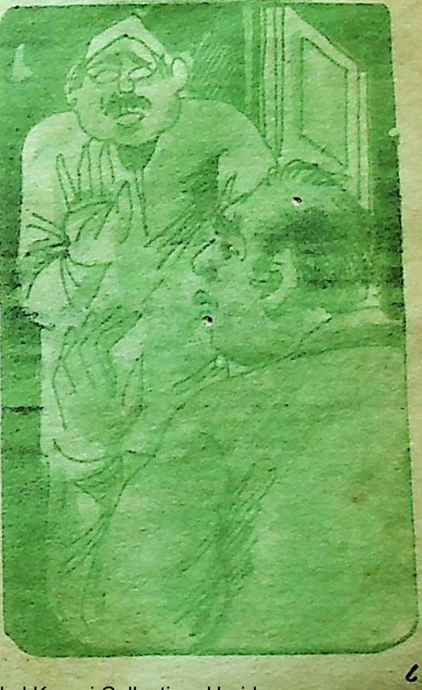

कल्पना हो गयी थी . . .।

देनेवाला यह ऋण बहुत बड़ा नहीं था तो उनकी स्थिति के अनुसार छोटा भी नहीं था। था चार हजार रुपया। लेकिन उन बातों को तो बहुत समय हो गया है और यदि ब्याज का हिसाब जोड़ा जाए, तो वह अब बारह-सोलह हजार हो जाए। इतने सारे रुपये कहां से आयें? यह सब देखते-देखते मेघजी सोचने लगा कि पिता का यह ऋण वह नहीं चुका सका तो उनका वह पुत्र कैसा? पुत्र के लिए क्या-क्या कर डालने की अभिलाषा से ही तो पिताजी ने यह ऋण लिया होगा और फलस्वरूप वे ही गरीबी में फंस गये होंगे और अब वही पुत्र उस ऋण को न चुकाये तो फिर . . ! तो, तो उसके पैसा पैदा करने का क्या मूल्य रहा?

मेघजी अभी 'मेघजी सेठ' नहीं बना था कि सरलता से वह रकम चुका सके। उसे वह रकम बहुत बड़ी पूंजी मालूम होती थी। फिर बारह-सोलह हजार की रकम छोटी तो नहीं ही गिनी जा सकती। लेकिन मेघजी ने निश्चय किया कि किसी से कोई बात कहे बिना, सोलह हजार इकट्ठा होते ही वह यह ऋण चुका देगा, तभी निश्चितता की सांस लेगा।

'कितने सज्जन हैं वे ऋणदाता भी!' मेघजी सोचता। वह रहता है, वहां से वे लोग बहुत दूर नहीं रहते हैं और उसी तरह का व्यापार वे करते हैं, जो वह करता है। वे भी उसके ही उम्र के हैं और उनके पिता से ऋण लिया था उसके पिता ने। फिर भी उन्होंने मेघजी को यह जानने नहीं दिया कि वे इतनी बड़ी रकम उससे लेने के हकदार हैं और किस सुख के आधार पर मेघजी बादशाहों की तरह घूमता है; वाह रे वाह! उनके प्रति सोचने पर मेघजी को उनके प्रति श्रद्धा होती, फिर भी यह बात जानते हुए भी कभी आपस में मिलते तो मेघजी को लज्जा भी लगती। ऐसे समय प्रायः वह कतराकर निकल जाता।

उस रकम को इकट्ठा करने के लिए मेघजी अथाह परिश्रम करने लगा।

"भाई, अब तो सुख की रोटी खाओ। मजूरी तो कितनी की तूने? और अपने शरीर की ओर तो देखो! कहीं दिखती है, तुम्हारे शरीर में खून की झलक?"

लेकिन, उन बातों पर ध्यान दिये बिना मेघजी मेहनत करने लगा और अंत में उतनी रकम इकट्ठा कर ली। उसके मन से भारी बोझ उतर गया, और प्रसन्न हृदय से वह एक दिन ऋण-दाता सेठ के यहां गया।

"आइए मेघजी, आइए! आज कैसे इधर . . .?" उन्होंने सत्कारपूर्वक पूछा।

"एक काम था, सेठ साहब!" उसने कहा।

"क्या है, कहें!" उन्होंने उसकी ओर देखकर पूछा।

"बात यों हैं, सेठ साहब कि मैं अपने

पिताजी का हिसाब देख रहा था, उससे पता चला कि आपके पिता से उनका लेन-देन का व्यवहार था। वे गुजर गये, तब वह हिसाब चुकता नहीं कर सके थे। अब आप अपने यहां सारा हिसाब देख लें, तो हम हिसाब चुका दें।" मेघजी ने कहा।

वे उसे अपलक ही देखते रहे। उन्होंने कहा, "मेघजी ! मुझे तो कुछ पता नहीं।"

"आप अपना हिसाब देखेंगे, तो पता चलेगा, सेठ ! इसमें मैं भी अपने फर्ज से मुक्त हो जाऊंगा।"

"ठीक है, आप कहते हैं तो देख लूंगा। लेकिन मुझे कुछ याद नहीं है।"

"तो मैं शनिवार को आऊं ? जरा निश्चितता भी रहेगी और सारा काम भी हो जाएगा।"

"ठीक है।"

चाय आदि पीने के बाद पान खाया और तब उनके घर से निकला, तो मेघजी के मन में आनंद ही आनंद था।

शनिवार को नियत समय पर मेघजी पुनः सेठजी के घर पहुंचा। इस बार वह मूल रकम मय ब्याज के लाया था। देखते ही सेठ ने उनका स्वागत किया। आज वे भी कुछ प्रसन्न लगते थे। इतने बड़े सेठ को भी आज इतनी लंबी डूबी हुई रकम मिल रही थी, तो इतना सारा आनंद हो रहा है—यह मेघजी तुरंत समझ गया; लेकिन इससे उसे आश्चर्य नहीं हुआ। आता धन किसे अच्छा नहीं लगता। अतः सत्कार-विधि समाप्त होते ही, इधर-उधर की दूसरी बातचीत में समय खोने की अपेक्षा मेघजी ने वह मूल बात ही छेड़ी।

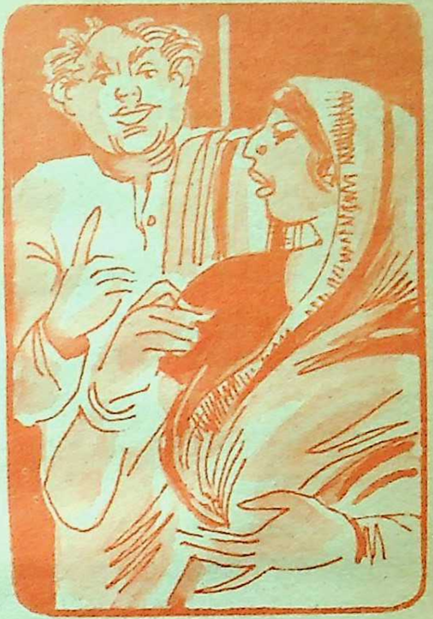

"हां, तो सेठ साहब, आपने हिसाब देखा ?"

"देखा तो. . . ." सेठ बोले।

"कितनी रकम मेरे पिता के नाम निकलती है ?"

"लेकिन इतनी जल्दी क्या है, मेघजी ? वह तो अपने आप हो जाएगा। आप बैठिए तो सही। चाय-नाश्ता करें, फिर सारी बातें . . .।"

"आपको जल्दी नहीं होगी सेठजी, आप बड़े आदमी हैं। लेकिन मैं तो यह हिसाब समाप्त कर दूं, तो अपने पैतृक ऋण से छूट जाऊं न ? चाय-नाश्ते में तो इसके बाद मजा आएगा।

"हां.... हां, यह ठीक है।" कहकर वे हंसे।

"मेरे पिताजी के नाम कितनी रकम बाकी रहती है ?" मेघजी ने पूछा।

"सच कहूं ?" सेठ ने भी प्रश्न किया। उनकी आंखों के कोने में कुछ कुटिल हास्य मेघजी ने देखा। इससे उनके मन में कुछ घबड़ाहट तो हुई, परंतु उन्होंने हंसते हुए कहा, "तो फिर सच ही कहता हूं।" सेठ ने पुनः हंसकर कहा, "आपके पिता के नाम मेरे यहां..." जरा रुककर उन्होंने मेघजी की तरफ एक बार फिर देखा।

मेघजी ने बीच में ही कहा, "बोलिए न सेठ, इसमें अटकते क्यों हैं ?"

"मेरे यहां...." सेठ ने अधूरा वाक्य पूरा किया, "एक पाई भी नहीं निकलती।"

"क्या कहते हैं ? मैं नहीं मानता।" मेघजी आश्चर्यचकित हो बोला।

"सच कहता हूं, मेघजी भाई ! इसीलिए तो मैं इतना प्रसन्न हूं।"

"क्यों, इसमें प्रसन्नता कैसी ?"

"प्रसन्नता ! एक सज्जन और सच्चे मनुष्य को पाने की, मेघजी !" सेठ बोले, "इस जमाने में आप-जैसे ईमानदार आदमी कहां देखने को मिलते हैं ? और दूसरे, मेहनत करके बचाये धन में से मुझे एक पाई भी नहीं लेनी है।"

"इसमें आपकी भूल है सेठजी।" मेघजी साथ लाये रुपये जेब से निकालता हुआ बोला, "आपको ये रुपये मुझसे लेने हैं !"

सेठ आश्चर्य से उनके हाथ के नोटों के बंडलों को देखते हुए बोले, "यह क्या कहते हैं, मेघजी ? मुझे कुछ भी लेना नहीं है। मेरे यहां आपके पिताजी के नाम कोई रकम नहीं है।"

"यह आपके पिताजी की उदारता होगी, सेठ साहब ! लेकिन यह सत्य है कि उन्होंने मेरे पिताजी को उधार रुपये दिये थे। देखिए, यह रही एकाउंट-बुक !"

"यह चाहे जो भी हो, लेकिन मुझसे आपकी एक पाई भी न ली जाएगी। मेरे पिताजी ने..."

"आपके पिताजी तो सज्जन थे और उदार भी ! नहीं तो मेरे पिताजी की टूटती आबरू के समय इतनी बड़ी रकम से उनकी मदद क्यों करते ? फिर उन्हें विश्वास होगा कि यह रकम वापस नहीं मिलेगी, इसलिए उन्होंने इस रकम को उनके नाम नहीं लिखा होगा। लेकिन उनकी एक गणना झूठी पड़ी है..." मेघजी के चेहरे पर एक स्मित की रेखा नाच उठी।

"कौन-सी गणना ?"

"मेरे पिता कमाकर यह रकम वापस दे सकें, ऐसी स्थिति में थे ही नहीं। यह गणना तो उनकी सत्य हुई, लेकिन बड़ा होने पर मैं भी क्या कमा नहीं सकूंगा और उनके उपकार को याद नहीं कर सकूंगा ? यह कल्पना तो उनकी झूठी ही थी न ? लेकिन सेठ साहब, देखिए, यह रकम चार हजार की है और इतने वर्षों का ब्याज

मिलकार सोलह हजार आपको मुझसे लेना निकलता है। आप इसे स्वीकार करें और मुझे पैतृक ऋण से मुक्त करें।" और उसने सारी रकम सेठजी के आगे रख दी।

"नहीं-नहीं ! कभी भी नहीं मेघजी ! आप मुझे क्या समझते हैं ?" सेठ साहब खड़े हो गये।

"सेठ साहब ! मैंने आपको आपके पिता की तरह ही सज्जन समझा है। आप मेरी बातें स्वीकार नहीं करेंगे तो मुझे सुख की नींद भी नहीं आएगी और मेरे पिताजी की आत्मा तड़प उठेगी। अतः मुझ पर इतनी मेहरबानी करें !"

और अंत में बहुत जिद्द पकड़ लेने पर सेठ मूल रकम लेने को तैयार हुए, ब्याज के लिए उन्होंने बातें सुनी ही नहीं। तब—तब मेघजी की आंखें आभार से झुक गयीं, "आपने मुझ पर महान उपकार किया है सेठजी !" वह बोला।

और घर लौटकर माता के पांव पकड़कर उसने कहा, "मां ! आज मैं अपने पिता का सच्चा पुत्र बना हूं।" और उसका हृदय प्रसन्नता से भर उठा।

सारी बातें सुनकर मां ने हर्ष के साथ कहा, "तब आज तो तुम मेघजी सेठ बन गये न बेटे ? अब कोई तुम्हारे सामने अंगुली नहीं दिखा सकता। अब सब तुम्हें देखकर कहेंगे—यह जा रहा है मेघजी सेठ!"

फिर तो वर्षों बाद, जब मेघजी से वह वास्तव में मेघजी सेठ बन गया और मेघजी सेठ से मेघजी भाई सेठ बन गया, तब बार-बार मेघजी को यह बात याद आती और उसकी आंखें आंसुओं से तर हो जातीं। वैसे प्रत्येक समय उसे मां की वात्सल्यभरी और मेघला से मेघजी भाई सेठ बनानेवाले मामा की प्रिय मूर्ति दिख जाती और उस दर्शन से उसका हृदय एक अपूर्व शांति का अनुभव करता।

—अनुवादक : गोपालदास नागर

एक डॉक्टर हुए हैं– डॉ. अल्बर्ट अब्राहम। १९२३ में अमरीका में जब उनकी मृत्यु हुई तो उस जमाने में उनके पास २० लाख डालर नगद थे। इतनी धनराशि उन्होंने अपने डॉक्टरी पेशे से नहीं कमायी थी। वरन डॉ. महोदय ने एक मशीन का आविष्कार किया था। उनका दावा था कि इस मशीन से मरीज के खून की एक बूंद मात्र से उसके हर मर्ज का पता लगाया जा सकता है। व्यावसायिक बुद्धि के दौरान डॉक्टर अल्बर्ट ने अखबारों व अन्य प्रचार माध्यमों से अपनी इस खोज का सारे अमरीका में खूब प्रचार किया।

हर नयी चीज के पीछे पागलों की तरह दौड़नेवाले अमरीकनों ने इस मशीन को धड़ाधड़ खरीदना शुरू कर दिया और कुछ ही समय में डॉक्टर महोदय मालामाल हो-गये।

इस मशीन की असलियत उस समय सामने आयी, जब एक ईर्ष्यालु डॉक्टर ने एक पक्षी का खून डॉ. अल्बर्ट के पास भेजा। उन्होंने अपनी मशीन से खून का विश्लेषण कर उत्तर दिया—'मरीज मलेरिया, मधु-मेह, कैंसर, व यौन रोग से ग्रस्त है।'

सत्य लिये बैसाखी चलता

निर्माणों की शक्ति खड़ी है कई कतारों में
शहर गांव सब पड़े हुए हैं आज बुखारों में

भूखी पीढ़ी बड़े-बड़े आश्वासन खाती है
इसीलिए उसको शायद कम भूख सताती है
गोदामों से माल नहीं आता बाजारों में

तरुणाई क्यों मर्यादाएं दूर फेकती है
जीवन के मूल्यों से अपने हाथ सेकती है
अर्थ न खोजा, व्यस्त रहे सब केवल नारों में

मान और सम्मान रखा हाथों पर जिसके
यश का तिलक लगाया सबने माथे पर जिसके
हुआ नहीं परिवर्तन उसके कभी विचारों में

कैद उजाले किये हंसी को जिसने कील दिया
वो कहते फिरते हमने मौसम तबदील किया
लगता वो सबको केवल इंसान हजारों में

रूपवती मानवता फिरती रही स्वयंवर को
दुराचारिणी इच्छा पाये पिया जनमभर को
जश्न बराबर होते उसके ही घर-द्वारों में

सबके चेहरों पर जैसे मातम की परछाईं
हर आंगन की तुलसी पीली होकर मुरझाई
लेकिन वही हरापन उनके बंदनवारों में

सत्य लिये बैसाखी चलता है अन्यायों की
लुटती है इज्जत चौराहों पर कन्याओं की
फिर भी लिखे हुए हैं विज्ञापन दीवारों में

—कंचन रिछारिया

५/८८, रविशंकर नगर, भोपाल-४६२०१६

विदेशों में हिंदी

नाम तुम्हारे

टूटे सपने रेतीला मन
पाहुन लगते पतझर-से क्षण

निपट अकेले मन के मेले
फीके लगते रंग सुनहले
रूप अमावस सूखा पावस
लगते अब तो सब जहरीले

उजलेपन भी लगें मलिन।
टूटे सपने रेतीला मन

छांव न भाये पीर सुहाये
टीसें घावों को सहलाये
तम की देहरी पर बैठाकर
एकाकीपन व्यथा सुनायें

सांसभरे तन में खालीपन
टूटे सपने रेतीला मन

थकी प्रतीक्षा बुझी दिशायें
पथ निहारते दृग पथराये
निर्बंधों के बंधन रूठे
संग-संग हमने जिये निभाये

है यादों का सूना आंगन
टूटे सपने रेतीला मन

—वीरेंद्र डांगी

४६, नेल्सन स्ट्रीट, एपार्टमेंट १६, ओटावा
ओंटेरियो, कनाडा

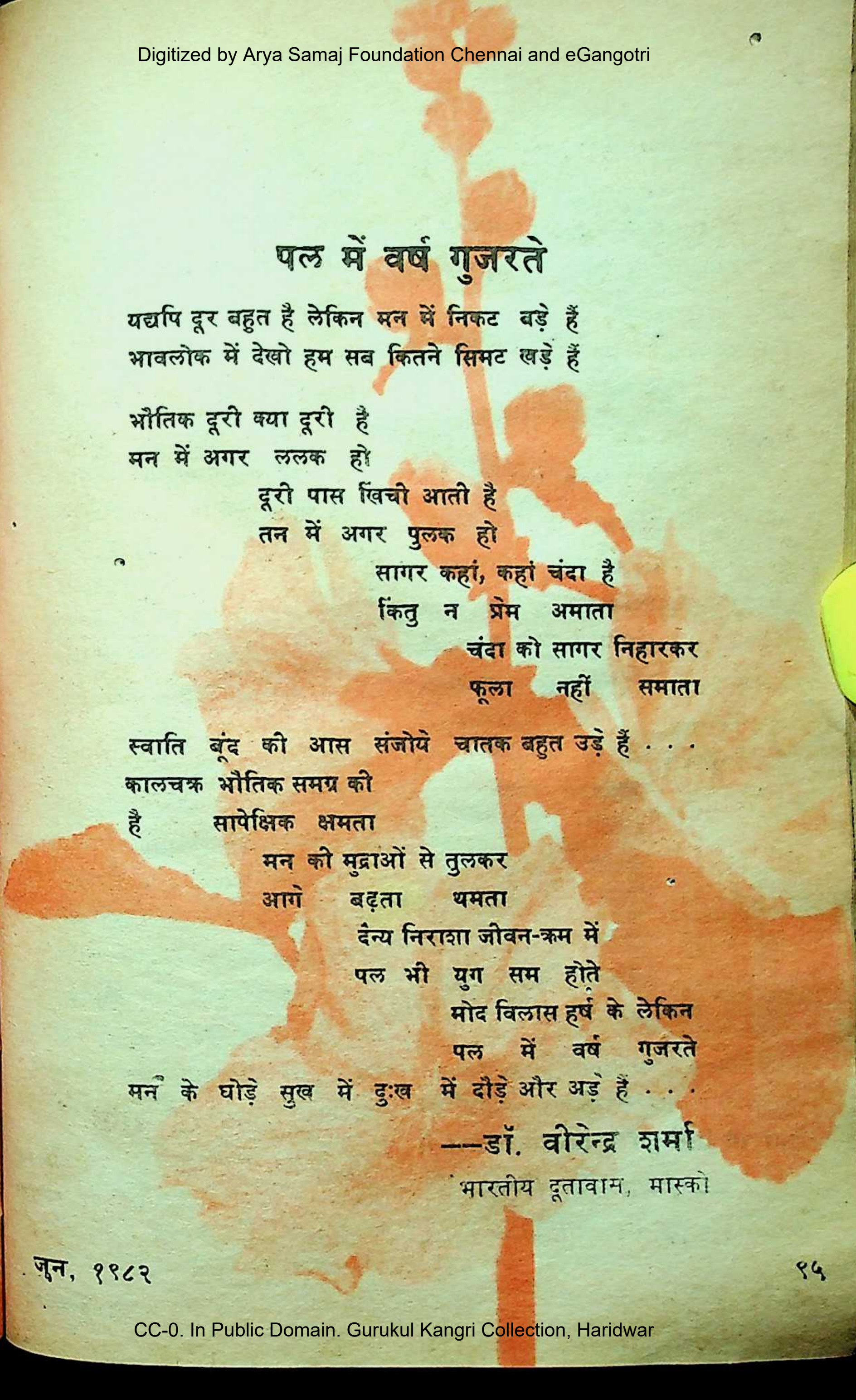

पल में वर्ष गुजरते

यद्यपि दूर बहुत है लेकिन मन में निकट बड़े हैं
भावलोक में देखो हम सब कितने सिमट खड़े हैं

भौतिक दूरी क्या दूरी है
मन में अगर ललक हो
दूरी पास खिंची आती है
तन में अगर पुलक हो
सागर कहां, कहां चंदा है
किंतु न प्रेम अमाता
चंदा को सागर निहारकर
फूला नहीं समाता

स्वाति बूंद की आस संजोये चातक बहुत उड़े हैं . . .
कालचक्र भौतिक समग्र की
है सापेक्षिक क्षमता
मन की मुद्राओं से तुलकर
आगे बढ़ता थमता
दैन्य निराशा जीवन-क्रम में
पल भी युग सम होते
मोद विलास हर्ष के लेकिन
पल में वर्ष गुजरते
मन के घोड़े सुख में दुःख में दौड़े और अड़े हैं . . .

—डॉ. वीरेन्द्र शर्मा
भारतीय दूतावास, मास्को

पोलियन की आश्चर्यपूर्ण वसीयत

● मुकुन्ददास माहेश्वरी

सेंट हेलेना द्वीप में निर्वासित कैदी के रूप में नेपोलियन ने अगस्त, १८१६ में एक वसीयत लिखी थी, जिसे उसने अपने सहयोगी दल के सदस्य बरट्रेंड को मृत्योपरांत कार्यान्वित करने के लिए सौंप दिया था। १० अप्रैल, १८२१ को उसने फिर से दोबारा वसीयत लिखने की इच्छा व्यक्त की। उसने अपनी पुरानी वसीयत को मंगाया, उसे पढ़ा, और फिर न जाने क्यों उसे फाड़कर फेंक दिया।

१५ अप्रैल, १८२१ को उसने स्वयं अपने हस्ताक्षर से वसीयत तैयार की, जिसके प्रमुख पांच अनुच्छेद थे—

१. मैं कैथोलिक अपोस्टोलिक रोमन धर्म में मर रहा हूं, जिसमें मैं पचास से भी अधिक वर्ष पूर्व पैदा हुआ था।

२. मेरी इच्छा है कि मेरे अवशेष साइन नदी के तट पर, फ्रांसीसियों के बीच समर्पित किये जाएं, जिन्हें मैंने बेहद प्यार किया है।

३. मैं अपनी प्रिय पत्नी मेरी लुई से सदा प्रसन्न रहा हूं और उसके प्रति अंतिम समय तक मधुर भावनाएं रखता हूं। मैं चाहूंगा कि वह मेरे पुत्र को उसकी, अल्पवयस्कता के कारण उत्पन्न होने वाले खतरों से सुरक्षित रखे।

४. मैं अपने पुत्र को संस्तुत करता हूं कि वह यह कभी न भूले कि वह एक फ्रांसीसी युवराज के रूप में पैदा हुआ है और वह कभी भी यूरोप के राष्ट्रों को सतानेवालों के हाथों की कठपुतली न बने। उसे कभी भी फ्रांस के खिलाफ नहीं लड़ना चाहिए, न ही फ्रांस को किसी भी प्रकार हानि पहुंचानी चाहिए। उसे मेरा यह सिद्धांत 'सभी कुछ फ्रांसीसी जनता के लिए' अवश्य मानना चाहिए।

५. उन्मत्त अंगरेज राज्यशाही और उसके किराये के हत्यारों द्वारा मैं अकाल कवलित हो रहा हूं। इंग्लैंड की जनता कभी मुझसे बदला लेने से नहीं चूकेगी।

वसीयत के प्रथम खंड में तीन और अनुच्छेद थे। छठे अनुच्छेद में नेपोलियन ने सन १८१४ और १८१५ के दो युद्धों में मित्र-राष्ट्रों की विजय के लिए मारमोंट,

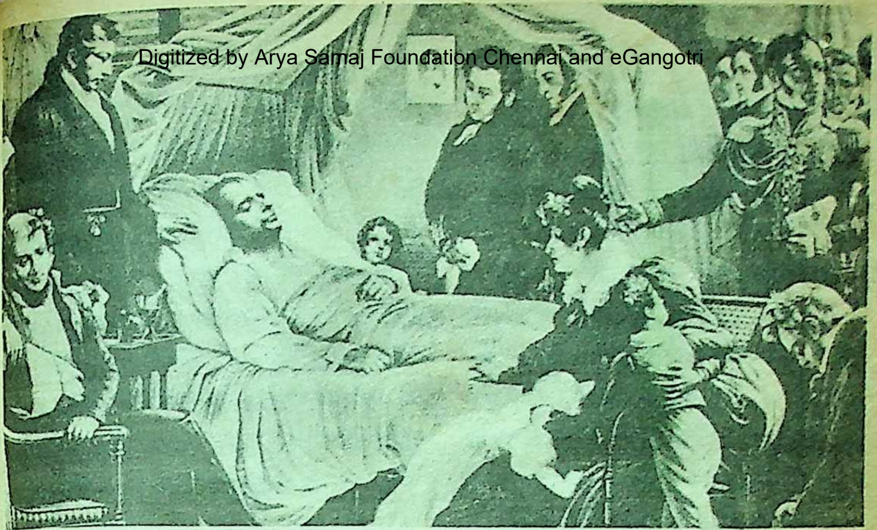

मृत्युशैया पर नेपोलियन

इतिहास का इसे क्रूर मजाक ही कहा जाएगा कि जिस नेपोलियन के नाम से यूरोप के राष्ट्र थरथराते थे, उसी नेपोलियन को एक कैदी के रूप में साढ़े पांच वर्ष जिंदा रहना पड़ा। इस अवधि में उसने अपनी पत्नी को कभी कोई पत्र नहीं लिखा, उसका इकलौता बेटा भी इक्कीस वर्ष की अल्प आयु में ही काल-कवलित हो गया और उस हारे हुए सम्राट की वसीयत की कई शर्तों का पालन भी नहीं किया जा सका। पिछले अंक में पाठकों ने 'नेपोलियन की शव परीक्षा' शीर्षक रोचक लेख पढ़ा, उसी क्रम में प्रस्तुत है—'नेपोलियन की दुर्भाग्यपूर्ण वसीयत' . . .

आग्रो, टेलीरेंड और लफायें-जैसे सेनाध्यक्षों व राजनीतिज्ञों को दोषी ठहराया था।

सातवें अनुच्छेद में कैदी के रूप में जीवन बिताते समय अपने परिवार के सदस्यों द्वारा प्रदर्शित सहानुभूति के लिए उसने धन्यवाद दिया था, तथा अंतिम अनुच्छेद में कारावास की अवधि में उसके नाम से प्रकाशित कुछ पुस्तकों के लेखक के रूप में उसने अपनी असहमति व्यक्त की थी।

इतिहास की यह विडंबना है कि जिस नेपोलियन के नाम से यूरोप के राष्ट्र थर्राते थे, उसी नेपोलियन की वसीयत के अधिकांश अनुच्छेद विवादास्पद रहे, और कुछ का पालन नहीं किया जा सका।

धर्म : एक चाल थी?

जीवन-पर्यंत नेपोलियन यह घोषित करता रहा कि धर्म में उसका कोई विश्वास नहीं है। एक बार बरट्रेंड से उसने यहां तक कह दिया था कि, 'मुझे बड़ी प्रसन्नता है कि

मेरा कोई धर्म नहीं है। मेरे लिए यह बड़ी संतोष की बात है कि मुझे कोई काल्पनिक भय भी नहीं है, तथा भविष्य की भी कोई चिंता नहीं है।" जून, १८१६ में लाकेसिस से उसने कहा था, "मृत्यु का वरण करते समय किसी भी आदमी के विचार क्या रहेंगे, यह नहीं कहा जा सकता, न ही इस भयानक अवसर पर व्यक्ति के मस्तिष्क के विचलित होने का कारण बताया जा सकता है।" अगस्त, १८१७ को धार्मिक चर्चा में तल्लीन गारगाड ने जब नेपोलियन से यह कहा कि वह (गारगाड) एक धर्मावलंबी के रूप में संसार से विदा होगा, तब नेपोलियन ने उसका मखौल उड़ाते हुए कहा था, "जब शरीर कमजोर हो जाता है, तब दिमाग संतुलन खो बैठता है।"

नेपोलियन के उपरोक्त विचारों को उसकी वसीयत के प्रथम अनुच्छेद से तुलना करने पर उनमें अंतर पाते हैं। यह संदेह भी होता है कि नेपोलियन द्वारा जीवन-पर्यंत धर्म का खंडन किया जाना, क्या एक राजनीतिक चाल थी? जो कुछ भी हो, निश्चित नहीं कहा जा सकता कि नेपोलियन धर्मावलंबी था या नहीं।

फ्रांस के प्रति प्रेम

वसीयत के दूसरे अनुच्छेद में उसने फ्रांस के प्रति अपना अप्रतिम प्रेम प्रदर्शित किया था। ११ अप्रैल, १८१४ को फ्रांस और इटली की राजगद्दी त्यागते समय नेपोलियन ने जो घोषणा की थी, वह उल्लेखनीय है। उसने सगर्व घोषित किया था, 'चूंकि मित्रराष्ट्रों ने यह घोषणा की है कि यूरोप में शांति के पुनः स्थापित करने में सम्राट पूर्णतः अवरोधक हैं, इसलिए अपनी शपथ के प्रति निष्ठावान रहते हुए सम्राट यह घोषणा करते हैं कि वे अपने और अपने वंशजों के लिए फ्रांस और इटली की राजगद्दी त्यागते हैं। ऐसा कोई भी त्याग नहीं है, जिसे सम्राट फ्रांस के लिए करने को तैयार न हों।'

इतिहास साक्षी है कि नेपोलियन का फ्रांस के प्रति स्नेह उसके उत्थान के बहुत समय बाद प्रकट हुआ था। जीवन के प्रारंभिक वर्षों में नेपोलियन कोर्सिका का देशभक्त रहा, और उस समय उसकी यही कोशिश रही कि फ्रांस को जितना अधिक से अधिक नुकसान पहुंचाया जा सके, पहुंचाया जाए। फ्रांस के प्रति नेपोलियन की जन्मजात श्रद्धा नहीं थी, बल्कि जब वह एक राजनीतिज्ञ और बाद में सम्राट के रूप में उन्नति के चरमशिखर पर पहुंचा था, तब फ्रांस के प्रति उसके मन में श्रद्धा उत्पन्न हुई।

नेपोलियन की तीसरी इच्छा अपनी पत्नी के प्रति अपरिमित प्यार व्यक्त करना था। जहां एक ओर नेपोलियन के विचार पत्नी मेरी लुई के प्रति इतने शुद्ध और सहृदय थे, वहीं दूसरी ओर नेपोलियन के प्रारंभिक निर्वासन की अवधि में ही मेरी लुई ने नेपोलियन की मृत्यु के बाद काउंट

नीपबर्ग के साथ शादी करने की घोषणा कर दी थी। कैदी के रूप में नेपोलियन साढ़े पांच वर्ष जिंदा रहा; पर उसने पत्नी को कभी कोई पत्र नहीं लिखा।

वसीयत के चौथे अनुच्छेद में, उसने अपने पुत्र को हिदायत दी थी कि फ्रांस के प्रति सदा प्रेम व सद्भावनापूर्ण व्यवहार करे। तथापि ड्यूक ऑव रिसडेट के रूप में विख्यात उसका पुत्र आस्ट्रिया के प्रति इतना अधिक आसक्त था कि दस वर्ष की अल्प आयु में ही वह फ्रांस को आस्ट्रिया के शत्रु के रूप में देखने लगा था। इसका प्रमाण ठोस रूप में उस समय मिला, जब बेग्राम के युद्ध में फ्रांस की सीमाओं की ओर संकेत करते हुए उसने अपने एक मित्र से कहा था, "हम यहां हैं, वहां शत्रु।" शत्रु से उसका तात्पर्य फ्रांस था। नेपोलियन का यह इकलौता बेटा दीर्घजीवी न हो सका, और २१ वर्ष की अल्पायु में ही काल-कवलित हो गया।

बंटवारा संपत्ति का

नेपोलियन को यह ज्ञात था कि उसकी पत्नी, पुत्र और परिवार के अन्य सदस्यों को किसी प्रकार की आर्थिक सहायता की आवश्यकता नहीं है, अतः अपनी वसीयत में उसने उनके लिए कोई आर्थिक प्रावधान नहीं किया। उसने अपनी कुछ निजी वस्तुएं अपने पुत्र को तथा शेष सभी सामान भाइयों व बहनों में वितरित कर दिया। पुत्र को प्रदान की गयी निजी चीजों में थे—चांदी के बरतन, चीनी मिट्टी की कटलरी, सोबेस्की की तलवार, जिससे उसने आबूकीर और आस्टरलीज की लड़ाइयां लड़ी थीं; वस्त्रों के दो जोड़े,

फुटबाल

लीड्स (इंग्लैंड) की तीस वर्षीया बारबरा लेजर लगातार फोन नं. ९९९ पर फोन कर रही थी, पर उस नंबर पर बैठा अफसर, जिसका काम दुर्घटनाओं की रपट लिखने का था, उसकी बात पर यकीन ही नहीं कर रहा था। जब उसके बहुत इसरार करने पर वह आया, तब जाकर उसे यकीन हुआ कि लेजर झूठ नहीं बोल रही थी।

लेजर की कहानी यह थी: "मेरे पति घर के बाहर फुटबॉल खेल रहे थे। घर के बाहर उनका फुटबॉल खेलना मुझे सख्त नापसंद है। अचानक, उन्होंने ऐसा हिट मारा कि बॉल खिड़की के कांच तोड़ती हुई, रसोईघर में आ गयी। जब वे बॉल लेने अंदर आये, तब मैं आगबबूला हो उठी, और बिना यह सोचे-समझे कि मैं क्या कर रही हूं, मैंने उन्हें रसोईघर की मोरी में धकेल दिया। वह मोरी में ऐसे फंस गये हैं कि अब उनका निकलना मुश्किल हो गया है।"

बाद में फायर-ब्रिगेड की मदद से लेजर के पति को बाहर निकला गया।

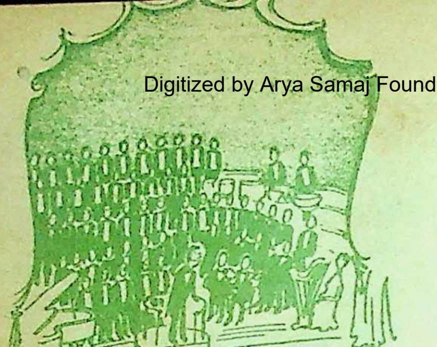

फ्रेडरिक महान की अलार्म घड़ी, और उसके पुस्तकालय की लगभग ४०० पुस्तकें।

सेंट हेलेना में नेपोलियन अपने आपको सदा एक धनवान सम्राट समझता रहा। उसे यह विश्वास था कि उसके पास साठ लाख फ्रैंक से कम नकद राशि नहीं है। जबकि यह राशि केवल ३१ लाख फ्रैंक ही थी। नेपोलियन ने अपने तथाकथित साठ लाख फ्रैंक का बंटवारा अपने सेवक-दल के सदस्यों में किया। उसने यह भी लिखा था कि मृत्यु के उपरांत उसके सिर को मुड़ा दिया जाए और बालों को गूंथकर उसके पुत्र को दिया जाए, तथा उसके गले के कंठे को उसके परिवार के सदस्यों को सौंप दिया जाए। जैसे-जैसे समय बीतता जाता था, नेपोलियन अनेक उपहार विभिन्न व्यक्तियों को देने का प्रपत्र तैयार करता जाता था, जिसमें कई ऐसी इमारतें भी थीं, जिन पर अब उसका कोई अधिकार नहीं रह गया था। नेपोलियन द्वारा केंटीलोन नामक सैनिक अफसर को दस हजार फ्रैंक का दान सर्वाधिक उल्लेखनीय था। इस अफसर पर अंगरेज सेनानायक वेलिंगटन की हत्या का आरोप था। नेपोलियन ने केंटीलोन के बारे में अपनी वसीयत में लिखा था कि केंटीलोन को वेलिंगटन की हत्या करने का पूरा अधिकार था, ठीक उसी प्रकार जिस प्रकार वेलिंगटन ने उसे सेंट हेलेना की पाषाण-शिलाओं पर ध्वस्त होने के लिए भेज दिया था।

नेपोलियन की मृत्यु के उपरांत उसकी वसीयत के अनुसार प्रदत्त राशि के वितरण के लिए जो आयोग बैठा था, उसने उसके सेवक-दल के सदस्यों को लगभग पूरी-पूरी राशि प्रदान की, शेष सभी को आधी राशि मिल सकी। क्योंकि नेपोलियन की संपत्ति उसके अनुमान से कम निकली थी, लेकिन बाद में इस कमी को भी नेपोलियन के बेटे ने पूरा कर दिया। जब नेपोलियन का बेटा लुई नेपोलियन फ्रांस का सम्राट बना, तब उसने इस कमी को पूरा करने के लिए एक करोड़ फ्रैंक की शासकीय व्यवस्था की, जिससे मृत नेपोलियन की अंतिम इच्छा पूरी हो सके और उसकी आत्मा को शांति मिल सके। इस राशि से, जिनको पूरी राशि नहीं मिल सकी थी, उन्हें या उनके वंशजों को बाकी रकम चुकायी गयी।

—वल्लभ महल, राजा गोकुलदास पैलेस
हनुमानताल, जबलपुर

कहानी

मास्टर

● अखिलेश तिवारी

शाम का धुंधलापन छाने लगा है। सामने लगा सफेद परदा पीली रोशनी से ढंक गया है। परदा अब पूरी तरह से जीवित हो उठा है। उस पर राइफिल-धारी सैनिक मार्च करने लगे हैं। परदे के पीछे से आनेवाली आवाज बतलाती है... "बहादुर अंगरेजी सेना बराबर आगे बढ़कर नाजी दुश्मनों का विध्वंस कर रही है. . ."

मैं फिल्म देखने में इतना तल्लीन हूं कि समय का कुछ भी ध्यान नहीं रहा है। फिल्म काफी रात गये समाप्त होती है। स्कूल के अन्य साथी जा चुके हैं। घर तीन मील से भी अधिक दूर है। डर लग रहा है। सुनसान अंधेरे रास्ते का और उससे भी अधिक पिताजी की डांट का।

पिताजी बाहर चबूतरे पर ही टहल रहे हैं। उनके साथ कोई अन्य सज्जन भी हैं, जिन्हें मैंने पहले कभी नहीं देखा। शायद उन्हीं के कारण मुझे डांट नहीं पड़ी।

अंदर मां से पूछता हूं, "मां, वह बाहर पिताजी के साथ कौन खड़ा है?"

"अंगरेजी के कोई मास्टर आये हैं... अपने स्कूल में नौकरी की तलाश में।"

मैं और भी प्रश्न करना चाहता हूं, पर मां बीच में ही टोक देती है, "अब कल सब कुछ पूछ लेना।"

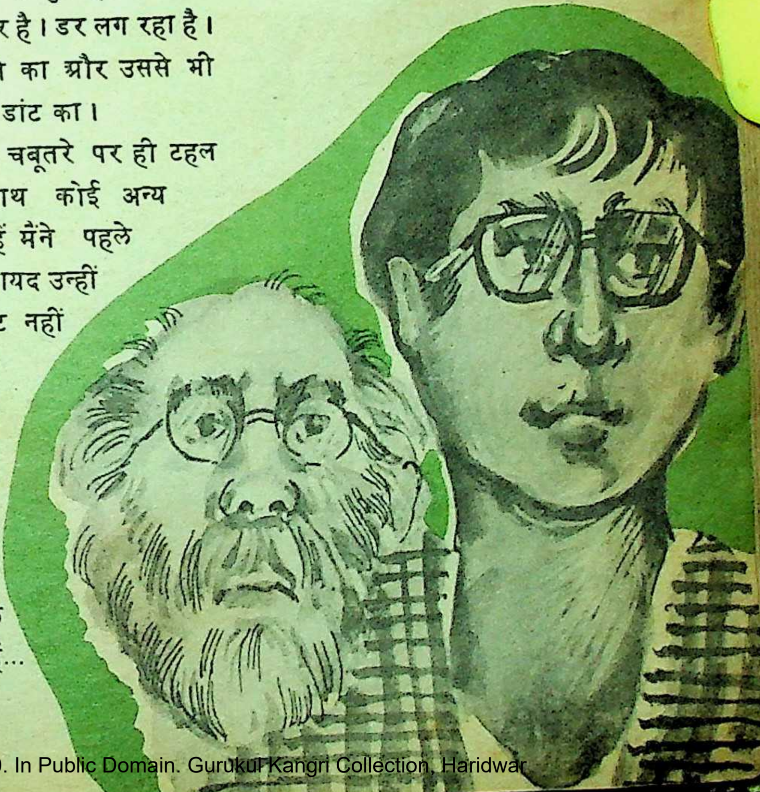

कस्बे के एक छोर पर धरमशाला है। मास्टरजी उसी की एक कोठरी में रहने लगे हैं। एक रोज मैं उनसे मिलने जाता हूं। मेरे मन में बहुत सारे प्रश्न हैं। पर पूछने का साहस नहीं जुटा पा रहा हूं।

"कुछ पूछना चाहते हो . . . . तो पूछो ना, झिझक क्यों रहे हो . . . .।"

"। . . . . मास्टरजी, आप इतनी दूर बंगाल से यहां क्यों आये . . . ? आपको अपने घर की याद नहीं आती . . . . . .?"

"राजू, ...मैं तुम्हारे सभी प्रश्नों का उत्तर दूंगा। पर तुम मेरे छोटे भाई की तरह हो। अच्छा हो यदि तुम मुझे मास्टरजी के स्थान पर 'मास्टर दा' या केवल 'दा' ही कहो . . .।"

मैंने स्वीकार कर लिया। एक दिन मास्टर दा कहने लगे, "राजू, घर की याद तो सभी को आती है। पर यह सारा देश भी तो एक ही है—एक विशाल घर।"

इतना कहकर मास्टर दा गंभीर हो गये। उनकी आंखें मानो किसी दूर अदृश्य लक्ष्य को खोजने में जुट गयीं। उन्होंने आगे कहना शुरू किया, "मेरा भी परिवार है राजू। मां . . . .बिल्कुल बूढ़ी, शिथिल . . . शरीर से . . .मन से नहीं। मन से तो वह इतनी बलवान और निडर है, कि सारी दुनिया की मुसीबतों का सामना अकेले ही कर सकती है . . . .।"

"और कौन-कौन है मास्टर दा आपके परिवार में . . . .।" मुझे लगा कि अब उन सारे प्रश्नों का उत्तर मुझे मिल रहा है, जो मेरे मन में पहले दिन से ही उठ खड़े हुए थे।

"और . . .। हां, दो बहनें हैं . . . एक पढ़ रही है . . ."

"और दूसरी ?" मैं अपनी जिज्ञासा को रोक न सका।

मास्टर दा मौन हो गये। फिर उनकी आंखें-काली, पैनी, चमकदार-मेरे चेहरे पर स्थिर हो गयीं।

"तुम अभी बच्चे हो . . . . लेकिन मैं तो तुमसे भी छोटा था, जब मेरी दीदी ने मुझे अपना रहस्य बतलाया था और मुझ पर विश्वास किया था। फिर मुझे एक लक्ष्य प्रदान किया और उसे प्राप्त करने की दीक्षा दी।

"बोलो, क्या तुम मेरी बतलायी बातें हमेशा अपने अंदर ही गुप्त रख सकोगे?..."

मैंने स्वीकृति के रूप में केवल "हां" भर कह दिया।

"मेरी दीदी अंगरेज ताना-शाहों की जेल में सड़ रही है और मुझे बंगाल की सीमा में पैर रखने की इजाजत तक नहीं है...।"

उस दिन के बाद मास्टर दा

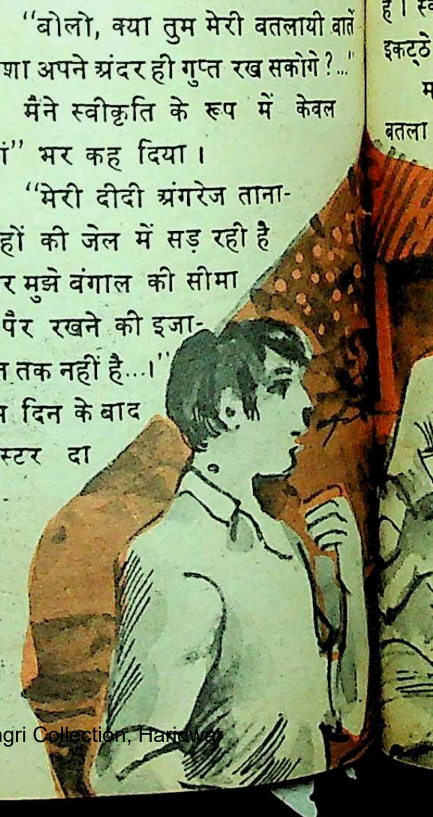

मेरी श्रद्धा के पात्र बन गये। मैं सप्ताह में एक दो बार अवश्य मिलने जाता।

मुझे दिन ठीक से याद नहीं है। पर इतना याद है कि उस रोज छुट्टी थी। पिताजी ने बाजार से कुछ सामान लाने के लिए भेजा था। मैं सड़क पर पहुंचा ही था कि मास्टर दा को आते हुए देखा। उनके साथ स्कूल का चपरासी भी था। मैंने उन्हें प्रणाम किया।

"ओह राजू तुम! क्या कर रहे हो यहां! अगर जरूरी काम न हो तो मेरे साथ आओ . . .।"

अंगरेजी स्कूल के सामने सड़क पर फौजी गाड़ियों का दस्ता कतार में खड़ा है। स्कूल के कंपाउंड में ढेर सारे फौजी इकट्ठे हैं।

मास्टर दा के पूछने पर चपरासी बतला रहा है, 'मैंने उन्हें जबरदस्ती ताला तोड़कर कमरे खोलने से मना किया था, पर ये नहीं माने। मैंने हेड मास्टर और मैनेजर साहब को खबर कर दी है।"

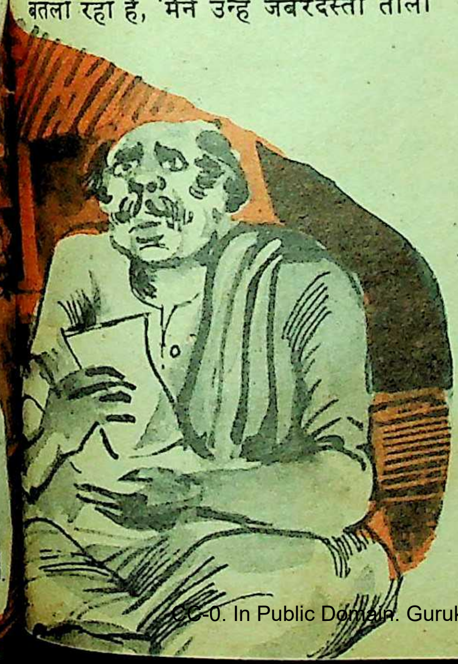

फौजी हम लोगों की बिलकुल उपेक्षा किये हुए अपने कार्य में व्यस्त हैं। उनमें अधिकतर हिंदुस्तानी सिपाही हैं। मास्टर दा उस झुंड में पहुंच गये हैं।

"आपको मालूम है, यह स्कूल है कोई धरमशाला या छावनी नहीं . . .।"

वह एक दूसरे की तरफ देखकर अपनी राइफिलें संभालने लगते हैं। मास्टर दा फिर पूछते हैं। परंतु किसी उत्तर के स्थान पर उनमें से एक मास्टर दा की ओर संगीन तानकर बढ़ता है। दूसरा उनके कुरते का गला पकड़कर चीखता है। . .

मास्टर दा विद्युत गति से एक झटके में अपने को मुक्त कर लेते हैं। उनके झटके से सिपाही लड़खड़ाकर जमीन पर गिर जाता है। एक क्षण मात्र में ही वह उस सिपाही की राइफिल उसके कंधे से घसीटकर अपने हाथों में लेते हैं।'

एक भगदड़-सी मच रही है। कहीं से एक गोरा अफसर आ जाता है। उसने सारी स्थिति समझ ली है।

"आफिसर, क्या आपके आर्डर से यह लोग इस स्कूल के दरवाजे तोड़कर अंदर घुसे थे?" मास्टर दा ने पूछा।

"किसी ने दरवाजा नहीं तोड़ा। . . रात भर इधर रहेगा . . .सुबह आगे चला जाएगा. . ." अंगरेज अफसर ने काफी सख्त आवाज में उत्तर दिया।

मैं बिलकुल हतप्रभ, किंर्त्तव्य-विमूढ़ खड़ा हूं। मास्टर दा बिलकुल संयत थे। जमीन पर पड़े टूटे ताले उन्होंने अपने हाथ में उठा लिये थे।

"यह टूटे ताले आप देख रहे हैं . . . यह क्या अपने आप टूट गये ?"

मास्टर दा के संतुलित और निर्भय व्यवहार से वह अंगरेज कुछ मुलायम पड़ा है।

"ठीक है . . . पर हम स्कूल पर कोई कब्जा करके तो नहीं बैठेगा . . . कल सुबह हमारा डेरा कूच होगा . . . . एक रात भर की बात है . . . . .।"

मास्टर दा अपनी बात पर अडिग थे।

"सुनिए . . . . आपके देश में अगर आपके सिपाही इस तरह जबरदस्ती किसी की इमारत में घुस जाएं तब आप लोग क्या इसको बरदाश्त कर लेंगे . . . . ?"

अंगरेज अफसर एकदम-जैसे बौखला उठा, "भाग जाओ इधर से, वरना हम अभी तुम्हें गोली से उड़ा देगा . . . . . ."

मास्टर दा जोर से हंसे, "एक निहत्थे आदमी को गोली से उड़ाकर खूब बहादुरी दिखाओगे . . .। खैर, मैं जाता हूं . . . पर यह कान खोलकर सुन लो . . . अगर एक घंटे में यह स्कूल छोड़कर तुम लोग नहीं गये, तो सड़क पर खड़ी सारी फौजी गाड़ियां रात में जलकर खाक हो हो जाएंगी . . ."

बिना किसी प्रतिक्रिया की प्रतीक्षा किये मास्टर दा ने मेरा हाथ पकड़ा और चल पड़े।

हम स्कूल से बाजार तक ही पहुंचे थे, कि फौजी गाड़ियों का वह काफिला हमें सड़क पर से गुजरता हुआ नजर आया। मास्टर-दा का चेहरा खुशी से खिल उठा।

"देखा ! अंगरेज कितना बहादुर है, . . . जरा-सी धमकी से ही डेरा कूच कर लिया . . .।"

मैं अचंभित था। मुझे लगा, चमत्कार हो गया है। मास्टर दा ने मेरी पीठ पर हाथ रक्खा . . .

"राजू, याद रखना ! डर मनुष्य का सबसे बड़ा शत्रु है।"

डर सचमुच हमारा शत्रु है, हमारी कमजोरी है। लेकिन मास्टर दा को डर नहीं लगता। वह अंधेरी सुनसान रातों में दूर तक आस-पास के गांवों में घूमते हैं और लोगों से आजादी के संग्राम में जुटने के लिए अनुरोध करते हैं। सुना है, कुछ दिनों से उनके ऊपर पुलिस-निगरानी भी शुरू हो गयी है।

मैंने वर्नाकुलर मिडिल परीक्षा पास कर ली है। पिताजी ने मेरा दाखिला जिले के गवर्नमेंट हाई स्कूल में करा दिया है। जाने से पहले मैं मास्टर दा से मिलने जाता हूं।

मास्टर-दा से वह मेरी अंतिम भेंट थी। दशहरे की छुट्टियों में जब मैं घर आया, तब तक वह जा चुके थे। हां एक दुर्घटना हुई थी और लोगों का कहना था कि मास्टर दा का उससे संबंध अवश्य था।

उस रोज रमई कुम्हार की घरवाली बाजार से सामान खरीदकर वापस जा रही थी। अचानक एक फौजी गाड़ी रुकी, दूसरी, फिर तीसरी। पीछे बैठे सिपाही कूदे ... रमई कुम्हार की पत्नी को उन्होंने जबरदस्ती उठाया और गाड़ी में डाल लिया। अगले दिन लोगों ने उसकी लाश तालाब में तैरती देखी।

उसके बाद एक और भी घटना घटी। कुछ ही दिनों बाद धरमशाला से एक मील दूर सड़क की मोड़ पर जो पुलिया थी, वह किसी विस्फोट से ध्वस्त हो गयी। उसके साथ दो फौजी गाड़ियां भी चकनाचूर हो गयीं। सुनने में आया पंद्रह से भी अधिक सिपाही मारे गये। मास्टर दा उसके बाद से लापता हो गये थे।

हॉस्टेल जाने के एक दिन पहले पिताजी ने मुझे अकेले में बुलाया।

"राजू, मलय की बहुत याद आती है?" (हां, मलय राय ही मास्टर दा का नाम था) मैंने सिर हिलाकर स्वीकार किया।

"लो यह पत्र पढ़कर मुझे वापस कर दो ... और हां इस बारे में किसी को भी कुछ भी बतलाने की जरूरत नहीं है ...।"

जेब से निकालकर पिताजी ने एक छोटा-सा कागज का टुकड़ा मुझे पकड़ा दिया है।

पत्र में मास्टर दा ने रमई कुम्हार की पत्नी के अपमान का बदला ले लेने का रहस्य खोला था। पत्र पढ़कर मैं खुशी और स्वाभिमान से भर उठा।

पिताजी ने मुझे ध्यान से देखा फिर गहरी सांस ली। फिर उन्होंने जो बताया, उससे पता चला कि मास्टर दा गिरफ्तार कर लिये गये थे, लेकिन पुलिस हिरासत से भाग निकले थे। हां, इस प्रयास में वे पुलिस की गोली से घायल जरूर हो गये थे।

दिन, सप्ताह, महीने, वर्ष, दशक, एक युग बीत गया। यद्यपि मास्टर दा नौकरी के विरुद्ध थे, लेकिन मुझे नौकरी ही करनी पड़ी। मैं आजकल पश्चिम-बंगाल महालेखाकार कार्यालय में अधिकारी हूं। ढेर सारी फाइलों के बीच दस से पांच तक के फासले में जीवन के दिन बीतते हैं।

एक बजने को है। मैं लंच की तैयारी

माथे को सजाए, चेहरे की शोभा बढ़ाए

आइटेक्स
डीलक्स कुंकुम
matt finish

आपकी खूबसूरती में चार चाँद लगाए...
चेहरे की सुन्दरता पर फूलों सा निखार लाए
...आइटेक्स डीलक्स कुंकुम १४ रंगों में
आपके मन भाए.
वैज्ञानिक तौर से बने इस कुंकुम का आपकी
त्वचा पर कोई बुरा असर नहीं होता.

आइटेक्स
39 वर्षों से बेहतरीन उत्पादनों
के लिए भरोसेमंद नाम

अरविंद लैबोरेटरीज़, मद्रास-600033

Imageads M-AL-1427 Hin

मैं हूं, कि यत्न से दरवाजा खोलकर, बैसाखी के सहारे चलनेवाला वह वयोवृद्ध व्यक्ति अंदर आया। वह कुछ कहने लगा था। उससे पहले कुरसी पर बैठने का आग्रह किया।

"श्रीमन, मुझे क्षमा करें, इस तरह मैं आपके लंच के समय आपको तकलीफ देने आ गया . . .।" उसकी आवाज बहुत संयत और स्पष्ट थी। मैंने उसे ध्यान से देखा, क्योंकि उसकी चांदी-जैसी सफेद दाढ़ी और मांस-हीन शरीर में वह आवाज कृत्रिम-सी लग रही थी।

"नहीं, तकलीफ की कोई बात नहीं, ... लंच दस मिनट बाद भी हो सकता है ...आप बताएं आपने कैसे तकलीफ की...!"

"मैं एक छोटा-सा स्कूल चला रहा हूं। पहले उसका मुख्य-अध्यापक था। अब रिटायर हो गया हूं। फिर भी मैनेजमेंट कमेटी ने मुझे प्रबंधक बनाया है। सरकार से थोड़ी ग्रांट (अनुदान) मिलती है... पिछले तीन वर्षों से यह रकम नहीं मिली है . . . बहुत लिखा-पढ़ी की है . . . इंसपेक्टर ऑव स्कूल्स, शिक्षा निदेशक, शिक्षा-विभाग, वित्त विभाग और ए. जी. आफिस . . . सब मिलकर चक्रव्यूह बन गये हैं . . . कहीं भी इस चक्रव्यूह को भेदने का उपाय नहीं मिलता . . ."

"मुझे सचमुच खेद है . . . खैर आप बताएं, अब पेपर्स कहां हैं। यदि इस दफ्तर में हैं, तब मैं पूरी कोशिश करूंगा कि आपको और तकलीफ न करनी पड़े ...।"

उसने अपने कंधे पर लटके झोले से कुछ कागजात निकाले। उनमें से छांटकर एक पत्र जो मेरे कार्यालय से भेजा गया था मुझे दिखाया।

पत्र पर लिखे पते को देखकर मैं चौंक उठता हूं: "श्री मलय राय, एम. ए. मैनेजर . . . पुरुलिया . . ."

मलय राय . . . क्या वही मास्टर दा! मस्तिष्क वायु गति से दौड़ रहा है। मेरी दृष्टि उनके दिये हुए पत्र पर है, लेकिन मस्तिष्क उस पहेली को सुलझाने में लगा है।

"क्या सचमुच वही मास्टर दा? संभव, नहीं, असंभव . . .! कहां सन १९४१ और कहां सन १९७२। इकत्तीस वर्ष का अंतराल।"

मैं क्या उनसे स्पष्ट पूछ लूं कि आप क्या वही मास्टर दा हैं . . .। मैं कुछ निर्णय नहीं कर पा रहा हूं।

"आप ही श्री मलय राय हैं क्या?"

"जी हां . . . क्यों, किसी 'आइडेंटीफिकेशन' (शिनाख्त) की जरूरत होगी?"

"नहीं . . . वह बात नहीं ।" फिर एक मौन ।

"आपका पैर कैसे . . . मेरा मतलब कोई दुर्घटना हो गयी . . . ।"

शायद वह इस प्रश्न के लिये तैयार नहीं थे ।

"पैर . . . दुर्घटना . . . ! ! हां एक्सीडेंट ही समझिए . . . ।"

"आप इस स्कूल में आने के पहले कहां थे ?"

वह सहसा चौकन्ने हो उठे हैं, "श्रीमन, आप यह सब क्यों पूछ रहे हैं !"

"यूं ही . . . । लगभग तीस-बत्तीस वर्ष पूर्व हमारे कस्बे में एक अंगरेजी के अध्यापक आये थे और उनका नाम भी . . . ।"

उन्होंने मेरी बात बीच में ही काटते हुए कहा, "नहीं . . . श्रीमन, आपको शायद कुछ भूल हुई है। बंगाल में यह नाम काफी सामान्य है . . . ।"

वह उठ खड़े हुए, "आप इस पत्र को रख लें . . . यदि हो सके तो स्कूल का अनुदान स्वीकृत करा दीजिएगा . . . ।"

मैं एक बार फिर किंकर्त्तव्य विमूढ़-सा बैठा हूं । वह दरवाजे तक पहुंच गये हैं। लेकिन रुक गये ।

"श्रीमन, मैं यह रकम अपने लिये नहीं मांग रहा हूं . . . । मेरा स्कूल छात्रों को निःशुल्क शिक्षा देता है, और उन शिक्षित नवयुवकों को ही जिनके पास कोई अन्य साधन नहीं है, अध्यापन-कार्य दिया जाता है। यह अनुदान और स्कूल के ट्रस्ट के नाम कुछ खेतों की आमदनी ही इन नवयुवकों के वेतन का माध्यम है। अनुदान मिल गया तो ठीक है, अन्यथा खेत बेचकर इनका ऋण चुकाऊंगा . . . हां स्कूल समाप्त हो जाएगा . . . पर मेरा जीवन भी तो समाप्ति पर है . . . ।"

वह बैसाखी के सहारे कमरे से बाहर चले गये हैं। मैं केवल शून्य में निहारता रह गया हूं . . . ।

—सी-२/४९, डॉ. जाकिर हुसैन मार्ग,
नयी दिल्ली-११०००३

गर्भावस्था में महिलाओं को खड़िया मिट्टी घड़ों या कुल्हड़ आदि विचित्र चीजों को खाने की रुचि पैदा हो जाती है ।

बी. बी. सी. ने, हाल ही में इंगलैंड में गर्भवती महिलाओं की इस प्रकार की रुचियों का एक सर्वेक्षण किया था। इस सर्वेक्षण से पता लगा कि २६१ महिलाओं को फलों को खाने की असाधारण रुचि पैदा हो गयी। क्रमशः १०५ व १०७ को हरी सब्जियां व अचार खाने में विशेष आनंद आने लगा। ३५ को कोयला, १७ को साबुन, १५ को दुर्गंधनाशक पदार्थ तथा १४ को टूथपेस्ट खाने की इच्छा पैदा हो गयी ।

चूंकि इंगलैंड में खड़िया, कुल्हड़ व घड़ों आदि का चलन नहीं है, अन्यथा इनको खाने वाली गर्भवती महिलाओं की भी वहां अच्छी खासी संख्या होती ।

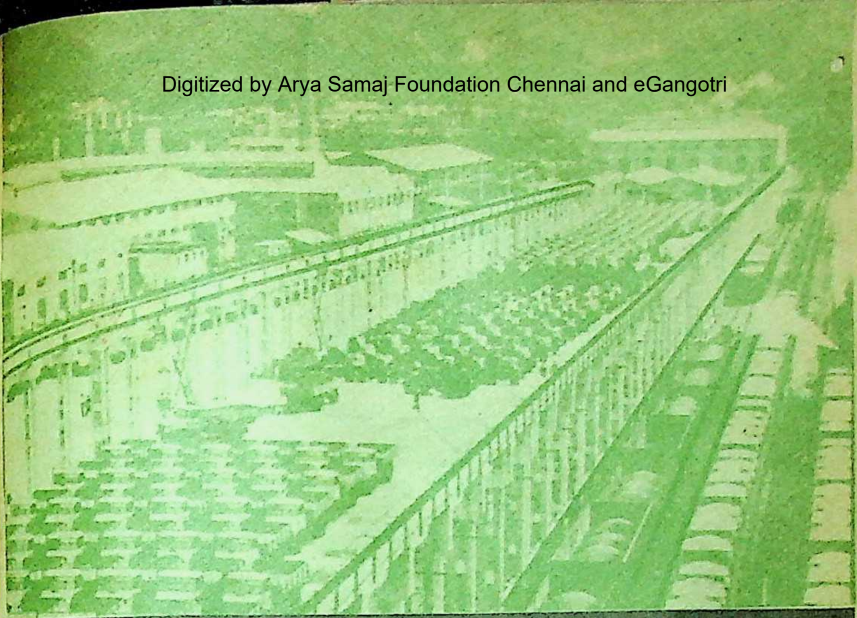

इक्कीसवीं सदी एशिया की होगी

● कोजी फुरुसावा

बीसवीं सदी का उत्तरार्ध भी समाप्त होने जा रहा है। अब मानवता की आंखें अगली सदी पर टिकी हैं। क्या होगा? अपने विकास-क्रम में विभिन्न बाधाओं को पार करती सभ्यता सफलता के किन शिखरों पर जा चढ़ेगी, यह तो हमें पता नहीं, लेकिन इतना हम जरूर जानते हैं कि अगली सदी एशिया की होगी, हमारी होगी।

एशिया जाग रहा है

यह एशिया का पुनर्जागरण है। एक बार पहले, कई हजार वर्ष बीत गये, तब मध्य एशिया की धरती पर मानवता के सांस्कृतिक इतिहास में एक नया अध्याय लिखा गया था। एक लहर उठी थी—आर्य चले, यूरोप पहुंचे, पश्चिमोत्तर द्वार से भारत महादेश में आये और छा गये। उन्होंने हर कहीं सभ्यता व संस्कृति के उर्वर बीज बो दिये। सुमेर, बेबीलोन, असीरिया में एक के बाद दूसरी नगर सभ्यताएं उभरीं और मानवीय परंपरा को नये रूप-रंग देकर पुष्ट करती रहीं। वैदिक, यहूदी, ईसाई व इस्लाम, धर्मों के रूप में मानवीय आस्था ईश्वर में प्रस्फुटित हुई—और छा गयी पूरी धरती पर, देश-काल की सीमाएं लांघकर। सब धर्मों की क्रोड़ भूमि है—एशिया। विश्व को अध्यात्म, अपरिग्रह और त्याग का संदेश देनेवाले बौद्ध-जैन

धर्म भी यहीं पनपे।

लेकिन, समय बदला। पूरी दुनिया को सांस्कृतिक विरासत सौंपनेवाला एशिया हत तेज हो गया—शायद समय का एक चक्र पूरा हो गया। पश्चिम उभरा, औद्योगिक उपलब्धियों के बल पर उसने धीरे-धीरे एशिया को अपना गुलाम बना लिया। १५१० में पुर्तगाली उपनिवेशवादियों ने गोआ को एशिया से छीन लिया था। फिर तो एक के बाद दूसरा देश उनके सामने सिर झुकाता गया।

परतंत्रता के बंधन टूटे

अब जब हम इस बात को कह रहे हैं, तो यह भी इतिहास बन गयी है। १५१० से जो पश्चिम की पराधीनता शुरू हुई, वह कमजोर होकर टूटती-टूटती १९७५ में पहुंची और उस पर एक बड़ी चोट पड़ी जब अमरीकी सेनाओं को वियतनाम छोड़ना पड़ा। इन पांच सौ वर्षों में परतंत्रता के बंधन तोड़कर अपने वास्तविक स्वरूप को पहचानने की प्रक्रिया एशिया में लगातार चलती रही थी।

औपनिवेशिक पराधीनता की आधुनिक जगत में गुंजाइश नहीं रह गयी है, इसलिए पश्चिम ने फिर एक नया रूप दिखाया। जिस औद्योगिक क्रांति के बल पर उसने एशिया की सांस्कृतिक प्रभुसत्ता को ललकारा था, वही उपनिवेशवाद की जगह खड़ी होने का प्रयास कर रही है।

एशिया की आंखें, लेकिन अब पूरी तरह खुल चुकी हैं—पश्चिम से सीखकर फिर उसे कैसे सिखाया जा सकता है, यह बात जापान ने सिद्ध कर दी। इसके लिए किसी प्रमाण की आवश्यकता नहीं है। जापान, चीन और भारत की औद्योगिक क्षमताएं पश्चिमी औद्योगिक श्रेष्ठता का मुंह फीका कर देंगी। और वह समय ज्यादा दूर नहीं है।

आर्नल्ड टॉयनबी ने पूर्व और पश्चिम के समग्र संबंधों की समीक्षा करते हुए अपना विशिष्ट निष्कर्ष निकाला था। उन्होंने कहा था—हर संस्कृति अपनी किरणें या प्रभाव विकीर्ण करती है और निश्चित क्रम से उसकी प्रभावशीलता की चमक धुंधली और तेज, तेज और धुंधली होती रहती है। इस विश्व में विभिन्न संस्कृतियों के प्रभाव परस्पर क्रिया-प्रतिक्रिया कर रहे हैं। इस सम्मिलन या टक-

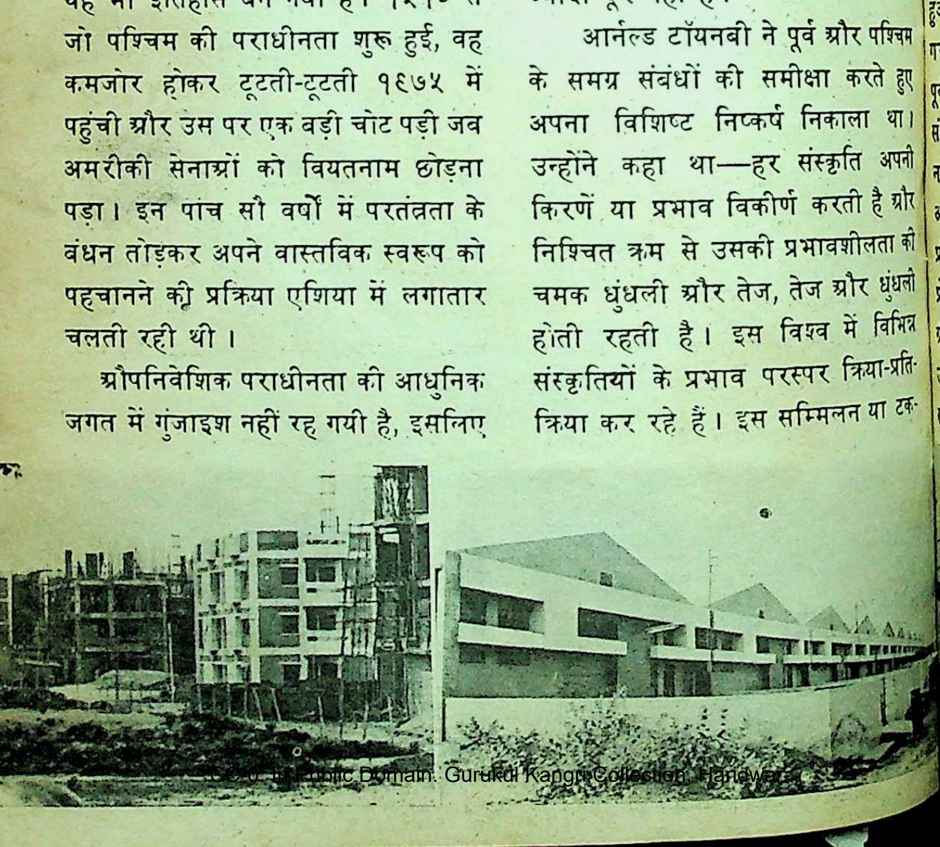

पिछली शती में एशिया ने बहुत कुछ गवाकर भी, सभी कुछ नहीं है खोया है। उसने जान लिया है कि पश्चिम को यदि पराजित किया जा सकता है, तो उसके ही हथियार

प्रस्तुत लेख के लेखक श्री कोजो फुरुसावा एक सुप्रसिद्ध अर्थशास्त्री हैं। उनका विश्वास है कि २१ वीं शती एशिया की होगी।

राव के कारण ही इतने बहुरंगी, विविध आयामी मानवीय इतिहास का निर्माण संभव हुआ है। टॉयनबी ने पश्चिम के नये प्रभाव को आणविक संस्कृति किरण का नाम दिया था। उन्होंने कहा कि पश्चिम से इतर संस्कृतियां जब उस प्रभाव के संपर्क में आयीं तब उन्होंने प्रतिरोध किया और इस प्रतिरोध के फलस्वरूप उनमें एक क्षमता का विकास हुआ। अंततः इसी ने एशिया के पुनर्जागरण की भूमिका निभायी। इसके चलते पूर्व और पश्चिम के बीच हथियारों का संघर्ष तो अकल्पनीय कहा जाएगा। टॉयनबी के अनुसार पश्चिम के औद्योगिक आक्रमण का सामना आध्यात्मिक, धार्मिक, प्रौद्योगिक किसी भी रूप में हो सकता है।

प्रौद्योगिक सभ्यता का विस्तार

ग्रीक-रोमन सभ्यताएं इसी का एक प्राचीन उदाहरण कही जा सकती हैं। दोनों ही सभ्यताओं ने अपनी तत्कालीन विकसित प्रौद्योगिक क्षमताओं (अपेक्षाकृत परिष्कृत हथियार, वैज्ञानिक युद्ध संचालन प्रक्रिया तथा ऐसी ही अन्य बातों) के बल पर पूरी दुनिया की राजनीति का नक्शा ही बदल दिया था। वे आसपास के सब नगर राज्यों को निगलते हुए पूरी दुनिया पर छा गयीं।

समय का एक और चक्र घूम गया। यूरोप में ग्रीक और यूनानी संस्कृतियों पर अपना रंग चढ़ाकर उन्हें पीछे धकेल देनेवाले ईसाई धर्म ने आनेवाले समय में प्रौद्योगिक स्वरूप से एशिया, अफ्रीका और लातीनी अमरीका में अपने प्रभाव का विस्तार किया। बीसवीं सदी तक पश्चिमी उपनिवेशवाद की पकड़ पूरे एशिया-अफ्रीका पर मजबूत हो गयी। टॉयनबी के शब्दों में कहें तो पश्चिमी सभ्यता की बढ़त का मुख्य तत्व 'कल्चर' में उनकी प्रौद्योगिक प्रभावशीलता ही थी।

धीरे-धीरे यह बात स्पष्ट हो गयी

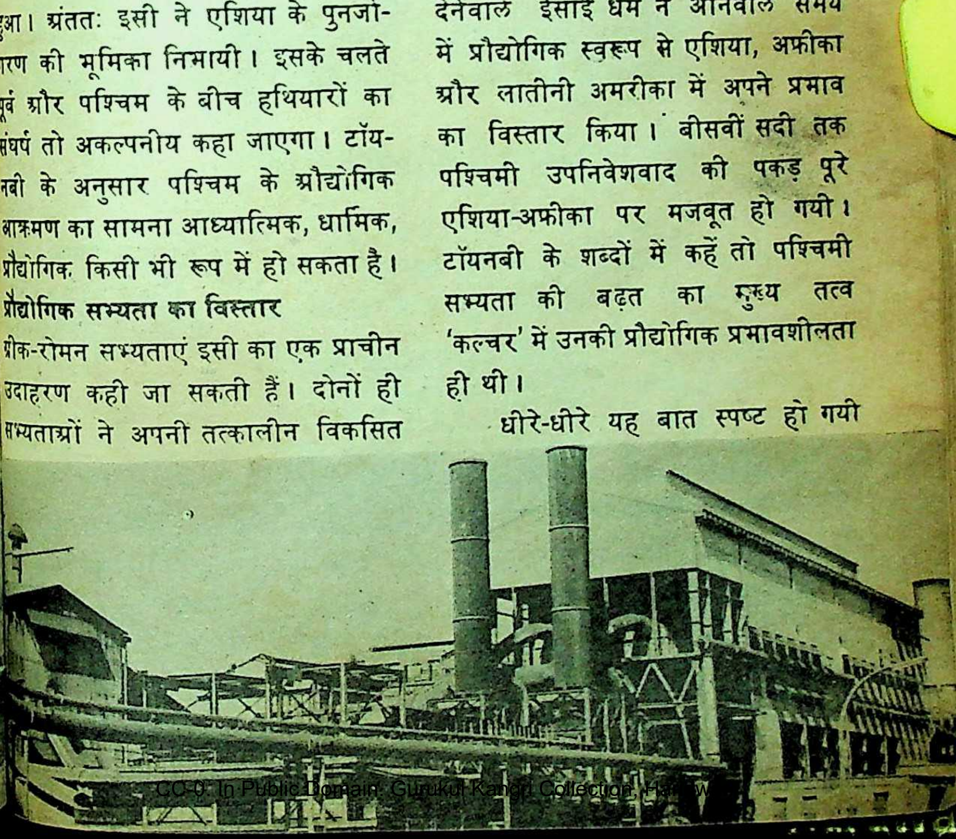

रेक्सोना आपकी त्वचा की देखभाल करता है...

इसे कोमल और उज्ज्वल रखता है

रेक्सोना, इसमें मिले हैं चार कुदरती तेल—
हापुशा, दालचीनी, लौंग, टेरिबिंथ. रेक्सोना से नहाइये
—यह आपकी त्वचा को
कोमल और उज्ज्वल
बनाए रखता है. इसकी
मनमोहक खुशबू आपको
पहरों महकाए. रेक्सोना
—आपकी त्वचा की
कुदरती देखभाल के लिए.

REXONA
WITH A BLEND OF FOUR NATURAL OILS
GOOD FOR YOUR SKIN

रेक्सोना आपकी त्वचा के लिए गुणकारी है

हिन्दुस्तान लीवर का एक उत्कृष्ट उत्पादन

लिंटास-RX. 78-1510 HI

कि जब
प्रौद्योगिक
लेते हैं त
पश्चिमी
शायद इ
जापान
जापान
तथ्य को
और इस
में देखने
सेनाओं
एक के
के काफी
या उसे
लिया।
इस
द्वितीय
हुए भी
उचित
के संद
माना ज
बाद
संतुलन
एक प
एशिया
जा सक
अ
समस्या
क्षेत्रीय
चीन
पश्चिम

कि जब तक एशियाई देश पश्चिम की औद्योगिक क्षमता का रहस्य नहीं जान लेते हैं तब तक उनका बचना संभव नहीं।

पश्चिमी शिकजे से मुक्ति

शायद इस तथ्य को सबसे पहले समझा जापान ने। १९०४-१९०५ के रूस-जापान युद्ध में जापान की विजय ने इस तथ्य को निर्णायक रूप से प्रकट किया। और इसका चरम रूप द्वितीय विश्व-युद्ध में देखने को मिला, जब जापानी सशस्त्र सेनाओं ने पश्चिमी राष्ट्रों की सेनाओं को एक के बाद दूसरी शिकस्त देते हुए एशिया के काफी बड़े भू-भाग पर कब्जा कर लिया या उसे पश्चिम के पंजे से मुक्त करा लिया।

इसका अर्थ यह नहीं है कि जापान ने द्वितीय महायुद्ध में एशियाई राष्ट्र होते हुए भी एशियाइयों पर जो जुल्म ढाये उन्हें उचित कहा जा सकता है, लेकिन लेख के संदर्भ में इसे एशियाई सफलता जरूर माना जा सकता था। द्वितीय महायुद्ध के बाद विश्व का सैनिक व राजनीतिक संतुलन स्पष्टतः दो खेमों में बंट गया है—एक पश्चिमी, दूसरा कम्युनिस्ट—इसमें एशिया की भूमिका अनुयायी की ही देखी जा सकती थी।

आर्थिक दबावों व जनसंख्या की समस्या के बावजूद भारत एक प्रगतिशील क्षेत्रीय शक्ति के रूप में उभर रहा है, उधर चीन भी इसी तरह बढ़ रहा है, लेकिन पश्चिम के औद्योगिक विस्तारवाद का सबसे करारा जवाब दिया है जापान ने। जापान के बाद भारत, चीन, हांगकांग, थाइलैंड, तैवान, इंडोनेशिया, पश्चिम कोरिया व सिंगापुर-जैसे देशों ने एकाधिक बार यह प्रमाणित कर दिया है, कि आर्थिक प्रभुता व श्रेष्ठता के क्षेत्र में वे पश्चिम की पारंपरिक औद्योगिक प्रमुखता को चुनौती देने के लिए पूरी तरह तैयार हैं।

यह कोई आकस्मिक रूप से नहीं हो गया है। इसके पूरे विकास-क्रम को आसानी से समझा जा सकता है। एशिया में शिक्षा का प्रसार बढ़ा। वैज्ञानिक तथ्यों के आदान-प्रदान द्वारा कुछ कर दिखाने की इच्छा जगी। इसी का सुफल है कि आज सोवियत संघ व अमरीका के बाद प्रशिक्षित इंजीनियर व डाक्टरों की संख्या भारत में सबसे अधिक है।

पश्चिम की पराजय उसी के हथियार से

धर्म और संस्कृति का उत्तरदान चाहे एशिया ने सारे विश्व को दिया हो, लेकिन आज वह इस बात को पूरी तरह समझ चुका है कि आध्यात्मिक व अभौतिक चिंतन प्रक्रिया में अपने को भुलाकर भौतिकवादी संसार की दृष्टि में उसने एक अक्षम्य अपराध किया था, 'सशक्त मन पर दुर्बल तन' की कहावत चरितार्थ कर दी थी। और इसका पूरा-पूरा मूल्य भी उसे चुकाना पड़ा, सदियों तक चलनेवाले भयंकर शोषण के रूप में। लेकिन, काफी कुछ गंवाकर भी एशिया ने सभी कुछ नहीं खोया है। सबसे बड़ी बात तो यह जान ली

अपने लाड़ले को बढ़िया से बढ़िया
चीज़ कौन नहीं देना चाहता?

आलिमेसा

बच्चों की
मालिश
का तेल

WINNERS OF
INTERNATIONAL TRADEFARE DIAMOND STUDDED
PURE DIAMOND
AWARD
1980-81

हर बड़े कैमिस्ट
व जनरल स्टोर पर
उपलब्ध

निर्माता :
शलक्स कैमिकल्स
पोस्ट बाक्स : 1568 दिल्ली-110006

Mfd. in
Collaboration
with
MAPFAIE di o.
Quaggia
ITALY

BDK 182

100 gms.
OLEMESSA
BABY
MASSAGE
OIL
FOR EXTERNAL USE ONLY
RETAIL PRICE RS. 9/-
LOCAL TAXES EXTRA
SHALAKS CHEMICALS
NARAINA INDUSTRIAL AREA
NEW DELHI-110028
BRANCHES : FARIDABAD BOMBAY

है उसने
सकता
अ
विश्लेष
कर रहे
अर्थ व्
देशों
प्रगति
सुविधा
इंडोने
हैं तो
पर बैठे
बीच में
भ
आजाद
ढांचा
आधार
निवेशि
माल
था, ले
के दस
है। जि
जरगन
गणतंत्
सित
करने
अत्यंत
गति
की ल
हैं ग्रौ
का मुं
जून

है उसने कि पश्चिम को अगर हराया जा सकता है तो सिर्फ उसी के हथियार से।

आर्थिक प्रगति के क्षेत्र में अध्ययन-विश्लेषण इस बात को बार-बार प्रमाणित कर रहे हैं, कि अविकसित देशों की कमजोर अर्थ व्यवस्थाएं पश्चिम के अतिविकसित देशों की तुलना में कहीं अधिक तेजी से प्रगति कर रही हैं। आर्थिक संपन्नता व सुविधा की निचली सीढ़ी पर अगर इंडोनेशिया व बंगला देश-जैसे गरीब देश हैं तो जापान तथा सिंगापुर उसके शीर्ष पर बैठे हैं। बाकी देशों की स्थिति कहीं बीच में आती है।

भारत को ही लीजिए, १९४७ में आजाद होते समय भारत का आर्थिक ढांचा अत्यंत अविकसित था। औद्योगिक आधार करीब-करीब था ही नहीं। औपनिवेशिक उत्तरदान के रूप में हमें कच्चे माल के सस्ते स्रोत का ही दर्जा मिला था, लेकिन आज औद्योगिक भारत विश्व के दस सर्वोन्नत देशों की पंक्ति में खड़ा है। जिसमें संयुक्त राज्य अमरीका, पश्चिम जरमनी, सोवियत संघ, जरमन जनवादी गणतंत्र, ब्रिटेन, तथा फ्रांस जैसे अतिविकसित देश हैं। लगभग हर चीज का आयात करनेवाले भारत का औद्योगिक आधार अत्यंत दृढ़ हो चुका है और वह निरंतर गति पाता जा रहा है। अपनी आवश्यकता की लगभग हर चीज हम स्वयं बना रहे हैं और औद्योगिक क्षमता के क्षेत्र में किसी का मुंह ताकने की जरूरत नहीं रह गयी है।

पश्चिम की चरमराती अर्थव्यवस्था

जापान, अमरीका के कारखानों में पूंजी लगाकर अपने आर्थिक अधिकार का क्षेत्र-विस्तार करता जा रहा है। और वही क्यों दूसरे एशियाई देश भी अन्य देशों में संयुक्त उद्यम लगा रहे हैं। अधिक श्रम शक्ति की मांग करनेवाले उद्योग जापान से दूसरे दक्षिण पूर्वी देशों में जा रहे हैं और जापान में उनकी जगह इलेक्ट्रॉनिक्स के अतिविकसित स्वचालित या रोबोचालित कारखाने लेते जा रहे हैं।

एक के बाद दूसरे पश्चिमी देशों की निर्यात-आधारित अर्थव्यवस्थाएं चरमराती जा रही हैं—और वे एशियाई आर्थिक प्रत्याक्रमण में अपने लिए प्रलय के बीज देख रही हैं। हर बीतते दिन के साथ यह प्रक्रिया और तेज होती जा रही है।

चार हजार वर्ष पहले ऐसा एक चक्र घूमा था, तब उससे सांस्कृतिक किरणें फूटी थीं और पूरी दुनिया में एक अलौकिक प्रकाश छा गया था, फिर प्रकाश का स्रोत स्वयं अंधेरे में खो गया। अब फिर अंधेरा हटा है, और इस बार जो प्रकाश फैला है उसका स्रोत मात्र अलौकिक अध्यात्मचिंतन की धारा ही नहीं कुछ और भी है। और वह है नयी भौतिकवादी दृष्टि का सहज आत्मज्ञान। ●

पाशविकता कदापि मनुष्य को नहीं समझा सकती; वह उसे केवल ढोंगी बना देती है।

—फ्रेनेलिन

कन्हर गांव के चीतल

● डॉ. एस. डी. एन. तिवारी

चीतल-वनों की शोभा। चांदा, अब चंद्रपुर—जिले के जंगलों में स्वच्छंद विचरते चीतलों का अपना सौंदर्य है। इन चीतलों के बारे में पढ़िए 'कादम्बिनी' के सुपरिचित लेखक एवं मध्यप्रदेश के अवकाशप्राप्त चीफ कंजरवेटर ऑव फारेस्ट, डॉ. एस. डी. एन. तिवारी की कलम से।

आज लगभग तैंतीस वर्ष हो गये, पर कन्हर गांव सदृश मैंने कहीं चीतल नहीं देखे। कन्हर गांव चांदा जिले में घावा वन-परिक्षेत्र में दस-बारह घरों का छोटा वन ग्राम है। गांव के निकट वन-विश्राम-गृह बना हुआ है, जो चांदा अल्लापल्ली लोक निर्माण विभाग के मुख्य मार्ग से लगभग चार किलोमीटर दूरी पर है। इस विश्राम-गृह के चारों ओर कम से कम छह किलोमीटर तक घना मिश्रित वन है, जिसमें कहीं-कहीं सागौन के वृक्ष पाये जाते हैं। अब तो हजारों हैक्टरों में सागौन का रोपण इस क्षेत्र में हो गया होगा। उस समय मैंने चार हैक्टर में सागौन का सफल रोपण किया था।

इस क्षेत्र में वन-भूमि, सपाट काफी रेतीली है। वन घना होने से भूमि पर रंजड़ी व घास इत्यादि कम होती थीं। इसलिए घने वनों के नीचे, जहां चाहे, साइकिल पर घूमा जा सकता था। इन वनों के अंदर यहां-वहां खुले मैदान थे, जिनमें मामूली ऊंचाई की घास बरसात और ठंड में दिखायी देती थी। बरसात में वृक्षों के नीचे एक प्रकार की घास सोमला घनी बिछ जाती थी, पर ठंड के पश्चात यह सूख जाती थी। इन मैदानों व वृक्षों के नीचे हमेशा चीतलों के झुंड दिन या रात में किसी भी समय दिख जाया करते थे। इस वन-खंड में शेर भी थे, पर वे बहुधा यहां से चार-पांच किलोमीटर दूरी पर ही रहा करते थे। वे बहुत ही कम इस क्षेत्र में आते थे।

उस समय शासकीय जीपें तो थीं नहीं। जिला स्तर के अधिकारियों के पास भी निजी वाहन रहा करते थे। कार में जाकर दिन या रात को चीतल मारना बड़ा सरल था, पर उस समय वनों में सड़कें नहीं थीं और अधिकतर लोग बैलगाड़ी में बैठकर ही शिकार करने जाया करते थे।

बैलगाड़ी के आवागमन से वन्य प्राणी कम घबराते व बिचकते हैं। वे बैलगाड़ी

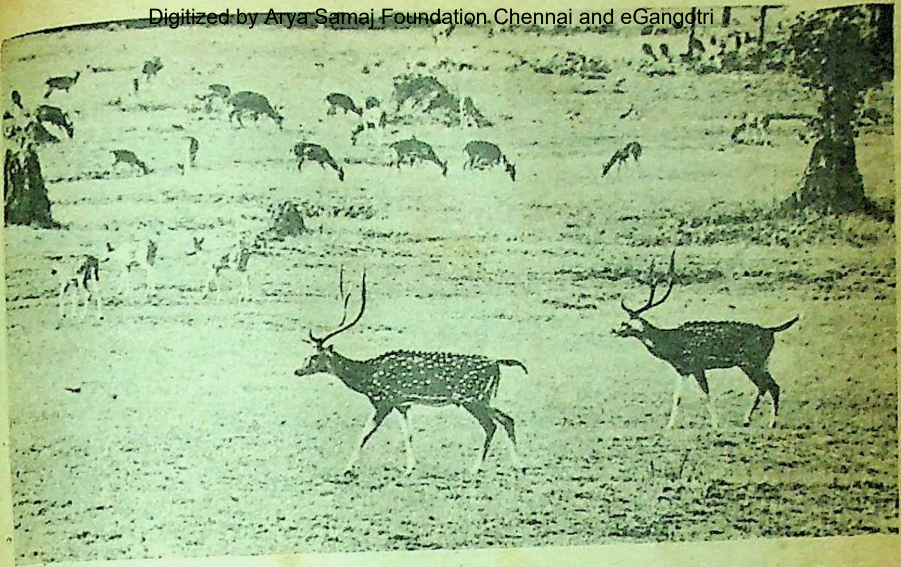

वन में स्वच्छंद विचरते चीतल

को अपने निकट आने देते हैं। इन वनों में रीछ अधिक थे, जो एकाएक मनुष्य पर धावा कर देते हैं। वन में इस प्रकार विचरण में सबसे अधिक भय रास्ता भूल जाने का रहता है, जिसका भयानक अनुभव मुझे कुछ महीने बाद एक दूसरे स्थल पर हुआ था। उस दिन मेरे पास दिशासूचक यंत्र भी नहीं था। इसलिए वन-सेवा के आरंभ में मेरा यह अकेले विचरण बहुत लोमहर्षक था। ज्यों-ज्यों समय बीतता गया, चीतलों के संबंध में मेरा अनुभव बढ़ता गया। इनकी सूघने की शक्ति अति तीव्र होती है। यदि हवा की दिशा मनुष्य से इनकी ओर है, तो बहुत दूरी से वे उसकी स्थिति से सतर्क हो जाते हैं। इसके विपरीत इनकी दृष्टि तेज नहीं रहती। यदि व्यक्ति हवा की विपरीत दिशा में निश्चल, खाकी कपड़ों में खड़ा रहे, तब चीतल उसके दो-चार मीटर निकट तक आ जाते हैं। एक बार मैं वन के मैदान के एक छोर पर खड़ा था। दूसरी ओर से चार चीतल मेरी ओर आ रहे थे। मैं अपने दो आदिवासी साथियों के साथ चीतलों के रास्ते (गड़वांत) के किनारे निश्चल खड़ा हो गया। चीतल मेरे बाजू से एक के बाद एक गुजरते गये। आदिवासी के मुंह में पानी आ रहा था। जब अंतिम चीतल गुजर रहा था, तब वह उस पर कुल्हाड़ी का वार करने टूट पड़ा। पर उसके पहले ही मैंने अपने हाथ यहां-वहां घुमाये, जिससे वह कूदकर भाग गया।

जानवर मारकर शिकारी उन्हें बैलगाड़ी पर लादकर लाते थे। मेरी नियुक्ति के कुछ महीनों के बाद हैदराबाद राज्य में गड़बड़ी पैदा हुई, और चांदा में विशेष

बेलटेक का वास्तविक
'वन-अप' टी वी

सुपर स्टार
डीलक्स
जिसमें है
हाई-गेन
वीडियो आईसी

विशेषताऐं

1. सॉलिड स्टेट, 9 आईसीज
2. वीडियो प्लेइंग सुविधा
3. 3 स्पीकर्स
4. स्टीरियो जैसी आवाज के लिए ट्रेवल एवं बास कंट्रोल

Continental/BT/2681

हमेशा एक पग आगे

बेलटेक

पुलिस-दल के सिपाही व कुछ सैनिक अधिकारी तैनात हुए, जो जिलाध्यक्ष को जिले की सीमा-सुरक्षा में सहायता देते थे। इनकी एक टुकड़ी कोठारी में डेरा डाले थी। वहां से कन्हर गांव केवल दस बारह किलोमीटर दूर था। परिक्षेत्राधिकारी ने शिकायत की कि उनमें से एक सूबेदार कन्हर गांव, सेना की जीप में जाता है, और खाने के लिए अवैध शिकार कर लाता है। उस समय क्षेत्र की राजनीतिक स्थिति विशेष थी। इसलिए कड़े कदम लेना उचित नहीं था। मैंने जिलाध्यक्ष से शिकायत की। सूबेदार को बुलाया गया। उसने बताया कि वह जीप में जाता अवश्य है पर चीतल का शिकार पैदल ही करता है। पुलिस जवानों के लिए उसे समय-समय पर गोश्त का प्रबंध करना पड़ता है। उस समय वन्य-प्राणियों की कोई कमी नहीं थी। फिर भी परमिट पर शिकार करने दिया जाता था। इस प्रकार के अवैध शिकार का अर्थ यही हुआ, कि इससे शासन को सौ-पचास रुपये की आमदनी का घाटा होता था। जिला प्रशासन उस समय काफी उलझन में था। हजारों रुपये ऐसे ही खर्च हो रहे थे। उस पर भी जिलाध्यक्ष ने सूबेदार को शिकार सीमित रखने के लिए चेतावनी दी।

मुझे उसके पैदल ही शिकार करने की विधि पर उत्कंठा हुई। मैंने भी एक दिन कन्हर गांव में डेरा लगाया। सुबह चाय पीकर, बंदूक लेकर जंगल में अकेले ही

इनके भी बयां हैं जुदा जुदा

तुम्हारी याद के जब जख्म भरने लगते हैं
किसी बहाने तुम्हें याद करने लगते हैं
—फैज अहमद फैज

हमने सीने से लगाया दिल न अपना हो सका
मुस्कुराकर तुमने देखा दिल तुम्हारा हो गया
—जिगर मुरादाबादी

उजाले अपनी यादों के हमारे साथ रहने दो
न जाने किस गली में जिंदगी की शाम हो जाए
—बशीर बदर

पूछते क्या हो, गुलो-बुलबुल की शरहे जिन्दगी
एक हंसता ही रहा और एक रोता ही रहा
—अब्दुल हमीद शम्स

तेरा मिलना और न मिलना जब तेरे बस में नहीं
मैं तेरा इकरार या इनकार लेकर क्या करूं
—सईद सोहरावर्दी

मुझे जिन्दगी की दुआ देने वाले
हंसी आ रही है तेरी सादगी पर
—गोपाल मित्तल

मैं सर कहां छिपाऊंगा इस तेज धूप में
था मोम का मकान जो कब का पिघल गया
—सय्यद मुनव्वर हाश्मी

पैदल निकल गया। करीब एक किलोमीटर बाद ही चीतलों का मिलना प्रारंभ हो गया। मेरे पास बारह बोर की बंदूक थी। उसकी मार की दूरी तक का क्षेत्र चीतलों के निकट नहीं पहुंच रहा था, पर राईफल से उन्हें मारना सरल था। करीब दो-तीन घंटे उनकी टोह में वन में मैं विचरण करता रहा। साथ में यह भी अध्ययन करता रहा कि किस कारण चीतल इस क्षेत्र में एकत्रित होते थे। छोटी घास जो वन में नीचे उगती थी, वह उन्हें विशेष प्रिय थी। इस वन में मकोर, बीजा, सैमल व साजा के छोटे-बड़े वृक्ष अधिक थे व इनकी पत्तियां हिरणों को बहुत पसंद रहती हैं। मैं बिना शिकार के लौट आया, पर घनघोर जंगल में बिलकुल अकेले छिप-छिपकर विचरण करने का जो आनंद आया, वह भुलाया नहीं जा सकता। कन्हर गांव में दूसरे दिन सुबह मैं चाय पी रहा था, कि जंगल में बंदूक चलने का धमाका सुनायी दिया। मैं झट साइकिल उठाकर निकल पड़ा। करीब एक किलोमीटर के बाद खाली जीप सड़क पर खड़ी दिखी। मैं उसके पास खड़ा हो गया। करीब सौ मीटर पर देखा कि दो राजस्व अधिकारी जिनमें एक आई. ए. एस. अधिकारी हैं, और जिन्होंने मेरे समान ही कुछ महीने पूर्व सेवा आरंभ की थी, एक मरे चीतल को उठाकर ला रहे हैं। मैंने जान-बूझकर अपना चेहरा टोप नीचाकर छिपा लिया और जोर से ललकारा कि "कौन शिकार कर रहा है?"

ललकार सुनकर घबराहट में उनके हाथ से चीतल छूट गया और बेचारे शरमाये हुए मेरी ओर आने लगे। जब वे कुछ निकट आये, तब मैंने अपना टोप ऊंचा किया, ठहाका मारकर हंसा व उनसे कहा, "अच्छा आप भी शिकार का शौक रखते हैं।" चांदा में उनसे मेरा प्रतिदिन का मिलना जुलना 'क्लब' में होता ही था। उस समय अधिकारियों को ड्यूटी पर शिकार के परमिट मिल जाते थे।

कुछ महीने पश्चात मैं इस रेंज में प्रशिक्षण के लिये पदस्थ हुआ। एक रात एक एम० एल० ए० अपने मित्रों के साथ शिकार के इरादे से मेरे पास आये। उन्होंने ब्लाक का परमिट ले रखा था। वे मुझे अनुरोधकर साथ ले गये। कन्हर गांव के पास के मैदान में उन्हें दर्जनों चीतलों का झुंड मिल गया। पहले तो उन्होंने चुनकर बड़े नर को मारा पर बाद में उनसे न रहा गया। दो तीन और भी मार दिये। मुझे यह ठीक नहीं लगा। इस घटना के बाद मैं कभी शिकारियों को साथ नहीं ले गया। कुछ वर्षों पश्चात नये प्रदेश बने और यही एम० एल० ए० एक प्रदेश के वन-मंत्री तदुपरांत मुख्यमंत्री हुए। उन्होंने वनों की सुरक्षा व उसके विकास के लिए उल्लेखनीय कार्य किये।

—'समय' प्रोफेसर्स कालोनी, भोपाल

रहेगा प्यार तेरे साथ जिंदगी बनकर
ये और बात मेरी जिंदगी वफा न करे
—कतील शफाई

बुद्धि विलास

अपनी बुद्धि पर जोर डालिए और यहां दिये प्रश्नों के उत्तर खोजिए। उत्तर इसी अंक में कहीं मिल जाएंगे। यदि आप सारे प्रश्नों के उत्तर दे सकें, तो अपने सामान्य ज्ञान को श्रेष्ठ समझिए, आधे से अधिक में साधारण और आधे से कम में अल्प।

—संपादक

१. **पांच** दस, पंद्रह, बीस और पचीस पैसों के डाक-टिकट बराबर की संख्या में खरीदे गये। यदि टिकटों की खरीद पर कुल पंद्रह रुपये व्यय हुए तो प्रत्येक प्रकार के टिकट कितनी संख्या में खरीदे गये?

क. १५, ख. २०, ग. २५, घ. ३०

२. **क. भारत** में हड़प्पा-कालीन सभ्यता के अवशेष किन स्थानों पर पाये गये हैं?

ख. क्या इनमें कोई तत्कालीन बंदरगाह के रूप में रहा था?

३. **अमरीका** के जान हापकिन्स विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों के अनुसार हमारे सौरमंडल में एक-ऐसा अंतरिक्ष-क्षेत्र है जिसका तापमान सूर्य के तापमान से भी अधिक है। बताइए वह कहां है?

४. **हाल** में किन भारतीय गणितज्ञों ने आइंसटीन के विशेष आनुपातिक सिद्धांत को चुनौती दी है और उसमें त्रुटियां बतायी हैं?

५. **देश** में दो नयी तेल-शोधशालाएं खोले जाने की योजना है। ये कहां स्थित होंगी?

६. **बंगलादेश** में तीन राजप्रमुखों की हत्या हुई है। इनमें पहले मुजीबुर्रहमान तथा तीसरे जियाउर्रहमान थे। दूसरे का नाम बताइए।

७. **दुनिया** में अब तक सबसे पुराना मानव-कंकाल हाल में कहां पाया गया है?

८. **दुनिया** का सबसे पुराना पीपल-वृक्ष कहां है? उसका इतिहास संक्षेप में बताइए।

९. **भारत** में क्षयरोग से पीड़ित व्यक्तियों की संख्या कितनी है?

१०. **भारतीय** उपग्रहों में अब तक (क) सबसे कम वजन तथा (ख) सबसे अधिक वजन के उपग्रह कौन से रहे हैं? वे कब और कहां से प्रक्षेपित किये गये?

११. **प्रथम** एशियाई खेल कहां और कब हुए थे?

१२. **नीचे** दिये गये चित्र को ध्यान से देखिए और बताइए यह क्या है—

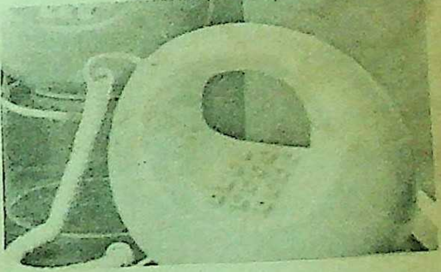

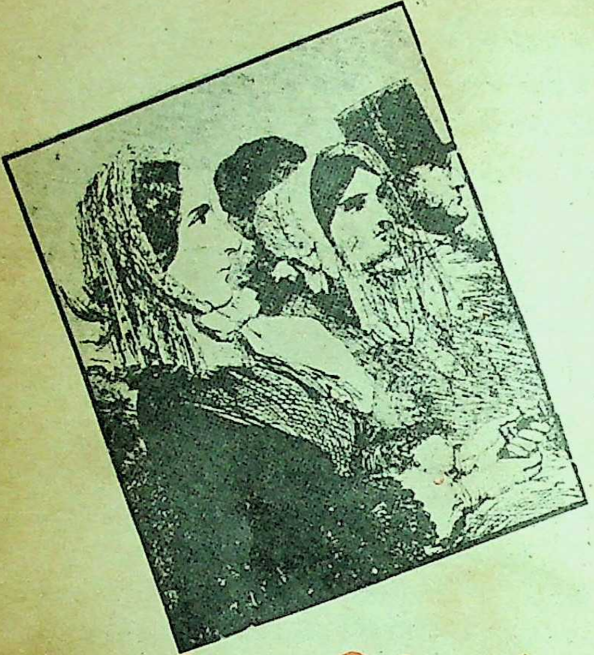

कुमारी मेडलिन स्मिथ (मध्य में)

जॉर्ज बर्नार्ड शॉ की प्रेमिका हत्यारी थी!

• कुमार अनुपम

विक्टोरिया-काल के ब्रिटिश नागरिकों की यह धारणा थी, कि पुरुषों की अपेक्षा महिलाएं अधिक नियोजित ढंग से अपराध करनेवाली होती हैं। महिलाओं के विषय में उनकी इस धारणा के मूल में वे कुख्यात हत्याकांड थे, जो कि अपनी पेचीदगी के कारण कई वर्षों तक ब्रिटेन की जनता की चर्चा का मुख्य विषय बने रहे थे। इन हत्याकांडों में मुख्य अथवा एकमात्र अभियुक्ताएं महिलाएं ही थीं।

सन १८५७ ई. में जब भारत में महारानी लक्ष्मीबाई तलवार संभाले राष्ट्र की स्वाधीनता के लिए अंगरेजों से जूझ रही थीं, तब ब्रिटेन में जून माह में कुमारी स्मिथ ने एडिनबरा की अदालत में प्रवेश किया था। उस पर अपने प्रेमी एमिल डी. एंजेलियर को संखिया (आर्सेनिक) देकर

उस पर अपने प्रेमी की हत्या का आरोप था। इस्तगासे ने उसे अभियुक्त सिद्ध करना चाहा लेकिन, अदालत ने सुबूत के अभाव में उसे स-सम्मान रिहा कर दिया। बाद में वह प्रख्यात नाटककार बर्नार्ड शॉ के संपर्क में आयी। क्या सचमुच उसने अपने प्रेमी की हत्या की थी?

मार देने का आरोप था। अदालत में लाये जाते समय कुमारी स्मिथ इतनी शांत और प्रसन्न लग रही थीं-जैसे कि वह बालरूम में नृत्य करने जा रही हो।

हत्या इस्तगासे की नजर में

इस्तगासे के अनुसार उन्नीस वर्षीया कुमारी मेडलिन स्मिथ स्काटलैंड की एक बीज बेचनेवाली फर्म के मामूली वेतन पानेवाले क्लर्क एमिल डी· एंजेलियर से प्रेम करती थी। उसके माता-पिता को यह संबंध नापसंद था, अतः उन्होंने कुमारी स्मिथ का रिश्ता एक अन्य संपन्न युवक से कर दिया था। कुमारी स्मिथ को भी यह रिश्ता पसंद था, लेकिन उसने एंजेलियर के साथ अपनी प्रेम-लीला के दौर में जो बेबाक और खुली अभिव्यक्ति व संवेदनशीलता से भरे प्रेम-पत्र लिखे थे, उनके सामने आने पर यह कच्चा रिश्ता टूट सकता था। कुमारी स्मिथ ने एंजेलियर से अपने सभी प्रेम-पत्र लौटाने का अनुरोध किया, लेकिन उसने इनकार कर दिया। इससे क्षुब्ध होकर तथा विक्टोरिया-काल के ब्रिटेन की रुढ़िवादी एवं अनुदार समाज-व्यवस्था में अपनी बदनामी की आशंका देखते हुए कुमारी स्मिथ ने उसे एक रात्रि-विदा के समय प्याले में संखिया घोलकर दे दिया और इस प्रकार उसकी हत्या कर दी।

इस्तगासे द्वारा साक्ष्य में प्रस्तुत कुमारी मेडलिन स्मिथ के वे प्रेम-पत्र इतने अधिक कामोत्तेजक और बेबाक थे, कि अदालत में उन्हें पढ़कर सुनाये जाते समय सुनवाई कर रहे न्यायाधीश महोदय को इनके कई अंशों को सेंसर करना पड़ा था।

लेवेंडर की महक से भरे गुलाबी कागजों पर लिखे गये इन प्रेम-पत्रों का आकर्षण इतना बढ़ा, कि कुछ पत्रों को अदालत से चुराकर उनकी प्रतियां पांच डालर प्रति पत्र के ऊंचे भाव में हाथों-हाथ बेच दी गयी थीं। यह मुकदमा इतना चर्चित हुआ, कि लगभग दस वर्ष पहले इस पर ब्रिटेन में एक किताब भी प्रकाशित हुई।

मुकदमे की पूरी कार्यवाही के दौरान कुमारी स्मिथ बराबर शांत बनी रही-जैसे उसे शुरू से ही यह विश्वास हो, कि वह दंडित नही की जाएगी। वह एक अनुभवी और दक्ष अभिनेत्री की तरह धैर्यपूर्वक निर्दोष मासूम अबला की भूमिका निभाती रही। वह बराबर कहती रही, कि एंजेलियर से उसे अथाह प्रेम था और उसकी मृत्यु से उसका जीवन सूना हो गया था।

इस मुकदमे में कुमारी मेडलिन

साफ़, ताज़ा सांस मज़बूत, स्वस्थ दांत

कोलगेट डेन्टल क्रीम से

हर भोजन के बाद अपने दांत कोलगेट से साफ़ कीजिए. यह ठीक उसी तरह दांतों की रक्षा करता है, जैसे दुनियाभर के दांतों के डाक्टर कहते हैं.

दांतों में छुपे हुए अन्नकणों में कीटाणु बढ़ते हैं. इनसे सांस में बदबू पैदा होती है, और बाद में दांतों में सड़न.

इसीलिए, हमेशा भोजन के फ़ौरन बाद कोलगेट डेन्टल क्रीम से दांत साफ़ कीजिए. यह सांस को ताज़ा, दांतों को सफ़ेद और दांतों की सड़न रोकने में असरदार साबित हो चुका है.

कोलगेट का ताज़ा पेपरमिंट-जैसा स्वाद मन में बस जाता है.

देखिए, कोलगेट के भरोसेमंद फ़ार्मूले का काम :

दांतों में छिपे हुए अन्नकणों में, सांस में बदबू और दांत में सड़न पैदा करनेवाले कीटाणु बढ़ते हैं.

कोलगेट का अनोखा, असरदार झाग दांतों के कोने में छिपे हुए अन्नकणों को और कीटाणुओं को निकाल देता है.

नतीजा : आपके दांत आकर्षक सफ़ेद, आपकी सांस तरोताजा और दंतक्षय की रोकथाम.

कोलगेट डेन्टल क्रीम से सांस की बदबू रोकिए- दंतक्षय का प्रतिकार कीजिए...

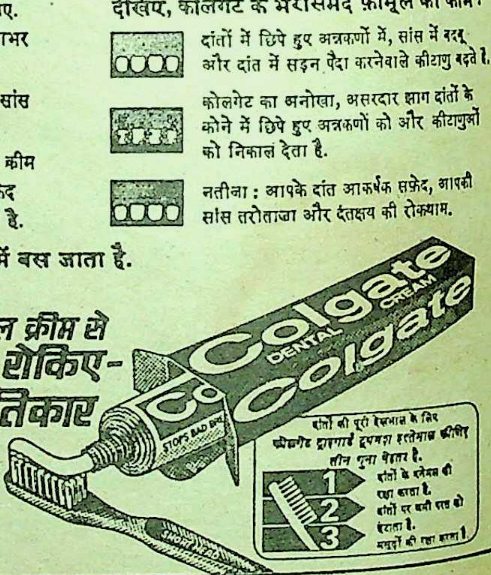

दांतों की पूरी देखभाल के लिए
कोलगेट [illegible] टूथब्रश इस्तेमाल कीजिए
तीन गुना बेहतर है.
1 दांतों के इनेमल की रक्षा करता है.
2 दांतों पर जमी तह को हटाता है.
3 मसूढ़ों की रक्षा करता है.

DC.G.74 HN

स्मिथ का बैरिस्टर इंगलीज था। उसने अपनी मुवक्किल को हत्या के अभियोग से ससम्मान बरी करा दिया।

कुमारी मेडलिन स्मिथ बरी होकर अपने घर पहुंच गयी, तो उसने जेल में अपनी खातिरदारी के लिए जेल-अधिकारियों को धन्यवाद पत्र लिखे, लेकिन अपने बैरिस्टर इंगलीज को कोई पत्र नहीं लिखा। उसके पिता ने इंगलीज की फीस के रूप में चार हजार डालर का भुगतान किया था, जिनकी कीमत आज के पैंसठ हजार डालर के आस-पास बैठती है।

कुमारी मेडलिन जो कि अपनी २६ साल की उम्र में ही फांसी के तख्ते तक जा पहुंची थी, ६३ साल की उम्र तक जीवित रही और अविवाहित रहकर महिलाओं के अधिकारों के लिए संघर्षशील रही और स्वच्छंदता से प्रेम करती रही।

बर्नार्ड शॉ से भेंट

मुकदमे से बरी होने के लगभग १० वर्ष बाद प्रख्यात नाटककार जॉर्ज बर्नार्ड शॉ से उसकी मुलाकात एक क्लब में हुई थी। इस क्लब में वह 'केटरिंग' की इंचार्ज थी। इसके अतिरिक्त वह ब्रिटेन में प्रगतिवादी आंदोलन की अग्रणी नेता के रूप में भी उभरकर सामने आ चुकी थी। इस मुलाकात के बाद जॉर्ज बर्नार्ड शॉ और कुमारी मेडलिन धीरे-धीरे एक दूसरे के निकट आते गये। यद्यपि शॉ मेडलिन को एक साधारण सामान्य महिला ही कहा करते थे, लेकिन वह वास्तव में मेडलिन के मोहक और मादक सौंदर्य की गिरफ्त में आ चुके थे। उनके पारस्परिक संबंध वर्षों तक चलते रहे।

मेडलिन के ससम्मान रिहा होने के बाद वर्षों तक लोगों के मन में यह प्रश्न उमड़ता रहा, कि क्या उसने अपराध किया था? शायद . . . उसने हत्या-जैसा जघन्य अपराध किया था, लेकिन उसके मष्तिष्क में एंजेलियर की हत्या की कोई योजना नहीं थी। उसने आर्सेनिक खरीदा था, पर वह उन दिनों सौंदर्य-प्रसाधन के रूप में इस्तेमाल किया जाता था और ब्रिटिश बाजारों में खुले रूप में मिलता था। कुछ लोगों का ख्याल था, कि एंजेलियर नशे का आदी था और उसने नये नशे के रूप में आर्सेनिक का इस्तेमाल किया जो उसके लिए घातक सिद्ध हुआ।

इन सब प्रश्नों के उत्तर मेडलिन ने अपनी मृत्यु से कुछ क्षण पूर्व दिये, जिनसे अर्द्धशताब्दी से अधिक तक रहस्य बना रहा यह मामला सुलझ सका। हां-उसने एंजेलियर की हत्या की थी।

—६४/२, पंचशील, गढ़ रोड, मेरठ-२

नींद के संबंध में एक रोचक तथ्य यह है, कि यदि आप किसी दिन अपने औसतन सोने के समय से तीन घंटा अधिक सो लें तो अगले दिन आपको ऐसा महसूस होगा, कि जैसे आप थके हुए हैं। सारा शरीर भारी है। मानों आपको आराम करने ही नहीं दिया गया है।

ग्रामीण पाठकों के लिए

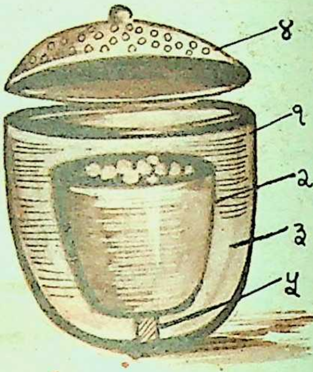

१. बड़ी नांद
२. छोटी नांद
३. पानी
४. छेददार ढक्कन
५. लकड़ी का गुटका

मिट्टी का रेफ्रिजरेटर बनाइए

● विष्णुप्रताप सिंह

गरमी आ गयी है। इस मौसम में साग-सब्जियां जल्दी ही सूख जाती हैं और उनके सूखते ही अधिकांश पौष्टिक तत्त्व नष्ट हो जाते हैं, साथ ही स्वाद और रंग भी। इससे साग-सब्जी का तो अपव्यय होता ही है, धन, शक्ति और समय का भी।

इस अपव्यय से बचने का एक ही उपाय है—रेफ्रिजरेटर। लेकिन रेफ्रिजरेटर खरीदना हरेक के बल-बूते की बात तो है नहीं। रेफ्रिजरेटर की कीमत हजारों रुपये में है। जो लोग रेफ्रिजरेटर नहीं खरीद सकते, वे क्या करें? उनके लिए भी एक सरल और सस्ता रास्ता निकाल लिया है लखनऊ स्थित सिंहामऊ के विज्ञान-क्लब ने। इस क्लब ने एक प्रयोग के अनुसार ऐसी विधि निकाली है, जिससे आप खुद भी बहुत ही सस्ता और उपयोगी रेफ्रिजरेटर बना सकते हैं।

इस ग्रामीण रेफ्रिजरेटर को बनाने के लिए आवश्यक वस्तुएं हैं—चौड़े मुंहवाली मिट्टी की दो नांदें (इसमें गाय-बैलों को चारा खिलाया जाता है), जिनमें से एक बड़ी तथा दूसरी उससे छोटी हो—ताकि उसे पहली नांद में बिठाने पर दोनों के बीच में थोड़ी-सी जगह खाली रहे, पानी, कई छेदोंवाला बड़ी नांद का मिट्टी का ढक्कन, एक टाट का बोरा, लकड़ी का एक गुटका और बालू।

बड़ी नांद के पेंदे में लकड़ी का एक छोटा-सा गुटका बीचों-बीच में रख दें। उसके बाद छोटी नांद को बड़ी नांद के भीतर, लकड़ी के गुटके के ऊपर रख दें।

रेफ्रिजरेटर — उपयोगी होने के साथ प्रतिष्ठा का सूचक भी। लेकिन कितने ग्रामीण हैं, जो रेफ्रिजरेटर की सुविधा जुटा सकते हैं। उनके लिए प्रस्तुत है—एक ग्रामीण रेफ्रिजरेटर बनाने की विधि।

अब दोनों नांदों के बीच में थोड़ी खाली जगह रह जाएगी। उस जगह में थोड़ा-सा ठंडा पानी डाल दें। बड़ी नांद के आकार (व्यास) के छेददार ढक्कन को ऊपर से रखकर ढक दें। अब नांद की बाहरी दीवार पर टाट का बोरा लपेट दें और नियमित रूप से उसे भिगोए रखें। बस, आपका 'ग्रामीण रेफ्रिजरेटर' तैयार है।

उपयोग-विधि

ताजे साग-सब्जियों को पानी में धोकर साफ कर लें और नमी के सूखने तक उन्हें खुली हवा में रखें। अब पत्ते, जड़ आदि खाने के काम न आनेवाले भागों को और घाव या सड़े-गले भागों को काटकर निकाल दें।

इस प्रकार साफ-सुथरी साग-सब्जियों को अपने 'ग्रामीण रेफ्रिजरेटर' की अंदरूनी नांद में रखकर ढक्कन बंद कर दें। नांद को ठसाठस न भरें। बीचों-बीच में हवा और प्रसार के लिए जगह रखना अच्छा होगा। गरमी के मौसम में संपूर्ण उपकरण को भीगी बालू के ढेर पर रखना अधिक उपयोगी रहेगा। ध्यान रहे कि ढक्कन को किसी साफ कपड़े से अवश्य बंद रखें। इस ग्रामीण रेफ्रिजरेटर को किसी छायादार स्थान में ही रखना चाहिए।

इस प्रकार आप इसमें साग-सब्जी, फल-फूल आदि को ज्यादा दिन तक ताजा रख सकते हैं।

वैज्ञानिक-प्रक्रिया

पेड़-पौधों और जड़ों से कटकर अलग होने पर भी कुछ दिनों तक साग-सब्जियों में श्वसन-क्रिया चलती रहती है, जिसके कारण उसमें रहनेवाली नमी का अंश भाप के रूप में बाहर आता है। वातावरण का ताप इस क्रिया को और तेज कर देता है, जिसके फलस्वरूप साग-सब्जियां सूखने लगते हैं। इसके विपरीत ग्रामीण रेफ्रिजरेटर में पानी से संचरित ठंडक के कारण श्वसन-क्रिया मंद पड़ जाती है। श्वसन-क्रिया से जो भाप निकलती है, उसे अंदरवाली नांद की दीवारें सोख लेती हैं। और अंदर के पर्यावरण को ठंडा बनाये रखती हैं। दूसरे, भाप छेददार ढक्कन से होकर भी बाहर निकल जाती है।

हां यह अवश्य ध्यान रखना चाहिए कि साग-सब्जियों को ठसा-ठस कभी न भरें। क्योंकि बीच में पड़ी साग-सब्जियों से निकलनेवाली भाप बाहर आने का रास्ता न होने पर वहीं इकट्ठी होकर उसे खराब करने लगती है। इसलिए साग-सब्जियों को ऊपर-नीचे करते रहना चाहिए।

—विज्ञान-क्लब, सिहामऊ लखनऊ,
पत्रालय—इंटौंजा, लखनऊ-२२७२०५

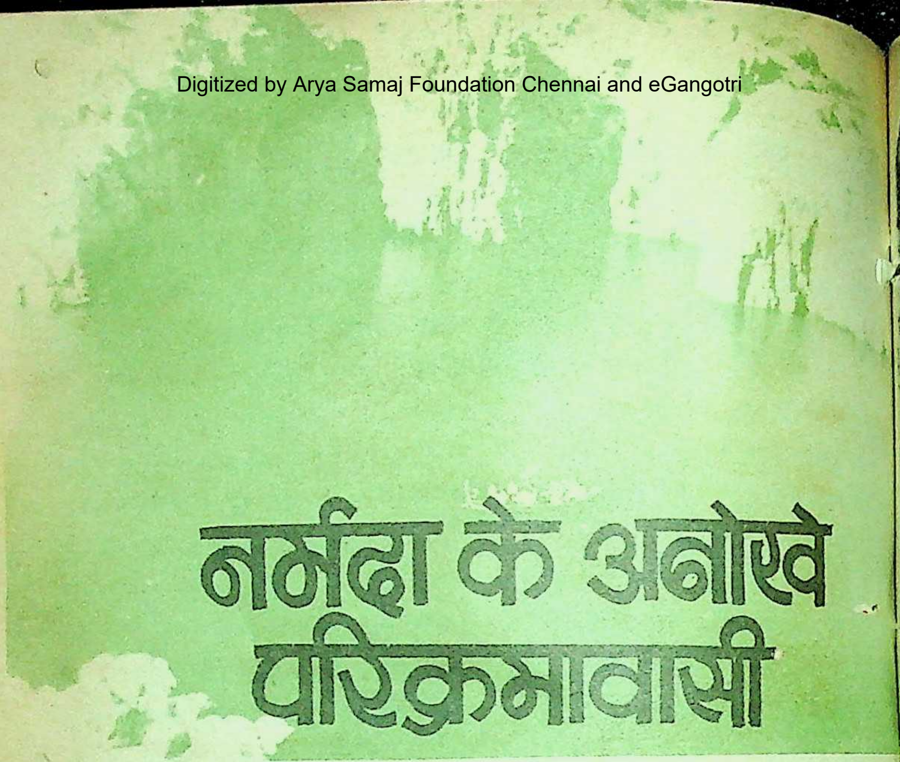

नर्मदा के अनोखे परिक्रमावासी

दरवाजे पर प्रातःकाल से ही जोरों से 'नर्मदे हर . . . नर्मदे हर . . . जटाशंकरी हर' की ध्वनि बार-बार कानों में गूंज रही है। मेरे ऊपर कोई प्रभाव नहीं पड़ रहा है। तभी अचानक भीतर से माताजी का आज्ञात्मक स्वर गूंज उठता है, "अरे बेटा बा परिकम्मावासी आओ हैं, ओहे कुछू अन्न दे दे।"

मैं पूछता हूं, "कौन परिक्रमावासी मां?"

"अरे ओई जौन नर्मदा की परिक्रमा में निकले हुए हैं . . . पैंदल परिक्रमा कर रहे हैं।"

● डॉ. राजेशकुमार उपाध्याय

'पैंदल परिक्रमा कर रहे हैं?' मे मन में एक विचार कौंधता है . . इतनी लंबी नर्मदा और उसकी पैंदल यात्रा मैं थोड़ा अन्न लेकर उसे देने चल देता हू . . . भास्वर केश, श्वेत वस्त्र, उन्नत ललाट, नम्र नेत्र, दयार्द्र वाणी, कसे हुए पैंर, हाथ में टीन का पात्र लिये हुए, कपड़े की थैली अन्न-संग्रह् हेतु, भाल पर सफेद गोपी-चंदन का तिलक, पूर्ण सौम्य और सादा स्वरूप, साक्षात त्याग-तपस्या की तपोमूर्त्ति-जैसे सम्मुख खड़ी हो। अन्न डिब्बे में डालते ही 'नर्मदे हर' का ऊंचा स्वर

ऊपर: भेड़ाघाट में नर्मदा

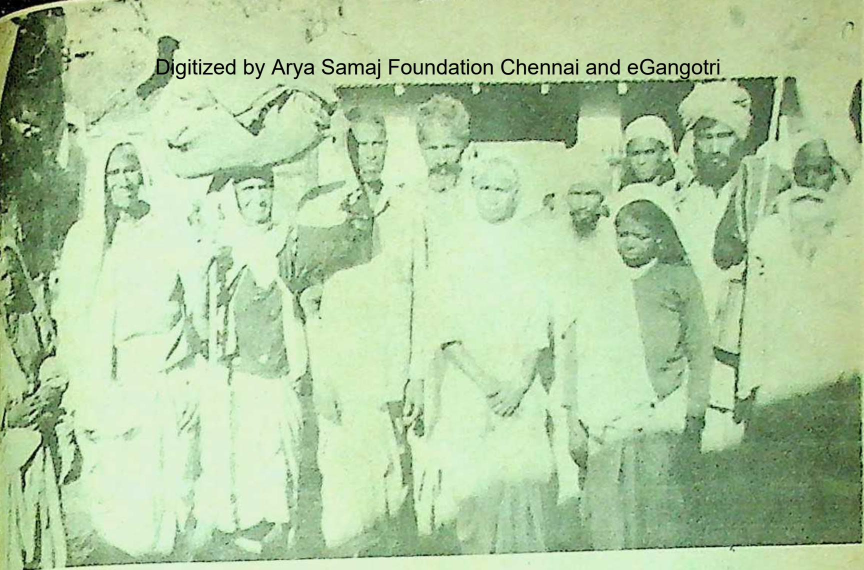

अमरकंटक के विभिन्न स्थानों के परिक्रमावासी

महाभारत, मत्स्य पुराण, कूर्मपुराण, स्कंदपुराण तथा पद्मपुराण में नर्मदा की महिमा गायी गयी है। स्कंदपुराण के रेवाखंड में कहा गया है कि गंगा कनखल में, सरस्वती कुरुक्षेत्र में किंतु नर्मदा, चाहे ग्राम हों या वन सभी स्थानों में पवित्र है। शायद इसीलिए की जाती है नर्मदा की लंबी कष्टपूर्ण परिक्रमा।

और अगले घर की ओर उसका बढ़ जाना। अनेक स्मृतियां मन में रह जाती हैं सोचता रहता हूं, आखिर क्या है ऐसा, जिसके कारण ये घर-द्वार त्यागकर किसी एक स्थान से एक विशेष निष्ठा पर चलते रहते हैं। सुवह से शाम तक वही नर्मदा रोम-रोम में बसी हुई है।

नर्मदा का दूसरा नाम रेवा

नर्मदा का परिचय शतपथ ब्राह्मण (१२।-६।३।१) के 'सवोत्तउस' (र वो त्त रस) शब्द से प्रारंभ होता है . . . रेवा, नर्मदा का दूसरा नाम इसी से उद्भूत है। पाणिनि के वार्त्तिककार (४।२।८७) नर्मदा से परिचित थे। महाभारत, मत्स्य, कूर्म, स्कंद, तथा पद्मपुराण में नर्मदा की महिमा गायी गयी है।

“गंगा कनखले पुण्या कुरुक्षेत्रे सरस्वती
ग्रामेवा यदिवाऽरण्ये पुण्या सर्वत्र नर्मदा ।।”

स्कंदपुराण के रेवाखंड में कहा गया है कि गंगा कनखल में, सरस्वती कुरुक्षेत्र में, किंतु नर्मदा, चाहे ग्राम हो या वन सभी स्थानों में पवित्र है।

मुलाकात परिक्रमावासियों से

परिक्रमावासियों से साक्षात्कार हेतु मैं शिवरात्रि में नर्मदा के उद्गम स्थल अमरकंटक पहुंचा—मत्स्यपुराण (१८६।-८६।६८) के अनुसार अमरकंटक एक ऐसा तीर्थ है जो ब्रह्महत्या के साथ अन्य

पापों को शांत करता है। अमरकंटक में अधिकतर परिक्रमावासियों से मुलाकात रामबाई धर्मशाला के आस-पास ही हुई।

ये हैं भाई काशीराम ब्राह्मण। भास्वर देह, संपूर्ण शरीर भमूत से आप्लावित, छोटे-छोटे नेत्र, छोटी-सी दाढ़ी, तेजस्वी चेहरा और मधुरवाणी के धनी काशीरामजी ने कहा कि 'मैं सोनदहार नरसिंहपुर जिला का रहनेवाला हूं। मैंने मैया दशहरा से परिकम्मा शुरू की थी। मोरो दद्दा की बहोत तबियत खराब हो गयी थी। मैंने तो या समझ ली कि मोरो दद्दा न बचहे, तो मैं तुरंत नर्मदा मैया की शरण में गओ, और वंदना की कि माता मोरो दद्दा के नया जीवन दे दो तो मैं तुम्हारी परिक्रमा में निकल आऊंगा। उसी दिन से माता के चमत्कार से मोरो दद्दा अच्छा हो गओ और मैं उस दिना से परिक्रमा में हूं।

दूसरे भाई हैं परसराम अग्रवाल--बड़ी-बड़ी नुकीली मूंछें, भव्य दाढ़ी सफेद चंदन, स्वस्थ काया--गुजरात रामपुरा के निवासी हैं। एक हाथ और एक पांव दुर्घटना में टूट जाने के कारण इन्होंने नर्मदा माई से वंदना की थी कि 'हे माता यदि मुझे अच्छा कर दे तो मैं तुम्हारी सेवा में लग जाऊंगा।'

श्री रामचरण नाथूराम सोनी ग्राम मनकापुर तहसील बरेला जिला रायसेन के निवासी की छाती में फोड़ा हो जाने से उनकी बचने की आशा न रही, परंतु नर्मदा मैया की कृपा से अच्छे हो जाने पर परिक्रमा में निकल पड़े।

नर्मदा-तट पर मंडला स्थित धर्मशाला में जब मैं परिक्रमावासियों से मिलने पहुंचा तब प्रात:कालीन प्रभाती वहां चल रही थी। पहुंचते ही जोरों का नर्मदे हर ... नर्मदे हर का स्वर धर्मशाला में गूंज उठा। श्वेत वस्त्र धारण किये हुए पैंसठ वर्षीय गोधनबाई ने कहा, मैं तीन बार कढ़ाई चढ़ा चुकी हऊं। मोरो मन तो ऐंसे कहत है कि जितनी या जिंदगी बची है या भी नर्मदा मैया के किनारे कट जाती तो अच्छो रहतो—मोरी मिट्टी भी नर्मदा में प्रवाहित कर दी जाती। मंडला जिले के अंतर्गत सिमरिया गांव की रहनेवाली गोधन बाई के साथ निरंतर चार वर्ष से रहनेवाली ५० वर्षीया कस्तूरीबाई को पति की मृत्यु के बाद ही इस जीवन से वैराग्य हो गया—और ये नर्मदा परिक्रमा पर निकल पड़ीं।

कैसे होती है परिक्रमा

उन्नत ललाट, श्वेत केशराशि, भास्वरदेह, ठिगना कद और दीनवाणी, स्वागत करने वाले सेठ लक्ष्मीचंद्र सपत्नीक नर्मदा परिक्रमा में निकले हुए हैं। वैसे सपत्नीक परिक्रमा करना वर्जित है—पर भावना के आगे भक्ति को पराजित होना पड़ता है। नर्मदा परिक्रमा करते समय आपको क्या करना पड़ा? लक्ष्मीचंद्र जी ने कहा, सर्वप्रथम कुंआरी कन्याओं को भोजन कराकर पंडा को एक नारियल भेंटकर, एक नारियल जल में प्रवाहित करके, नर्मदा माई को

कढ़ाई चढ़ाकर, विधिवत संकल्प करके नर्मदा की परिक्रमा प्रारंभ की जाती है।

होशंगाबाद निवासी श्री फुंदीलाल जी से मैंने पूछा कि इसका क्या प्रमाण है—फुंदीलालजी तपाक से उठे और अपने थैले में से प्रमाण पत्र निकाल लाये। नर्मदा के हर परिक्रमावासी को यह प्रमाण-पत्र रखना ही पड़ता है—

प्रमाण-पत्र नर्मदा परिक्रमा का

"ऐसा कि मैं प्रार्थी फुंदीलाल, पिता झम्मा जाति यादव, निवासी होशंगाबाद बालागंज, नर्मदा परिक्रमा अपनी राजी-खुशी एवं श्रद्धा से दिनांक २१-१-७६ से होशंगाबाद से प्रारंभ की। नर्मदामाई का पूजन, शीशी का पूजन कढ़ाई आदि सब कार्यों को मैंने पंडित रघुनाथ प्रसाद के द्वारा कराया," और उनके कहे अनुसार प्रमाणित पत्र में यहां की सील है, "इनका चरित्र उत्तम है। जहां-जहां चतुर्मास हो—उक्त प्रार्थी को सदावर्त भोजन एवं अन्य योग्य सहायता देकर मां नर्मदा की परिक्रमा पूर्ण करने में इनकी मदद करें।" इस प्रमाण-पत्र का नवीनीकरण ओंकारेश्वर में हुआ। जहां-जहां सदावर्त होता है, वहां इसमें सील लगवाना आवश्यक होता है। इस प्रमाणपत्र में महारानी अहिल्यादेवि चेरिटी-ट्रस्ट ओंकारेश्वर की सील भी लगी हुई थी।

जिला रायसेन के निवासी मुंशीलाल जी के पैर में घाव हो जाने से और छह मास तक उससे परेशान रहने से नर्मदा मैया के आश्रित होने से सब अच्छा चल रहा है।

तीन बार परिक्रमा पूरी करनेवाली
कस्तूरीबाई एवं गोधनबाई

साकलघाट (नरसिंहपुर) जिले के निवासी छोटेलालजी ६७ वर्ष की उम्र में फुर्तीले हैं। तुरंत उठते हैं, नर्मदा जल और प्रसाद लाकर देते हैं। बड़े ही सहज भाव से गोपीचंदन मेरे माथे पर लगा देते हैं।

शूलपाणेश्वर के भील

उसी समय तमूरा बजाकर गाते हुए भिक्षा मांगकर लौटे जरहूराम पटेल। ये बोड़ला जिला राजनांदगांव के निवासी हैं। ये दो बार नर्मदा परिक्रमा कर चुके हैं। तीसरी बार अपनी मां और बच्चों को साथ लेकर नर्मदा परिक्रमा में निकल पड़े हैं। मेरे प्रश्न करने पर कि 'आपको सबसे अधिक कष्ट नर्मदा परिक्रमा में कहां पर हुआ,' बोले, 'मैया! नर्मदा मैया की कृपा से कहीं भी हम लोगों को कष्ट नहीं हुआ। परंतु एक कठिनाई शूलापाणेश्वर की झाड़ी में आ ही गयी।

यहां पर हर परिक्रमावासी को कष्ट होता ही है। इन झाड़ियों में रहनेवाले भील परिक्रमावासियों के पास जितनी भी सामग्री होती है, वह सब छुड़ा लेते हैं, जब वे कहते हैं 'मूको' 'मूको' (याने जो कुछ भी तुम्हारे पास है वह सब तुम छोड़ दो) कहते हैं, तब सभी सामग्री उनके पास रख दी जाती है। तब यह भील की इच्छा पर आधारित होता है कि वह परिक्रमावासी के लिए क्या छोड़े। शूलपाणेश्वर की झाड़ी में प्रवेश करते ही धनुषबाण लिये तीन भील एकदम सामने आ गये। मेरा बच्चा दुर्गाप्रसाद एवं बच्ची गनेशियाबाई एकदम डरकर मुझसे लिपट गये और जोर जोर से रोने लगे—भीलों ने केवल एक-एक वस्त्र हम लोगों के लिए छोड़ा, बाकी सब ले गये।

सोलह फुट लंबा नक्शा

एक और परिक्रमावासी पं. दिनकर वासुदेव धनागरे ने जिन्होंने नर्मदा परिक्रमा का अपने हाथों से १६ फुट लंबा नक्शा तैयार किया, नर्मदा परिक्रमा ढाई वर्ष में पूर्ण की। इन्होंने नर्मदा परिक्रमा अमरकंटक से प्रारंभ की थी। मेरे पूछने पर कि आपने नर्मदा परिक्रमा का कार्य ही क्यों चुना तो कहने लगे कि 'गंगा ज्ञान देती है। यमुना प्रेम देती है। नर्मदा वैराग्य देती है। पूर्व जन्म के संस्कारों के द्वारा ही यह संभव हुआ।' शूलपाणेश्वर की झाड़ी के पास इन्हें शेर के दर्शन हुए।

नर्मदा तट स्थित ग्वारीघाट (जबलपुर) की धर्मशाला में जब पहुंचा, संध्या होने में कुछ देर थी—परिक्रमावासियों की भारी भीड़ धर्मशाला में थी। गरम पानी (जिला मंडला) के बाबा बालगिरिजी ने बताया कि नर्मदा परिक्रमा एक साधनामय परिक्रमा है।

यह परिक्रमा ३ वर्ष ३ माह १३ दि में पूर्ण होती है। नर्मदा-परिक्रमावासियों को नर्मदा के दक्षिणी तट में अमरकंटक, डिंडौरी, महाराजपुर, सहस्रधारा, प घाट, ग्वारीघाट, ब्रह्मकुंड, शंकर घा ब्राह्मण घाट, पांडव द्वीप, होशं गंगेश्वरी, सप्तमातृका, ओंकारजी, शू पाणेश्वर विमलेश्वर आदि होकर चल पड़ता है। नर्मदा के उत्तरी तट के स्थानों में भारभूतेश्वर, भंडोच, शुक्रतीर्थ, झीनोर, मालसर, अनुसुइया, व्यासनारायण, गं नाथ, बद्रीनाथ, करनाली, तिलकवाड, म नागेश्वर, गरुड़ेश्वर, माण्डवगढ़ (आश्रम) महेश्वर, ओंकारेश्वर सोकलघाट, भे घाट, तिलवारा घाट, ग्वारीघाट, मण्ड कपिलधारा आदि पार करना पड़ता है पैदल चलते हुए।

नर्मदा नदी अमरकंटक के विंध्याच एवं सतपुड़ा के मध्य मैकल पर्वत से लगभग ३५०० फुट की ऊंचाई से निकलती है। मध्यप्रदेश, महाराष्ट्र तथा गुजरात राज्यों से होकर १३०५ कि. मी. की यात्रा पूर्ण करके यह खम्भात की खाड़ी में प्रवेश कर जाती है। —द्वारा श्री के. डी. उपाध्याय,

१०५, ओझावार्ड मंडला (म. प्र.)

पहुंचा,
— परिक्रमा
ाला में थी।
ा) के वाता
मंदा परिक्रमा
।

माह १३ दि
रिक्रमावासियों
में अमरकंटक
धारा,
शंकर घा
होशंगाबा
कारजी,
होकर चल
तट के स्था
तीर्थ, झीनोर
नारायण,
लकवाड,
गढ़ (आश्रम
लघाट,
घाट, मण्ड
रना पड़ता है

के विंध्याच
पर्वत से लगभ
निकलती है।
गुजरात राज्यों
की यात्रा पू
ी में प्रवेश कर
डी. उपाध्याय
ंडला (म. प्र.)

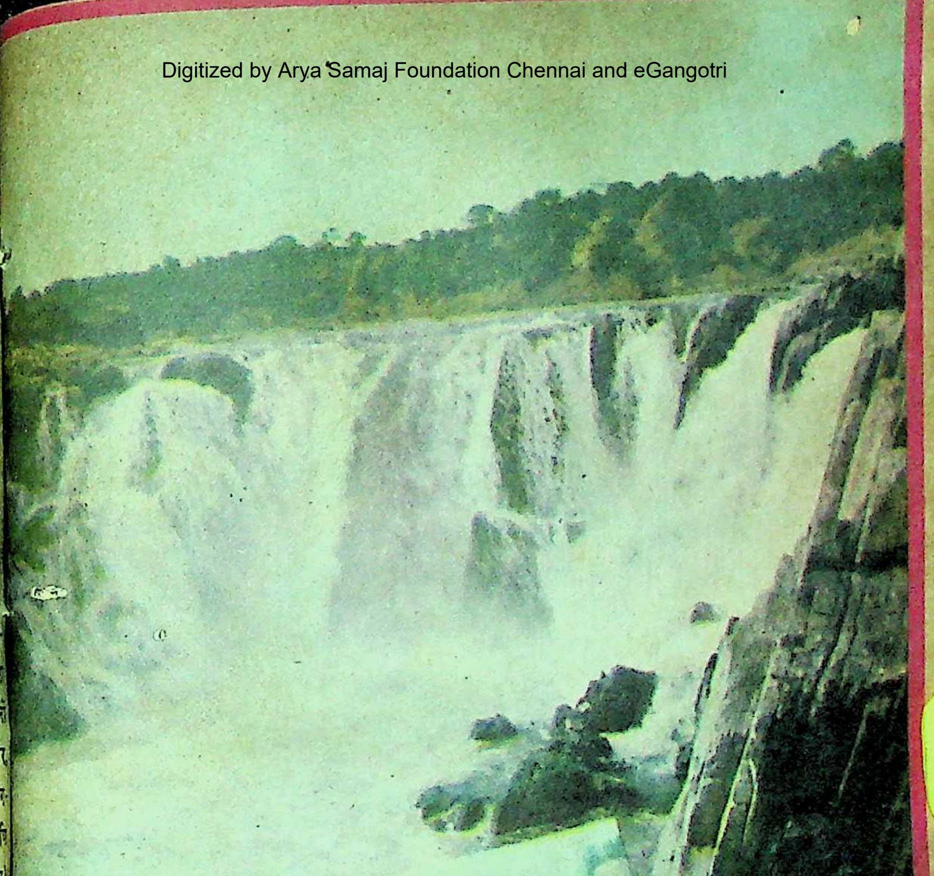

↑ नर्मदा का प्रख्यात धुआंधार जलप्रपात

← परिक्रमावासियों के बीच लेखक

एन. बी. मिर्ज़ा

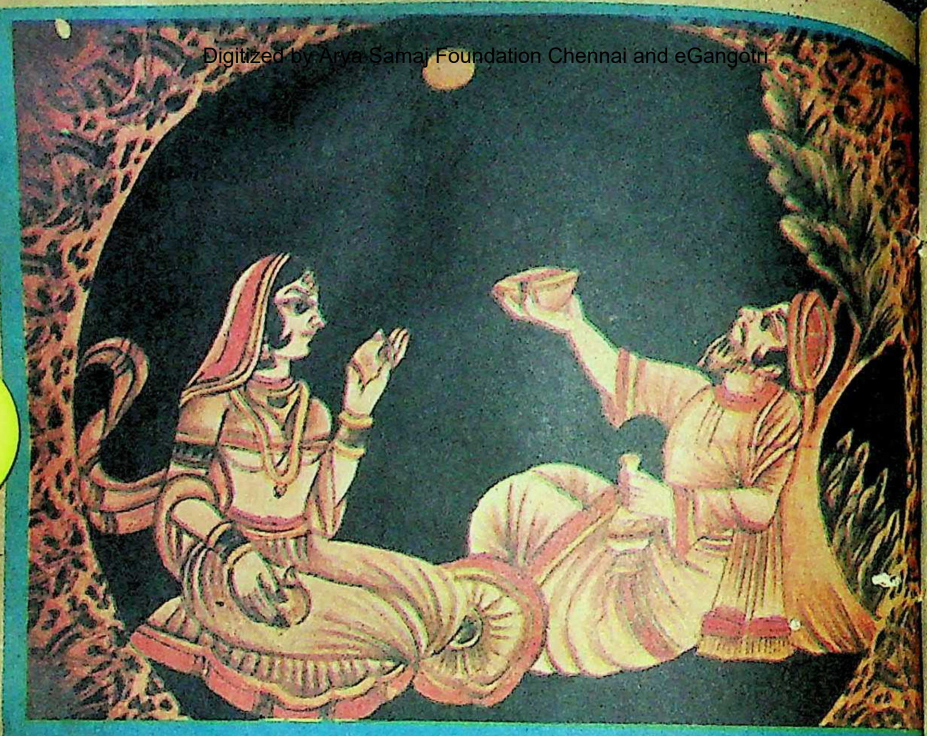

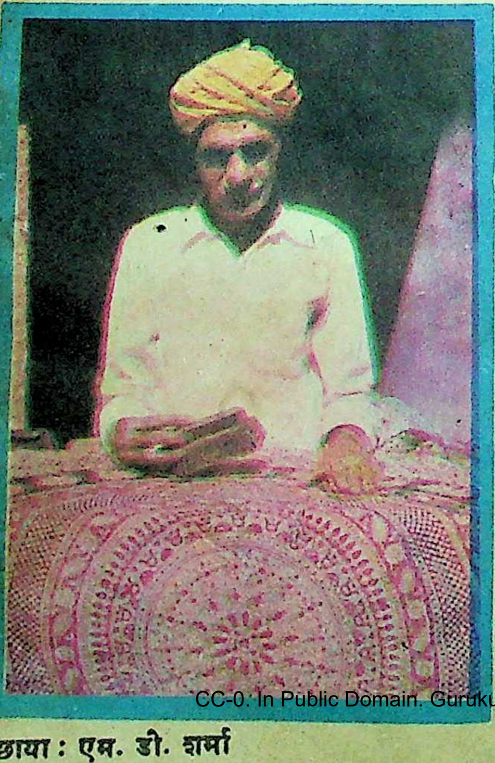

राजस्थान के गुलाबी शहर जयपुर के दक्षिण अंचल में बसा सांगानेर राजस्थान की गौरवमयी संस्कृति का वह जीवंत दस्तावेज, जो काल और समय के सशक्त पंजे से वहां की रंगों और कल्पनाओं से बतियाती हस्तकला को छीनकर आज भी सहेजकर रखे हुए है। वहां के मूल-निवासी 'छीपे' श्रम के रेशमी धागों में रंगों की कविता को रचते हुए आज भी उस सोंधे कलात्मक अतीत को जिंदा रखे हैं, जिसे औद्योगिकीकरण का मशीनी पंजा निगल जाना चाहता है।

जयपुर शहर से दस किलोमीटर दक्षिण में बसा यह कस्बा वस्त्र-छपाई के लिए देश-विदेशों में सदियों से विख्यात रहा है। छपाई करनेवाले दस्तकारों को

छाया : एम. डी. शर्मा

उनकी कला की धूम है, फिर भी वे गरीब हैं!

• रामानंद राठी

> सांगानेरी छपाई के कपड़े देश में ही नहीं, विदेशों में भी लोकप्रिय हैं, लेकिन इसे दुर्भाग्यपूर्ण स्थिति ही कहा जाएगा कि आज सदियों पुराने इस कुटीर उद्योग पर संकट के बादल छाये हुए हैं . . .

यहां 'छीपा' अथवा 'माऊसार' कहा जाता है। छीपों के पूर्वज मूलतः गुजरात और मालवा के निवासी थे, जो उस समय दुपट्टों और चुनरियों की रंगाई-छपाई के केंद्र समझे जाते थे। जयपुर शहर के निर्माण के बाद महाराजा सवाई जयसिंह के काल में छीपों के आप्रवासी पूर्वज सांगानेर, बगरू और जयपुर की पुरानी बस्तियों में बस गये। माऊसारों की इस कला को बाद में यहां की अन्य जातियों मुख्यतः मुसलमानों ने भी अपना लिया। जयपुर के महाराजा सवाई जयसिंह, प्रतापसिंह तथा बाद में रामसिंह द्वितीय के काल में सांगानेरी छापे की कला अपने पूर्ण वैभव और निखार पर पहुंची। उस काल के शासक दस्तकारों को पूर्ण सुरक्षा व उनकी कला को उचित सम्मान देते थे।

पिछले दो दशकों में व्यवसायी-करण की प्रक्रिया तेज हुई, कम लागत की अधिकाधिक उत्पादन-शैली पनपने लगी। उत्पादन-स्रोतों के केंद्रीकरण और कला के व्यावसायिक व बाजारू हो जाने की इस आत्मघाती प्रवृत्ति ने छपाई की कला को भी चपेट में ले लिया। हाथ की छपाई करनेवाले दस्तकारों के कुटीर उद्योग उजड़ गये और उनकी जगह कम कलापूर्ण किंतु अधिक गति से छपाई करनेवाली तकनीक 'स्क्रीन-प्रिंटिंग' ने ले ली है।

सांगानेरी छपाई का कुरता, पगड़ी बांधे छपाई करता हुआ एक दस्तकार

स्क्रीन-प्रिंटिंग की तुलना में, हाथ की छपाई-तकनीक बहुत सस्ती है, जिसमें मानव-श्रम और कौशल का ही विशेष महत्त्व रहता है। इस काम में जिन साधनों का उपयोग किया जाता है, उनमें प्रमुख हैं—छपाई की मेज, लकड़ी के ब्लॉक, तांबे की कुंडी व अन्य छोटा-मोटा सामान। एक छोटी इकाई को स्थापित करने के लिए, जिसमें पांच-छह फुट लंबी मेज पर एक या दो आदमी काम करते हैं, ५०० से २००० रुपये तक का खर्च आता है। ब्लॉक को रंग की 'तरी' में दबाकर, मोहर व पैड के टंग से मेज पर बिछे कपड़े पर छपाई की जाती है। कुशल दस्तकार कम-से-कम रंगों के प्रयोग द्वारा ही छपाई में विविधता और बहुरंगी छटा ला देते हैं।

एक इकाई का खर्च चालीस हजार

स्क्रीन-प्रिंटिंग की एक इकाई को स्थापित करने में चूंकि पैंतीस-चालीस हजार रुपये का खर्च आता है, अतः स्वाभाविक ही है कि सामान्य दस्तकार इस बारे में कोई प्रयास नहीं करता। दस्तकारों की इस आर्थिक-असमर्थता ने सांगनेर के छपाई-व्यवसाय में दो वर्ग पैदा कर दिये हैं—एक वह वर्ग जो पूंजी लगाता है और बाजार को अपने कब्जे में रखता है; दूसरा वह मजदूर जो छपाई का काम करते हैं और व्यवसाय की धुरी होने के बावजूद लाभ के एक प्रतिशत के भी हकदार नहीं बन पाते। यही वजह है कि बढ़े हुए उत्पादन के बावजूद स्क्रीन-प्रिंटिंग के कामगारों की हालत बहुत बदतर है।

कठिन परिस्थितियों के बावजूद जो लोग आज छोटी इकाइयों पर हाथ की छपाई का प्रारंभिक कार्य कर रहे हैं, उन्हें अच्छे स्तर का कच्चा माल—कपड़ा, रंग, ब्लॉक आदि स्थानीय बाजार में आसानी से उपलब्ध नहीं हो पाता। न ही उनके पास अपने माल को संग्रहीत करने के लिए गोदामों की व्यवस्था है। इसी कारण उन्हें कई बार बारिश के मौसम में घाटा उठाकर माल बेचना पड़ता है। ब्लॉक एवं डिजाइन संबंधी कठिनाइयां भी छोटे दस्तकारों के सामने ही अधिक पेश आती हैं। बदलती रुचि एवं फैशन के अनुसार ब्लॉकों के मिलने की भी कोई सुविधा सांगानेर में नहीं है, इसीलिए हाथ की छपाई तेजी से बदलते फैशन का साथ नहीं दे पाती।

बिचौलियों का मुनाफा

काम की बारीकी और उत्कृष्टता को देखते हुए हाथ की छपाई के माल की मांग स्थानीय बाजारों के अलावा अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर भी खूब है, किंतु विदेशी बाजार से इनके प्रत्यक्ष परिचय के अभाव में निर्यात का यह धंधा जयपुर के बिचौलिए व्यापारी ही करते हैं। ये दलाल दस्तकारों से मामूली दामों पर माल को खरीदकर विदेशों में दो सौ से तीन सौ प्रतिशत के भारी मुनाफे पर निर्यात कर देते हैं।

छपे हुए कपड़ों के निर्यात-क्षेत्र में भी

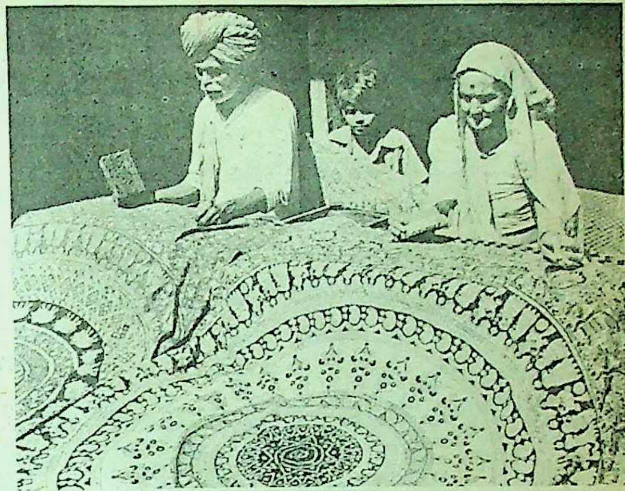

कपड़े की छपाई का काम : सांगानेर का कुटीर उद्योग है, जिसमें पूरा परिवार ही लगकर रोटी कमा पाता है

अब भ्रष्टाचार के नये-नये रास्ते खुल गये हैं। कुटीर उद्योगों को बढ़ावा देने के लिए केंद्रीय सरकार ने ब्लॉक-प्रिंटिंग के कपड़ों पर २० प्रतिशत निर्यात-कर तथा स्क्रीन-प्रिंटिंग के कपड़ों पर ८० प्रतिशत निर्यात-कर लगा रखा है। निर्यात के लिए अनुमति देते समय छपाई की किस्म-निर्धारण में इसीलिए भारी गड़बड़ी होती है। ऊंचे करों से छुटकारा पाने के लिए स्क्रीन-प्रिंटिंग के कपड़े को ब्लॉक-प्रिंटिंग का कपड़ा बताकर निर्यात किया जाता है। इस सौदेबाजी में सरकारी महकमों के अफसर और कपड़े के व्यापारी दोनों ही लिप्त हैं।

कोई सुरक्षा नहीं

सांगानेर के बड़े छपाई उद्योगों में काम कर रहे श्रमिकों के जीवन की कोई सुरक्षा नहीं है। न ही मालिकों द्वारा उन्हें समय पर पैसा मिल पाता है, और न ही किसी तरह का बोनस व बीमारी की छुट्टी आदि की अन्य सुविधाएं ही दी जाती हैं। संगठन, राजनीतिक चेतना और कानूनों की जानकारी के अभाव में ये लोग अपने स्तर पर अन्याय का विरोध भी नहीं कर सकते।

दस्तकारों की मुक्ति और हाथ की पारंपरिक छपाई के विकास के लिए जरूरी है कि सांगानेर में छपाई के बड़े व्यवसायों की स्थापना पर रोक लगायी जाए। सरकारी, अर्ध-सरकारी और स्वायत्त संस्थाओं के माध्यम से उद्योग मंत्रालय हाथ के दस्तकारों को सस्ते दामों पर उत्कृष्ट ब्लॉक, कपड़ा, रंग व छपाई के अन्य उपकरण उपलब्ध कराये। इन संस्थाओं द्वारा प्रयास किये जाने चाहिए कि उत्पादन का बाजार पर भी नियंत्रण हो। इस काम में मार्केटिंग सहकारी समीतियों भी सहायता सकती है।

—शोध छात्र, जंतुशास्त्र विभाग,
राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर

कहानी

निर्णय के घेरे

• वीना सिंह

रात के आठ बज चुके थे, किंतु दीपक अभी तक घर नहीं लौटा था। कोई भी आहट होती, तब माला उठकर खिड़की से बाहर झांकने लगती। आज की तरह कल भी दीपक रात काफी देर से घर आया था। सुबह जब ऑफिस जाने लगा था, तब माला खाना लेकर गयी, किंतु दीपक 'भूख नहीं है' कहकर चला गया।

दीपक का खाना न खाना, और बिना बोले चले जाना, माला के समक्ष एक प्रश्न-चिह्न बनकर खड़ा हो गया था।

शादी के बाद चार माह व्यतीत हो चुके थे, किंतु अभी तक कोई ऐसी बात नहीं हुई थी, जो उसके मन के खिलाफ हो, किंतु कल से माहौल ऐसा हो आया था, जो उसके लिए असह्य था। उसकी समझ में कुछ भी नहीं आ रहा था।

'टन-टन-टन' की आवाज पर उसने नजर उठाकर घड़ी की ओर देखा। 'बाप रे! पौने दस।' अब माला की भूख बर्दाश्त के बाहर हो रही थी। कल सुबह दीपक बिना खाना खाये आफिस चला गया था। रात लौटने पर वह पूछने गयी थी, "खाना ले आऊं?"

"भूख नहीं है।"

"सुबह भी नहीं खाया और इस समय भी...।"

"आप यहां से जाने का कष्ट करेंगी?"

उसे विश्वास नहीं हो रहा था कि यह वाक्य उसका पति उसके लिए बोल

रहा है। ऐसा कठोर वाक्य वह जीवन में पहली बार सुन रही थी। कांपते कदमों से वह कमरे के बाहर निकल गयी।

बाहर हलकी बूंदा-बांदी हो रही थी। चलती हुई वह सीढ़ियों पर जा बैठी। इस समय वह अपने को बहुत अकेली महसूस कर रही थी। क्या हो गया है इन्हें ? पहले तो कभी ऐसा नहीं हुआ। दिमाग पर बहुत जोर डालने के बावजूद दीपक के क्रोध की कोई खास वजह पकड़ में नहीं आ सकी। अचानक शादी का दृश्य लहराया हुआ-सा उसकी आंखों के आगे आ गया। उसने ससुराल की दहलीज पर पहले दिन कदम रखा था। काफी गहमा-गहमी का वातावरण था। उसे देखने के लिए स्त्रियों का तांता-सा लग गया था। वे औरतें घूंघट उठाकर बड़े प्यार से देखतीं और वह शर्म से चेहरा झुका लेती।

'अरे बड़ी शर्मीली बहू है। इतने बड़े घर से होकर भी ऐसी शर्म !' ऐसे वाक्य सुनकर वह शर्म से और गड़ जाती। एक बार वह एकांत पाकर रीढ़ की हड्डी सीधी करने हेतु तनकर बैठी कि एक वृद्धा ने कमरे में प्रवेश किया। उसके सिर पर से आंचल सरकाते हुए उसके चेहरे को दोनों हाथों से थामकर ध्यान से देखते हुए, वह दान-दहेज की तारीफ करने लगी। थोड़ी भूमिका बांधने के बाद बोली, 'बहू ! तू तो साक्षात लक्ष्मी हऊ। तोके त कौनों राजा के घरे जायके चाहत रहल। तोहार बाबूजी बिना देखले-सुनले बियाह कर देहलन है। उनका दीपक में का दिखायी देहलस है कि ओकरे ऊपर फिदा हो गइलन ?'

> दीपक बौखला गया था। जहां भी जाता, उसे ऐसे उलाहने सुनने को मिलते कि वह समझ न पाता कि कौन सही है—माला या मोहल्लेवाले ? तीन दिन इसी कशमकश में बीत गये, हल की तलाश में वह आफिस के बाद इधर-उधर भटकता रहता और घर पर माला दिनभर के कामों को निपटा विरहणी नायिका की भांति उसका इंतजार करती रहती . . .

माला उसकी बातों को समझने की कोशिश कर ही रही थी कि उसकी बड़ी ननद रमा आ गयी। वह वृद्धा को देखकर बोली, 'अच्छा, तो आप हैं नंदा मौसी ? चलिए, आपको माताजी बुला रही हैं।' फिर रमा उसकी ओर पलटती हुई बोली, 'भाभी ! इसकी बात एक कान से सुनना

और दूसरे कान निकाल देना। यह औरत नहीं, मंथरा है।'

तीन दिन बाद बड़ी ननद रमा की विदाई थी। दीपक की शादी के दो दिन पहले ही उसकी बारात आयी थी, किंतु भाई की शादी की वजह से उसकी विदाई तीन दिन के लिए रोक दी गयी थी।

रमा की शादी गहनों पर तय हुई थी। इसलिए शादी से एक महीने पहले ही सोनार को गहने बनाने का ऑर्डर दिया जा चुका था। बस, दुकान जाकर गहने लाना ही शेष था। लगभग बारह हजार रुपये में गहने तैयार हुए थे। बाबूजी के बड़े भाई ने, जो बनारसी साड़ियों का व्यापार करते थे, दस हजार रुपये देने का आश्वासन दिया था, किंतु ऐन मौके पर वे रुपये देने में आनाकानी करने लगे कि 'व्यापार में घाटा हो जाने की वजह से मैं रुपये का जुगाड़ नहीं कर सका।'

उनकी इस बात पर सबकी खुशी काफूर हो गयी। आनंद का माहौल विषाद में बदल गया। यदि बेटी की डोली नहीं उठेगी, तब क्या होगा? इतने रुपये दो दिन में कहां से आएंगे? यह मध्यमवर्गीय परिवार के लिए एक भारी समस्या थी। हरेक की आंखों के आगे तरह-तरह के भयावह चित्र उपस्थित होने लगे थे।

माला ऊपर अपने कमरे में बैठी नीचे व्याप्त उदासी को पूरी तरह महसूस कर रही थी। वह इस उदासी को समाप्त करने का उपाय खोज रही थी कि धड़धड़ाता हुआ दीपक कमरे में घुसा और कपड़े बदलकर जैसे ही जाने को पलटा, वह उसके सामने जा खड़ी हुई और पूछा, "कहां जा रहे हैं, इतनी रात में?"

दीपक अपनी दो दिन पुरानी ब्याहता को परेशान नहीं करना चाहता था, इसलिए बोला, "कहीं नहीं, थोड़ा टहलने।"

"रात ग्यारह बजे कोई टहलने नहीं जाता। आप जरूर मुझसे कुछ छिपा रहे हैं।" दीपक ने सोचा, बहाने बनाने से बेहतर है कि सच्चाई बता दी जाए।

"रुपये का इंतजाम करने जा रहा हूं। यदि गहने नहीं आये, तब परसों रमा की डोली नहीं उठ पाएगी, क्योंकि उसकी शादी गहनों पर ही तय हुई है।"

माला शांत स्वर में बोली, "यदि साधन घर में ही हों, तब बाहर जाने की क्या आवश्यकता है?" गहनों की छोटी-सी संदूकची उसे देती हुए बोली, "इस संदूकची में रमा दीदी की विदाई की सामर्थ्य है।"

माला के इस समाधान से रमा की डोली उठने में कोई भी अड़चन उपस्थित नहीं हुई। हरेक जुबान माला की तारीफ करती न थकती। दीपक को भी अपने भाग्य पर गर्व हो रहा था। सास आकाश की तरफ दोनों हाथ उठाकर बुदबुदा उठती, "हे, ईश्वर दुश्मन को भी ऐसी ही बहू देना।"

समय बीतने के साथ ही सब कुछ पुराना होता चला गया था। सास अस्वस्थ होने के कारण अपने बड़े लड़के के पास

लेखिका

नैनीताल चली गयी थी। सास के चले जाने से घर की सारी जिम्मेदारी उसके ऊपर आ पड़ी थी। अनुभवहीन होने के बावजूद वह घर की बागडोर कुशलता से खींच रही थी।

उस दिन उसने दीपक का मनपसंद भोजन—गोभी की खीर तथा आलू की पूड़ियां तैयार कीं। टेबिल पर खाना सजाते-सजाते वह सोच रही थी कि दीपक उसकी तारीफ करेगा, परंतु जब पूड़ी के शुद्ध घी की सुगंध तथा खीर की महक भी उसे आकर्षित न कर सकी, तब वह धीरे से बोली, "खाना ठंडा हो रहा है।"

"मैं खाना खाकर आया हूं।"

"थोड़ा-सा खा लीजिए न!" माला दुलराती हुई बोली।

वह अपने क्रोध को थोड़ा संयत करता हुआ बोला, "एक बार कह दिया कि मैं खा चुका हूं।"

"यह भी कैसी जिद है, मैंने कितने प्रेम से.....।"

"तुम थाली लेकर जा रही हो या मैं इसे कमरे से बाहर फेंक दूं?"

माला दीपक का ऐसा गुस्सा पहली बार देख रही थी। उसकी आंखें डबडबा आयीं। पर माला के आंसू उसके क्रोध को ठंडा न कर सके। दरअसल, बात यह थी कि आज की तरह उस दिन भी उसे रास्ते में मिस्टर वर्मा मिल गये थे। हाल-चाल पूछने के बाद कहने लगे थे, "मैं तो सुन रहा हूं बहू का व्यवहार अच्छा नहीं है। राजू और नीलू से तुम्हारे सामने ही ठीक से बर्ताव करती है लेकिन, तुम्हारे ऑफिस जाने के बाद....!"

"नहीं चाचा, वह ऐसा नहीं कर सकती। वह तो उन दोनों को मुझसे भी कहीं ज्यादा मानती है।"

"अरे बेटा तुम क्या जानो? तुम अभी बच्चे हो। तुम्हारे चले जाने के बाद उसे पूरी आजादी मिल जाती है।"

अभी वह इस उलझन को सुलझा नहीं पाया था कि शर्माजी की पत्नी मिल गयी। थोड़ी भूमिका बांधते हुए बोली, "सुन रही हूं कि तूने जबर्दस्ती बहू से गहने लेकर रमा की विदाई की है?"

"आपसे किसने कहा?"

"नंदा मौसी कह रहीं थी कि माला ने बहुत विरोध किया, पर तुम नहीं माने।"

दीपक बौखला गया था। जहां भी जाता, उसे ऐसे ही उलाहने सुनने को मिलते। वह समझ न सका कि कौन सही है—माला या मोहल्लेवाले? तीन दिन इसी कशमकश में बीत गये, पर समस्या का हल उसे नहीं मिला। तीन दिनों से लगातार वह आफिस से निकलने के बाद यहां-वहां भटकता हुआ, इस समस्या को सुलझाने की कोशिश करता रहा, किंतु हल न मिलने पर घर आकर चुपचाप

जब गर्मी आपकी शक्ति चूस ले...

आपके भरोसेमंद ग्लैक्सोज़-डी का नया नाम.

तो लीजिए ग्लूकॉन-डी ®

अतिरिक्त शक्ति— जैसे ही आपको ज़रूरत हो.

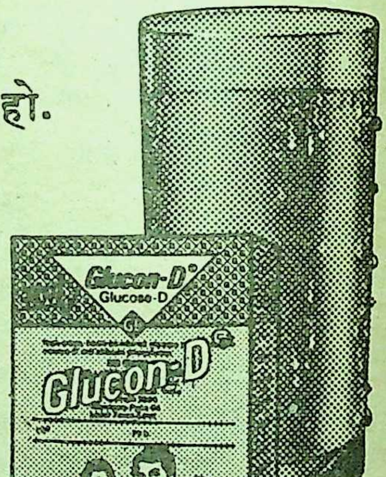

गर्मी के मारे आप जल्द थक कर चूर हो जाते हैं. ऐसे में चाहिए ताज़गी और ठंडक देनेवाला ग्लूकॉन-डी. आपको और आपके पूरे परिवार को. फलों का रस, दूध, चाय, कॉफ़ी, सादा पानी— किसी भी पेय में मिलाइए या ऐसे ही लीजिए. फिर ख़ुद महसूस कीजिए— वही पहले जैसी चुस्ती-फुर्ती !

उसी जाने-पहचाने हरे पैक में मिलता है.

HTB-CLL-6591 HN (R)

ग्लैक्सो का असली ग्लूकोज़ पाउडर -विटामिन-डी और कैल्शियम फ़ॉस्फ़ेट से भरपूर.

सो जाता । और माला दिनभर के कामों को निपटाकर विरहणी नायिका की भांति अपने नायक का इंतजार करती रहती ।

●●

दीपक के रूखे व्यवहार से विक्षिप्त माला रसोई में बैठी चाय बना रही थी । बिजली चली जाने के कारण शाम और भी गहरी, काली प्रतीत हो रही थी, तभी राजू गुनगुनाता हुआ आया और बोला, "भाभी, चार कप काफी बना दो, जल्दी; मेरे कुछ मित्र आये हैं ।"

माला कॉफी की शीशी लाने ऊपर चल पड़ी । अंधेरे में सीढ़ियां और भी अंधेरी लग रही थीं । वह आखिरी सीढ़ी चढ़ भी न सकी थी कि अंधेरे में बिल्ली की चमकती आंखों को देखकर बुरी तरह डर गयी, पैर लड़खड़ाये और गिरकर बेहोश हो गयी ।

जब तीस मिनट से भी अधिक समय व्यतीत हो गया और कॉफी की प्यालियां राजू के मित्रगण के पास नहीं पहुंचीं, तब वह झल्लाया हुआ रसोई में घुसा । गैस पर कॉफी का पानी उबल रहा था, लेकिन माला नहीं थी । सामने खड़ी नीलू से पूछा, 'भाभी कहां गयीं ?"

"मुझे क्या पता ? ऊपर कमरे में होंगी ।" उसका सपाट उत्तर सुनकर वह ऊपर चल पड़ा । ऊपर की स्थिति देखकर वह चिहुक-सा पड़ा । माला औंधे मुंह सीढ़ी के पास पड़ी थी । उसको उसने जैसे ही चित किया, बुरी तरह घबरा गया । माला का चेहरा खून से लथपथ था । वह जोर से चीख पड़ा, 'भाभी !'

आवाज सुनकर नीलू और बाबूजी के अतिरिक्त उसके मित्र भी ऊपर पहुंच गये । माला की स्थिति धीरे-धीरे बिगड़ती जा रही थी । कोई पानी के छींटे मार रहा था, तो कोई हवा कर रहा था । प्राथमिक उपचार से जब कोई फायदा न हुआ, तब उसे स्थानीय अस्पताल में पहुंचाया गया ।

रात ग्यारह बजे दीपक घर आया । रोज जब घर आता था, तब सभी कमरे भले ही अंधकारयुक्त रहते, पर उसके अपने कमरे के रोशनदान से रोशनी छनकर आती रहती थी । किंतु आज वह रोशनी लुप्त थी । उसे लग रहा था, जैसे चारों तरफ अंधकार है । उसके कदम बाबूजी के कमरे की ओर बढ़ गये । किवाड़ भिड़काये हुए थे, जिन्हें ठेलता हुआ वह अंदर घुसा । बाबूजी भगवान की मूर्ति के सामने बैठे हुए थे । कमरे में व्याप्त गहन शांति को उनकी हिचकियां ही कभी-कभी भंग कर रही थीं ।

दीपक हक्का-बक्का-सा उन्हें देख रहा था । धीरे से पुकारा, "बाबूजी, आप रो रहे हैं ?"

"अरे बेटा, तू आ गया ? जा जल्दी अस्पताल चला जा । राजू और नीलू बहू को नहीं संभाल पाएंगे ।"

उसका दिमाग घूमने लगा । अपने व्यवहार को याद कर वह डर के मारे

वावूजी से माला के बारे में कुछ पूछ भी नहीं सका।

अस्पताल के कमरे के उस दृश्य ने दीपक को बुरी तरह से झकझोर दिया। माला बेहोश थी। बीस वर्षीय राजू माला के सिरहाने सिर झुकाये खड़ा था। उसकी आंखों से लुढ़कते हुए आंसू माला के तकिये को भिगो रहे थे। नीलू पैरों से लिपटी रो रही थी। उसके मुख से निकले शब्द कमरे की खामोशी को तोड़ रहे थे। "भाभी. . .. आंखें खोल दो. . .।" इस दृश्य को देखकर दीपक अपने को रोक न सका। उसकी आंखें गीली हो आयीं।

उसकी आंखों के आगे तभी बूढ़ी नंदा मौसी का चित्र अंकित हो आया, जो मोहल्लेभर की मौसी थी। जब कभी कोई उन्हें मंथरा मौसी के नाम से पुकारता, वह उसे मारने के लिए दौड़ पड़ती। दीपक को आज पता चला कि उनका नाम लोगों ने कितना ठीक रखा है।

दीपक की निर्निमेष दृष्टि माला के चेहरे पर जमी थी। राजू और नीलू अब भी उसी मुद्रा में खड़े थे। यह दृश्य उसे निर्णय के घेरे में जकड़ते हुए, जैसे उससे पूछ रहा था, 'अब बोलो कौन सही है, ये मोहल्लेवाले या माला? जो कानों से अब तक सुनते चले आ रहे थे, वह सच था या, इस समय जो अपने नेत्रों से देख रहे हो, यह सच है?'

—के-६७/१११, नयी बस्ती,
ईश्वर गंगी, वाराणसी

वह गढ़ मंडला की रानी थी!

२४ जून, १५६४। आज से चार सौ अठारह वर्ष पूर्व इसी दिन गढ़ा-मंडला के ५२ गढ़ों की महारानी दुर्गावती अकबर से युद्ध करते समय वीरगति को प्राप्त हुई थी। जन-जन के मानस में रानी के लिए स्नेह और अकबर के लिए तिरस्कार स्वाभाविक था। इसका यह स्नेह इस देवी लोकगीत में अभिव्यक्त हुआ है:

कांच की चुरिया
पाट की फरिया
अकबर दई पहराय। हो मां।
सोने छयलवा, रूपा गुड़रिया
अकबर पनियां जाय। मोरी मां।
जंह जंह अकबर भरे घयलवा
ओही पथरा हुई जाय। मोरी मां।
अबकी चूक बकस मोरी माता
अब ना आऊं तोरे देस। मोरी मां।

महारानी दुर्गावती की स्मृति में दिवंगत रानी की चतुःपुण्यतिथि के अवसर पर नगर-निगम जबलपुर ने भंवरताल पार्क में महारानी की विराट प्रतिमा स्थापित की, जिसका अनावरण १३ अप्रैल, सन् १९७५ (महिला वर्ष) को भूतपूर्व लेफ्टिनेंट जनरल श्री जगजीतसिंह अरोरा ने किया।

—सुधारानी श्रीवास्तव

तीन झीलें : तीन दास्तानें

फकीर से बनी झील!

• एम. एस. बतरा

झीलों का पानी जितना खामोश और गहरा होता है, वह उतना ही शांत और ठंडा भी होता है। लेकिन कई झीलें ऐसी भी होती हैं, जिनकी गहराई में अनेक अजीबोगरीब दास्तानें छिपी रहती हैं। अफगानिस्तान में विश्व-प्रसिद्ध बामियान की घाटी में स्थित बुद्ध प्रतिमा से कोई पचहत्तर किलोमीटर दूर स्थित छह झीलों का इलाका आज भी अनेक कहानियां सुनाता है। सुनसान, बियाबान झीलों का यह इलाका सुबह-सुबह प्रकृति की जिस खूबसूरती से चमक उठता है, दोपहर के सन्नाटे में पहाड़ों से घिरा यहां का वातावरण मन में अजीब-सी दहशत उत्पन्न करता है। और फिर ज्यों-ज्यों शाम होती जाती है, यहां अजीब खौफ-

ऊपर : अजीबोगरीब दास्तानों को छिपाये बंदे अमीर की एक झील, दूरबीन लिये लेखक

नाक खामोशी छाने लगती है। इसीलिए शायद यहां अकेले आना मुश्किल है और अगर कोई यहां अकेले आने का साहस भी करे, तब उसे अपनी ही आवाज उन तमाम घाटियों से प्रतिध्वनित होती सुनायी देगी, जो अजीबोगरीब दास्तानों को पर्त-दर-पर्त छिपाये हुए हैं। इस पूरे इलाके को 'बंदे अमीर' कहते हैं। इसमें जो झीलें हैं, उनके नाम भी बहुत रोचक और सार्थक हैं। ये झीलें हैं—बंदे गुलामां (गुलामों की झील), बंदे कंबर (साईस की झील) बंदे हैबत (विस्मय की झील), बंदे पनीर, बंदे जुलफिकार (हजरतअली की तलवारवाली झील), बंदे पुदीन।

बंदे गुलामां

बंदे गुलामांवाली झील गोल है और करीब पौन मील के घेरे में फैली है। बंदे कंवर झील, बंदे गुलामां और हजरत अली की यादगार में बनी मस्जिद के बीच में है। आजकल यह सूख गयी है। मस्जिद से लगी हुई मुख्य झील है—बंदे हैबत। यह करीब दो मील लंबी और पांच सौ गज चौड़ी है। इसका बांध करीब चालीस फीट ऊंचा है। इस बांध से रिसनेवाला पानी, नीचे की बड़ी चट्टान पर गिरता है। इस पानी के साथ काफी गंधक आता है, और इस तरह वहां गंधक का काफी जमाव हो गया है। बंदे हैबत का पानी इस बात के लिए मशहूर है कि इससे रोग दूर हो जाते हैं। जो तीर्थयात्री यहां आते हैं, वे इस पानी में जरूर नहाते हैं और इसे बोतल में भरकर ले जाते हैं। इस झील का पानी इतना ठंडा है कि इसमें कुछ मिनटों से ज्यादा खड़े रहना मुश्किल होता है।

अफगानिस्तान की बामियान घाटी केवल इसलिए विश्व-प्रसिद्ध नहीं है कि वहां पर भगवान बुद्ध की वृहदाकार प्रतिमा स्थित है, बल्कि इसलिए भी कि यहां कई झीलें ऐसी भी हैं जिनकी गहराइयों में अनेक अजीबोगरीब दास्तानें छिपी हैं जिन्हें उजागर कर रहे हैं यहां की यात्रा कर लौटे लेखक श्री एम. एस. बतरा।

बंदे पनीर

मस्जिद से बायीं ओर देखिए तो बंदे पनीर दिखायी देती है। यह छोटी-सी झील है और डेढ़ सौ गज लंबी है। झील की दायीं तरफ पेड़ों का समूह है। पेड़ों के पास ही एक छोटी झील है—बंदे पुदीन। सबसे बड़ी झील बंदे जुलफिकार चार मील लंबी है और मस्जिद से दिखायी नहीं देती है।

बंदे हैबत के पीछे बनी मस्जिद कोई छियासठ वर्ष पुरानी है। इसे कदम जाँय शाहे औलिया यानी जहां हजरत अली ने कदम रखा था, कहते हैं। शाहे औलिया का

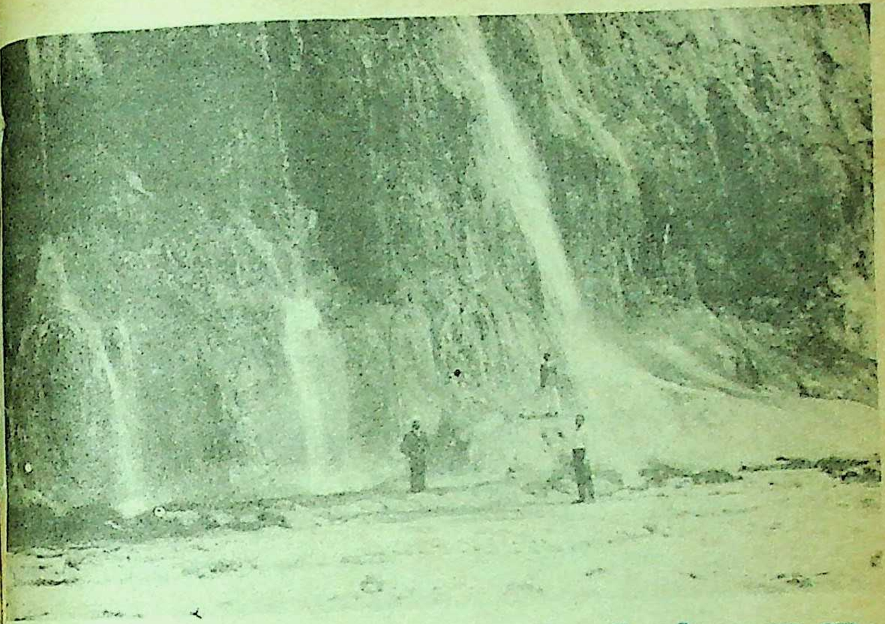

सुनसान, बियाबान और सन्नाटेभरी झीलों के इलाके : बंदे अमीर का एक दृश्य

अर्थ है 'संतों के सम्राट'। पैगंबर मोहम्मद साहब के दामाद हजरत अली को इसी नाम से पुकारते हैं। एक बियाबान जगह में इतनी सुंदर झीलों का होना सचमुच आश्चर्य की बात है, लेकिन इसके साथ ही जुड़ी हुई है वह आश्चर्यजनक कथा, जो इन झीलों की गहराई में छिपी हुई है।

एक गुलाम : तीन शर्तें

इन झीलों के निर्माण के संबंध में, जो अनेक कथाएं प्रचलित हैं, उन सबका संबंध बादशाह बारबर से है, जिसने हिंदुकुश पर्वत की भूमि पर कभी राज्य किया था। उसने हजरत अली से मुकाबला किया था, जो उसके राज्य में अनेक चमत्कारी कार्य कर रहे थे। उन दिनों बारबर इस बात से बहुत नाराज था कि उसने एक हजार गुलामों को नदी बांधकर झील बनाने के लिए भेजा और नदी को बांधा न जा सका। उसकी सारी कोशिशें बेकार साबित हुई थीं। इस कारण वह बेहद चिढ़ गया था और वह इसके बदले जनता पर अत्याचार करने लगा था। उसके अत्याचारों का शिकार हुआ एक युवक भी था, जिसके बीवी-बच्चों को इसलिए जेल में बंदकर दिया गया था, क्योंकि वह अन्यायपूर्वक मांगी गयी विपुल धनराशि बारबर को चुकता नहीं कर सका था। आखिर, वह हजरत अली के पास मदद मांगने पहुंचा, जो उन दिनों समरगान में थे। उन दोनों ने मिलकर एक योजना बनायी और बार-

घुटनों तक रोशनी

कमरे में घुटनों तक रोशनी भरी
शेष है अंधेरे में जिंदगी मरी

घर की दीवारों से बरसे अंगार
जूड़े का गजरा मत देख बार बार

खिड़की की आंखों से वेदना झरी
कमरे में घुटनों तक रोशनी भरी

भा गया क्यों अतीत, ज्यों पिकासो के चित्र
सुबह-सुबह क्यों आया संध्या का मित्र

दरवाजे घड़ियों के न्याय से बरी
शेष है अंधेरे में जिंदगी मरी

——असीम शुक्ल

सी-३५४, स्क्वायर गोल मार्किट,
नयी दिल्ली-११०००१

वर के राज्य में आये। योजना यह थी कि वह युवक हजरत अली को रस्सियों से बांधकर गुलाम के रूप में बेचेगा और उनका भेद नहीं खोलेगा।

बारबर ने गुलाम को देखा। उसने कहा, "मैं गुलाम के तौल के बराबर सोना देकर इसे खरीद सकता हूं, किंतु तीन शर्तें हैं—पहली यह कि वह उस झील को बनाएगा, जिसे मैं बनवाना चाहता हूं, दूसरी यह कि वह बामियान के सर्प-दैत्य को मारेगा और तीसरी यह कि वह हजरत अली को जंजीरों में बांधकर मेरे सामने लाएगा। साथ ही ये तीनों काम एक ही दिन में करने होंगे।"

बादशाह की इन शर्तों को हजरत अली ने मान लिया और वह पहाड़ की चोटी पर चढ़ गये। वहां से उन्होंने बड़ी-बड़ी चट्टानें नीचे गिरा दीं, जिससे नीचे बंदे हैबत बन गयी। फिर उन्होंने अपनी तलवार के एक ही वार से पहाड़ का एक हिस्सा काट दिया और वहां बंदे जुलफिक्कार बन गयी। इसी बीच हजरत अली के साईस कंबर ने अपने मालिक की मदद करने के इरादे से बंदे कंबर झील बना दी। फिर गुलामों ने भी अपना काम पूरा कर ही डाला और बंदे गुलामां झील बना डाली।

पनीर से बनी झील

इस सारे दृश्य को एक खानाबदोश महिला देख रही थी। उसने इन आश्चर्यजनक महान कार्यों को देखा, तो वह ताजा पनीर लेकर आयी और अपनी श्रद्धा के रूप में हजरत अली को दे गयी। हजरत अली ने वह पनीर एक नदी में रख दिया, जिससे बंदे पनीर झील का निर्माण हो गया। नदी का बहाव बंध जाने से नीचे के इलाके में पानी जाना बंद हो गया। नदी सूख गयी और ग्रामवासियों को बड़ी परेशानी हुई। वे हजरत अली के पास फरियाद लेकर आये। तब हजरत अली ने सिर्फ अपनी उंगलियां बंदे हैबत के आरपार फिरा दीं और उससे पांच धाराएं फूट निकलीं और पानी बह निकला।

सर्प-दैत्य से मुठभेड़

इस तरह जब झीलें बन गयीं, तब हजरत

अली सर्प-दैत्य को मारने के लिए निकल पड़े। बहुत-बहुत साल पहले इस सौंदर्यपूर्ण घाटी में एक सर्प-दैत्य आकर रहने लगा था। उसने बामियान के निवासियों को बेहद भयभीत कर रखा था। वह आग उगलते हुए इधर-उधर घूमता रहता और उसके रास्ते में जो भी आता, उसे वह निगल जाता। आखिर, बामियान के राजा ने उससे समझौता कर लिया। समझौता यह हुआ कि सर्प-दैत्य अपनी घाटी में ही रहेगा और उसे वहीं हर रोज खाने के लिए दो युवतियां, दो ऊंट और लगभग सत्तर मन अन्य खाद्य सामग्री मिल जाएगी। इससे बामियान की घाटी में शांति तो हो गयी, लेकिन जिन घरों को अपनी बेटियां सर्प-दैत्य के भोजन के लिए भेजनी पड़ती, वे दुःखी थे।

सर्प-दैत्य से मुठभेड़

हजरत अली सर्प-दैत्य की तलाश में थे और सर्प-दैत्य अपना नाश्ता न मिलने से परेशान, नाश्ते की तलाश में। सर्प-दैत्य ने देखा हजरत अली हाथ में तलवार लिए एक सुंदर युवती के पास बड़ी बहादुरी से खड़े थे। फिर क्या था, कुछ ही देर में, दोनों में युद्ध शुरू हो गया। सर्प-दैत्य अपने मुख से आग की लपटें उगलने लगा, वह लड़की घबरा गयी। लेकिन तभी उसने देखा कि बहादुर जवान ने अपनी तलवार घुमाकर उन लपटों को फूलों में बदल दिया। इस पर सर्प-दैत्य ने भयंकर गर्जना की। सारी घाटी गूंज उठी। लेकिन तभी हजरत अली ने अपनी तलवार से उसके दो टुकड़े कर दिये।

सर्प-दैत्य को मारने के बाद हजरत अली अपने असली रूप में जब बादशाह बारबर के सामने प्रकट हुए, तब वह उनके पैरों पर गिर पड़ा और बार-बार अपनी भूलों के लिए क्षमा मांगने लगा।

बंदे अमीर के इलाके में फैली इन तमाम झीलों के साथ जुड़ी कहानियां भी दर्शकों का मन बहलाती हैं। इस तमाम इलाके में बिखरी खामोशी, बियाबान जंगल और चारों तरफ फैला सन्नाटा यहां आनेवाले पर्यटकों को अजीब-सी अनुभूति कराता है। लेकिन मैं जानता हूं कि बंदे हैबत का पानी कितना ठंडा और मीठा है। उसकी स्मृतियां आज भी मेरे पास हैं और उन्हें शायद कभी न भूल पाऊंगा।

—ए-४, पंडारा रोड, नयी दिल्ली

नींद न आना बड़ी कष्टदायक बीमारी है। रात के सन्नाटे में जब सारी दुनिया सोयी हुई होती है, तब इस बीमारी से ग्रस्त व्यक्ति पर क्या गुजरती है? इसका बयान वही कर सकता है, जो इस पीड़ा से गुजरा हो।

नींद न आने से ग्रस्त कुछ बीमारों का ख्याल है, कि वे सारी रात केवल इसलिए नहीं सो पाते, क्योंकि वे यह सपना देखते रहते हैं कि वे जग रहे हैं।

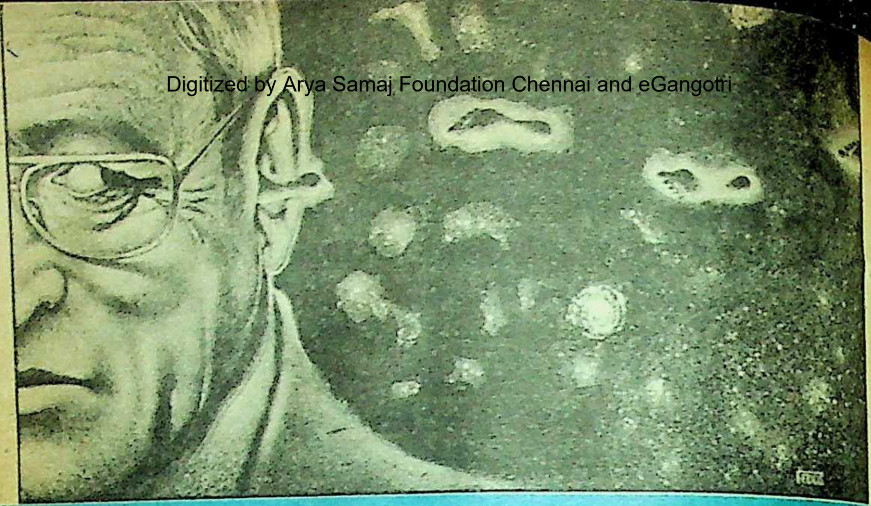

जालसाजी में वैज्ञानिक भी पीछे नहीं

• सुदीप

ज्ञान-विज्ञान का भंडार निरंतर बढ़ता जा रहा है। हम अपने आसपास नजर डालते हैं, तो महसूस होता है, ऐसी लाखों-करोड़ों चीजें हैं, जिनके बारे में हम कुछ नहीं जानते और फिर उनकी जानकारी देनेवाला साहित्य हमारे सामने आता है। यह विरोधाभास भी अजीब है कि जितनी जानकारी बढ़ती जाती है, उतना ही महसूस होता है कि हम कुछ नहीं जानते ।

इस विरोधाभास का फायदा उठानेवाले लोगों की भी कोई कमी नहीं है । जालसाजियां, धोखा-धड़ियां इसीलिए होती रहती हैं, क्योंकि हमें चीजों के बारे में पता नहीं होता । जालसाज लोग हमारे अज्ञान को भुनाते हैं और अपनी जेबें भरते हैं। ताज्जुब तब होता है, जब विशेषज्ञ माने जानेवाले लोग भी जुल देने या जालसाजी करने से बाज नहीं आते ।

एक चीज और हुई है—हर वैज्ञानिक-क्षेत्र में सैकड़ों उपक्षेत्र बन गये हैं। हर क्षेत्र में विशेषज्ञता आ गयी है। हर क्षेत्र की अपनी भाषा है । इन भाषाओं ने बड़ी गड़बड़ कर दी है। इसलिए कोई ताज्जुब नहीं कि जहां एक तरफ ज्ञान-विज्ञान में प्रगति हो रही है, वहीं अंधविश्वास, रहस्यवाद तथा नीमहकीमी भी बढ़ रही

जालसाजी का आज हर तरफ बोलबाला है, चाहे वह कोई भी क्षेत्र क्यों न हो, यहां तक कि विज्ञान भी नहीं बचा है इससे। यह बात दूसरी है कि वैज्ञानिकों ने ये जालसाजियां जानबूझकर की हैं या उनसे अनजाने में हुई हैं...

है। इन बातों ने हर युग के वैज्ञानिकों को परेशान किया और जब तक मानव मन रहेगा, तब तक उनकी यह परेशानी भी बनी रहेगी।

वैज्ञानिक खुद भी लोगों को जुल दे सकते हैं, इस बात का प्रमाण अनेक घटनाओं से मिलता है। मसलन, चार्ल्स डॉसन का ही उदाहरण लीजिए। डॉसन इंग्लैंड के एक सम्मानित मानव-शास्त्री—खासतौर पर जीवाश्म-शास्त्री थे। लोग उनकी उपलब्धियों के लिए उनकी कद्र करते थे।

एक जैव-वैज्ञानिक झूठ

सन १९१२ में पिल्टडाउन (इंग्लैंड) के निकट एक गड्ढे से उन्होंने एक खोपड़ी और निचले जबड़े के कुछ टुकड़े ढूंढ़ निकाले। खोपड़ी काफी सख्त थी और मानवीय खोपड़ी-जैसी ही लगती थी। जबड़ा भी मानव के आकार का था। जबड़ा हालांकि, आदिम था और खोपड़ी काफी विकसित, फिर भी दोनों चीजें एक-दूसरे में सटीक बैठती थीं।

यह वह जमाना था, जब वैज्ञानिक डार्विन के सिद्धांतों के ठोस साक्ष्य तलाशने में लगे हुए थे। उन्हें ऐसे ही किसी साक्ष्य का इंतजार था। प्रख्यात जीवाश्म-शास्त्री तथा ब्रिटिश म्यूजियम के भू-विज्ञान विभाग के संग्राहक स्मिथ वुडवर्ड ने डॉसन के पिल्टडाउन मानव को 'इयोएंथ्रोपस डॉसोनी' का नाम दिया और उसका चित्रांकन भी किया।

डॉसन खुद स्मिथ वुडवर्ड को उस स्थल पर ले गये थे, जहां पिल्टडाउन मानव की खोज हुई थी। उनके बाद अनेक अन्य जीवाश्म-शास्त्री भी वह स्थल देखने गये, जिनमें तेइलहार्द दि शार्दीन भी शामिल थे। प्रख्यात जासूसी लेखक सर आर्थर कानन डॉयल ने भी उस स्थान का दौरा किया। उन दिनों वह अपनी पुस्तक 'द लॉस्ट वर्ल्ड' लिख रहे थे।

डॉसन ने पिल्टडाउन में एक अन्य स्थल की खोज भी कर डाली, जहां से

उन्होंने तथा उनके साथियों ने अनेक नये साक्ष्य भी खोज निकाले—कुछ अनगढ़ किस्म के औजार, एक अन्य खोपड़ी के कुछ अंश तथा कुछ अन्य जानवरों के अवशेष—हाथी, गेंडे वगैरा। इन सभी खोजों से यह प्रमाण मिलता था कि इंग्लैंड में १० और २० लाख साल पहले मानव रह रहा था।

डार्विन विकासवादी थे। विकास को उन्होंने नियमबद्ध, धीमी प्रक्रिया के रूप में चित्रित किया था। उनका कहना था कि पूर्वजों और उत्तराधिकारियों के बीच 'अनगिनत संतरण कड़ियां' होनी चाहिए, क्योंकि, विकास सीढ़ी-दर-सीढ़ी होता है। डॉसन की खोज ने मानो डार्विन के सिद्धांत को पुख्तगी प्रदान कर दी थी।

डॉसन की खोज को, लोगों ने 'विलुप्त कड़ी' के साक्ष्य के रूप में स्वीकार कर लिया। १९१२ में यह खोज हुई थी। अगले ४३ वर्षों तक किसी विद्वान ने इस पर अंगुली नहीं उठायी।

१९५५ में ब्रिटिश म्युजियम ने इन जीवाश्मों को पुनरीक्षण से संबंधित एक रिपोर्ट प्रकाशित की। फ्लोरीन की मात्रा के परीक्षण से पता चला था कि खोपड़ी ५० हजार वर्ष से ज्यादा पुरानी नहीं है, और जबड़ा तो आधुनिक ही है। रासायनिक परीक्षणों से यह भी पता चला कि जबड़े पर इस तरह के धब्बे लगा दिये गये थे कि वह प्राचीन-जैसा नजर आये।

जबड़े के दांतों को रेती से रेता गया था। अणुवीक्षण-यंत्र से रेती के निशान भी सामने आ गये। एक्स-रे के जरिये पता चला कि उन दांतों की जड़ें किसी चिंपांजी या ओरांग के दांतों की जड़ों की तरह लंबी हैं— यानी किसी चिंप या ओरांग के जबड़े को जानबूझकर इस तरह का रूप देने की कोशिश की गयी थी कि वह वानर और मानव के बीच का लगे।

इससे यह बात स्पष्ट हो गयी कि पिल्टडाउन मानव बड़ी चतुराई से की गयी एक धोखाधड़ी थी। यह काम किसका था, यह आज तक पता नहीं चल सका है, हालांकि जे. एस. बीनर ने अपनी पुस्तक 'द पिल्टडाउन फोर्जरी' में यह संकेत दिया है कि यह जालसाजी खुद डॉसन द्वारा ही की चुकी थी। डॉसन की मृत्यु १९१६ में हो गयी थी।

आविष्कार का लाभ ढोंगियों को

यह सही है कि यह कह सकना मुश्किल है कि कौन-से अवैज्ञानिक विश्वास जुलों के परिणामस्वरूप पैदा हुए। कई बार वैज्ञानिक जानबूझकर जुल नहीं भी देते, फिर भी उनकी गलतियों के कारण कोई विश्वास जड़ें जमा लेता है। इसके बावजूद जैसा कि ए. ए. रोबैक ने अपने एक लेख 'क्वैक्स', (१९२९ में 'फोरम' में प्रकाशित), में लिखा था, यह बात विवादरहित है कि हर नये विज्ञान, हर नयी खोज, हर ईजाद का फायदा ढोंगी लोग उठाते रहे हैं . . . लोगों की अज्ञानता, और अज्ञानता से भी बढ़कर उनकी सच और झूठ में फर्क कर पाने की समझ के अभाव को भुनाने के लिए जालसाजी ज्ञान की दुनिया में होने-

वाले विकास से ही संकेत प्राप्त करती है ।'

यही कारण है कि नक्षत्र विज्ञान और ज्योतिषशास्त्र साथ-साथ चलते मिलते हैं; रसायन शास्त्र के साथ कीमियागीरी चलती नजर आती है, और जादुई डंडों तथा दार्शनिक पत्थरों की खोज भी; मानवशास्त्र में नॉडिक या आर्य श्रेष्ठता का सवाल भी टांग अड़ाता नजर आता है ।

धार्मिक आस्थाएं, आध्यात्मिकता, परामनोविज्ञान और उसके जरिए चिकित्सा, तंत्र, जादू-टोना; मनोविश्लेषण और मेस्मरिज्म, स्वप्न-दर्शन, हस्तलेख-विश्लेषण; मोटापा घटाने के तरीके; प्लास्टिक सर्जरी, गालों के गड्ढों का निर्माण, पैराफीन इंजेक्शन, कद बढ़ाने के तरीके, पेटियां, कैंसर, मधुमेह, यक्ष्मा की चिकित्सा के तरह-तरह के तरीके और इलाज . . . चांद और उसके पार जाते रॉकेटों के साथ-साथ तथाकथित भगवान . . . आदि आदि, कहां तक चीजों को सूचीवद्ध किया जाए ?

एक वैज्ञानिक के खिलाफ साजिश

१८वीं सदी में, डॉ. बेटिंगर बुर्जबुर्ग यूनिवर्सिटी (जरमनी) के औषध-विज्ञान निकाय के डीन थे। डॉ. बेरिंगर दरबारी चिकित्सक भी थे और उनका अपना निजी व्यवसाय भी खासा चलता था। इसके अलावा उन्होंने यह ख्याति भी अर्जित कर ली थी कि उनके पास प्राचीन वस्तुओं का एक विशाल संग्रह मौजूद है।

डॉ. बेरिंगर के दो साथी, एक लाइब्रेरियन तथा गणित और भूगोल के एक प्राध्यापक उनसे बड़ा जलते थे। उन्होंने बेरिंगर के विरुद्ध साजिश रची और यह तय किया कि वे डॉ. बेरिंगर के बारे में यह प्रचारित करेंगे कि वह जालसाज हैं और उनके संग्रह में रखी सभी चीजें जाली हैं। उन्होंने कुछ पुराने पत्थर चुने और फिर उस युवक को भी अपने साथ कर लिया, जो डॉ. बेरिंगर का सहायक था। उन्होंने युवक से कहा कि वह उन पत्थरों को डॉ. बेरिंगर को जाकर बेच दे, या उन्हें ऐसी जगह दबा दें, जहां डॉ. बेरिंगर खुदाई करवाने वाले हों।

मई १७२४ में बेरिंगर को पहला 'जीवाश्म' मिला। यह एक ऐसा पत्थर था, जिस पर सूर्य और उसकी किरणें नजर आती थीं और कुछ कीड़े-मकोड़े भी।

'खोजें' एक साल तक चलती रहीं। बेरिंगर को लगा, अब उनके पास इतने पत्थर एकत्र हो गये हैं कि वह उनके बारे में घोषणा कर सकें। १७२६ में उन्होंने २१ प्लेटें प्रकाशित कीं, जिनमें २०४ पत्थर चित्रित थे। साथ ही उन्होंने जीवाश्मों के बारे में अपनी और अपने से पहले की अवधारणाओं को भी प्रकाशित किया।

पुस्तक के प्रकाशन के साथ ही बड़े जोर-शोर से यह कहा जाने लगा कि बेरिंगर ने जालसाजी की है। बेरिंगर के लिए अपनी इज्जत बचाना मुश्किल हो गया और तंग आकर उन्हें अदालत की शरण लेनी पड़ी। मुकदमे की सुनवाई अप्रैल, १७२६ में वर्जबर्ग के एक कैथेड्रल में हुई

और षड्यंत्रकारियों को सजा सुनायी गयी। लेकिन बेरिंगर इतना दुखी हो गये कि वह ज्यादा दिन नहीं जी सके।

आविष्कार की अफवाह

सन १९३५ में नवीन भारत-शासन कानून के लागू होने के अवसर पर अनेक विदेशी पत्रकार भारत आये थे। अनेक भारतीयों को लगा था कि अंगरेजों का शिकंजा भारत पर और भी ज्यादा कसने लगा है। तभी एक अफवाह उड़ी कि बंबई के निकट एक बौनी जाति के जीवाश्म-अवशेष प्राप्त हुए हैं। विदेशी पत्रकारों ने यह समाचार अपने-अपने अखबारों को भेज दिया और दुनियाभर के अखबारों में इसे प्रकाशित भी किया गया।

उसी साल युनाइटेड प्रेस ने एक खबर दी कि ब्रिटिश कोलंबिया में सदियों पहले रहनेवाली एक जंगली मानव जाति, 'सैस्क्वैंच' अब भी वहां के पहाड़ी जंगलों में जिंदा है। सैस्क्वैच मानव को विलुप्त घोषित किया जा चुका था। खबर में कहा गया कि लंबे-लंबे बालों से ढंके शरीरवाले वे दैत्य वेंकूवर से ५० मील दूर पूरब में स्थित हैरिसन मिल्स के निवासियों को परेशान कर रहे हैं।

इस खबर के छपने पर अनेक वैज्ञानिक हैरिसन मिल्स पहुंचे। उनका खयाल था कि मुमकिन है, वे एंथ्रोपॉयड वानर और मानव के बीच की 'विलुप्त कड़ी' को पाने में सफल हो जाएं। उन्होंने पहाड़ों और जंगलों का कोना-कोना छान मारा, लेकिन उन्हें किसी ऐसे प्राणी के अस्तित्व के संकेत नहीं मिले।

१५ जून, १९२९ के 'इलस्ट्रेटेड लंडन न्यूज' में एक अजीब नमूने की तसवीर प्रकाशित हुई। उस तसवीर के साथ प्रकाशित हुए लेख में अन्वेषक फ्रांसिस डि लॉयस ने कहा था कि जिस प्राणी की वह तसवीर है, वह एंथ्रोपॉयड और मानव के बीच की एक कड़ी का प्रतिनिधि है। अन्वेषक ने उसे अमेर-एंथ्रोपॉयड का नाम दिया था।

अपनी खोज की कहानी बताते हुए डिलॉयस ने लिखा था कि वह वेनेजुएला और कोलंबिया के मोतिलोन प्रदेशों में स्थित तेरा नदी की कठिन यात्रा से लौट रहे थे। रास्ते में उन्हें यह प्राणी नजर आया। उसे घेरकर उन्होंने मार डाला। उनकी मजबूरी थी कि वह उस प्राणी की खाल, खोपड़ी और जबड़ों को अपने साथ नहीं ला सके, सिर्फ तसवीर ही ला सके।

प्रकाशित तसवीर केवल सामने से ही ली गयी थी और नमूने के प्रमुख गुणों का चित्रण नहीं करती थी—मसलन उस प्राणी की दुम थी या नहीं थी। चित्र में कोई पैमाना भी नहीं दिया गया था, जिससे उसके आकार का पता चलता।

बरसों बाद प्राणीशास्त्री राल्फ लिंटन ने यह सिद्ध किया कि वह तसवीर एक स्पाइडर-मंकी की थी।

—एन-४/१३, सुंदरनगर, एस. टी. रोड,
मलाड (पश्चिमी), बंबई-४०००६४

तनाव से मुक्ति

● डॉ. सतीश मलिक

नींद में चलने का रोग

र. रा., पाली (राजस्थान): २१ वर्षीय अध्यापक हूं। रात में सोना मेरे लिए समस्या है। रात को नींद में बड़बड़ाना, हड़बड़ाकर, उठकर घर से बाहर जाना, कभी बिस्तर समेटकर भागना, तो कभी खाट खड़ी कर देना या फिर शोर करना।

मैं अपने-आपको रात को चेतन नहीं कर पाता। सुबह रात की घटना का १०-२० प्रतिशत ही याद रहता है। इस रोग के कारणवश मैं दूसरे गांव या संबंधियों के यहां नहीं जा पाता। यह बीमारी मेरे चाचा को बचपन में थी। वह बड़े होकर सही हो गये। भाइयों में भी कुछ-कुछ लक्षण इस रोग के हैं। मेरी मानसिक स्थिति दिनों-दिन, तो अब बिगड़ेगी ही। कृपया बीमारी का नाम तथा इलाज लिखें।

आपको टी. एल. ई. (टैम्पोरल लोब ऐपीलेप्सी) नामक रोग है। स्नायु-रोग विशेषज्ञ द्वारा जांच तथा ई. ई. जी. कराने से निदान और पक्का हो जाएगा। आजकल इसके लिए बहुत अच्छी दवाइयां उपलब्ध हैं। मानसिक संतुलन खोने का डर व स्मरण-शक्ति की क्षीणता भी इसी रोग से है। सही उपचार से यह भी सही हो जाएंगे।

शरीर पर बालों की समस्या

क. ख. ग., नवलगढ़: १६ वर्ष का छात्र हूं। सारे शरीर पर बाल हैं। काले-काले, बड़े-बड़े दाढ़ी के बाल, आंख व नाक तक पहुंच गये हैं। कान के पीछे भी हैं। चेहरे की सारी सुंदरता समाप्त हो गयी है। इलेक्ट्रोलेसिस के लिए गया तो उत्तर मिला कि केवल महिलाओं के लिए यह सुविधा है। इससे मैं जीवन से ऊब गया हूं।

आप हारमोन-विशेषज्ञ से जांच करायें, क्योंकि हारमोनों के असंतुलन से ही ऐसा होता है।

मानसिक असंतुलन की समस्या

नाखानी, अजमेर: मैं ३० वर्ष का अविवाहित युवक हूं। विवाह इसलिए नहीं किया कि २५ साल की छोटी बहन का पहले हो जाए। परंतु वह विवाह के

इस स्तंभ के अंतर्गत अपनी समस्याएं भेजते समय अपने व्यक्तिगत जीवन का पूरा परिचय, आयु, पद, आय एवं पते का उल्लेख कृपया अवश्य करें।

डॉ. सतीश मलिक

नाम से ही उत्तेजित होकर मां-बाप को गाली व अशोभनीय भाषा में बोलती है। बी. ए. के प्रथम वर्ष में तीन बार फेल हो गयी, तो उसकी पढ़ाई बंद करा दी। अब वह दोष देती है कि आप लोगों ने मुझे पढ़ने नहीं दिया व आप में सुयोग्य वर ढूंढ़ने की क्षमता ही नहीं।

मेरे विचार में आपकी बहन दोषारोपण कर अपनी कमियों को छुपाने की कोशिश करती है। वास्तव में उसकी बुद्धि तीक्ष्ण नहीं, परंतु वह अपनी तुलना व अपने-आपसे अपेक्षा सामान्य लोगों की तरह करती है। प्यार से, जब उसे यह महसूस होने लगे कि जितनी भी क्षमता व बुद्धि उसमें है, उसकी भी पूछ है, तो वह तनावपूर्ण स्थिति में नहीं आएगी और दोषारोपण भी नहीं करेगी। 'माइनर ट्रैंकुलाइजर' द्वारा भी तनाव कम किया जा सकता है।

यह कैसा नशा है ?

शि. न. यादव, पिपरा हरि : मेरी समस्याएं हैं—

(१) हर समय नशा-सा छाया रहना, न तो मैं मांस खाता हूं, न मदिरा आदि लेता हूं फिर भी नशा ही नशा रहता है।

(२) एक बार करीब एक साल पहले कुत्ते से स्पर्श (काटा नहीं) हुआ—कुत्ता जिंदा है, फिर भी शक बना हुआ है कि कहीं उससे पागलपन या मृत्यु तो नहीं हो जाएगी।

(३) जैसे ही पढ़ने बैठता हूं, न जाने कहां से एक विचित्र-सा नशा व आलस्य मुझे घेर लेता है। रोज ठानता हूं कि चार घंटे सोऊंगा, २० घंटे पढ़ूंगा। परंतु ४ घंटे से भी कम ही पढ़ पाता हूं।

आपका 'नशा' व 'आलस्य' व शंका, अत्यंत तनावपूर्ण मनःस्थिति के ही लक्षण हैं। २० घंटे पढ़ने की बात सोचकर ही बहुत तनाव हो सकता है।

मनोविज्ञान की दृष्टि से मैं यह कह सकता हूं कि आपको इस बात की भी आदत है कि आप अपने ऊपर ज्यादा जोर डालकर अपने आपसे अधिक अपेक्षा करने लगते हैं। अपने आपको 'ऑटो सजेशन' दें और नसों को ढीला छोड़ें साथ में शव-आसन करें। अपने को यथार्थ व वास्तविकता में लाएं व जितनी क्षमता है, उतना ही काम करें, फिर धीरे-धीरे ही कार्य को बढ़ायें।

यथार्थवादी दृष्टिकोण

अ. आर्य, सिंदरी, धनबाद : २१ वर्ष का युवक हूं। आई.एस.-सी. पास कर, अभिभावकों की इच्छानुसार इंजीनियरिंग की तैयारी की, परंतु असफल रहा। मान-

सिक उलझन के दौर से गुजरा और मानसिक व शारीरिक पीड़ा का शिकार हो गया। उस पर अभिभावकों की पैनी फटकार। जीवन के प्रति उत्सुकता तक खो बैठा। अब मैंने इसी माहौल में गुप्त रूप से तैयारी की और सफल भी हो गया। अब वही लोग अत्यधिक स्नेह देते हैं।

विगत जीवन को नहीं भूल पाता हूं। सबसे घृणा, विद्रोह की भावना उठती है। इस स्वार्थ व बनावट की दुनिया से दूर जाना चाहता हूं, परंतु विवाह के बंधन में बंध चुका हूं। मार्गदर्शन करें।

मनोविज्ञान की दृष्टि से जब आपको सहारे, प्रेम तथा आशा बंधाने की आवश्यकता थी, उसी समय आपको उलटे विरोध, व जली-कटी फटकार मिली। परंतु इस सबके बावजूद आप में अपने ऊपर स्वाभिमान, आत्मविश्वास व परिस्थितियों से लड़ने की क्षमता भी उत्पन्न हुई। यह वास्तव में बहुत सराहनीय है। अभिभावक आपकी असफलता व गिरी हालत देखकर अपने आपको अंदर ही अंदर दोषी व असफलता का कारण समझने लगे तथा स्वयं एक तनावपूर्ण स्थिति में चले गये। सारा वातावरण तनावपूर्ण हो उठा और उनका व्यवहार भी सामान्य न रह सका। मेरे विचार में आपको मानव-स्वभाव के भिन्न-भिन्न पहलू देखने को मिले हैं। व्यर्थ में लोगों को आदर्शवादी होने की आशा लगाना, यथार्थवाद नहीं। हर मनुष्य अच्छे और बुरे का सम्मिश्रण है। जीवन के संघर्ष से भागें नहीं। ●

घरेलू उपचार

वमन

अजीर्ण, अम्लपित्त, प्रकृति-विरुद्ध भोजन, अधिक भोजन व पेट में कीड़े होने से वमन (उल्टी) होती है। साधारणतया निम्नलिखित उपायों में से कोई एक उपाय करने से लाभ होता है।

१. काला नमक, सफेद जीरा, काली मिर्च मिश्री के साथ दस-दस ग्राम लेकर बारीक चूर्ण करें, इस चूर्ण की चालीस पुड़िया बनायें, तब सुबह-शाम एक-एक पुड़िया शहद में लें।

२. पीपल की छाल को आग पर जलायें, जली छाल को पानी में डालकर छानें, फिर पीयें।

३. थोड़ा जायफल पानी के साथ चंदन की तरह घिसें, फिर एक प्याला पानी में घोलकर पीयें।

४. गर्भावस्था में आधा-आधा आंवलों का मुरब्बा दिन में तीन बार लें।

५. दस ग्राम लौंग के चूर्ण की चालीस पुड़िया बनाकर, सुबह-शाम शुद्ध मधु के साथ सेवन करें।

—कविराज वेदव्रत शर्मा

मुस्लिम औरतें बहुविवाह प्रथा को बरदाश्त नहीं करेंगी

• सायरा बानू

मेरा जन्म मंसूरी में हुआ था। फिर हम वहां से दिल्ली आ बसे थे। इसलिए मंसूरी की कोई खास याद मेरे दिलो-दिमाग में नहीं हैं। मेरी दादी शमशाद बेगम साहिबा शास्त्रीय गायन की मशहूर कलाकार थीं। वे दिल्ली की बहुत-सी ड्रामा कंपनियों की मालिक भी थीं। मेरी अम्मी नसीम बानो की दिल्ली में कभी अच्छी खासी प्रॉपट्री हुआ करती थी।

दिल्ली से हम लोग बंबई आ गये। पढ़ाई के लिए मुझे सेंट टेरसा कानवेंट में दाखिल करवा दिया गया।

अम्मीजान एक प्रसिद्ध हीरोइन रही हैं, इसकी मुझे धुंधली-सी याद है। हां, मुझे यह जरूर याद है कि एक मरतबा जिद पकड़ने पर वे मुझे अपने साथ शूटिंग पर ले गयी थीं। वहां खलनायक प्राण चाबुक लिये बेहद डरावने लग रहे थे। उन्हें देखकर मैं डर गयी। रो-रोकर मैंने जमीन-आसमान एक कर दिया। आखिर, मुझे बाहर ले जाया गया। फिर मैं कभी अम्मी के साथ सेट पर नहीं गयी।

मेरे अब्बाजान मोहम्मद हसन ने, अम्मी को, उनकी अपनी फिल्मों को छोड़कर किसी दूसरे की फिल्मों में काम करने से रोक दिया था। 'चांदनी रात', 'अजीब लड़की', 'उजाला' और एक-दो अन्य फिल्मों में अम्मी हीरोइन रही हैं। इसके बाद उन्होंने फिल्में छोड़ दीं।

मेरे अब्बा काफी सख्त और उसूलों के पाबंद थे। इसीलिए मैं उनके ज्यादा नजदीक नहीं हो सकी। परंतु दादा, खान बहादुर मोहम्मद सुलेमान से मुझे बेहद प्यार था। वे दिल्ली में चीफ इंजीनियर हुआ करते थे।

जब १९५२ में अब्बाजान पाकिस्तान चले गये, तब मेरी और मेरे भाई की सभी जिम्मेदारियां अम्मी और दादा साहब पर आ गयी थीं। उन्होंने हमें सब कुछ मुहैया कराया।

नयी दिल्ली के अशोक होटल का एक सूट । दिलीपकुमार हमें अपने बचपन के संस्मरण सुना रहे हैं । तभी सेविका के साथ, हाथ में बुरका लिये सायरा बानू आती हैं। वे कुछ साड़ियां खरीदने कनाट प्लेस जा रही हैं, एक प्रख्यात निर्माता के साथ ।

हमें संस्मरण सुनाने में तल्लीन दिलीपकुमार क्षणभर के लिए रुकते हैं तो सायरा पूछती हैं, "साहब, मैं कनाट प्लेस चली जाऊं ? साड़ियां लेनी हैं ।"

"भई, क्यों उन्हें (निर्माता को) परेशान कर रही हैं। किसी ने पहचान लिया तो मुसीबत हो जाएगी ।" दिलीप किसी 'बड़े-बूढ़े' की तरह उन्हें 'नेक सलाह' देना चाहते हैं: पर सायरा जाना चाहती हैं। आखिर दिलीपकुमार उन्हें स्वीकृति दे देते हैं। वे फिर हमें अपने संस्मरण सुनाने में तल्लीन हैं।

"साहब, तो मैं जाऊं !"

यह सवाल वे तीन-चार बार करती हैं। हर बार 'हां' में उत्तर। फिर भी सायरा जहां की तहां। काफी देर बाद वे बुरका लिये कमरे के बाहर हो जाती हैं।

उस दिन सायरा बानू, दिलीपकुमार ऊर्फ यूसूफखान की पत्नी कम, भक्त ज्यादा प्रतीत हो रही थीं। पिछले दिनों दिलीपकुमार के यूसूफ खान की हैसियत से दूसरा विवाह कर लेने के बाद समाचार-पत्रों में काफी कुछ छपा है। यहां प्रस्तुत है—सायरा बानू की अपनी जिंदगी, उन्हीं के शब्दों में।

घर से प्यार

जब मैं सात वर्ष की थी, हमारा परिवार लंदन चला गया। मेरी शिक्षा वहीं हुई। मुझे हेम्पास्टेड के क्वींस हाऊस में दाखिल करवा दिया गया। फिर भी गरमी की छुट्टियां बिताने हम हिंदुस्तान आते थे। देश से बाहर रहने से नफरत होती थी। यों, मेरी तालीम पश्चिम में हुई, फिर भी मैं अपने परिवार के उसूलों और खयालों को बनाये रखना चाहती थी।

मुझे याद है, बंबई में पढ़ाई के दौरान एक आया हरदम मेरे साथ बनी रहती। यहां तक कि वह मेरे साथ क्लास में बैठती। मैं अकेली स्कूल नहीं जा सकती थी। एक छाया की तरह वह आया मेरे साथ लगी रहती।

इंग्लैंड में स्कूल में पढ़ते हुए बैले और 'बालरूम डांस', मेरे अतिरिक्त विषय थे। एक बार एक जलसे में वहां किसी दूसरे स्कूल के लड़के भी आनेवाले थे, पर मुझे उस जलसे में जाने की इजाजत नहीं मिली। दरअसल, मेरे परिवार के लिए यह नामुमकिन था कि मैं किसी पराये लड़के के साथ 'डांस' करूं।

'स्टार' बनने की चाहत

एक बार मैं छुट्टियों के दौरान बंबई आयी। मेरे मन में एक दिन 'स्टार' बनने की छोटी-सी तमन्ना थी। छुट्टियों के दौरान कई पार्टियों एवं दूसरे जलसों में मैंने इसका इजहार भी किया था। तब मैं दुबली-पतली, लंबी चोटी रखनेवाली एक सीधी-सादी लड़की थी। यहां तक कि मैं 'मेकअप' भी नहीं करती थी। हमारे परिवार में 'मेकअप' पर भी पाबंदी थी।

उन दिनों शशधर मुखर्जी 'हम हिंदुस्तानी' फिल्म के लिए मेरे पास

आये। उस फिल्म के निर्देशक राम मुखर्जी ने मेरा 'स्क्रीन टेस्ट' लिया। टेस्ट देते समय सेट पर अपने चारों तरफ भीड़ को देखकर मैं 'नर्वस' ही नहीं हुई, बल्कि पसीने से भीग तक गयी। और मैं उस 'टेस्ट' में नाकामयाब ही रही।

मैं इंग्लैंड लौट गयी। वहीं मुझसे सुबोध मुखर्जी अंकल मिले। न जाने उन्होंने मुझमें क्या पाया कि जब मैं छुट्टियों के दौरान पुनः बंबई आयी, तब उन्होंने मुझे उस समय के प्रसिद्ध 'स्टॉर' शम्मी कपूर के साथ 'जंगली' के लिए 'बुक' कर लिया।

खामोश दुआएं

इस तरह एक 'फिल्म-स्टॉर' बनने का मेरा ख्वाब पूरा हुआ। दरअसल, फिल्मों के 'ग्लैमर' ने ही मुझे आकर्षित किया था। मम्मी इसके खिलाफ थीं। उन्होंने तुरंत दादा को इसकी खबर ही नहीं दी, बल्कि मुझे रोकने के लिए दबाव भी डाला। शायद, वे मुझे पढ़ा-लिखाकर एक डॉक्टर या वकील बनाना चाहती थीं।

मैंने बिना किसी झिझक के अपना काम शुरू कर दिया। खुदा की रहमत से मैं अपने दिमाग में इस बात के लिए हमेशा साफ रही हूं कि मुझे क्या चाहिए,-जैसे मैं यह जानती थी कि मैं फिल्मस्टार बनना चाहती हूं, वैसे ही यह भी जानती थी कि एक दिन मैं श्रीमती दिलीपकुमार भी बनूंगी। मैं हमेशा एक खामोश दुआ मांगा करती थी कि 'अल्लाह, मुझे बड़ी होने पर श्रीमती यूसूफ खान बनने दे।'

मैं साहब (दिलीपकुमार) की प्रशंसिका थी। खुशकिस्मती से वे हमारे परिवार के दोस्त थे। मैं पत्र-पत्रिकाओं से उनकी तसवीरें काट लिया करती। यहां तक कि अगर उनकी बगल में किसी हीरोइन की तसवीर होती, तो मैं उसको उड़ा देती थी। उन तसवीरों को मैं अपने कमरे की दीवारों पर चिपका लिया करती।

आप कल्पना नहीं कर सकते कि जब शुरू में उन्होंने मेरे साथ फिल्मों में काम करने से इंकार कर दिया, तब मुझे कितनी तकलीफ हुई थी। शायद्, इसलिए कि उन्होने मुझे बड़ा होते देखा था और अब भी बच्ची ही समझते थे। उधर मैंने बिलकुल बच्चों के समान निर्माताओं को प्रलोभन दिये थे कि अगर वे दिलीपकुमार को मेरे साथ काम करने के लिए तैयार कर लें, तो मैं फिल्म में मुफ्त में काम करूंगी। परंतु साहब हमेशा टाल जाते।

विवाह : एक नया जीवन

अगस्त, १९६६ मेरे जन्म-दिन पर उन्होंने मेरे सामने शादी का प्रस्ताव रखा और हमने अक्तूबर में शादी कर ली। यह एक ख्वाब था, जो सचाई बन गया। उनसे शादी करने से पहले के कुछ वर्षों में मैं लगभग दस फिल्मों में काम कर चुकी थी।

शुरू में मेरे पति मेरे फिल्मों में काम करने पर शायद, हामी नहीं थे। परंतु जब उन्होंने मेरी फिल्म 'शार्गिद' देखी, तब बोले, 'मैं महसूस करता हूं कि तुम्हें अपने काम

से बेहद प्यार है और तुम 'टेलेंटेड' भी हो। मैं नहीं जानता कि तुम यह सब छोड़ सकोगी ?'

तब मैंने कहा था, 'यदि आप चाहेंगे तो मैं सब कुछ छोड़ दूंगी।'

पर काम करने के प्रति मेरी लगन देखकर उन्होंने मुझे कुछ और समय तक काम करने की इजाजत दे दी। उन दिनों मैं आर्थिक परेशानियों से गुजर रही थी। अपने भाई के साथ मैंने एक फिल्म 'पलकों की छांव में' शुरू की थी। परंतु कई दिक्कतों की वजह से हम नाकामयाब रहे। इससे हम कर्जदार हो गये थे, और मैं नहीं चाहती थी कि मैं आर्थिक रूप से अपने पति पर भार बनूं।

साहब पर वैसे भी एक बड़े परिवार का बोझ था, जिसमें तीन भाइयों एवं पांच बहनों की सेवा शामिल थी। मैं तहेदिल से चाहती थी, 'काश ! मैं उनके साथ उस परिवार के लिए कुछ कर सकती और उसका एक हिस्सा बन सकती।' शादी के शुरू के दिनों में हम मद्रास में रहे। साहब वहीं बस गये थे। जब हम बंबई लौटे, तब कुछ वर्ष मैंने उनके परिवार के बीच बिताये। उन्हें निराश न करने के भय से ही मैं आत्मकेंद्रित-सी हो गयी और मेरा कमरा ही मेरी दुनिया बन गया।

खुशी का नया दौर

इसके बाद एक खुशी का दौर आया। मुझे काम करने में खुशी होती थी। मेरे लिए यह वक्त एक बड़ी पिकनिक के मानिंद था।

जब मैंने फिल्मों में काम शुरू किया, तब मैं नेपियन-सी रोड पर रहा करती थी। तब मैं 'सुबोध मुखर्जी प्रॉडक्शन' के अनुबंध के तहत काम करती थी।

मुझे सुबह चार बजे उठकर काम पर जाना पड़ता था। यहां तक कि 'फिलिमस्तान' के गेट पर मैनेजर 'चैक' करता था कि कब मेरी गाड़ी प्रवेश करती है। सात बजे तक पूरे 'मेकअप' के साथ तैयार होकर काम में लगते तो दोपहर को दो बजे के बाद ही कुछ खाना-पीना नसीब होता था।

दोपहर के बाद मैं नृत्य सीखती। हालांकि, मैंने 'बैले' सीखा था, पर कथक

या भरतनाट्यम नृत्य में मुझे कुछ नहीं आता था। शाम के छह बजे तक यह अभ्यास चलता। फिर 'स्वीमिंग' सीखने के लिए जाना होता। तब जाकर मैं घर लौट पाती थी। वहां 'मेकअप' और 'हेयर ट्रायल्स' होते थे। मैंने अंगरेजी, फ्रेंच और लेटिन सीखी थी। यहां तक कि मैं अंगरेजी में ही बोलती और सोचती थी। उर्दू और हिंदी में मेरा कोई दखल नहीं था। अतः फुरसत में मैं संवाद याद करने के लिए मेहनत करती थी। कुरान के अध्ययन के लिए मैंने अरबी सीखी थी, अब मैं उर्दू जानती हूं। लेकिन आज भी मुझे हिंदी नहीं आती।

शादी के बाद आठ साल तक मैं फिल्मों में काम करती रही। यह बिलकुल अपनी मरजी का काम था। इसके अलावा साहब ने मुझे प्रोत्साहन भी दिया था। परंतु मैं वास्तव में इस तथ्य को भूल गयी थी कि मैं अपनी सुबह की चाय भी उनके (साहब के) साथ नहीं ले पाती हूं। सुबह से ही जो सरगरमी शुरू होती, तो सारे दिन मुझे उनसे दूर रहना पड़ता। अब मैं महसूस करती हूं कि फिल्मों के बिना तो फिर भी कुछ कर सकती हूं, लेकिन युसुफ खान के बिना कुछ नहीं . . . ।

मां का त्याग

शुरू से ही मैं बेहद शरमीली और कम बोलनेवाली हूं। कम बोलने की आदत की वजह से मैं सहयोगी कलाकारों या अन्य लोगों से बहुत कम घुलमिल पाती थी। इससे लोगों में मुझे लेकर कई गलतफहमियां भी पैदा हुई हैं। हां, शादी के बाद फिर भी मैं कुछ खुल गयी हूं।

कम बोलने की मेरी आदत के पीछे यही 'कांप्लेक्स' था कि मैं देखने में अच्छी नहीं हूं, जबकि मैं एक बेहद खूबसूरत मां की बेटी हूं। मेरी अम्मी मेरे लिए खूबसूरती की मिसाल रही हैं। उनकी तुलना में खुद को मैं कहीं भी नहीं पाती। उनकी बेहतरीन कला उनकी खूबसूरती का एक दूसरा राज भी है।

एक बार के. आसिफ ने मुझसे कहा, कि मैं अम्मी को उनकी फिल्म 'मुमताज महल' के लिए तैयार करूं। उस वक्त उनकी उम्र केवल छत्तीस वर्ष रही होगी। अम्मी ने उनका 'ऑफर' पाकर कहा था, 'आज मेरी बेटी फिल्मों में काम कर रही है, अब यह कैसे मुमकिन हो सकता है कि मैं भी काम करूं।'

मम्मी ने मेरे लिए अपने आप पर परदा डाल लिया और उन्होंने सदा मेरी खुशहाली एवं प्रसिद्धि की तमन्नाएं संजोये रखी हैं। यहां तक कि जब वे किसी पार्टी में जातीं, तब वे अपने आपको एक सफेद साड़ी तक सीमित किये रहतीं। मैं सोचती हूं कि यह सब उनके त्याग के अलावा कुछ नहीं है। बहुत से प्रस्तावों के बावजूद उन्होंने दूसरी शादी नहीं की। वे एक समर्पित एवं संयमित नारी हैं। परंतु उनकी जिंदगी में कभी भी कोई खुशी नहीं ठहर सकी। बदकिस्मती से हमारे

परिवार का इतिहास है कि औरतों को हमेशा अपने मरदों की उपेक्षा को बर्दाश्त करना पड़ा है।

अम्मी के प्रति मेरे प्यार पर साहब ने भी कभी नाराजगी जाहिर नहीं की। वे सदैव उनको इज्जत बख्शते रहे हैं। परंतु लोगों ने अम्मीजान व साहब के तालुक्कात को लेकर बहुत-सी बेबुनियाद अफवाहें भी उड़ायी हैं।

बेहद मजहबी

मैं बेहद मजहबी रही हूं, किंतु आज मुझे लगता है कि हम मजहब की उन्हीं तालीमों पर अमल करते हैं, जिनसे हमें सहूलियत होती है। पुराने जमाने में मुस्लिमों को चार-चार बीवी रखने की छूट इसलिए दी गयी थी कि तब वे जिहाद के लिए जाते और जिहाद में वे बड़ी तादाद में मारे जाते थे, जिससे औरतों की तादाद मरदों से कहीं अधिक रहती थी। ऐसे में उनकी सुरक्षा और इज्जत के लिए बहु-विवाह की परंपरा पड़ी। आगे चलकर यह परंपरा गलत हो गयी।

लेकिन कुरान में अल्लाह ने यह भी साफ-साफ कहा है कि वे अच्छी तरह जानते हैं कि किसी आदमी के लिए भावनात्मक और भौतिक दृष्टि से चार बीवियों के साथ एक-समान व्यवहार करना असंभव ही होगा, और इसलिए उन्होंने मर्दों को केवल एक शादी करने की सलाह दी। यों चार बीवियों को रखनेवाला जमाना वैसे भी गुजर गया है, फिर भी यह रवायत अभी तक जारी है।

चार बीवियां रखनेवाले मुस्लिम मर्द इस्लाम के और कितने नियमों का पालन करते हैं। मसलन, इस्लाम में जुआ खेलना, शराब पीना, ब्याज लेना, किसी को हानि पहुंचाना या अपमानित करना और झूठ बोलना वर्जित है, लेकिन इसका पालन कौन करता है? क्या इस्लाम के माननेवाले ईमानदारी से दिन में पांच बार नमाज पढ़ते हैं, क्या वे निरंतर तीस दिनों तक रोजा रखते हैं, इंसानियत के लिए अपनी जायदाद से जकात देते हैं?

मेरा विश्वास है कि भारतीय मुस्लिम औरतें अपने पति की इस बहु-विवाह की प्रवृत्ति को अधिक समय तक बरदाश्त नहीं करेंगी।

—५६-ए, पाली हिल, बांद्रा, बंबई-५०

संयुक्त राज्य अमरीका में जरा-जरा-सी बात के लिए मनोचिकित्सकों की शरण में जाना एक आम बात है। वे मानसिक उलझनों व बीमारियों का इलाज तो करते ही हैं, तलाक व आत्महत्या पर आमादा लोगों को परामर्श भी देते हैं।

किंतु मजे की बात यह है कि वहां प्रतिवर्ष मानसिक चिकित्सालयों में जितने आत्महत्या करते हैं, उससे दुगनी आत्महत्याएं मानसिक रोगों के डॉक्टर करते हैं।

गोष्ठी

प्रभाकर चौधरी 'नादान', होशियारपुर : 'फौसिल आरकियोप्टेरिक्स' क्या है ?

पृथ्वी के कवच के मेसोजोइक युग से संबंधित स्तरों में वैज्ञानिकों को कबूतरों के आकार के एक असाधारण पक्षी के कंकाल की छापें मिली हैं। इस पक्षी के लक्षण किसी भी आधुनिक पक्षी की अपेक्षा उरगों से अधिक मिलते-जुलते थे। इस प्राणी को आरकियोप्टेरिक्स का नाम दिया गया। आरकियोप्टेरिक्स का शरीर परों से ढका रहता था, अग्रांग डैनों की शक्ल के हुआ करते थे और टांग के कंकाल में एक लंबी नरहर और चार उंगलियां शामिल थीं, जिनमें से तीन का रुख आगे की ओर तथा एक का पीछे की ओर था। ये सभी लक्षण पक्षियों में पाये जाते हैं। दूसरी ओर यह प्राणी उरगों से भी मिलता-जुलता था। उसके डैनों में तीन पूर्ण विकसित उंगलियां हुआ करती थीं, जिनके सिरों पर नाखून होते थे। स्पष्टत: आरकियोप्टेरिक्स पेड़ की टहनियों को पकड़ते समय इनका उपयोग करता था। इसकी पूंछ लंबी होती थी और उस पर अनेकानेक कशेरुक होते थे। खोपड़ी का आकार पक्षियों की खोपड़ी-जैसा ही था, पर जबड़ों में उरगों के-से नन्हे-नन्हे दांत होते थे। इस प्राणी की खोज से वैज्ञानिक इस निष्कर्ष पर पहुंचे, कि पक्षियों का विकास प्राचीन उरगों से हुआ है।

उमानंदन सिंह वर्मा, भागलपुर : सांख्य-दर्शन का मूल सिद्धांत क्या है ?

सांख्य दर्शन 'सत्कार्यवाद' के सिद्धांत पर आधारित है। यह सिद्धांत कार्य और कारण की समेकिकता के सिद्धांत के नाम से भी जाना जाता है। इसके अनुसार किसी भी वस्तु की उत्पत्ति शून्य से नहीं हो सकती। सृष्टि तो केवल उसकी एक नयी अभिव्यक्ति मात्र है। जो पहले से वर्तमान थी। इस ब्रह्मांड के प्रत्येक क्रिया-व्यापार और घटना का कोई न कोई कारण है। प्रत्येक कारण स्वयं अपना कार्य भी उत्पन्न करता है। उदाहरण के लिए दही, दूध से ही बनाया जा सकता है। पानी से नहीं। कुम्हार मिट्टी से ही बरतन बना सकता है, कपड़े से नहीं। कार्य, कारण में उसी तरह निहित रहता है, जैसे तिल के बीजों में तेल निहित रहता है। इस बात को सांख्य प्रवचन सूत्र में इस प्रकार समझाया गया है— न कुछ में से कुछ को उत्पन्न नहीं किया जा सकता। जो (सार रूप में) कभी अस्तित्व में ही नहीं है, उसको अस्तित्व में लाना

असंभव है-जैसे मनुष्य के सिर पर सींग उत्पन्न करना . . . किसी संभव वस्तु को उसमें से ही उत्पादित किया जा सकता है, जिसमें उसे पैदा करने की क्षमता हो।

राधाकांत बैनर्जी, कलकत्ता : घर्षण अधिक होने पर उपग्रह का वेग कम नहीं होता, बल्कि बढ़ जाता है। ऐसा क्यों? क्या सौर-परिवार के ग्रहों के साथ भी——ऐसा होता है?

सौर-परिवार के ग्रहों पर घर्षण का प्रभाव नहीं पड़ता, लेकिन उपग्रहों पर पड़ता है। ग्रहों की पूर्ण ऊर्जा अपरिवर्तित रहती है, जबकि उपग्रह की ऊर्जा हर परिक्रमा के बाद कम हो जाती है। लेकिन इससे उपग्रह की गति धीमी नहीं होती, बल्कि बढ़ जाती है। कारण यह है कि घर्षण से पूर्ण ऊर्जा घटती है और उसका निरपेक्ष मान बढ़ता है, क्योंकि वह ऋणात्मक होता है। अगर घर्षण है तब स्थितिज ऊर्जा घटती है और गतिज ऊर्जा में वृद्धि हो जाती है। इस पर भी कुल ऊर्जा ऋणात्मक रहती है, क्योंकि स्थितिज ऊर्जा गतिज ऊर्जा में वृद्धि की अपेक्षा दुगनी जल्दी घटती है। अतः घर्षण की वजह से उपग्रह के वेग में कमी नहीं आती, बल्कि वृद्धि होती है।

नलिनी श्रीवास्तव, गोरखपुर : सुना है कि आधुनिक भवन-निर्माण में ठोस ईटों की जगह खोखले पिंडों का उपयोग किया जाता है। ये क्या होते हैं, और कैसे बनते हैं?

भवन-निर्माण में चिनाई के लिए हालांकि, अभी भी ज्यादातर ईंटों का ही उपयोग होता है, लेकिन अब इसके लिए पहले से बने हुए सीमेंट-कंक्रीट के ठोस या खोखले पिंडों का उपयोग भी किया जाने लगा है, जो सुविधाजनक और सस्ता भी होता है। पिंडों द्वारा चिनाई करने से निर्माण-कार्य जल्दी होता है, क्योंकि ईंट के मुकाबले पिंड का आकार काफी बड़ा रखा जाता है। बड़े आकार के कारण उनकी चिनाई में मसाला भी ईंटों की चिनाई के मुकाबले एक-तिहाई ही लगता है। ये पिंड ठोस और खोखले दोनों प्रकार के बनाये जा सकते हैं। खोखले पिंडों को भवन का भार कम करने के लिए बीच की अथवा हलकी भारग्राही दीवार में प्रयुक्त किया जाता है। खोखले होने के कारण ये पिंड ईंटों की अपेक्षा अधिक, ताप, अग्नि व नमी के अवरोधी होते हैं। इन्हें बनाने के लिए बंधक, रेत और बजरी का उपयोग किया जाता है। अपने देश में ये एक हस्तचालित मशीन में बनाये जाते हैं। इस मशीन के सांचे में तैयार कंक्रीट भरकर उसके ऊपरी ढक्कन को दबा दिया जाता है। कुछ क्षणों तक कंपन करने, (जिससे कि कंक्रीट सांचे में अच्छी तरह भर जाए) के बाद एक लीवर की मदद से पिंड को ऊपर उठा लेते हैं। यह मशीन आठ घंटे में २०० पिंड बना सकती है।

सुलेमान अंसारी, अलीगढ़ : 'डिथिरेंब' (Dithyramb) क्या होता है?

डिथिरैंब प्राचीन यूनान में प्रचलित एक विशेष प्रकार के गीत को कहते थे। हिंदी में इसका अनुवाद 'रौद्र-स्तोत्र' किया गया है। इसके कुछ अंश तो मिलते हैं, लेकिन आज एक भी पूर्ण 'रौद्र-स्तोत्र' प्राप्त नहीं होता। अपने प्रारंभिक रूप में यह संभवतः डायोनिसस को बलि देते समय गाया जाता था। पचास-पचास व्यक्तियों के समूहों में इस गीत को गाने की प्रतियोगिता हुआ करती थी। अरस्तू के अनुसार इस गीत का संगीत फ्राईजियन शैली का होता था, जो वासना को उद्दीप्त करता था और इसमें विविध छंदों का उपयोग किया जाता था। इन गीतों में अर्थ की गंभीरता नहीं होती थी। टिमोथियस के गीतों में तो अर्थाभाव इतना अधिक है, कि यह लोकोक्ति ही चल पड़ी थी कि 'तुम्हारी बात में रौद्र-स्तोत्र से भी कम सार है।' लेकिन साहित्य में रौद्र-स्तोत्र को महत्त्वपूर्ण माना जाता है, क्योंकि अरस्तू ने त्रासदी को अपने मूल रूप में रौद्र-स्तोत्र से संबद्ध बताया है।

कु. ज्योति रावत, जौनपुर : मेंढ़क और 'भेक' एक ही जीव के नाम हैं या भिन्न जीवों के ? यदि ये दोनों भिन्न जीव हैं तो 'भेक' के बारे में बताएं।

मेंढ़क और भेक दो भिन्न जीव हैं। भेक ऊपर से मेंढ़क की तरह दिखायी देता है, पर उसका वासस्थान और जीवन-स्थितियां कुछ भिन्न होती हैं। भेक शाम के समय बाग-बगीचों में और अकसर पानी से बहुत दूर भी पाये जाते हैं। फिर भी ये सूखी हवा नहीं सह पाते और धूप के दिनों में नम स्थानों में छिप जाते हैं। केवल शाम को ही भेक शिकार के लिए बाहर आते हैं। वे डिम और वयस्क कीड़े-मकोड़े खाकर जीते हैं। भेक बहुत धीरे-धीरे चलते हैं, यहां तक कि कभी-कभी तो वे जमीन पर सिर्फ रेंगते हैं। वे मेंढ़क की तरह लंबी छलांगें नहीं लगा सकते, क्योंकि उनकी पिछली टांगें मेंढ़क की टांगों जितनी सुपरिवर्द्धित नहीं होतीं। मेंढ़क तो छलांग के दौरान भी कीटों को पकड़ सकता है, लेकिन भेक—ऐसा नहीं कर सकते। मस्सों से आवृत त्वचा से रसनेवाला दाहक श्लेष्म धीरे-धीरे चलनेवाले भेक की शत्रुओं से रक्षा करता है। इस श्लेष्म का मनुष्य की त्वचा पर कोई असर नहीं पड़ता, लेकिन वह आंखों में या होंठों पर गिर जाए, तब श्लेष्मिक झिल्लियों में सूजन पैदा हो सकती है। हानिकर कीड़ों-मकोड़ों का नाश करके भेक खेती को काफी लाभ पहुंचाते हैं। कहीं-कहीं उनके बारे में यह मान्यता प्रचलित है, कि वे सांप की तरह जहरीले होते हैं, लेकिन यह धारणा गलत है।

चलते-चलते एक प्रश्न और ...

श्यामकिशोर 'राही', आजमगढ़ : पढ़े-लिखे मूर्ख कौन होते हैं ?

वे मूर्ख, जो पढ़-लिख भी लेते हैं।

—बिंदु भास्कर

ज्योतिष

आपकी परेशानियों का निदान ३

नीचे दिये खाली जन्म-चक्र को भरकर भेजिए। हमारे ज्योतिर्विद आपके एक प्रश्न का उत्तर देंगे। हमारे पास सैकड़ों की संख्या में प्रविष्टियां आ रही हैं। क्रम से हम चुनाव कर जितना संभव हो सकेगा, एक अंक में उत्तर देंगे। प्रविष्टि–२ का उत्तर यदि उस अंक में न मिले तो समझ लीजिए आपकी प्रविष्टि नष्ट कर दी गयी है। आप चाहें तो फिर अगली प्रविष्टि भरकर भेजें। एक प्रविष्टि के लिए आये प्रश्नों को चुनकर उत्तर एक ही अंक में दिये जाएंगे। अगले अंक में प्रतीक्षा न करें।

जन्म-चक्र अवश्य भरना चाहिए तथा 'भूत, भविष्य एवं वर्तमान'-जैसे ढेर से प्रश्न एक साथ न पूछिए।

'कादम्बिनी' के इसी पृष्ठ को फाड़कर आप अपनी प्रविष्टि भेजिए।

.... यहां से काटिए ....

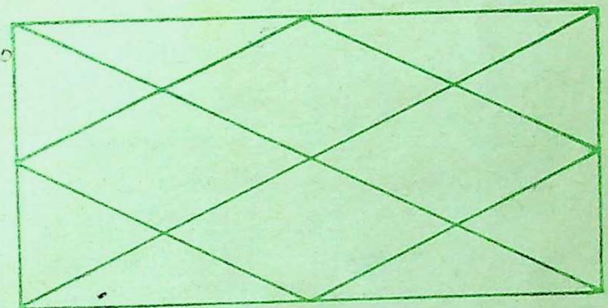

नाम ....

जन्म-तिथि (अंगरेजी तारीख में) .... महीना .... सन् ......

जन्म-स्थान .... जन्म-समय, ...

कुंडली में दी गयी विंशोत्तरी दशा ....

पता ....

आपका एक प्रश्न ....

....

.... यहां से काटिए ....

इस पते को ही काटकर लिफाफे पर चिपकाएं

संपादक (ज्योतिष विभाग –प्रविष्टि–३), 'कादम्बिनी'
हिंदुस्तान टाइम्स भवन, १८–२०, कस्तूरबा गांधी मार्ग, नयी दिल्ली-११०००१

ज्योतिष समस्या और समाधान

①

'कादम्बिनी' के नये स्तंभ––'ज्योतिष : आपकी परेशानियों का निदान'––का पाठकों ने बड़े उत्साह से स्वागत किया है। पहले अंक में ही हमें लगभग पांच हजार पाठकों की प्रविष्टियां प्राप्त हुईं। सभी पाठकों के प्रश्नों का उत्तर देने में अनेक व्यावहारिक कठिनाइयां थीं, अतः हमने कुछ चुने हुए प्रश्न उत्तर के लिए छांटे। इस अंक में पाठकों की समस्याओं का समाधान कर रहे हैं, राजधानी के सुपरिचित ज्योतिषाचार्य आचार्य कृष्णकुमार गुप्ता।

जगमालसिंह डूड्डी, लाबा

प्रश्न : निष्ठापूर्वक संयम से काम करने के उपरांत भी मुझे मानसिक, आर्थिक और शारीरिक परेशानी रहती है।

उत्तर––इस समय शनि व मंगल लग्न में चल रहे हैं, चंद्रमा से चौथे हैं। वह शुभ नहीं हैं। सब कष्ट दिवाली के पश्चात दूर होने लगेंगे।

हनुमानप्रसाद गुप्ता, कलकत्ता

प्रश्न––विभागीय विवाद में फंसा धन कब मिलेगा ?

उत्तर––नवंबर १९८२ के पश्चात मिलने की पूरी आशा है।

शिवकुमार गर्ग, श्रीकरनपुर

प्रश्न––साझेदारी का झगड़ा चल रहा है। उसमें विजय मिलेगी ! कब तक ?

उत्तर––आप अभी संयम और संतोष से काम लें। सितंबर १९८२ के पश्चात विजय निश्चित रूपेण आपकी ही होगी।

घनश्याम भापारा, हैदराबाद

प्रश्न––भाग्यशाली समय कब से कब तक ?

उत्तर––राशि का स्वामी शनि, चंद्र लग्न से भाग्य-स्थान में मंगल के साथ चल रहा है जो कि आठवें स्थान में भी है। अक्तूबर १९८२ से शनि तुला राशि में जाएगा। तभी ढाई वर्ष के लिए बहुत सुंदर समय आएगा।

कृष्णमोहन सिंह, अल्मोड़ा

प्रश्न––अभी तक बेरोजगार हूं, अच्छी-सी नौकरी कब तक लगेगी ?

उत्तर––इस समय बनते-बनते कार्यों में रुकावट पैदा हो रही है। २ अगस्त १९८२ के पश्चात आपका समय कुछ अनुकूल होगा, परंतु बहुत अनुकूल समय ४ फरवरी १९८३ से शुरू होगा। तभी आपको अच्छी नौकरी मिलेगी।

दिनेशचंद्र वाजपेयी, लखनऊ

प्रश्न——मेरा स्वास्थ्य कब ठीक होगा?

उत्तर——लग्न का स्वामी बृहस्पति अष्टम चल रहा है। यह ग्रह नवंबर १९८२ के पश्चात वृश्चिक राशि में चला जाएगा, जो कि स्वास्थ्य के साथ-साथ भाग्य के लिए भी उत्तम होगा।

जगमोहनसिंह, मेरठ

प्रश्न—मेरी नौकरी कब लगेगी ?

उत्तर—आपको शनि की साढ़े साती चल रही है। अच्छा समय शनि के तुला राशि में आने पर आएगा, जो ६ अक्तूबर, १९८२ से आता है।

हरिहर प्रसाद, भीलवाड़ा

प्रश्न—मैंने व्यवसाय शुरू किया है, सफलता मिलेगी या नहीं ?

उत्तर—आपकी जन्मकुंडली में बहुत सुंदर राजयोग धन-स्थान में बनता है। वह निश्चय ही बहुत बड़ी सफलता दिलवाएगा।

कु. निशा त्रिवेदी, ग्वालियर

प्रश्न—अगर मैं प्रेम-विवाह करूं तो क्या वह सफल होगा ?

उत्तर—प्रेम-विवाह आपके लिए सौख्यप्रद नहीं है क्योंकि स्वग्रही मंगल चतुर्थ दृष्टि से शुक्र को देख रहा है।

देवेन्द्रकुमार गुप्त, अलीगढ़

प्रश्न—दो पत्नियां स्वर्गवासी हो चुकी हैं। अब शादी करूं अथवा नहीं ?

उत्तर—आपका सप्तमेश गुरु और विवाहकारक शुक्र शत्रु-स्थान में है, जिन पर मंगल और शनि पूर्ण दृष्टि डाल रहे हैं। यह विवाह के लिए शुभ नहीं है। यदि विवाह अनिवार्य ही हो तो जन्मपत्री मिलवा करके ही करना चाहिए।

शनि की साढ़े साती और उपाय

इस समय सिंह, कन्या और तुला राशियों पर शनि की साढ़े साती चल रही है। मूल रूप से शनि इस समय कन्या राशि में है, लेकिन उसका प्रभाव शेष अन्य दो राशियों पर भी है।

शनि के अनिष्ट प्रभाव से बचने के लिए निम्न उपाय कीजिए: शनिवार को लोहे के छायापात्र में थोड़ा सरसों का तेल लेकर तांबे का पैसा या तांबे का तार डाल दें तथा उसमें अपना चेहरा देखकर उसे दान कर दें।

सत्येन्द्र पुखार, जसवंत नगर (इटावा)

प्रश्न—मैं जो उद्योग स्थापित करना चाह रहा हूं, क्या उसमें सफल रहूंगा ?

उत्तर—अभी समय इतना शुभ नहीं है। अगले वर्ष से ठीक समय शुरू होने लगेगा। आपकी जन्मपत्री में अति उत्तम धन-योग है अतः आप धनवान पुरुष बनेंगे।

नलिनी, जयपुर

प्रश्न—मेरा पुनर्विवाह कब होगा ?

उत्तर—सप्तमेश और विवाह कारक शुक्र मंगल से दृष्ट है। वह शुभ नहीं है, परंतु दिसंबर १९८२ से पुनर्विवाह का योग बनता है। इस समय पत्री मिलवाकर ही विवाह करें।

●

राष्ट्रीय कला मेला-८२

हलचल चित्रकारों की दुनिया की

● राधेश्याम

आज एक ओर जहां हम, नित नये वैज्ञानिक आविष्कारों के माध्यम से अपने आपको समग्रता की भावना से काटते जा रहे हैं और अपने उद्देश्यों को ज्यादा से ज्यादा व्यावहारिक बनाने की चेष्टा में दिन-रात मानसिक चिंताओं की कैद में फंसते जा रहे हैं, वहां 'राष्ट्रीय कला-मेला'-जैसे आयोजन अपना एक विशिष्ट महत्त्व रखते हैं। चाहे हम जितने भी व्यावहारिक या वैज्ञानिक क्यों न हो जाएं, कल्पनाओं का रंगीन संयोजन हमें अपनी ओर आकर्षित करता ही है।

सुदूर गांवों में साप्ताहिक हाट-बाजार लगते हैं, जहां सभी अपने-अपने घर में वस्तुएं बना-बनाकर बेचने या आदान-प्रदान करने आते हैं और साथ ही एक-दूसरे की सुख-दुख की संवेदनाएं भी साथ ले जाते हैं। पिछले दिनों ललित कला अकादमी द्वारा बहावलपुर हाउस के प्रांगण में आयोजित 'राष्ट्रीय कला-मेला-८२' भी इसी तरह का आयोजन था।

इस मेले में ललित कला, मूर्तिकला, व्यावसायिक कला, लोककला, शिल्पकला, के विभिन्न सृजनात्मक नमूने एक साथ देखने को मिले। साथ ही कलाकारों को देश के अनेक भागों में हो रही, नयी-पुरानी

ऊपर: 'उल्लास' : (शिल्प) राजुल धारीवाल भंडारी

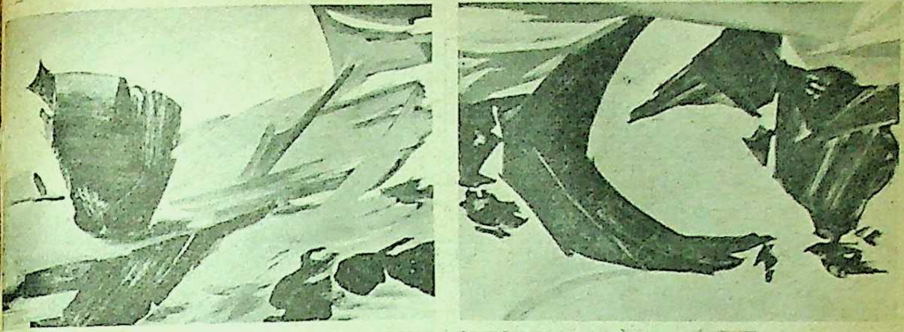

मेले में प्रदर्शित ईश्वरी रावल के दो तैल चित्र

प्रयोगात्मक शैलियों को जानने का अवसर मिला ।

इस त्रिवार्षिक कला-कुंभ के अवसर पर, हर राज्य की ललित-कला अकादमियों —उत्तरप्रदेश राज्य ललितकला, उड़ीसा, मद्रास, कर्नाटक, जे. जे. स्कूल ऑव आर्ट, बंबई, राजस्थान एवं मध्यप्रदेश की अनेक सरकारी एवं गैरसरकारी कला संस्थाओं ने भाग लिया । लगभग ढाई सौ स्टॉल बनाये गये, जिनमें देशभर के विख्यात, नये एवं पुराने कलाकारों की कलाकृतियां प्रदर्शनी के लिए रखी गयीं । पांच सौ से भी अधिक की संख्या में कलाकारों ने उपस्थित होकर, इस मेले को जीवंतता प्रदान की । इस मेले में दो स्वर्गीय महान भारतीय चित्रकारों—राम किंकर और शैलोज मुखर्जी के नाम पर दो प्रवेश-द्वार बनाये गये ।

प्रवेश-द्वार के पास ही कर्नाटक के के. टी. शिव प्रसाद द्वारा बनाये गये, नग्न-पुरुष के तीन आदमकद तैल चित्र, नैतिकता को 'शॉक' देते हुए, तमाम रचनाशैलियों मे ज्यादा चर्चित रहे।

मध्यप्रदेश के ईश्वरी रावल ने 'एब्सट्रैक्ट ग्राफिक्स' शैली की अपनी रचनाओं में भावों को गहरे रंगों के माध्यम मे प्रकृति के अनेक आयामों में एक

मेले में प्रदर्शित एक अन्य शिल्प

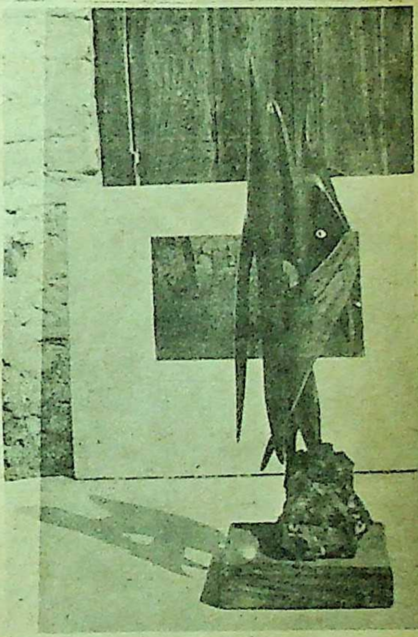

हिंदी गजल

बने रहे!

कूचे, गली, दूकान पर चरचा बने रहे,
वो शहर में, कुछ देर, तमाशा बने रहे
जो टुकड़े पूरे विश्व का कर सकते हैं विनाश
वो टुकड़े उनके जख्मों का फाहा बने रहे
अचरज है काली कोठरी होने के बावजूद
कुछ लोग रौशनी की मंजूषा बने रहे
जीवन तो मोम था कभी का गल गया होता
तुम चिलचिलाती धूप में साया बने रहे
उस रोग से, हैरत है, हुई उसकी भी मृत्यु
जिस रोग के लिए वो बनफशा बने रहे
दपतर की बस में बैठकर खामोश प्रातःकाल
सब अपनी अपनी रात का नक्शा बने रहे
बरबादियों की अपनी जब सुनवाई हुई थी
सारे गवाह परकटी चिड़िया बने रहे
इक पंक्ति भी न पा सके दिल की किताब में
होठों की पत्रिकाओं में कविता बने रहे
तस्वीर रोज जलती रही चूल्हे में नयी
अंगारे किंतु मोम की गुड़िया बने रहे

——सत्यपाल सक्सेना

२, पी. डब्ल्यू. डी. रेस्ट हाउस,
सिविल लाइंस, गुड़गांव-१२२००१

नयी दृष्टि से अंकित करने का सफल प्रयास किया है ।

आज की चित्रकला न तो दृश्यपरक रह गयी है, न आत्मपरक, क्योंकि आज का चित्रकार अपने विषय की एक स्थिर रूप में कल्पना नहीं करता, बल्कि अपने अवचेतन के अंदर धुएं की तरह उठती हुई कल्पना की लहरियों को रंगने की कोशिश करता है ।

इस मेले में ग्रामीण कला की परंपरागत शैलियों के साथ-साथ अत्यंत आधुनिक शैलियों को अनेक प्रभावशाली रचनाएं देखने को मिलीं । खास कर उड़ीसा राज्य कला अकादमी द्वारा प्रस्तुत तमाम चित्रों में पुरी मंदिर के धार्मिक प्रतीकों का प्रभाव स्पष्ट था । यहां तक कि उनकी आधुनिक रचनाओं में भी यह प्रभाव देखा जा सकता था, जब कि उत्तरप्रदेश की प्रस्तुतियों में, बनारसशैली और ग्राफिक्स के मिश्रित रूप, एक नयी चित्र-शैली का आभास मिल रहा था। तमिलनाडु के चित्रकारों की रचनाओं में तंजौर की परंपरागत शैलियों के प्रभाव व राजस्थान के कलाकारों की कृतियों में राजस्थानी लघु चित्र शैली की परंपराएं एवं लोकशैलियों का प्रभाव स्पष्ट था ।

बिहार के कलाकारों का भी एक ग्रुप था, जिनकी रचनाओं की संवेदनाओं में विविधता की कमी का आभास हुआ ।

——जे. जे. कालोनी क्लब रोड,
मुजफ्फरपुर (बिहार)

नयी कृतियां

बीते दिन वे लोग : प्रेरक संस्मरणों का संग्रह

बीते दिन वे लोग : सुप्रसिद्ध उद्योगपति और साहित्यानुरागी श्री लक्ष्मीनिवास बिड़ला के बारह मार्मिक और प्रेरक संस्मरणों का पठनीय संकलन है। इनमें से कुछ संस्मरण राष्ट्रपिता गांधी, महामना मालवीय, लाला लाजपतराय, राजाजी, नेहरूजी, सरदार पटेल, राजेन्द्र बाबू, पं. गोविंदवल्लभ पंत-जैसे देश के दिवंगत कर्णधारों के हैं, कुछ तो ऐसे कर्मठ व्यक्तित्वों के, जिनके संपर्क में श्री लक्ष्मीनिवासजी आये। यथा—सर्वश्री पारसनाथजी, मूलचंद बगड़िया, शुकदेव पांडे, मूंगालाल रूंगटा, भागीरथ कनोडिया, बाबू मूलचंद अग्रवाल, रामकुमार भुवालका और रामेश्वर टांटिया।

इनके अतिरिक्त कुछ ऐसे व्यक्तियों के संस्मरण हैं, जो सामान्य होते हुए भी कहीं न कहीं विलक्षण व्यक्तित्व के थे, जैसे लोभ-लालच से मुक्त 'सीरूताड', स्थितप्रज्ञ स्वामी चरणदासजी, सदा तलवार लिये रहनेवाले और कहानी सुनानेवाले कानसिंहजी।

'देश के वे कर्णधार' शीर्षक संस्मरण में लेखक ने अनेक दिवंगत नेताओं की मधुर यादें पिरोयी हैं। इनसे हमें इन कर्णधारों की आदर्शप्रियता, उदार-वृत्ति एवं हंसमुख स्वभाव का पता चलता है। यथा, लेखक हमें बतलाते हैं कि हिंदू विश्वविद्यालय में बिड़ला-परिवार की ओर से बनवाये जानेवाले होस्टल में महामना मालवीय विलायती बीमें नहीं लगवाना चाहते थे और शायद पहले-पहल उन्हीं ने सीमेंट और लोहे की सरियों की स्वदेशी बीमें बनवायीं। बापू के अनुशासन और नेहरूजी की विनोदप्रियता का भी लेखक ने उल्लेख किया है।

पारसनाथजी न केवल कुशल प्रशासक वरन एक अच्छे शिक्षक भी थे। ऐसे ही कुशल प्रशासक और शिक्षाविद श्री शुकदेव पांडे थे, जिन्होंने श्री घनश्यामदासजी की, पिलानी को विद्या-केंद्र बनाने की, कल्पना को साकार किया। श्री घनश्यामदासजी के अनुरोध पर महामना मालवीय ने श्री पांडे को पिलानी भेजा था। पांडेजी इतने उत्साही थे कि उन्होंने एक वर्ष में ही चार सौ स्कूल खोल डाले।

एक सतर्क एवं जिज्ञासु व्यक्ति न केवल आदर्श समझे जानेवाले महान व्यक्तित्वों वरन उनकी तुलना में सामान्य-से प्रतीत होनेवाले लोगों से भी बहुत कुछ सीख सकता है। दैनिक 'विश्वमित्र' के संचालक-संपादक बाबू मूलचंदजी अग्रवाल के, कलकत्ता महाविद्यालय में दिये गये भाषण के अंश ने लेखक पर स्थायी प्रभाव डाला। भाषण का विषय था—'तरकीब से जंचाकर अपना सामान रखना चाहिए।' इस पर भाषण करते हुए बाबू मूलचंदजी अग्रवाल ने कहा था, 'अंधेरे में भी यह मालूम हो कि कौन-से खाने-खंड में क्या चीज रखी है तो वह निकाली जा सकती है, नहीं तो रोशनी में भी खोजने में समय चला जाता है।'

लेखक की भाषा सहज और प्रवाहपूर्ण है। पुस्तक यद्यपि छोटी है, परंतु उसका अपना महत्त्व है।

प्रकाशक—सस्ता साहित्य मंडल, एन-७७, कनॉट सर्कस, नयी दिल्ली,
मूल्य—पांच रुपये —दुर्गाप्रसाद शुक्ल

उपन्यास

गोपीगंज संवाद : इस वृहद उपन्यास में लेखक प्रणवकुमार बंद्योपाध्याय ने स्वाधीनता के पूर्व के उस भारतीय ग्रामांचल की कहानी कही है जो विदेशी शासकों और उनके 'जी-हुजूरों' के विरुद्ध, हथियार लेकर उठ खड़ा हुआ था। ग्रामीणों का यह विद्रोह यद्यपि आज के मायनों में संगठित नहीं था, लेकिन उसकी ईमानदारी और सच्चाई वर्तमान राजनीतिक मतवादों से प्रेरित आंदोलनों से कहीं अधिक शुद्ध थी। कारण, यही था कि इस सशस्त्र विद्रोह को छेड़ने की कोशिश करनेवाले लोग न तो व्यक्तिगत स्वार्थ से प्रेरित थे और न किसी मतवाद से प्रभावित। उनका एक ही उद्देश्य था—अंगरेजों से मुक्ति। एक प्रकार से यह 'डेविड' और 'गोलाइथ' की ऐतिहासिक लड़ाई थी। एक ओर असंगठित, लेकिन इंकलाब की आग लिये सामान्य जन, तो दूसरी ओर संगठित ब्रिटिश साम्राज्य!

गोपीगंज—एक छोटा-सा कस्बा! जहां अहीर हैं, पासी हैं, लुहार हैं। इनमें एक ओर है—जगन्नाथ चौधरी, अंगरेजों का खैरख्वाह, गोपीगंज का 'तानाशाह'। दूसरी ओर है कुंदन लुहार और चरन अहीर, जो पलटन की इज्जतवाली नौकरी छोड़कर गोपीगंज में स्कूल खोलता है। यहीं हैं, साधु गुसाईं जो गृहस्थ होते हुए भी ब्रह्मचारी हैं तथा सशस्त्र क्रांति के लिए कार्यरत हैं। मुख्य कहानी इन्हीं की है। यों, उपन्यास में ढेर सारे पात्र हैं, जिनकी उनकी अपनी जिंदगी एक-एक उपन्यास का कथानक समोये है, जैसे देवकी—जो चौधरी का 'खिलौना' है, पर स्वयं की तुलना 'गौहरजान' से करने पर तिलमिला उठती है। लेखक ने बड़ी कुशलता से इन पात्रों के माध्यम से एक ऐसा अतीत गढ़ा है, जिसका इतिहास की किताबों में कहीं कोई उल्लेख नहीं। मूल्य

—अठ्ठावन रुपये।

गंगाजल : आज की पारिवारिक और सामाजिक जिंदगी के दुख-दर्दों, टूटती-जुड़ती आस्थाओं को चित्रित करनेवाला भावुकताभरा उपन्यास है। लेखक हैं—केशवप्रसाद मिश्र। नायक चंद्रमोहन की नियुक्ति उत्तरप्रदेश के महालेखाकार के कार्यालय में होती है। चंद्रमोहन एम. ए. और 'ला' की परीक्षाएं पास कर चुका है, सितारवादक है। सरकारी कार्यालय के वातावरण में वह अपने को अजनबी पाता है। एक अन्य कुशल-सितारवादक 'पीरू दा' की सहृदयता के कारण उसे एक मकान मिल जाता है। 'पीरू दा' की बेटी है—दीपा, जो एक मानसिक रोग—'फ्रस्ट्रेशन डिजेक्शन'—का शिकार है। उसके डॉक्टर ने चंद्रमोहन पर एक जिम्मेदारी सौंप दी है, दीपा को प्रसन्न रखने की, जिसे वह अंत तक निभाता है।

उपन्यास दो स्तरों पर चलता है, एक है चंद्रमोहन की निजी जिंदगी, जिसमें दीपा है, बहन है, मां है, पीरू दा हैं। दूसरी ओर है उसकी दफ्तर की जिंदगी, निराश-हताश, तिकड़मी लोगों के जमघट से भरी। लेखक ने दोनों पक्षों का प्रभावपूर्ण चित्रण किया है। मूल्य—अड़तीस रुपये।

दोनों उपन्यासों के प्रकाशक—नेशनल पब्लिशिंग हाउस, २३, दरियागंज, नयी दिल्ली

हम सब मनसाराम : व्यक्तिगत स्वार्थों से प्रेरित राजनीतिक पार्टियों के नेताओं के दोहरे व्यक्तित्व को उजागर करनेवाला यह एक छोटा-सा उपन्यास है। कथा-काल तीसरे आम चुनाव का है। चुनाव के अवसर पर ग्रामों में किस तरह की राजनीति चलती है और किस प्रकार एक गरीब मंसाराम उसकी चपेट में आ जाता है, उपन्यास में इसी की व्यंग्यपूर्ण कहानी है। मंसाराम प्रतीक इस देश की भोली जनता का और गजराजसिंह उस वर्ग के प्रतीक हैं, जो जनता की भलाई के नाम पर अपना ही हित-चिंतन करता है। लेखक ने बड़े ही प्रतीकात्मक ढंग से एक घिनौने सत्य को उजागर किया है। लेखक हैं—मुद्राराक्षस।

प्रकाशक—लिपि प्रकाशन, १, अंसारी रोड, दरियागंज, नयी दिल्ली-२, मूल्य—अठारह रुपये।

खेल भारती : हिंदी में खेल संबंधी अच्छी पत्रिकाओं का अभाव-सा है। यों, कुछ खेल-पत्रिकाएं प्रकाशित होती हैं, लेकिन सीमित साधनों के अभाव में उनका प्रसार-प्रचार सीमित ही है। सहयोगी प्रकाशन 'टाइम्स ऑव इंडिया' समूह द्वारा प्रकाशित नयी पत्रिका **'खेल भारती'** इस अभाव को पूरा करेगी, आशा की जानी चाहिए। इस पत्रिका के क्रीड़ा-संपादक हैं—योगराज थानी। योगराज थानी स्वयं एक अच्छे खिलाड़ी रहे हैं, और अब एक खेल-पत्रकार हैं। देशी एवं विदेशी खेलों पर उनकी कुछ पुस्तकें भी प्रकाशित हुई हैं। उनके कुशल संपादन की छाप पहले अंक में ही दिखायी देती है। ढेर सारे ज्ञानप्रद स्तंभ एवं रंगीन चित्रों ने इस पत्रिका को पठनीय और आकर्षक बना दिया है।

—राज शेखर

यह महीना और आपका भविष्य

प्रो. के. ए. दुबे 'पद्मेश'

ग्रह स्थिति : सूर्य एवं बुध वृष में, शुक्र मेष में, शनि एवं मंगल कन्या में, गुरु तुला में, राहु मिथुन में, केतु धनु में। १५ से सूर्य मिथुन में, १८ से शनि मार्गी, २० से शुक्र वृष में, २८ से गुरु मार्गी।

मेष, (चु, चे, चो, ल, ली, ले, लो, अ)

२ से ८ तथा २० से २६ जून के मध्य का समय मांगलिक कार्य की दिशा में किये जा रहे प्रयास में सफलतादायक होगा। नौकरी, पद, प्रतिष्ठा; व्यापार-वृद्धि की दिशा में किये जा रहे प्रयास सफल होंगे। प्रतिष्ठा, कीर्ति में वृद्धि हो सकती है। मांगलिक या सामाजिक कार्य के कारण यात्रा भी करनी पड़ सकती है। राजनीतिक लाभ उठाने की दिशा में किये गये प्रयास सफल होंगे। पत्नी एवं ससुराल वाले आपकी उन्नति में सहायक होंगे। शत्रु-पक्ष षड्यंत्र में विफल रहेगा। शिक्षा की दिशा में १८ जून के पश्चात सफलतादायक समय होगा। नवीन नौकरी, स्थानांतरण की दिशा में भी सफलता मिल सकती है। यात्रा के प्रयास सफल होंगे।

वृष (ई, उ, ए, ओ, ब, बी, बे, बू, बो)

१८ से २६ जून के मध्य का समय योजनाओं को कार्य रूप में परिणित करने का समय होगा। योजना को कल्पना में ही सीमित न रहने दें। मांगलिक कार्य की दिशा में किये जा रहे प्रयास सफल होंगे। यात्रा भी करनी पड़ सकती है। शिक्षा, प्रतियोगिता या विभागीय परीक्षा की दिशा में किये गये प्रयास सफल होंगे। संतान की उन्नति की दिशा में विवाह, शिक्षा, व्यापार; नौकरी आदि के प्रयास में सफलता मिलेगी। २ से १६ जून के मध्य भावुकता पर नियंत्रण रखें, खासतौर पर महिलाएं। अपयश या मानसिक क्लेश की स्थिति न उत्पन्न होने दें।

मिथुन (क, की, कू, के, को, घ, छ, ह)

८ से १३ एवं १५ से २४ जून के मध्य का समय घटनादायक समय कहा जा सकता है। नौकरी में उन्नति या स्थानांतरण का प्रयास सफल हो सकता है। पद, प्रतिष्ठा, कीर्ति की दिशा में किये जा रहे प्रयास में सफलता मिलेगी। आर्थिक मामले में भी सफलता मिल सकती हैं, लेकिन सावधानी रखें कि आया हुआ धन निकल न जाए या उपयोग गलत न हो जाए। मांगलिक कार्य की दिशा में सफलता मिल सकती है। यात्रा करनी पड़ेगी। षड्यंत्र, चोरी दुर्घटना; विवाद से बचें।

लेखक

कर्क (ही, हू, हे, हो, ड, डी, डू, डे, डो)

२ से १४ जून के मध्य का समय सफलताओं का समय कहा जा सकता है। प्रत्येक क्षण का उपयोग उन्नति एवं लक्ष्य के प्रति करें, न जाने किस क्षण में सफलता मिल जाए। लेखन, साहित्य, व्यापार, राजनीति; कला आदि के क्षेत्र के व्यक्तियों

पर्व एवं त्योहार

१ जून : गंगा दशहरा, २ : निर्जला एकादशी व्रत, ३ : प्रदोष, ६ : पूर्णिमा, वट-सावित्री व्रत एवं कबीर जयंती, १० : गणेश चतुर्थी, १४ : गुरु हरगोविंदसिंह जयंती, १५ : शीतलाष्टमी, १७ : योगिनी एकादशी व्रत, १९ : शनि प्रदोष, २१ : अमावस्या, खंडग्रास सूर्य-ग्रहण (भारत में अदृश्य) २३ : रथयात्रा, २४ : गणेश चतुर्थी, २८ : दुर्गाष्टमी।

राशियां और प्रभाव : वृष, मिथुन राशियां इस माह में सर्वाधिक प्रभावित होगी। सूर्य एवं राहु की युति मिथुन में होगी। वृष बारहवीं राशि होगी। इन राशि के व्यक्तियों को चोरी, दुर्घटना, अग्निभय, व्यवसाय में व्यवधान, स्थानांतरण; पारिवारिक कलह की स्थिति के प्रति सतर्कता आवश्यक है। राहु राजनीति का कारक ग्रह है और उसके साथ सूर्य की युति बनने से केंद्रीय मंत्रिपरिषद के किसी सदस्य के साथ अप्रिय घटना भी घट सकती है। कोई महत्त्वपूर्ण राजनीतिक घटना घट सकती है।

शांति कैसे करें ? जिन व्यक्तियों पर राहु का प्रभाव हो उन्हें तथा वृष, मिथुन राशि के व्यक्तियों को नियमित रूप से चंदन घिसकर सीने, मस्तक एवं दोनों बाहों में लगाना चाहिए।

मंत्र : ॐ सः भ्रौं भ्रीं भ्रां ॐ राहुवे नमः

प्रातः इस मंत्र का नियमित रूप से ४२ दिन तक १०८ बार जाप करें।

को कीर्ति एवं धन-प्राप्ति के साधनों में सफलता मिलेगी। यात्रा भी करनी पड़ सकती है। बेरोजगार व्यक्तियों को रोजगार प्राप्ति की दिशा में सफलता मिल सकती है। संतान के संबंध में सुखद समाचार प्राप्त होगा। आर्थिक प्रगति की योजना में बल दें, सफलता मिलेगी। १५ जून से स्वास्थ्य, नौकरी; व्यापार एवं परिवार में तनाव न आने दें, सावधानी रखें। 'रिस्क' न लें।

सिंह (म, मी, मू, मे, मो, ट, टी, टू, टे)

१ से १३ एवं १८ से २६ जून के मध्य का समय सुखद घटनाओं का समय है। मांगलिक कार्य की दिशा में किये जा रहे प्रयास सफल होंगे। यात्रा भी करनी पड़ सकती है। महिला अधिकारी, राजनेता या मित्र के कारण रुके हुए कार्य हो सकते हैं। लाभ भी मिल सकता है। लाभ किस सीमा तक हो सकते हैं, यह आपकी योग्यता पर निर्भर करता है। यात्रा के लिए उत्तम समय होगा। प्रतिष्ठा, धन, सम्मान; की दिशा में किये जा रहे प्रयास सफल होंगे। प्रियजन-मिलन एवं परिचय-क्षेत्र में वृद्धि होगी। क्रोध एवं भावुकता पर अवश्य ही नियंत्रण रखें, विवाद न उत्पन्न होने दें। पत्नी के प्रति उपेक्षा भाव न रखें।

कन्या (टो, प, पी, पू, ष, ण, ढ़, पे, पो)

२ से १० तथा २० से २६ जून के मध्य का समय किये गये प्रयासों में सफलतादायक होगा। मांगलिक कार्य का प्रयास भी सफल हो सकता है। नवीन नौकरी, व्यापार, पद, प्रतिष्ठा के प्रयासों में बल दें, सफलता मिल सकती है। बेरोजगार व्यक्ति अपनी शक्ति का उपयोग, रोजगार प्राप्त करने में करें, सफलता मिलेगी। यात्रा भी करनी पड़ सकती हैं। क्रोध पर नियंत्रण रखें। ११ से १६ जून के मध्य नौकरी; व्यापार, परिवार के प्रति लापरवाही न बरतें। यात्रा में स्वास्थ्य एवं सामान के प्रति सतर्कता रखें। विवाद एवं झगड़े की स्थिति न उत्पन्न होने दें। भावुकता में कोई निर्णय न लें।

तुला (र, रा, रू, रे, रो, त, ती, तू, ते)

१५ से २७ जून का समय योजनाओं को कार्यरूप में परिणित करने का है। राजनीतिक लाभ भी मिल सकता है। राजनीतिक व्यक्तियों को लाभ उठाने की दिशा में सफलता मिल सकती है। मांगलिक कार्य की दिशा में किये जा रहे प्रयास में सफलता मिलेगी। सौंदर्य, कला, साहित्य, शोध, संगीत आदि की दिशा में किये जा रहे नवीन प्रयोग सफल होंगे। पत्नी की उन्नति की दिशा में भी सफलता मिलेगी। ससुराल से लाभ मिल सकता है। १४ जून तक पारिवारिक एवं व्यावसायिक मामलों में सावधानी रखें। कलह न उत्पन्न होने दें।

वृश्चिक (तो, न, नी, नू, ने, नो, य, यी, यू)

२० से २७ जून के मध्य का समय पद, प्रतिष्ठा; धन-वृद्धि की दिशा में किये जा रहे प्रयास में सफलता देगा। यात्रा भी हो सकती है। मांगलिक कार्य का

प्रयास सफल हो सकता है। दांपत्य-सुख, प्रतिष्ठा, कीर्ति; मानसिक सुख-शांति में वृद्धि हो सकती है। १५ से १६ के मध्य अधिकारी, पिता या स्वजन से विवाद की स्थिति न उत्पन्न होने दें। नौकरी एवं व्यापार के प्रति भी सतर्क रहें।

धनु (ये, यो, भ, भी, भू, ध, फ, ढ़, भे)

१५ से २६ के मध्य आर्थिक योजना को साकार रूप देने से सफलता मिलेगी। बेरोजगार व्यक्ति रोजगार-प्राप्ति की दिशा में अपनी शक्ति का उपयोग करें, सफलता मिलेगी। मांगलिक कार्य की दिशा में किये जा रहे प्रयास सफल होंगे। यात्रा भी करनी पड़ सकती है। संतान की उन्नति की दिशा में, शिक्षा, नौकरी; विवाह आदि के संबंध में चल रहे प्रयास में सफलता मिलेगी। १ से १४ जून के मध्य संतान के कारण मानसिक क्लेश न उत्पन्न होने दें।

मकर (भो, ज, जी, जू, जे, जो, ख, खी, ग, गी)

२ से १४ जून के मध्य पद, प्रतिष्ठा; धन-वृद्धि के प्रयास में सफलता मिलेगी। अप्रत्याशित सफलता मिल सकती हैं। रुका हुआ धन, पद भी मिल सकता है। स्थानांतरण का प्रयास सफल होगा। जिसकी एक लंबे समय से प्रतीक्षा थी, वह उपलब्धि भी संभावित है। सुख के साधनों में वृद्धि होगी। 'अहं' को न बढ़ने दें, वह आपकी उन्नति में बाधक हो सकता है। षड्यंत्र न करें और स्वयं भी षड्यंत्र की स्थिति से बचें। १५ से सूर्य, राहु के साथ छठे भाव में होगा, जो कि उत्तम फलदायक नहीं है।

कुंभ (गू, गे, गो, स, सी, सु, से, सो, द, दा)

१ से १४ तथा २० से २६ जून के मध्य सफलताएं प्रतीक्षा कर रही हैं। योजना को कार्य रूप में परिणित करें। प्रेम, पद, प्रतिष्ठा, धन, कीर्ति आदि की दिशा में सफलता मिलेगी। मित्र, भाई के सहयोग से रुका हुआ कार्य संपन्न होगा। सहायक मिलते रहेंगे। यात्रा भी करनी पड़ सकती है। राजनीतिक लाभ भी उठा सकते हैं। कीर्ति एवं धन की ओर विशेष प्रयास करें, सफलता मिलेगी। मांगलिक कार्य के कारण यात्रा भी संभव है। शनि, मार्गी होने के कारण १८ जून से लेखन, साहित्य, नौकरी; व्यापार आदि के क्षेत्र में सफलता देगा।

मीन (दी, दू, थ, झ, दे, दो, च, ची)

२ से १० एवं २० से २६ के मध्य का समय प्रगति का समय है। पद, प्रतिष्ठा, धन की दिशा में किये जा रहे प्रयास सफल रहेंगे। पारिवारिक स्थिति या मित्र के कारण यात्रा करनी पड़ सकती है। आर्थिक मामले में किये जा रहे प्रयास सफल होंगे। राजनीतिक लाभ उठाने के प्रयास में सफलता मिल सकती है। शोध-कार्य, लेखन, प्रतियोगी; विभागीय परीक्षा आदि की दिशा में किये जा रहे प्रयास सफल होंगे। यात्रा करते समय आर्थिक हानि एवं स्वास्थ्य के प्रति सतर्क रहें।

'ज्योतिष योग', १८ पद्मेश लेन,
रतनलाल नगर; कानपुर–२२

प्रवेश

इस अंक में प्रस्तुत कर रहे हैं--कुमारी अर्चना शर्मा को। इनकी कविताएं जीवन के नितांत व्यक्तिगत अनछुए प्रसंगों को बड़ी खूबसूरती से अभिव्यक्त करने में सक्षम हैं। यहां प्रस्तुत है इनकी कुछ चुनी हुई कविताएं।

--संपादक

याद किया वह बचपन

नन्हे से हाथों को छूकर
याद किया अपना बचपन
याद आ गया वह पल
खेला करते थे जब हरदम
उभरते गीतों के वे बोल
समय ने बांधे हैं रस घोल
अभी जो देख रही हूं सब
मिट जाएगा क्षण में
देखती रह जाऊंगी मैं
नन्हे हाथों का बढ़ना
मेंहदी का लगना
डोली का सजना
अमिट-सी छाप छोड़कर
अतीत के गर्त में खो जाएगा
वर्तमान का सुहावना सपना

प्रश्न

तुम्हें देखकर कुछ सोचती हूं
सोचती हूं कभी तुम्हें खोकर
अपने ही अंधेरे में गुम होकर
कब तक जी सकूंगी
तुम बताओ कुछ खोकर
पाने की इच्छा रखकर
क्या सचमुच जी सकूंगी
एक बार तुम्हें पाने की चाह
तुम्हें खोने का भय देकर
चली गयी है मुझको
इस उधेड़बुन में छोड़कर
तुम भी मेरी तरह सोचकर
विचारों का जाल बुनकर
बताओ मुझे आज यह
जिऊंगी मैं क्यों कर ?

गीतों का गुंजन

गीतों का गुंजन
पायल की रुनझुन
कोयल की कूक
हरियाली दूब
जीवन का सपना
रसिक है अपना
प्रातः और अंधेरा
साथी है अपना
सपने में सपना
जीवन है अपना
जीना और मरना
पलभर की रचना।

० अर्चना शर्मा

मन की बात

कभी-कभी भय लगता है
कोई अपना अजनबी लगता है
तुम भी तो कभी अपने थे
और अब पूरे अजनबी हो
तुम्हें सब कुछ बता दूं
मैं भी यह अजनबीपन
अपने अंदर महसूस करती हूं
तुमसे दूर, बहुत दूर होती हूं
जब तुम्हारे पास-पास होती हूं
तब भी इसी चिंता में डूबती
कि क्यों तुम अजनबी से
मन की बात कहती हूं

तुम्हारे लिए

क्या नाम दूं तुम्हें मैं
मैं स्वयं बेनाम हूं
जीवन के इस पथ पर
विषमता के सम्मुख नतमस्तक
तुमसे जुड़ना चाहती हूं
उन सबसे कटकर
जानती हूं भूलकर रही हूं
मगर यह भी जानती हूं
तुम्हारी 'तुम' बनकर
पा लूंगी वह सब मैं
जन्मों की कठपुतली बनकर
जो पाना चाह रही हूं मैं

आत्म-कथ्य

जन्म--१८ जून, १९६१। अंगरेजी साहित्य में एम. ए.

'मेरी रचनाएं उन क्षणों की अनुभूति हैं, जब हृदय जीवन के समस्त सुखों से उद्वेलित हो, अदृष्ट की खोज करना चाहता है। मेरा यह भावात्मक स्रोत ही मेरी अंतः प्रेरणा है। मैंने सहज ही अपने स्वाभाविक भावों को गूंथने का प्रयत्न किया है।'

--एफ १३/२ मॉडल टाउन, दिल्ली-९

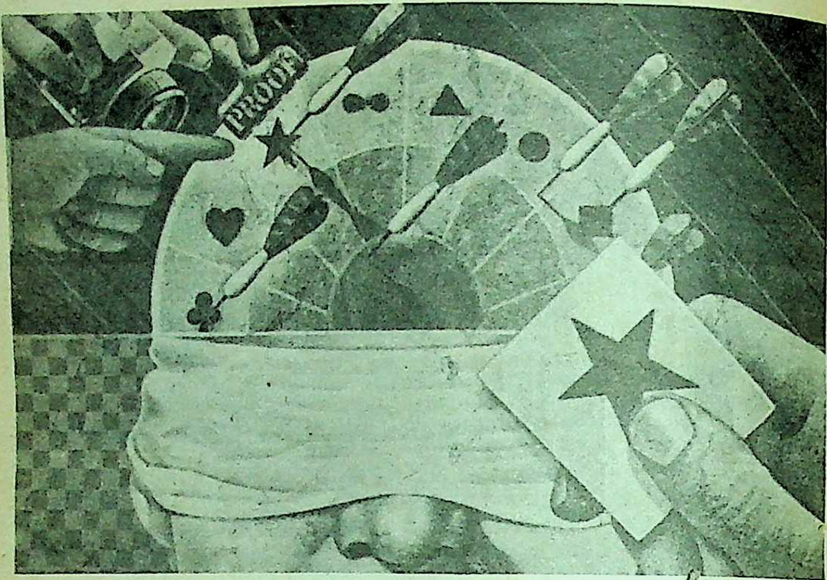

आपमें भी भविष्य जानने की क्षमता है

मुझे कैनेडी की हत्या का पूर्वाभास हो गया था!

● हेरल्ड शर्मन

कभी न कभी आपको यह अनुभव अवश्य हुआ होगा कि आपको लगा हो कि ऐसा कुछ होनेवाला है और वह वाकई हो गया हो! अथवा किसी घटना का आपको स्वप्न अथवा पूर्वाभास हुआ हो और वह घटना घट गयी हो! शायद आपको कभी ऐसी भी अनुभूति हुई हो कि आप अपनी देह छोड़कर किसी दूरस्थ स्थान की मानसिक यात्रा कर रहे हैं और वहां से लौटने के बाद आपके मन में उस यात्रा की स्पष्ट अथवा धुंधली स्मृति रह गयी हो!

और शायद कभी यह भी हुआ हो कि आपको बरसों से भूले-बिसरे किसी पुराने मित्र अथवा परिचित की अचानक याद आयी हो और अचानक आपके मन में खयाल आया हो कि खत, टेलिफोन या साक्षात भेंट-जैसे किसी माध्यम से आपकी

कभी-कभी हमें भविष्य में होनेवाली घटनाओं का पूर्वाभास हो जाता है। हम इसे संयोगमात्र कहकर टाल जाते हैं। पर यह एक संयोग-मात्र नहीं होता। इसके पीछे हमारी अंत:प्रेरणा का अतींद्रिय-ज्ञान कार्य करता है। अतींद्रिय-ज्ञान अर्थात 'एक्स्ट्रा सेंसरी परसेप्शन—ई. एस. पी.। ई. एस. पी. रिसर्च एसोशियेशन फाउंडेशन के अध्यक्ष एवं कार्यकारी निदेशक हैराल्ड शरमन ने इस विषय क्षेत्र में काफी कार्य किया है। इस विषय में लिखी गयी उनकी पुस्तकें काफी चर्चित भी रही हैं। सार-संक्षेप के अंतर्गत पढ़िए, उनकी ऐसी ही एक कृति 'हाऊ टू मेक ई. ए. स. पी. वर्क फॉर यू' का सार।

प्रस्तोता—आलोक कांत

मुलाकात उससे हो जाए और ऐसा हो भी गया हो!

दूसरे शब्दों में कहूं तो, आपने अपने अतींद्रिय ज्ञान (एक्स्ट्रा सेंसरी परसैप्शन—ई. एस. पी.) का उपयोग किया होगा! कभी न कभी अवश्य किया होगा! ऐसा तब होता है, जब आपके भीतर अंतः-प्रेरणा जागृत हो या आपको लगे कि आप का मन किसी अदृश्य शक्ति से संचालित हो रहा है!

ई. एस. पी. का मेरा पहला अनुभव काफी नाटकीय रहा!

सन १९१५ की बात है! मैं मिशिगन के ट्रेवर्स शहर में अपने पैतृक निवास में बैठा टाइप कर रहा था कि शाम का धुंधलका गहराने लगा। मैं बत्ती जलाने के लिए उठा कि अचानक मेरे भीतर से आवाज आयी—'बत्ती मत जलाओ!' मैं रुक गया। दस मिनट बाद जब अंधेरा ज्यादा गाढ़ा होने लगा, तो मैं पुनः बत्ती जलाने के लिए उठा। फिर वही आवाज मेरे भीतर लगातार आती रही।

ठीक उसी समय किसी ने मेरे घर का दरवाजा थपथपाया। और घंटी बजायी। बिना बत्ती जलाये, मैं नीचे गया। बत्ती ठीक करनेवाला आदमी (लाइनमैन) मेरे सामने खड़ा था। उसने कहा, "बत्ती मत जलाइएगा। बाहर सड़क पर 'हाई वोल्टेज' का तार टूटा पड़ा है!"

मेरे युवा मन में आया कि हम लोगों में कोई बेतार का मानसिक संबंध है, जिसकी वजह से लाइनमैन के मन की बात मेरे मन तक पहुंच सकी। उसकी शारीरिक उपस्थिति से पहले ही उसके विचार मुझ तक पहुंच गये। इसे मात्र संयोग कहकर नहीं टाला जा सकता था। इससे मैं इस निष्कर्ष पर पहुंचा कि विचारों का संप्रेषण संभव है और इस प्रक्रिया को दुहराया जा सकता है। यह बात मेरे लिए एक जीवंत प्रश्न बन गयी और मैं इसकी खोज में लग गया। इस अभिज्ञान से संबंधित अनेक पुस्तकें मैंने पढ़ीं।

यात्रा विचारों की

जिस तरह अंतरिक्ष में रेडियो, टेलीविजन आदि की तरंगें तैरती रहती हैं, भले ही हमें वे सुनायी नहीं देतीं—उसी तरह इस

प्रकार की मानसिक तरंगें भी अंतरिक्ष में तैरती रहती हैं। यह स्पष्ट है कि ईश्वर की धारणा पराभौतिक चीजों में हमारे विश्वास का प्रतिफल है। प्रकृति की जिस चीज को मनुष्य रूपायित या व्याख्यायित नहीं कर पाया, उसे उसने ईश्वर-जैसी रहस्यमय शक्ति की संज्ञा दे डाली। लेकिन वैज्ञानिक खोजों के आधार पर इन पराभौतिक चीजों को व्याख्यायित करने की सफल कोशिश हो रही है। ई. एस. पी. इसी प्रयास का महत्त्वपूर्ण अंग है।

विचार हजारों मील की यात्रा करते हैं। विचारों से ही मनुष्य का निर्माण होता है। अंतर्मन की माया भी विस्तृत है। समान चीजें एक-दूसरे को आकर्षित करती हैं, यथा—प्रेम-प्रेम को और घृणा-घृणा को! दृष्टि, श्रवण, स्पर्श, घ्राण तथा ग्रहण नामक पांच इंद्रियों के अलावा भी एक महत्वपूर्ण इंद्रिय है जो पराभौतिक स्तर पर काम करती है। अब तक रहस्यमय बनी इस इंद्रिय का अध्ययन ई. एस. पी. के अंतर्गत आता है। एक शताब्दी से इस विधा में अनुसंधान चल रहे हैं।

संप्रेषण संदेश का

ई. एस. पी. का मेरा पहला परीक्षण काफी विस्मयकारी रहा। यह परीक्षण मैंने अपने हमउम्र लड़कों के साथ करना ही उचित समझा। मेरा हाईस्कूल का सहपाठी होमर मेरे लिए सहायक रहा। हडसन नामक लेखक ने एक जगह लिखा था कि सोये हुए व्यक्ति के अंदर आप अपने विचार सरलता से संप्रेषित कर सकते हैं। उस समय उसका चेतन मन विश्राम कर रहा होता है। होमर ने मुझसे कहा, "तुम यह परीक्षण मुझ पर करके देखो न! जब मैं सोया होऊं, तब तुम मेरे भीतर कोई विचार संप्रेषित करके मुझे जगाकर देखो! मुझे बहुत गहरी नींद आती है और मैं बीच में कभी नहीं जागता!"

दो-तीन दिन बाद उसकी जानकारी के बिना ही मैंने परीक्षण किया। रात को दस बजे मैंने हाईस्कूल की पत्रिका में से होमर का फोटो निकाला और अपने मन में होमर का साक्षात्कार किया। अब वह अशरीरी रूप से मेरे सम्मुख उपस्थित था।

मैंने होमर की आकृति से कहा, "होमर! मैं हैरल्ड बोल रहा हूं! तुम ठीक दो बजे उठोगे और जब घंटाघर से दो बजे का गजर बजे, तब मुझे याद करना।"

इन शब्दों को मैं बार-बार और जोर-जोर से दोहराता रहा। मुझे महसूस हुआ कि मैं भावनात्मक रूप से थक रहा हूं और कोई खास ऊर्जा मेरे भीतर से बाहर निकल रही है। कुछ देर बाद मुझे मानसिक तृप्ति-सी मिली और मैंने संदेश भेजना बंद कर दिया।

होमर ने अगली सुबह सात बजे मुझे जगाया। उसने बताया कि वह ठीक दो बजे उठा और घंटाघर से दो का गजर

बजते समय उसे मेरा खयाल आया था। होमर और मैं दोनों इस बात से सुखद आश्चर्य में पड़ गये।

मैं भी नहीं समझ पाया कि यह सब कैसे हो गया। लेकिन इतना मुझे निश्चय हो गया कि अंतः प्रेरणा और अंतर्मन के भी बेतार संबंध हैं जरूर! और वातावरण में सामान्य ईथर के साथ-साथ मानसिक ईथर भी अवश्य तैरती रहती है। अवचेतन स्तर पर मानसिक संबंधों-संपर्कों का कोई ताना-बाना अवश्य है।

मानसिक स्तर पर होने वाले इस क्रिया-कलाप की संभावनाओं से मैं उद्वेलित था और इसके अध्ययन के नये क्षितिजों को लेकर मैं आतंकित भी था।

लेकिन आज मानसिक-प्रणाली के कार्य-कलापों को व्याख्यायित करने में मैं स्वयं को समर्थ पाता हूं। इस पारभौतिक इंद्रिय-चेतना को मैं विद्युत-चुंबकीय शक्ति के रूप में पाता हूं।

हमारा मन कई स्तरों पर काम करता है। ये स्तर एक-दूसरे से पृथक न होते हुए भी अलग-अलग काम करते हैं। ये सात स्तर इस प्रकार हैं—

(१) **चेतन स्तर, जिसमें चेतन मन काम करता है।**

(२) **अवचेतन शरीर-नियंत्रण स्तर, जिसमें प्रज्ञा होती है।**

(३) **स्मृति स्तर, जो अवचेतन में होता है और संचय भंडार-जैसा होता है।**

(४) **सृजनात्मक शक्ति का स्तर, जिसे विद्युत चुंबकीय क्षेत्र भी कह सकते हैं।**

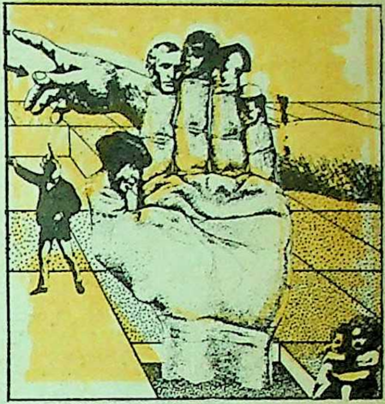

(५) **भरण-शक्ति का स्तर, जिसे जीवन-शक्ति भी कहा जा सकता है।**

(६) **अंतः प्रेरणा स्तर, जिसमें ई. एस. पी. इंद्रिय काम करती है।**

(७) **अंतरिक्ष चैतन्य का स्तर, जो सर्वोपरि स्तर है। इसके द्वारा व्यक्ति का पराभौतिक चीजों से संबंध जुड़ा रहता है।**

आप मानसिक बिंबों के माध्यम से सोचते हैं, शब्दों के माध्यम से नहीं। आपके साथ घटी कोई भी घटना मानसिक बिंब का रूप ले लेती है और स्मृति की धरोहर बन जाती है।

ई. एस. पी. के माध्यम से आप दूसरों के मन के मानसिक बिंबों को ग्रहण कर सकते हैं अथवा अपने मन की बात को दूसरे के मन तक संप्रेषित कर सकते हैं।

टेलीपेथी का चमत्कार

आप जानते ही होंगे कि टेलीपेथी वह

शक्ति है, जिसके अंतर्गत एक व्यक्ति के मन की बात दूसरे व्यक्ति के मन तक बिना किसी भौतिक माध्यम के पहुंच जाती है। यह संभवतः मन की विद्युत-शक्ति द्वारा संचालित होती है। विज्ञान ने सिद्ध कर दिया है कि मस्तिष्क की विद्युत-तरंगों को नापा जा सकता है। यह देखा गया है कि मानसिक अथवा भावनात्मक व्यवधान से मस्तिष्क में विद्युत-बवंडर उत्पन्न होते हैं और फलतः व्यक्ति के चैतन्य में आवेग होने लगता है। भावनाओं की प्रबलता से ऊर्जा उत्पन्न होती है और विचार तीव्र गति से काम करने लगते हैं।

साधारणतः चैतन्य का एक या एक से अधिक स्तर व्यक्ति की जानकारी के बिना ही कार्य कर रहे होते हैं। आप केवल यह जानते हैं कि आपको मन से दिशा-निर्देश मिला है, लेकिन आप यह नहीं बता सकते कि आपकी इच्छा या आवश्यकता के लिए आपके चेतन मन ने कितने स्तरों पर काम किया है। सामान्यतः, आपका अवचेतन शरीर नियंत्रण स्तर आपके शरीर के हर अंग के कार्य को उस समय नियंत्रित कर रहा होता है जब आपकी भावनाएं विश्राम कर रही होती हैं।

विचार एक मस्तिष्क से दूसरे मस्तिष्क तक एक अज्ञात 'ईथर' के माध्यम से संप्रेषित किये जा सकते हैं। ई. एस. पी. अनुसंधानों से बहुत कुछ खोज हो सकेगी।

टेलीपेथी की मानसिक तकनीक की जानकारी प्राप्त करने के लिए पूर्ण विश्राम की आवश्यकता होती है। यह विश्राम शारीरिक और मानसिक दोनों स्तरों पर आवश्यक है। शरीर को पूर्णतः मुक्त कर देने के बाद मस्तिष्क को एकाग्र करना होता है। चेतन-मन को शरीर के प्रत्येक अंग पर केंद्रित करने के बाद उसे अंतःप्रेरणा की ओर केंद्रित किया जाता है। इस स्थिति में मन के सातों स्तर सक्रिय हो जाते हैं। व्यक्ति की समूची अस्मिता चेतन-मन पर केंद्रित हो जाती है और एक खाली पर्दा आंखों के आगे आ जाता है। कुछ देर बाद इस परदे पर मानसिक बिंब बनने लगते हैं। अवचेतन-मन से स्मृतियों की शृंखला निकलने लगती है और उसके मानसिक बिंबों से साक्षात्कार होने लगता है। यही वह स्थिति होती है जिसमें आप एकाग्र हो जाते हैं और आपका जीव-चैतन्य, विश्व-चैतन्य से तादात्म्य स्थापित कर लेता है और स्मृति-बिंबों से आपका साक्षात्कार होता है।

एक बार यह स्थिति हो जाने पर एक मन से दूसरे मन तक विचारों को संप्रेषित करना संभव हो जाता है। अभ्यास करते रहने से यह प्रक्रिया बहुत सरल हो जाती है और टेलीपेथी की कार्य-प्रणाली समझ में आने लगती है।

एक मन से दूसरे मन तक विचार-संप्रेषण के काम में अनुभूति की तीव्रता का महत्त्वपूर्ण योगदान होता है। किसी घटना की भावनात्मक प्रतिक्रिया की

तीव्रता के अनुपात में ही विचार-तरंग या संवेग उत्पन्न होता है। अनुभूति अपने आप में एक बहुत बड़ा रहस्य है। अनुभूति का चैतन्य से गहरा संबंध है और चैतन्य स्वयं एक रहस्य है। मुझे पूरा विश्वास है कि अनुभूति मन का गुण है, शरीर का नहीं। हालांकि शरीर की कोशिकाओं में अनुभूति होती है, मगर इसका आभास मन द्वारा ही होता है। बिना अनुभूति के आप चेतन नहीं हो सकते। अतः यह स्पष्ट है कि चैतन्य और अनुभूति में गहरा संबंध है। अनुभूति और चैतन्य ही ऐसे तत्व हैं जो टेलीपेथी के नियामक होते हैं।

खोये हुए व्यक्ति की खोज

इस संदर्भ में मुझे एक प्रसंग याद आ रहा है।

एक दिन अचानक टैक्सास शहर से एक पारसल मेरे पास आया। पारसल भेजने वाले ने एक पत्र भी लिखा कि कृपया मेरे तरुण पुत्र को खोजने में मदद कीजिए। मैं उसे ढूंढ़-ढूंढ़कर परेशान हो गया हूं। पुलिस भी थक चुकी है। पार्सल में लापता युवक के पहने हुए मोजे थे। मैंने एकांत में मोजे सामने रखकर सोचना शुरू किया। मेरे मन ने कहा कि एक लड़की के साथ हुए प्रेम-प्रसंग के टूट जाने से उसके मन को आघात लगा है और सहपाठियों के तानों तथा घरवालों के उदासीन रवैये से क्षुब्ध होकर वह चला गया है। किंतु यह पता नहीं चल सका कि इस समय वह कहां है। कुछ और जानकारी भी नहीं मिल सकी।

यह बात मैंने लापता किशोर के पिता को लिख दी। उस समय मेरे आश्चर्य का ठिकाना न रहा, जब वह सज्जन सपरिवार मेरे घर आ पहुंचे और अपने बेटे की कमीज तथा उसका एक फोटो दिखाते हुए बोले कि आपकी सारी बातें सही निकलीं। यदि आपको इन चीजों से मदद मिल सके तो लड़के के बारे में कुछ और सूचना दीजिए।

मैंने कमीज सूंघी और फोटो पर ध्यान केंद्रित करके सोचना शुरू किया। कुछ देर बाद मेरे मानस में लड़के के बिंब उभरने लगे। कभी वह होटल में प्लेट साफ करता दिखा, कभी घूमता हुआ। शहर का नक्शा भी मेरे सामने स्पष्ट था और होटल भी। मैंने लड़के के पिता को इन बातों से अवगत करा दिया।

वह सज्जन उस शहर के उसी होटल में पहुंचे। होटल के बेयरों ने लड़के का फोटो पहचान लिया। किंतु दुर्भाग्य कि वह एक दिन पहले ही होटल छोड़कर जा चुका था। यह बात उन सज्जन ने मुझे बतायी। कमीज का अध्ययन करके मैंने उन्हें पत्र लिखा कि आप उसे खोजने का प्रयत्न न करें। चार-पांच महीने बाद वह स्वयं घर लौटेगा और सूचना देगा कि वह नौसेना में भरती हो गया है।

कई महीने बीत गये। मैं इस प्रसंग को लगभग भूल ही चुका था। अचानक एक दिन लड़के के पिता का पत्र आया कि

उनका बेटा निश्चित समय पर घर लौट आया है और नौसेना में भरती होने की भी सूचना दी है।

इस प्रसंग से मैं इस निष्कर्ष पर पहुंचा कि अनुभूति की तरंगें पहने हुए कपड़ों में भी प्रवाहित हो जाती हैं और केवल कपड़ों में ही नहीं, अपितु परिवेश, स्थान और वातावरण में भी प्रवाहित हो जाती हैं और वहीं स्थायी भी रह जाती हैं। पूर्व घटित घटनाएं नाटकीय ढंग से पुनः प्रस्तुत हो जाती हैं।

हत्या की पुनरावृत्तियां

ऐसा ही एक अद्भुत प्रसंग मुझे अमरीका की प्रख्यात महिला संगीतकार कुमारी लीब्स ने सुनाया। एटलांटिक शहर में एक रात उसके साथ बहुत भयावह घटना घटी।

लीब्स अटलांटिक शहर में कार्यक्रम प्रस्तुत करने गयी थी। होटल में कोई कमरा खाली नहीं मिला। अंततः होटल के मैनेज़र ने एक ऐसा कमरा उसे दिया, जो बहुत कम इस्तेमाल होता था। इसमें एक छज्जा था, जिसमें से बाग दिखायी देता था।

कार्यक्रम प्रस्तुत करके काफी रात गये लीब्स थकी हुई कमरे में लौटी और तुरंत सो गयी। कुछ ही देर सो पायी होगी कि अचानक उसकी आंख खुलीं। उसे अनुभूति हुई कि कमरे में उसके अलावा कोई और भी है। वह उठ बैठी और चारों तरफ देखने लगी।

उसने देखा कि एक आदमी घरेलू पोशाक में ड्रेसिंग टेबल के सामने खड़ा हुआ टाई उतार रहा है। तभी उसे चांदनी में छज्जे में एक पुरुष आकृति चलती दिखायी पड़ी। कुछ ही क्षणों में दरवाजा बिना आवाज किये खुला और वह आकृति चुपके से टाई उतारते व्यक्ति के पीछे जा खड़ी हुई। इससे पहले कि वह व्यक्ति मुड़कर उसे देखता और संभल पाता, उस आकृति ने उसे चाकू से गोद डाला। उस व्यक्ति ने थोड़ा प्रतिरोध भी किया, किंतु अंततः मारा गया और वह मनुष्याकृति दबे पांव बाहर जाकर विलीन हो गयी।

अब लीब्स ने चिल्लाना शुरू किया। चीख सुनकर होटल के लोग दौड़े आये। रात की ड्यूटी वाला होटल-क्लर्क भी आ गया। लीब्स से किस्सा सुनकर वह लगभग हतप्रभ स्वर में एक बार बोला "नहीं, नहीं, ऐसा कैसे हो सकता है! एक बार फिर वही घटना सुनने को मिल रही है!" फिर शांत स्वर में उसने लीब्स से कहा—"महोदया! हमें क्षमा कीजिएगा। हमें यह कमरा आपको नहीं देना चाहिए था। वास्तविक हत्या के बाद से आप तीसरी साक्षी हैं जिन्होंने यह हत्या-प्रकरण देखा है। यह वास्तविक हत्या नहीं थी! वह एक साल पहले हुई थी! जैसा आपने देखा है, ठीक उसी तरह अब से एक साल पहले एक व्यक्ति की हत्या इसी कमरे में हुई थी। उसके बाद जिस भी मेहमान को यह कमरा दिया गया, उसी के

साथ यह वारदात हुई। अब हम यह कमरा किसी को नहीं देंगे!"

घूमती हैं ऊर्जा घटनाएं बन

कई वर्षों तक लीब्स के मन में इस प्रसंग को लेकर भय बना रहा।

इस तरह की कुछ और घटनाएं सुन-देखकर मैं इस निष्कर्ष पर पहुंचा कि भावनापरक घटनाएं भी ऊर्जा के रूप में वातावरण में घूमती रहती हैं और गाहे-बगाहे पुनर्प्रस्तुत हो जाती हैं। वातावरण विशेष में, जहां घटना घटती है, एक ऊर्जा-क्षेत्र बन जाता है और जब कोई संवेदनशील व्यक्ति उस क्षेत्र में प्रवेश करता है, तब ऊर्जा-क्षेत्र उसके मन-मस्तिष्क को प्रभावित करने लगता है।

लीब्स के साथ घटी घटना से भी गहरी अनुभूति का पक्ष जुड़ा था। अत: कहा जा सकता है कि अनुभूति एक निश्चित ऊर्जा है। लेकिन इस ऊर्जा को नियंत्रित करना बेहद जरूरी है, अन्यथा यह खतरनाक भी हो सकती है।

मन जिस बीज को ग्रहण करता है, व्यक्ति उसे महसूस करता है। ई. एस. पी. में आत्म-नियंत्रण की आवश्यकता होती है। नशीले पदार्थों से इसमें सहायता तो मिलती है, लेकिन वे हानिकर भी होते हैं। अत: मन की दृढ़ता ही इसका एकमात्र उपाय है।

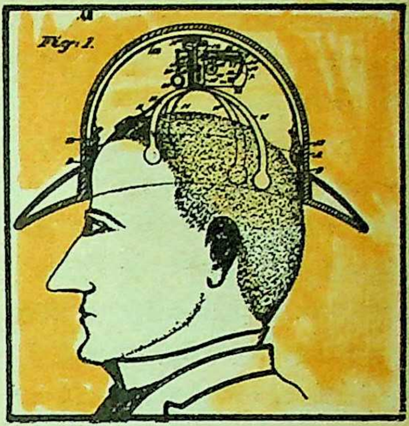

अंतश्चेतना एक ऐसी आकस्मिक अनुभूति है, जो व्यक्ति के अंत:प्रेरणा वाले स्वर से उपजती है। भविष्य की घटनाओं के पूर्वाभास के समय व्यक्ति का ई. एस. पी. सक्रिय होने लगता है। पांचों भौतिक इंद्रियों से परे की मानसिक इंद्रिय ही ऐसे समय में काम करती है। वास्तव में आपके चैतन्य का अंत: प्रेरणा वाला स्तर आपको भविष्य की स्थिति के प्रति सचेत करता है, किंतु आपका चेतन मन इस पर निर्भर नहीं रहना चाहता। ऐसे में ई. एस. पी. की आवश्यकता होती है।

चेतावनी अंतश्चेतना की

अंतश्चेतना की चेतावनी की वजह से मैं कई बार बचा हूं। एक बार का ऐसा ही प्रसंग आपको सुना रहा हूं।

१९३४ में एक फिल्म की पटकथा लिखने के सिलसिले में मैं हालीवुड गया हुआ था। वहां दो छायाकारों से मेरी मित्रता हो गयी थी। उनके पास एक निजी विमान था। शूटिंग समाप्त हो गयी, तो उन्होंने मुझे निमंत्रित किया कि मैं उनके साथ विमान में सैर करूं। मेरा रेल में आरक्षण हो चुका था, पर मैं विमान में भी सैर

करना चाहता था। अचानक मेरे भीतर से आवाज आयी कि मैं प्रस्ताव को अस्वीकार कर दूं। इस आवाज की उपेक्षा करके मैं उनके साथ चलने को तैयार हो गया किंतु ऐन वक्त पर अंतश्चेतना की आवाज फिर आयी। अबकी बार मैंने भीतर की आवाज पर अमल करना उचित समझा और उन छायाकारों से क्षमा मांग ली। मैं रेल से ही घर लौटा।

कई दिन बाद पता चला कि छायाकारों का विमान उसी दिन दुर्घटनाग्रस्त हो गया था और उन दोनों की उसमें मृत्यु हो गयी थी। इस तरह अंतश्चेतना ने मेरे जीवन की रक्षा की थी। उस दिन यदि अंतश्चेतना की बात न मानता तो दुर्घटनाग्रस्त विमान में मेरी भी मृत्यु हो गयी होती।

आप अपनी अंतः प्रेरणा को अपने अनुकूल बना सकते हैं। यह आपकी रक्षा कर सकती हैं लेकिन सबसे पहले इसमें आस्था और विश्वास बेहद जरूरी हैं।

ई. एस. पी. का सबसे अद्भुत और उल्लेखनीय पक्ष यह है कि आप अपनी समूची गतिविधियों को एक काल-विशेष में केंद्रित कर सकते हैं और किसी ऐसे व्यक्ति या घटना से साक्षात्कार कर सकते हैं, जिससे मुलाकात करने की कोई संभावना हो ही नहीं।

ई. एस. पी. द्वारा भविष्य में होनेवाली घटनाओं का पूर्वाभास भी हो जाता है। यदि किसी व्यक्ति की मानसिक प्रवृत्ति और आदतों का पता हो तो उसके भविष्य के कार्य-कलापों का पूर्वाभास किया जा सकता है। हमारा भविष्य किसी न किसी रूप में विद्यमान होता है। अनेक महापुरुषों ने विश्व की घटनाओं की भविष्यवाणियां कीं, जो सही भी निकलीं और निकलती रहती हैं। मन एक ही समय में द्रष्टा, भोक्ता, संगणक, निर्णायक होता है और प्राप्त अनुभवों के आधार पर विचारों और प्रभावों के रूप में उन्हें प्रेषित करता है। मन की गति प्रकाश की गति के बराबर होती है। मन में कोई भी विचार तुरंत ही कौंध जाता है। यदि आप समय को अतीत और भविष्य में आगे-पीछे सरकाकर देख सकते हैं, तो आपको भविष्य की संभावनाओं की साफ तसवीर दिखायी दे सकती है। ई. एस. पी. के माध्यम से भविष्य के मानसिक बिंब दिखायी देने लगते हैं।

अंतश्चेतना को पूर्वाभास के अंतर्गत रखा जा सकता है। यह ध्यान देने योग्य बात है कि हर नया विचार वस्तुतः आगामी संभावना का पूर्वाभास है। इसकी पूर्ति के लिए समय, प्रयास, अनुभव, मेधा और साधनों के सुयोग की आवश्यकता होती है। फिर भी हमारी मानसिक दृष्टि इसे देख लेती है।

मानसिक दृष्टि

कुछ ऐसा ही एक बार मेरी मानसिक दृष्टि ने देखा।

मैं मार्क टवेन का प्रशंसक हूं। एक

बार उनकी जीवनी पढ़ते हुए अचानक मेरे मन में विचार आया कि मार्क ट्वेन के जीवन को नाटक अथवा फिल्म का रूप दिया जा सकता है और यह काम अभी तक नहीं हुआ है। उसी झोंक में मैंने अपनी मानसिक दृष्टि से देखा कि मैं मार्क ट्वेन की धरोहर के रक्षकों के पास गया हूं और फिल्म बनाने का अनुबंध कर रहा हूं। मेरे चेतन मन ने कहा कि-यह सब खामखयाली है। मेरी प्रतिष्ठा नाटककार के रूप में बहुत अधिक नहीं थी और ऐसा अनुबंध किसी लब्धप्रतिष्ठ नाटककार के साथ ही संभव हो सकता था। लेकिन गहरी उत्कंठा और प्रबल इच्छाशक्ति के कारण मैं काम में जुट गया और दस हजार शब्दों की एक रूपरेखा बनाकर मैंने मार्क ट्वेन की धरोहर के कारकुन को पढ़ने को दी। और उस समय मेरे आश्चर्य का ठिकाना न रहा जब कारकुन ने मुझे बताया कि अनेक लब्धप्रतिष्ठ नाटककारों के प्रस्तावों को रद्द करके नाट्य-रूपांतर के लिए मुझे अनुबंधित किया गया है। बाद में हॉलीवुड के निर्माताओं ने उस पर फिल्म भी बनायी।

इस तरह जो कुछ भी मेरी मानसिक दृष्टि ने पूर्वाभास किया, वह ज्यों का त्यों वास्तव में घटित हुआ।

कैनेडी की हत्या का पूर्वाभास

इसी तरह मैंने कुछ राष्ट्र नायकों के बारे में भी पूर्वाभास कर लिया था। राष्ट्रपति कैनेडी के बारे में तो बहुत लोगों को पूर्वाभास हुआ था। मुझे भी हुआ। लेकिन ऐसी बातें सार्वजनिक रूप से नहीं कही जा सकतीं। मैंने एक मित्र के माध्यम से, जो कैनेडी के सचिवालय में काम करता था, यह सूचना भिजवा दी थी। किंतु कैनेडी ने इस पर कोई ध्यान नहीं दिया और वही हुआ, जिसका मुझे तथा मेरे-जैसे अन्य लोगों को पूर्वाभास हो गया था।

वस्तुतः विचार-तरंगें बहुत लोगों को प्रभावित करती हैं और कई बार वास्तविक घटना होने से काफी पहले वे हमारे मन पर दस्तक देने लगती हैं। पूर्वाभास चैतन्य के अलावा स्वप्नों के माध्यम से भी हो जाता है।

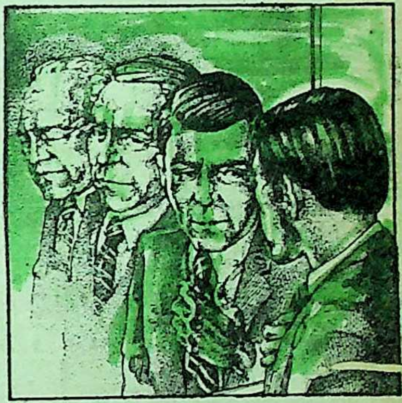

अनुभव पराभौतिक यात्रा के

मुझे शरीर से परे यात्रा करने अर्थात पराभौतिक यात्रा के कई रोमांचकारी अनुभव हुए। पहला अनुभव मुझे अपने मित्र डेविड की ऐसी यात्रा का हुआ। डेविड से मेरा

संपर्क एक लंबे अरसे से टूटा हुआ था। उसका नया पता भी मुझे मालूम नहीं था, अतः पत्र के माध्यम से भी कोई संपर्क नहीं था। वह स्वयं न जाने किन व्यस्तताओं से ग्रस्त था! उसने भी कोई पत्र नहीं डाला।

एक रात मेरी नींद टूटी और मुझे लगा कि मेरा शरीर सुन्न हो गया है और कोई हरकत नहीं कर रहा है। फिर मैंने देखा कि अंधेरे में डेविड बड़ी उत्कंठा से मेरी ओर झुक रहा है। उसके होठ हिल रहे थे, लेकिन कोई आवाज नहीं आ रही थी। मुझे डेविड की दशा देखकर इतना धक्का लगा कि मुझे महसूस हुआ कि मैं कोई वास्तविक दुःस्वप्न देख रहा हूं और मैंने उस दुःस्वप्न से मुक्ति पाने की कोशिश की। जैसे ही मैं कुछ सचेत हुआ, डेविड की आकृति मेरी आंखों से ओझल होती चली गयी। मुझे महसूस हुआ कि डेविड मुझसे मिलना और बात करना चाहता है। तीन रातों तक लगभग उसी समय यह घटना घटी। तीसरी रात मैंने देखा कि डेविड मेरे पास खड़ा होकर बोलने के लिए काफी जोर लगा रहा है, फिर भी कोई आवाज नहीं निकल रही। मैंने अपनी बांहें उसकी ओर बढ़ायीं और जोर से पुकारा—'डेविड ! . . . डेविड !' . . . मैं उसे छूने ही वाला था कि गहरी उत्कंठा के हाव-भावों के साथ उसकी आकृति अंधेरे में पिघलकर विलीन हो गयी।

इस अंतिम घटना से मुझे लगा कि मैं अपने मित्र को खो बैठा हूं और अब जीवन में उससे कभी मुलाकात नहीं हो सकेगी। मैंने उसे पत्र लिखा, जो पता ठीक न होने की वजह से उसे न मिलकर मेरे पास वापस आ गया।

तीन सप्ताह बाद मेरी और डेविड दोनों की एक महिला मित्र का पत्र आया, जिसमें डेविड की मृत्यु की सूचना थी। डेविड को निमोनिया हो गया था और बिगड़कर डबल निमोनिया में बदल गया था। तीन दिन बेहोश रहने के बाद उसकी मृत्यु हुई थी।

लेकिन इस सूचना का सबसे ज्यादा रोमांचकारी पक्ष यह था कि उस महिला मित्र ने भी उन्हीं तीनों दिन वही अनुभव किया, जो मैंने किया था और उन्हीं तीनों दिन डेविड बेहोश रहा और तीसरे दिन लगभग उसी समय उसकी मृत्यु हुई, जिस समय वह आकृति मेरी बांहों की पकड़ से छिटककर अंधेरे में पिघलने लगी थी।

मानस की निदान-शक्ति

हमारे मानस में निदान शक्ति की भी इंद्रिय होती है। हमें इस इंद्रिय को जाग्रत करना होता है। शरीर और मन का पारस्परिक संबंध होता है। यदि शरीर अस्वस्थ हो, तो मन भी अस्वस्थ हो जाता है। शरीर की अस्वस्थता के निदान के लिए मन को सायास स्वस्थ रखना होता है। यदि आप अपने मन में भय अथवा कटुता पाल लें, तो निदान की प्रक्रिया में बाधा पड़ सकती है। यदि आप स्वयं

निदान नहीं कर सकते, तो आपका मन आपको उस व्यक्ति के लिए दिशा-निर्देश दे सकता है, जो आपका निदान कर सके। इसके लिए आस्था और साहस की जरूरत होती है। जब चिकित्सा विज्ञान निदान में असफल हो जाता है, तब मन का यह रहस्यमय स्तर निदान करता है। मानसिक व्याधि से शारीरिक व्याधियां उत्पन्न होती हैं और मानसिक स्तर पर इनका उपचार भी हो सकता है।

यदि आपका कोई मित्र अस्वस्थ है, तो आप उसको सहायता और शक्ति के सकारात्मक विचार संप्रेषित करके उपचार कर सकते हैं।

आत्म-संकल्प भी अतींद्रिय अभिज्ञान (ई. एस. पी.) के अंतर्गत आता है। ई. एस. पी. का उपयोग हम अपने दैनिक जीवन में भी कर सकते हैं। इतिहास-पुरुष और देवदूतों को भी ई. एस. पी. का अभ्यास अवश्य रहा होगा। पराभौतिक शक्ति से मनुष्य अपनी शक्ति-सामर्थ्य को विकसित कर सकता है। ई. एस. पी. से आपकी इच्छाओं की पूर्ति हो सकती है। बस, इसके लिए प्रबल आस्था और विश्वास की जरूरत है। इससे आपकी अनेक समस्याओं का समाधान हो सकता है।

इस तरह ई. एस. पी. का उपयोग करके मैंने आर्थिक संकट से मुक्ति पाई।

ई. एस. पी. के मानसिक बिंब आपको परेशान भी कर सकते हैं और उलझन में डाल सकते हैं। लेकिन यदि आप वास्तव में इनसे छुटकारा पाना चाहते हैं, तो ये बाधाएं दूर भी हो सकती हैं। ●

बुद्धि-विलास के उत्तर

१. ख., २. क. लोथल (सौराष्ट्र), कालीबंगां (राजस्थान), नागेश्वर ग्राम (द्वारका के निकट), ख. लोथल, ३. शनि ग्रह के निकट (१ अरब अंश फारेनहाइट से अधिक), ४. डॉ. पॉल गुलाटी तथा उनकी पत्नी शोभा गुलाटी (लाइबीरियन विश्वविद्यालय में कार्यरत), 'दि बिश हाउलर' पुस्तक, ५. करनाल (हरियाणा), मंगलौर (कर्नाटक)—प्रत्येक की क्षमता ६० लाख टन, ६. खालिद मुशर्रफ, ७. दक्षिणी मिस्र में, ६०–८० हजार वर्ष पुराना, ८. अनुराधापुरा (श्रीलंका) में, ढाई हजार वर्ष से अधिक, सम्राट अशोक की पुत्री संघमित्रा ने बोधिवृक्ष की पौ[illegible] यहां लगायी थी (तीसरी शताब्दी ई. पू.) ९. लगभग १ करोड़ १०. क. रोहिणी-आर. एस-१ (३५ कि. ग्रा.), १८ जुलाई १९८०, श्रीहरिकोटा से, ख. इनसेट-१ ए (१,१५९ कि. ग्रा.), १० अप्रैल १९८२, केप केनावराल, फ्लोरिडा (अमरीका) से, ११. नेशनल स्टेडियम, नयी दिल्ली (४–११ मार्च, १९५१), १२. फोन

110513

उत्तर रेलवे

समय सारणी सूचना

१ मई १९८२ से लागू होने वाली उत्तर रेलवे समय सारणी की मुख्य मुख्य विशेषताएं निम्नानुसार हैं -:

नई गाड़ियां

I) शामली और सहारनपुर के बीच गाड़ी नं. १ एस एसएम/२ एसएसएम जिनमें द्वितीय श्रेणी के स्थान होंगे, निम्न समयानुसार चलाई जाएंगी :-

१ एसएसएम				**२ एसएसएम**
१८.१०	छू.	शामपुर	छू.	१४.५०
२०.५०	प.	सहारनली	प.	१७.३०

II) दिल्ली और पालम के बीच चल रही गाड़ी नं. १ पीडी/२ पीडी जिनमें द्वितीय श्रेणी स्थान हैं, अब इनमें सामान्य यात्री भी यात्रा कर सकेंगे :

१ पीडी (रविवार को छोड़ कर)				**२ पीडी** (शनिवार)	**२ पीडी** (रविवार और शनिवार छोड़कर)
७.४५	छू.	दिल्ली	प.	१५.००	१७.३०
८.४०	प.	पालम	छू.	१४.०५	१६.४०

गाड़ियों का विस्तार

(I) १ डीएसएस/८ डीएसएस दिल्ली-शामली यात्री गाड़ियां सहारनपुर तक बढ़ाई जाएंगी। अब इनके नए नम्बर ३ एसएसडी/४ एसएसडी होंगे और निम्न समयानुसार चलेंगी :-

३ एसएसडी				**४ एसएसडी**
१०.०५	छू.	दिल्ली जंक.	प.	१८.३०
१४.१२	प.	शामली	छू.	१४.१७
१४.२२	छू.		प.	१४.०७
१७.००	प.	सहारनपुर	छू.	११.३०

अत: ३ डीएसएस ५ डीएसएस ७ डीएसएस ९ डीएसएस तथा १० डीएसएस गाड़ियों के नए नम्बर क्रमश: १ डीएसएस ३ डीएसएस ५ डीएसएस ७ डीएसएस और ८ डीएसएस होंगे।

(II) १ एटीडी आगरा-टूण्डला-दिल्ली यात्री गाड़ी दिल्ली और नई दिल्ली के बीच बढ़ाई जाएगी। इसका नया नं. १ एटीएन होगा और निम्न समयानुसार चलेगी :-

		१ एटीएन
दिल्ली	प.	१८.४०
	छू.	१९.४२
नई दिल्ली	प.	१९.५५

(III) ४६ डाउन/४५ अप अमृतसर-दिल्ली जनता एक्सप्रेस दिल्ली और हजरत निजामुद्दीन के बीच बढ़ाई जाएंगी। इनके नए नाम हजरत निजामुद्दीन-अमृतसर एक्सप्रेस होंगे। अब इनमें प्रथम और द्वितीय श्रेणी के स्थान होंगे और दिल्ली और हजरत निजामुद्दीन के बीच निम्न समयानुसार चलेंगी :-

४६ डाउन				४५ अप
५.२३	प.	दिल्ली जं.	छू.	२२.१५
५.४५	छू.		प.	२१.४५
५.५८	प.	नई दिल्ली	छू.	२१.३५
६.२०	छू.		प.	२१.१५
६.३५	प.	हजरत निजामुद्दीन	छू.	२१.००

(IV) ३७९ डाउन/३६६ अप पलवल-नई दिल्ली यात्री गाड़ियां नई दिल्ली और दिल्ली के बीच निम्न समयानुसार बढ़ाई जाएंगी :-

३७९ डाउन				३६६ अप
९.५३	प.	नई दिल्ली	छू.	१७.१०
१०.०७	छू.		प.	१७.०५
१०.२०	प.	दिल्ली	छू.	१६.५०

गाड़ियों के चालन क्षेत्र में कटौती

गाड़ी नं.	के बीच
१ डीएनएम/२ डीएनएम शटल (नया नम्बर १ एनएम/२ एनएम)	दिल्ली और नई दिल्ली
३३१ अप यात्री गाड़ी	सहारनपुर - अमृतसर
३३२ डाउन यात्री गाड़ी	अमृतसर - सहारनपुर
३५३ अप यात्री गाड़ी	अम्बाला छावनी - अमृतसर बरास्ता धूरी
३५४ डाउन यात्री गाड़ी	अमृतसर - अम्बाला छावनी बरास्ता धूरी

गाड़ियों के समय में महत्वपूर्ण परिवर्तन

१ अप मुगलसराय ७.००/७.३५ की बजाए ६.०८/६.३८ पहुंचे/चलेगी।
३ अप मुगलसराय ६.०७/६.२५ की बजाय ७.३३/७.५३ बजे पहुंचे/चलेगी और इलाहाबाद ९.१५/१०.१० की बजाए १०.४५/११.१५ बजे पहुंचे/चलेगी

१५५ अप मुगलसराय १७.४१/१८.०० की बजाए १६.४६/१७.०६ बजे पहुंचे/चलेगी और नई दिल्ली ५.२५ की बजाए ६.१० बजे पहुंचेगी ।

१५३ / १६७ / १९१ अप दिल्ली ११.३५ की बजाए १२.२५ बजे पहुंचेगी ।
१७५ अप मुगलसराय ८.३०/८.५० की बजाए ६.५५/७.१५ बजे पहुंचे/चलेगी और नई दिल्ली २१.३५ की बजाए २१.०५ बजे पहुंचेगी ।

२८ अप वाराणसी से ११.०० की बजाए ११.३० बजे चलेगी

११६ अप कानपुर ११.३०/११.५० की बजाए १२.००/१२.३० बजे पहुंचे/चलेगी और लखनऊ से १०.०० की बजाए १०.३५ बजे चलेगी ।

११९ अप नई दिल्ली १२.१५ की बजाए १३.१५ बजे पहुंचेगी ।

२ डाउन मुगलसराय १९.३५/२०.०५ की बजाए २०.५५/२१.२५ बजे पहुंचे/चलेगी

१५६ डाउन मुगलसराय ९.४८/१०.०३ की बजाए ११.०३/११.२३ बजे पहुंचे/चलेगी और नई दिल्ली से २२.१० की बजाए २२.०० बजे चलेगी ।

१९२ डाउन मुगलसराय ६.५०/७.१० की बजाए ७.३०/७.५० बजे पहुंचे / चलेगी
8

१७६ डाउन नई दिल्ली से ७.०० की बजाए ६.०० बजे चलेगी ।
१२० डाउन नई दिल्ली से १५.१५ की बजाए १४.२५ बजे चलेगी

१३९ डाउन और १५९ डाउन इलाहाबाद १५.३०/१५.५५ बजे की बजाए १८.२०/१८.५० बजे पहुंचे/चलेगी और वाराणसी १९.०० की बजाए २२.०० बजे पहुंचेगी ।

१३ अप मुगलसराय १७.२५/१७.५० की बजाए १७.४५/१८.१० बजे पहुंचे/चलेगी ।

२१ डाउन नई दिल्ली ५.३५ की बजाए ६.१० बजे पहुंचेगी ।
१२१/१२३/१२५ डाउन नई दिल्ली १३.४० की बजाए १६.०० बजे पहुंचेगी ।

१४३ डाउन हजरत निजामुद्ददीन १०.३५ की बजाए १४.३५ बजे पहुंचेगी ।
१६ अप नई दिल्ली से १९.३० की बजाए १९.१० बजे चलेगी ।

१२२/१२४/१२६ अप नई दिल्ली से ६.५० की बजाए ६.१५ बजे चलेगी
१४४ अप हजरत निजामुद्ददीन से ९.२० की बजाए ६.४० बजे चलेगी
३८ डाउन फिरोजपुर छावनी से २१.३५ की बजाए २१.१० बजे चलेगी
६० डाउन श्रीगंगानगर से १९.४५ की बजाए १९.२० बजे चलेगी और भटिण्डा २३.०० की बजाए २२.३५ बजे पहुंचेगी
३७ अप फिरोजपुर छावनी ६.२० की बजाए ६.४५ बजे पहुंचेगी
१८ डाउन जम्मू तवी से २२.४० की बजाए २२.०५ बजे चलेगी
८८ डाउन भटिण्डा २१.४० की बजाए २१.०५ बजे पहुंचेगी

२ सीसीएम मिर्जापुर से १७.३५ की बजाए १८.१५ बजे चलेगी

३५७ अप मुगलसराय से १६.५० की बजाएं १७.२० बजे चलेगी

३५५ अप आगरा छावनी से १८.३० की बजाए १९.१५ बजे चलेगी और टुण्डला २०.५ की बजाए २०.४५ बजे पहुंचेगी और २०.५० की बजाए २१.३० बजे चलेगी

५३६ अप कानपुर से ४.३० की बजाए ५.०० बजे चलेगी

५४२ डाउन लखनऊ से ६.०० की बजाए ७.३० बजे चलेगी

५४० डाउन लखनऊ से २२.३० की बजाए २३.३० बजे चलेगी

२ केए कानपुर से १४.४५ की बजाए १५.२५ बजे चलेगी और इलाहाबाद २०.५० की बजाए २१.२० बजे पहुंचेगी

२ एएचएच अलीगढ़ से ८.०० की बजाए ८.१५ बजे चलेगी और हाथरस किला ९.४० की बजाए ९.५५ बजे पहुंचेगी

६ जेएफ फिरोजपुर छावनी से १२.५५ की बजाए १३.१० बजे चलेगी

६ एलएफ जाखल २२.१५ की बजाए २२.४० बजे पहुंचेगी

४ एलएफ लुधियाना १५.२७ की बजाए १५.१० बजे पहुंचेगी

८ एलएफ फिरोजपुर छावनी से १८.५५ की बजाए १७.२० बजे चलेगी और लुधियाना २२.४५ की बजाए २१.१५ बजे पहुंचेगी

३८१ डाउन तुगलकाबाद १५.२४/१५.२६ की बजाए १४.५४/१४.५६ बजे पहुंचे/चलेगी और नई दिल्ली १६.२० की बजाए १५.४५ बजे पहुंचेगी

३३६ डाउन श्रीगंगानगर से ८.३५ की बजाए ७.०० बजे चलेगी और भटिण्डा १३.१५ की बजाए १२.२५ बजे पहुंचेगी

३ एबीक्यू अमृतसर से १४.५० की बजाए १४.०० बजे चलेगी और कादियां १७.०० की बजाए १६.०० बजे पहुंचेगी

४ एबीक्यू कादियां से २०.५० बजे की बजाए १६.४० बजे चलेगी और अमृतसर २२.५५ की बजाए १८.४५ बजे पहुंचेगी

३४३ अप श्रीगंगानगर १.०५ की बजाए १.३० बजे पहुंचेगी

३३५ अप श्रीगंगानगर १९.१० की बजाए १८.४० बजे पहुंचेगी

४ एसएचबी श्रीगंगानगर से १७.४५ की बजाए १७.२० बजे चलेगी और भटिण्डा २२.०५ की बजाए २१.३० बजे पहुंचेगी

१ बीए अबोहर २०.०३ की बजाए २०.२० बजे पहुंचेगी

२ एपीजे जम्मू तवी से २२.०० की बजाए २२.४० बजे चलेगी

२ डीएस दिल्ली ११.०० बजे की बजाए ११.१५ बजे पहुंचेगी

३६७ डाउन तुगलकाबाद ८.४०/८.४२ की बजाए ८.१६/८.१८ बजे पहुंचेगी/चलेगी और नई दिल्ली ९.३८ की बजाए ९.०१ बजे पहुंचेगी

१ एनजीएन गाजियाबाद से १०.५० की बजाए १०.३५ बजे चलेगी

५ डीएसएस (पुराना ७ डीएसएस) दिल्ली से २०.०० बजे की बजाए १९.२० बजे चलेगी और शामली २४.०० की बजाए २३.३० बजे पहुंचेगी

[illegible]513

६ डीएसएस शामली से ६.४० की बजाए ७.२० बजे चलेगी और दिल्ली ११.१० की बजाए ११.२५ बजे पहुंचेगी

८ डीएसएस (पुराना १० डीएसएस) दिल्ली २२.२५ की बजाए २२.०० बजे पहुंचेगी

१२ केएस कालका १७ की बजाए १६.४५ बजे पहुंचेगी

२ जीएन नजीबाबाद से ८.४० की बजाए ८.१० बजे चलेगी और गजरौला १२.३५ की बजाए १२.१० बजे पहुंचेगी

२ केएन कोटद्वार से ७.३० की बजाए ६.५५ बजे चलेगी और नजीबाबाद ८.२० की बजाए ७.५० बजे पहुंचेगी

४ एफके फाजिल्का २२.४५ की बजाए २२.२५ बजे पहुंचेगी

३ बीएच भटिण्डा से २१.०० की बजाए २१.१५ बजे चलेगी

३३९ अप भटिण्डा से १८.१५ की बजाए १८.०० बजे चलेगी

सीधे होकर जाने वाले और खण्डीय सवारी डिब्बों के चलने में परिवर्तन

I) ३७ अप/३८ डाउन पंजाब मेल गाड़ियों के साथ दिल्ली और फिरोजपुर के बीच एक प्रथम श्रेणी डिब्बा (एफ सी) लगाया जाएगा।

II) देहरादून बम्बई सेंट्रल टी/एस मिश्रित डिब्बे के स्थान पर २०/८७-८८/१९ गाड़ियों के साथ देहरादून और इन्दौर के बीच एक मिश्रित प्रथम एवं द्वितीय श्रेणी (एफसीएस) डिब्बा लगाया जाएगा।

III) ४५४/१३७-१३८/४५१ गाड़ियों के साथ परसिया और हजरत निजामुद्दीन के बीच सप्ताह में एक दिन की बजाए सप्ताह में दो दिन एक मिश्रित प्रथम एवं द्वितीय श्रेणी (एफ सी एस) डिब्बा लगाया जाएगा।

IV) ७/१५-१६/८ गाड़ियों के साथ लगने वाला वालटेयर-नई दिल्ली डिब्बा सप्ताह में दो दिन अब ३/५१/२१-२२/५२/४६ गाड़ियों के साथ लगाया जाएगा।

V) बाड़मेर - अहमदाबाद २ टियर शयनयान २ जेबी/१ एसबी/६६-ए ६५/ए २ एसबी/१ जेबी गाड़ियों की बजाए २ जेबी/२६६/६६ ए ६५/ए/२६५/१ जेबी गाड़ियों द्वारा वहन किया जाएगा।

VI) बिलासपुर और अमृतसर के बीच १३७/४५-४६/१३८ गाड़ियों के साथ एक प्रथम श्रेणी (एफ सी) और एक ३ टियर शयनयान (जी एस सी एन) लगाया जाएगा।

गाड़ियों के समय, सीधे जाने वाले और खण्डीय डिब्बों आदि के लगाने के सम्बन्ध में विस्तृत ब्योरे के लिए कृपया उत्तर रेलवे समय सारणी १ मई १९८२ को देखें जो रेलवे बुकिंग/आरक्षण / पूछताछ कार्यालयों तथा महत्वपूर्ण स्टेशनों के बुक स्टालों पर बिक्री के लिए उपलब्ध हैं।

१४५३५

मुख्य परिचालन अधीक्षक

दी हिन्दुस्तान टाइम्स लिमिटेड की ओर से डा. गौरीशंकर राजहंस द्वारा
हिन्दुस्तान टाइम्स प्रेस, नयी दिल्ली में मुद्रित तथा प्रकाशित ।

Compiled
1999-2000